ΕΥΡΙΠΙΔΗΣ

EVRIPIDIS TRAGOEDIAE
SVPERSTITES
ET
DEPERDITARVM FRAGMENTA

EX RECENSIONE
AVGVSTI NAVCKII

VOLVMEN II.

LIPSIAE
SVMPTIBVS ET TYPIS B. G. TEVBNERI
MDCCCLIV

ANNOTATIO CRITICA

IPHIGENIA AVLIDENSIS.

Editione Cantabrigiensi (a. 1840) invitus carui. In personarum indice post *ΜΕΝΕΛΑΟΣ* cum Marklando addidi *ΑΓΓΕΛΟΣ* (cf. v. 414) et in fine pro *ΘΕΡΑΠΩΝ. ΑΓΓΕΛΟΣ* scripsi *ΑΓΓΕΛΟΣ ΕΤΕΡΟΣ* praeeunte Vatero.

Vs. 3 πεύσει] σπεύσεις; Dobr. 8 ἀσσῶν] αἰσσῶν Vater. 19 ἦσσον ζηλῶ] ἦσσον ἐπαινῶ Stob. 22 καὶ τὸ φιλότιμον] καὶ τὸ πρότιμον Nck. 33 βουλόμεν' ἔσται] νενόμισται Stob., sed βουλομένων ἔσται Plut. 46 τότε] f. ποτὲ cum Barnesio leg. 47 sq. πέμπεν — δίκαιον] πέμπειν — δικαιοῖ probabiliter Herm. 66 εὖ δέ πως] ἐμπέδως Nck. 70 ὥς γε] ὅς σφε ed. Cantabr. 84 κᾆτα] κάρτα Heath., στρατηγήσοντα (pro στρατηγεῖν κᾆτα) ci. Nck. 89 ἀπορίᾳ λελημμένοις ci. Nck. 93 spurium arbitror. 109 λάθρα supplet Hartung. 128 οὐκ ἔργον] ἀντ' ἔργου Libanius (cf. Lennep. in Phalar. p. 209, a. Vngeri Theb. Parad. p. 376). 172 Ἀχαιῶν] ἀγαυῶν Nck. 233 γυναικείαν] γυναικεῖαν Nck. 234 μείλινον ἁδονάν corrupta, μᾶλλον ἁδονᾶν Herm. 237 θούριος Vater. 251 θετὴν ci. Nck. 252 τι Markl. 253 τῶν et 265 ἐκ deleverim. 263 ναῦς] ναῦς ἦν Herm., ἦν ναῦς praetuli. 268 Ἄδραστος ineptum, ἀδελφὸς Markl., ἄρ' αὐτὸς Mehlhorn. 277—302 strophicum videtur carmen; metro congruunt 280 sq. et 292 sq., 285 et 300, 287 et 302. cetera exaequare tentavit Herm. 277 Αἰνιάνων] Ἐνιάνων Nck. 331 ἐάσομαι] ἐᾷς ἐμέ Nck. 333 πονηρὸν] πονηρῶν Nck. 334 σαφὲς φίλοις] σοφοῖς φίλον ci. Nck. 338 mallem haberemus: τῷ λέγειν μὲν οὐχὶ χρῄζων, τῷ δὲ φαίνεσθαι θέλων. 339 ἧς ἁπάσης] ἦσθα πάσης Mkl., ἦσθα πᾶσι Nck. 347 καὶ] χρὴ ci. Nck. 351 et 353 sq. diversa puto tentamina traditam lacunam resarciendi. 357 στερέντα σ'] στερέντας Musgr. 363 sq. damnavi, 364 iam Dindorfius; f. inter 362 et 365 nonnulla exciderunt. 372 κόρην] κάκην ci. Nck. 373 ἂν] ἄρα Nck. 393 probabiliter editor Cantabr.: οὓς λαβὼν

στράτευ'· ἕτοιμοι δ' εἰσὶ μωρία φρενῶν. 407 βούλομ' ἀλλ' οὐ] βούλομαι κοὐ ci. Nck. 416 ὠνόμαζες Mkld., sed ipse versus suspectus est. 417 σὴ Κλυταιμνήστρα δάμαρ Elmsl. 452 αἰδοῦμαι] οὐ σθένω Dobr. 521 ἄχρηστον] ἀρεστὸν Nck. 530 κᾆτα φεύξομαι tentabam. 547 μαινόμεν'] μαινολῶν Nck. 559 διάτροποι] διάφοροι Nck. 573 sqq. locus corruptissimus; stropham (572—578) et antistrophum (579—585) efficere tentavit Herm. 580 ὅτι] εὖτε Herm. 589 ἐς πέργαμα Τροίας Blomfield. 595 εὐμεγέθεις ci. Nck. 596 sq. intellegerem sic scriptos: θεοί τοι κρείσσους οἴκων ἔφοροι τοῖς ὀλβιοδαίμοσι θνατῶν. 601 νώμη Herm. 626 τὸ Νηρ.] θεᾶς Νηρ.? 639 τῶνδ'] τῷδ' Fix. 641 τὸ δ' ἴσον ci. Nck. 649 ἰδοὺ γέγηθ' ἕως γέγηθά σ' ὁρῶν τέκνον libri; tentabam ἰδοὺ γέγηθ' ὁρῶν σε γηθοῦσαν, τέκνον. 652 οὐκ οἶδά σ' ὅ τι φῄς, φίλτατ', οὐκ οἶδ', ὦ πάτερ ci. Herm.; 652—655 hoc loco incommodi aptius fortasse eo loco legerentur quem nunc tenent 660—663 mihi suspecti. 657 θέλειν] τελεῖν ci. Nck. 665 θύγατερ σύ θ'] an σὺ θύγατερ? 667 αἰτεῖς τί] ἔτ' ἔστι Porson, praetuli ἔπεστι. 694 συνανίσχεται libri. 696 δὲ ποίου] f. δ' ὁποίου cum Porson. 710 σοφώτερος] σοφῷ τρέφειν ci. Nck., nisi quis σοφῷ τέκος malit. 724 ὅμως] ὁμῶς Nck. prima verba non expedio. 728 ἁμὲ] f. ὧν με cum Reiskio leg. 734 σὺ] σοὶ Nck. pro ἡγεῖ tentabam ἐστιν. 741 νυμφίοισι] νυμφίοις ἢ tentabam, sed fortasse versus delendus cum Herm. 747 τῆς θεοῦ φίλον γ'] τοῖς θεοῖσι φίλον ci. Nck. 764 Τρῶες] Φρύγες Herm. 765 πόντιος] ἅλιος Herm. 769 Διὸς κούρων ci. Nck. 775 Ἄρει φονίῳ Matth., δορὶ φοινίῳ Herm. 782 πολύκλαυτος ἐσεῖται corrupta, εἴσεται (pro ἐσ.) Herm. 790 μυθεῦσαι libri. 795 εἰ δὴ] εἴθ' ἡ Reisk. 796 Λήδ'] Λήδα σ' Nck. 804 πύλας] πέλας Barnes., πνοάς Herm. 813 πνοαῖς] ῥοαῖς ci. Markl., πύλαις Herm. 817 δρᾷ] δρᾷ δ' Fix, φράζ' ci. Nck. 823 οὓς] οἷς Nck. 824 προσέβης ἂν] κατεῖδες editt., προσῆκες Nck. 862 πάροιθεν] παρόντε Dobr. 865 nondum emendatus: libri ἂν ὤσῃ (pro ἀνοίσει). 900 οὐκ ἐπαιδ.] f. οὐκέτ' αἰδ. 902 ἐπὶ τίνος] περὶ τίνος Schaefer. 909 πρὸς σῆς] πρός σε probabiliter Markl. 912 γελᾷ] πέλας Markl., praetuli πελᾷ. 942—974 damnat Dind., mihi 943. 946. 953. 962—974 suspecti sunt. 944 ἄρ'] ἂν ci. Nck. 947 ὥσπερ (ὅσπερ) φονεύει] sententiae conduceret εἰ προυξένησε. 954 τ'] γ' Nck. 959 sq. οὐ τῶν γάμων ἕκατι δ' εἴρηται τάδε Hermannus, μυρίαι — τοὐμόν delens. 994

ἔξεισιν αἰδοῦς Pors. 995 ἰδοὺ] ἢ μὴ editt., εἰ δ' οὐ Nck. praeeunte Hartungio. 996 Achilli tribuebatur, Clytaemnestrae tribuit Nck. 1003 ἀνικέτευτος ἧς·] ἀνικετεύτως· εἷς Nck. 1017 ἐπίθετ'] πείσετ' Herm. 1017—1023 damnat Dind., certe 1022 sq. spurii videntur. 1019 πρὸς φίλων κεκλήσομαι ci. Nck. 1031 ἐν] ἦν ci. Nck. 1041 Πιερίδες ἐν δαιτὶ θεῶν] θεῶν ἐν δαιτὶ Πιερίδες Dind. Metris p. 313 nescio quo auctore. 1055 κύκλῳ ci. Herm. 1066 ἐξωνόμασεν] ἐξονόμαξεν Herm. 1073 ἔνδυτ' ἐκ] ἐνδύτοις ci. Nck. 1081 γ' ἁλιᾶν] βαλιὰν ci. Scaliger, ταλαὰν Nck. 1082 ὀρέων] ὀρείαν ed. Cantabr. 1084 λαιμόν corruptum, item 1087 sq. 1090 δύνασιν ἔχει] ἔχει Nck. 1093 δύναμιν] δύνασιν Nck. 1096 μὴ addidit Herm. 1110 πατρὸς μέτα corrupta, pro πατρὸς f. πάρος leg., de ceteris non liquet. 1117 σὺ add. Nck. 1126 vehementer friget. 1130 δεῖ γ'] δεῖ μ' Markl., δεῖ σ' Dobr. 1132 ὑπονοεῖς θ' ἃ μὴ σε χρή. *ΚΛ.* ἔχ' ἥσυχος] ὑπονοεῖς τ'. *ΚΛ.* ἔχ' ἥσυχος probabiliter Herm. 1138 τίμ'] τίν' σ' ci. Markl. 1141 πέπεισμ' ἃ σύ γε] πεπύσμεθ' ἃ σὺ Erfurdt. 1151 προσώρισας Hartung. 1153 Διός γε] Διός τε Markl. 1154 ἵπποισι] ἵπποις σε ci. Nck. 1168 καλὸν γένος] καλόν γε τοι Fix. 1170 ὠνώμεθα; ci. Nck. 1171 εἰ στρατεύσει Elmsl. 1172 suspectus. 1174 πάντας ineptum, suspicabar ὅταν θρόνους μὲν τοὺς τὸ πάρος ἴδω κενούς, coll. Apsine Rhett. vol. IX. p. 593 (vol. I. p. 403, 25 ed. Spengel.). 1176 καθῶμαι Elmsl. 1179 πρὸς τοὺς δόμους corrupta. 1180 ἐνδεῖ Reisk. 1185 εἶεν· θύσεις δὲ τὴν παῖδ' ἔνθα] εἶεν· σὺ θύσεις παῖδα ci. Nck. 1193 ἦλθεν] ἦλθες Herm. 1203 ὑστερήσομαι] ἧς στερήσομαι Herm., ἐστερήσομαι Pors. 1207 λέλεκται νῶι μὴ δή γε κτάνῃς libri. 1209 σοι σώζειν vel σ' ἦν σώζειν ci. Nck. 1210 πρὸς τάδ'] τοῖσδ' ἂν ed. Cantabr. 1230 τιθηνῶν ci. Nck. 1244 νηπίοις γε] malim νηπίοισι cum ed. Cantabr. 1267 sq. damnat Herm. 1274 malim βαρβάρων cum ed. Cantabr. 1293 Ἀλέξανδρον mihi ut aliis glossema videtur. 1305 δορὶ] δουρὶ ed. Cantabr. 1310 graviter corruptus, post Δαναΐδαισιν excidisse ἣν suspicor. 1323 ὤφελεν] ὤφειλ' ci. Nck. 1324 sqq. tentabam: Ζεὺς μειλίχιος, | τάσσων αὔραν ἄλλοις ἄλλαν | θνατῶν λαίφεσι· τοῖς μὲν χαίρειν κτλ. 1332 ἀνευρεῖν] εὑρεῖν ci. Dind. 1341 τί δὲ φεύγεις, τέκνον; Ἀχιλλέα τὸν ἰδεῖν αἰσχύνομαι libri, unde cum Hartungio legendum suspicor: τί δὲ σὺ φεύγεις, τέκνον; *ΙΦ.* ἄνδρα

τόνδ' ἰδεῖν αἰσχύνομαι. 1343 melius abesset. 1344 ἣν δυνώμεθα] ἵν' ὀδυνώμεθα Herm. 1348 ὡς χρεὼν σφάξαι νιν. κοὐδεὶς ἐναντία λέγει; libri. νεᾶνιν (pro νιν) Fix, quo recepto scribendum suspicabar: ὡς χρεὼν σφάξαι νεᾶνιν. ΚΛ. κοὐδὲ εἷς ἐναντία; 1349 ἐς τίν'] τίν' Nck. 1350 σώζειν ἐμὴν] σώζων ἐμὴν Canter, an σώζειν θέλων? 1355 εὐνὴν] εὖνιν Herm. 1361 ἐμοῦ γε ζῶντος ci. Nck. 1366 versus suspectus. 1375 μέν μοι] ἐμοὶ ci. Nck. 1380 sq. τὰς δὲ μελλούσας γυναῖκας μηκέθ' ἁρπάζειν ἐᾶν Hermannus (delens ἤν τι δρῶσι βάρβαροι et τὰς ὀλβίας ἐξ Ἑλλάδος). 1391 ἔχοιμεν] ἔχοιμ' ἂν Herm., fortasse praestat: τοῦτ'; ἔχοιμεν ἆρ' ἂν —; ut Hartungius. 1394 ὁρᾶν] ὁρῶν Dobr. 1438 an 1439 delendus sit ambigitur; μήτ' οὖν γε τὸν σὸν interpolatorem sapiunt. 1455 πατέρα γε] πατέρα τε Herm. 1480 βωμὸν Ἄρτεμιν] βωμὸν Nck. 1483 τὰν μάκαιραν] θεὰν μάκ. Nck. 1502 ἐθρέψαθ' Elmsl. 1509 ἰὼ ἰώ choro tribuebatur. 1514 γε δαίμονος] δαιίμονος Markl. 1517 σφαγεῖσάν] -⏑⏑- σφαγεῖσαν ci. Nck. (in stropha 1485 αἵμασι θύμασίν τε vel αἵμασι θύμασιν θεᾶς?) 1527 δολόεντα vix sanum. 1532—1628 damnavit Porsonus, 1532—1558 defendit Matth., mihi quae inde ab 1540 leguntur suspecta sunt, quorum versuum prior pars homini haud imperito debetur. in extrema parte quae insunt vitia immania removere studuit Herm. medicina nonnunquam violenta; sed in istiusmodi poeta proletario quid ferendum sit, quid damnandum, nullo modo definias. unde satius erat librorum scripturam servari. 1573 ἄναξ θ'] τ' ἄναξ ci. Nck. 1580 δέ τ' ἄλγος] δὲ τἄλγος Nck. 1583 οἶδεν] εἶδεν Matth., οἴδαμεν ci. Nck.

Aelianus N. A. VII, 39: ὁ δὲ Εὐριπίδης ἐν τῇ Ἰφιγενείᾳ·

ἔλαφον δ' Ἀχαιῶν χερσὶν ἐνθήσω φίλαις
κεροῦσσαν, ἣν σφάζοντες αὐχήσουσι σὴν
σφάζειν θυγατέρα.

Hos versus e genuino fabulae exitu depromptos esse probabiliter viri docti coniecerunt. Quae schol. Ar. Ran. 1310 ἐξ Ἰφιγενείας τῆς ἐν Αὐλίδι repetit, ex Iphig. Taur. 1090 repetenda fuisse statuit Bergler.

IPHIGENIA TAVRICA.

Hanc fabulam una cum Helena edidit Carolus Badham, Londini 1851. Editione Cantabrigiensi (a. 1840) uti mihi non licuit.

Vs. 15 *δὴν ἦστ᾽ ἀπλοίᾳ* ci. Nck. 18 *ἀφορμίσῃ* edebatur, *ἀφορμήσῃ* (quod Parisini libri habere dicuntur) Nck. 29 *Ἀχαιοῖς*] *Ἀχαιούς* Nck. 31 *οὗ γῆς*] *γύαις δ᾽* ci. Nck. 35 sq. graviter corrupti. 37 interpunxi sicut Schoene. 57 *εἰσὶ παῖδες*] malim *παῖδές εἰσιν* ex Artemid. II, 10. Stob. Fl. 77, 3. Men. monost. 713. 69 sq. subabsurdi sunt. 70 damnavit Badham. 82 *τροχηλάτου*] *ποινηλάτου* ci. Nck. 91 *ἐνθένδ᾽*] *ἔνθεν* ci. Nck. 98 *μάθοιμεν*] *λάθοιμεν* Reisk. 100 *ὧν οὐδὲν ἴσμεν*] *ὧδ᾽ οὐδὸν ἔσιμεν* Badham, *θύραθεν ἔσιμεν* ci. Nck. 113 *κενὸν*] *χρεὼν* ci. Nck. 116 *οἴτοι*] *οὕτω* Badham. 135 *Εὐρώταν* probabiliter Barnes. 142 *σπέρμ᾽ Ἀτρειδᾶν* Schoene. 145 *ἔγκειμαι τᾶς*] *ἔγκειμ᾽ ἱστᾶσ᾽* Nck. 146 *βοᾶν*] *ἰὰν* Nck. 147 *ἓ ἓ ἐν*] *αἰαῖ* Nck. *οἴκτοισιν*] *οἴκτοις* Seidler. 148 *αἴ*] *οἰαί* Badham. cum *οἴκτοισιν* praecedat, malim *δειναί* vel *αἰναί*. 150 alii *ζωᾶς* delent, *ὀνείρων* alii. 180 *ἰαχάν*] *ἀχάν* Nck. 184 *νέκυσι μέλεον*] *νέκυσιν μελέων* Schoene. 188 lacunam indicavit Herm. qui *τῶν σῶν* supplet; Dind. 186 *οἴμοι, σῶν πατρῴων οἴκων* scribi iussit et 188 deleri. 189 *τίν᾽*] *τίνος* Badham. 194 sq. *ἱερὸν θνατοῖς ὄμμ᾽ ἠλύγασ᾽ ἡέλιος* ci. Badham. 200 *ποινά γ᾽*] *ποίναμ᾽* Hartung. 208 et 209 sedem mutare iubet Badham. 225 *αἱμορράντων*] *αἱμόρραντον* ed. Cantabr. 226 *βωμοὺς* f. delendum cum Matth. 246 *ὄνομ᾽*] *νόμον* Nck. 252 et 256 *πῶς*] *ποῦ* Badham. 259 *ῥοαῖς*] *φοναῖς* ci. Nck. 275 *ἀνομίᾳ*] *ἀλογίᾳ* ci. Nck. 284 *καὶ βοᾷ· κυνώπιδα* ci. Nck. 288 *ἐκ χιτώνων*] tentabam *ἐγκυτὶς νῷν*. 292 sq. *ἀλλ᾽ ἐπλάζετο φθογγαῖς τε μ. καὶ κ. ὑλάγματι* ci. Nck. 294 *ἃς φάσ᾽*] *ἃ "φασκ᾽* Badham. *μιμήματα*] *μυκήματα* Nck. 298 *ἐκ πλευρᾶς συθείς* ci. Badh., *εἰς πλευράς θ᾽ ἱείς* Musgr. 300 *ὡς*] *ὥσθ᾽* Markl. 318 *πέτροις* ci. Victorius. 329 *οὐδεὶς*] *οὐδ᾽ εἷς* Nck. *εὐστόχει* Badham. 339 suspectus. 343 *οἷα φροντιούμεθα*] *φροντιοῦμεν οἷα χρή* Badh. 349 delevi. 356 *κατήγαγ᾽* Badh. 358 *Αὖλιν*] *αὖλιν* Nck. 370 *προσεῖπας*] *προτείνας* Badh. *μ᾽* addidit Nck. ante 380 quaedam deesse vidit ed. Cantabr. 382 damnavit Badh. 390 *τὸν*] *τὴν* amicus Marklandi. 395 *εὔξενον*] *ἄξενον* ed. Cantabr. *διεπέρασεν ποτε*] *διεπέρασε πόντου* Schoene, *διεπέρασε πόρτιν* Bergk. 410 *λινοπόροις*] *λινοπόροισί τ᾽* ed. Cantabr. 419 non expedio. 421 *τὰς συνδρ. πέτρας*] *πέτρας τὰς ξυνδρ.* Badham. 430 *καὶ* delet Herm. 444 *ἑλιχθεῖσα*] requiritur verbum quod significet c o n s p e r s a. 447 *τήνδ᾽*] *δ᾽* Herm., delet Badh. 452—455 locus nondum emendatus. 454 *ὕπνων* Herm. 466 *δι-*

δοὺς et 477 κακὸν corrupta. 481 f. μακρὰν leg., cetera non ex pedio. 486 οὐχ] οὐδ' Herm. 498 γύναι] φύσει ci. Nck. 505 σοι] σή ci. Nck. 514 ὡς vix sanum. 516 τοῦτ' ἔρα] τοῦδ' ἔρα Barnes., τοῦθ' ὅρα Seidl. 541 ἀπωλόμην] ἀπῳχόμην Nck. et Badh. 555 εἰ] ἦ Nck. 559 φεῦ· ὡς εὖ] ὡς φεῦ Nck. 566 ἀπώλετο] ἀπώνατο ci. Nck. 571 πτηνῶν] τυφλῶν ci. Nck. e Diogenian. VIII, 26. Hesych. Phot. Suid. v. Τύφλων ὄν. 573 sq. verba nondum sanata. 580 μάλιστά γ' οὕτω] μάλιστα τοῦτο Nck. 589 αὖθις] οὐδ' ὃς ci. Nck. 592 οἶσθας ους τ' ἐγὼ φιλῶ ci. Nck. 593 σὺ] ζῇ Canter. 630—632 suspicor in codice nostrorum librorum fonte initia versuum deleta fuisse, itaque scripserim 630 καὶ μὴν, 631 ὅσον γε δυνατὸν, 632 πρέποντα γὰρ, 633 ὑγρᾷ τ' ἐλ. 633 κατασβέσω] κατασκεδῶ ci. Geel. 660 Ἑλληνικῶν ci. Nck. 666 Ἀργεία τις] Ἀργειῶτις ci. Nck., cf. Steph. Byz. p. 113, 13 ed. Meinek. 675 κοινῇ δὲ πλεύσας ci. Elmsl. 679 σώζεσθ'] σωθεὶς δ' Dobr. 687 τἄμ' ἅλις φέρειν ci. Bergk, τἄμ' ἅδην φέρω Geel. 692 λήσειν] λιπεῖν Badh. 719 θεοῦ γ'] θεοῦ σ' Nck. μέ πω] γέ πω Nck. 720 καίτοι γ' corruptum. 736 suspectus Badhamo. 737 τῷδε] τῶνδε ci. Nck. 744 δώσω] δώσεις Nck. 749 ἄνακτά γ'] ἀνάκτορ' ci. Nck. 754 αὔτις] οὔτις Nck. 759 πολλῶν] πολλοῖς? 766 θεῶν] τε σῶν Maur. Haupt, θ' ἑῶν Nck. 773 λόγων Seidl. 782 delet Dindorf. 811 suspectus. 813 ἡνίκ'] οὕνεκ' Barnes. 814 οἶσθ' ἐν] οἶσθας Nck. 834 τὸ δέ τι] τότ' ἔτι Fix, qui alterum ἔλιπον addidit. mox αγκάλαις σὲ scripsi pro ἀγκάλαισι. 837 ἐμοῦ ψυχᾷ] τύχαι Elmsl., praetuli τυχᾶν. 864 πατέρ' ἀπάτορα πότμον ἄποτμον ἔλαχον ci. Nck. 881 πελάσαι] πελάσσαι Nck. 884 ναυσίν ed. Cantabr. 895 ἂν οὖν τάδ' ἂν] ἆρ' οὖν, τάλαν Badh. 901 καὶ] κοὐ Ludov. Dindorf. ἀπαγγελῶ] ἀπ' ἀγγέλων Herm., nondum tamen locus sanatus. 907 sq. vitiorum non expertes. 912 οὐδὲν ἔτ' ἐπίσχει μ' ci. Nck. 914 ἔσται πάντ'] ἔστι τἄμ' ci. Schoene. 938 δράσειν] δράσων ed. Cantabr. 942 ἔνθεν μοι] ἔνθ' ἐμὸν Herm. 966 ὠλένῃ suspectum. 990 suspectus. 995 τὴν θεὸν] τὸν λεὼν ci. Nck. 1006 ζῆν] malim ζῶν cum Hartungio. 1010 ἥξω δέ γ' ἥνπερ καυτὸς libri. ἐνταυθοῖ non est Euripideum. 1025 sq. damnavit ed. Cantabr., mihi etiam 1022 sq. suspecti sunt. 1031 ἀνίαις suspectum. 1042 εἶπας] εἶ παρ' Reisk. 1057 καλῶς] καλῶς μ' ci. Nck. 1072 sq. τίς οὐ θέλει; φθέγξασθε δῆτα· ci.

Nck. 1112 *νόστον*] *νᾶσον* Nck. 1113 *ἔνθα τᾶς ἐλαφοκτόνου*] *ἐν ᾇ τᾶς ἑλλανοφόνου* Nck. 1114 *ἀμφίπολον κούραν*] *κούραν ἀμφίπολον* ci. Musgr., rectius fortasse *κοῦραν* (cf. Schol. *Γ*, 130) scripserimus. 1120 in corrupto *μεταβάλλει* latet nominis *δυσδαιμονία* epitheton. 1128—1152 versus depravati, quibus emendandis impares sumus. 1135 *πόδα*] *πόδες* Seidler. 1143 *χοροῖς δὲ σταίην*] *χοροὺς δ' ἱσταίην* Badham. 1144 *παρθένος*] *πάροχος* Nck. 1148 *χαίτας ἁβροπλούτοιο ἐς ἔριν* libri. 1152 ante corruptum *ἐσκίαζον* indicavi lacunam. 1155 *λάμπονται*] *δάπτονται* Iacobs. 1174 *τόδ'*] *γ'* Matth. 1182 *τῶν*] f. *μῶν* cum Badhamo leg. 1185 *πατέρα γε ζῆν*] *ζῆν γε πατέρα* ed. Cantabr. 1204 *δέ σ'*] *δ'* Pariss., suspicor *σ'* librorum auctoritate carere et *γὰρ* scribendum esse. 1210 *συναντῶσιν* Elmsl. 1212 sq. transposuit Nck., partim praeeunte Hermanno. 1213 *οὐδεὶς*] *οὐ δεῖ* Elmsl. 1214 damnavi cum Dindorfio. 1237 *χρυσοκόμαν Φοῖβον* libri, *Φοῖβόν τε χρ.* Herm., *τίκτουσα χρυσοκόμαν* ci. Schoene. 1242 corruptus. 1243 *βακχευθεῖσαν* Dobr. 1249 *ἔτι μιν*] *σὺ δέ νιν* ci. Nck. 1259 *γᾶς ἰὼν*] *γάιον* ci. Nck. 1260 sq. *Λατῷος* addidit Nck., f. *ἀπένασσεν ὁ Λατῷος* praestat. 1266 *δνοφερὰς γᾶς*] *δνοφερὰς* Musgr. 1271 *ἕλιξ'*] *ὄρεξεν* ci. Badham. *ἐκ Διὸς θρόνων*] *εἰς Δῖον θρόνον* Badham. 1272 *χθονίαν*] *χθονίας* Nck. 1273 *μῆνιν* **] *μῆνιν νυχίους τ' ἐνοπάς* libri: extrema verba recte ad 1277 relata sunt, ubi *παῦσε νυχίους ὀνείρους* libri. 1277 *παῦσε*] *παύσειν* ci. Nck. 1278 *δὲ μαντοσύναν*] *δὲ λαθοσύναν* Pariss. et fortasse ceteri, *δ' ἀλαθοσύναν* ci. Nck. 1299 *τῶνδε τῶν πεπραγμένων* (deleto *μέρος*) ci. Nck. 1306 *ἀγγέλλων*] *ἀγγελῶν* ci. Nck. 1309 *ψευδῶς ἔλεγον*] *ἔπλασσον* ci. Badham, *πῶς δ' ἔλεγον* Nck. 1324 *διωγμὸν* Herm. 1325 *ἀγχίπλουν πόρον* corrupta: *ἀγχίπους* ex h. l. affert Hesychius. 1334 *ὕποπτα μέν*] *ὕποπτά μοι* Badham. 1340 *λυθέντες*] *λαθόντες* ci. Nck. 1346 *ταρσῷ κατήρη* Bothe, *ταρσοῦ κατῆρες* Schoene. 1353 *πόντῳ δὲ δόντες* corrupta. 1358 *λόγῳ*] *νόμῳ* ci. Nck. 1362 *τήνδ'*] *τὴν δ'* ci. Nck. 1365 suspectus. 1368 *ἦσαν*] *ἧσσον* ci. Badh. 1386 *ναῦται νεώς* damnat Badham, *νεανίαι* ci. Nck. 1387 *ῥόθια τε*] *τε ῥόθια* Seidler. 1388 *εὔξενον*] *ἄξενον* ed. Cantabr. 1394 *νεὼς* corruptum. 1396 *κῦμα*] *κέντρα* Nck. *δὴ*] *δ' αὖ* Porson. 1418 sq. *ἢ φόνου τοὐν Αὐλίδι* (ita ci. Badh.) *ἀμνημόνευτος θεὰν* ci. Nck. 1435 *πορθμεύεις*] *πορσύνεις* ci. Nck. 1469 *ἐκσώσασά σε*] *ἐξέσωσά σε* schol. Ar. Ran

68, ἐξέσωσα δὲ καὶ πρίν σ' Ἀρ. ci. Nck. 1471 εἰς ταὐτό γε] ἔστω τόδε Dupius. 1486 χρεὼν] χρῆν Dind., mihi versus suspectus.

I O N.

Eurip. Ion, whith notes by C. Badham, London 1852. cf. Philologi vol. VII. p. 161—166.

Vs. 1 ὁ νώτοις χαλκέοισιν οὐρ. ci. Elmsl., ὁ χαλκέοισι νώτοισιν πόλον Badham. 2 ἐκτρίβων suspectum. 19 εὐτοίχῳ ci. Meinekius. 24 ἐκεῖ] ἔτι Barnes. 32 σὺν ἄγγει] ξυγάστρῳ ci. Nck. 52 τροφὰς mihi suspectum. 83 λάμπει] κάμπτει Musgr. 84 πυρὶ τῷδ'] πῦρ τόδ' Pal., πῦρ τόδ' ἀπ' Badh., an τόδε πῦρ? 98 εὐφημεῖν Badh.; mihi γλώσσης ἰδίας 101 offensioni est, tentabam στόμα τ' εὔφημον φρουρεῖτ' ἀγαθόν, τοῖς ἐθέλουσιν μαντεύεσθαι φήμας ἀγαθὰς ἀποφαίνειν. 118 * τὰν] γᾶς τὰν Herm., Badhamo videtur τὰν plantae nomen recondere ac paulo post μυρσίνας θ' ἱερὰν φ. scribendum esse. 128 γε τὸν] γέ τοι ci. Nck. 140 Φοίβου τοῦ] Φοῖβον τὸν Badh. 153—169 et 170—183 strophica videntur, certe στρ. et ἀντ. notas apponunt codices Paris.; fortasse 153—159 et 170—175, 162—169 et 176—183 sibi respondent. 157 οἴκους] τοίχους ci. Badh. 164 σ' ἅ] σ' ἂν ci. Nck. post 175 duo versus excidisse videntur. 168 αἱμάξω σ', εἰ μὴ παύσεις τὰς κ. ᾠδ. ci. Kirchhoff. 178 ante Φοίβου molossum desideramus. 190 τάνδ'] f. τᾷδ' cum Dobraeo leg. 194 ὁρῶ] ἀθρῶ ci. Nck. 201 praefixum *HMIX.* delendum videtur. 203 πυρὶ] πῦρ Nck. πνέουσαν] πνείουσαν ci. Nck. 205 πάντα] πάντῃ ci. Nck. 206 τείχεσι corruptum, πτυχαῖσι vel τύποισι vel τύκαῖσι viri docti. 210 γοργωπὸν] γοργῶπιν Nck. 221 ποδὶ γ] ποδὶ βηλὸν Herm., ποδὶ βαλὸν Dind. 222 αὐδὰν τίνα δὲ θέλεις Pal., αὔδα· τί θέλεις; Nck. τί (pro τίνα δὲ) praeierat Dindorf. 223 μέσον ὀμφαλὸν] μεσομφάλιον Nck. κατέχει δόμος] βωμὸς κατέχει ci. Nck. 226 ἐθύσατε] ἔθυσας ci. Nck., ut mox χρῄζεις et bis πάριθ'. 235 Παλλάδος ἔνοικα corrupta. 237 γενναιότης σοι καὶ] γενναιότητος σοὶ ci. Nck., γενναῖος εἶ τις καὶ Dobr. 251 ἔσχομεν Pal., ἔσχον Stephanus. 255 ἀνερεύνητα] ἀνερμήνευτα Nck. 264 τοσαῦτά γ' εὐτ. ci. Nck. 275 εἶεν· τί — μάτην; (deleto λόγος) Badham. 285 Πύθιος] Φοῖβος ci. Matth. 286 τιμᾷ τιμᾷ] τιμᾷ γ' ἄτιμ' Bothe. 300 σηκὸς Pal., σηκοῖς Arsenius. 301 πότερα] πότερον Ammonius Valck. p. 69.

Eranius Philo p. 169. 324 *τεκοῦσ᾽ ἥτις*] *τεκοῦσα, τίς* Hermannus, cf. Lud. Dindorfius in Thes. L. Gr. vol. V. p. 1709. 334 *μαθεῖν*] *λαβεῖν* ci. Nck. 354 *ταῦτ᾽ ἂν* et *εἶχεν μέτρα* ci. Elmsl. 355 et 356 sedem mutare iussit Herm., versum *οὔκουν κτλ.* Ioni, alterum *ἀδικεῖ κτλ.* Creusae tribuens. sed plura in his turbata sunt. 358 *μοῦνος, οὐ δίκαια δρᾷ* ci. Nck. 361 *καὶ*] *ἃ* ci. Nck. *μή γ᾽ ἐπ᾽ οἶκτόν μ᾽*] *μή μ᾽ ἐπ᾽ οἶκτον* Nck. et *οἶκτον* (pro *οἶκτόν μ᾽*) Par. E. 374 *εἰς γὰρ τοσοῦτον*] *εἰς τοὔσχατον γὰρ* ci. Badham. 377 *δι᾽ οἰωνῶν πτεροῖς* corrupta. 379 *ἄκοντα*] *ἀνόνητα* Stephanus. 381 *βροτῶν*] *βροτοῖς* Par. E et Stob. 382 *μορφαὶ*] *μορφαῖς* Stob. 383 *βίον*] *βίῳ* Flor. 2 et Stob., unde *ἕνα δ᾽ ἂν εὐτυχῆ — βίον* scripserim cum Dobr. 390 *ἀλλ᾽ ἐᾶν χρὴ τάδ᾽*] *ἄλλως ἔδη * χρῇ τάδ᾽* Nck., post *ἔδη* fortasse *δὴ* excidit. 396 *καὶ προβῇ*] *κἀμ᾽ ὀλῇ* vel *καβολῇ* Stobaeus, *κἀποβῇ* Nck. 404 *ἀφίκου*] *ἀφίγμην* ci. Badh. 408 *μάντευμ᾽*] *μαντεῖον* ci. Nck. 431 *φιλοῦσα γῆς* Pal., *φιλοῦσα τῆς* ci. Nck. 434 *προσήκει τοὖδας*] *προσῆκέ μ᾽ οὐδὲν* Iustinus Martyr, *προσῆκόν γ᾽ οὐδὲν* Nck. 448 *πάρος*] *πέρας* Iustinus Martyr, *πέρα* Conington. 457 *πότνα*] *μάκαιρα* Pal. et pr. m. Flor. 2, quod recipiendum. 459 *Ὀλύμπου*] *Οὐλύμπου* Nck. 462 *μεσόμφαλος*] *μεσσόμφαλος* Nck. 467 *τοῦ Φοίβου* supplementum metricum. 473 *θνατοῖς*] f. *βροτοῖς*? 475 *καρποτρόφοις* Dobr. 477 *νεάνιδες ἧβαι* corruptum. 486 *θαλάμων τ᾽ εἶεν*] *τ᾽ εἶεν θαλάμων* Pal., *θαλάμων τ᾽ ἀεὶ* ci. Nck. 511 *ἔχοντα* (pro *ἔχουσαι*) libri. 523 corruptus. 523 *γνωρίσας*] *χωρίσας* ci. Nck., *γνώρισον* alii. 524 *ἀμούσους*] *ἀμοίρους* Nck. *ξένους*] *ξένε* ci. Nck. 528 *ἐμοὶ*] *ἐμοῦ* libri. verba *κλύειν ἐμοῦ* ab interpolatore suppleta esse puto. 545 *νέου*] *λόγου* Pal. 551 *ἐν τῷ*] *ἐν τοῦ* Madvicus, *ἔν του* Badh. 554 *ὁ πότμος σ᾽ ἐξεῦρε τέκνον* libri. 558 *νῦν — ὁρᾶν* e Bacch. 924 arcessita. 594 *μηδὲν καὶ οὐδὲν ὢν κεκλήσομαι* libri. 601 *φόβον*] *ψόγον* Musgr. 602 *λογίων*] *σοφῶν* ci. Badh. 605 *ἔχουσι κἀξιώματα*] *ἔχοντες ἀξίωμά τε* Stobaeus, *ἔχοντες ἀξιώματος* Badh. 607 *ἐλθὼν*] *ἔλθω* ci. Nck. 614 et 615 ego, 616 et 617 Dind. damnavimus. 621 *τῆς πάλαι θρυλουμένης* Stob. 624 *βίον*] *βίου* Nck. 634 *ἀνθρώπων*] *ἀνθρώπῳ* Badh. 641 *ὢν*] *ἐν* ci. Nck. 646 *δ᾽ ἐμαυτῷ*] *δέ μ᾽ αὐτοῦ* Badh. 674 *λόγοισιν*] *νόμοισιν* Conington. 677 *ἄλλας γε*] *ἀλάστων* Herm. 679 *ἴδῃ*] *ἤδη* Pal., *εἰδῇ* Nck. 691 *τόδε τ᾽ εὔφημα* Pal., *τάδε θεοῦ φῆμα* Nck. 692 non expedio. 704 *οἴχοιτ᾽ ὄλοιτ᾽ ὦ* ci. Nck. 713 *νέων*] *νέου* Hartung. 714 *ἵνα*]

ἰὼ Badham. 722 ξενικὸν] ξένων ci. Nck. 731 ἃ (pro ὃ) Pal. 737 τοῦ σοῦ παλαιοὺς ἐκ γένους Bothe. 743 στείβων χθόνα ci. Badh. 751 ἀπίστους] ἄπιστον Madvicus. 780 ἐκτελῆ] ἐντελῆ ci. Nck. 782 ἄφατον ἄφατον] ἄφατον ἄρρητον ci. Badh. 787 ἐκ θεοῦ] ἐκ ναοῦ ci. Nck. 790 ἔλαβεν alterum addidit Herm. num recte? 801 ἀκύρωτον] ἀκήρυκτον ci. Nck. 828 ἐλθὼν] λαθὼν Musgr., de ceteris non liquet. 830 sq. abesse mallem. 844 ἢ γὰρ] ἤτοι ci. Badham. 847 damnat Dindorf, 848 sq. Badham. 856 οὐδεὶς] οὐδὲν malim cum Dobr. 865 στέρομαι παίδων, στέρομαι δ' οἴκων ci. Nck. 877 κακοβουλευθεῖσ'] κακοβουληθεῖσ' Badham. 886 αὐγὰν] αὐγὰν αἰθέρος Pal., f. πρὸς τάνδ' αὐγὰν αἰθέρος αὐδῶ leg. ante 887 versus excidisse videtur. 902 καὶ delendum ci. Nck. 905 παιᾶνας μέλπων] non habent in stropha quae respondeant. 916 σός γ'] γ' om. Pal., unde ὁ δ' ἐμὸς καὶ σὸς γενέτας ἀμ. ci. Nck. 925 οὔτοι] οἴκτου ci. Nck. 927 sq. obscuri et corrupti. 968 πάτραν σὴν δυστυχοῦσαν Badh. mihi 967 sq. spurii videntur. 984 τοὐμὸν κακίζεις Badh. 995 Ἀθάνας libri. Ἀθάνα et ἔχει ci. Nck. 999 οἶσθ' ἦ] οἶσθας Dindorf. 1007 χρυσέοισι Fix. 1010 δέρος] δῶρον Stephanus, γέρας Reisk. 1014 ἀριθμὸν ὧν λέγεις ci. Nck. 1046 sq. ὅταν — θέλῃ] ὅπου — θέλει Stob. Fl. 54, 22. 1064 ἅ τε — ἐλπίς] ὦ νῦν ἐλπὶς φέρετ' Pal., ᾧ νυν ἐλπὶς ἐφαίνετ' ci. Badham. 1065 δαίμων] f. τλάμων cum Cantero leg. 1068 μορφὰς κάτεισιν] κάτεισι μορφάς Herm. 1069 γ' ἑτέρους] an πατρίων? 1071 ὀμμάτων ἐν] ὄμμασι Pal., f. ὄμμασιν καὶ leg. 1088 πόνον] δόμον ci. Nck. 1133 σεμνῶν Dobr. 1136 ἀκτῖνας] ἀκτῖνος Dobraeus. βίον corruptum. 1154 χρυσήρη πώλω libri. 1171 supplementa varia tentata sunt. 1195 Βυβλίνου Blomfield. 1198 ἀπεσπείσθη ci. Nck. 1231 γὰρ φανερὰ] φ. γὰρ ci. Nck. 1233 θοᾶς] τ' ὀλοᾶς ci. Nck. 1234 μιγνυμένων φοναῖς? 1254 suspectus. 1259 κἂν] ἢν ci. Nck. 1273 δωμάτων] δικτύων ci. Dobr. 1274 δόμους] μυχούς? 1286 κἄπειτ' ἔκτανες] κᾆτ' ἔκτανές με Musgr. (pro με praetuli σύ), fortasse tamen κἄπειτ' ἀπέκτας leg. 1288 librorum vitia tenui; tentabam πατέρα δ' οὐσίαν λέγω, sicut Hartungius. 1289 σὺ δ' οὐκέτ' εἶ interpolatorem redolent. 1296—1299 post 1303 collocavit Nck. 1298 οὐ λόγοις] ὡς λέγεις ci. Nck. 1306 θεηγόρους ci. Nck. 1321 ποδὶ] πόδα Badh. 1325 λεγόμεσθ'] ἐλεγόμεσθ' Nck. 1329 προγόνοις] προγονοῖς Nck. 1331 ταῦτα] δῆτα? 1335 ἔκλαβ' suspectum, ἔκμαθ'

Hartung. 1337 ἄγγος χερὸς] ἄγγους κύτος ci. Nck. 1343 ὁ θεὸς — δόμοις Pal., ὁ θεὸς — δόμοις σ' Nck. 1356 Ἀσίαν Ald. et fortasse codices, Ἀσίδ' ci. Nck. 1377 μητρὸς τροφῆς] ἐπιστροφῆς ci. Nck. 1388 οὐδ'] οὐχ ci. Nck. 1396 πολλὰ — οἶσθά] πολλὴ — ἦσθά Hartung. 1404 οὐ] οὖν Boiss. 1405 τε σῶν] γε σῶν Pal., τ' ἔσω Tyrwhitt. 1406 ῥυσιάζομαι λόγῳ corrupta. 1415 φράσω γε] φράσωμεν ci. Nck. 1416 λέγ' ὡς ἔχει τοι· ci. Nck. ἡ τόλμα γε] ἡ τόλμη γε Dind., ἥ γε τόλμα Herm. 1426 εὐστοχεῖς Pierson. 1427 δράκοντες ἀρχαῖόν τι] δράκοντε μαρμαίροντε Porson, δράκοντε σαρκάζοντε Badham. 1434 σκόπελον] σκόπελος Stephanus. εἴσηγ.] ἔξηγ. Scaliger. 1436 ἀκηράτου] ἀγηράτου Badham. 1453 ἰὼ γύναι, πόθεν] πόθεν ἰὼ γύναι ci. Nck. 1469 ὑμῖν ἐγώ] ἡμῖν θεός ci. Nck. 1471 γε addidit Nck. 1491 ἐνῆψα (vel ἀνῆψα) libri, ἐξῆψα Fix. 1502 μὲν] μὲν αἱ Matth. 1510 ἀνθρώπων] ἀνθρώπῳ Badh. 1517 μαθεῖν] παθεῖν ci. Nck. 1521 γὰρ] σοι Schol. Eur. Phoen. 1530 ὅστις] οὔτις ci. Nck. ut Hartungius. 1531 σ' addidit Nck. 1537 ἀληθῶς ci. Nck. 1543 γάμους] γονὰς ci. Nck. 1553 με φεύγετε] με λεύσσετε Elmsl. 1562 νομίζῃς] κομίζῃ σ' Lenting. 1569 θεῷ] θεῶν Nck. 1574 τῆς γ'] τῆς δ' Pal., f. τῆσδ' leg. 1577 γῆς κἀπιφυλίου] τε κἀπιφύλιοι Badham. 1579 Τελέων] Γελέων Canter. inter hunc et sequentem versum nonnulla excidisse ci. Badham.

CYCLOPS.

Eur. Cyclops recensuit G. Hermannus, Lips. 1838.

Vs. 7 θένων] aut θείνων aut θενὼν leg. 16 ἐρετμοῖς] ἐπ' ἐρετμοῖς Herm. 41 πᾷ δὴ γενναίων μὲν] δὴ del. Nck., μὲν Herm. 49 οὐ τάδ' οὔ, οὐ] σὺ τάδ' οὔ, κοὺ Nck. 51—54 tentabam: ὦ ὕπαγ' ὦ κεράστα, | ἢ ῥίψω πέτρον κατὰ σοῦ | Κύκλωπος ἀγροβότα | μηλοβότα στασίωρον. 56 σποράς] γονάς L. Dindorf. 65 οὐ τυμπάνων ἀλαλαγμοί] οὐ τυπάνων ἀραγμοί Nck. 66 κρήναισι] κρήναις Nck. 68 νύσσα μετὰ] λυσσάματα Nck. 88 φέροντας] φέρονται Par. E, φέρουσι Elmsl. 75 σείεις Flor. 1. 2, unde pro οἰοπολοῖς — σείων; suspicabar οἰοπολῶν — σείεις; 100 τόνδ'] τοῖσδ' Herm. 118 ἔχοντες] οἰκοῦντες Nck. 124 ἥκιστά γ', οἵπερ ci. Nck. 136 βοὸς] Διὸς Athenaeus, δῖον (an Δηοῦς?) ci. Nck. 145 ὡς ὁρᾷς] εἰσορᾷς Nck. praeeunte Har-

tungio. ante 147 aut duo aut quattuor versus videntur intercidisse. 153 ὡς καλὴν ὀσμὴν] γεῦσιν ὡς καλὴν Herm. coll. Antiatt. p. 87, 33. 166 ῥῖψαί τ'] ῥῖψαί μ' Kirchhoff. λευκάδος] λισσάδος Hartung. 172 οὐ κυνήσομαι] οὐκ ὠνήσομαι verissime Kirchhoff. 184 κλῳὸν Dindorf. 197 οὐ δεινόν] τί (vel ποῦ) δεινόν; ci. Nck. 198 μεγάλα γ'] μεγάλ' ἂν Nck. 202 γ' εὖ] γε Nck. 213 καὶ τἄστρα] τά τ' ἄστρα Choerob. 244 πλήσωσι Kirchhoff. 260 ἐπεί γ' ἐλήφθη Heath. 265 μά θ'] τά θ' Herm. 288 φίλους ab interpolatore additum videtur. 299 εἰς λόγους ἀποστρέφῃ] εἴ σε λόγος ἔτι στρέφει tentabam. 315 καὶ λαλίστατος] παιπαλίστατος aut καὶ λαλητικὸς ci. Nck. 317 εὐμορφία ci. Nck. 329 βορέας] βορρᾶς Nck. 342 ξένιά τε] ξένια δὲ Nck. 343 τόνδε λέβητα γ'] λίβα λέβητά θ' ci. Nck. 344 ἀμφέψει ci. Nck. 361 et 362 non intellego. 370 δωμάτων ἐφεστίους ξενικοὺς] μάταν ἐφεστίους Herm. 376 οὐκ ἔργοις Kirchhoff. 382 χθόνα] στέγην Musgr. ἐπεὶ λεπαίαν τήνδ' ἐσήλθομεν πέτραν ci. Nck. 393—395 versus nondum expediti. 404 ἐφῆκεν] ἔθηκεν ci. Nck. 439 sq. exhibui vitiosam librorum scripturam, nisi quod τόνδ' in τὸν δ' mutavi. καταφαγεῖν] κατ' αὖ φαγεῖν ci. Nck. σίφωνα dummodo verum sit, de gutture intellegam. 469 ὥσπερ ἐκ] ὡσπερεὶ ci. Nck. 490 καὶ κλ.] κατακλ. Herm., τάχα κλ. Fix. 499 δεμνίοις τε ξανθὸν] δεμνίοισί τ' ἄνθος Dindorf. 513 φίλος ὢν supplet Herm. 514 nondum emendatus. 527 χρὴ] χρῆν Nck. σῶμ'] σ' ὧδ' ci. Nck. 534 πληγὰς ὁ κῶμος λοίδορόν θ' ὕβριν φέρει Athenaeus. 535 μεθύωμεν] μεθύομεν ci. Nck. 541 ἀνθηρᾶς χλόης] ἀνθηρᾷ χλόῃ ci. Kirchhoff. 551 Vlixis erat, Sileno tribui praeeunte Lentingio. 559 τ' ἔτι] τέ τι Nck. 564 οὐκ ἐμέ] οὐκέτι Nck. 566 λαβὼν] λάβον Nck. γέ μου] τέ μοι Dobr. 593 ὠθεῖ suspectum. 604 Ὀδυσσέως malim. 640 *ΗΜΙΧ.*] *ΟΔ.* Nck. 654 κινδυνευτέον Schol. Plat. p. 922, a, 1 ed. Turic. 667 οὐδὲν ὄντες corrupta. 668 τάσδ'] τῆσδ' Nck. 684 διαφεύγουσ' ἔτι ci. Nck. 685 ἐπεὶ τῇδ' εἶπας.] ἐπείγειν εἶπας; Nck. 686 περιάγουσίν σε] περιάγου, κεῖσε, Nck. 688 ἀλλ' οὐκέτ' ἀλλὰ] ἄλλου μετάλλα Nck. ibidem οὗτος] οὔτις Florens Christianus, praetuli *ΟΥΤΙΣ* propter ambiguitatem a choro quaesitam. 692 ὅπερ γ' ὁ φύσας μ' edebatur, sed μ' om. Flor. 1. 2. Par. G, hinc ὅπερ μ' ὁ φύσας scripsi. 694 διεπυρωσάμην] διεπυρώσαμεν Fix. 701 ὅπερ θέλω?

MEDEA.

Cf. Eurip. Medea ed. A. Kirchhoff, Berol. 1852. cuius editionis ubique rationem habui, ita tamen ut librariorum errores indubia medela ab aliis sublatos praeterirem.

Argum. I. Dicaearcho tribuit codex Florentinus (2). Pag. 193, 2 *καὶ* habent libri. 3 *πρὸς γάμον* om. H. 11 *κἀκεῖσε*] *κἀκεῖ* H. 13 et 20 *ἀφεψήσασα* ci. Elmsl. 13 *ποιήσειε*] *ἐποίησε* H. 23 *αὐτὴν*] *οὕτως* addunt libri. Argum. II. Pag. 194, 16 *διὰ τὴν πρὸς Ἰάσονα*] *δυσφοροῦσα τὴν πρὸς Ἰάσονος* H. 25 *Μηδείᾳ, Φιλοκτήτῃ, Δίκτυϊ, Θερισταῖς σατύροις* recte Kirchhoff.

Vs. 5 *ἀρίστων*] *ἀριστέων* Porson. 11 et 12 sedem mutare iubet Schneidewin, mihi pro *ἁνδάνουσα* 11 *λανθάνουσα* scribendum videbatur. 13 *τε*] *δὲ* Stob. Fl. 74, 30. 37 *νέον*] *κακόν* al. 40 delevit Nck., 41 dudum alii. 42 *ἢ*] *μὴ* Nck. 58 *Μηδείας*] *δεσποίνης* al. 68 *παλαίτεροι* Chr. pat. 73 *τόδε*] *τάδε* Chr. pat. et v. l. A. 87 et 88 suspecti. 94 *τινα*] *τινι* ci. Elmsl. 111 *ἒ ἒ αἶ αἶ* A. 123 *ἔμοιγ᾽ οὖν*] *ἐμοὶ γοῦν* Nck. *μεγάλως* num sanum? 135 *βοὰν*] *γόον* Elmsl. 139 sq. *φροῦδα τάδ᾽ ἤδη· ὁ μὲν*] *φροῦδα γὰρ ἤδη τάδ᾽· ὁ μὲν* Porsonus ope schol. h. l. et Aesch. Cho. 319 ed. Schütz. 149 *ἰαχὰν*] *ἀχὰν* Elmsl. 150 *ἀπλάστου*] *ἀπλάτου* Elmsl. 159 *εὐνέταν*] *εὐνήταν* Brunck, an *εὐνάταν*? post 167 excidisse versum paroemiacum ci. Witzschel. 182 *σπεῦσον* (al. *σπεῦσαι*) *πρίν τι κακῶσαι* libri, quod verum puto; corruptus videtur v. 158, ubi *Ζεύς σοι σύνδικος ἔσται* tentabam. 211 *μύχιον* Hermannus. 215 *μέμφησθ᾽* libri plerique, *μέμφοισθ᾽* A fortasse recte. 219 *ἔνεστ᾽ ἐν*] *ἔνεστιν* schol. 228 *γινώσκειν*] *γιγνώσκεις* Musgr. 234 *τοῦτ᾽ ἄλγιον* libri optimi. 246 *ἥλικα*] *ἥλικας* Havn. ut coniecerat Porsonus. 254 *συνουσία*] *κοινωνία* al. 259 *τοσοῦτον οὖν*] *τοσοῦτον δέ* A. Havn. al., f. *τοσοῦτον ἄρα*? 262 *ἣν*] *ἢ* Porsonus; sed fortasse versus spurius est. 279 *εὐπρόσωπος ἔκβασις* ci. Nck. 290 *ἀπηχθῆσθαι* ci. Nck. 291 *μέγα στένειν*] *μεταστένειν* Nck. 317 *βουλεύσῃς*] *βουλεύῃς* Elmsl. 319 *αὔτως* libri, sicut Lex. Bekk. p. 412, 19. Suid. v. *Ἄξιος λαβεῖν*. 329 *πόλις*] *πολὺ* A. Havn. al. 355 sq. delevit Nck. 355 *ἐφ᾽*] *ἔθ᾽* Porson. 359 *προξενίαν*] *πρὸς ξενίαν* libri opt. 373 *ἐφῆκεν* ci. Nck. 398 *σφιν*] *σφι* Par. A. 433 *διδύμους*] *διδύμας* A. Havn. al. 443 *σῶν δὲ*] *τῶνδε* libri. 445 *ἀνέστη* A, alii *ἐπέστη* vel *ἐπέστα* vel *μετέστη*. 491 *συγγνώστ᾽ ἂν*]

συγγνωστὸν libri opt. 500 μέν τι] μὲν τί Elmsl. 511 πιστὸν] σεμνὸν Alexander rhetor, σεπτὸν Nck. 565 τί δεῖ] μέλει ci. Elmsl. 567 τὰ ζῶντ'] τά γ' ὄντ' ci. Nck. 573 χρῆν γὰρ] χρῆν ἄρ' Porson. 588 σὺ A. Par. A, μοι Pal. Flor. 2, alii alia. 591 εἶχεν] εἶργεν ci. Nck. 643 δῶμα] δώματα Nck. 647 οἰκτροτάτων] οἰκτρότατον Nck. 654 μύθων] μῦθον Nck. 656 ᾤκτειρεν] ᾤκτισεν Musgr., sed fortasse δυσπέρατον 646 corruptum est. 695 ἦ που libri et Chr. pat. 144, ἦ γὰρ Elmsl., οὔ που probabiliter Witzschel. 703 μὲν om. libri fere omnes, συγγνωστὰ κάρτ' ἄρ' ἦν σε ci. Kirchhoff. 708 καρτερεῖν] καρδίᾳ v. l. 715 θάνοις] θάλοις Nck. 737 ἐνώμοτος libri plerique, utrumque agnoscunt scholia. 738 κἀπικηρυκεύματα schol. 739 τάχ'] οὐκ libri. locus nondum sanatus. versum excidisse ci. Kirchhoff proponens κἀπικηρυκεύματα [δέξαι' ἂν εὔφρων, τοῖς δ' ἐμοῖσι ῥήμασιν] οὐκ ἂν πίθοιο. 741 ἔλεξας] ἔθηκας Nck. ὦ γύναι] ἐν λόγοις v. l. quod fortasse verum. 746 πατέρα — πατρός] Ἡλίου θ' ἁγνὸν σέβας v. l. 748 delevit Nck. 751 ζῶν] γῆς al. 752 Γαῖαν λαμπρόν θ'] Γῆν καὶ λαμπρὸν Kirchhoff. alii scripserunt ὄμνυμι Γαῖαν Ἡλίου θ' ἁγνὸν σέβας (cf. 746). 753 ἐμμένειν] ἐμμενεῖν Schaefer. 778 sq. damnavit Porson, 785 Valck., 786 Elmsl. 790 μέντοι] μέν σοι Chr. pat. 837. 818 γένοιό γ'] γένοι' libri opt., γένοι' ἂν Nck. 824—845 nostris subsidiis restitui vix possunt. 835 ῥοαῖς libri. 840 ἡδυπνόους om. libri optimi. 854 πάντες] πάντη σ' Nck. 857 τέκνων] τέκνον Nck. 867 οὐκ ἂν] οὔ τἂν Herm. 914 ἀφροντιστῶν ci. Nck. 922 αὐτή libri. 923 versus suspectus. 930 ἐξηύχουν libri fere omnes. 943 τήνδε μὴ φεύγειν χθόνα fortasse errore librariorum ex 940 repetita sunt. 966 sq. κεῖνα — τυραννεῖ verba suspecta. 970 τ'] δ' Elmsl. 981 λαβοῦσα delendum esse ci. Nck. 987 sq. deteriorum librorum interpolatio a criticis in maius aucta locum sui dissimilem effecerat. pro ἄταν 987 f. Ἅιδαν leg. 1005 ἔα Medeae male tribuitur, paedagogo ascripsit Kirchhoff. 1045 suspectus. 1056 ποτ'] al. σύγ': fortasse neutrum genuinum. μὴ δῆτα, θυμὲ θυμέ, μὴ ἐργάσῃ τάδε ci. Nck. 1058 σε] με A. 1068 damnavit Pierson. 1077 οἷα τε πρὸς libri opt., οἷά τε πρὸς Nck. 1078 δρᾶν μέλλω] τολμήσω libri plerique. 1088 μίαν addidit Elmsl. 1089 κοὐκ] οὐκ Reisk. 1094 ἀπειροσύναν libri plerique. 1099 ὁρῶ] ἀθρῶ Nck. 1101 θρέψωσι libri. 1107 βίοτον] βιοτὴν Lenting. 1116 φίλαι] an πάλαι? 1119 τ'] δ' Herm.

1132 *τοῖς γε*] *τοῖσι* ci. Nck. 1156 *ὡς*] *ὥς τ'* libri plerique. 1159 *ἠμπέσχετο*] *ἠμπίσχετο* Portus. 1181 *ἀνέλκων* et *ἔκπλεθρον* libri. versus nondum sanatus. 1189 *λευκὴν*] *λεπτὴν* libri fere omnes, *ἄρδην* ci. Nck. 1201 *φαρμάκων*] *φαρμάκοις* libri pauci. 1205 *παρελθὼν* ci. Nck. 1223 *ἀντιστροφήν* Chr. pat. 800 et fortasse schol. 1227 *μωρίαν*] *ζημίαν* libri aut omnes aut optimi, Chr. pat. Etym. Gud. p. 231, 33. 1232 *ξυνάψειν* libri deteriores fortasse recte. 1259 sq. *φονίαν τάλαινάν τ'*] *τάλαιναν φονίαν τ'* Seidler. *φονὰν* (pro *φονίαν*) ci. Nck. 1262 *ἄρα μάταν*] *μάταν ἄρα* Musgr. 1265 *δειλαία*] *δείλαια* Nck. 1272 delevit Nck. 1273—1281 et 1282—1292 sibi respondent: post 1274 duos versus excidisse ci. Schoenius, mihi 1284 sq. suspecti sunt. 1280 *ὧν*] *ὃν* Seidler. 1283 *γυναῖκ'*] *γυναικῶν* libri opt. 1290 *δῆτ'*] *δήποτ'* libri. 1295 *τοῖσδέ γ'*] *τοῖσιν* Pal. Flor. 2, *τοισίδ'* Canter. 1302 *ἔρξουσιν*] *ἕρξουσιν* A et al. 1303 *ἐκσῶσαι*] *ἐκσώσων* A et al. 1304 sq. malim abesse. 1317 *τάσδε — πύλας*] *τούσδε — λόγους* v. l. fuisse videtur. 1322 *ἔρυμα*] *ῥῦμα* ci. Nck. 1333 *σὸν*] *ἑὸν* Nck. 1356 *οὐδ' — οὐδ'* Elmsl., videtur gravior corruptela. 1357 *ἀνατὶ*] *ἄτιμον* al. 1367 *σφε κὴξ.* Pal. Flor. 2. 1371 *οἴμοι*] *ὤμοι* A. Havn., *ὠμοὶ* Burges. 1386—88 suspecti. 1398 *ἔκτανες*] *ἔκανες* Elmsl. 1405 *Ζεῦ, τάδ' ἀκούεις*] *ὦ Ζεῦ, τάδ' ὁρᾷς* v. l. 1409 *κἀπιθοάζω*] *κἀπιθεάζω* Blomfield.

Schol. Ar. Ach. 119: *ἔστι γὰρ ἐν τῇ Μηδείᾳ Εὐριπίδου· ὦ θερμόβουλον σπλάγχνον.*

ORESTES.

Post primam *ὑπόθεσιν* (p. 243, 25 hui. edit.) tres codices Veneti aliud addunt argumentum, quod in codice Havn. 3549 post *πάντες φαῦλοι ἦσαν* (p. 244, 20 hui. edit.) legitur: *Ὀρέστης διὰ τὴν τῆς μητρὸς σφαγὴν ἅμα καὶ ὑπὸ τῶν Ἐριννύων δειματούμενος καὶ ὑπὸ τῶν Ἀργείων κατακριθεὶς θανάτῳ, μέλλων φονεύειν Ἑλένην καὶ Ἑρμιόνην, ἀνθ' ὧν Μενέλαος παρὼν οὐκ ἐβοήθησε, διεκωλύθη ὑπὸ Ἀπόλλωνος. παρ' οὐδενὶ κεῖται ἡ μυθοποιία.*

Titulus huius argumenti non idem est, simpliciter *ἄλλως* Venetorum codex optimus 471, ceterorum alter: *ὑπόθεσις Ὀρέστου Ἀριστοφάνους γραμματικοῦ*, alter: *Ἀριστοφάνους γραμματικοῦ ὑπόθεσις*, de Havn. non constat. Aristophani recte tri-

bui statuit Kirchhoffius, qui praecedens argumentum (p. 243, 1—25 huius edit.) Dicaearcho vindicat. Extrema verba *παρ' οὐδενὶ — μυθοποιία* om. Havn.

Pag. 243, 12 lacunam codd. multi sic explent: *ἐπαγγειλάμενος* (al. *-οι*) *αὐτὸν εἰς βίον προϊέσθαι*. 244, 11 *ἂν* addidit Nck. 20 *φαῦλοι ἦσαν*] *φαῦλοί εἰσιν* Nck. 29 *πολλὰ* delendum ci. Nck. 245, 10 *γοῦν*] *δ' οὖν* ci. Nck. 32 *Ναυπλιείῳ* ci. Nck. 247, 12 *οὐρανοὺς*] *οὐρανὸν* an *οὐρανίους*?

Vs. 13 *ἔριν*] *ἔρις* al. teste schol. 24 *τ'*] *δ'* Elmsl. 30 *οὐχ ἅπαντος* ci. Matth. 35 *ὁ δὲ*] *οὐδὲ* al., *ὅδε* Reisk. *πεσὼν*] *πεσὼν δ'* Reisk., *πεσών τ'* Nck. 84 *σμικρᾶς ῥοπῆς* Hartung. 86 *σὺ δ' εἶ*] *σὺ δ' ἦ* al. 87 *ἥκετον*] *ἥκεις* Eustathius, *ἥκοντ'* ci. Nck. 93 *ὡς ἀσχολοῦσα* ci. Nck. 100 *ὀρθῶς ἐλέγχεις* Hartung. 103 *τ'*] *γ'* Matth. 111 ubi pro *πέμψομαί* alii *πέμψομέν*, damnavit Hermannus. 128 *ἀπέθριξεν* codd. haud pauci cum schol. Aeschyli et Hesychio. 141 sq. *κτυπεῖτε* (al. *ψοφεῖτε*) *μηδ' ἔστω κτύπος ἄπο πρόβατ'*] *κτυπεῖτ' ἀποπρόβατ'* Dionysius Hal. omissis *μηδ' ἔστω κτύπος*, quae verba ex v. 137 repetierunt librarii. 147 *ἀτρεμαίαν*] *ἀτρεμαῖον* Ven. 471, ut coniecerat Herm. 154 *τίνα τύχαν εἴπω* verba suspecta. 159 *φερομένῳ*] *δρεπομένῳ* ci. Nck. *χάριν*] *χαράν* codd. 164 *ἄρ' ἐδίκασε*] *ἀπεδίκασε* Herm. 171 *ἀνὰ*] *ἄρα* Nck. 171 sq. *πόδα σὸν εἱλίξεις μεθεμένα κτύπου*] *μεθεμένα κτύπου πόδα σὸν εἱλίξεις* Porson. 174—181 (*οἰχόμεθα*) choro tribuunt libri, correxit Seidler. 188 *εἶπας* H et alii (al. *εἴπω* vel *εἴποις*), *ἔμπας* Nck. 194 *καλῶς δ' οὔ* choro continuabantur, correxit Seidler. 229 *δέμνια* Mosq. d et Stobaeus. 249 *εἰς τὸν ψόγον*] *εἰς ψόγον* vel *τ' εἰς ψόγον* al., *γὰρ εἰς ψόγον* Hermannus. 251 *σύ νυν*] *σύ τοι* Plut. et Orion Schneidew. p. 42, 26. 257 suspectus. 269 *ἐξαμύνασθαι* libri plerique, *ἐξαμείβεσθαι* Havn. 277 *πλευμόνων* ci. Nck. 284 *ἐπένευσας*] *ᾔνεσας* ci. Nck. 298 *ἴσχναινε*] *ἴσχνανε* vel *ἴσχαινε* al. 303 *ἐπὶ χροῒ βάλε*] *ἐπιβαλοῦ χροΐ* Herm. 319 *ἐλάχετ' ἐν*] *ἐλάχετε* codd. quidam teste Porsono, *ἐλλάχετε* Nck. 322 *ἀμπάλεσθ'* al., *ἀμπολεῖσθ'* ci. Nck. ibidem *αἱμάτων* et mox *δίκας* Iulianus p. 336, B. 327 *φεῦ κακῶν*] *φεῦ* alii, *κακῶν φεῦ* Nck. corruptum *φοιταλέου*, cuius loco requiritur spondeus. 328 *ὦ τάλας*] *ὁ τάλας* H. et al., f. *σύγε τάλας*? 330 *ἔλακε δεξάμενος ἔλακε γαπέδων* ci. Nck. 331 *μυχοί*] *μυχοὶ γᾶς* libri fere omnes. 336 *συμβαλεῖ* Porson. 349 *πολλῇ δ' ἁβρ.*] *πολλῇ ἁβρ.* Dio Chr.; tentabam: *καὶ μὴν βασιλεὺς ὧδ'*

ἁβροσύνῃ Μενέλαος ἄναξ πολλῇ στείχει. 365 τάδ᾽] τόδ᾽ al. 367 πανυστάτοις] ἀρκυστάτοις Nck. 374 παιδὸς] θυγατρὸς H. et al. 383 ἀφύλλους Reiskius. 384 αὐτὸς] αὐτὸν Schaefer. 391 παράλογόν] παρὰ λόγον Nck. 395 τί χρῆμα πάσχεις] Ὀρέστα τλῆμον Stob. ac similiter Clem. Alex. 418 εἰσὶν οἱ θεοὶ] εἰσὶ θεοὶ libri plerique, f. εἰσὶ δὴ θεοὶ leg. 424 ἔφυς κακὸς (vel εἰπὼν κακῶς) libri, ἔφυν φίλος Brunckius, num recte dubito. 439 τί δρῶντες; ἦ τι καὶ σαφῶς εἰπεῖν ἔχεις; ita alios legisse docent scholia, atque εἰπεῖν ἔχεις (pro ἔχεις εἰπεῖν) codd. optimi. 447 πρὸς] εἰς al. 461 ἐξειργασμένοις] ἡμαρτημένοις codd. multi. 475 χρόνιος Ven. 471. 485 ἐν βαρβάροις] ἀφ᾽ Ἑλλάδος v. l. quam sequitur auctor epistolarum Apollon. Tyan. p. 49, 8 ed. Kayser. 491 πρὸς τόνδ᾽ ἀγὼν τίς σοφίας ἥκει πέρι] πρὸς τόνδε σοφίας τις ἂν ἀγὼν ἥκοι πέρι Porsonus, πρὸς τόνδ᾽ ἀγὼν ἂν τί σοφίας εἴη πέρι Nck., cui coniecturae favet Greg. Cor. Rhett. vol. VII. p. 1272. 498 ὑπὲρ] ὑπαὶ Herm. 500 χρῆν] χρῆν δ᾽ H. et al. 506 γένετο] ἐγένετο alii codd., γέγονε Nck. 516 φόνου] φόνῳ al. 535 ἐναντία τοῦτον ὠφελεῖν H. et al., f. ἔναντα τοῦτον ὠφ. 536 sq. delevit Brunckius; propter 564 lacunam indicavi. 546 ἐγὼ δ᾽] ἐγῷδ᾽ Herm. 558 ἰδίοισιν suspectum. 593 versus admodum ieiunus, item 596 suspectus est. 599 ὁ delet Porson. 613 οὐκ ἄκουσαν] οὐχ ἑκοῦσαν Nck. 632 ποῖ] τῷ ci. Nck. 648 εἰς] ὑπ᾽ al. 654 ἀπολάβῃς libri plerique. 656 sq. σωτήριος στάς, ἡμέραν ἡμῶν ὕπερ μίαν πονήσας ci. Nck. 662—64 versus suspecti, genuina excidisse suspicor. 686 'vellem totus versus abesset.' Herm. 696 ὅταν γὰρ ὀργῇ δῆμος εἰς θυμὸν πέσῃ Stob. 700 ἐκπνεύσειεν· ὅταν libri fere omnes, ἐκπνεύσειεν· ἣν ci. Nck. 701 ὅσον θέλεις] ὅσ᾽ ἂν θέλῃς ci. Nck. 750 ἀρίστας] ἀρίστους Tryphon Rhett. vol. VIII. p. 758, ubi σπείρας cum nonnullis Eur. libris. 771 προσήκομεν] προσῆκον ἐμὲ ci. Nck. 775 ἔδρασας] ἔπραξας H. et al. 782 τὸ πρᾶγμά γ᾽] τὸ πρᾶγμ᾽ vel τό γε πρᾶγμ᾽ alii. τὸ δοκεῖν ut videtur optimi libri, τὸ δὲ δοκεῖν Barnes. mihi versus suspectus est. 790 αὖ λέγεις] ἀγγελεῖς al. 812 χρυσέας] χρυσείας Porson. 813 corruptus. 817 δι᾽ αἵματος] διαίματος ci. Nck. 820 τέμνειν] τεμεῖν Porson. 828 σὰν] σὴν al., σὺ Nck. 831—833 mesodum, 834—838 == 839—843 strophicum carmen esse statuit Hermannus. 834 οἷον] οἷον οἷον al. 838 παῖς Ἀγαμεμνόνειος Seidler. 856 damnat Brunck. 876 πόλιν] ὄχλον v. l. 891 καλοῖς] καλῶς Valck., κα-

λοὺς praeeunte Hartungio ci. Nck. 901 ἐπερρόθησαν δ'] λαοὶ δ' ἐπερρόθησαν al. codd., quod probans Porsonus λέγοι delendum esse ci. 906 αὐτοὺς] ἀστοὺς Valck. 913 delet Herm., equidem neque hunc neque praegressum versum intellego. 921 ξυνετὸς — θέλων] ξυνετῶς — σθένων ci. Nck. 922 ἀνεπίληπτον] ἀν-επίπληκτον libri plerique et optimi, ἀνεπίληπτον tamen tueri videtur Hesychius. 933 Δαναΐδαι] Δ. δὲ non debebat edi libris et Eustathio invitis. 936 οὐ] ἢ ci. Nck. 938 χρεών] πρέπον ci. Nck. 962 τὰν addidit Barnes. 975 ἐν πολίταις] ἐν κακοῖς πολίταις Herm.; mihi neque ἐν πολίταις placet nec sanum videtur quod 964 legitur καλλίπαις θεά. 982 αἰωρήμασι videtur delendum. 984 ἀναβοάσωμαι Havn., ἀναβοάσομαι schol. Ar. Plut. 639. unde θρήνους ἵν' ἀναβοάσομαι coniecerim. 985 γέροντι πατρὶ] πατρὶ γέροντι al. 1004 an μοννόπωλον leg.? 1007 ἀεὶ addidit Herm. 1016 post κῶλον libri fere omnes Ὀρέστου addunt, recte opinor: tentabam ἰσάδελφος ἀνήρ, | ἰθυνῶν νοσερὸν κῶλον Ὀρέστου. 1019 νερτέρων] νερτέρου libri optimi. 1025 sq. σιωπῶ, φέγγος — τοῖς ταλαιπώροις μετόν; Herm.; mihi magis placeret: φέγγος εἰ θεοῦ τόδε | οὐκ ἔσθ' ἔθ' ἡμῖν τοῖς ταλ. ὁρᾶν; 1027 ὑπ'] ἀπ' libri multi fortasse recte. 1032 ὑπόμνησιν] ὑπομνήσει Musgr. 1031 codicum vestigiis (cf. Herm.) alia indicatur lectio: μὴ πρὸς θεῶν με περιβάλῃς ἀνανδρίᾳ. 1038 τὸν] τὴν Herm. δόμον (pro γόνον) Aristophanes Byz. 1049 ἐμόν] ἐμοί ci. Nck. 1051 ἀμφὶ] ἀμφοῖν ci. Lobeck. versus Euripide vix dignus. 1056 θανεῖν] an θάνῃς? 1064 τολμήμασι] βουλεύμασι al. 1073 σὴν] σὺ v. l. codicis Augustani. 1079 ἑταιρίαν codd. plerique. 1085 ἦ πολὺ] ἦ που Ven. 471 et al. 1092 ἧς λέχος ἐπῄνεσα] ἧς γε λέχος ἐπῄνεσα Pors., ἧς λέχος σύγ' ᾔνεσας vel ἧς σὺ λέχος ἐφήμισας ci. Nck. 1108 ἀποσφραγίζεται] ἀπασφαλίζεται al. teste schol. 1109 ἀλλ' οὐκέθ'] οὐκ οἶδεν ci. Nck. 1112 οἵους ἐνόπτρων] ὅσους κατόπτρων Aelianus. 1145 delevit Nck. 1148 μέλαν in suspicionem vocavit Herm., item δόρυ et ἔτι 1146 sq. offensioni sunt. 1151 sq. uncis notavit Nck. 1160 νῦν τ' Par. A. Flor. 2 al., pauci νῦν δ', plerique νῦν. 1170 ἐλεύθερος ci. Nck. 1178 τρίτων] τρίτου vel τρίτον al. 1180 συνετόν γ'] συνετὸν codices multi. 1181 ἔχε] ἔχων ci. Nck. 1187 τάφῳ] al. τάφου vel τάφον, quorum nihil satisfacit. 1200 παρῇ] ῥυῇ vel πνέῃ ci. Nck. 1224 suspectus. 1236 ἐγὼ δ' ἐπεβούλευσα] ἐγὼ δ' ἐπένευσα Havn., κἀγὼ δ' ἐπεκέλευσα

schol., ἐγὼ δ' ἐπενεκέλευσα Nck. 1238 ῥῦσαι] ῥύσῃ vel ῥύσει al., quod admitti potest, modo τέκνα; scribas. 1245 damnat Nck. 1247 Πελασγὸν] an παλαιὸν leg.? 1265 debetur Electrae: quomodo corrigam non habeo. 1268 προσέρχεται] πρόσεχε Seidler. 1284 μέλλεθ' οἵ] μέλλετ' ὦ al. 1302 sq. θείνετε et πέμπετε multi libri ignorant. tentabam: καίνετε καίνετ', ὀρούετε δίπτυχα | δίστομα φάσγαν' ἔσω χροὸς ἱέμε|νοι. ubi ἔσω χροὸς pro ἐκ χερὸς praeivit Herm. 1307 δορὶ — ὅθι] δόρει — ὁπόθι Herm. 1319 ἕξω] δείξω Havn. 1323 με] μοι libri opt. 1329 ἐμούς] ἐμοῦ al. 1376 πολιὸν] πόλιον ci. Nck. 1383 θ' addidit Nck. 1393 et 1400 αὐθέκαστα ci. Nck. 1398 γᾶν] γαῖαν H. et al. 1404 οἷος — δόλιος lectore non monito om. Herm. 1437 ὧδ' add. Herm. 1443 ἵνα δαῇς λόγον ἐμοῦ ci. Nck. 1462 κατθανεῖ, κακός] κατθανεῖ κακῶς ci. Nck. 1472 λαιμῶν] λαιμὸν Par. A. Havn. al. 1484 ὅσον] ὅσον ἐς ci. Nck. 1485 ἐγενόμεθ' libri plerique. 1486 φυγὰς ἢ νέκυς ὤν ci. Nck. 1494 παστάδων] θαλάμων Herm. 1502 Τροίας ἔλαβ' ἔλαβε Herm. 1527 μῶρος εἰ δοκεῖς] μῶρος εἶ δοκῶν Havn. 1534 θέλει] θέλῃ H. et al. pro κἀμὲ fort. κἄν με leg. 1596 graviter corruptus aut spurius. 1607 μ' alii libri post γὰρ addunt, alii (quod probabilius puto) post ἁνδάνουσι. item scholia μ' invenerunt. 1608 θυγατρὸς ἀπαρεῖς φάσγανον; ci. Nck. 1609 ἀλλὰ κτ.] ἀποκτενεῖς ci. Nck. 1614 σοὶ] σὲ Morellus, σ' εἰς ci. Nck. 1615 πλήν γ'] πλὴν Havn. 1631 delendus videtur. 1647 καλεῖν] ποτε ci. Herm. 1648 δ'] τ' vel γ' al. unde ἔνθεν δ' ἐπελθὼν ci. Nck. 1684 Ζηνὸς] Διὸς libri optimi cum Tzetz. in Lycophr., Δίοις Nck.

RHESVS.

Argumentum exhibui fere ad fidem codicis A (cf. Dindorfii annot. Oxon. p. 564 sq.), quicum Harleianum 5743 plerisque in rebus consentire postea didici e disputatione Kirchhoffii Philol. vol. VII. p. 559—564.

Pag. 307, 2 πυρκαίειν] δάλλης πυρὰν καίειν Harl., f. δείλης πυρὰ καίειν leg. 6 καὶ add. Havn., ignorant A et Harl.; complura excidisse monuit Kirchhoff. 9 κοίτην ἐλθόντες] ita Havn., κοίτην ..... A, κατηντηκότες σκηνὴν Harl. quod verum videtur. 13 τούτων] τούτοις probabiliter Harl. 15 πολέμου] πολεμίου ci. Nck., πολεμίων Kirchh. 17 ἐχωρίσθησαν] ἀνεχώ-

ϱησαν ci. Nck. 21 φησιν (ita enim pro φασὶν correxit Kirchh.) post αὐτοῦ addit Harl. equidem οἴεται τοῦ supplebam. 308, 2 κομίζουσα Harl. 6 ἔσεσθαι] ἔσεσθαι τὴν στρατείαν Harl. τῶν κοινῶν φανερῷ θανάτῳ] τῷ κοινῷ τοῖς ἐπιφανῶν θανάτῳ Harl., quod τοῖς in τῶν mutato recte probavit Kirchhoff. 10 ὑποφαίνει] ὑποφαίνειν Valck. 13 δὲ] δὲ ἐν αὐτῷ A. Havn. δικαίαν] Δικαίαρχος Nck. 21 τέκος om. A, τέκνον in versu simillimo Eur. Alc. 1136. 25 βιαία] βιαίας al., βιαίως Hermannus Opusc. 3. p. 270. 26 οὐδέν ἐστιν ἄλγιον βάρος] οὐκ ἔνεστι βάρβαρος A. Havn., οὐκ ἔνεστιν ἀλγέων ἄκος ci. Kirchhoff. 309, 5 κατασκοπεύοντες ci. Nck. 6 τοῖς Ἕλλησι om. A. 8 ως — Δόλωνος om. A et al.

Vs. 11 ἢ] ἦ Valck. 17 sq. μῶν τις λόγος ἐκ νυκτῶν ἥκει; τί σὺ γὰρ ci. Nck. 19 στρατιάν, εἰ μή τιν' ἔχων] στρατιάν; τίν' ἔχων Nck. 31 μόναρχοι] μόραρχοι vel μοραγοί ci. Nck. 37 sq. φυλακὰς — στρατιάν delet Nck. praeeunte Dobraeo. 41 πυραίθει] πύρ' αἴθει Hartung (item πύρ' αἴθειν pro πυραίθειν 78 et 824). 51 τινα μέμψιν εἰς ἔμ'] τιν' ἐς ἐμὲ μέμψιν Lindemann. 52 ἦλθες] ἥκεις Chr. pat. 1870. 2299. 2390. 82 ὧδέ γ'] ὧδ' A, ὧδε δ' Harl. 86 φίλοις] ἴσως Chr. pat. 99. 1135. 118 ἢν ἆρα] ἢ ναρά ci. Nck. 130 γνώμην ἄναξ] προθυμίαν Flor. A, γνώμην ἐγώ Chr. pat. 1916. cf. 2231. 148 ὅταν] ὅσ' ἂν ci. Nck. 160 τόσως ἔθηκας] τοσοῦτ' ἔθ. Ald., τόσῳ τέθεικας Elmsl. 162 προσκείμενον] προκείμενον Chr. pat. 1965. 164 λέγω] λέγεις ci. Nck., quod Chr. pat. 1620. 1968 suadet. 165 ἐμῆς τυραννίδος] ἐμὴν τυραννίδα Nck. 175 Οἰλέως] Ἰλέως A, Ἠλέως H, Ἰλεόν Flor. A. 187 αὐτοὺς] αὐτὰς A, αὐτὸς ci. Nck. 197 πόνος δ'] πόνος ὅδ' Nck. 206 σοφοῦ] χρηστοῦ Men. monost. 546. 217 φηλητῶν] φιλητῶν A. H. Flor. 10. Hesychius. 237 τότ' ἐπ'] ποτ' ἐπ' A, ut coniecerat Lachmannus. 252 ποτὶ Μυσῶν corrupta. 262 ἐπὶ γᾶν] ἐς γᾶν Dindorf. 274 μάχας] αἰχμὰς ci. Meinekius, μάχαι Vater. 285 νυκτὸς] μορφῇ Chr. pat. 2096. 2452, quod ὄρφνῃ esse ci. Vater. 296 corruptus. 334 et 335 post 338 transposuit Nck. 334 nuntio tribuebatur, choro ascripsit Hermannus, cui favet Harl. 336—338 choro tribuebantur, correxit Herm. 336 ὅδ' ουν] ὁ δ' οὖν Nck. 340 ὁ χρυσοτευχὴς δ'] δ' om. A. H. οὕνεκ' (οὖν ἐκ A) ἀγγέλου λόγων] οὖν ὅδ' ἀγγέλου λόγῳ Nck. 355 σύ μοι] ἥκεις ci. Nck. 359 εἰπεῖν] ἰδεῖν A. H. Flor. A, unde ᾄδειν probabiliter Bothius. 368 σᾷ] τεᾷ ci. Nck. 373 κώλοις

(πώλους Reisk.) ἐρεθίζων om. A. Havn. Flor. A. **10**. 401 et 402 τίς γάρ σε — πόλει] τίνας γὰρ οὐκ ἔστειλα κήρυκας πάλαι Chr. pat. 1719. 423 τέμνω ci. Nck. 425 πρὸς ἧπαρ corrupta. 432 ἀπεῖργε] ἀπῆγε A. H. Flor. A, f. ἀπῆργε leg.? 438 τὰς ἐμὰς corrupta, ἑλκύσας ci. Musgravius. 452 sq. ἕξω — πέρσας] ἥκω — πέρσων tentabat Nck. 460 πρὶν] πρίν τιν' Nck. 462 'Αχιλλεὺς] 'Αχιλεὺς Nck. 464 τόδ'] an τόδ' ἔτ'? 465 ὅπως] ὅτῳ Nck. 466 χειρὸς ἄποινα σᾷ φέροις λόγχᾳ Hartung. 480 ἐλαύνομαι Hartung. 500 καὶ] εἷς Herm. 536 πρὸς δόμων] προδρόμων Musgr. num recte? 539 υἱόν] ὅν Herm. 546 καὶ μὴν αἴω verba corrupta; desideratur substantivum, unde Σιμόεντος genetivus pendeat. 550 μελοποιῷ ἀηδονὶς μερίμνᾳ ci. Nck. ac μερίμνᾳ praebet Harl. 552 ποιμνῆα (coll. Etym. M. p. 678, 54) Hermannus. 561 μοι addunt Havn. Flor. A. Harl. ac sine dubio A, de quo tacetur. tentabam τύχαν οἴμοι φοβερόν. 594 τύχη (pro τυχεῖν) Havn. (quid A? nescitur), f. leg. εὖ δοίη τύχη. 627 ὑμᾶς ci. Musgr. 633 κακτανόντα ci. Nck. 654 δ' additum e Flor. **10**, rectius fortasse omittetur. 658 εἰδὼς] ἰδὼν Chr. pat. 1876. 670 ὑμῖν Valck. 683 damnavit Dindorf. 685 sq. versus corruptissimos intactos reliqui. 691 ἐκ (vel ἐν) νυκτῶν] ἐννύχῳ Nck. 703 εὔχεται] ἐπεύχεται Herm., videtur aliud quid latere. 705 τεκμαίρεσθαι, τί μή;] τί μή om. A. Havn., τεκμαίρεσθαι δοκεῖ Nck. 706 δοκεῖς] δοκεῖ Flor. 2. 716 κάρα] κράτα A. H. πολυπινῆ libri fere omnes. 732 συμφορὰ βαρεῖα Θρηκῶν συμμάχων. ΧΟ. τίς ὁ στένων; edebatur, correxit Herm. 734 ἐσιδών] ἰδών A. Havn., f. εἰδώς? 738 Τρῴων Herm. 766 πλῆκτρά] κλῆθρά ci. Musgr. 778 οἶδ'] οὐδ' A. H. 784 τρίχα om. A. H. recte opinor. 785 ἔρεγκον] ἔρρεγκον Nck. 791 δυσθνήσκοντος] δυσθνητοῦντος Nck. 794 νείεραν] νεῖραν Bothius. 796 πληγῆς] πληγὴν H. et Chr. pat. 1215, fort. πληγῇ praeferendum. 808 πῶς ὦ] πῶς οἱ Nck. 821 μέγας ἐμοὶ μέγας ὦ] μέγα σύ μοι μέγ' ὦ Nck. πολιοῦχον] πολίοχον Vater. sequentia non expedio. 826 ἔβρισ' A. H, ἔβριξα Flor. 2, ἔβριξεν Herm. 827 οὐ μὰ τὰς Σιμοεντίδας] οὐ τας Σιμοεντιάδας Herm. 829 ἔγωγε πάντων] strophae responderet πάντων πάντῃ ἔγωγε. 830 παρὰ καιρὸν] παράκαιρον Vater. 844 τίς δ'] τίς ἂν ci. Nck. 859 ἂν ἀρχοίμεθα] ἄρ' ἀρχοίμ. codex Ambrosianus, ἄρ' ἀρχώμεσθα Nck. 870 ὄχλος] ἄλις ci. Nck. 878 οὕτως] οὕτως θ' ci. Valck. 903 φιλία delendum suspicor. 905 fortasse ἔχοντι λύπῃ, τὸν

σὸν praestat. 912 σὲ om. Flor. 2. ὑπό τ' Ἰλίῳ ὤλεσε μὲν τὰ Τροίας | φίλτατα ci. Herm., ὑπό τ' Ἰλίῳ ὤλεσεν σέ τ' οἰκτρῶς, φίλτατε Valer. 914 ἀνδρῶν delendum suspicor. 924 κείνῳ] κλεινῷ Bothius, δεινῷ Valck. 928 βροτείαν] βρότειον Elmsl., βρότειαν Nck. 950 στρατηλάτης] τροχηλάτης Valck. 952 οὐδὲ μάντεων ci. Nck. ac μάντεων H (in A v. 899 sqq. desunt). 961 ἀποίχεται ci. Nck. 973 σεμνὸς] σεπτὸς Chr. pat. 1776. 987 ἄνωχθε· πληροῦτ' edebatur, sed πληροῦντ' Havn.

TROADES.

De emendanda hac fabula praeclare meritus est A. Kirchhoff, cuius editio prodiit Berolini 1852.

Vs. 17 ἑρκίου libri constanter. 40 λάθρᾳ] οἰκτρὰ Harl. Pal., item γρ. οἰκτρὰ A. certe λάθρᾳ falsum. 68 τύχης A, τύχοις Havn., τύχῃ Pal. Harl. Cyrillus c. Iul. p. 175, a. 70 εἷλκε Harl. Pal. Cyrillus, εἷλε A. Havn. 71 κοὐδὲν] κοὐδὲν γ' editt. cum libris deterioribus, κοὐδὲ ἓν Nck. 75 δύστηνον] δύσνοστον Pal. Harl. 85 εὖ σέβειν Valck. videtur aut h. l. εὐσεβεῖν aut σέβειν 86 vitiosum esse. 97 ὤλεθ' ὕστερον] ἀνταπώλετο ci. Nck. 98 κεφαλά A. Havn. schol. 108 συστελλομένων] συστελλόμενος Victorius. 111 τί δὲ μὴ θρ. A. Havn., τί με θρ. ci. Nck. 113 κλισίας A, κλίσιας Havn., κλίσιος Pal. Harl. 119 ἐπὶ τοὺς] ἐπιοῦσ' ci. Musgr. 119 et 120 sedem mutare iubet Bernhardy. 123 ἱερὰν] ἱερὸν A. H. 122—137 stropham, 138—152 antistrophum esse iussit Seidler. 133 δύσκλειαν] δυσκλείαν Nck. 139 ἐφέδρους Hermannus. 141 ξυρήκει delet Seidler, ξυρίᾳ ci. Herm., ξυρικῇ Kirchhoff. mox πενθήρη Pal. Harl. schol. 144 κόραι et 148 μολπὰν delet Kirchhoff. 159 fortasse ὦ delendum. 161 τλάμων] μελέα H. (et fortasse A), delendum esse ci. Kirchhoff. 171 ἔξω πέμψητ' ci. Nck. 177 ἐπακουσομέναν A. H., ἐκπευσομένα ci. Nck. 188 μ' ἄξει H. (et fortasse A), ἥξει Pal. Harl. pro ᾗ f. εἰς leg. 194 τὰν παρά τε προθύροις] τὰν πὰρ προθύροις ci. Nck. 206 πρόσπολος] πρόπολος Kirchhoff. 225 ναύτα vel ναύται libri, ναίοιν Dindorf, ναύταις Victor. vitii medela nondum reperta. 235 οἶσθά μ'] οἶσθ' (i. e. οἶσθας) Harl. 239 τόδε, φίλαι γυναῖκες, φόβος ἦν πάλαι ci. Nck. 247 alterum τίς add. Nck. 257 κλῇδας κἀπὸ] κλειίδας ἀπὸ A. H., unde κλεῖδας ἀπὸ Nck. 260 τί δ' ὅ] τί δὲ τὸ vel τί δὲ τὸν libri. 261 ποῦ

μοι et 263 *ταύταν* delet Dindorf. 271 *χαλκεομήτορος* A. H., *χαλκεομήστορος* Kirchhoff. 275 *τριβάμονος* A. H. Flor. 285 sq. *ἐνθάδ' ἀντίπαλ' αὖθις*] *ἐνθάδε κἄμπαλιν οὖρισ'* ci. Nck. 287 *πάντων*] *πάντως* Herm. 310 *ἰδοὺ ἰδού*] *ἰοὺ ἰού* Musgr. strophae et antistrophi initium nostris subsidiis nemo facile restituerit. 325 *αἰθέριον*] *ἀέριον* in re simili v. 546, rectius opinor. 332 *ἄναγε πόδα σὸν*] *ἀναγέλασον* A. H. Flor., *ἄναγ' ἕλισσ'* et in stropha (315 sq.) *ἐπεὶ σύ, μᾶτερ, ἐπίδακρυς* | *γόοισι* ci. Nck. 335 *βοάσατ' εὖ*] *βοάσατε* H., *βοᾶτε* Fix. 338 *ἴτ' ὦ*] *ἴτ' ἔξω* A. H. Flor. A. 346 *σ'* addidit Herm. 349 sq. *οὐδέ σ' αἱ τύχαι, τέκνον, ἐσωφρονήκασ'* libri et schol., recepi Seidleri coniecturam parum certam. 356 *ὤθει βιαίως*] *ὤθει αἰσίας* A. H. Flor. locus Oedipum expectat. 367 *γ' ἔξω*] *δ' ἐκτὸς* schol. Eur. Or. 258. 381 *ἄλλοις*] *ἄλλως* Tyrwhitt. 396 *ἵξις*] *ἧξις* Antiatt. 399 *κῆδος*] *κῦδος* A. Flor. Chr. pat. *εἶδεν* A. H. Flor., *εἶχεν* Harl. Pal. Chr. pat. 402 *δυσκλεής* A. H. 417 *σοὶ*] *σοῦ* Herm. 433 *ἐκπλήσας* A. H., *ἀντλήσας* Pal. Harl. 435 *οὗ δὴ*] *ἰδού*, ci. Nck. 436 *ὠμόφρων τ' ἐπιστάτης*] *ὠμοβρώς τ' ὀρειβάτης* libri deteriores, et *ωμοβρώς* confirmare videtur Hesychius II. p. 1544. 437 *θ' ἡ*] *χἡ* Havn. 442 *ζῶν εἶσ' ἐς Ἅιδου*] *καὶ ζῶν ἐς Ἅιδην* A. H. plura v. 442 sq. insunt, quae dubitationem moveant. 452 *ἐκλέλοιφ' ἑορτὰς*] *ἐκλέλοιπα δ' ἑορτὰς* A. H., *ἐκλέλοιπα δ' ὁρτὰς* Nck. 455 *ποῖ σκάφος* A. H. Flor., *ποῦ σκάφος* Pal. Harl. Cicero epist. ad Att. 464 *ἀντιλήψετ'* A. H. Flor. 474 *ἦμεν τύραννοι*] *καὶ μὴν* (vel potius *ἤμην*) *τύραννος* Apsin. Rhett. vol. IX. p. 581 (vol. I. p. 394, 11 ed. Spengel.), cf. *ἤμην ἄνανδρος* Chr. pat. 537. ante 477 lacunam statuit Kirchhoff, mihi *ποτε* 478 suspectum. 479 *κἀκεῖνά τ' εἶδον*] *καὶ ταῦτ' ἐπεῖδον* Apsines. 480 om. Apsines fortasse recte. 482 *ἤκουον, ἀλλὰ τοῖσδ' ἐπεῖδον* Apsines. 498 *ἕνα*] *ἄρα* ci. Nck. 507 *χαμαιπετῆ*] *χαμερπτῆ* A, *χαμερπῆ* H, unde *χαμαιριφῆ* suspiceris. 513 *ἄεισον δακρύουσ'* ci. Kirchhoff. 522 *ἀνὰ δ'*] *ἂν δ'* Hartung. 525 *ἀνάγετε* Pal. Harl., *ἄγετε* A. H., *ἀγάγετε* Nck. 533 *πευκάεντ' οὔρειον* ci. Fix, *πευκάεντ' ὄρειον* Kirchhoff. 538 *λίνοισι*] *λίνου* schol., *λίνοιο* Kirchhoff. 540 *φόνια*] *φοίνιά τε* A. H., *φόνιά τε* Flor. 543 *ἐπὶ*] *ἐπεὶ* Herm. 550 *ἔδωκεν*] *ἀπεδίωκεν* Herm. 565 *νεανιῶν* Bothius. 572—576 choro tribuit Kirchhoff. 578 *ἰώ μοί μοι*] *οἴμοι* schol., *ὤμοι* Seidler. 587 *πόσι*] *πόσις* Seidler. an pro *Ἀχαιῶν* 591 leg. *ἀχέων*? 591—594 Hecubae tribuebantur, Andromachae tribuunt A. Harl.,

secutus sum Kirchhoffium. 592 sq. retinui librorum corruptelam. 595 σχέτλια τάδε] σχετλιώτατα ci. Nck. 600 ἤνυσε] ἤνεσε ci. Nck. 602 ἐμὸν A. H. Flor., ἐγὼ Pal. Harl. verba ἐμὸν — ἐλοχεύθην suspecta sunt. 603 ἔρημος πόλις libri. fortasse leg.: ὦ τέκν', ἔρημα πολίσματ', ἔρ[ημα δὲ........] 607 λάθεται ἀλγέων ἀδάκρυτος librarii supplementum. 608 πεπραγόσι A. H. Flor., πεπονθόσι Harl. Pal. Stob. 609 λύπας ἔχει suspecta. 610 δορὶ] κόρους ci. Nck. 613 τὸ μηδὲν Elmsl. 626 αὐτὴν κἀποβᾶσα] αὐτὴν ἀποβᾶσα A. 634 ὦ τεκοῦσα κάλλιστον γόνον Kirchhoff. 647 ἔνθα suspectum, οὖν γε Chr. pat. 541. 651 εἴσω] εἴσω τε Pal. θηλειῶν δ' ἔπη Chr. pat. 667 sq. suspecti. 679 ἔχειν] ἡγεῖ Fix. 692 τύχη] φορᾷ Chr. pat. 703 ἵν' εἴποτε] ἣν ἄν ποτε Nck. 704 inter παῖδες et ὕστερον (Ἴλιον Pal.) quaedam excidisse statuit Kirchhoff. 710 μή με] μὴ 'μὲ praetuli. 714 σὸν] τὸν A. 720 γάμων] κακῶν ci. Nck. 731 sq. ἡμῖν τε πῶς γυναῖκα μάρνασθαι μίαν οἷόν τε; ci. Nck. 742 sq. spurii videntur. 745 τε] γε Reisk. 747 οὐχ ὡς σφάγιον] οὐ σφάγιον ἶνιν ci. Kirchhoff, οὐ σφάγιον υἱὸν Nck. 748 Ἀσιάδος] Ἀσιάτιδος A. H. Flor., Ἀσίδος ci. Nck. 759 σπαργάνοις σε Pal., σπαργάνοισι A. H. Flor. unde διὰ κενῆς σ' ἄρα ἐν σπαργάνοισι ci. Kirchhoff. 770 αὐχῶ] αὐδῶ ci. Nck. Ζηνὸς ἐκφῦναί σ' ἐγώ ci. Reisk. 774 ἄγετε] ἀλλ' ἄγετε Herm., ἄγε δῆτα ci. Nck. 778 om. A. H. Harl. 788 ἡμετέρας Tyrwhitt, qui 782—789 Talthybio tribuit. post 788 versum excidisse ci. Herm. 800 ἕδραν Pal. 803 λιπαραῖς] λιπαραῖσί τε Seidler. 807 suspectus. 813 ἐξεῖλε νεῶν A. H., ἐξεῖλεν ἰόν ci. Nck. 815 πυρὸς πυρὸς ci. Meinekius. πνοᾷ Pal., βοᾷ A. H. Harl. 828 sq. ἴαχον οἷον οἰωνὸς — βοᾷ verba corrupta. 831 εὐνάτορας] ἄορας Hermannus. 857 πατρίδι] πατρίᾳ Pal. 863 Μενέλεως πάρειμι ci. Nck. alii post Ἀχαϊκόν versum excidisse statuunt. 873 ἐξεμόχθευσαν A. H. Harl., an ἐξεμόχλευσαν? 875 Ἀργείαν Pal. 885 εἰδέναι] εἰσιδεῖν Sextus Empir. p. 219, l. 666, 5. 887 ἐπευξάμην Sext. Emp. p. 219, 3. 901 ἀλλὰ πᾶς A. H. Harl., ἀλλ' ἅπας Pal., ἀλλ' ὁ πᾶς ci. Nck. 905 κτενῶ] κτενών Flor., κτανῶν Pal., κτενῶν Stephanus. 910 μηδαμῇ ci. Fix. 918 τοῖς σοῖσι] f. λόγοισι cum Hartungio leg. 919 ἔτεκεν ἥδε] ἥδ' ἔθηκε ci. Nck. 927 Ἀσιάδ' Pal., Ἀσίας A. H. Harl. Tzetzes exeg. Il., Ἀσίδ' ci. Nck. 928 om. Tzetzes recte opinor. 935 ἃ δ' Pal., ἆρ' A. H. Harl. δ' post ὠλόμην addunt H. Harl. hinc ἆρ' εὐτύχησεν Ἑλλάς;

ὠλόμην δ' ἐγὼ Kirchhoff. 937 *ἐπὶ κάρα*] *εὐκλείας* ci. Nck. 942 *εἴτε καὶ Πάριν*] *εἴτ' ἀλάστορα* ci. Nck. corruptum *ὁ τῆσδ' ἀλάστωρ* 941, ubi *ὁ τῆσδε ληστὴρ* tentare possis. 946 *φρονοῦσ'*] *φρονήσασ'* Nck. 951 *εὐτρεπῆ* ci. Nck. 961 sq. *ἐνδίκως δικαίως* non sanum. vide an ex h. l. derivata sint quae Gramm. Bekk. p. 128, 28 Sophocli tribuit: *πῶς ἂν οὐκ ἂν ἐν δίκῃ θάνοιμ' ἄν;* 969 *θεαῖσι*] *ταῖς θεαῖσι* Pal. et Aristot. Rhet. III, 17. p. 1418, b, 21 ed. Bekk. 970 *ἔνδικα* Pal. 976 *ἦλθον ἐπ'*] *ἦλθον πρὸς* Pal., *ἤλυθον ἐπ'* Kirchhoff. 991 *ὃν ἰδοῦσα* A, *ὃν εἰσιδοῦσα* Pal., *ὃν σύγ' ἰδοῦσα* H. Harl., *σὺ γοῦν ἰδοῦσα* ci. Nck. 1012 *ποῦ* Pal., *ποῖ* A, *πῆ* H. 1051 *οὐκ ἔστ'*] *οὐδεὶς* Aristot. 1068 *ἁλίῳ*] *ἀελίῳ* Nck. 1076 *σὺν δώδεκα*] *συνδώδεκα* Barnes., an *σοι δώδεκα?* 1078 f. *ὀράνιον?* 1087 *τείχεα*] *τύκη* Herm. 1105 *ὅτε*] *ὅς* Nck. 1117 f. *πάθη* leg. 1118 *καιναὶ*] *καινὰ* A. H. Harl., f. *καινὰ καινῶν μεταβάλλουσ' αἶ χθονὶ συντυχία?* 1133 *κἄμ' ᾐτήσατο* ci. Nck. 1155 *ὁρμήσει*] *ὁρμίσῃ* Pal., *ὁρμήσῃ* Nck. 1162 *ὅθ'*] f. *τόθ'* leg. 1163 *μυρίας* Pal., *μυρίους* A. H., *μυρίου* Nck. 1171 *νῦν δ'* Reisk. 1179 *μοι* Pal., om. ceteri libri, *δὴ* ci. Fix. 1184 *ἐπάξω* ci. Nck. pro *κώμους* olim *κομμοὺς* malebam. 1189 *ἄν σε*] *ἂν σῷ* ci. Nck. 1190 *Ἀργ.*] malim *Ἁργ.* 1199 *ἔσταζεν* Pal. 1201 *εἰς καλὸν* ci. Nck. 1209 *νεκροῦ* vel *νεκρῶν* ci. Nck. 1229 *μᾶτερ*] *μάτηρ* Nck. 1239 ***] *Ἑκάβη σας* libri, *θαρσήσασ'* Herm. 1243 *ἔστρεψε τἄνω*] *ἀφανεῖς ἂν ὄντες* A ex sequenti versu. mihi et *ἔστρεψε τἄνω* et *χθονός* suspecta. 1245 *ὑστέραν* Pal., *ἀοιδοῖς* A. H. Harl., *ἀφθίτους* Nck. *βροτῶν* (ut nunc legitur cum *μούσαις* iungendum) suspicor interpolatori deberi, cui suspicioni favet quod pro *δόντες* A. H. *διδόντες* praebent. 1247 *δή*] *δεῖ* Pal. Chr. pat. 1252 *ἐπὶ*] *ἐν* Porson. 1260 *τέταχθεν πιμπράναι* A, unde *τέταχθ' ἐμπιμπράναι* Hartung. 1273 *ἤδη*] *ἦλθε* Nck. 1277 *ἀμπνέουσ'*] *ἐμπνέουσ'* Harl. (Pal.) Chr. pat. 1310 *ἄλγος ἄλγος βοᾶς*] *ἄλγος ἀμβοᾶς* ci. Nck. 1314 *κατακαλύψει* A, *κατεκάλυψε* Herm. 1329 *τάλαιναν* delet Hermannus.

PHOENISSAE.

Argum. Pag. 391, 18 *ἔσφαξαν*] *ἔτρεψαν* Hermannus. 392, 10 *ἀποθανών*] *πηδῶν* ci. Nck. 17 et 18 *ὁ χορὸς — Παλαιτύρου* om. Havn. item Ven. 468. 26 *διὰ κενοῦ*] *διὰ κενῆς* Nck.

Codex Ven. 468 hanc praebet hypothesin: pag. 392, 8—26 hui. edit., tum 394, 6—11. 395. 28—32. 396, 1. 2. 9—15. 391, 1—24. 392, 1—5. sequuntur mythologica quaedam ac deinde haec: *Ἀριστοφάνους γραμματικοῦ ὑπόθεσις ἐπὶ τῇ στρατείᾳ τοῦ Πολυνείκους μετὰ τῶν Ἀργείων ἐπὶ Θήβας καὶ ἀπώλεια τῶν ἀδελφῶν Πολυνείκους καὶ Ἐτεοκλέους καὶ θάνατος Ἰοκάστης. ἐπὶ Ναυσικράτους ἄρχοντος δεύτερος Εὐριπίδης καθῆκε διδασκαλίαν περὶ τούτου. καὶ γὰρ ταῦτα ὁ Οἰνόμαος καὶ Χρύσιππος καὶ σώζεται. ὁ χορὸς συνέστηκεν ἐκ Φοινισσῶν. προλογίζει δὲ Ἰοκάστη.*

Edidit haec A. Kirchhoff (in Mützellii Zeitschr. für das Gymnasialw. 1853. Suppl.-Heft) et ut fieri potuit emendare ac supplere conatus est. Docemur fragmento quantumvis mutilo Phoenissas Oenomaum Chrysippum simul actas esse, quibus accesserit drama satyricum mature deperditum. Nausicratem archontem non novimus; de Lysicrate (olymp. 81, 4) quo minus cogitemus, obstant testimonia veterum (schol. Ar. Av. 348. Ran. 53) et ipsa Phoenissarum compositio.

Pag. 393, 21 *προσάλληλα*] *πρὸς ἄλληλα* Nck. 23 *τῆς*] *τὴν* Nck. 394, 2 *τοῦτον*] *τούτου* Nck. 13 *ἐκλαθόμενος Λάιος* post *θεσπισμάτων* (v. 12) collocanda et pro *ὥσπερ ἢ ὡς* scribendum esse *ἢ ὥσπερ* ci. Nck. 395, 27 *τοῦτο*] *τότε* hic scribendum et mox delendum videtur. 396, 5 *συνάψειν*] *συνάψει* Nck. 17 *ἀέρος*] *ὄρους* ci. Nck. 397, 3 *τούτῳ*] f. *αὐτῷ* leg. 24 *παρ' ἀντιδ.*] *πρὸς ἀντιδ.* Nck.

Vs. 34 *φύσαντας*] *τεκόντας* Strab. 50 *αἴνιγμ'*] *μούσας* al. teste schol. 57 *κόρας δὲ* Wakefield. 128 *γίγαντι*] *γίγαντί τε* Seidler. 129 *ἀστρωπὸς* Dindorf, *στερρωπὸς* vel *γαλερωπὸς* ci. Nck. 132 *λοχαγόν* om. codices plerique, *ὁρῶ νιν* ci. Geel; fortasse versus delendus est. 143 spurius videtur. 166 *χρόνῳ*] *χρονίᾳ* ci. Pluygers. 171 *τίς κυρεῖ*] *τίς πόθεν κυρεῖ* codices fere omnes. 174 *ῥοαί*] *χοαί* Musgr. 175 *ἀελίου*] *Λατοῦς* Badham, *ἁ Λατοῦς* praetuli. 178 sq. verba corruptissima. *ὡς ἀτρεμαῖα κέντρα σώφρονα πώλοις [ἔνθεν ἐκεῖσε] μεταφέρων ἰθύνει* ci. Herm. 183 *κεραύνιόν*] *κεραυνῶν* Nck. 185—187 *ὅδ' ἔστ' αἰχμαλώτιδας ὁ φὰς δόρει | Θηβαίας Μυκήναις ἢ Λερναίᾳ | τριαίνᾳ δώσειν* ci. Nck. 198 *γὰρ*] *δὲ* al. cum Stobaeo. *ἔφυ*] *γένος ἔφυ* Havn. 199 *λόγων*] *ψόγων* Stob. 201 *ἀλλήλας*] *ἀλλήλαις* H. Ven. 471 alii, item Etym. M. p. 420, 19. Choricius p. 110 ed.

Boiss. 207 *κατενάσθη* amicus Kingii et Hermannus. 220 *χρυσοτεύκτοις*] *χρυσεοτεύκτοις* al., *χρυσεοτύποις* Herm. 221 *λάτρις γενόμαν*] *γενόμαν λάτρις* ci. Nck. 259 *ὁρμᾷ παῖς*] *ὡρμᾶθ'* Nck. 296 *ἰὼ* geminant H. et al. 298 *τόνδε*] *τόνδ' ὦ* Seidler. 300 *ὠλέναις*] *ὠλέναισι σαῖσιν* Seidler. 301—303 emendatio tentari poterit, si optimorum librorum scriptura explorata fuerit. 321 *Θήβαις*] *πόλει* ci. Geel. *ᾗ* hoc et praegresso versu delet Seidler. 323 *πενθήρη*] *ἀπενθέα* schol., *πένθει* Herm. 324 *ἄπεπλος, τέκνον, λευκῶν φαρέων* ci. Nck. 325 *ἀμφὶ τρύχη* vel *ἀμφιτρύχη*] *ἀμφιτρυχῆ* Hesych., *ἀμφιτρύγῆ* Anecd. Bekk. p. 389, 19. Suid. 337 *καὶ* delet Herm. 347 *ἀνυμέναι' ἀνίσμηνος ἐκηδεύθης* ci. Badham. 361 *τάρβους*] *τάρβος* Grotius. 370 *δι' ὄσσων νᾶμ'* Musgr., *δίοσσον ὄμμ'* ci. Nck. 386 *ταῦτ'*] *ταὔτ'* Nck. 390 *δυσχερές*] *δυστυχές* al. sicut Plutarchus. 395 *ἀλλ' εἰς*] *ὅπου* Plutarchus et Lucianus. 397 *βλέπουσαί γ'* ci. Herm. 399 *κακῶν*] *θεόν* pauci codices, fortasse neutrum genuinum. 401 *εἶχον ἄν*] *εἶχον αὖ* Valck., malui *εἴχομεν*. 403 *τις δυστυχῆ*] *τι δυστυχῆς* v. d. in Edinb. Review, cf. schol. Hermog. Rhett. vol. V. p. 422. *σὺ δυστυχῆς* Append. Prov. II, 90. 434 *τοκεῦσιν*] *ἑκοῦσιν* schol. 436 *φίλους* suspectum. 449 *πόλιν*] *μόλις* Badham, *πάλιν* ci. Hartung; neutra coniectura difficultates omnes tolluntur. 458 *ταὐτὸν*] *τοῦτον* schol. 473 *πατρὸς δωμάτων* corrupta, *πατρὸς δειμάτων* Geel. nil desideraretur si *δωμάτων — τοῦδ'* et versus 475 abessent. 494 *αὐθέκαστα* ci. Nck. 504 *ἡλίου*] *αἰθέρος* Stob. *οἰστρῶν* (pro *ἄστρων*) ci. Pierson. 519 *μαθήσομαι* ci. Geel. 548 *τῷδ' ἀπονεῖμαι*] *τῷδε νεῖμαι* Salmasius, *τῷδ' ἀπονεμεῖς* Porson. 555—557 pariter ac 558 interpolatori deberi videntur. 565 *πορθουμένης*] *λελησμένης* v. l. 566 *ὀδυνηρὸς*] *δαπανηρὸς* vel *πονηρὸς* v. l., *ὀλέθριος* ci. Geel. 567 *Θήβαισιν, ὀδυνηρὸς δὲ σοί* ci. Geel. 574 *καὶ*] *κεἰς* Valck. 577 *γένοιτ' ἂν ὑφ'*] *γένοιτ' ἀφ'* Dobr. 612 *ὀνοτάζειν* ci. Nck. 616 aut 617 delendus videtur. 630 Valckenario suspectus. 640 *ἀδάμαστον*] *ἀδάματος* Bergk. 642 *οὐ κατοκλάσῃ* Bergk. 644 *δόμων*] *δέμειν* Bergkius, aptius fuerit *νέμειν*. si *κατοικίσαι* recte habet, pro *δόμων* certe *δόμον τ'* expectes. 645 *ὕδατος* suspectum, post *ἵνα τε* trochaeus videtur excidisse. 646 *γᾶς* vel *γαίας*] *ῥυτᾶς* Herm. 655 *Θηβαίαισι*] *Θηβαΐαις* Herm. 663 *ὤλεσε*] *ὄλεσε* Herm. 664 *ὀλεσίθηρος*] *ὄλεσε θηρὸς* ci. Nck. 673 *φίλα γᾷ*] *γᾷ φίλα* liber nullius pretii.

tentabam *φυλέτας*. 674 *εὐηλίοισι*] *εὐαλίοις* Herm. 683 *ἅ*] *ἂν* Herm., sed fortasse *ἐκτήσαντο* 687 corruptum est. 739 *λόγων ἀνάσσειν* huc ex 742 immigrarunt, genuina lectio latet. 755 *ἑλεῖν*] *ἐλθεῖν* al. 766 *ἓν δ' ἡμῖν ἀργόν* optimi libri, *ἓν δ' ἧμιν ἀργόν* Nck. 774 *ταὐτ'*] *τοῦτ'* tacite Herm. 786 *ὥρας*] *ὥραις* libri plerique. 788 *χαροποιοί* libri plerique, *μελοποιοί* v. l. 789 *ὁπλοφόροις*] *ὁπλοφόρῳ* Badham. 790 *αἵματι Θήβας*] *ᾄσματι Θήβαις* Badham. 792 *οὐ πόδα θυρσομανῆ* Musgr. *δινεύεις*] *δινεῖς* Geel. 796 *θίασον ἔνοπλον* corrupta. 806 *γαίας*] *γαίᾳ* ci. Nck. 807 *Σφίγγ' ἀπομουσοτάταισι* ci. Nck. 814 *ἔφυ καλόν*] *ἔφυ φίλον* Valck. 815 *οὐδ' εὐώδινον* tentabam, quae sequuntur non expedio. 824 *πύργος*] *πύργοι* Par. A. *ἀνέσταν* libri opt. 835 *ναυτίλοισιν* al. 847 *ὡς πᾶσ' ἀπήνη*] medelam desidero, *ὡς παῖς ἔτ' ἀπτὴν* Herm. 851 *ἆπος*] *κἆπος* al., *αἶπος* Monk. 878 *τί οὐ* H. et al., plerique *οὐ* om. pro *ποῖα* plerique libri *ὁποῖα*. unde *τί δρῶν οὔ, ποῖα δ' οὐ λέγων ἔπη* conieceris. 882 abesse mallem. 899 *βούλει σὺ μέν; κᾆτ' οὐχὶ* ci. Nck. 904 si genuinus sit, Creonti ascribendus erit. 915 *τί φής; ἐμὸν παῖδ' ἕνεκα γῆς σφάξαι θέλεις;* al. teste schol. 916 *πέφυκε*] *πέφηνε* Camper. 933 *γῇ Κάδμου χοὰς δοῦναι* ci. Nck. 943 Geelio, 968 sq. Hermanno suspecti. 967 *κτείνων*] an *κτείνειν*? 971 *μάντεων* al. 983 *τί δῆτ' ἔρυμα*] *τί δῆτα ῥῦμα* Valck., an *τί δὴ τόδ' ἔρυμα* leg.? 988 suspectus. 990 sq. *μὴ — εὖ* interpolatori tribuo. 1017 *ἐλασσόνων*] *ἔλασσον ἂν* ci. Nck. 1075 uncis notavi, et de hoc versu intellego quod de 1074 scholia tradunt: *ἐν πολλοῖς ἀντιγράφοις οὐ φέρεται ὁ στίχος.* 1116—18 locus nondum expeditus. 1120 *ἀσπίδι*] *ἀσπίδος* al. 1132 *βάθρων*] *βίᾳ* libri plerique, fortasse utrumque coniecturae debetur. 1135 *ἐκπληρῶν*] *ἐκπληροῦν* Geel. 1137 *Ἀργεῖον*] an *ἄχρειον*? 1151 *ἐκνενευκότας* ci. Markland. 1153 *ὁ δ' Ἀρκὰς αὖ κἀργεῖος* ci. Nck. 1183—1185 abesse malim, 1184 Geelio suspectus. 1194 sq. *ἄξονές τ' — νεκροὶ δὲ*] *ἄξονες δ' — νεκροί τε* Fritzschius. 1200 sq. *καλὸν τὸ νικᾶν, οἷς ἀμείνον' οἱ θεοὶ γνώμην ἔχουσιν· οὗ τύχης εἴην ἐγώ* ci. Nck. 1215 *σοῖς*] *σοι* Geel. initium versus nondum emendatum. 1216 *γε*] *με* al. 1225 teste schol. a multis exemplaribus aberat. 1235 *ὅσος*] *ὃς* libri plerique. versus est eius aetatis, quo *ἅλις* quadruplicis erat mensurae. pro *θανών* nonnulli *νεκρός*. 1249 *λόγοισι θαρσύνοντες ἐξηύδων τάδε* al. 1252 et 1253 *νῦν*] *σὺ* ci. Nck. 1253 *κρατεῖς*] *κράτει* Nck.

1255 ἐμπύρου τ᾽ ἀκμῆς ci. Geel. 1256 verba corrupta. ἐναντίων alii multi. 1271 spurius videtur. 1298 βαλλόμεναι ci. Musgr. 1305 φάος] ξίφος Herm. 1312 dicendi genus non Euripideum. 1314 ἀνιαρῶς ci. Nck. 1317 sq. μέτα γέρων] μεταστέλλων al., στελῶν γέρων Herm. 1321 εὖ σέβειν Valck. 1333 πρόσωπον] προνωπὲς ci. Nck. 1338 ἄλλοις] ἄλλα Porson. 1343 damnat Geel. 1350 sq. ἀνάγετ᾽ ἀνάγετ᾽ ὦ κωκυτόν, χεροῖν | ἐπικραδᾶτε λευκοπήχεις κτύπους ci. Nck. transpositionem vocabuli χεροῖν praeivit Hermannus. 1353 αἰνιγμοῖς Geel. 1362 damnavit Valck., item 1360 suspectus; fortasse ante 1359 quaedam exciderunt. 1368 καθαιματῶσαι] καθαιματώσαι Nck. 1369 αἰτῶ] αἰτῶν Canter. 1394 κνήμης al. 1396 γύμν᾽ ἄνωθεν εἰσιδὼν ci. Geel. 1426 ἐκπλήσειν libri nonnulli. 1428 ἐπεὶ τέκνω πεσόντ᾽] ὡς γὰρ πεσόντε παῖδ᾽ al. 1429 προσκυρεῖ Hartung. 1430 τε om. Flor. A. Havn. al., fortasse σὺν παρθένῳ νέᾳ, προθυμίᾳ π.? 1434 μαστῶν] μάτην Nck. 1438 δύστλητον corruptum, δύσθνητον Ven. 471. 1479 δυσποτμώτατοι ci. Nck. 1485—1581 carmen difficillimum, quod nostris subsidiis nemo facile expediat. 1489 αἰδομένα] ἁδομένα H. Aug. d, καδομένα Nck. 1491 στολίδος — τρυφάν Porson. 1494 Θῆβαι] Θήβαις Herm. 1495 σὰ δ᾽] ἅδ᾽ ci. Nck. 1497 δεινῶς et λυγρῶς ci. Nck. 1502 τάδ᾽ αἵματα] τάδε σώματα vel δὲ σώματα codices plerique. 1505 πρόπαρ] πρόπαν libri fere omnes. 1508 πάτερ om. Herm. cum schol. 1511 sq. σπέρματος ἁμερίου | τοσῶνδ᾽ ἔτλα κακῶν ci. Nck. 1516 ἀμφὶ om. Ven. 471. ἀκροκόμοισι κλάδοις | ἑζομένα μονομάτορ᾽ ὀδυρμὸν ἴησιν ἐμοῖς ἄχεσι συνῳδός ci. Nck. 1526 ἐμᾶς] ἐμᾶς ἐν codices plerique. 1527 διδύμοισι γάλακτος] διδύμοις τάλανος ci. Nck. 1534 δώμασιν] δάκρυσιν Herm. 1535 μακρόπουν] μακρόπνουν al., μακρόπονον Nck. 1536—38 verba corrupta. 1539 τί δ᾽] τί μ᾽ al. 1541 με addidit Herm. 1549 τυφλόπλουν ci. Geel. 1557 ξ. βρίθων φονίοισι Seidler. 1596 damnavit Valck. 1601 πεφυκέναι] δυσδαίμονα Ven. 471 et al. 1606 sq. locus desperatus. τέ με] τέ μοι al. 1619 ἔτι νεάζων corrupta. 1637 ἰοῦσαν Flor. 2, εἰσιοῦσαν vel ἐπιοῦσαν ceteri, τελοῦσαν ci. Geel. 1647 ὃς ἐπείθου] εἰ πείθει ci. Nck. 1674 σ᾽] γ᾽ al. 1687 suspicabar πεσεῖν ὅπου μοι μοῖρα, κείσομαι πεσών. 1724 ἐλαύνων] an Κρέων ἐλαύνει? 1726 ἔτλας ἔτλας· οὐχ Herm. 1761 αὐτὸς οἰκτρὸς] αὐτὸς οἰκτρῶς ci. Nck.

ADDENDA.

Iphig. A. 356 *δὲ* om. Pal., unde legendum suspicor *τίν' ἀπορῶν εὕρω πόρον;* 864 *σώσας* libri, *σώσαθ'* recte Kirchhoff. 1034 sq. *σὺ δ' εἰ μέν εἰσι θεοί, δίκαιος ὢν ἀνὴρ ἐσθλῶν κυρήσεις* Hermannus, cui favet Pal. *σύ γε* omittens. 1064 Hermannus emendavit *μάντις ὁ φοιβάδα μοῦσαν εἰδώς.* confirmat Pal. qui *μάντις δ' ὁ φοῖβα μοῦσαν* praebet. 1570 *ἔλεξε δ'· ὦ παῖ Ζηνός, Ἄρτεμις θηροκτόνε* Pal., f. *ὦ θηροκτόνε* legendum deleto *Ἄρτεμις.* Iphig. T. 306 *ἐν μακρῷ* Pal., *οὐ μακρῷ* ci. Nck. 679 *προδούς σε σωθεὶς δ' αὐτὸς* recte Dobr. 966 *διηρίθμιζε* (i. e. *διερρύθμιζε*) Pal. 1220 *σχολῇ* Pal. 1380 *ὥστε μὴ* interpolatoris esse vidit Badham, qui *παρθένῳ* substituit. 1404 *γυμνὰς ἐκ χερῶν ἐπωμίδας* Pal., *γυμνὰς εὐχερῶς ἐπωμίδας* ci. Nck. Phoen. 572 libri optimi Venetus 471 et A haec habent: *πρὸς θεῶν, τρόπαια πῶς ἀναστήσεις δή;* praeclare correxit Kirchhoff: *τρόπαια πῶς ἀναστήσεις Διί;*

CORRIGENDA.

Andr. 656 *θ'* delendum.

Iph. A. 560 corrigendum *ἀεί·* 864 *ἡμή,* 873 *πατὴρ* 1203 *παιδὸς ἐστερήσομαι,* 1469 (sicut Ion. 1277. 1584. Cycl. 567) *τῇ μῇ* Iph. T. 503 *ἢ* 589 *Ἄργος* 610 *ὀρθῶς* 769 *παιδὶ τἀγαμέμνονος·* 1450 *τις ἔστιν* Ion. 359 *τὠμῷ* Med. 526 *λίαν* 1091 *ἐφύτευσαν* 1094 *ἀπειροσύνην* Rhes. 687 *θένης.*

ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ Η ΕΝ ΑΥΛΙΔΙ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΑΓΑΜΕΜΝΩΝ.
ΠΡΕΣΒΥΤΗΣ.
ΧΟΡΟΣ.
ΜΕΝΕΛΑΟΣ.
ΑΓΓΕΛΟΣ.
ΚΛΥΤΑΙΜΝΗΣΤΡΑ.
ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ.
ΑΧΙΛΛΕΥΣ.
ΑΓΓΕΛΟΣ ΕΤΕΡΟΣ.

ΕΥΡΙΠΙΔΟΥ

ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ Η ΕΝ ΑΥΛΙΔΙ.

ΑΓΑ. Ὦ πρέσβυ, δόμων τῶνδε πάροιθεν
στεῖχε. *ΠΡ.* στείχω. τί δὲ καινουργεῖς,
Ἀγάμεμνον ἄναξ; *ΑΓΑ.* σπεύσεις; *ΠΡ.* σπεύδω.
μάλα τοι γῆρας τοὐμὸν ἄυπνον
καὶ ἐπ' ὀφθαλμοῖς ὀξὺ πάρεστιν.
ΑΓΑ. τίς ποτ' ἄρ' ἀστὴρ ὅδε πορθμεύει;
ΠΡ. Σείριος, ἐγγὺς τῆς ἑπταπόρου
Πλειάδος αἴσσων ἔτι μεσσήρης.
ΑΓΑ. οὔκουν φθόγγος γ' οὔτ' ὀρνίθων
οὔτε θαλάσσης· σιγαὶ δ' ἀνέμων
τόνδε κατ' Εὔριπον ἔχουσιν.
ΠΡ. τί δὲ σὺ σκηνῆς ἐκτὸς ἀίσσεις,
Ἀγάμεμνον ἄναξ;
ἔτι δ' ἡσυχία τῇδε κατ' Αὖλιν,
καὶ ἀκίνητοι φυλακαὶ τειχέων.
στείχωμεν ἔσω. *ΑΓΑ.* ζηλῶ σέ, γέρον,
ζηλῶ δ' ἀνδρῶν ὃς ἀκίνδυνον
βίον ἐξεπέρασ' ἀγνὼς ἀκλεής·
τοὺς δ' ἐν τιμαῖς ἧσσον ἐπαινῶ.
ΠΡ. καὶ μὴν τὸ καλόν γ' ἐνταῦθα βίου.
ΑΓΑ. τοῦτο δέ γ' ἐστὶν τὸ καλὸν σφαλερόν·
καὶ τὸ πρότιμον

γλυκὺ μέν, λυπεῖ δὲ προσιστάμενον.
τοτὲ μὲν τὰ θεῶν οὐκ ὀρθωθέντ'
ἀνέτρεψε βίον, τοτὲ δ' ἀνθρώπων
γνῶμαι πολλαὶ
καὶ δυσάρεστοι διέκναισαν.

ΠΡ. οὐκ ἄγαμαι ταῦτ' ἀνδρὸς ἀριστέως·
οὐκ ἐπὶ πᾶσίν σ' ἐφύτευσ' ἀγαθοῖς,
Ἀγάμεμνον, Ἀτρεύς.
δεῖ δέ σε χαίρειν καὶ λυπεῖσθαι·
θνητὸς γὰρ ἔφυς. κἂν μὴ σὺ θέλῃς,
τὰ θεῶν οὕτω βουλόμεν' ἔσται.
σὺ δὲ λαμπτῆρος φάος ἀμπετάσας
δέλτον τε γράφεις
τήνδ' ἣν πρὸ χερῶν ἔτι βαστάζεις,
καὶ ταὐτὰ πάλιν γράμματα συγχεῖς
καὶ σφραγίζεις λύεις τ' ὀπίσω
ῥίπτεις τε πέδῳ πεύκην, θαλερὸν
κατὰ δάκρυ χέων,
καὶ τῶν ἀπόρων οὐδενὸς ἐνδεῖς
μὴ οὐ μαίνεσθαι. τί πονεῖς τί πονεῖς;
τί νέον τί νέον περί σοι, βασιλεῦ;
φέρε κοίνωσον μῦθον ἐς ἡμᾶς.
πρὸς δ' ἄνδρ' ἀγαθὸν πιστόν τε φράσεις·
σῇ γάρ μ' ἀλόχῳ τότε Τυνδάρεως
πέμπει φερνὴν
συννυμφοκόμον τε δίκαιον.

ΑΓΑ. ἐγένοντο Λήδᾳ Θεστιάδι τρεῖς παρθένοι,
Φοίβη Κλυταιμνήστρα τ' ἐμὴ ξυνάορος
Ἑλένη τε· ταύτης οἱ τὰ πρῶτ' ὠλβισμένοι
μνηστῆρες ἦλθον Ἑλλάδος νεανίαι.
δειναὶ δ' ἀπειλαὶ καὶ κατ' ἀλλήλων φόνος

ξυνίσταθ᾽, ὅστις μὴ λάβοι τὴν παρθένον.
τὸ πρᾶγμα δ᾽ ἀπόρως εἶχε Τυνδάρεῳ πατρί,
δοῦναί τε μὴ δοῦναί τε, τῆς τύχης ὅπως
ἅψαιτ᾽ ἄθραυστα. καί νιν εἰσῆλθεν τάδε,
ὅρκους συνάψαι δεξιάς τε συμβαλεῖν
μνηστῆρας ἀλλήλοισι καὶ δι᾽ ἐμπύρων
σπονδὰς καθεῖναι κἀπαράσασθαι τάδε,
ὅτου γυνὴ γένοιτο Τυνδαρὶς κόρη,
τούτῳ συναμυνεῖν, εἴ τις ἐκ δόμων λαβὼν
οἴχοιτο τόν τ᾽ ἔχοντ᾽ ἀπωθοίη λέχους,
κἀπιστρατεύσειν καὶ κατασκάψειν πόλιν
Ἕλλην᾽ ὁμοίως βάρβαρόν θ᾽ ὅπλων μέτα.
ἐπεὶ δ᾽ ἐπιστώθησαν ἐμπέδως, γέρων
ὑπῆλθεν αὐτοὺς Τυνδάρεως πυκνῇ φρενί,
διδοὺς ἑλέσθαι θυγατρὶ μνηστήρων ἕνα,
ὅτου πνοαὶ φέροιεν Ἀφροδίτης φίλαι.
ἡ δ᾽ εἵλεθ᾽, ὅς σφε μήποτ᾽ ὤφελεν λαβεῖν,
Μενέλαον. ἐλθὼν δ᾽ ἐκ Φρυγῶν ὁ τὰς θεὰς
κρίνων ὅδ᾽, ὡς ὁ μῦθος Ἀργείων ἔχει,
Λακεδαίμον᾽, ἀνθηρὸς μὲν εἱμάτων στολῇ
χρυσῷ τε λαμπρὸς βαρβάρῳ χλιδήματι,
ἐρῶν ἐρῶσαν ᾤχετ᾽ ἐξαναρπάσας
Ἑλένην πρὸς Ἴδης βούσταθμ᾽, ἔκδημον λαβὼν
Μενέλαον· ὁ δὲ καθ᾽ Ἑλλάδ᾽ οἰστρήσας δρόμῳ
ὅρκους παλαιοὺς Τυνδάρεω μαρτύρεται,
ὡς χρὴ βοηθεῖν τοῖσιν ἠδικημένοις.
τοὐντεῦθεν οὖν Ἕλληνες ᾄξαντες δορί,
τεύχη λαβόντες στενόπορ᾽ Αὐλίδος βάθρα
ἥκουσι τῆσδε, ναυσὶν ἀσπίσιν θ᾽ ὁμοῦ
ἵπποις τε πολλοῖς ἅρμασίν τ᾽ ἠσκημένοι.
κἀμὲ στρατηγεῖν κάρτα Μενέλεω χάριν
εἵλοντο, σύγγονόν γε. τἀξίωμα δὲ

ἄλλος τις ὤφελ᾽ ἀντ᾽ ἐμοῦ λαβεῖν τόδε.
ἠθροισμένου δὲ καὶ ξυνεστῶτος στρατοῦ,
ἥμεσθ᾽ ἀπλοίᾳ χρώμενοι κατ᾽ Αὐλίδα.
Κάλχας δ᾽ ὁ μάντις ἀπορίᾳ κεχρημένοις
ἀνεῖλεν Ἰφιγένειαν ἣν ἔσπειρ᾽ ἐγὼ
Ἀρτέμιδι θῦσαι τῇ τόδ᾽ οἰκούσῃ πέδον,
καὶ πλοῦν τ᾽ ἔσεσθαι καὶ κατασκαφὰς Φρυγῶν
[θύσασι, μὴ θύσασι δ᾽ οὐκ εἶναι τάδε].
κλύων δ᾽ ἐγὼ ταῦτ᾽, ὀρθίῳ κηρύγματι
Ταλθύβιον εἶπον πάντ᾽ ἀφιέναι στρατόν,
ὡς οὔποτ᾽ ἂν τλὰς θυγατέρα κτανεῖν ἐμήν.
οὗ δή μ᾽ ἀδελφὸς πάντα προσφέρων λόγον
ἔπεισε τλῆναι δεινά. κἀν δέλτου πτυχαῖς
γράψας ἔπεμψα πρὸς δάμαρτα τὴν ἐμὴν
πέμπειν Ἀχιλλεῖ θυγατέρ᾽ ὡς γαμουμένην,
τό τ᾽ ἀξίωμα τἀνδρὸς ἐκγαυρούμενος,
συμπλεῖν τ᾽ Ἀχαιοῖς οὕνεκ᾽ οὐ θέλοι λέγων,
εἰ μὴ παρ᾽ ἡμῶν εἶσιν εἰς Φθίαν λέχος·
πειθὼ γὰρ εἶχον τήνδε πρὸς δάμαρτ᾽ ἐμήν,
ψευδῆ συνάψας ἀμφὶ παρθένου γάμον.
μόνοι δ᾽ Ἀχαιῶν ἴσμεν ὡς ἔχει τάδε
Κάλχας Ὀδυσσεὺς Μενέλεώς θ᾽. ἃ δ᾽ οὐ καλῶς
ἔγνων τότ᾽, αὖθις μεταγράφω καλῶς πάλιν
εἰς τήνδε δέλτον, ἣν κατ᾽ εὐφρόνην * *
λύοντα καὶ συνδοῦντά μ᾽ εἰσεῖδες, γέρον.
ἀλλ᾽ εἶα χώρει τάσδ᾽ ἐπιστολὰς λαβὼν
πρὸς Ἄργος. ἃ δὲ κέκευθε δέλτος ἐν πτυχαῖς,
λόγῳ φράσω σοι πάντα τἀγγεγραμμένα·
πιστὸς γὰρ ἀλόχῳ τοῖς τ᾽ ἐμοῖς δόμοισιν εἶ.

ΠΡ. λέγε καὶ σήμαιν᾽, ἵνα καὶ γλώσσῃ
σύντονα τοῖς σοῖς γράμμασιν αὐδῶ.

ΑΓΑ. πέμπω σοι πρὸς ταῖς πρόσθεν

δέλτοις, ὦ Λήδας ἔρνος,
μὴ στέλλειν τὰν σὰν ἶνιν πρὸς
τὰν κολπώδη πτέρυγ' Εὐβοίας
Αὖλιν ἀκλύσταν.
εἰς ἄλλας ὥρας γὰρ δὴ
παιδὸς δαίσομεν ὑμεναίους.
ΠΡ. καὶ πῶς Ἀχιλεὺς λέκτρων ἀπλακὼν
οὐ μέγα φυσῶν θυμὸν ἐπαρεῖ
σοὶ σῇ τ' ἀλόχῳ;
τόδε καὶ δεινόν. σήμαιν' ὅ τι φής.
ΑΓΑ. ὄνομ' ἀντ' ἔργου παρέχων Ἀχιλεὺς
οὐκ οἶδε γάμους, οὐδ' ὅ τι πράσσομεν,
οὐδ' ὅτι κείνῳ παῖδ' ἐπεφήμισα
νυμφείους εἰς ἀγκώνων
εὐνὰς ἐκδώσειν λέκτροις.
ΠΡ. δεινά γε τολμᾷς, Ἀγάμεμνον ἄναξ,
ὃς τῷ τῆς θεᾶς σὴν παῖδ' ἄλοχον
φατίσας ἦγες σφάγιον Δαναοῖς.
ΑΓΑ. οἴμοι, γνώμας ἐξέσταν,
αἰαῖ, πίπτω δ' εἰς ἄταν.
ἀλλ' ἴθ' ἐρέσσων σὸν πόδα, γήρᾳ
μηδὲν ὑπείκων. ΠΡ. σπεύδω, βασιλεῦ.
ΑΓΑ. μή νυν μήτ' ἀλσώδεις ἵζου
κρήνας, μήθ' ὕπνῳ θελχθῇς.
ΠΡ. εὔφημα θρόει.
ΑΓΑ. πάντῃ δὲ πόρον σχιστὸν ἀμείβων
λεῦσσε, φυλάσσων μή τίς σε λάθῃ
τροχάλοισιν ὄχοις παραμειψαμένη
παῖδα κομίζουσ' ἐνθάδ' ἀπήνη
Δαναῶν πρὸς ναῦς.
ἢν γάρ νιν πομπαῖς ἀντήσῃς,
πάλιν ἐξόρμα, σεῖε χαλινούς,

ἐπὶ Κυκλώπων ἱεὶς θυμέλας.
ΠΡ. ἔσται τάδε. ΑΓΑ. κλήθρων δ' ἐξόρμα.
ΠΡ. πιστὸς δὲ φράσας τάδε πῶς ἔσομαι,
λέγε, παιδὶ σέθεν τῇ σῇ τ' ἀλόχῳ.
ΑΓΑ. σφραγῖδα φύλασσ' ἣν ἐπὶ δέλτῳ
τῇδε κομίζεις. ἴθι. λευκαίνει
τόδε φῶς ἤδη λάμπουσ' ἠὼς
πῦρ τε τεθρίππων τῶν Ἀελίου·
σύλλαβε μόχθων.
θνητῶν δ' ὄλβιος εἰς τέλος οὐδεὶς
οὐδ' εὐδαίμων·
οὔπω γὰρ ἔφυ τις ἄλυπος.

ΧΟ. ἔμολον ἀμφὶ παρακτίαν *στρ.*
ψάμαθον Αὐλίδος ἐναλίας,
Εὐρίπου διὰ χευμάτων
κέλσασα, στενόπορθμον
Χαλκίδα, πόλιν ἐμάν, προλιποῦσ',
ἀγχιάλων ὑδάτων τροφὸν
τᾶς κλεινᾶς Ἀρεθούσας,
Ἀχαιῶν στρατιὰν ὡς κατιδοίμαν
ἀγαυῶν τε πλάτας ναυσιπόρους
ἡμιθέων, οὓς ἐπὶ Τροί-
αν ἐλάταις χιλιόναυσιν
τὸν ξανθὸν Μενέλαον
ἁμέτεροι πόσεις
ἐνέπουσ' Ἀγαμέμνονά τ' εὐπατρίδαν
στέλλειν ἐπὶ τὰν Ἑλέναν, ἀπ'
Εὐρώτα δονακοτρόφου
Πάρις ὁ βουκόλος ἃν ἔλαβε,
δῶρον τᾶς Ἀφροδίτας,

164—184 = 185—205

ὅτ᾽ ἐπὶ κρηναίαισι δρόσοις
Ἥρᾳ Παλλάδι τ᾽ ἔριν ἔριν
μορφᾶς ἁ Κύπρις ἔσχεν.
πολύθυτον δὲ δι᾽ ἄλσος Ἀρ- ἀντ.
τέμιδος ἤλυθον ὀρομένα,
φοινίσσουσα παρῇδ᾽ ἐμὰν
αἰσχύνᾳ νεοθαλεῖ,
ἀσπίδος ἔρυμα καὶ κλισίας
ὁπλοφόρους Δαναῶν θέλουσ᾽
ἵππων τ᾽ ὄχλον ἰδέσθαι.
κατεῖδον δὲ δύ᾽ Αἴαντε συνέδρω
τὸν Οἰλέως Τελαμῶνός τε γόνον,
τοῖς Σαλαμίνοις στέφανον·
Πρωτεσίλαόν τ᾽ ἐπὶ θάκοις
πεσσῶν ἡδομένους μορ-
φαῖσι πολυπλόκοις,
Παλαμήδεά θ᾽, ὃν τέκε παῖς ὁ Ποσει-
δᾶνος, Διομήδεά θ᾽ ἡδο-
ναῖς δίσκου κεχαρημένον,
παρὰ δὲ Μηριόνην, Ἄρεος
ὄζον, θαῦμα βροτοῖσι,
τὸν ἀπὸ νησαίων τ᾽ ὀρέων
Λαέρτα τόκον, ἅμα δὲ Νι-
ρέα, κάλλιστον Ἀχαιῶν·
τὸν ἰσάνεμόν τε ποδοῖν
λαιψηροδρόμον Ἀχιλῆα,
τὸν ἁ Θέτις τέκε καὶ
Χείρων ἐξεπόνασεν,
εἶδον αἰγιαλοῖσι
παρά τε κροκάλαις δρόμον ἔχοντα σὺν ὅπλοις·
ἅμιλλαν δ᾽ ἐπόνει ποδοῖν
πρὸς ἅρμα τέτρωρον

ἑλίσσων περὶ νίκας.
ὁ δὲ διφρηλάτας ἐβοᾶτ᾽
Εὔμηλος Φερητιάδας,
ᾧ καλλίστους ἰδόμαν
χρυσοδαιδάλτους στομίοις
πώλους κέντρῳ θεινομένους,
τοὺς μὲν μέσους ζυγίους,
λευκοστίκτῳ τριχὶ βαλιούς,
τοὺς δ᾽ ἔξω σειροφόρους,
ἀντήρεις καμπαῖσι δρόμων,
πυρρότριχας, μονόχαλα δ᾽ ὑπὸ σφυρὰ
ποικιλοδέρμονας· οἷς παρεπάλλετο
Πηλεΐδας σὺν ὅπλοισι παρ᾽ ἄντυγα
καὶ σύριγγας ἁρματείους.
ναῶν δ᾽ εἰς ἀριθμὸν ἤλυθον στρ.
καὶ θέαν ἀθέσφατον,
τὰν γυναικεῖαν ὄψιν ὀμμάτων
ὡς πλήσαιμι, μείλινον ἁδονάν.
καὶ κέρας μὲν ἦν
δεξιὸν πλάτας ἔχων
Φθιώτας ὁ Μυρμιδὼν Ἄρης
πεντήκοντα ναυσὶ θουρίαις.
χρυσέαις δ᾽ εἰκόσιν κατ᾽ ἄκρα Νη-
ρῇδες ἕστασαν θεαί,
πρύμναις σῆμ᾽ Ἀχιλλείου στρατοῦ.
Ἀργείων δὲ ταῖσδ᾽ ἰσήρετμοι ἀντ.
νᾶες ἕστασαν πέλας·
ὧν ὁ Μηκιστέως στρατηλάτας
παῖς ἦν, Ταλαὸς ὃν τρέφει πατήρ·
Καπανέως τε παῖς
Σθένελος· Ἀτθίδος δ᾽ ἄγων
ἑξήκοντα ναῦς ὁ Θησέως

231 — 241 = 242 — 252

παῖς ἑξῆς ἐναυλόχει θεὰν
Παλλάδ᾽ ἐν μωνύχοις ἔχων πτερω-
τοῖσιν ἅρμασιν θετὸν
εὔσημόν τε φάσμα ναυβάταις.
τῶν Βοιωτῶν δ᾽ ὅπλισμα, ποντίας στρ.
πεντήκοντα νῆας εἰδόμαν
σημείοισιν ἐστολισμένας·
τοῖς δὲ Κάδμος ἦν
χρύσεον δράκοντ᾽ ἔχων
ἀμφὶ ναῶν κόρυμβα·
Λήιτος δ᾽ ὁ γηγενὴς
ἆρχε ναΐου στρατοῦ·
Φωκίδος δ᾽ ἀπὸ χθονός,
Λοκρὰς δὲ τοῖσδ᾽ ἴσας ἄγων
ἦν ναῦς Οἰλέως τόκος κλυτὰν
Θρονιάδ᾽ ἐκλιπὼν πόλιν.
ἐκ Μυκήνας δὲ τᾶς Κυκλωπίας ἀντ.
Ἀτρέως παῖς ἔπεμπε ναυβάτας
ναῶν ἑκατὸν ἠθροϊσμένους.
σὺν δ᾽ Ἄδραστος ἦν
ταγός, ὡς φίλος φίλῳ,
τᾶς φυγούσας μέλαθρα
βαρβάρων χάριν γάμων
πρᾶξιν Ἑλλὰς ὡς λάβοι.
ἐκ Πύλου δὲ Νέστορος
Γερηνίου κατειδόμαν
πρύμνας σῆμα ταυρόπουν ὁρᾶν,
τὸν πάροικον Ἀλφεόν.
Ἐνιάνων δὲ δωδεκάστολοι· στρ.
νᾶες ἦσαν, ὧν ἄναξ Γουνεὺς

253 — 264 = 265 — 276
277 — 288 = 289 — 302

ἆρχε· τῶνδε δ᾽ αὖ πέλας
Ἤλιδος δυνάστορες,
οὓς Ἐπειοὺς ὠνόμαζε πᾶς λεώς·
Εὔρυτος δ᾽ ἄνασσε τῶνδε·
λευκήρετμον δ᾽ Ἄρη
Τάφιον ἦγεν, ὧν Μέγης ἄνασσε
Φυλέως λόχευμα,
τὰς Ἐχίνας λιπὼν * * * *
νήσους ναυβάταις ἀπροσφόρους.
Αἴας δ᾽ ὁ Σαλαμῖνος ἔντροφος ἀντ.
δεξιὸν κέρας πρὸς τὸ λαιὸν ξύναγε,
τῶν ἆσσον ὥρμει πλάταισιν
ἐσχάταισι συμπλέκων
δώδεκ᾽ εὐστροφωτάταισι ναυσίν· ὡς
ἄιον καὶ ναυβάταν
εἰδόμαν λεών·
ᾧ τις εἰ προσαρμόσει
βαρβάρους βάριδας,
νόστον οὐκ ἀποίσεται,
ἐνθάδ᾽ οἷον εἰδόμαν
νάιον πόρευμα,
τὰ δὲ κατ᾽ οἴκους κλύουσα συγκλήτου
μνήμην σώζομαι στρατεύματος.

ΠΡ. Μενέλαε, τολμᾷς δείν᾽, ἅ σ᾽ οὐ τολμᾶν χρεών.
ΜΕ. ἄπελθε· λίαν δεσπόταισι πιστὸς εἶ.
ΠΡ. καλόν γέ μοι τοὔνειδος ἐξωνείδισας.
ΜΕ. κλαίοις ἄν, εἰ πράσσοις ἃ μὴ πράσσειν σε δεῖ.
ΠΡ. οὐ χρῆν σε λῦσαι δέλτον, ἣν ἐγὼ ᾽φερον.
ΜΕ. οὐδὲ σὲ φέρειν δεῖ πᾶσιν Ἕλλησιν κακά.
ΠΡ. ἄλλοις ἁμιλλῶ ταῦτ᾽· ἄφες δὲ τήνδ᾽ ἐμοί.
ΜΕ. οὐκ ἂν μεθείμην. ΠΡ. οὐδ᾽ ἔγωγ᾽ ἀφήσομαι.

ΜΕ. σκήπτρῳ τάχ᾽ ἆρα σὸν καθαιμάξω κάρα.
ΠΡ. ἀλλ᾽ εὐκλεές τοι δεσποτῶν θνῄσκειν ὕπερ.
ΜΕ. μέθες· μακροὺς δὲ δοῦλος ὢν λέγεις λόγους.
ΠΡ. ὦ δέσποτ᾽, ἀδικούμεσθα. σὰς δ᾽ ἐπιστολὰς
ἐξαρπάσας ὅδ᾽ ἐκ χερῶν ἐμῶν βίᾳ,
Ἀγάμεμνον, οὐδὲν τῇ δίκῃ χρῆσθαι θέλει.
ΑΓΑ. ἔα·
τίς ποτ᾽ ἐν πύλαισι θόρυβος καὶ λόγων ἀκοσμία;
ΜΕ. οὑμὸς οὐχ ὁ τοῦδε μῦθος κυριώτερος λέγειν.
ΑΓΑ. σὺ δὲ τί τῷδ᾽ ἐς ἔριν ἀφῖξαι, Μενέλεως, βίᾳ τ᾽ ἄγεις;
ΜΕ. βλέψον εἰς ἡμᾶς, ἵν᾽ ἀρχὰς τῶν λόγων ταύτας λάβω.
ΑΓΑ. μῶν τρέσας οὐκ ἀνακαλύψω βλέφαρον, Ἀτρέως γεγώς;
ΜΕ. τήνδ᾽ ὁρᾷς δέλτον, κακίστων γραμμάτων ὑπηρέτιν;
ΑΓΑ. εἰσορῶ, καὶ πρῶτα ταύτην σῶν ἀπάλλαξον χερῶν.
ΜΕ. οὔ, πρὶν ἂν δείξω γε Δαναοῖς πᾶσι τἀγγεγραμμένα.
ΑΓΑ. ἦ γὰρ οἶσθ᾽ ἃ μή σε καιρὸς εἰδέναι, σήμαντρ᾽ ἀνείς;
ΜΕ. ὥστε σ᾽ ἀλγῦναί γ᾽, ἀνοίξας, ἃ σὺ κάκ᾽ εἰργάσω λάθρᾳ.
ΑΓΑ. ποῦ δὲ κἄλαβές νιν; ὦ θεοί, σῆς ἀναισχύντου φρενός.
ΜΕ. προσδοκῶν σὴν παῖδ᾽ ἀπ᾽ Ἄργους, εἰ στράτευμ᾽ ἀφίξεται.
ΑΓΑ. τί δέ σε τἀμὰ δεῖ φυλάσσειν; οὐκ ἀναισχύντου τόδε;
ΜΕ. ὅτι τὸ βούλεσθαί μ᾽ ἔκνιζε· σὸς δὲ δοῦλος οὐκ ἔφυν.

ΑΓΑ. οὐχὶ δεινά; τὸν ἐμὸν οἰκεῖν οἶκον οὐκ ἐᾷς ἐμέ;
ΜΕ. πλάγια γὰρ φρονεῖς, τὰ μὲν νῦν, τὰ δὲ πάλαι, τὰ δ' αὐτίκα.
ΑΓΑ. εὖ κεκόμψευσαι· πονηρῶν γλῶσσ' ἐπίφθονον σοφή.
ΜΕ. νοῦς δέ γ' οὐ βέβαιος ἄδικον κτῆμα κοὐ σαφὲς φίλοις.
βούλομαι δέ σ' ἐξελέγξαι, καὶ σὺ μήτ' ὀργῆς ὕπο
ἀποτρέπου τἀληθές, οὔτε κατατενῶ λίαν ἐγώ.
οἶσθ' ὅτ' ἐσπούδαζες ἄρχειν Δαναΐδαις πρὸς Ἴλιον,
τῷ δοκεῖν μὲν οὐχὶ χρῄζων, τῷ δὲ βούλεσθαι θέλων,
ὡς ταπεινὸς ἦσθα πᾶσι, δεξιᾶς προσθιγγάνων
καὶ θύρας ἔχων ἀκλῄστους τῷ θέλοντι δημοτῶν,
καὶ διδοὺς πρόσρησιν ἑξῆς πᾶσι, κεἰ μή τις θέλοι,
τοῖς τρόποις ζητῶν πρίασθαι τὸ φιλότιμον ἐκ μέσου;
κᾆτ' ἐπεὶ κατέσχες ἀρχάς, μεταβαλὼν ἄλλους τρόπους
τοῖς φίλοισιν οὐκέτ' ἦσθα τοῖς πρὶν ὡς πρόσθεν φίλος,
δυσπρόσιτος ἔσω τε κλῄθρων σπάνιος. ἄνδρα δ' οὐ χρεὼν
τὸν ἀγαθὸν πράσσοντα μεγάλα τοὺς τρόπους μεθιστάναι,
ἀλλὰ καὶ βέβαιον εἶναι τότε μάλιστα τοῖς φίλοις
ἡνίκ' ὠφελεῖν μάλιστα δυνατός ἐστιν εὐτυχῶν.
ταῦτα μέν σε πρῶτ' ἐπῆλθον, ἵνα σε πρῶθ' ηὗρον κακόν.
ὡς δ' ἐς Αὖλιν ἦλθες αὖθις, χὠ Πανελλήνων στρατὸς

οὐρίας πομπῆς σπανίζων, Δαναΐδαι δ' ἀφιέναι 352
ναῦς διήγγελλον, μάτην δὲ μὴ πονεῖν ἐν Αὐ-
λίδι, 353

* * * * *

κἀμὲ παρεκάλεις· τί δράσω; τίνα δὲ πόρον εὕρω
πόθεν, 356
ὥστε μὴ στερέντας ἀρχῆς ἀπολέσαι καλὸν κλέος;
κᾆτ' ἐπεὶ Κάλχας ἐν ἱεροῖς εἶπε σὴν θῦσαι κόρην
Ἀρτέμιδι καὶ πλοῦν ἔσεσθαι Δαναΐδαις, ἡσθεὶς
φρένας 359
ἄσμενος θύσειν ὑπέστης παῖδα· καὶ πέμπεις ἑκών,
οὐ βίᾳ, μὴ τοῦτο λέξῃς, σῇ δάμαρτι, παῖδα σὴν
δεῦρ' ἀποστέλλειν, Ἀχιλλεῖ πρόφασιν ὡς γαμου-
μένην.
οὗτος αὑτός ἐστιν αἰθὴρ ὃς τάδ' ἤκουσεν σέθεν. 365
μυρίοι δέ τοι πεπόνθασ' αὐτὸ πρὸς τὰ πράγματα·
ἐκπονοῦσ' ἑκόντες, εἶτα δ' ἐξεχώρησαν κακῶς,
τὰ μὲν ὑπὸ γνώμης πολιτῶν ἀσυνέτου, τὰ δ' ἐν-
δίκως
ἀδύνατοι γεγῶτες αὐτοὶ διαφυλάξασθαι πόλιν.
Ἑλλάδος μάλιστ' ἔγωγε τῆς ταλαιπώρου στένω, 370
ἣ θέλουσα δρᾶν τι κεδνόν, βαρβάρους τοὺς οὐ-
δένας
καταγελῶντας ἐξανήσει διὰ σὲ καὶ τὴν σὴν κόρην.
μηδέν' ἄρα χρέους ἕκατι προστάτην θείμην χθονός,
μηδ' ὅπλων ἄρχοντα· νοῦν χρὴ τὸν στρατηλάτην
ἔχειν·

οὐδὲν ἦσθ', ἀλλ' ἐξεπλήσσου τῇ τύχῃ τῇ τῶν θεῶν, 351
ὡς δ' ἄνολβον εἶχες ὄμμα σύγχυσίν τε μὴ νεῶν
χιλίων ἄρχων Πριάμου τε πεδίον ἐμπλήσας δορός. 355
κᾆθ' ὑποστρέψας λέληψαι μεταβαλὼν ἄλλας γραφάς, 363
ὡς φονεὺς οὐκέτι θυγατρὸς σῆς ἔσει μάλιστά γε.

πόλεος ὡς ἄρχων ἀνὴρ πᾶς, ξύνεσιν ἢν ἔχων τύχῃ.
ΧΟ. δεινὸν κασιγνήτοισι γίγνεσθαι λόγους
μάχας θ᾽, ὅταν ποτ᾽ ἐμπέσωσιν εἰς ἔριν.
ΑΓΑ. βούλομαί σ᾽ εἰπεῖν κακῶς αὖ, βραχέα, μὴ λίαν ἄνω
βλέφαρα πρὸς τἀναιδὲς ἀγαγών, ἀλλὰ σωφρονεστέρως,
ὡς ἀδελφὸν ὄντ᾽. ἀνὴρ γὰρ χρηστὸς αἰδεῖσθαι φιλεῖ.
εἰπέ μοι, τί δεινὰ φυσᾷς αἱματηρὸν ὄμμ᾽ ἔχων;
τίς ἀδικεῖ σε; τοῦ κέχρησαι; λέκτρα χρήστ᾽ ἐρᾷς λαβεῖν;
οὐκ ἔχοιμ᾽ ἄν σοι παρασχεῖν· ὧν γὰρ ἐκτήσω, κακῶς
ἦρχες. εἶτ᾽ ἐγὼ δίκην δῶ σῶν κακῶν, ὁ μὴ σφαλείς;
ἢ δάκνει σε τὸ φιλότιμον τοὐμόν; ἀλλ᾽ ἐν ἀγκάλαις
εὐπρεπῆ γυναῖκα χρῄζεις, τὸ λελογισμένον παρεὶς
καὶ τὸ καλόν, ἔχειν; πονηροῦ φωτὸς ἡδοναὶ κακαί.
εἰ δ᾽ ἐγὼ γνοὺς πρόσθεν οὐκ εὖ μετετέθην εὐβουλίᾳ,
μαίνομαι; σὺ μᾶλλον, ὅστις ἀπολέσας κακὸν λέχος
ἀναλαβεῖν θέλεις, θεοῦ σοι τὴν τύχην διδόντος εὖ.
ὤμοσαν τὸν Τυνδάρειον ὅρκον οἱ κακόφρονες
φιλόγαμοι μνηστῆρες. ἦγε δ᾽ ἐλπίς, οἶμαι μέν, θεὸς
κἀξέπραξεν αὐτὸ μᾶλλον ἢ σὺ καὶ τὸ σὸν σθένος.
οὓς λαβὼν στράτευέ γ᾽, οἶμαι δ᾽, εἴσῃ μωρίᾳ φρενῶν·
οὐ γὰρ ἀσύνετον τὸ θεῖον, ἀλλ᾽ ἔχει συνιέναι
τοὺς κακῶς παγέντας ὅρκους καὶ κατηναγκασμένους.

τἀμὰ δ' οὐκ ἀποκτενῶ 'γὼ τέκνα· κοὐ τὸ σὸν μὲν εὖ
παρὰ δίκην ἔσται κακίστης εὔνιδος τιμωρίᾳ,
ἐμὲ δὲ συντήξουσι νύκτες ἡμέραι τε δακρύοις,
ἄνομα δρῶντα κοὐ δίκαια παῖδας οὓς ἐγεινάμην.
ταῦτά σοι βραχέα λέλεκται καὶ σαφῆ καὶ ῥᾴδια·
εἰ δὲ μὴ βούλει φρονεῖν εὖ, τἄμ' ἐγὼ θήσω καλῶς.

ΧΟ. οἵδ' αὖ διάφοροι τῶν πάρος λελεγμένων
μύθων, καλῶς δ' ἔχουσι, φείδεσθαι τέκνων.

ΜΕ. αἰαῖ, φίλους ἄρ' οὐχὶ κεκτήμην τάλας.

ΑΓΑ. εἰ τοὺς φίλους γε μὴ θέλεις ἀπολλύναι.

ΜΕ. δείξεις δὲ ποῦ μοι πατρὸς ἐκ ταὐτοῦ γεγώς;

ΑΓΑ. συνσωφρονεῖν σοι βούλομ', ἀλλ' οὐ συννοσεῖν.

ΜΕ. ἐς κοινὸν ἀλγεῖν τοῖς φίλοισι χρὴ φίλους.

ΑΓΑ. εὖ δρῶν παρακάλει μ', ἀλλὰ μὴ λυπῶν ἐμέ.

ΜΕ. οὐκ ἄρα δοκεῖ σοι τάδε πονεῖν σὺν Ἑλλάδι;

ΑΓΑ. Ἑλλὰς δὲ σὺν σοὶ κατὰ θεὸν νοσεῖ τινα.

ΜΕ. σκήπτρῳ νυν αὔχει, σὸν κασίγνητον προδούς·
ἐγὼ δ' ἐπ' ἄλλας εἶμι μηχανάς τινας,
φίλους τ' ἐπ' ἄλλους. ΑΓΓ. ὦ Πανελλήνων ἄναξ,
Ἀγάμεμνον, ἥκω παῖδά σοι τὴν σὴν ἄγων,
ἣν Ἰφιγένειαν ὠνόμαξας ἐν δόμοις.
μήτηρ δ' ὁμαρτεῖ, σῆς Κλυταιμνήστρας δέμας,
καὶ παῖς Ὀρέστης, ὥς τι τερφθείης ἰδών,
χρόνον παλαιὸν δωμάτων ἔκδημος ὤν.
ἀλλ' ὡς μακρὰν ἔτεινον, εὔρυτον παρὰ
κρήνην ἀναψύχουσι θηλύπουν βάσιν,
αὐταί τε πῶλοί τ'· εἰς δὲ λειμώνων χλόην
καθεῖμεν αὐτάς, ὡς βορᾶς γευσαίατο.
ἐγὼ δὲ πρόδρομος σῆς παρασκευῆς χάριν
ἥκω· πέπυσται γὰρ στρατός, ταχεῖα γὰρ
διῆξε φήμη, παῖδα σὴν ἀφιγμένην.

πᾶς δ' εἰς θέαν ὅμιλος ἔρχεται δρόμῳ,
σὴν παῖδ' ὅπως ἴδωσιν· οἱ δ' εὐδαίμονες
ἐν πᾶσι κλεινοὶ καὶ περίβλεπτοι βροτοῖς.
λέγουσι δ', ὑμέναιός τις ἢ τί πράσσεται;
ἢ πόθον ἔχων θυγατρὸς Ἀγαμέμνων ἄναξ
ἐκόμισε παῖδα; τῶν δ' ἂν ἤκουσας τάδε·
Ἀρτέμιδι προτελίζουσι τὴν νεάνιδα,
Αὐλίδος ἀνάσσῃ. τίς νιν ἄξεταί ποτε;
ἀλλ' εἶα, τἀπὶ τοισίδ' ἐξάρχου κανᾶ,
στεφανοῦσθε κρᾶτα καὶ σὺ Μενέλεώς τ' ἄναξ,
ὑμέναιον εὐτρέπιζε καὶ κατὰ στέγας
λωτὸς βοάσθω καὶ ποδῶν ἔστω κτύπος·
φῶς γὰρ τόδ' ἥκει μακάριον τῇ παρθένῳ.
ΑΓΑ. ἐπῄνεσ', ἀλλὰ στεῖχε δωμάτων ἔσω·
τὰ δ' ἄλλ' ἰούσης τῆς τύχης ἔσται καλῶς.
οἴμοι, τί φῶ δύστηνος; ἄρξομαι πόθεν;
εἰς οἷ' ἀνάγκης ζεύγματ' ἐμπεπτώκαμεν.
ὑπῆλθε δαίμων, ὥστε τῶν σοφισμάτων
πολλῷ γενέσθαι τῶν ἐμῶν σοφώτερος.
ἡ δυσγένεια δ' ὡς ἔχει τι χρήσιμον.
καὶ γὰρ δακρῦσαι ῥᾳδίως αὐτοῖς ἔχει,
ἅπαντά τ' εἰπεῖν. τῷ δὲ γενναίῳ φύσιν
ἄνολβα ταῦτα. προστάτην δὲ τοῦ βίου
τὸν ὄγκον ἔχομεν τῷ τ' ὄχλῳ δουλεύομεν.
ἐγὼ γὰρ ἐκβαλεῖν μὲν αἰδοῦμαι δάκρυ,
τὸ μὴ δακρῦσαι δ' αὖθις αἰδοῦμαι τάλας,
εἰς τὰς μεγίστας συμφορὰς ἀφιγμένος.
εἶεν, τί φήσω πρὸς δάμαρτα τὴν ἐμήν;
πῶς δέξομαί νιν; ποῖον ὄμμα συμβαλῶ;
καὶ γάρ μ' ἀπώλεσ' ἐπὶ κακοῖς ἃ μοι πάρα
ἐλθοῦσ' ἄκλητος. εἰκότως δ' ἅμ' ἕσπετο
θυγατρὶ νυμφεύσουσα καὶ τὰ φίλτατα

δώσουσ᾿, ἵν᾿ ἡμᾶς ὄντας εὑρήσει κακούς.
τὴν δ᾿ αὖ τάλαιναν παρθένον, τί παρθένον;
Ἅιδης νιν ὡς ἔοικε νυμφεύσει τάχα,
ὥς ᾤκτισ᾿· οἶμαι γάρ νιν ἱκετεύσειν τάδε·
ὦ πάτερ, ἀποκτενεῖς με; τοιούτους γάμους
γήμειας αὐτὸς χὥστις ἐστί σοι φίλος.
παρὼν δ᾿ Ὀρέστης ἐγγὺς ἀναβοήσεται
οὐ συνετὰ συνετῶς· ἔτι γάρ ἐστι νήπιος.
αἰαῖ, τὸν Ἑλένης ὥς μ᾿ ἀπώλεσεν γάμον
γήμας ὁ Πριάμου Πάρις, ὅ μ᾿ εἴργασται τάδε.
ΧΟ. κἀγὼ κατῴκτειρ᾿, ὡς γυναῖκα δεῖ ξένην
ὑπὲρ τυράννων συμφορᾶς καταστένειν.
ΜΕ. ἀδελφέ, δός μοι δεξιᾶς τῆς σῆς θιγεῖν.
ΑΓΑ. δίδωμι· σὸν γὰρ τὸ κράτος, ἄθλιος δ᾿ ἐγώ.
ΜΕ. Πέλοπα κατόμνυμ᾿, ὃς πατὴρ τοὐμοῦ πατρὸς
τοῦ σοῦ τ᾿ ἐκλήθη, τὸν τεκόντα τ᾿ Ἀτρέα,
ἦ μὴν ἐρεῖν σοι τἀπὸ καρδίας σαφῶς
καὶ μὴ ᾿πίτηδες μηδὲν ἀλλ᾿ ὅσον φρονῶ.
ἐγώ σ᾿ ἀπ᾿ ὄσσων ἐκβαλόντ᾿ ἰδὼν δάκρυ
ᾤκτειρα καὐτὸς ἀνταφῆκά σοι πάλιν
καὶ τῶν παλαιῶν ἐξαφίσταμαι λόγων,
οὐκ εἰς σὲ δεινός· εἶμι δ᾿ οὗπερ εἶ σὺ νῦν·
καί σοι παραινῶ μήτ᾿ ἀποκτείνειν τέκνον
μήτ᾿ ἀνθελέσθαι τοὐμόν. οὐ γὰρ ἔνδικον
σὲ μὲν στενάζειν, τἀμὰ δ᾿ ἡδέως ἔχειν,
θνήσκειν τε τοὺς σούς, τοὺς δ᾿ ἐμοὺς ὁρᾶν φάος.
τί βούλομαι γάρ; οὐ γάμους ἐξαιρέτους
ἄλλους λάβοιμ᾿ ἄν, εἰ γάμων ἱμείρομαι;
ἀλλ᾿ ἀπολέσας ἀδελφόν, ὅν μ᾿ ἥκιστ᾿ ἐχρῆν,
Ἑλένην ἕλωμαι, τὸ κακὸν ἀντὶ τἀγαθοῦ;
ἄφρων νέος τ᾿ ἦν, πρὶν τὰ πράγματ᾿ ἐγγύθεν
σκοπῶν ἐσεῖδον οἷον ἦν κτείνειν τέκνα.

ἄλλως τέ μ' ἔλεος τῆς ταλαιπώρου κόρης
ἐσῆλθε, συγγένειαν ἐννοουμένῳ,
ἣ τῶν ἐμῶν ἕκατι θύεσθαι γάμων
μέλλει. τί δ' Ἑλένης παρθένῳ τῇ σῇ μέτα;
ἴτω στρατεία διαλυθεῖσ' ἐξ Αὐλίδος.
σὺ δ' ὄμμα παῦσαι δακρύοις τέγγων τὸ σόν,
ἀδελφέ, κἀμὲ παρακαλῶν εἰς δάκρυα.
εἰ δέ τι κόρης σῆς θεσφάτων μέτεστί σοι,
μὴ 'μοὶ μετέστω· σοὶ νέμω τοὐμὸν μέρος.
ἀλλ' εἰς μεταβολὰς ἦλθον ἀπὸ δεινῶν λόγων.
εἰκὸς πέπονθα· τὸν ὁμόθεν πεφυκότα
στέργων μετέπεσον. ἀνδρὸς οὐ κακοῦ τρόποι
τοιοίδε, χρῆσθαι τοῖσι βελτίστοις ἀεί.

ΧΟ. γενναῖ' ἔλεξας Ταντάλῳ τε τῷ Διὸς
πρέποντα· προγόνους οὐ καταισχύνεις σέθεν.

ΑΓΑ. αἰνῶ σε, Μενέλεως, ὅτι παρὰ γνώμην ἐμὴν
ὑπέθηκας ὀρθῶς τοὺς λόγους σοῦ τ' ἀξίως.
ταραχὴ δ' ἀδελφῶν διά τ' ἔρωτα γίγνεται
πλεονεξίαν τε δωμάτων· ἀπέπτυσα
τοιάνδε συγγένειαν ἀλλήλοιν πικράν.
ἀλλ' ἥκομεν γὰρ εἰς ἀναγκαίας τύχας,
θυγατρὸς αἱματηρὸν ἐκπρᾶξαι φόνον.

ΜΕ. πῶς; τίς δ' ἀναγκάσει σε τήν γε σὴν κτανεῖν;

ΑΓΑ. ἅπας Ἀχαιῶν σύλλογος στρατεύματος.

ΜΕ. οὔκ, εἴ νιν εἰς Ἄργος γ' ἀποστελεῖς πάλιν.

ΑΓΑ. λάθοιμι τοῦτ' ἄν. ἀλλ' ἐκεῖν' οὐ λήσομεν.

ΜΕ. τὸ ποῖον; οὔτοι χρὴ λίαν ταρβεῖν ὄχλον.

ΑΓΑ. Κάλχας ἐρεῖ μαντεύματ' Ἀργείων στρατῷ.

ΜΕ. οὔκ, ἢν θάνῃ γε πρόσθε· τοῦτο δ' εὐμαρές.

ΑΓΑ. τὸ μαντικὸν πᾶν σπέρμα φιλότιμον κακόν.

ΜΕ. κοὐδέν γ' ἀρεστὸν οὐδὲ χρήσιμον παρόν.

ΑΓΑ. ἐκεῖνο δ' οὐ δέδοικας ὅ τι μ' εἰσέρχεται;

ΜΕ. ὃν μὴ σὺ φράζεις, πῶς ὑπολάβοιμ᾽ ἂν λόγον;
ΑΓΑ. τὸ Σισύφειον σπέρμα πάντ᾽ οἶδεν τάδε.
ΜΕ. οὐκ ἔστ᾽ Ὀδυσσεὺς ὅ τι σὲ κἀμὲ πημανεῖ.
ΑΓΑ. ποικίλος ἀεὶ πέφυκε τοῦ τ᾽ ὄχλου μέτα.
ΜΕ. φιλοτιμίᾳ μὲν ἐνέχεται, δεινῷ κακῷ.
ΑΓΑ. οὐκοῦν δόκει νιν στάντ᾽ ἐν Ἀργείοις μέσοις
λέξειν ἃ Κάλχας θέσφατ᾽ ἐξηγήσατο,
κἄμ᾽ ὡς ὑπέστην θῦμα κᾆτα ψεύδομαι,
Ἀρτέμιδι θύσειν· ὃς ξυναρπάσας στρατόν,
σὲ κἄμ᾽ ἀποκτείναντας Ἀργείους κόρην
σφάξαι κελεύσει. κἂν πρὸς Ἄργος ἐκφύγω,
ἐλθόντες αὐτοῖς τείχεσιν Κυκλωπίοις
ξυναρπάσουσι καὶ κατασκάψουσι γῆν.
τοιαῦτα τἀμὰ πήματ᾽. ὦ τάλας ἐγώ,
ὡς ἠπόρημαι πρὸς θεῶν τὰ νῦν τάδε.
ἕν μοι φύλαξον, Μενέλεως, ἀνὰ στρατὸν
ἐλθών, ὅπως ἂν μὴ Κλυταιμνήστρα τάδε
μάθῃ, πρὶν Ἅιδῃ παῖδ᾽ ἐμὴν προσθῶ λαβών,
ὡς ἐπ᾽ ἐλαχίστοις δακρύοις πράσσω κακῶς.
ὑμεῖς τε σιγήν, ὦ ξέναι, φυλάσσετε.
ΧΟ. μάκαρες οἳ μετρίας θεοῦ στρ.
μετά τε σωφροσύνας μετέ-
σχον λέκτρων Ἀφροδίτας,
γαλανείᾳ χρησάμενοι
μαινολῶν οἴστρων, ὅθι δὴ
δίδυμ᾽ Ἔρως ὁ χρυσοκόμας
τόξ᾽ ἐντείνεται χαρίτων,
τὸ μὲν ἐπ᾽ εὐαίωνι πότμῳ,
τὸ δ᾽ ἐπὶ συγχύσει βιοτᾶς.
ἀπενέπω νιν ἁμετέρων,
Κύπρι καλλίστα, θαλάμων.

543 — 557 = 558 — 572

εἴη δέ μοι μετρία μὲν
χάρις, πόθοι δ' ὅσιοι,
καὶ μετέχοιμι τᾶς Ἀφροδί-
τας, πολλὰν δ' ἀποθείμαν.
διάφοροι δὲ φύσεις βροτῶν, ἀντ.
διάφοροι δὲ τρόποι· τὸ δ' ὀρ-
θῶς ἐσθλὸν σαφὲς αἰεί·
τροφαί θ' αἱ παιδευόμεναι
μέγα φέρουσιν εἰς ἀρετάν,
τό τε γὰρ αἰδεῖσθαι σοφία,
τάν τ' ἐξαλλάσσουσαν ἔχει
χάριν ὑπὸ γνώμας ἐσορᾶν
τὸ δέον, ἔνθα δόξα φέρει
κλέος ἀγήρατον βιοτᾷ.
μέγα τι θηρεύειν ἀρετάν,
γυναιξὶν μὲν κατὰ Κύπριν
κρυπτάν, ἐν ἀνδράσι δ' αὖ
κόσμος ἐνὼν ὁ μυριοπλη-
θὴς μείζω πόλιν αὔξει.
ἔμολες, ὦ Πάρις, ᾗτε σύ γε
βουκόλος ἀργενναῖς ἐτράφης
Ἰδαίαις παρὰ μόσχοις,
βάρβαρα συρίζων, Φρυγίων
αὐλῶν Ὀλύμπου καλάμοις
μιμήματα πνέων.
εὔθηλοι δὲ τρέφοντο βόες,
ὅτι σε κρίσις ἔμηνε θεᾶν,
ἅ σ' Ἑλλάδα πέμπει
τῶν ἐλεφαντοδέτων πάροι-
θεν δόμων, ὃς τᾶς Ἑλένας
ἐν ἀντωποῖς βλεφάροισιν
ἔρωτα δέδωκας,

ἔρωτι δ' αὐτὸς ἐπτοάθης.
ὅθεν ἔρις ἔριν
Ἑλλάδα σὺν δορὶ ναυσί τ' ἄγει
ἐς Τροίας πέργαμα.
ἰὼ ἰώ· μεγάλαι μεγάλων
εὐδαιμονίαι· τὴν τοῦ βασιλέως
ἴδετ' Ἰφιγένειαν ἄνασσαν
τὴν Τυνδαρέου τε Κλυταιμνήστραν,
ὡς ἐκ μεγάλων ἐβλαστήκασ'
ἐπί τ' εὐμήκεις ἥκουσι τύχας.
θεοί τοι κρείσσους οἵ τ' ὀλβοφόροι
τοῖς οὐκ εὐδαίμοσι θνατῶν.
[στῶμεν, Χαλκίδος ἔκγονα θρέμματα,
τὴν βασίλειαν δεξώμεθ' ὄχων
ἄπο μὴ σφαλερῶς ἐπὶ γαῖαν,
ἀγανῶς δὲ χεροῖν μαλακῇ γνώμῃ,
μὴ ταρβήσῃ νεωστί μοι μολὸν
τὸ κλεινὸν τέκνον Ἀγαμέμνονος,
μηδὲ θόρυβον μηδ' ἔκπληξιν
ταῖς Ἀργείαις
ξεῖναι ξείναις παρέχωμεν.]

ΚΛ. *ὄρνιθα μὲν τόνδ' αἴσιον ποιούμεθα,*
τὸ σόν τε χρηστὸν καὶ λόγων εὐφημίαν·
ἐλπίδα δ' ἔχω τιν' ὡς ἐπ' ἐσθλοῖσιν γάμοις
πάρειμι νυμφαγωγός. ἀλλ' ὀχημάτων
ἔξω πορεύεθ' ἃς φέρω φερνὰς κόρῃ,
καὶ πέμπετ' εἰς μέλαθρον εὐλαβούμενοι.
σὺ δ', ὦ τέκνον μοι, λεῖπε πωλικοὺς ὄχους,
ἁβρὸν τιθεῖσα κῶλον ἀσθενές θ' ἅμα.
ὑμεῖς δὲ νεάνιδές νιν ἀγκάλαις ἔπι
δέξασθε καὶ πορεύσατ' ἐξ ὀχημάτων.
καί μοι χερός τις ἐνδότω στηρίγματα,

θάκους ἀπήνης ὡς ἂν ἐκλίπω καλῶς.
αἱ δ' εἰς τὸ πρόσθεν στῆτε πωλικῶν ζυγῶν,
φοβερὸν γὰρ ἀπαράμυθον ὄμμα πωλικόν·
καὶ παῖδα τόνδε τὸν Ἀγαμέμνονος γόνον
λάζυσθ', Ὀρέστην· ἔτι γάρ ἐστι νήπιος.
τέκνον, καθεύδεις πωλικῷ δαμεὶς ὄχῳ;
ἔγειρ' ἀδελφῆς ἐφ' ὑμέναιον εὐτυχῶς·
ἀνδρὸς γὰρ ἀγαθοῦ κῆδος αὐτὸς ἐσθλὸς ὢν
λήψει, τὸ τῆς Νηρῇδος ἰσόθεον γένος.
[ἑξῆς κάθησο δεῦρό μου ποδός, τέκνον,
πρὸς μητέρ', Ἰφιγένεια, μακαρίαν δέ με
ξέναισι ταῖσδε πλησία σταθεῖσα δός,
καὶ δεῦρο δὴ πατέρα πρόσειπε σὸν φίλον.
ΙΦ. ὦ μῆτερ, ὑποδραμοῦσά γ', ὀργισθῇς δὲ μή,
πρὸς στέρνα πατρὸς στέρνα τἀμὰ περιβαλῶ.]
ΚΛ. ὦ σέβας ἐμοὶ μέγιστον, Ἀγαμέμνων ἄναξ,
ἥκομεν, ἐφετμαῖς οὐκ ἀπιστοῦσαι σέθεν.
ΙΦ. [ἐγὼ δὲ βούλομαι τὰ σὰ στέρν', ὦ πάτερ,
ὑποδραμοῦσα προσβαλεῖν διὰ χρόνου.
ποθῶ γὰρ ὄμμα δὴ σόν. ὀργισθῇς δὲ μή.
ΚΛ. ἀλλ', ὦ τέκνον, χρή· φιλοπάτωρ δ' ἀεί ποτ' εἶ
μάλιστα παίδων τῷδ' ὅσους ἐγὼ 'τεκον.]
ΙΦ. ὦ πάτερ, ἐσεῖδόν σ' ἀσμένη πολλῷ χρόνῳ.
ΑΓΑ. καὶ γὰρ πατὴρ σέ· τόδ' ἴσον ὑπὲρ ἀμφοῖν λέγεις.
ΙΦ. χαῖρ'· εὖ δέ μ' ἀγαγὼν πρὸς σ' ἐποίησας, πάτερ.
ΑΓΑ. οὐκ οἶδ' ὅπως φῶ τοῦτο καὶ μὴ φῶ, τέκνον.
ΙΦ. ἔα·
ὡς οὐ βλέπεις ἕκηλον, ἄσμενός μ' ἰδών.
ΑΓΑ. πόλλ' ἀνδρὶ βασιλεῖ καὶ στρατηλάτῃ μέλει.
ΙΦ. παρ' ἐμοὶ γενοῦ νῦν, μὴ 'πὶ φροντίδας τρέπου.
ΑΓΑ. ἀλλ' εἰμὶ παρὰ σοὶ νῦν ἅπας κοὐκ ἄλλοθι.
ΙΦ. μέθες νυν ὀφρὺν ὄμμα τ' ἔκτεινον φίλον.

ΑΓΑ. ἰδοὺ γέγηθά σ' ὡς γέγηθ' ὁρῶν, τέκνον.
ΙΦ. κἄπειτα λείβεις δάκρυ' ἀπ' ὀμμάτων σέθεν;
ΑΓΑ. μακρὰ γὰρ ἡμῖν ἡ 'πιοῦσ' ἀπουσία.
ΙΦ. οὐκ οἶδ' ὅ τι φής, οὐκ οἶδα, φίλτατ' ἐμοὶ πάτερ.
ΑΓΑ. συνετὰ λέγουσα μᾶλλον εἰς οἶκτόν μ' ἄγεις.
ΙΦ. ἀσύνετά νυν ἐροῦμεν, εἰ σέ γ' εὐφρανῶ.
ΑΓΑ. παπαῖ. τὸ σιγᾶν οὐ σθένω· σὲ δ' ᾔνεσα.
ΙΦ. μέν', ὦ πάτερ, κατ' οἶκον ἐπὶ τέκνοις σέθεν.
ΑΓΑ. θέλω γε· τὸ θέλειν δ' οὐκ ἔχων ἀλγύνομαι.
ΙΦ. ὄλοιντο λόγχαι καὶ τὰ Μενέλεω κακά.
ΑΓΑ. ἄλλους ὀλεῖ πρόσθ' ἁμὲ διολέσαντ' ἔχει.
ΙΦ. ὡς πολὺν ἀπῆσθα χρόνον ἐν Αὐλίδος μυχοῖς.
ΑΓΑ. καὶ νῦν γέ μ' ἴσχει δή τι μὴ στέλλειν στρατόν.
ΙΦ. ποῦ τοὺς Φρύγας λέγουσιν ᾠκίσθαι, πάτερ;
ΑΓΑ. οὗ μήποτ' οἰκεῖν ὤφελ' ὁ Πριάμου Πάρις.
ΙΦ. μακράν γ' ἀπαίρεις, ὦ πάτερ, λιπὼν ἐμέ;
ΑΓΑ. εἰς ταὐτόν, ὦ θύγατερ, σύ θ' ἥκεις σῷ πατρί.
ΙΦ. φεῦ·
εἴθ' ἦν καλόν μοι σοί τ' ἄγειν σύμπλουν ἐμέ.
ΑΓΑ. ἔπεστι καὶ σοὶ πλοῦς, ἵνα μνήσει πατρός.
ΙΦ. σὺν μητρὶ πλεύσασ' ἢ μόνη πορεύσομαι;
ΑΓΑ. μόνη, μονωθεῖσ' ἀπὸ πατρὸς καὶ μητέρος.
ΙΦ. οὔ πού μ' ἐς ἄλλα δώματ' οἰκίζεις, πάτερ;
ΑΓΑ. ἔασον. οὐ χρὴ τοιάδ' εἰδέναι κόρας.
ΙΦ. σπεῦδ' ἐκ Φρυγῶν μοι, θέμενος εὖ τἀκεῖ, πάτερ.
ΑΓΑ. θῦσαί με θυσίαν πρῶτα δεῖ τιν' ἐνθάδε.
ΙΦ. ἀλλὰ ξὺν ἱεροῖς χρὴ τό γ' εὐσεβὲς σκοπεῖν.
ΑΓΑ. εἴσει σύ· χερνίβων γὰρ ἑστήξει πέλας.
ΙΦ. στήσομεν ἄρ' ἀμφὶ βωμόν, ὦ πάτερ, χορούς;
ΑΓΑ. ζηλῶ σὲ μᾶλλον ἢ 'μὲ τοῦ μηδὲν φρονεῖν.
χώρει δὲ μελάθρων ἐντὸς ὀφθῆναι κόραις,
πικρὸν φίλημα δοῦσα δεξιάν τ' ἐμοί,

μέλλουσα δαρὸν πατρὸς ἀποικήσειν χρόνον.
ὦ στέρνα καὶ παρῇδες, ὦ ξανθαὶ κόμαι,
ὡς ἄχθος ὑμῖν ἐγένεθ' ἡ Φρυγῶν πόλις
Ἑλένη τε· παύω τοὺς λόγους· ταχεῖα γὰρ
νοτὶς διώκει μ' ὀμμάτων ψαύσαντά σου.
ἴθ' εἰς μέλαθρα. σὲ δὲ παραιτοῦμαι τάδε,
Λήδας γένεθλον, εἰ κατῳκτίσθην ἄγαν,
μέλλων Ἀχιλλεῖ θυγατέρ' ἐκδώσειν ἐμήν.
ἀποστολαὶ γὰρ μακάριαι μέν, ἀλλ' ὅμως
δάκνουσι τοὺς τεκόντας, ὅταν ἄλλοις δόμοις
παῖδας παραδιδῷ πολλὰ μοχθήσας πατήρ.

ΚΛ. οὐχ ὧδ' ἀσύνετός εἰμι, πείσεσθαι δέ με
καὐτὴν δόκει τάδ', ὥστε μή σε νουθετεῖν,
ὅταν ξὺν ὑμεναίοισιν ἐξάγω κόρην·
ἀλλ' ὁ νόμος αὐτὰ τῷ χρόνῳ συνισχανεῖ.
τοὔνομα μὲν οὖν παῖδ' οἶδ' ὅτῳ κατήνεσας,
γένους δὲ ποίου χὠπόθεν, μαθεῖν θέλω.

ΑΓΑ. Αἴγινα θυγάτηρ ἐγένετ' Ἀσωποῦ πατρός.

ΚΛ. ταύτην δὲ θνητῶν ἢ θεῶν ἔζευξε τίς;

ΑΓΑ. Ζεύς· Αἰακὸν δ' ἔφυσεν, Οἰνώνης πρόμον.

ΚΛ. τοῦ δ' Αἰακοῦ παῖς τίς κατέσχε δώματα;

ΑΓΑ. Πηλεύς· ὁ Πηλεὺς δ' ἔσχε Νηρέως κόρην.

ΚΛ. θεοῦ διδόντος, ἢ βίᾳ θεῶν λαβών;

ΑΓΑ. Ζεὺς ἠγγύησε καὶ δίδωσ' ὁ κύριος.

ΚΛ. γαμεῖ δὲ ποῦ νιν; ἦ κατ' οἶδμα πόντιον;

ΑΓΑ. Χείρων ἵν' οἰκεῖ σεμνὰ Πηλίου βάθρα.

ΚΛ. οὗ φασι Κενταύρειον ᾠκίσθαι γένος;

ΑΓΑ. ἐνταῦθ' ἔδαισαν Πηλέως γάμους θεοί.

ΚΛ. Θέτις δ' ἔθρεψεν ἢ πατὴρ Ἀχιλλέα;

ΑΓΑ. Χείρων, ἵν' ἤθη μὴ μάθοι κακῶν βροτῶν.

ΚΛ. φεῦ·
σοφός γ' ὁ θρέψας χὠ διδοὺς σοφώτερος.

ΑΓΑ. τοιόσδε παιδὸς σῆς ἀνὴρ ἔσται πόσις.
ΚΛ. οὐ μεμπτός. οἰκεῖ δ' ἄστυ ποῖον Ἑλλάδος;
ΑΓΑ. Ἀπιδανὸν ἀμφὶ ποταμὸν ἐν Φθίας ὅροις.
ΚΛ. ἐκεῖσ' ἀπάξεις σὴν ἐμήν τε παρθένον;
ΑΓΑ. κείνῳ μελήσει ταῦτα τῷ κεκτημένῳ.
ΚΛ. ἀλλ' εὐτυχοίτην. τίνι δ' ἐν ἡμέρᾳ γαμεῖ;
ΑΓΑ. ὅταν σελήνης εὐτυχὴς ἔλθῃ κύκλος.
ΚΛ. προτέλεια δ' ἤδη παιδὸς ἔσφαξας θεᾷ;
ΑΓΑ. μέλλω· 'πὶ ταύτῃ καὶ καθέσταμεν τύχῃ.
ΚΛ. κἄπειτα δαίσεις τοὺς γάμους ἐς ὕστερον;
ΑΓΑ. θύσας γε θύμαθ' ἁμὲ χρὴ θῦσαι θεοῖς.
ΚΛ. ἡμεῖς δὲ θοίνην ποῦ γυναιξὶ θήσομεν;
ΑΓΑ. ἐνθάδε παρ' εὐπρύμνοισιν Ἀργείων πλάταις.
ΚΛ. καλῶς ἀναγκαίως τε· συνενέγκαι δ' ὁμῶς.
ΑΓΑ. οἶσθ' οὖν ὃ δρᾶσον, ὦ γύναι; πιθοῦ δέ μοι.
ΚΛ. τί χρῆμα; πείθεσθαι γὰρ εἴθισμαι σέθεν.
ΑΓΑ. ἡμεῖς μὲν ἐνθάδ', οὗπέρ ἐσθ' ὁ νυμφίος,
ΚΛ. μητρὸς τί χωρὶς δράσεθ', ἁμὲ δρᾶν χρεών;
ΑΓΑ. ἐκδώσομεν σὴν παῖδα Δαναΐδῶν μέτα.
ΚΛ. ἡμᾶς δὲ ποῦ χρὴ τηνικαῦτα τυγχάνειν;
ΑΓΑ. χώρει πρὸς Ἄργος παρθένους τε τημέλει.
ΚΛ. λιποῦσα παῖδα; τίς δ' ἀνασχήσει φλόγα;
ΑΓΑ. ἐγὼ παρέξω φῶς ὃ νυμφίοις πρέπει.
ΚΛ. οὐχ ὁ νόμος οὗτος, σοὶ δὲ φαῦλ' ἡγεῖ τάδε.
ΑΓΑ. οὐ καλὸν ἐν ὄχλῳ σ' ἐξομιλεῖσθαι στρατοῦ.
ΚΛ. καλὸν τεκοῦσαν τἀμά μ' ἐκδοῦναι τέκνα.
ΑΓΑ. καὶ τάς γ' ἐν οἴκῳ μὴ μόνας εἶναι κόρας.
ΚΛ. ὀχυροῖσι παρθενῶσι φρουροῦνται καλῶς.
ΑΓΑ. πιθοῦ. *ΚΛ.* μὰ τὴν ἄνασσαν Ἀργείαν θεάν.
ἐλθὼν σὺ τἄξω πρᾶσσε, τὰν δόμοις δ' ἐγώ,
ἃ χρὴ παρεῖναι νυμφίοισι παρθένοις.
ΑΓΑ. οἴμοι· μάτην ἦξ', ἐλπίδος δ' ἀπεσφάλην,

ἐξ ὀμμάτων δάμαρτ᾽ ἀποστεῖλαι θέλων.
σοφίζομαι δὲ κἀπὶ τοῖσι φιλτάτοις
τέχνας πορίζω, πανταχῇ νικώμενος.
ὅμως δὲ σὺν Κάλχαντι τῷ θυηπόλῳ
τὸ τῆς θεοῦ φίλον γ᾽, ἐμοὶ δ᾽ οὐκ εὐτυχές,
ἐξιστορήσων εἶμι, μόχθον Ἑλλάδος.
χρὴ δ᾽ ἐν δόμοισιν ἄνδρα τὸν σοφὸν τρέφειν
γυναῖκα χρηστὴν κἀγαθήν, ἢ μὴ γαμεῖν.

ΧΟ. ἥξει δὴ Σιμόεντα καὶ — στρ.
δίνας ἀργυροειδεῖς
ἄγυρις Ἑλλάνων στρατιᾶς
ἀνά τε ναυσὶν καὶ σὺν ὅπλοις
Ἴλιον ἐς τὸ Τροίας
Φοιβήιον δάπεδον,
τὰν Κασάνδραν ἵν᾽ ἀκούω
ῥίπτειν ξανθοὺς πλοκάμους
χλωροκόμῳ στεφάνῳ δάφνας
κοσμηθεῖσαν, ὅταν θεοῦ
μαντόσυνοι πνεύσωσ᾽ ἀνάγκαι.
στάσονται δ᾽ ἐπὶ περγάμων — ἀντ.
Τροίας ἀμφί τε τείχη
Τρῶες, ὅταν χάλκασπις Ἄρης
πόντιος εὐπρῴροισι πλάταις
εἰρεσίᾳ πελάζῃ
Σιμουντίοις ὀχετοῖς,
τὰν τῶν ἐν αἰθέρι δισσῶν
Διοσκούρων Ἑλέναν
ἐκ Πριάμου κομίσαι θέλων
εἰς γᾶν Ἑλλάδα δοριπόνοις
ἀσπίσι καὶ λόγχαις Ἀχαιῶν.
Πέργαμον δὲ Φρυγῶν πόλιν

751 — 761 = 762 — 772

λαΐνους περὶ πύργους
κυκλώσας Ἄρει φοινίῳ,
λαιμοτόμους κεφαλὰς
σπάσας, πόλισμα Τροίας
πέρσας κατάκρας πόλιν,
θήσει κόρας πολυκλαύστους
δάμαρτά τε Πριάμου.
ἁ δὲ Διὸς Ἑλένα κόρα
πολύκλαυτος ἐσεῖται
πόσιν προλιποῦσα. μήτ᾿ ἐμοὶ
μήτ᾿ ἐμοῖσι τέκνων τέκνοις
ἐλπὶς ἅδε ποτ᾿ ἔλθοι,
οἵαν αἱ πολύχρυσοι
Λυδαὶ καὶ Φρυγῶν ἄλοχοι
στήσουσι παρ᾿ ἱστοῖς
μυθοῦσαι τάδ᾿ ἐς ἀλλήλας·
τίς ἄρα μ᾿ εὐπλοκάμους κόμας
ῥῦμα δακρυόεν τανύσας
πατρίδος ὀλλυμένας ἀπολωτιεῖ;
διὰ σέ, τὰν κύκνου δολιχαύχενος γόνον,
εἰ δὴ φάτις ἔτυμος,
ὡς ἔτεκεν Λήδα σ᾿
ὄρνιθι πταμένῳ
Διὸς ὅτ᾿ ἀλλάχθη δέμας,
εἴτ᾿ ἐν δέλτοις Πιερίσιν
μῦθοι τάδ᾿ ἐς ἀνθρώπους
ἤνεγκαν παρὰ καιρὸν ἄλλως.

ΑΧ. ποῦ τῶν Ἀχαιῶν ἐνθάδ᾿ ὁ στρατηλάτης;
τίς ἂν φράσειε προσπόλων τὸν Πηλέως
ζητοῦντά νιν παῖδ᾿ ἐν πύλαις Ἀχιλλέα;
οὐκ ἐξ ἴσου γὰρ μένομεν Εὐρίπου πέλας.

οἱ μὲν γὰρ ἡμῶν ὄντες ἄζυγες γάμων
οἴκους ἐρήμους ἐκλιπόντες ἐνθάδε
θάσσουσ' ἐπ' ἀκταῖς, οἱ δ' ἔχοντες εὔνιδας
καὶ παῖδας· οὕτω δεινὸς ἐμπέπτωκ' ἔρως
τῆσδε στρατείας Ἑλλάδ' οὐκ ἄνευ θεῶν.
τοὐμὸν μὲν οὖν δίκαιον ἐμὲ λέγειν χρεών·
ἄλλος δ' ὁ χρῄζων αὐτὸς ὑπὲρ αὑτοῦ φράσει.
γῆν γὰρ λιπὼν Φάρσαλον ἠδὲ Πηλέα
μένω 'πὶ λεπταῖς ταισίδ' Εὐρίπου πνοαῖς,
Μυρμιδόνας ἴσχων, οἵ μ' ἀεὶ προσκείμενοι
λέγουσ'· Ἀχιλλεῦ, τί μένομεν; ποῖον χρόνον
ἔτ' ἐκμετρῆσαι χρὴ πρὸς Ἰλίου στόλον;
δρᾶ δ', εἴ τι δράσεις, ἢ ἄπαγ' οἴκαδε στρατόν,
τὰ τῶν Ἀτρειδῶν μὴ μένων μελλήματα.
ΚΛ. ὦ παῖ θεᾶς Νηρῇδος, ἔνδοθεν λόγων
τῶν σῶν ἀκούσασ' ἐξέβην πρὸ δωμάτων.
ΑΧ. ὦ πότνι' αἰδώς, τήνδε τίνα λεύσσω ποτὲ
γυναῖκα, μορφὴν εὐπρεπῆ κεκτημένην;
ΚΛ. οὐ θαῦμά σ' ἡμᾶς ἀγνοεῖν, οἷς μὴ πάρος
προσῆκες· αἰνῶ δ' ὅτι σέβεις τὸ σωφρονεῖν.
ΑΧ. τίς δ' εἶ; τί δ' ἦλθες Δαναΐδων εἰς σύλλογον,
γυνὴ πρὸς ἄνδρας ἀσπίσιν πεφραγμένους;
ΚΛ. Λήδας μέν εἰμι παῖς, Κλυταιμνήστρα δέ μοι
ὄνομα, πόσις δέ μοὐστὶν Ἀγαμέμνων ἄναξ.
ΑΧ. καλῶς ἔλεξας ἐν βραχεῖ τὰ καίρια.
αἰσχρὸν δέ μοι γυναιξὶ συμβάλλειν λόγους.
ΚΛ. μεῖνον· τί φεύγεις; δεξιάν τ' ἐμῇ χερὶ
σύναψον, ἀρχὴν μακαρίων νυμφευμάτων.
ΑΧ. τί φής; ἐγώ σοι δεξιάν; αἰδοίμεθ' ἂν
Ἀγαμέμνον', εἰ ψαύοιμεν ὧν μή μοι θέμις.
ΚΛ. θέμις μάλιστα, τὴν ἐμὴν ἐπεὶ γαμεῖς
παῖδ', ὦ θεᾶς παῖ ποντίας Νηρηίδος.

ΑΧ. ποίους γάμους φής; ἀφασία μ᾽ ἔχει, γύναι.
εἰ μή τι παρανοοῦσα καινουργεῖς λόγον.
ΚΛ. πᾶσιν τόδ᾽ ἐμπέφυκεν, αἰδεῖσθαι φίλους
καινοὺς ὁρῶσι καὶ γάμου μεμνημένους.
ΑΧ. οὐπώποτ᾽ ἐμνήστευσα παῖδα σήν, γύναι,
οὐδ᾽ ἐξ Ἀτρειδῶν ἦλθέ μοι λόγος γάμων.
ΚΛ. τί δῆτ᾽ ἂν εἴη; σὺ πάλιν αὖ λόγους ἐμοὺς
θαύμαζ᾽· ἐμοὶ γὰρ θαύματ᾽ ἐστὶ τὰ παρὰ σοῦ.
ΑΧ. εἴκαζε· κοινόν ἐστιν εἰκάζειν τάδε·
ἄμφω γὰρ οὐ ψευδόμεθα τοῖς λόγοις ἴσως.
ΚΛ. ἀλλ᾽ ἦ πέπονθα δεινά; μνηστεύω γάμους
οὐκ ὄντας, ὡς εἴξασιν· αἰδοῦμαι τάδε.
ΑΧ. ἴσως ἐκερτόμησε κἀμὲ καὶ σέ τις.
ἀλλ᾽ ἀμελίᾳ δὸς αὐτὰ καὶ φαύλως φέρε.
ΚΛ. χαῖρ᾽· οὐ γὰρ ὀρθοῖς ὄμμασίν σ᾽ ἔτ᾽ εἰσορῶ,
ψευδὴς γενομένη καὶ παθοῦσ᾽ ἀνάξια.
ΑΧ. καὶ σοὶ τόδ᾽ ἐστὶν ἐξ ἐμοῦ· πόσιν δὲ σὸν
στείχω ματεύσων τῶνδε δωμάτων ἔσω.
ΠΡ. ὦ ξέν᾽, Αἰακοῦ γένεθλον, μεῖνον, ὦ σέ τοι λέγω,
τὸν θεᾶς γεγῶτα παῖδα, καὶ σὲ τὴν Λήδας κόρην.
ΑΧ. τίς ὁ καλῶν πύλας παροίξας; ὡς τεταρβηκὼς καλεῖ.
ΠΡ. δοῦλος, οὐχ ἁβρύνομαι τῷδ᾽· ἡ τύχη γὰρ οὐκ ἐᾷ.
ΑΧ. τίνος; ἐμὸς μὲν οὐχί· χωρὶς τἀμὰ κἀγαμέμνονος.
ΠΡ. τῆσδε τῆς πάροιθεν οἴκων, Τυνδάρεω δόντος πατρός.
ΑΧ. ἕσταμεν· φράζ᾽, εἴ τι χρῄζεις, ὧν μ᾽ ἐπέσχες οὕνεκα.
ΠΡ. ἦ μόνω παρόντε δῆτα ταῖσδ᾽ ἐφέστατον πύλαις;
ΚΛ. ὡς μόνοις λέγοις ἄν, ἔξω δ᾽ ἐλθὲ βασιλικῶν δόμων.
ΠΡ. ὦ τύχη πρόνοιά θ᾽ ἡμή, σῶσον οὓς ἐγὼ θέλω.
ΑΧ. ὁ λόγος εἰς μέλλοντ᾽ ἀνοίσει χρόνον· ἔχει δ᾽ ὄγκον τινά.

ΚΛ. δεξιᾶς ἕκατι μὴ μέλλ᾽, εἴ τί μοι χρῄζεις λέγειν.
ΠΡ. οἶσθα δῆτά μ᾽ ὅστις ὢν σοὶ καὶ τέκνοις εὔνους ἔφυν.
ΚΛ. οἶδά σ᾽ ὄντ᾽ ἐγὼ παλαιὸν δωμάτων ἐμῶν λάτριν.
ΠΡ. χὤτι μ᾽ ἐν ταῖς σαῖσι φερναῖς ἔλαβεν Ἀγαμέμνων ἄναξ.
ΚΛ. ἦλθες εἰς Ἄργος μεθ᾽ ἡμῶν κἀμὸς ἦσθ᾽ ἀεί ποτε.
ΠΡ. ὧδ᾽ ἔχει. καὶ σοὶ μὲν εὔνους εἰμί, σῷ δ᾽ ἧσσον πόσει.
ΚΛ. ἐκκάλυπτέ νύν ποθ᾽ ἡμῖν οὕστινας λέγεις λόγους.
ΠΡ. παῖδα σὴν πατ ρ ὁ φύσας αὐτόχειρ μέλλει κτανεῖν.
ΚΛ. πῶς; ἀπέπτυσ᾽, ὦ γεραιέ, μῦθον· οὐ γὰρ εὖ φρονεῖς.
ΠΡ. φασγάνῳ λευκὴν φονεύων τῆς ταλαιπώρου δέρην.
ΚΛ. ὦ τάλαιν᾽ ἐγώ. μεμηνὼς ἆρα τυγχάνει πόσις;
ΠΡ. ἀρτίφρων, πλὴν εἰς σὲ καὶ σὴν παῖδα· τοῦτο δ᾽ οὐ φρονεῖ.
ΚΛ. ἐκ τίνος λόγου; τίς αὐτὸν οὑπάγων ἀλαστόρων;
ΠΡ. θέσφαθ᾽, ὥς γέ φησι Κάλχας, ἵνα πορεύηται στρατὸς
ΚΛ. ποῖ; τάλαιν᾽ ἐγώ, τάλαινα δ᾽ ἣν πατὴρ μέλλει κτανεῖν.
ΠΡ. Δαρδάνου πρὸς δώμαθ᾽, Ἑλένην Μενέλεως ὅπως λάβῃ.
ΚΛ. εἰς ἄρ᾽ Ἰφιγένειαν Ἑλένης νόστος ἦν πεπρωμένος;
ΠΡ. πάντ᾽ ἔχεις· Ἀρτέμιδι θύσειν παῖδα σὴν μέλλει πατήρ.
ΚΛ. ὁ δὲ γάμος τίν᾽ εἶχε πρόφασιν, ᾗ μ᾽ ἐκόμισεν ἐκ δόμων;
ΠΡ. ἵν᾽ ἀγάγοις χαίρουσ᾽ Ἀχιλλεῖ παῖδα νυμφεύσουσα σήν.

ΚΛ. ὦ θύγατερ, ἥκεις ἐπ᾽ ὀλέθρῳ καὶ σὺ καὶ μήτηρ σέθεν.
ΠΡ. οἰκτρὰ πάσχετον δύ᾽ οὖσαι· δεινὰ δ᾽ Ἀγαμέμνων ἔτλη.
ΚΛ. οἴχομαι τάλαινα, δάκρυόν τ᾽ ὄμματ᾽ οὐκέτι στέγει.
ΠΡ. εἴπερ ἀλγεινὸν τὸ τέκνων στερομένην δακρυρροεῖν.
ΚΛ. σὺ δὲ τάδ᾽, ὦ γέρον, πόθεν φῂς εἰδέναι πεπυσμένος;
ΠΡ. δέλτον ᾠχόμην φέρων σοι πρὸς τὰ πρὶν γεγραμμένα.
ΚΛ. οὐκ ἐῶν ἢ ξυγκελεύων παῖδ᾽ ἄγειν θανουμένην;
ΠΡ. μὴ μὲν οὖν ἄγειν· φρονῶν γὰρ ἔτυχε σὸς πόσις τότ᾽ εὖ.
ΚΛ. κᾆτα πῶς φέρων γε δέλτον οὐκ ἐμοὶ δίδως λαβεῖν;
ΠΡ. Μενέλεως ἀφείλεθ᾽ ἡμᾶς, ὃς κακῶν τῶνδ᾽ αἴτιος.
ΚΛ. ὦ τέκνον Νηρῇδος, ὦ παῖ Πηλέως, κλύεις τάδε;
ΑΧ. ἔκλυον οὖσαν ἀθλίαν σε, τὸ δ᾽ ἐμὸν οὐ φαύλως φέρω.
ΚΛ. παῖδά μου κατακτενοῦσι σοῖς δολώσαντες γάμοις.
ΑΧ. μέμφομαι κἀγὼ πόσει σῷ, κοὐχ ἁπλῶς οὕτω φέρω.
ΚΛ. οὐκ ἐπαιδεσθησόμεσθα προσπεσεῖν τὸ σὸν γόνυ,
θνητὸς ἐκ θεᾶς γεγῶτα· τί γὰρ ἐγὼ σεμνύνομαι;
περὶ τίνος σπουδαστέον μοι μᾶλλον ἢ τέκνου πέρι;
ἀλλ᾽ ἄμυνον, ὦ θεᾶς παῖ, τῇ τ᾽ ἐμῇ δυσπραξίᾳ
τῇ τε λεχθείσῃ δάμαρτι σῇ, μάτην μέν, ἀλλ᾽ ὅμως.
σοὶ καταστέψασ᾽ ἐγώ νιν ἦγον ὡς γαμουμένην,
νῦν δ᾽ ἐπὶ σφαγὰς κομίζω· σοὶ δ᾽ ὄνειδος ἵξεται,
ὅστις οὐκ ἤμυνας· εἰ γὰρ μὴ γάμοισιν ἐζύγης,
ἀλλ᾽ ἐκλήθης γοῦν ταλαίνης παρθένου φίλος πόσις.
πρὸς γενειάδος σε, πρὸς σῆς δεξιᾶς, πρὸς μητέρος·

ὄνομα γάρ τὸ σόν μ' ἀπώλεσ', ᾧ σ' ἀμυναθεῖν χρεών.
οὐκ ἔχω βωμὸν καταφυγεῖν ἄλλον ἢ τὸ σὸν γόνυ.
οὐδὲ φίλος οὐδεὶς πελᾷ μοι· τὰ δ' Ἀγαμέμνονος κλύεις
ὠμὰ καὶ πάντολμ'· ἀφῖγμαι δ', ὥσπερ εἰσορᾷς, γυνὴ
ναυτικὸν στράτευμ' ἄναρχον κἀπὶ τοῖς κακοῖς θρασύ,
χρήσιμον δ', ὅταν θέλωσιν. ἢν δὲ τολμήσῃς σύ μου
χεῖρ' ὑπερτεῖναι, σεσώσμεθ'· εἰ δὲ μή, οὐ σεσώσμεθα.

ΧΟ. δεινὸν τὸ τίκτειν καὶ φέρει φίλτρον μέγα,
πᾶσίν τε κοινὸν ὥσθ' ὑπερκάμνειν τέκνων.

ΑΧ. ὑψηλόφρων μοι θυμὸς αἴρεται πρόσω·
ἐπίσταται δὲ τοῖς κακοῖσί τ' ἀσχαλᾶν
μετρίως τε χαίρειν τοῖσιν ἐξωγκωμένοις.
λελογισμένοι γὰρ οἱ τοιοίδ' εἰσὶν βροτῶν
ὀρθῶς διαζῆν τὸν βίον γνώμης μέτα.
ἔστιν μὲν οὖν ἵν' ἡδὺ μὴ λίαν φρονεῖν,
ἔστιν δὲ χὤπου χρήσιμον γνώμην ἔχειν.
ἐγὼ δ' ἐν ἀνδρὸς εὐσεβεστάτου τραφεὶς
Χείρωνος, ἔμαθον τοὺς τρόπους ἁπλοῦς ἔχειν.
καὶ τοῖς Ἀτρείδαις, ἢν μὲν ἡγῶνται καλῶς,
πεισόμεθ'· ὅταν δὲ μὴ καλῶς, οὐ πείσομαι.
ἀλλ' ἐνθάδ' ἐν Τροίᾳ τ' ἐλευθέραν φύσιν
παρέχων, Ἄρη τὸ κατ' ἐμὲ κοσμήσω δορί.
σὲ δ', ὦ σχέτλια παθοῦσα πρὸς τῶν φιλτάτων,
ἃ δὴ κατ' ἄνδρα γίγνεται νεανίαν,
τοσοῦτον οἶκτον περιβαλὼν καταστελῶ,
κοὔποτε κόρη σὴ πρὸς πατρὸς σφαγήσεται,
ἐμὴ φατισθεῖσ'· οὐ γὰρ ἐμπλέκειν πλοκὰς

ἐγὼ παρέξω σῷ πόσει τοὐμὸν δέμας.
τοὔνομα γάρ, εἰ καὶ μὴ σίδηρον ἥρατο,
τοὐμὸν φονεύσει παῖδα σήν. τὸ δ᾽ αἴτιον
πόσις σός· ἁγνὸν δ᾽ οὐκέτ᾽ ἐστὶ σῶμ᾽ ἐμόν,
εἰ δι᾽ ἔμ᾽ ὀλεῖται διά τε τοὺς ἐμοὺς γάμους
ἡ δεινὰ τλᾶσα κοὐκ ἀνεκτὰ παρθένος,
θαυμαστὰ δ᾽ ὡς ἀνάξι᾽ ἠτιμασμένη.
ἐγὼ κάκιστος ἦν ἄρ᾽ Ἀργείων ἀνήρ,
ἐγὼ τὸ μηδέν, Μενέλεως δ᾽ ἐν ἀνδράσιν,
ὡς οὐχὶ Πηλέως, ἀλλ᾽ ἀλάστορος γεγώς,
εἴπερ φονεύσει τοὐμὸν ὄνομα σῷ πόσει.
μὰ τὸν δι᾽ ὑγρῶν κυμάτων τεθραμμένον
Νηρέα, φυτουργὸν Θέτιδος ἥ μ᾽ ἐγείνατο,
οὐχ ἅψεται σῆς θυγατρὸς Ἀγαμέμνων ἄναξ,
οὐδ᾽ εἰς ἄκραν χεῖρ᾽, ὥστε προσβαλεῖν πέπλοις·
ἢ Σίπυλος ἔσται πόλις ὅρισμα βαρβάρων,
ὅθεν πεφύκασ᾽ οἱ στρατηλάται γένος,
Φθία δὲ τοὐμόν γ᾽ οὐδαμοῦ κεκλήσεται.
πικροὺς δὲ προχύτας χέρνιβάς τ᾽ ἐνάρξεται
Κάλχας ὁ μάντις. τίς δὲ μάντις ἔστ᾽ ἀνήρ,
ὃς ὀλίγ᾽ ἀληθῆ, πολλὰ δὲ ψευδῆ λέγει
τυχών· ὅταν δὲ μὴ τύχῃ, διοίχεται;
οὐ τῶν γάμων ἕκατι, μυρίαι κόραι
θηρῶσι λέκτρον τοὐμόν, εἴρηται τόδε·
ἀλλ᾽ ὕβριν ἐς ἡμᾶς ὕβρισ᾽ Ἀγαμέμνων ἄναξ·
χρῆν δ᾽ αὐτὸν αἰτεῖν τοὐμὸν ὄνομ᾽ ἐμοῦ πάρα,
θήραμα παιδός· εἰ Κλυταιμνήστρα δ᾽ ἐμοὶ
μάλιστ᾽ ἐπείσθη θυγατέρ᾽ ἐκδοῦναι πόσει,
ἔδωκά τἂν Ἕλλησιν, εἰ πρὸς Ἴλιον
ἐν τῷδ᾽ ἔκαμνε νόστος· οὐκ ἠρνούμεθ᾽ ἂν
τὸ κοινὸν αὔξειν ὧν μέτ᾽ ἐστρατευόμην.
νῦν δ᾽ οὐδέν εἰμι παρά γε τοῖς στρατηλάταις,

ἐν εὐμαρεῖ τε δρᾶν τε καὶ μὴ δρᾶν καλῶς.
τάχ᾽ εἴσεται σίδηρος, ὃν πρὶν εἰς Φρύγας
ἐλθεῖν, φόνου κηλῖσιν αἵματος χρανῶ,
εἴ τίς με τὴν σὴν θυγατέρ᾽ ἐξαιρήσεται.
ἀλλ᾽ ἡσύχαζε· θεὸς ἐγὼ πέφηνά σοι
[μέγιστος, οὐκ ὤν· ἀλλ᾽ ὅμως γενήσομαι].

ΧΟ. ἔλεξας, ὦ παῖ Πηλέως, σοῦ τ᾽ ἄξια
καὶ τῆς ἐναλίας δαίμονος, σεμνῆς θεοῦ.

ΚΛ. φεῦ·
πῶς ἄν σ᾽ ἐπαινέσαιμι μὴ λίαν λόγοις,
μήδ᾽ ἐνδεῶς τοῦδ᾽ ἀπολέσαιμι τὴν χάριν;
αἰνούμενοι γὰρ ἁγαθοὶ τρόπον τινὰ
μισοῦσι τοὺς αἰνοῦντας, ἢν αἰνῶσ᾽ ἄγαν.
αἰσχύνομαι δὲ παραφέρουσ᾽ οἰκτροὺς λόγους,
ἰδίᾳ νοσοῦσα· σὺ δ᾽ ἄνοσος κακῶν γ᾽ ἐμῶν.
ἀλλ᾽ οὖν ἔχει τοι σχῆμα, κἂν ἄπωθεν ᾖ
ἀνὴρ ὁ χρηστός, δυστυχοῦντας ὠφελεῖν.
οἴκτειρε δ᾽ ἡμᾶς· οἰκτρὰ γὰρ πεπόνθαμεν.
ἢ πρῶτα μέν σε γαμβρὸν οἰηθεῖσ᾽ ἔχειν,
κενὴν κατέσχον ἐλπίδ᾽· εἶτά σοι τάχα
ὄρνις γένοιτ᾽ ἂν τοῖσι μέλλουσιν γάμοις
θανοῦσ᾽ ἐμὴ παῖς, ὅ σε φυλάξασθαι χρεών.
ἀλλ᾽ εὖ μὲν ἀρχὰς εἶπας, εὖ δὲ καὶ τέλη·
σοῦ γὰρ θέλοντος παῖς ἐμὴ σωθήσεται.
βούλει νιν ἱκέτιν σὸν περιπτύξαι γόνυ;
ἀπαρθένευτα μὲν τάδ᾽· εἰ δέ σοι δοκεῖ,
ἥξει, δι᾽ αἰδοῦς ὄμμ᾽ ἔχουσ᾽ ἐλεύθερον·
εἰ δ᾽ οὐ παρούσης ταὐτὰ τεύξομαι σέθεν,
μενέτω κατ᾽ οἴκους· σεμνὰ γὰρ σεμνύνεται.
ὅμως δ᾽ ὅσον γε δυνατὸν αἰδεῖσθαι χρεών.

ΑΧ. σὺ μήτε σὴν παῖδ᾽ ἔξαγ᾽ ὄψιν εἰς ἐμήν,
μήτ᾽ εἰς ὄνειδος ἀμαθὲς ἔλθωμεν, γύναι·

στρατὸς γὰρ ἀθρόος ἀργὸς ὢν τῶν οἴκοθεν
λέσχας πονηρὰς καὶ κακοστόμους φιλεῖ.
πάντως δέ μ᾽ ἱκετεύοντες ἥξετ᾽ εἰς ἴσον,
εἴ τ᾽ ἀνικετεύτως· εἷς ἐμοὶ γάρ ἐστ᾽ ἀγὼν
μέγιστος ὑμᾶς ἐξαπαλλάξαι κακῶν.
ὥς ἕν γ᾽ ἀκούσασ᾽ ἴσθι, μὴ ψευδῶς μ᾽ ἐρεῖν·
ψευδῆ λέγων δὲ καὶ μάτην ἐγκερτομῶν
θάνοιμι· μὴ θάνοιμι δ᾽, ἢν σώσω κόρην.
ΚΛ. ὄναιο συνεχῶς δυστυχοῦντας ὠφελῶν.
ΑΧ. ἄκουε δή νυν, ἵνα τὸ πρᾶγμ᾽ ἔχῃ καλῶς.
ΚΛ. τί τοῦτ᾽ ἔλεξας; ὡς ἀκουστέον γέ σου.
ΑΧ. πείθωμεν αὖθις πατέρα βέλτιον φρονεῖν.
ΚΛ. κακός τίς ἐστι καὶ λίαν ταρβεῖ στρατόν.
ΑΧ. ἀλλ᾽ οἱ λόγοι γε καταπαλαίουσιν λόγους.
ΚΛ. ψυχρὰ μὲν ἐλπίς· ὅ τι δὲ χρή με δρᾶν φράσον.
ΑΧ. ἱκέτευ᾽ ἐκεῖνον πρῶτα μὴ κτείνειν τέκνα·
ἢν δ᾽ ἀντιβαίνῃ, πρὸς ἐμέ σοι πορευτέον.
εἰ γὰρ τὸ χρῇζον πείσετ᾽, οὐ τοὐμὸν χρεὼν
χωρεῖν· ἔχει γὰρ τοῦτο τὴν σωτηρίαν.
κἀγώ τ᾽ ἀμείνων πρὸς φίλον γενήσομαι,
στρατός τ᾽ ἂν οὐ μέμψαιτό μ᾽, εἰ τὰ πράγματα
λελογισμένως πράσσοιμι μᾶλλον ἢ σθένει.
[καλῶς δὲ κρανθέντων πρὸς ἡδονὴν φίλοις
σοί τ᾽ ἂν γένοιτο κἂν ἐμοῦ χωρὶς τάδε.]
ΚΛ. ὡς σώφρον᾽ εἶπας. δραστέον δ᾽ ἅ σοι δοκεῖ.
ἢν δ᾽ αὐτὰ μὴ πράσσωμεν ἃν ἐγὼ θέλω,
ποῦ σ᾽ αὖθις ὀψόμεσθα; ποῦ χρή μ᾽ ἀθλίαν
ἐλθοῦσαν εὑρεῖν σὴν χέρ᾽ ἐπίκουρον κακῶν;
ΑΧ. ἡμεῖς σε φύλακες οὗ χρεὼν φυλάξομεν,
μή τίς σ᾽ ἴδῃ στείχουσαν ἐπτοημένην
Δαναῶν δι᾽ ὄχλου· μηδὲ πατρῷον δόμον

αἴσχυν'· ὁ γάρ τοι Τυνδάρεως οὐκ ἄξιος
κακῶς ἀκούειν· ἐν γὰρ Ἕλλησιν μέγας.
ΚΛ. ἔσται τάδ'. ἄρχε· σοί με δουλεύειν χρεών.
εἰ δ' εἰσὶ θεοί, δίκαιος ὢν ἀνὴρ σύ γε
ἐσθλῶν κυρήσεις· εἰ δὲ μή, τί δεῖ πονεῖν;
ΧΟ. τίς ἄρ' ὑμέναιος διὰ λωτοῦ Λίβυος στρ.
μετά τε φιλοχόρου κιθάρας
συρίγγων θ' ὑπὸ καλαμοεσ-
σᾶν ἔστασεν ἰαχάν,
ὅτ' ἀνὰ Πήλιον αἱ καλλιπλόκαμοι
θεῶν ἐν δαιτὶ Πιερίδες
χρυσεοσάνδαλον ἴχνος
ἐν γᾷ κρούουσαι
Πηλέως εἰς γάμον ἦλθον,
μελῳδοῖς Θέτιν ἀχήμασι τόν τ' Αἰακίδαν
Κενταύρων ἀν' ὄρος κλέουσαι
Πηλιάδα καθ' ὕλαν.
ὁ δὲ Δαρδανίδας, Διὸς
λέκτρων τρύφημα φίλον,
χρυσέοισιν ἄφυσσε λοιβὰν
ἐν κρατήρων γυάλοις,
ὁ Φρύγιος Γανυμήδης.
παρὰ δὲ λευκοφαῆ ψάμαθον
εἱλισσόμεναι κύκλια
πεντήκοντα κόραι Νηρέως
γάμους ἐχόρευσαν.
ἀνὰ δ' ἐλάταισι στεφανώδει τε χλόᾳ ἀντ.
θίασος ἔμολεν ἱπποβότας
Κενταύρων ἐπὶ δαῖτα τὰν
θεῶν κρατῆρά τε Βάκχου.
μέγα δ' ἀνέκλαγον, ὦ Νηρηὶ κόρα,

1036 — 1057 = 1058 — 1079

παῖδες Θεσσαλαί, μέγα φῶς
μάντις ὁ Φοῖβος ὁ Μουσᾶν τ'
εἰδὼς γεννάσεις
Χείρων ἐξονόμαξεν,
ὃς ἥξει χθόνα λογχήρεσι σὺν Μυρμιδόνων
ἀσπισταῖς Πριάμοιο κλεινὰν
γαῖαν ἐκπυρώσων,
περὶ σώματι χρυσέων
ὅπλων Ἡφαιστοπόνων
κεκορυθμένος ἔνδυτ', ἐκ θεᾶς
ματρὸς δωρήματ' ἔχων,
Θέτιδος ἅ νιν ἔτικτε
μακάριον. τότε δαίμονες
τᾶς εὐπάτριδος γάμον
Νηρῄδων ἔθεσαν πρώτας
Πηλέως θ' ὑμεναίους.
σὲ δ' ἐπὶ κάρα στέψουσι καλλικόμαν
πλόκαμον Ἀργεῖοί γ' ἁλιᾶν,
ὥστε πετραίων ἀπ' ἄντρων ἐλθοῦσαν ὀρείαν
μόσχον ἀκήρατον, βρότειον
αἱμάσσοντες λαιμόν·
οὐ σύριγγι τραφεῖσαν, οὐδ'
ἐν ῥοιβδήσεσι βουκόλων,
παρὰ δὲ ματέρι νυμφοκόμον
Ἰναχίδαις γάμον.
ποῦ τὸ τᾶς αἰδοῦς
ἢ τὸ τᾶς ἀρετᾶς ἔχει
σθένειν τι πρόσωπον;
ὁπότε τὸ μὲν ἄσεπτον ἔχει
δύνασιν, ἁ δ' ἀρετὰ κατόπι-
σθεν θνατοῖς ἀμελεῖται,
ἀνομία δὲ νόμων κρατεῖ,

καὶ μὴ κοινὸς ἀγὼν βροτοῖς,
μή τις θεῶν φθόνος ἔλθῃ.

ΚΛ. ἐξῆλθον οἴκων προσκοπουμένη πόσιν,
χρόνιον ἀπόντα κἀκλελοιπότα στέγας.
ἐν δακρύοισι δ᾽ ἡ τάλαινα παῖς ἐμή,
πολλὰς ἱεῖσα μεταβολὰς ὀδυρμάτων,
θάνατον ἀκούσασ᾽, ὃν πατὴρ βουλεύεται.
μνήμην δ᾽ ἄρ᾽ εἶχον πλησίον βεβηκότος
Ἀγαμέμνονος τοῦδ᾽, ὃς ἐπὶ τοῖς αὑτοῦ τέκνοις
ἀνόσια πράσσων αὐτίχ᾽ εὑρεθήσεται.

ΑΓΑ. Λήδας γένεθλον, ἐν καλῷ σ᾽ ἔξω δόμων
εὕρηχ᾽, ἵν᾽ εἴπω παρθένου χωρὶς λόγους
οὓς οὐκ ἀκούειν τὰς γαμουμένας πρέπει.

ΚΛ. τί δ᾽ ἔστιν, οὗ σοι καιρὸς ἀντιλάζυται;

ΑΓΑ. ἔκπεμπε παῖδα δωμάτων πατρὸς μέτα·
ὡς χέρνιβες πάρεισιν ηὐτρεπισμέναι,
προχύται τε βάλλειν πῦρ καθάρσιον χεροῖν,
μόσχοι τε, πρὸ γάμων ἃς θεᾷ πεσεῖν χρεὼν
Ἀρτέμιδι, μέλανος αἵματος φυσήματα.

ΚΛ. τοῖς ὀνόμασιν μὲν εὖ λέγεις, τὰ δ᾽ ἔργα σου
οὐκ οἶδ᾽ ὅπως χρή μ᾽ ὀνομάσασαν εὖ λέγειν.
χώρει σὺ θύγατερ ἐκτός, οἶσθα γὰρ πατρὸς
πάντως ἃ μέλλει, χὐπὸ σοῖς πέπλοις ἄγε
λαβοῦσ᾽ Ὀρέστην σὸν κασίγνητον, τέκνον.
ἰδοὺ πάρεστιν ἥδε πειθαρχοῦσά σοι.
τὰ δ᾽ ἄλλ᾽ ἐγὼ πρὸ τῆσδε κἀμαυτῆς φράσω.

ΑΓΑ. τέκνον, τί κλαίεις, οὐδ᾽ ἔθ᾽ ἡδέως ὁρᾷς,
εἰς γῆν δ᾽ ἐρείσασ᾽ ὄμμα πρόσθ᾽ ἔχεις πέπλους;

ΚΛ. φεῦ·
τίν᾽ ἂν λάβοιμι τῶν ἐμῶν ἀρχὴν κακῶν;
ἅπασι γὰρ πρώτοισι χρήσασθαι πάρα
[κἀν ὑστάτοισι κἀν μέσοισι πανταχοῦ].

ΑΓΑ. τί δ' ἔστιν; ὥς μοι πάντες εἰς ἓν ἥκετε,
σύγχυσιν ἔχοντες καὶ ταραγμὸν ὀμμάτων.
ΚΛ. εἴφ' ἂν ἐρωτήσω σε γενναίως, πόσι.
ΑΓΑ. οὐδὲν κελευσμοῦ δεῖ μ'· ἐρωτᾶσθαι θέλω.
ΚΛ. τὴν παῖδα τὴν σὴν τήν τ' ἐμὴν μέλλεις κτανεῖν;
ΑΓΑ. ἔα·
τλήμονά γ' ἔλεξας, ὑπονοεῖς θ' ἃ μή σε χρή.
ΚΛ. ἔχ' ἥσυχος,
κἀκεῖνό μοι τὸ πρῶτον ἀπόκριναι πάλιν.
ΑΓΑ. σὺ δ' ἤν γ' ἐρωτᾷς εἰκότ', εἰκότ' ἂν κλύοις.
ΚΛ. οὐκ ἄλλ' ἐρωτῶ, καὶ σὺ μὴ λέγ' ἄλλα μοι.
ΑΓΑ. ὦ πότνια μοῖρα καὶ τύχη δαίμων τ' ἐμός.
ΚΛ. κἀμός γε καὶ τῆσδ', εἷς τριῶν δυσδαιμόνων.
ΑΓΑ. τίς σ' ἠδίκησε; ΚΛ. τοῦτ' ἐμοῦ πεύθει πάρα;
ὁ νοῦς ὅδ' αὐτὸς νοῦν ἔχων οὐ τυγχάνει.
ΑΓΑ. ἀπωλόμεσθα. προδέδοται τὰ κρυπτά μου.
ΚΛ. πάντ' οἶδα καὶ πέπυσμ' ἃ σύ γε μέλλεις με δρᾶν·
αὐτὸ δὲ τὸ σιγᾶν ὁμολογοῦντός ἐστί σου
καὶ τὸ στενάζειν πολλά. μὴ κάμῃς λέγων.
ΑΓΑ. ἰδοὺ σιωπῶ· τὸ γὰρ ἀναίσχυντον τί δεῖ
ψευδῆ λέγοντα προσλαβεῖν τῇ συμφορᾷ;
ΚΛ. ἄκουε δή νυν· ἀνακαλύψω γὰρ λόγους,
κοὐκέτι παρῳδοῖς χρησόμεσθ' αἰνίγμασιν.
πρῶτον μέν, ἵνα σοι πρῶτα τοῦτ' ὀνειδίσω,
ἔγημας ἄκουσάν με κἄλαβες βίᾳ,
τὸν πρόσθεν ἄνδρα Τάνταλον κατακτανών,
βρέφος τε τοὐμὸν σῷ προσούρισας πάλῳ,
μαστῶν βιαίως τῶν ἐμῶν ἀποσπάσας.
καὶ τὼ Διός τε παῖδ' ἐμώ τε συγγόνω
ἵπποισι μαρμαίροντ' ἐπεστρατευσάτην·
πατὴρ δὲ πρέσβυς Τυνδάρεώς σ' ἐρρύσατο
ἱκέτην γενόμενον, τἀμὰ δ' ἔσχες αὖ λέχη.

οὗ σοι καταλλαχθεῖσα περὶ σὲ καὶ δόμους
συμμαρτυρήσεις ὡς ἄμεμπτος ἦν γυνή,
εἴς τ' Ἀφροδίτην σωφρονοῦσα καὶ τὸ σὸν
μέλαθρον αὔξουσ', ὥστε σ' εἰσιόντα τε
χαίρειν θύραζέ τ' ἐξιόντ' εὐδαιμονεῖν.
σπάνιον δὲ θήρευμ' ἀνδρὶ τοιαύτην λαβεῖν
δάμαρτα· φλαύραν δ' οὐ σπάνις γυναῖκ' ἔχειν.
τίκτω δ' ἐπὶ τρισὶ παρθένοισι παῖδά σοι
τόνδ', ὧν μιᾶς σὺ τλημόνως μ' ἀποστερεῖς.
κἄν τίς σ' ἔρηται τίνος ἕκατί νιν κτενεῖς,
λέξον, τί φήσεις; ἢ 'μὲ χρὴ λέγειν τὰ σά;
Ἑλένην Μενέλεως ἵνα λάβῃ. καλόν γέ τοι
κακῆς γυναικὸς μισθὸν ἀποτῖσαι τέκνα.
τἄχθιστα τοῖσι φιλτάτοις ὠνούμεθα.
ἄγ', ἢν στρατεύσῃ καταλιπών μ' ἐν δώμασιν,
κἀκεῖ γενήσει διὰ μακρᾶς ἀπουσίας,
τίν' ἐν δόμοις με καρδίαν ἕξειν δοκεῖς,
ὅταν θρόνους τῆσδ' εἰσίδω πάντας κενούς,
κενοὺς δὲ παρθενῶνας; ἐπὶ δὲ δακρύοις
μόνη κάθημαι, τήνδε θρηνῳδοῦσ' ἀεί·
ἀπώλεσέν σ', ὦ τέκνον, ὁ φυτεύσας πατήρ,
αὐτὸς κτανών, οὐκ ἄλλος οὐδ' ἄλλῃ χερί,
τοιόνδε μισθὸν καταλιπὼν πρὸς τοὺς δόμους.
ἐπεὶ βραχείας προφάσεως ἔδει μόνον,
ἐφ' ᾗ σ' ἐγὼ καὶ παῖδες αἱ λελειμμέναι
δεξόμεθα δέξιν ἥν σε δέξασθαι χρεών.
μὴ δῆτα πρὸς θεῶν μήτ' ἀναγκάσῃς ἐμὲ
κακὴν γενέσθαι περὶ σέ, μήτ' αὐτὸς γένῃ.
εἶεν·
θύσεις δὲ τὴν παῖδ'· ἔνθα τίνας εὐχὰς ἐρεῖς;
τί σοι κατεύξει τἀγαθόν, σφάζων τέκνον;
νόστον πονηρόν, οἴκοθέν γ' αἰσχρῶς ἰών;

ἀλλ᾽ ἐμὲ δίκαιον ἀγαθὸν εὔχεσθαί τι σοί;
οὔ τἄρ᾽ ἀσυνέτους τοὺς θεοὺς ἡγοίμεθ᾽ ἄν,
εἰ τοῖσιν αὐθένταισιν εὖ φρονήσομεν;
ἥκων δ᾽ ἐς Ἄργος προσπεσεῖ τέκνοισι σοῖς;
ἀλλ᾽ οὐ θέμις σοι. τίς δὲ καὶ προσβλέψεται
παίδων σ᾽, ἵν᾽ αὐτῶν προθέμενος κτάνῃς τινά;
ταῦτ᾽ ἦλθες ἤδη διὰ λόγων, ἢ σκῆπτρά σοι
μόνον διαφέρειν καὶ στρατηλατεῖν σε δεῖ;
ὃν χρῆν δίκαιον λόγον ἐν Ἀργείοις λέγειν·
βούλεσθ᾽, Ἀχαιοί, πλεῖν Φρυγῶν ἐπὶ χθόνα;
κλῆρον τίθεσθε παῖδ᾽ ὅτου θανεῖν χρεών.
ἐν ἴσῳ γὰρ ἦν τόδ᾽, ἀλλὰ μὴ σ᾽ ἐξαίρετον
σφάγιον παρασχεῖν Δαναΐδαισι παῖδα σήν,
ἢ Μενέλεων πρὸ μητρὸς Ἑρμιόνην κτανεῖν,
οὗπερ τὸ πρᾶγμ᾽ ἦν. νῦν δ᾽ ἐγὼ μὲν ἡ τὸ σὸν
σῴζουσα λέκτρον παιδὸς ἧς στερήσομαι,
ἡ δ᾽ ἐξαμαρτοῦσ᾽, ὑπόροφον νεάνιδα
Σπάρτῃ κομίζουσ᾽, εὐτυχὴς γενήσεται.
τούτων ἄμειψαί μ᾽ εἴ τι μὴ καλῶς λέγω·
εἰ δ᾽ εὖ λέλεκται * * * * μὴ κτάνῃς
τὴν σήν τε κἀμὴν παῖδα, καὶ σώφρων ἔσει.

ΧΟ. πιθοῦ. τὸ γάρ τοι τέκνα συνσῴζειν καλόν,
Ἀγάμεμνον· οὐδεὶς τοῖσδ᾽ ἂν ἀντείποι βροτῶν.

ΙΦ. εἰ μὲν τὸν Ὀρφέως εἶχον, ὦ πάτερ, λόγον,
πείθειν ἐπᾴδουσ᾽, ὥσθ᾽ ὁμαρτεῖν μοι πέτρας,
κηλεῖν τε τοῖς λόγοισιν οὓς ἐβουλόμην,
ἐνταῦθ᾽ ἂν ἦλθον. νῦν δὲ τἀπ᾽ ἐμοῦ σοφά,
δάκρυα παρέξω· ταῦτα γὰρ δυναίμεθ᾽ ἄν.
ἱκετηρίαν δὲ γόνασιν ἐξάπτω σέθεν
τὸ σῶμα τοὐμόν, ὅπερ ἔτικτεν ἥδε σοι,
μή μ᾽ ἀπολέσῃς ἄωρον· ἡδὺ γὰρ τὸ φῶς
λεύσσειν· τὰ δ᾽ ὑπὸ γῆν μή μ᾽ ἰδεῖν ἀναγκάσῃς.

πρώτη σ᾽ ἐκάλεσα πατέρα καὶ σὺ παῖδ᾽ ἐμέ·
πρώτη δὲ γόνασι σοῖσι σῶμα δοῦσ᾽ ἐμὸν
φίλας χάριτας ἔδωκα κἀντεδεξάμην.
λόγος δ᾽ ὁ μὲν σὸς ἦν ὅδ᾽· ἆρά σ᾽, ὦ τέκνον,
εὐδαίμον᾽ ἀνδρὸς ἐν δόμοισιν ὄψομαι,
ζῶσάν τε καὶ θάλλουσαν ἀξίως ἐμοῦ;
οὑμὸς δ᾽ ὅδ᾽ ἦν αὖ περὶ σὸν ἐξαρτωμένης
γένειον, οὗ νῦν ἀντιλάζυμαι χερί·
τί δ᾽ ἆρ᾽ ἐγὼ σέ, πρέσβυν ἆρ᾽ εἰσδέξομαι
ἐμῶν φίλαισιν ὑποδοχαῖς δόμων, πάτερ,
πόνων τιθηνοὺς ἀποδιδοῦσά σοι τροφάς;
τούτων ἐγὼ μὲν τῶν λόγων μνήμην ἔχω,
σὺ δ᾽ ἐπιλέλησαι, καί μ᾽ ἀποκτεῖναι θέλεις.
μὴ πρός σε Πέλοπος καὶ πρὸς Ἀτρέως πατρὸς
καὶ τῆσδε μητρός, ἣ πρὶν ὠδίνουσ᾽ ἐμὲ
νῦν δευτέραν ὠδῖνα τήνδε λαμβάνει.
τί μοι μέτεστι τῶν Ἀλεξάνδρου γάμων
Ἑλένης τε; πόθεν ἦλθ᾽ ἐπ᾽ ὀλέθρῳ τὠμῷ, πάτερ;
βλέψον πρὸς ἡμᾶς, ὄμμα δὸς φίλημά τε,
ἵν᾽ ἀλλὰ τοῦτο κατθανοῦσ᾽ ἔχω σέθεν
μνημεῖον, εἰ μὴ τοῖς ἐμοῖς πείθει λόγοις.
ἀδελφέ, μικρὸς μὲν σύ γ᾽ ἐπίκουρος φίλοις,
ὅμως δὲ συνδάκρυσον, ἱκέτευσον πατρὸς
τὴν σὴν ἀδελφὴν μὴ θανεῖν· αἴσθημά τοι
κἀν νηπίοις γε τῶν κακῶν ἐγγίγνεται.
ἰδοὺ σιωπῶν λίσσεταί σ᾽ ὅδ᾽, ὦ πάτερ.
ἀλλ᾽ αἴδεσαί με καὶ κατοίκτειρον βίον.
ναί, πρὸς γενείου σ᾽ ἀντόμεσθα δύο φίλω·
ὁ μὲν νεοσσός ἐστιν, ἡ δ᾽ ηὐξημένη.
ἓν συντεμοῦσα πάντα νικήσω λόγον·
τὸ φῶς τόδ᾽ ἀνθρώποισιν ἥδιστον βλέπειν,

τὰ νέρθε δ' οὐδέν· μαίνεται δ' ὃς εὔχεται
θανεῖν. κακῶς ζῆν κρεῖσσον ἢ καλῶς θανεῖν.

ΧΟ. ὦ τλῆμον Ἑλένη, διὰ σὲ καὶ τοὺς σοὺς γάμους
ἀγὼν Ἀτρείδαις καὶ τέκνοις ἥκει μέγας.

ΑΓΑ. ἐγὼ τά τ' οἰκτρὰ συνετός εἰμι καὶ τὰ μή,
φιλῶν ἐμαυτοῦ τέκνα· μαινοίμην γὰρ ἄν.
δεινῶς δ' ἔχει με ταῦτα τολμῆσαι, γύναι,
δεινῶς δὲ καὶ μή· τοῦτο γὰρ πρᾶξαί με δεῖ.
ὁρᾶθ' ὅσον στράτευμα ναύφρακτον τόδε,
χαλκέων θ' ὅπλων ἄνακτες Ἑλλήνων ὅσοι,
οἷς νόστος οὐκ ἔστ' Ἰλίου πύργους ἔπι,
εἰ μή σε θύσω, μάντις ὡς Κάλχας λέγει,
οὐδ' ἔστι Τροίας ἐξελεῖν κλεινὸν βάθρον.
μέμηνε δ' Ἀφροδίτη τις Ἑλλήνων στρατῷ
πλεῖν ὡς τάχιστα βαρβάρων ἐπὶ χθόνα,
παῦσαί τε λέκτρων ἁρπαγὰς Ἑλληνικάς·
οἳ τὰς ἐν Ἄργει παρθένους κτενοῦσί μου
ὑμᾶς τε κἀμέ, θέσφατ' εἰ λύσω θεᾶς.
οὐ Μενέλεώς με καταδεδούλωται, τέκνον,
οὐδ' ἐπὶ τὸ κείνου βουλόμενον ἐλήλυθα,
ἀλλ' Ἑλλάς, ᾗ δεῖ, κἂν θέλω κἂν μὴ θέλω,
θῦσαί σε· τούτου δ' ἥσσονες καθέσταμεν.
ἐλευθέραν γὰρ δεῖ νιν ὅσον ἐν σοί, τέκνον,
κἀμοὶ γενέσθαι, μηδὲ βαρβάροις ὕπο
Ἕλληνας ὄντας λέκτρα συλᾶσθαι βίᾳ.

ΚΛ. ὦ τέκνον, ὦ ξέναι,
οἲ 'γὼ θανάτου τοῦ σοῦ μελέα.
φεύγει σε πατὴρ ᾅδῃ παραδούς.

ΙΦ. οἲ 'γώ, μᾶτερ μᾶτερ, ταὐτὸν
μέλος εἰς ἄμφω πέπτωκε τύχης,
κοὐκέτι μοι φῶς,
οὐδ' ἀελίου τόδε φέγγος.

ἰὼ ἰώ.
νιφόβολον Φρυγῶν νάπος Ἴδας τ᾽
ὄρεα, Πρίαμος ὅθι ποτὲ βρέφος ἁπαλὸν ἔβαλε
ματρὸς ἀποπρὸ νοσφίσας
ἐπὶ μόρῳ θανατόεντι
Πάριν, ὃς Ἰδαῖος
Ἰδαῖος ἐλέγετ᾽ ἐλέγετ᾽ ἐν Φρυγῶν πόλει.
μή ποτ᾽ ὤφελεν τὸν ἀμφὶ
βουσὶ βουκόλον τραφέντ᾽
Ἀλέξανδρον
οἰκίσαι ἀμφὶ τὸ λευκὸν ὕδωρ, ὅθι
κρῆναι Νυμφᾶν κεῖνται
λειμών τ᾽ ἄνθεσι θάλλων
χλωροῖς, καὶ ῥοδόεντα
ἄνθε᾽ ὑακίνθινά τε θεαῖς δρέπειν·
ἔνθα ποτὲ Παλλὰς ἔμολε
καὶ δολιόφρων Κύπρις
Ἥρα θ᾽ Ἑρμᾶς θ᾽,
ὁ Διὸς ἄγγελος,
ἁ μὲν ἐπὶ πόθῳ τρυφῶσα
Κύπρις, ἁ δὲ δουρὶ Παλλάς,
Ἥρα τε Διὸς ἄνακτος
εὐναῖσι βασιλίσιν,
κρίσιν ἐπὶ στυγνὰν ἔριν τε
καλλονᾶς, ἐμοὶ δὲ θάνατον,
ὄνομα μὲν φέροντα Δαναΐδαισιν, ὦ κόραι,
προθύματ᾽ ἔλαβεν Ἄρτεμις πρὸς Ἴλιον.
ὁ δὲ τεκών με τὰν τάλαιναν,
ὦ μᾶτερ ὦ μᾶτερ,
οἴχεται προδοὺς ἔρημον.
ὦ δυστάλαιν᾽ ἐγώ, πικρὰν
πικρὰν ἰδοῦσα δυσελέναν,

φονεύομαι διόλλυμαι
σφαγαῖσιν ἀνοσίοισιν ἀνοσίου πατρός.
μή μοι ναῶν χαλκεμβολάδων
πρύμνας ἅδ᾽ Αὐλὶς δέξασθαι
τούσδ᾽ εἰς ὅρμους εἰς Τροίαν
ὤφελεν ἐλάταν πομπαίαν,
μηδ᾽ ἀνταίαν Εὐρίπῳ
πνεῦσαι πομπὰν Ζεύς, μειλίσσων
αὔραν ἄλλοις ἄλλαν θνατῶν
λαίφεσι χαίρειν,
τοῖσι δὲ λύπαν, τοῖσι δ᾽ ἀνάγκαν,
τοῖς δ᾽ ἐξορμᾶν, τοῖς δὲ στέλλειν,
τοῖσι δὲ μέλλειν.
ἦ πολύμοχθον ἄρ᾽ ἦν γένος, ἦ πολύμοχθον
ἁμερίων, τὸ χρεὼν δέ τι δύσποτμον
ἀνδράσιν ἀνευρεῖν.
ἰὼ ἰώ,
μεγάλα πάθεα, μεγάλα δ᾽ ἄχεα
Δαναΐδαις τιθεῖσα Τυνδαρὶς κόρα.

ΧΟ. ἐγὼ μὲν οἰκτείρω σε συμφορᾶς κακῆς
τυχοῦσαν, οἵας μήποτ᾽ ὤφελες τυχεῖν.
ΙΦ. ὦ τεκοῦσα μῆτερ, ἀνδρῶν ὄχλον εἰσορῶ πέλας.
ΚΛ. τόν γε τῆς θεᾶς παῖδα, τέκνον, ᾧ σὺ δεῦρ᾽ ἐλήλυθας.
ΙΦ. διαχαλᾶτέ μοι μέλαθρα, δμῶες, ὡς κρύψω δέμας.
ΚΛ. τί δέ, τέκνον, φεύγεις; ΙΦ. Ἀχιλλέα τόνδ᾽ ἰδεῖν αἰσχύνομαι.
ΚΛ. ὡς τί δή; ΙΦ. τὸ δυστυχές μοι τῶν γάμων αἰδῶ φέρει.
ΚΛ. [οὐκ ἐν ἁβρότητι κεῖσαι πρὸς τὰ νῦν πεπτωκότα.]
ἀλλὰ μίμν᾽· οὐ σεμνότητος ἔργον, ἢν δυνώμεθα.

ΑΧ. ὦ γύναι τάλαινα, Λήδας θύγατερ. ΚΛ. οὐ ψευδῆ θροεῖς.
ΑΧ. δείν᾽ ἐν Ἀργείοις βοᾶται ΚΛ. τίνα βοήν; σήμαινέ μοι.
ΑΧ. ἀμφὶ σῆς παιδός, ΚΛ. πονηρὸν εἶπας οἰωνὸν λόγων.
ΑΧ. ὡς χρεὼν σφάξαι νιν. ΚΛ. κοὐδεὶς ἐναντία λέγει;
ΑΧ. εἰς θόρυβον ἐγώ τι καὐτὸς ἤλυθον, ΚΛ. τίν᾽, ὦ ξένε;
ΑΧ. σῶμα λευσθῆναι πέτροισι. ΚΛ. μῶν κόρην σῴζων ἐμήν;
ΑΧ. αὐτὸ τοῦτο. ΚΛ. τίς δ᾽ ἂν ἔτλη σώματος τοῦ σοῦ θιγεῖν;
ΑΧ. πάντες Ἕλληνες. ΚΛ. στρατὸς δὲ Μυρμιδὼν οὔ σοι παρῆν;
ΑΧ. πρῶτος ἦν ἐκεῖνος ἐχθρός. ΚΛ. δι᾽ ἄρ᾽ ὀλώλαμεν, τέκνον.
ΑΧ. οἵ με τὸν γάμων ἀπεκάλουν ἥσσον᾽. ΚΛ. ἀπεκρίνω δὲ τί;
ΑΧ. τὴν ἐμὴν μέλλουσαν εὐνὴν μὴ κτανεῖν, ΚΛ. δίκαια γάρ.
ΑΧ. ἣν ἐφήμισεν πατήρ μοι. ΚΛ. κἀργόθεν γ᾽ ἐπέμψατο.
ΑΧ. ἀλλ᾽ ἐνικώμην κεκραγμοῦ. ΚΛ. τὸ πολὺ γὰρ δεινὸν κακόν.
ΑΧ. ἀλλ᾽ ὅμως ἀρήξομέν σοι. ΚΛ. καὶ μαχεῖ πολλοῖσιν εἷς;
ΑΧ. εἰσορᾷς τεύχη φέροντας τούσδ᾽; ΚΛ. ὄναιο τῶν φρενῶν.
ΑΧ. ἀλλ᾽ ὀνησόμεσθα. ΚΛ. παῖς ἄρ᾽ οὐκέτι σφαγήσεται;
ΑΧ. οὔκ, ἐμοῦ γ᾽ ἑκόντος. ΚΛ. ἥξει δ᾽ ὅστις ἅψεται κόρης;

ΑΧ. μυρίοι γ'· ἄξει δ' Ὀδυσσεύς. *ΚΛ.* ἆρ' ὁ Σισύφου γόνος;
ΑΧ. αὐτὸς οὗτος. *ΚΛ.* ἴδια πράσσων, ἢ στρατοῦ ταχθεὶς ὕπο;
ΑΧ. αἱρεθεὶς ἑκών. *ΚΛ.* πονηράν γ' αἵρεσιν, μιαιφονεῖν.
ΑΧ. ἀλλ' ἐγὼ σχήσω νιν. *ΚΛ.* ἄξει δ' οὐχ ἑκοῦσαν ἁρπάσας;
ΑΧ. δηλαδὴ ξανθῆς ἐθείρης. *ΚΛ.* ἐμὲ δὲ τί χρὴ δρᾶν τότε;
ΑΧ. ἀντέχου θυγατρός. *ΚΛ.* ὡς τοῦδ' οὕνεκ' οὐ σφαγήσεται.
ΑΧ. ἀλλὰ μὴν εἰς τοῦτό γ' ἥξει. *ΙΦ.* μῆτερ, εἰσακούσατε
τῶν ἐμῶν λόγων· μάτην γάρ σ' εἰσορῶ θυμουμένην
σῷ πόσει· τὰ δ' ἀδύναθ' ἡμῖν καρτερεῖν οὐ ῥᾴδιον.
τὸν μὲν οὖν ξένον δίκαιον αἰνέσαι προθυμίας·
ἀλλὰ καὶ σὲ τοῦθ' ὁρᾶν χρή, μὴ διαβληθῇς στρατῷ.
καὶ πλέον πράξωμεν οὐδέν, ὅδε δὲ συμφορᾶς τύχῃ.
οἷα δ' εἰσῆλθέν μ', ἄκουσον, μῆτερ, ἐννοουμένην·
κατθανεῖν μέν μοι δέδοκται· τοῦτο δ' αὐτὸ βούλομαι
εὐκλεῶς πρᾶξαι παρεῖσά τ' ἐκποδὼν τὸ δυσγενές.
δεῦρο δὴ σκέψαι μεθ' ἡμῶν, μῆτερ, ὡς καλῶς λέγω·
εἰς ἔμ' Ἑλλὰς ἡ μεγίστη πᾶσα νῦν ἀποβλέπει,
κἀν ἐμοὶ πορθμός τε ναῶν καὶ Φρυγῶν κατασκαφαί,
τάς τε μελλούσας γυναῖκας ἤν τι δρῶσι βάρβαροι,

μηκέθ' ἁρπάζειν ἐᾶν τὰς ὀλβίας ἐξ Ἑλλάδος,
τὸν Ἑλένης τίσαντας ὄλεθρον, ἥντιν' ἥρπασεν Πάρις.
ταῦτα πάντα κατθανοῦσα ῥύσομαι, καί μου κλέος,
Ἑλλάδ' ὡς ἠλευθέρωσα, μακάριον γενήσεται.
καὶ γὰρ οὐδέ τοί τι λίαν ἐμὲ φιλοψυχεῖν χρεών·
πᾶσι γάρ μ' Ἕλλησι κοινὸν ἔτεκες, οὐχὶ σοὶ μόνῃ.
ἀλλὰ μυρίοι μὲν ἄνδρες ἀσπίσιν πεφραγμένοι,
μυρίοι δ' ἐρέτμ' ἔχοντες, πατρίδος ἠδικημένης,
δρᾶν τι τολμήσουσιν ἐχθροὺς χὐπὲρ Ἑλλάδος θανεῖν·
ἡ δ' ἐμὴ ψυχὴ μί' οὖσα πάντα κωλύσει τάδε;
τί τὸ δίκαιον τοῦτό γ'; ἆρ' ἔχοιμ' ἂν ἀντειπεῖν ἔπος;
κἀπ' ἐκεῖν' ἔλθωμεν. οὐ δεῖ τόνδε διὰ μάχης μολεῖν
πᾶσιν Ἀργείοις γυναικὸς οὕνεκ' οὐδὲ κατθανεῖν.
εἷς γ' ἀνὴρ κρείσσων γυναικῶν μυρίων ὁρᾶν φάος.
εἰ δ' ἐβουλήθη τὸ σῶμα τοὐμὸν Ἄρτεμις λαβεῖν,
ἐμποδὼν γενήσομαι 'γὼ θνητὸς οὖσα τῇ θεῷ;
ἀλλ' ἀμήχανον· δίδωμι σῶμα τοὐμὸν Ἑλλάδι.
θύετ', ἐκπορθεῖτε Τροίαν. ταῦτα γὰρ μνημεῖά μου
διὰ μακροῦ, καὶ παῖδες οὗτοι καὶ γάμοι καὶ δόξ' ἐμή.
βαρβάρων δ' Ἕλληνας ἄρχειν εἰκός, ἀλλ' οὐ βαρβάρους,
μῆτερ, Ἑλλήνων· τὸ μὲν γὰρ δοῦλον, οἱ δ' ἐλεύθεροι.

ΧΟ. τὸ μὲν σόν, ὦ νεᾶνι, γενναίως ἔχει·
τὸ τῆς τύχης δὲ καὶ τὸ τῆς θεοῦ νοσεῖ.

ΑΧ. Ἀγαμέμνονος παῖ, μακάριόν μέ τις θεῶν

ἔμελλε θήσειν, εἰ τύχοιμι σῶν γάμων.
ζηλῶ δὲ σοῦ μὲν Ἑλλάδ', Ἑλλάδος δὲ σέ.
εὖ γὰρ τόδ' εἶπας ἀξίως τε πατρίδος·
[τὸ θεομαχεῖν γὰρ ἀπολιποῦσ', ὅ σου κρατεῖ,
ἐξελογίσω τὰ χρηστὰ τἀναγκαῖά τε.]
μᾶλλον δὲ λέκτρων σῶν πόθος μ' εἰσέρχεται
εἰς τὴν φύσιν βλέψαντα· γενναία γὰρ εἶ.
ὅρα δ'· ἐγὼ γὰρ βούλομαί σ' εὐεργετεῖν
λαβεῖν τ' ἐς οἴκους· ἄχθομαί τ', ἴστω Θέτις,
εἰ μή σε σώσω Δαναΐδαισι διὰ μάχης
ἐλθών· ἄθρησον, ὁ θάνατος δεινὸν κακόν.
ΙΦ. *λέγω τάδ', οὐδὲν οὐδέν' εὐλαβουμένη.*
ἡ Τυνδαρὶς παῖς διὰ τὸ σῶμ' ἀρκεῖ μάχας
ἀνδρῶν τιθεῖσα καὶ φόνους· σὺ δ', ὦ ξένε,
μὴ θνῆσκε δι' ἐμὲ μηδ' ἀποκτείνῃς τινά.
ἔα δὲ σῶσαί μ' Ἑλλάδ', ἢν δυνώμεθα.
ΑΧ. *ὦ λῆμ' ἄριστον, οὐκ ἔχω πρὸς τοῦτ' ἔτι*
λέγειν, ἐπεί σοι τάδε δοκεῖ· γενναῖα γὰρ
φρονεῖς· τί γὰρ τἀληθὲς οὐκ εἴποι τις ἄν;
ὅμως δ' ἴσως ἔτ' ἂν μεταγνοίης τάδε.
[ὡς οὖν ἂν εἰδῇς τἀπ' ἐμοῦ λελεγμένα,
ἐλθὼν τάδ' ὅπλα θήσομαι βωμοῦ πέλας,
ὡς οὐκ ἐάσων σ' ἀλλὰ κωλύσων θανεῖν.
χρήσει δὲ καὶ σὺ τοῖς ἐμοῖς λόγοις τάχα,
ὅταν πέλας σῆς φάσγανον δέρῃς ἴδῃς.]
οὔκουν ἐάσω σ' ἀφροσύνῃ τῇ σῇ θανεῖν·
ἐλθὼν δὲ σὺν ὅπλοις τοῖσδε πρὸς ναὸν θεᾶς
καραδοκήσω σὴν ἐκεῖ παρουσίαν.
ΙΦ. *μῆτερ, τί σιγῇ δακρύοις τέγγεις κόρας;*
ΚΛ. *ἔχω τάλαινα πρόφασιν ὥστ' ἀλγεῖν φρένα.*
ΙΦ. *παῦσαί με μὴ κάκιζε· τάδε δ' ἐμοὶ πιθοῦ.*
ΚΛ. *λέγ', ὡς παρ' ἡμῶν οὐδὲν ἀδικήσει, τέκνον.*

ΙΦ. μήτ᾽ οὖν γε τὸν σὸν πλόκαμον ἐκτέμῃς τριχός,
μήτ᾽ ἀμφὶ σῶμα μέλανας ἀμπίσχῃ πέπλους.
ΚΛ. τί δὴ τόδ᾽ εἶπας, τέκνον; ἀπολέσασά σε
ΙΦ. οὐ σύ γε· σέσωσμαι, κατ᾽ ἐμὲ δ᾽ εὐκλεὴς ἔσει.
ΚΛ. πῶς εἶπας; οὐ πενθεῖν με σὴν ψυχὴν χρεών;
ΙΦ. ἥκιστ᾽, ἐπεί μοι τύμβος οὐ χωσθήσεται.
ΚΛ. τί δαί, τὸ θνήσκειν οὐ τάφος νομίζεται;
ΙΦ. βωμὸς θεᾶς μοι μνῆμα τῆς Διὸς κόρης.
ΚΛ. ἀλλ᾽, ὦ τέκνον, σοὶ πείσομαι· λέγεις γὰρ εὖ.
ΙΦ. ὡς εὐτυχοῦσά γ᾽ Ἑλλάδος τ᾽ εὐεργέτις.
ΚΛ. τί δὴ κασιγνήταισιν ἀγγελῶ σέθεν;
ΙΦ. μηδ᾽ ἀμφὶ κείναις μέλανας ἐξάψῃ πέπλους.
ΚΛ. εἴπω δὲ παρὰ σοῦ φίλον ἔπος τι παρθένοις;
ΙΦ. χαίρειν γ᾽. Ὀρέστην τ᾽ ἔκτρεφ᾽ ἄνδρα τόνδε μοι.
ΚΛ. προσέλκυσαί νιν ὕστατον θεωμένη.
ΙΦ. ὦ φίλτατ᾽, ἐπεκούρησας ὅσον εἶχες φίλοις.
ΚΛ. ἔσθ᾽ ὅ τι κατ᾽ Ἄργος δρῶσά σοι χάριν φέρω;
ΙΦ. πατέρα τε τὸν ἐμὸν μὴ στύγει πόσιν τε σόν.
ΚΛ. δεινοὺς ἀγῶνας διὰ σὲ δεῖ κεῖνον δραμεῖν.
ΙΦ. ἄκων μ᾽ ὑπὲρ γῆς Ἑλλάδος διώλεσεν.
ΚΛ. δόλῳ δ᾽, ἀγεννῶς Ἀτρέως τ᾽ οὐκ ἀξίως.
ΙΦ. τίς μ᾽ εἶσιν ἄξων πρὶν σπαράξεσθαι κόμης;
ΚΛ. ἔγωγε μετὰ σοῦ ΙΦ. μὴ σύ γ᾽· οὐ καλῶς λέγεις.
ΚΛ. πέπλων ἐχομένη σῶν ΙΦ. ἐμοί, μῆτερ, πιθοῦ,
μέν᾽· ὡς ἐμοί τε σοί τε κάλλιον τόδε.
πατρὸς δ᾽ ὀπαδῶν τῶνδέ τίς με πεμπέτω
Ἀρτέμιδος εἰς λειμῶν᾽, ὅπου σφαγήσομαι.
ΚΛ. ὦ τέκνον, οἴχει; ΙΦ. καὶ πάλιν γ᾽ οὐ μὴ μόλω.
ΚΛ. λιποῦσα μητέρ᾽; ΙΦ. ὡς ὁρᾷς γ᾽, οὐκ ἀξίως.
ΚΛ. σχές, μή με προλίπῃς. ΙΦ. οὐκ ἐῶ στάζειν δάκρυ.
ὑμεῖς δ᾽ ἐπευφημήσατ᾽, ὦ νεάνιδες,
παιᾶνα τῇ ᾽μῇ συμφορᾷ Διὸς κόρην

Ἄρτεμιν· ἴτω δὲ Δαναΐδαις εὐφημία.
κανᾶ δ' ἐναρχέσθω τις, αἰθέσθω δὲ πῦρ
προχύταις καθαρσίοισι, καὶ πατὴρ ἐμὸς
ἐνδεξιούσθω βωμόν· ὡς σωτηρίαν
Ἕλλησι δώσουσ' ἔρχομαι νικηφόρον.
ἄγετέ με τὰν Ἰλίου στρ.
καὶ Φρυγῶν ἑλέπτολιν.
στέφεα περίβολα δίδοτε, φέρε-
τε· πλόκαμος ὅδε καταστέφειν
χερνίβων γε παγαῖς.
ἑλίσσετ' ἀμφὶ ναὸν ἀμφὶ βωμὸν
τὰν ἄνασσαν Ἄρτεμιν,
θεὰν μάκαιραν· ὡς ἐμοῖσιν, εἰ χρεών,
αἵμασι θύμασί τε
θέσφατ' ἐξαλείψω.
ὦ πότνια πότνια μᾶτερ, ὡς δάκρυά γέ σοι
δώσομεν ἁμέτερα·
παρ' ἱεροῖς γὰρ οὐ πρέπει.
ἰὼ ἰὼ νεάνιδες,
συνεπαείδετ' Ἄρτεμιν
Χαλκίδος ἀντίπορον,
ἵνα τε δόρατα μέμονε δᾷα
δι' ἐμὸν ὄνομα τᾶσδ' Αὐλίδος
στενοπόροισιν ὅρμοις.
ἰὼ γᾶ μᾶτερ ὦ Πελασγία,
Μυκηναῖαί τ' ἐμαὶ θεράπναι.

ΧΟ. καλεῖς πόλισμα Περσέως,
Κυκλωπίων πόνον χερῶν;

ΙΦ. ἐθρεψας Ἑλλάδι με φάος·
θανοῦσα δ' οὐκ ἀναίνομαι.

ΧΟ. κλέος γὰρ οὔ σε μὴ λίπῃ.

1475—1490 = 1510—1520

ΙΦ. ἰὼ ἰώ.
λαμπαδοῦχος ἁμέρα Δι-
ός τε φέγγος, ἕτερον
ἕτερον αἰῶνα καὶ μοῖραν οἰκήσομεν.
χαῖρέ μοι, φίλον φάος. ἰὼ ἰώ.

ΧΟ. ἴδεσθε τὰν Ἰλίου ἀντ.
καὶ Φρυγῶν ἑλέπτολιν
στείχουσαν, ἐπὶ κάρα στέφεα
* * * * * * βαλομέναν
χερνίβων τε παγάς,
βωμὸν διαίμονος θεᾶς * * *
ῥανίσιν αἱματορρύτοις
ῥανοῦσαν εὐφυῆ τε σώματος δέρην
σφαγεῖσαν.
εὔδροσοι πατρῷαι
παγαὶ μένουσι χέρνιβές τέ σε στρατός τ'
Ἀχαιῶν θέλων
Ἰλίου πόλιν μολεῖν.
ἀλλὰ τὰν Διὸς κόραν
κλῄσωμεν Ἄρτεμιν, θεῶν ἄνασσαν,
ὡς ἐπ' εὐτυχεῖ πότμῳ.
ὦ πότνια, θύμασιν βροτησίοις
χαρεῖσα, πέμψον εἰς Φρυγῶν
γαῖαν Ἑλλάνων στρατὸν
καὶ δολόεντα Τροίας ἕδη,
Ἀγαμέμνονά τε λόγχαις
Ἑλλάσι κλεινότατον στέφανον
δὸς ἀμφὶ κάρα θ' ἑὸν
κλέος ἀείμνηστον ἀμφιθεῖναι.

ΑΓΓ. ὦ Τυνδαρεία παῖ, Κλυταιμνήστρα, δόμων
ἔξω πέρασον, ὡς κλύῃς ἐμῶν λόγων.

ΚΛ. φθογγῆς κλύουσα δεῦρο σῆς ἀφικόμην,
ταρβοῦσα τλήμων κἀκπεπληγμένη φόβῳ,
μή μοί τιν' ἄλλην ξυμφορὰν ἥκῃς φέρων
πρὸς τῇ παρούσῃ. ΑΓΓ. σῆς μὲν οὖν παιδὸς πέρι
θαυμαστά σοι καὶ δεινὰ σημῆναι θέλω.
ΚΛ. μὴ μέλλε τοίνυν, ἀλλὰ φράζ' ὅσον τάχος.
[ΑΓΓ. ἀλλ', ὦ φίλη δέσποινα, πᾶν πεύσει σαφῶς.
λέξω δ' ἀπ' ἀρχῆς, ἤν τι μὴ σφαλεῖσά μου
γνώμη ταράξῃ γλῶσσαν ἐν λόγοις ἐμήν.
ἐπεὶ γὰρ ἱκόμεσθα τῆς Διὸς κόρης
Ἀρτέμιδος ἄλσος λείμακάς τ' ἀνθεσφόρους,
ἵν' ἦν Ἀχαιῶν σύλλογος στρατεύματος,
σὴν παῖδ' ἄγοντες, εὐθὺς Ἀργείων ὄχλος
ἠθροίζεθ'. ὡς δ' ἐσεῖδεν Ἀγαμέμνων ἄναξ
ἐπὶ σφαγὰς στείχουσαν εἰς ἄλσος κόρην,
ἀνεστέναξε, κἄμπαλιν στρέψας κάρα
δάκρυα προῆγεν, ὀμμάτων πέπλον προθείς.
ἡ δὲ σταθεῖσα τῷ τεκόντι πλησίον
ἔλεξε τοιάδ'· ὦ πάτερ, πάρειμί σοι,
τοὐμὸν δὲ σῶμα τῆς ἐμῆς ὑπὲρ πάτρας
καὶ τῆς ἁπάσης Ἑλλάδος γαίας ὕπερ
θῦσαι δίδωμ' ἑκοῦσα πρὸς βωμὸν θεᾶς
ἄγοντας, εἴπερ ἐστὶ θέσφατον τόδε.
καὶ τοὐπ' ἔμ' εὐτυχεῖτε, καὶ νικηφόρου
δορὸς τύχοιτε πατρίδα τ' ἐξίκοισθε γῆν.
πρὸς ταῦτα μὴ ψαύσῃ τις Ἀργείων ἐμοῦ·
σιγῇ παρέξω γὰρ δέρην εὐκαρδίως.
τοσαῦτ' ἔλεξε· πᾶς δ' ἐθάμβησεν κλύων
εὐψυχίαν τε κἀρετὴν τῆς παρθένου.
στὰς δ' ἐν μέσῳ Ταλθύβιος, ᾧ τόδ' ἦν μέλον,
εὐφημίαν ἀνεῖπε καὶ σιγὴν στρατῷ·

Κάλχας δ' ὁ μάντις εἰς κανοῦν χρυσήλατον
ἔθηκεν ὀξὺ χειρὶ φάσγανον σπάσας
κολεῶν ἔσωθεν, κρᾶτά τ' ἔστεψεν κόρης.
ὁ παῖς δ' ὁ Πηλέως ἐν κύκλῳ βωμὸν θεᾶς
λαβὼν κανοῦν ἔθρεξε χέρνιβάς θ' ὁμοῦ,
ἔλεξε δ'· ὦ Διὸς Ἄρτεμις θηροκτόνε,
τὸ λαμπρὸν εἱλίσσουσ' ἐν εὐφρόνῃ φάος,
δέξαι τὸ θῦμα τόδ' ὅ γέ σοι δωρούμεθα
στρατός τ' Ἀχαιῶν Ἀγαμέμνων ἄναξ θ' ὁμοῦ,
ἄχραντον αἷμα καλλιπαρθένου δέρης,
καὶ δὸς γενέσθαι πλοῦν νεῶν ἀπήμονα,
Τροίας τε πέργαμ' ἐξελεῖν ἡμᾶς δορί.
εἰς γῆν δ' Ἀτρεῖδαι πᾶς στρατός τ' ἔστη βλέπων.
ἱερεὺς δὲ φάσγανον λαβὼν ἐπεύξατο,
λαιμόν τ' ἐπεσκοπεῖθ', ἵνα πλήξειεν ἄν·
ἐμοὶ δὲ τἄλγος οὐ μικρὸν εἰσήει φρενί,
κἄστην νενευκώς· θαῦμα δ' ἦν αἴφνης ὁρᾶν·
πληγῆς κτύπον γὰρ πᾶς τις ᾔσθετ' ἂν σαφῶς,
τὴν παρθένον δ' οὐκ εἶδεν οὗ γῆς εἰσέδυ.
βοᾷ δ' ἱερεύς, ἅπας δ' ἐπήχησε στρατός,
ἄελπτον εἰσιδόντες ἐκ θεῶν τινος
φάσμ', οὗ γε μηδ' ὁρωμένου πίστις παρῆν·
ἔλαφος γὰρ ἀσπαίρουσ' ἔκειτ' ἐπὶ χθονὶ
ἰδεῖν μεγίστη διαπρεπής τε τὴν θέαν,
ἧς αἵματι βωμὸς ἐραίνετ' ἄρδην τῆς θεοῦ.
κἂν τῷδε Κάλχας πῶς δοκεῖς χαίρων ἔφη·
ὦ τοῦδ' Ἀχαιῶν κοίρανοι κοινοῦ στρατοῦ,
ὁρᾶτε τήνδε θυσίαν, ἣν ἡ θεὸς
προύθηκε βωμίαν, ἔλαφον ὀρειδρόμον;
ταύτην μάλιστα τῆς κόρης ἀσπάζεται,
ὡς μὴ μιάνῃ βωμὸν εὐγενεῖ φόνῳ.

ἡδέως τε τοῦτ᾽ ἐδέξατο, καὶ πλοῦν οὔριον
δίδωσιν ἡμῖν Ἰλίου τ᾽ ἐπιδρομάς.
πρὸς ταῦτα πᾶς τις θάρσος αἶρε ναυβάτης,
χώρει τε πρὸς ναῦν· ὡς ἡμέρᾳ τῇδε δεῖ
λιπόντας ἡμᾶς Αὐλίδος κοίλους μυχοὺς
Αἴγαιον οἶδμα διαπερᾶν. ἐπεὶ δ᾽ ἅπαν
κατηνθρακώθη θῦμ᾽ ἐν Ἡφαίστου φλογί,
τὰ πρόσφορ᾽ ηὔξαθ᾽, ὡς τύχοι νόστου στρατός.
πέμπει δ᾽ Ἀγαμέμνων μ᾽ ὥστε σοι φράσαι τάδε,
λέγειν θ᾽ ὁποίας ἐκ θεῶν μοίρας κυρεῖ
καὶ δόξαν ἔσχεν ἄφθιτον καθ᾽ Ἑλλάδα.
ἐγὼ παρὼν δὲ καὶ τὸ πρᾶγμ᾽ ὁρῶν λέγω·
ἡ παῖς σαφῶς σοι πρὸς θεοὺς ἀφίπτατο.
λύπης δ᾽ ἀφαίρει καὶ πόσει πάρες χόλον·
ἀπροσδόκητα δὲ βροτοῖσι τὰ τῶν θεῶν,
σώζουσί θ᾽ οὓς φιλοῦσιν. ἦμαρ γὰρ τόδε
θανοῦσαν εἶδε καὶ βλέπουσαν παῖδα σήν.

ΧΟ. ὡς ἥδομαί τοι ταῦτ᾽ ἀκούσασ᾽ ἀγγέλου·
ζῶν δ᾽ ἐν θεοῖσι σὸν μένειν φράζει τέκος.

ΚΛ. ὦ παῖ, θεῶν του κλέμμα γέγονας;
πῶς σε προσείπω; πῶς δὲ φῶ;
παραμυθεῖσθαι τούσδε μάτην μύθους,
ὥς σου πένθους λυγροῦ παυσαίμαν;

ΧΟ. καὶ μὴν Ἀγαμέμνων ἄναξ στείχει,
τούσδ᾽ αὐτοὺς ἔχων σοι φράζειν μύθους.

ΑΓΑ. γύναι, θυγατρὸς ἕνεκ᾽ ὄλβιοι γενοίμεθ᾽ ἄν·
ἔχει γὰρ ὄντως ἐν θεοῖς ὁμιλίαν.
χρὴ δέ σε λαβοῦσαν τόνδε μόσχον νεαγενῆ
στείχειν πρὸς οἴκους· ὡς στρατὸς πρὸς πλοῦν ὁρᾷ.

καὶ χαῖρε· χρόνιά γε τἀμά σοι προσφθέγματα
Τροίηθεν ἔσται. καὶ γένοιτό σοι καλῶς.

ΧΟ. χαίρων, Ἀτρείδη, γῆν ἱκοῦ Φρυγίαν,
χαίρων δ' ἐπάνηκε,
κάλλιστά μοι σκῦλ' ἀπὸ Τροίας ἑλών.]

ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ Η ΕΝ ΤΑΥΡΟΙΣ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ.
ΟΡΕΣΤΗΣ.
ΠΥΛΑΔΗΣ.
ΧΟΡΟΣ ΕΛΛΗΝΙΔΩΝ ΓΥΝΑΙΚΩΝ.
ΒΟΥΚΟΛΟΣ.
ΘΟΑΣ.
ΑΓΓΕΛΟΣ.
ΑΘΗΝΑ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ.

Ὀρέστης κατὰ χρησμὸν εἰς Ταύρους τῆς Σκυθίας μετὰ Πυλάδου παραγενόμενος τὸ παρ' αὐτοῖς τιμώμενον τῆς Ἀρτέμιδος ξόανον ὑφελέσθαι προῃρεῖτο. προελθὼν δ' ἀπὸ τῆς νεὼς καὶ φανείς, ὑπὸ τῶν ἐγχωρίων ἅμα τῷ φίλῳ συλληφθεὶς ἀνήχθη κατὰ τὸν παρ' αὐτοῖς ἐθισμόν, ὅπως τοῦ τῆς Ἀρτέμιδος ἱεροῦ σφάγιον γένωνται. τοὺς γὰρ καταπλεύσαντας ξένους ἀπέσφαττον.

Ἡ μὲν σκηνὴ τοῦ δράματος ὑπόκειται ἐν Ταύροις τῆς Σκυθίας· ὁ δὲ χορὸς συνέστηκεν ἐξ Ἑλληνίδων γυναικῶν, θεραπαινίδων τῆς Ἰφιγενείας. προλογίζει δὲ ἡ Ἰφιγένεια.

ΕΥΡΙΠΙΔΟΥ

ΙΦΙΓΕΝΕΙΑ Η ΕΝ ΤΑΥΡΟΙΣ.

ΙΦ. Πέλοψ ὁ Ταντάλειος εἰς Πῖσαν μολὼν
θοαῖσιν ἵπποις Οἰνομάου γαμεῖ κόρην,
ἐξ ἧς Ἀτρεὺς ἔβλαστεν· Ἀτρέως δὲ παῖς
Μενέλαος Ἀγαμέμνων τε· τοῦ δ' ἔφυν ἐγώ,
τῆς Τυνδαρείας θυγατρὸς Ἰφιγένεια παῖς,
ἣν ἀμφὶ δίναις ἃς θάμ' Εὔριπος πυκναῖς
αὔραις ἑλίσσων κυανέαν ἅλα στρέφει,
ἔσφαξεν Ἑλένης οὕνεχ', ὡς δοκεῖ, πατὴρ
Ἀρτέμιδι κλειναῖς ἐν πτυχαῖσιν Αὐλίδος.
ἐνταῦθα γὰρ δὴ χιλίων ναῶν στόλον
Ἑλληνικὸν συνήγαγ' Ἀγαμέμνων ἄναξ,
τὸν καλλίνικον στέφανον Ἰλίου θέλων
λαβεῖν Ἀχαιούς, τούς θ' ὑβρισθέντας γάμους
Ἑλένης μετελθεῖν, Μενέλεῳ χάριν φέρων.
δεινῆς τ' ἀπλοίας πνευμάτων τ' οὐ τυγχάνων,
εἰς ἔμπυρ' ἦλθε, καὶ λέγει Κάλχας τάδε·
ὦ τῆσδ' ἀνάσσων Ἑλλάδος στρατηγίας,
Ἀγάμεμνον, οὐ μὴ ναῦς ἀφορμήσῃ χθονός,
πρὶν ἂν κόρην σὴν Ἰφιγένειαν Ἄρτεμις
λάβῃ σφαγεῖσαν· ὅ τι γὰρ ἐνιαυτὸς τέκοι
κάλλιστον, εὔξω φωσφόρῳ θύσειν θεᾷ.
παῖδ' οὖν ἐν οἴκοις σὴ Κλυταιμνήστρα δάμαρ

τίκτει, τὸ καλλιστεῖον εἰς ἔμ᾽ ἀναφέρων,
ἥν χρή σε θῦσαι. καί μ᾽ Ὀδυσσέως τέχναι
μητρὸς παρείλοντ᾽ ἐπὶ γάμοις Ἀχιλλέως.
ἐλθοῦσα δ᾽ Αὐλίδ᾽ ἡ τάλαιν᾽ ὑπὲρ πυρᾶς
μεταρσία ληφθεῖσ᾽ ἐκαινόμην ξίφει·
ἀλλ᾽ ἐξέκλεψεν ἔλαφον ἀντιδοῦσά μου
Ἄρτεμις Ἀχαιούς, διὰ δὲ λαμπρὸν αἰθέρα
πέμψασά μ᾽ εἰς τήνδ᾽ ᾤκισεν Ταύρων χθόνα,
οὗ γῆς ἀνάσσει βαρβάροισι βάρβαρος
Θόας, ὃς ὠκὺν πόδα τιθεὶς ἴσον πτεροῖς
εἰς τοὔνομ᾽ ἦλθε τόδε ποδωκείας χάριν.
ναοῖσι δ᾽ ἐν τοῖσδ᾽ ἱερίαν τίθησί με,
ὅθεν νόμοισι τοῖσιν ἥδεται θεὰ
Ἄρτεμις ἑορτῆς, τοὔνομ᾽ ἧς καλὸν μόνον,
τὰ δ᾽ ἄλλα — σιγῶ, τὴν θεὸν φοβουμένη.
θύω γὰρ ὄντος τοῦ νόμου καὶ πρὶν πόλει,
ὃς ἂν κατέλθῃ τήνδε γῆν Ἕλλην ἀνήρ.
κατάρχομαι μέν, σφάγια δ᾽ ἄλλοισιν μέλει
ἄρρητ᾽ ἔσωθεν τῶνδ᾽ ἀνακτόρων θεᾶς.
ἃ καινὰ δ᾽ ἥκει νὺξ φέρουσα φάσματα,
λέξω πρὸς αἰθέρ᾽, εἴ τι δὴ τόδ᾽ ἔστ᾽ ἄκος.
ἔδοξ᾽ ἐν ὕπνῳ τῆσδ᾽ ἀπαλλαχθεῖσα γῆς
οἰκεῖν ἐν Ἄργει, παρθενῶσι δ᾽ ἐν μέσοις
εὕδειν, χθονὸς δὲ νῶτα σεισθῆναι σάλῳ,
φεύγειν δὲ κἄξω στᾶσα θριγκὸν εἰσιδεῖν
δόμων πίτνοντα, πᾶν δ᾽ ἐρείψιμον στέγος
βεβλημένον πρὸς οὖδας ἐξ ἄκρων σταθμῶν.
μόνος δ᾽ ἐλείφθη στῦλος, ὡς ἔδοξέ μοι,
δόμων πατρῴων, ἐκ δ᾽ ἐπικράνων κόμας
ξανθὰς καθεῖναι, φθέγμα δ᾽ ἀνθρώπου λαβεῖν,
κἀγὼ τέχνην τήνδ᾽ ἣν ἔχω ξενοκτόνου
τιμῶσ᾽ ὑδραίνειν αὐτὸν ὡς θανούμενον,

κλαίουσα. τοὔναρ δ᾽ ὧδε συμβάλλω τόδε·
τέθνηκ᾽ Ὀρέστης, οὗ κατηρξάμην ἐγώ.
στῦλοι γὰρ οἴκων εἰσὶ παῖδες ἄρσενες·
θνήσκουσι δ᾽ οὓς ἂν χέρνιβες βάλωσ᾽ ἐμαί.
οὐδ᾽ αὖ συνάψαι τοὔναρ εἰς φίλους ἔχω·
Στροφίῳ γὰρ οὐκ ἦν παῖς, ὅτ᾽ ὠλλύμην ἐγώ.
νῦν οὖν ἀδελφῷ βούλομαι δοῦναι χοὰς
παροῦσ᾽ ἀπόντι, ταῦτα γὰρ δυναίμεθ᾽ ἄν,
σὺν προσπόλοισιν, ἃς ἔδωχ᾽ ἡμῖν ἄναξ
Ἑλληνίδας γυναῖκας. ἀλλ᾽ ἐξ αἰτίας
οὔπω τίνος πάρεισιν; εἶμ᾽ εἴσω δόμων
ἐν οἷσι ναίω τῶνδ᾽ ἀνακτόρων θεᾶς.

ΟΡ. *ὅρα, φύλασσε μή τις ἐν στίβῳ βροτῶν.*
ΠΥ. *ὁρῶ, σκοποῦμαι δ᾽ ὄμμα πανταχοῦ στρέφων.*
ΟΡ. *Πυλάδη, δοκεῖ σοι μέλαθρα ταῦτ᾽ εἶναι θεᾶς;*
ΠΥ. *ἔμοιγ᾽, Ὀρέστα· σοὶ δὲ συνδοκεῖν χρεών.*
ΟΡ. *καὶ βωμός, Ἕλλην οὗ καταστάζει φόνος;*
ΠΥ. *ἐξ αἱμάτων γοῦν ξάνθ᾽ ἔχει θριγκώματα.*
ΟΡ. *θριγκοῖς δ᾽ ὑπ᾽ αὐτοῖς σκῦλ᾽ ὁρᾷς ἠρτημένα;*
ΠΥ. *τῶν κατθανόντων γ᾽ ἀκροθίνια ξένων.*
ΟΡ. *ἀλλ᾽ ἐγκυκλοῦντ᾽ ὀφθαλμὸν εὖ σκοπεῖν χρεών.*
ὦ Φοῖβε, ποῖ μ᾽ αὖ τήνδ᾽ ἐς ἄρκυν ἤγαγες
χρήσας, ἐπειδὴ πατρὸς αἷμ᾽ ἐτισάμην,
μητέρα κατακτάς; διαδοχαῖς δ᾽ Ἐρινύων
ἠλαυνόμεσθα φυγάδες, ἔξεδροι χθονός,
δρόμους τε πολλοὺς ἐξέπλησα καμπίμους.
ἐλθὼν δὲ σ᾽ ἠρώτησα πῶς τροχηλάτου
μανίας ἂν ἔλθοιμ᾽ εἰς τέλος πόνων τ᾽ ἐμῶν.
σὺ δ᾽ εἶπας ἐλθεῖν Ταυρικῆς μ᾽ ὅρους χθονός,

ἔνθ᾽ Ἀργόθεν ναῦν ποντίαν ἐστείλαμεν;
οὓς ἐξεμόχθουν περιπολῶν καθ᾽ Ἑλλάδα.

ἔνθ' Ἄρτεμις σὴ σύγγονος βωμοὺς ἔχει,
λαβεῖν τ' ἄγαλμα θεᾶς, ὅ φασιν ἐνθάδε
εἰς τούσδε ναοὺς οὐρανοῦ πεσεῖν ἄπο·
λαβόντα δ' ἢ τέχναισιν ἢ τύχῃ τινί,
κίνδυνον ἐκπλήσαντ', Ἀθηναίων χθονὶ
δοῦναι· τὸ δ' ἐνθένδ' οὐδὲν ἐρρήθη πέρα·
καὶ ταῦτα δράσαντ' ἀμπνοὰς ἕξειν πόνων.
ἥκω δὲ πεισθεὶς σοῖς λόγοισιν ἐνθάδε
ἄγνωστον εἰς γῆν, ἄξενον. σὲ δ' ἱστορῶ,
Πυλάδη, σὺ γάρ μοι τοῦδε συλλήπτωρ πόνου,
τί δρῶμεν; ἀμφίβληστρα γὰρ τοίχων ὁρᾷς
ὑψηλά· πότερα δωμάτων προσαμβάσεις
ἐκβησόμεσθα; πῶς ἂν οὖν λάθοιμεν ἄν;
ἢ χαλκότευκτα κλῇθρα λύσαντες μοχλοῖς,
ὧν οὐδὲν ἴσμεν; ἢν δ' ἀνοίγοντες πύλας
ληφθῶμεν εἰσβάσεις τε μηχανώμενοι,
θανούμεθ'. ἀλλὰ πρὶν θανεῖν, νεὼς ἔπι
φεύγωμεν, ᾗπερ δεῦρ' ἐναυστολήσαμεν.

ΠΥ. φεύγειν μὲν οὐκ ἀνεκτὸν οὐδ' εἰώθαμεν·
τὸν τοῦ θεοῦ δὲ χρησμὸν οὐ κακιστέον.
ναοῦ δ' ἀπαλλαχθέντε κρύψωμεν δέμας
κατ' ἄντρ' ἃ πόντος νοτίδι διακλύζει μέλας,
νεὼς ἄπωθεν, μή τις εἰσιδὼν σκάφος
βασιλεῦσιν εἴπῃ κᾆτα ληφθῶμεν βίᾳ.
ὅταν δὲ νυκτὸς ὄμμα λυγαίας μόλῃ,
τολμητέον τὸ ξεστὸν ἐκ ναοῦ λαβεῖν
ἄγαλμα πάσας προσφέροντε μηχανάς.
ὅρα δὲ γεῖσα τριγλύφων ὅποι κενὸν
δέμας καθεῖναι· τοὺς πόνους γὰρ ἀγαθοὶ
τολμῶσι, δειλοὶ δ' εἰσὶν οὐδὲν οὐδαμοῦ.
οὔτοι μακρὸν μὲν ἤλθομεν κώπῃ πόρον,
ἐκ τερμάτων δὲ νόστον ἀροῦμεν πάλιν.

ΟΡ. ἀλλ᾽ εὖ γὰρ εἶπας, πειστέον· χωρεῖν χρεὼν
ὅποι χθονὸς κρύψαντε λήσομεν δέμας.
οὐ γὰρ τὸ τοῦ θεοῦ γ᾽ αἴτιον γενήσεται
πεσεῖν ἄκραντον θέσφατον· τολμητέον·
μόχθος γὰρ οὐδεὶς τοῖς νέοις σκῆψιν φέρει.
ΧΟ. εὐφαμεῖτ᾽, ὦ
πόντου δισσὰς συγχωρούσας
πέτρας Εὐξείνου ναίοντες.
ὦ παῖ τᾶς Λατοῦς,
Δίκτυνν᾽ οὐρεία,
πρὸς σὰν αὐλάν, εὐστύλων
ναῶν χρυσήρεις θριγκούς,
πόδα παρθένιον ὅσιον ὁσίας
κληδούχου δούλα πέμπω,
Ἑλλάδος εὐίππου πύργους
καὶ τείχη χόρτων τ᾽ εὐδένδρων
ἐξαλλάξασ᾽ Εὐρώπαν,
πατρῴων οἴκων ἕδρας.
ἔμολον· τί νέον; τίνα φροντίδ᾽ ἔχεις;
τί με πρὸς ναοὺς ἄγαγες ἄγαγες,
ὦ παῖ τοῦ τᾶς Τροίας πύργους
ἐλθόντος κλεινᾷ σὺν κώπᾳ
χιλιοναύτᾳ μυριοτευχεῖ
* Ἀτρειδᾶν τῶν κλεινῶν;
ΙΦ. ἰὼ δμωαί,
δυσθρηνήτοις ὡς θρήνοις
ἔγκειμ᾽, ἰστᾶσ᾽ οὐκ εὐμούσου
μολπᾶς ἰὰν ἀλύροις ἐλέγοις,
αἰαῖ, κηδείοις οἴκτοις.
αἵ μοι συμβαίνουσ᾽ ἆται,
σύγγονον ἁμὸν κατακλαιομένᾳ
ζωᾶς, οἵαν ἰδόμαν ὄψιν ὀνείρων

νυκτός, τᾶς ἐξῆλθ' ὄρφνα.
ὀλόμαν ὀλόμαν·
οὐκ εἴσ' οἶκοι πατρῷοι·
οἴμοι φροῦδος γέννα.
φεῦ φεῦ τῶν Ἄργει μόχθων.
ἰὼ ἰὼ δαίμων, ὃς τὸν
μοῦνόν με κασίγνητον συλᾷς
Ἅιδᾳ πέμψας, ᾧ τάσδε χοὰς
μέλλω κρατῆρά τε τὸν φθιμένων
ὑδραίνειν γαίας ἐν νώτοις,
πηγάς τ' οὐρείων ἐκ μόσχων
Βάκχου τ' οἰνηρὰς λοιβὰς
ξουθᾶν τε πόνημα μελισσᾶν,
ἃ νεκροῖς θελκτήρια κεῖται.
ἀλλ' ἔνδος μοι πάγχρυσον
τεῦχος καὶ λοιβὰν Ἅιδα.
ὦ κατὰ γαίας Ἀγαμεμνόνιον
θάλος, ὡς φθιμένῳ τάδε σοι πέμπω·
δέξαι δ'· οὐ γὰρ πρὸς τύμβον σοι
ξανθὰν χαίταν, οὐ δάκρυ' οἴσω.
τηλόσε γὰρ δὴ σᾶς ἀπενάσθην
πατρίδος καὶ ἐμᾶς, ἔνθα δοκήμασι
κεῖμαι σφαχθεῖσ' ἁ τλάμων.

ΧΟ. ἀντιψάλμους ᾠδὰς ὕμνον τ'
Ἀσιήταν σοι βάρβαρον ἀχὰν
δεσποίνᾳ γ' ἐξαυδάσω,
τὰν ἐν θρήνοισιν μοῦσαν,
νέκυσιν μελέων τὰν ἐν μολπαῖς
Ἅιδας ὑμνεῖ δίχα παιάνων.
οἴμοι, τῶν Ἀτρειδᾶν οἴκων
ἔρρει φῶς σκήπτρων, οἴμοι,
* * πατρῴων οἴκων.

τίνος ἐκ τῶν εὐόλβων Ἄργει
βασιλέων ἀρχά;
μόχθος δ' ἐκ μόχθων ᾄσσει
δινευούσαις ἵπποις πταναῖς·
ἀλλάξας δ' ἐξ ἕδρας
ἱερὸν * * ὄμμ' αὐγᾶς
ἅλιος. ἄλλαις δ' ἄλλα προσέβα
χρυσέας ἀρνὸς μελάθροις ὀδύνα,
φόνος ἐπὶ φόνῳ, ἄχεά τ' ἄχεσιν·
ἔνθεν τῶν πρόσθεν δμαθέντων
Ταντᾰλιδᾶν ἐκβαίνει ποινά γ'
εἰς οἴκους· σπεύδει δ' ἀσπούδαστ'
ἐπὶ σοὶ δαίμων.

ΙΦ. ἐξ ἀρχᾶς μοι δυσδαίμων
δαίμων τᾶς ματρὸς ζώνας
καὶ νυκτὸς κείνας· ἐξ ἀρχᾶς
λόχιαι στερρὰν παιδείαν
Μοῖραι συντείνουσιν θεαί,
ἁ μναστευθεῖσ' ἐξ Ἑλλάνων,
ἃν πρωτόγονον θάλος ἐν θαλάμοις
Λήδας ἁ τλάμων κούρα
σφάγιον πατρῴᾳ λώβᾳ
καὶ θῦμ' οὐκ εὐγάθητον
ἔτεκεν, ἔτρεφεν, εὐκταίαν
ἱππείοις ἐν δίφροισιν
ψαμάθων Αὐλίδος ἐπιβᾶσαν
νύμφαν, οἴμοι, δύσνυμφον
τῷ τᾶς Νηρέως κούρας, αἰαῖ.
νῦν δ' ἀξείνου πόντου ξείνα
δυσχόρτους οἴκους ναίω
ἄγαμος, ἄτεκνος, ἄπολις, ἄφιλος,
οὐ τὰν Ἄργει μέλπουσ' Ἥραν

οὐδ᾽ ἱστοῖς ἐν καλλιφθόγγοις
κερκίδι Παλλάδος Ἀτθίδος εἰκὼ
καὶ Τιτάνων ποικίλλουσ᾽, ἀλλ᾽
αἱμόρραντον δυσφόρμιγγα
ξείνων αἱμάσσουσ᾽ ἄταν βωμούς,
οἰκτράν τ᾽ αἰαζόντων αὐδάν,
οἰκτρόν τ᾽ ἐκβαλλόντων δάκρυον.
καὶ νῦν κείνων μέν μοι λάθα,
τὸν δ᾽ Ἄργει δμαθέντα κλαίω
σύγγονον, ὃν ἔλιπον ἐπιμαστίδιον
ἔτι βρέφος, ἔτι νέον, ἔτι θάλος
ἐν χερσὶν ματρὸς πρὸς στέρνοις τ᾽
Ἄργει σκηπτοῦχον Ὀρέσταν.

ΧΟ. καὶ μὴν ὅδ᾽ ἀκτὰς ἐκλιπὼν θαλασσίους
βουφορβὸς ἥκει, σημανῶν τί σοι νέον.

ΒΟΥ. Ἀγαμέμνονος παῖ καὶ Κλυταιμνήστρας τέκνον,
ἄκουε καινῶν ἐξ ἐμοῦ κηρυγμάτων.

ΙΦ. τί δ᾽ ἔστι τοῦ παρόντος ἐκπλῆσσον λόγου;

ΒΟΥ. ἥκουσιν εἰς γῆν κυανέαν Συμπληγάδα
πλάτῃ φυγόντες δίπτυχοι νεανίαι,
θεᾷ φίλον πρόσφαγμα καὶ θυτήριον
Ἀρτέμιδι. χέρνιβας δὲ καὶ κατάργματα
οὐκ ἂν φθάνοις ἂν εὐτρεπῆ ποιουμένη.

ΙΦ. ποδαποί; τίνος γῆς νόμον ἔχουσιν οἱ ξένοι;

ΒΟΥ. Ἕλληνες, ἓν τοῦτ᾽ οἶδα κοὐ περαιτέρω.

ΙΦ. οὐδ᾽ ὄνομ᾽ ἀκούσας οἶσθα τῶν ξένων φράσαι;

ΒΟΥ. Πυλάδης ἐκλῄζεθ᾽ ἅτερος πρὸς θατέρου.

ΙΦ. τοῦ ξυζύγου δὲ τοῦ ξένου τί τοὔνομ᾽ ἦν;

ΒΟΥ. οὐδεὶς τόδ᾽ οἶδεν· οὐ γὰρ εἰσηκούσαμεν.

ΙΦ. πῶς δ᾽ εἴδετ᾽ αὐτοὺς καὶ τυχόντες εἵλετε;

ΒΟΥ. ἄκραις ἐπὶ ῥηγμῖσιν ἀξένου πόρου.

ΙΦ. καὶ τίς θαλάσσης βουκόλοις κοινωνία;

ΒΟΥ. βοῦς ἤλθομεν νίψοντες ἐναλίᾳ δρόσῳ.
ΙΦ. ἐκεῖσε δὴ 'πάνελθε, πῶς νιν εἵλετε
τρόπῳ θ' ὁποίῳ· τοῦτο γὰρ μαθεῖν θέλω.
χρόνιοι γὰρ ἥκουσ' οἵδ', ἐπεὶ βωμὸς θεᾶς
Ἑλληνικαῖσιν ἐξεφοινίχθη ῥοαῖς.
ΒΟΥ. ἐπεὶ τὸν εἰσρέοντα διὰ Συμπληγάδων
βοῦς ὑλοφορβοὺς πόντον εἰσεβάλλομεν,
ἦν τις διαρρὼξ κυμάτων πολλῷ σάλῳ
κοιλωπὸς ἀγμός, πορφυρευτικαὶ στέγαι.
ἐνταῦθα δισσοὺς εἶδέ τις νεανίας
βουφορβὸς ἡμῶν, κἀνεχώρησεν πάλιν
ἄκροισι δακτύλοισι πορθμεύων ἴχνος.
ἔλεξε δ'· οὐχ ὁρᾶτε; δαίμονές τινες
θάσσουσιν οἵδε. θεοσεβὴς δ' ἡμῶν τις ὢν
ἀνέσχε χεῖρε καὶ προσεύξατ' εἰσιδών·
ὦ ποντίας παῖ Λευκοθέας, νεῶν φύλαξ,
δέσποτα Παλαῖμον, ἵλεως ἡμῖν γενοῦ,
εἴτ' οὖν ἐπ' ἀκταῖς θάσσετον Διοσκόρω,
ἢ Νηρέως ἀγάλμαθ', ὃς τὸν εὐγενῆ
ἔτικτε πεντήκοντα Νηρῄδων χορόν.
ἄλλος δέ τις μάταιος, ἀνομίᾳ θρασύς,
ἐγέλασεν εὐχαῖς, ναυτίλους δ' ἐφθαρμένους
θάσσειν φάραγγ' ἔφασκε τοῦ νόμου φόβῳ,
κλύοντας ὡς θύοιμεν ἐνθάδε ξένους.
ἔδοξε δ' ἡμῶν εὖ λέγειν τοῖς πλείοσι,
θηρᾶν τε τῇ θεῷ σφάγια τἀπιχώρια.
κἂν τῷδε πέτραν ἅτερος λιπὼν ξένοιν
ἔστη κάρα τε διετίναξ' ἄνω κάτω
κἀπεστέναξεν ὠλένας τρέμων ἄκρας,
μανίαις ἀλαίνων, καὶ βοᾷ κυναγὸς ὥς·
Πυλάδη, δέδορκας τήνδε; τήνδε δ' οὐχ ὁρᾷς
Ἅιδου δράκαιναν, ὥς με βούλεται κτανεῖν

δειναῖς ἐχίδναις εἰς ἔμ᾽ ἐστομωμένη;
ἡ δ᾽ ἐκ χιτώνων πῦρ πνέουσα καὶ φόνον
πτεροῖς ἐρέσσει, μητέρ᾽ ἀγκάλαις ἐμὴν
ἔχουσα, πέτρινον ὄχθον, ὡς ἐπεμβάλῃ.
οἴμοι κτενεῖ με· ποῖ φύγω; παρῆν δ᾽ ὁρᾶν
οὐ ταῦτα μορφῆς σχήματ᾽, ἀλλ᾽ ἠλλάσσετο
φθογγάς τε μόσχων καὶ κυνῶν ὑλάγματα,
ἃ ᾽φασκ᾽ Ἐρινῦς ἱέναι μυκήματα.
ἡμεῖς δὲ συσταλέντες, ὡς θανούμενοι,
σιγῇ καθήμεθ᾽· ὁ δὲ χερὶ σπάσας ξίφος,
μόσχους ὁρούσας εἰς μέσας λέων ὅπως,
παίει σιδήρῳ λαγόνας εἰς πλευρὰς ἱείς,
δοκῶν Ἐρινῦς θεὰς ἀμύνεσθαι τάδε,
ὡς αἱματηρὸν πέλαγος ἐξανθεῖν ἁλός.
κἀν τῷδε πᾶς τις, ὡς ὁρᾷ βουφόρβια
πίπτοντα καὶ πορθούμεν᾽, ἐξωπλίζετο,
κόχλους τε φυσῶν συλλέγων τ᾽ ἐγχωρίους·
πρὸς εὐτραφεῖς γὰρ καὶ νεανίας ξένους
φαύλους μάχεσθαι βουκόλους ἡγούμεθα.
πολλοὶ δ᾽ ἐπληρώθημεν ἐν μικρῷ χρόνῳ.
πίπτει δὲ μανίας πίτυλον ὁ ξένος μεθείς,
στάζων ἀφρῷ γένειον· ὡς δ᾽ ἐσείδομεν
προὔργου πεσόντα, πᾶς ἀνὴρ ἔσχεν πόνον
βάλλων ἀράσσων· ἅτερος δὲ τοῖν ξένοιν
ἀφρόν τ᾽ ἀπέψη σώματός τ᾽ ἐτημέλει
πέπλων τε προυκάλυπτεν εὐπήνους ὑφάς,
καραδοκῶν μὲν τἀπιόντα τραύματα,
φίλον δὲ θεραπείαισιν ἄνδρ᾽ εὐεργετῶν.
ἔμφρων δ᾽ ἀνᾴξας ὁ ξένος πεσήματος
ἔγνω κλύδωνα πολεμίων προσκείμενον
καὶ τὴν παροῦσαν συμφορὰν αὐτοῖν πέλας,
ᾤμωξέ θ᾽· ἡμεῖς δ᾽ οὐκ ἀνίεμεν πέτρους

βάλλοντες, ἄλλος ἄλλοθεν προσκείμενοι.
οὗ δὴ τὸ δεινὸν παρακέλευσμ᾽ ἠκούσαμεν·
Πυλάδη, θανούμεθ᾽, ἀλλ᾽ ὅπως θανούμεθα
κάλλισθ᾽· ἕπου μοι, φάσγανον σπάσας χερί.
ὡς δ᾽ εἴδομεν δίπαλτα πολεμίων ξίφη,
φυγῇ λεπαίας ἐξεπίμπλαμεν νάπας.
ἀλλ᾽ εἰ φύγοι τις, ἅτεροι προσκείμενοι
ἔβαλλον αὐτούς· εἰ δὲ τούσδ᾽ ὠσαίατο,
αὖθις τὸ νῦν ὑπεῖκον ἤρασσον πέτροις.
ἀλλ᾽ ἦν ἄπιστον· μυρίων γὰρ ἐκ χερῶν
οὐδ᾽ εἷς τὰ τῆς θεοῦ θύματ᾽ εὐτύχει βαλών.
μόλις δέ νιν τόλμῃ μὲν οὐ χειρούμεθα,
κύκλῳ δὲ περιβαλόντες ἐξεκλέψαμεν
πέτροισι χειρῶν φάσγαν᾽, εἰς δὲ γῆν γόνυ
καμάτῳ καθεῖσαν. πρὸς δ᾽ ἄνακτα τῆσδε γῆς
κομίζομέν νιν. ὁ δ᾽ ἐσιδὼν ὅσον τάχος
εἰς χέρνιβάς τε καὶ σφαγεῖ᾽ ἔπεμπέ σοι.
εὔχου δὲ τοιάδ᾽ ὦ νεᾶνί σοι ξένων
σφάγια παρεῖναι· κἂν ἀναλίσκῃς ξένους
τοιούσδε, τὸν σὸν Ἑλλὰς ἀποτίσει φόνον
[δίκας τίνουσα τῆς ἐν Αὐλίδι σφαγῆς].

ΧΟ. θαυμάστ᾽ ἔλεξας τὸν φανένθ᾽, ὅστις ποτὲ
Ἕλληνος ἐκ γῆς πόντον ἦλθεν ἄξενον.

ΙΦ. εἶεν. σὺ μὲν κόμιζε τοὺς ξένους μολών·
τὰ δ᾽ ἐνθάδ᾽ ἡμεῖς οἷα φροντιούμεθα.
ὦ καρδία τάλαινα, πρὶν μὲν εἰς ξένους
γαληνὸς ἦσθα καὶ φιλοικτίρμων ἀεί,
εἰς θοὐμόφυλον ἀναμετρουμένη δάκρυ,
Ἕλληνας ἄνδρας ἡνίκ᾽ εἰς χέρας λάβοις.
νῦν δ᾽ ἐξ ὀνείρων οἷσιν ἠγριώμεθα,

δοκοῦσαν Ὀρέστην μηκέθ᾽ ἥλιον βλέπειν,

δύσνουν με λήψεσθ᾽, οἵτινές ποθ᾽ ἥκετε.
καὶ τοῦτ᾽ ἄρ᾽ ἦν ἀληθές, ᾐσθόμην, φίλαι·
οἱ δυστυχεῖς γὰρ τοῖσιν εὐτυχεστέροις
αὐτοὶ καλῶς πράξαντες οὐ φρονοῦσιν εὖ.
ἀλλ᾽ οὔτε πνεῦμα Διόθεν ἦλθε πώποτε,
οὐ πορθμίς, ἥτις διὰ πέτρας Συμπληγάδας
Ἑλένην ἀπήγαγ᾽ ἐνθάδ᾽, ἥ μ᾽ ἀπώλεσε,
Μενέλεών θ᾽, ἵν᾽ αὐτοὺς ἀντετιμωρησάμην,
τὴν ἐνθάδ᾽ αὖλιν ἀντιθεῖσα τῆς ἐκεῖ,
οὗ μ᾽ ὥστε μόσχον Δαναΐδαι χειρούμενοι
ἔσφαζον, ἱερεὺς δ᾽ ἦν ὁ γεννήσας πατήρ.
οἴμοι· κακῶν γὰρ τῶν τότ᾽ οὐκ ἀμνημονῶ,
ὅσας γενείου χεῖρας ἐξηκόντισα
γονάτων τε τοῦ τεκόντος ἐξαρτωμένη,
λέγουσα τοιάδ᾽· ὦ πάτερ, νυμφεύομαι
νυμφεύματ᾽ αἰσχρὰ πρὸς σέθεν· μήτηρ δ᾽ ἐμὲ
σέθεν κατακτείνοντος Ἀργεῖαί τε νῦν
ὑμνοῦσιν ὑμεναίοισιν, αὐλεῖται δὲ πᾶν
μέλαθρον· ἡμεῖς δ᾽ ὀλλύμεσθα πρὸς σέθεν.
Ἅιδης Ἀχιλλεὺς ἦν ἄρ᾽, οὐχ ὁ Πηλέως,
ὅν μοι προτείνας πόσιν, ἐν ἁρμάτων μ᾽ ὄχοις
εἰς αἱματηρὸν γάμον ἐπόρθμευσας δόλῳ.
ἐγὼ δὲ λεπτῶν ὄμμα διὰ καλυμμάτων
ἔχουσ᾽, ἀδελφόν τ᾽ οὐκ ἀνειλόμην χεροῖν,
ὃς νῦν ὄλωλεν, οὐ κασιγνήτῃ στόμα
συνῆψ᾽ ὑπ᾽ αἰδοῦς, ὡς ἰοῦσ᾽ εἰς Πηλέως
μέλαθρα· πολλὰ δ᾽ ἀπεθέμην ἀσπάσματα
εἰσαῦθις, ὡς ἥξουσ᾽ ἐς Ἄργος αὖ πάλιν.
ὦ τλῆμον, εἰ τέθνηκας, ἐξ οἵων καλῶν
ἔρρεις, Ὀρέστα, καὶ πατρὸς ζηλωμάτων.
* * * * * * * * * * * *
τὰ τῆς θεοῦ δὲ μέμφομαι σοφίσματα,

ἥτις βροτῶν μὲν ἤν τις ἅψηται φόνου,
βωμῶν ἀπείργει, μυσαρὸν ὡς ἡγουμένη,
αὐτὴ δὲ θυσίαις ἥδεται βροτοκτόνοις.
οὐκ ἔσθ' ὅπως ἔτικτεν ἡ Διὸς δάμαρ
Λητὼ τοσαύτην ἀμαθίαν. ἐγὼ μὲν οὖν
τὰ Ταντάλου θεοῖσιν ἑστιάματα
ἄπιστα κρίνω, παιδὸς ἡσθῆναι βορᾷ,
τοὺς δ' ἐνθάδ', αὐτοὺς ὄντας ἀνθρωποκτόνους,
εἰς τὸν θεὸν τὸ φαῦλον ἀναφέρειν δοκῶ·
οὐδένα γὰρ οἶμαι δαιμόνων εἶναι κακόν.

ΧΟ. κυάνεαι κυάνεαι σύνοδοι θαλάσσας, στρ.
ἵν' οἶστρος ὁ ποτώμενος Ἀργόθεν
ἄξενον ἐπ' οἶδμα διεπέρασε πόντου,
Ἀσιάτιδα γαῖαν
Εὐρώπας διαμείψας.
τίνες ποτ' ἄρα τὸν εὔυδρον δονακόχλοα
λιπόντες Εὐρώταν
ἢ ῥεύματα σεμνὰ Δίρκας
ἔβασαν ἔβασαν ἄμικτον αἶαν, ἔνθα κούρα
δία τέγγει
βωμοὺς καὶ περικίονας
ναοὺς αἷμα βρότειον;
ἢ ῥοθίοις εἰλατίναις δικρότοισι κώπαις ἀντ.
ἔπλευσαν ἐπὶ πόντια κύματα
νάιον ὄχημα λινοπόροισί τ' αὔραις,
φιλόπλουτον ἅμιλλαν
αὔξοντες μελάθροισιν;
φίλα γὰρ ἐλπὶς ἐγένετ' ἐπὶ πήμασι βροτῶν
ἄπληστος ἀνθρώποις,

392—406 = 407—420

ἢ καὶ λοχείας ἢ νεκροῦ θίγῃ χεροῖν, 382

ὄλβου βάρος οἳ φέρονται
πλάνητες ἐπ' οἶδμα πόλεις τε βαρβάρους περῶντες
κεινᾷ δόξᾳ.
γνώμα δ' οἷς μὲν ἄκαιρος ὄλ-
βου, τοῖς δ' εἰς μέσον ἥκει.
πῶς πέτρας τὰς συνδρομάδας, *στρ.*
πῶς Φινεΐδας ἀύπνους
ἀκτὰς ἐπέρασαν
παρ' ἅλιον αἰγιαλὸν ἐπ' Ἀμφιτρίτας
ῥοθίῳ δραμόντες;
ὅπου πεντήκοντα κορᾶν
τῶν Νηρῄδων χοροὶ
μέλπουσιν ἐγκύκλιοι,
καὶ πλησιστίοισι πνοαῖς,
συριζόντων κατὰ πρύμναν
εὐναίων πηδαλίων
αὔραις ἐν νοτίαις
ἢ πνεύμασι Ζεφύρου,
τὰν πολυόρνιθον ἐπ' αἶαν,
λευκὰν ἀκτάν, Ἀχιλῆος
δρόμους καλλισταδίους,
Εὔξεινον κατὰ πόντον.
εἴθ' εὐχαῖσιν δεσποσύνοις *ἀντ.*
Λήδας Ἑλένα φίλα παῖς
ἐλθοῦσα τύχοι τὰν
Τρῳάδα λιποῦσα πόλιν, ἵν' ἀμφὶ χαίταν
δρόσον αἱματηρὰν
ἑλιχθεῖσα λαιμοτόμῳ
δεσποίνας χερὶ θάνοι
ποινὰς δοῦσ' ἀντιπάλους.
ἥδιστ' ἂν τήνδ' ἀγγελίαν

421—438 = 439—455

δεξαίμεσθ᾽, Ἑλλάδος ἐκ γᾶς
πλωτήρων εἴ τις ἔβα,
δουλείας ἐμέθεν
δειλαίας παυσίπονος·
καὶ γὰρ ὀνείρασι συμβαίην
δόμοις πόλει τε πατρῴᾳ,
τερπνῶν ὕμνων ἀπολαύ-
ειν κοινὰν χάριν ὄλβῳ.
ἀλλ᾽ οἵδε χέρας δεσμοῖς δίδυμοι
συνερεισθέντες χωροῦσι, νέον
πρόσφαγμα θεᾶς· σιγᾶτε, φίλαι.
τὰ γὰρ Ἑλλήνων ἀκροθίνια δὴ
ναοῖσι πέλας τάδε βαίνει·
οὐδ᾽ ἀγγελίας ψευδεῖς ἔλακεν
βουφορβὸς ἀνήρ.
ὦ πότνι᾽, εἴ σοι τάδ᾽ ἀρεσκόντως
πόλις ἥδε τελεῖ, δέξαι θυσίας,
ἃς ὁ παρ᾽ ἡμῖν νόμος οὐχ ὁσίας
Ἕλλησι διδοὺς ἀναφαίνει.
ΙΦ. εἶεν·
τὰ τῆς θεοῦ μὲν πρῶτον ὡς καλῶς ἔχῃ
φροντιστέον μοι. μέθετε τῶν ξένων χέρας,
ὡς ὄντες ἱεροὶ μηκέτ᾽ ὦσι δέσμιοι.
ναοῦ δ᾽ ἔσω στείχοντες εὐτρεπίζετε
ἃ χρὴ ᾽πὶ τοῖς παροῦσι καὶ νομίζεται.
φεῦ·
τίς ἆρα μήτηρ ἡ τεκοῦσ᾽ ὑμᾶς ποτε
πατήρ τ᾽ ἀδελφή τ᾽, εἰ γεγῶσα τυγχάνει;
οἵων στερεῖσα διπτύχων νεανιῶν
ἀνάδελφος ἔσται. τὰς τύχας τίς οἶδ᾽ ὅτῳ
τοιαίδ᾽ ἔσονται; πάντα γὰρ τὰ τῶν θεῶν
εἰς ἀφανὲς ἕρπει, κοὐδὲν οἶδ᾽ οὐδεὶς κακόν·

ἡ γὰρ τύχη παρήγαγ᾽ εἰς τὸ δυσμαθές.
πόθεν ποθ᾽ ἥκετ᾽, ὦ ταλαίπωροι ξένοι;
ὡς διὰ μακροῦ μὲν τήνδ᾽ ἐπλεύσατε χθόνα,
μακρὸν δ᾽ ἀπ᾽ οἴκων χρόνον ἔσεσθ᾽ ἀεὶ κάτω.
ΟΡ. τί ταῦτ᾽ ὀδύρει, κἀπὶ τοῖς μέλλουσι νῷ
κακοῖσι λυπεῖς, ἥτις εἶ ποτ᾽, ὦ γύναι;
οὔτοι νομίζω σοφόν, ὃς ἂν μέλλων θανεῖν
οἴκτῳ τὸ δεῖμα τοὐλέθρου νικᾶν θέλῃ,
οὐχ ὅστις Ἅιδην ἐγγὺς ὄντ᾽ οἰκτίζεται,
σωτηρίας ἄνελπις· ὡς δύ᾽ ἐξ ἑνὸς
κακὼ συνάπτει, μωρίαν τ᾽ ὀφλισκάνει
θνήσκει θ᾽ ὁμοίως· τὴν τύχην δ᾽ ἐᾶν χρεών.
ἡμᾶς δὲ μὴ θρήνει σύ· τὰς γὰρ ἐνθάδε
θυσίας ἐπιστάμεσθα καὶ γιγνώσκομεν.
ΙΦ. πότερος ἄρ᾽ ὑμῶν ἐνθάδ᾽ ὠνομασμένος
Πυλάδης κέκληται; τόδε μαθεῖν πρῶτον θέλω.
ΟΡ. ὅδ᾽, εἴ τι δή σοι τοῦτ᾽ ἐν ἡδονῇ μαθεῖν.
ΙΦ. ποίας πολίτης πατρίδος Ἕλληνος γεγώς;
ΟΡ. τί δ᾽ ἂν μαθοῦσα τόδε πλέον λάβοις, γύναι;
ΙΦ. πότερον ἀδελφὼ μητρός ἐστον ἐκ μιᾶς;
ΟΡ. φιλότητί γ᾽, ἐσμὲν δ᾽ οὐ κασιγνήτω, γύναι.
ΙΦ. σοὶ δ᾽ ὄνομα ποῖον ἔθεθ᾽ ὁ γεννήσας πατήρ;
ΟΡ. τὸ μὲν δίκαιον δυστυχεῖς καλοίμεθ᾽ ἄν.
ΙΦ. οὐ τοῦτ᾽ ἐρωτῶ· τοῦτο μὲν δὸς τῇ τύχῃ.
ΟΡ. ἀνώνυμοι θανόντες οὐ γελῴμεθ᾽ ἄν.
ΙΦ. τί δὲ φθονεῖς τοῦτ᾽; ἦ φρονεῖς οὕτω μέγα;
ΟΡ. τὸ σῶμα θύσεις τοὐμόν, οὐχὶ τοὔνομα.
ΙΦ. οὐδ᾽ ἂν πόλιν φράσειας ἥτις ἐστί σοι;
ΟΡ. ζητεῖς γὰρ οὐδὲν κέρδος, ὡς θανουμένῳ.
ΙΦ. χάριν δὲ δοῦναι τήνδε κωλύει τί σε;
ΟΡ. τὸ κλεινὸν Ἄργος πατρίδ᾽ ἐμὴν ἐπεύχομαι.
ΙΦ. πρὸς θεῶν ἀληθῶς, ὦ ξέν᾽, εἶ κεῖθεν γεγώς;

ΟΡ. ἐκ τῶν Μυκηνῶν, αἵ ποτ' ἦσαν ὄλβιαι.
ΙΦ. φυγὰς δ' ἀπῆρας πατρίδος, ἢ ποίᾳ τύχῃ;
ΟΡ. φεύγω τρόπον γε δή τιν' οὐχ ἑκὼν ἑκών.
ΙΦ. ἆρ' ἄν τί μοι φράσειας ὧν ἐγὼ θέλω;
ΟΡ. ὡς ἐν παρέργῳ τῆς ἐμῆς δυσπραξίας.
ΙΦ. καὶ μὴν ποθεινός γ' ἦλθες ἐξ Ἄργους μολών.
ΟΡ. οὔκουν ἐμαυτῷ γ'· εἰ δὲ σοί, σὺ τοῦτ' ἔρα.
ΙΦ. Τροίαν ἴσως οἶσθ', ἧς ἁπανταχοῦ λόγος.
ΟΡ. ὡς μήποτ' ὤφελόν γε μηδ' ἰδὼν ὄναρ.
ΙΦ. φασίν νιν οὐκέτ' οὖσαν οἴχεσθαι δορί.
ΟΡ. ἔστιν γὰρ οὕτως οὐδ' ἄκραντ' ἠκούσατε.
ΙΦ. Ἑλένη δ' ἀφῖκται δῶμα Μενέλεω πάλιν;
ΟΡ. ἥκει, κακῶς γ' ἐλθοῦσα τῶν ἐμῶν τινι.
ΙΦ. καὶ ποῦ 'στι; κἀμοὶ γάρ τι προυφείλει κακόν.
ΟΡ. Σπάρτῃ ξυνοικεῖ τῷ πάρος ξυνευνέτῃ.
ΙΦ. ὦ μῖσος εἰς Ἕλληνας, οὐκ ἐμοὶ μόνῃ.
ΟΡ. ἀπέλαυσα κἀγὼ δή τι τῶν κείνης γάμων.
ΙΦ. νόστος δ' Ἀχαιῶν ἐγένεθ', ὡς κηρύσσεται;
ΟΡ. ὡς πάνθ' ἅπαξ με συλλαβοῦσ' ἀνιστορεῖς.
ΙΦ. πρὶν γὰρ θανεῖν σε, τοῦδ' ἐπαυρέσθαι θέλω.
ΟΡ. ἔλεγχ', ἐπειδὴ τοῦδ' ἐρᾷς· λέξω δ' ἐγώ.
ΙΦ. Κάλχας τις ἦλθε μάντις ἐκ Τροίας πάλιν;
ΟΡ. ὄλωλεν, ὡς ἦν ἐν Μυκηναίοις λόγος.
ΙΦ. ὦ πότνι', ὡς εὖ. τί γὰρ ὁ Λαέρτου γόνος;
ΟΡ. οὔπω νενόστηκ' οἶκον, ἔστι δ', ὡς λόγος.
ΙΦ. ὄλοιτο, νόστου μήποτ' εἰς πάτραν τυχών.
ΟΡ. μηδὲν κατεύχου· πάντα τἀκείνου νοσεῖ.
ΙΦ. Θέτιδος δ' ὁ τῆς Νηρῇδος ἔστι παῖς ἔτι;
ΟΡ. οὐκ ἔστιν· ἄλλως λέκτρ' ἔγημ' ἐν Αὐλίδι.
ΙΦ. δόλια γάρ, ὥς γέ φασιν οἱ πεπονθότες.
ΟΡ. τίς εἶ ποθ'; ὡς εὖ πυνθάνει τἀφ' Ἑλλάδος.
ΙΦ. ἐκεῖθέν εἰμι· παῖς ἔτ' οὖσ' ἀπῳχόμην.

ΟΡ. ὀρθῶς ποθεῖς ἄρ᾿ εἰδέναι τἀκεῖ, γύναι.
ΙΦ. τί δ᾿ ὁ στρατηγός, ὃν λέγουσ᾿ εὐδαιμονεῖν;
ΟΡ. τίς; οὐ γὰρ ὅν γ᾿ ἐγᾦδα τῶν εὐδαιμόνων.
ΙΦ. Ἀτρέως ἐλέγετο δή τις Ἀγαμέμνων ἄναξ.
ΟΡ. οὐκ οἶδ᾿· ἄπελθε τοῦ λόγου τούτου, γύναι.
ΙΦ. μὴ πρὸς θεῶν, ἀλλ᾿ εἴφ᾿, ἵν᾿ εὐφρανθῶ, ξένε.
ΟΡ. τέθνηχ᾿ ὁ τλήμων, πρὸς δ᾿ ἀπώλεσέν τινα.
ΙΦ. τέθνηκε; ποίᾳ συμφορᾷ; τάλαιν᾿ ἐγώ.
ΟΡ. τί δ᾿ ἐστέναξας τοῦτο; μῶν προσῆκέ σοι;
ΙΦ. τὸν ὄλβον αὐτοῦ τὸν πάροιθ᾿ ἀναστένω.
ΟΡ. δεινῶς γὰρ ἐκ γυναικὸς οἴχεται σφαγείς.
ΙΦ. ὦ πανδάκρυτος ἡ κτανοῦσα χὼ θανών.
ΟΡ. παῦσαί νυν ἤδη μηδ᾿ ἐρωτήσῃς πέρα.
ΙΦ. τοσόνδε γ᾿· ἦ ζῇ τοῦ ταλαιπώρου δάμαρ;
ΟΡ. οὐκ ἔστι· παῖς νιν ὃν ἔτεχ᾿, οὗτος ὤλεσεν.
ΙΦ. ὦ συνταραχθεὶς οἶκος. ὡς τί δὴ θέλων;
ΟΡ. πατρὸς θανόντος αἷμα τιμωρούμενος.
ΙΦ. ὡς φεῦ κακὸν δίκαιον εἰσεπράξατο.
ΟΡ. ἀλλ᾿ οὐ τὰ πρὸς θεῶν εὐτυχεῖ δίκαιος ὤν.
ΙΦ. λείπει δ᾿ ἐν οἴκοις ἄλλον Ἀγαμέμνων γόνον;
ΟΡ. λέλοιπεν Ἠλέκτραν γε παρθένον μίαν.
ΙΦ. τί δέ, σφαγείσης θυγατρὸς ἔστι τις λόγος;
ΟΡ. οὐδείς γε, πλὴν θανοῦσαν οὐχ ὁρᾶν φάος.
ΙΦ. τάλαιν᾿ ἐκείνη χὼ κτανὼν αὐτὴν πατήρ.
ΟΡ. κακῆς γυναικὸς χάριν ἄχαριν ἀπώλετο.
ΙΦ. ὁ τοῦ θανόντος δ᾿ ἔστι παῖς Ἄργει πατρός;
ΟΡ. ἔστ᾿, ἄθλιός γε, κοὐδαμοῦ καὶ πανταχοῦ.
ΙΦ. ψευδεῖς ὄνειροι, χαίρετ᾿· οὐδὲν ἦτ᾿ ἄρα.
ΟΡ. οὐδ᾿ οἱ σοφοί γε δαίμονες κεκλημένοι
πτηνῶν ὀνείρων εἰσὶν ἀψευδέστεροι.
πολὺς ταραγμὸς ἔν τε τοῖς θείοις ἔνι
κἀν τοῖς βροτείοις· ἓν δὲ λείπεται μόνον,

ὅτ' οὐκ ἄφρων ὢν μάντεων πεισθεὶς λόγοις
ὄλωλεν ὡς ὄλωλε τοῖσιν εἰδόσιν.
ΧΟ. φεῦ φεῦ· τί δ' ἡμεῖς οἵ τ' ἐμοὶ γεννήτορες;
ἆρ' εἰσίν; ἆρ' οὐκ εἰσί; τίς φράσειεν ἄν;
ΙΦ. ἀκούσατ'· εἰς γὰρ δή τιν' ἥκομεν λόγον,
ὑμῖν τ' ὄνησιν ὦ ξένοι σπεύδουσ' ἅμα
κἀμοί. τὸ δ' εὖ μάλιστα τοῦτο γίγνεται,
εἰ πᾶσι ταὐτὸν πρᾶγμ' ἀρεσκόντως ἔχει.
θέλοις ἄν, εἰ σώσαιμί σ', ἀγγεῖλαί τί μοι
πρὸς Ἄργος ἐλθὼν τοῖς ἐμοῖς ἐκεῖ φίλοις,
δέλτον τ' ἐνεγκεῖν, ἥν τις οἰκτείρας ἐμὲ
ἔγραψεν αἰχμάλωτος, οὐχὶ τὴν ἐμὴν
φονέα νομίζων χεῖρα, τοῦ νόμου δ' ὕπο
θνήσκειν σφε, τῆς θεοῦ τάδε δίκαι' ἡγουμένης;
οὐδένα γὰρ εἶχον ὅστις ἀγγείλαι μολὼν
εἰς Ἄργος αὖθις τὰς ἐμὰς ἐπιστολὰς
πέμψειε σωθεὶς τῶν ἐμῶν φίλων τινί.
σὺ δ', εἶ γάρ, ὡς ἔοικας, οὔτε δυσγενὴς
καὶ τὰς Μυκήνας οἶσθα χοὓς κἀγὼ θέλω,
σώθητι καὶ σὺ μισθὸν οὐκ αἰσχρὸν λαβὼν
κούφων ἕκατι γραμμάτων σωτηρίαν.
οὗτος δ', ἐπείπερ πόλις ἀναγκάζει τάδε,
θεᾷ γενέσθω θῦμα χωρισθεὶς σέθεν.
ΟΡ. καλῶς ἔλεξας τἄλλα πλὴν ἕν, ὦ ξένη·
τὸ γὰρ σφαγῆναι τόνδ' ἐμοὶ βάρος μέγα.
ὁ ναυστολῶν γάρ εἰμ' ἐγὼ τὰς συμφοράς·
οὗτος δὲ συμπλεῖ τῶν ἐμῶν μόχθων χάριν.
οὔκουν δίκαιον ἐπ' ὀλέθρῳ τῷ τοῦδ' ἐμὲ
χάριν τίθεσθαι καὐτὸν ἐκδῦναι κακῶν.
ἀλλ' ὡς γενέσθω· τῷδε μὲν δέλτον δίδου,
πέμψει γὰρ Ἄργος, ὥστε σοι καλῶς ἔχειν·
ἡμᾶς δ' ὁ χρῄζων κτεινέτω. τὰ τῶν φίλων

αἴσχιστον ὅστις καταβαλὼν εἰς ξυμφορὰς
αὐτὸς σέσωσται. τυγχάνει δ' ὅδ' ὢν φίλος,
ὃν οὐδὲν ἧσσον ἢ 'μὲ φῶς ὁρᾶν θέλω.

ΙΦ. ὦ λῆμ' ἄριστον, ὡς ἀπ' εὐγενοῦς τινος
ῥίζης πέφυκας τοῖς φίλοις τ' ὀρθὸς φίλος.
τοιοῦτος εἴη τῶν ἐμῶν ὁμοσπόρων
ὅσπερ λέλειπται. καὶ γὰρ οὐδ' ἐγώ, ξένοι,
ἀνάδελφός εἰμι, πλὴν ὅσ' οὐχ ὁρῶσά νιν.
ἐπεὶ δὲ βούλει ταῦτα, τόνδε πέμψομεν
δέλτον φέροντα, σὺ δὲ θανεῖ· πολλὴ δέ τις
προθυμία σε τοῦδ' ἔχουσα τυγχάνει.

ΟΡ. θύσει δὲ τίς με καὶ τὰ δεινὰ τλήσεται;

ΙΦ. ἐγώ· θεᾶς γὰρ τήνδε προστροπὴν ἔχω.

ΟΡ. ἄζηλά γ', ὦ νεᾶνι, κοὐκ εὐδαίμονα.

ΙΦ. ἀλλ' εἰς ἀνάγκην κείμεθ', ἣν φυλακτέον.

ΟΡ. αὐτὴ ξίφει θύουσα θῆλυς ἄρσενας;

ΙΦ. οὔκ· ἀλλὰ χαίτην ἀμφὶ σὴν χερνίψομαι.

ΟΡ. ὁ δὲ σφαγεὺς τίς; εἰ τάδ' ἱστορεῖν με χρή.

ΙΦ. εἴσω δόμων τῶνδ' εἰσὶν οἷς μέλει τάδε.

ΟΡ. τάφος δὲ ποῖος δέξεταί μ', ὅταν θάνω;

ΙΦ. πῦρ ἱερὸν ἔνδον χάσμα τ' εὐρωπὸν πέτρας.

ΟΡ. φεῦ·
πῶς ἄν μ' ἀδελφῆς χεὶρ περιστείλειεν ἄν.

ΙΦ. μάταιον εὐχήν, ὦ τάλας, ὅστις ποτ' εἶ,
εὔξω· μακρὰν γὰρ βαρβάρου ναίει χθονός.
οὐ μήν, ἐπειδὴ τυγχάνεις Ἀργεῖος ὤν,
ἀλλ' ὧν γε δυνατὸν οὐδ' ἐγὼ 'λλείψω χάριν.
πολύν τε γάρ σοι κόσμον ἐνθήσω τάφῳ,
ξανθῷ τ' ἐλαίῳ σῶμα σὸν κατασβέσω,
καὶ τῆς ὀρείας ἀνθεμόρρυτον γάνος
ξουθῆς μελίσσης εἰς πυρὰν βαλῶ σέθεν.
ἀλλ' εἶμι δέλτον τ' ἐκ θεᾶς ἀνακτόρων

οἴσω· τὸ μέντοι δυσμενὲς μὴ 'μοῦ λάβῃς.
φυλάσσετ' αὐτούς, πρόσπολοι, δεσμῶν ἄτερ.
ἴσως ἄελπτα τῶν ἐμῶν φίλων τινὶ
πέμψω πρὸς Ἄργος, ὃν μάλιστ' ἐγὼ φιλῶ,
καὶ δέλτος αὐτῷ ζῶντας οὓς δοκεῖ θανεῖν
λέγουσα πιστὰς ἡδονὰς ἀπαγγελεῖ.
ΧΟ. καταλοφύρομαι σὲ τὸν χερνίβων
ῥανίσι * * *
μελόμενον αἱμακταῖς.
ΟΡ. οἶκτος γὰρ οὐ ταῦτ', ἀλλὰ χαίρετ', ὦ ξέναι.
ΧΟ. σὲ δὲ τύχας μάκαρος, ἰὼ νεανία,
σεβόμεθ', εἰς πάτραν
ὅτι πόδ' ἐπεμβάσει.
ΠΥ. ἄζηλά τοι φίλοισι, θνῃσκόντων φίλων.
ΧΟ. ὦ σχέτλιοι πομπαί.
φεῦ φεῦ, διόλλυσαι.
αἰαῖ αἰαῖ.
πότερος ὁ μέλλων;
ἔτι γὰρ ἀμφίλογα δίδυμα μέμονε φρήν,
σὲ πάρος ἢ σ' ἀναστενάξω γόοις.
ΟΡ. Πυλάδη, πέπονθας ταὐτὰ πρὸς θεῶν ἐμοί;
ΠΥ. οὐκ οἶδ'· ἐρωτᾷς οὐ λέγειν ἔχοντά με.
ΟΡ. τίς ἐστὶν ἡ νεᾶνις; ὡς Ἑλληνικῶς
ἀνήρεθ' ἡμᾶς τούς τ' ἐν Ἰλίῳ πόνους
νόστον τ' Ἀχαιῶν τόν τ' ἐν οἰωνοῖς σοφὸν
Κάλχαντ' Ἀχιλλέως τ' ὄνομα, καὶ τὸν ἄθλιον
Ἀγαμέμνον' ὡς ᾤκτειρ' ἀνηρώτα τέ με
γυναῖκα παῖδάς τ'. ἔστιν ἡ ξένη γένος
ἐκεῖθεν Ἀργεία τις· οὐ γὰρ ἄν ποτε
δέλτον τ' ἔπεμπε καὶ τάδ' ἐξεμάνθανεν,
ὡς κοινὰ πράσσουσ', Ἄργος εἰ πράσσοι καλῶς.
ΠΥ. ἔφθης με μικρόν· ταὐτὰ δὲ φθάσας λέγεις,

πλὴν ἕν· τὰ γάρ τοι βασιλέων παθήματα
ἴσασι πάντες, ὧν ἐπιστροφή τις ἦν.
ἀτὰρ διῆλθον χἄτερον λόγον τινά.
ΟΡ. τίν'; εἰς τὸ κοινὸν δοὺς ἄμεινον ἂν μάθοις.
ΠΥ. αἰσχρὸν θανόντος σοῦ βλέπειν ἡμᾶς φάος·
κοινῇ τ' ἔπλευσα, δεῖ με καὶ κοινῇ θανεῖν.
καὶ δειλίαν γὰρ καὶ κάκην κεκτήσομαι
Ἄργει τε Φωκέων τ' ἐν πολυπτύχῳ χθονί,
δόξω δὲ τοῖς πολλοῖσι, πολλοὶ γὰρ κακοί,
προδούς σε σώζεσθ' αὐτὸς εἰς οἴκους μόνος,
ἢ καὶ φονεύσας ἐπὶ νοσοῦσι δώμασι
ῥάψαι μόρον σοι σῆς τυραννίδος χάριν
[ἔγκληρον ὡς δὴ σὴν κασιγνήτην γαμῶν].
ταῦτ' οὖν φοβοῦμαι καὶ δι' αἰσχύνης ἔχω,
κοὐκ ἔσθ' ὅπως οὐ χρὴ συνεκπνεῦσαί μέ σοι
καὶ συσφαγῆναι καὶ πυρωθῆναι δέμας,
φίλον γεγῶτα καὶ φοβούμενον ψόγον.
ΟΡ. εὔφημα φώνει· τἀμὰ δεῖ φέρειν κακά·
ἁπλᾶς δὲ λύπας ἐξόν, οὐκ οἴσω διπλᾶς.
ὃ γὰρ σὺ λυπρὸν κἀπονείδιστον λέγεις,
ταῦτ' ἔστιν ἡμῖν, εἴ σε συμμοχθοῦντ' ἐμοὶ
κτενῶ· τὸ μὲν γὰρ εἰς ἔμ' οὐ κακῶς ἔχει
πράσσονθ' ἃ πράσσω πρὸς θεῶν, λιπεῖν βίον.
σὺ δ' ὄλβιός τ' εἶ καθαρά τ' οὐ νοσοῦντ' ἔχεις
μέλαθρ', ἐγὼ δὲ δυσσεβῆ καὶ δυστυχῆ.
σωθεὶς δὲ παῖδας ἐξ ἐμῆς ὁμοσπόρου
κτησάμενος, ἣν ἔδωκά σοι δάμαρτ' ἔχειν,
ὄνομά τ' ἐμοῦ γένοιτ' ἄν, οὐδ' ἄπαις δόμος
πατρῷος οὑμὸς ἐξαλειφθείη ποτ' ἄν.
ἀλλ' ἕρπε καὶ ζῆ καὶ δόμους οἴκει πατρός.
ὅταν δ' ἐς Ἑλλάδ' ἵππιόν τ' Ἄργος μόλῃς,
πρὸς δεξιᾶς σε τῆσδ' ἐπισκήπτω τάδε·

τύμβον τε χῶσον κἀπίθες μνημεῖά μοι,
καὶ δάκρυ᾽ ἀδελφὴ καὶ κόμας δότω τάφῳ.
ἄγγελλε δ᾽ ὡς ὄλωλ᾽ ὑπ᾽ Ἀργείας τινὸς
γυναικός, ἀμφὶ βωμὸν ἁγνισθεὶς φόνῳ.
καὶ μὴ προδῷς μου τὴν κασιγνήτην ποτέ,
ἔρημα κήδη καὶ δόμους ὁρῶν πατρός.
καὶ χαῖρ᾽· ἐμῶν γὰρ φίλτατον σ᾽ ηὗρον φίλων,
ὦ συγκυναγὲ καὶ συνεκτραφεὶς ἐμοί,
ὦ πόλλ᾽ ἐνεγκὼν τῶν ἐμῶν ἄχθη κακῶν.
ἡμᾶς δ᾽ ὁ Φοῖβος μάντις ὢν ἐψεύσατο·
τέχνην δὲ θέμενος ὡς προσώταθ᾽ Ἑλλάδος
ἀπήλασ᾽ αἰδοῖ τῶν πάρος μαντευμάτων.
ᾧ πάντ᾽ ἐγὼ δοὺς τἀμὰ καὶ πεισθεὶς λόγοις,
μητέρα κατακτὰς αὐτὸς ἀνταπόλλυμαι.

ΠΥ. ἔσται τάφος σοι, καὶ κασιγνήτης λέχος
οὐκ ἂν προδοίην, ὦ τάλας, ἐπεί σ᾽ ἐγὼ
θανόντα μᾶλλον ἢ βλέπονθ᾽ ἕξω φίλον.
ἀτὰρ τὸ τοῦ θεοῦ σ᾽ οὐ διέφθορέν γέ πω
μάντευμα, καίτοι γ᾽ ἐγγὺς ἕστηκας φόνου.
ἀλλ᾽ ἔστιν ἔστιν ἡ λίαν δυσπραξία
λίαν διδοῦσα μεταβολάς, ὅταν τύχῃ.

ΟΡ. σίγα· τὰ Φοίβου δ᾽ οὐδὲν ὠφελεῖ μ᾽ ἔπη·
γυνὴ γὰρ ἥδε δωμάτων ἔξω περᾷ.

ΙΦ. ἀπέλθεθ᾽ ὑμεῖς καὶ παρευτρεπίζετε
τἄνδον μολόντες τοῖς ἐφεστῶσι σφαγῇ.
δέλτου μὲν αἵδε πολύθυροι διαπτυχαί,
ξένοι, πάρεισιν· ἃ δ᾽ ἐπὶ τοῖσδε βούλομαι,
ἀκούσατ᾽· οὐδεὶς αὑτὸς ἐν πόνοις ἀνὴρ
ὅταν τε πρὸς τὸ θάρσος ἐκ φόβου πέσῃ.
ἐγὼ δὲ ταρβῶ μὴ ᾽πονοστήσας χθονὸς
θῆται παρ᾽ οὐδὲν τὰς ἐμὰς ἐπιστολὰς
ὁ τήνδε μέλλων δέλτον εἰς Ἄργος φέρειν.

ΟΡ. τί δῆτα βούλει; τίνος ἀμηχανεῖς πέρι;
ΙΦ. ὅρκον δότω μοι τάσδε πορθμεύσειν γραφὰς
[πρὸς Ἄργος, οἷσι βούλομαι πέμψαι φίλων].
ΟΡ. ἦ κἀντιδώσεις τῷδε τοὺς αὐτοὺς λόγους;
ΙΦ. τί χρῆμα δράσειν ἢ τί μὴ δράσειν, λέγε.
ΟΡ. ἐκ γῆς ἀφήσειν μὴ θανόντα βαρβάρου.
ΙΦ. δίκαιον εἶπας· πῶς γὰρ ἀγγείλειεν ἄν;
ΟΡ. ἦ καὶ τύραννος ταῦτα συγχωρήσεται;
ΙΦ. πείσω σφε, καὐτὴ ναὸς εἰσβήσω σκάφος.
ΟΡ. ὄμνυ· σὺ δ' ἔξαρχ' ὅρκον ὅστις εὐσεβής.
ΙΦ. δώσεις, λέγειν χρή, τήνδε τοῖς ἐμοῖς φίλοις.
ΠΥ. τοῖς σοῖς φίλοισι γράμματ' ἀποδώσω τάδε.
ΙΦ. κἀγὼ σὲ σώσω κυανέας ἔξω πέτρας.
ΠΥ. τίν' οὖν ἐπόμνυς τοισίδ' ὅρκιον θεῶν;
ΙΦ. Ἄρτεμιν, ἐν ἧσπερ δώμασιν τιμὰς ἔχω.
ΠΥ. ἐγὼ δ' ἄνακτά γ' οὐρανοῦ, σεμνὸν Δία.
ΙΦ. εἰ δ' ἐκλιπὼν τὸν ὅρκον ἀδικοίης ἐμέ;
ΠΥ. ἄνοστος εἴην· τί δὲ σύ, μὴ σώσασά με;
ΙΦ. μήποτε κατ' Ἄργος ζῶσ' ἴχνος θείην ποδός.
ΠΥ. ἄκουε δή νυν ὃν παρήλθομεν λόγον.
ΙΦ. ἀλλ' οὔτις ἔσται καινός, ἢν καλῶς ἔχῃ.
ΠΥ. ἐξαίρετόν μοι δὸς τόδ', ἤν τι ναῦς πάθῃ,
χἠ δέλτος ἐν κλύδωνι χρημάτων μέτα
ἀφανὴς γένηται, σῶμα δ' ἐκσώσω μόνον,
τὸν ὅρκον εἶναι τόνδε μηκέτ' ἔμπεδον.
ΙΦ. ἀλλ' οἶσθ' ὃ δράσω; πολλὰ γὰρ πολλῶν κυρεῖ·
τἀνόντα κἀγγεγραμμέν' ἐν δέλτου πτυχαῖς
λόγῳ φράσω σοι πάντ' ἀναγγεῖλαι φίλοις.
ἐν ἀσφαλεῖ γάρ· ἢν μὲν ἐκσώσῃς γραφήν,
αὕτη φράσει σιγῶσα τἀγγεγραμμένα·
ἢν δ' ἐν θαλάσσῃ γράμματ' ἀφανισθῇ τάδε,
τὸ σῶμα σώσας τοὺς λόγους σώσεις ἐμοί.

ΠΥ. καλῶς ἔλεξας τῶν θ᾽ ἑῶν ἐμοῦ θ᾽ ὕπερ.
σήμαινε δ᾽ ᾧ χρὴ τάσδ᾽ ἐπιστολὰς φέρειν
πρὸς Ἄργος ὅ τι τε χρὴ κλύοντά σου λέγειν.
ΙΦ. ἄγγελλ᾽ Ὀρέστῃ, παιδὶ τῷ ᾽γαμέμνονος·
ἡ ᾽ν Αὐλίδι σφαγεῖσ᾽ ἐπιστέλλει τάδε
ζῶσ᾽ Ἰφιγένεια, τοῖς ἐκεῖ δ᾽ οὐ ζῶσ᾽ ἔτι.
ΟΡ. ποῦ δ᾽ ἔστ᾽ ἐκείνη; κατθανοῦσ᾽ ἥκει πάλιν;
ΙΦ. ἥδ᾽ ἣν ὁρᾷς σύ· μὴ λόγοις ἔκπλησσέ με.
κόμισαί μ᾽ ἐς Ἄργος, ὦ σύναιμε, πρὶν θανεῖν,
ἐκ βαρβάρου γῆς καὶ μετάστησον θεᾶς
σφαγίων, ἐφ᾽ οἷσι ξενοφόνους τιμὰς ἔχω.
ΟΡ. Πυλάδη, τί λέξω; ποῦ ποτ᾽ ὄνθ᾽ εὑρήμεθα;
ΙΦ. ἢ σοῖς ἀραία δώμασιν γενήσομαι,
Ὀρέσθ᾽, ἵν᾽ αὖθις ὄνομα δὶς κλύων μάθῃς.
ΟΡ. ὦ θεοί. ΙΦ. τί τοὺς θεοὺς ἀνακαλεῖς ἐν τοῖς ἐμοῖς;
ΟΡ. οὐδέν· πέραινε δ᾽· ἐξέβην γὰρ ἄλλοσε.
[τάχ᾽ οὖν ἐρωτῶν σ᾽ εἰς ἄπιστ᾽ ἀφίξομαι.]
ΙΦ. λέγ᾽ οὕνεκ᾽ ἔλαφον ἀντιδοῦσά μου θεὰ
Ἄρτεμις ἔσωσέ μ᾽, ἣν ἔθυσ᾽ ἐμὸς πατήρ,
δοκῶν ἐς ἡμᾶς ὀξὺ φάσγανον βαλεῖν,
εἰς τήνδε δ᾽ ᾤκισ᾽ αἶαν. αἵδ᾽ ἐπιστολαί,
τάδ᾽ ἐστὶ τἀν δέλτοισιν ἐγγεγραμμένα.
ΠΥ. ὦ ῥᾳδίοις ὅρκοισι περιβαλοῦσά με,
κάλλιστα δ᾽ ὀμόσασ᾽, οὐ πολὺν σχήσω χρόνον,
τὸν δ᾽ ὅρκον ὃν κατώμοσ᾽ ἐμπεδώσομεν.
ἰδού, φέρω σοι δέλτον ἀποδίδωμί τε,
Ὀρέστα, τῆσδε σῆς κασιγνήτης πάρα.
ΟΡ. δέχομαι· παρεὶς δὲ γραμμάτων διαπτυχάς,
τὴν ἡδονὴν πρῶτ᾽ οὐ λόγοις αἱρήσομαι.
ὦ φιλτάτη μοι σύγγον᾽, ἐκπεπληγμένος
ὅμως σ᾽ ἀπίστῳ περιβαλὼν βραχίονι
εἰς τέρψιν εἶμι, πυθόμενος θαυμάστ᾽ ἐμοί.

ΧΟ. ξεῖν᾿, οὐ δικαίως τῆς θεοῦ τὴν πρόσπολον
χραίνεις ἀθίκτοις περιβαλὼν πέπλοις χέρα.
ΟΡ. ὦ συγκασιγνήτη τε κἀκ ταὐτοῦ πατρὸς
᾿Αγαμέμνονος γεγῶσα, μή μ᾿ ἀποστρέφου,
ἔχουσ᾿ ἀδελφόν, οὐ δοκοῦσ᾿ ἕξειν ποτέ.
ΙΦ. ἐγώ σ᾿ ἀδελφὸν τὸν ἐμόν; οὐ παύσει λέγων;
τὸ δ᾿ Ἄργος αὐτοῦ μεστὸν ἥ τε Ναυπλία.
ΟΡ. οὐκ ἔστ᾿ ἐκεῖ σός, ὦ τάλαινα, σύγγονος.
ΙΦ. ἀλλ᾿ ἡ Λάκαινα Τυνδαρίς σ᾿ ἐγείνατο;
ΟΡ. Πέλοπός γε παιδὶ παιδός, οὗ ᾿κπέφυκ᾿ ἐγώ.
ΙΦ. τί φής; ἔχεις τι τῶνδέ μοι τεκμήριον;
ΟΡ. ἔχω· πατρῴων ἐκ δόμων τι πυνθάνου.
ΙΦ. οὐκοῦν λέγειν μὲν χρὴ σέ, μανθάνειν δ᾿ ἐμέ.
ΟΡ. [λέγοιμ᾿ ἄν. ἄκουε πρῶτον Ἠλέκτρας τάδε.]
᾿Ατρέως Θυέστου τ᾿ οἶσθα γενομένην ἔριν;
ΙΦ. ἤκουσα, χρυσῆς ἀρνὸς οὕνεκ᾿ ἦν πέρι.
ΟΡ. ταῦτ᾿ οὖν ὑφήνασ᾿ οἶσθας εὐπήνοις ὑφαῖς;
ΙΦ. ὦ φίλτατ᾿, ἐγγὺς τῶν ἐμῶν κάμπτεις φρενῶν.
ΟΡ. εἰκώ τ᾿ ἐν ἱστοῖς ἡλίου μετάστασιν;
ΙΦ. ὕφηνα καὶ τόδ᾿ εἶδος εὐμίτοις πλοκαῖς.
ΟΡ. καὶ λούτρ᾿ ἐς Αὖλιν μητρὸς ἀνεδέξω πάρα;
ΙΦ. οἶδ᾿· οὐ γὰρ ὁ γάμος ἐσθλὸς ὤν μ᾿ ἀφείλετο.
ΟΡ. τί γάρ; κόμας σὰς μητρὶ δοῦσα σῇ φέρειν;
ΙΦ. μνημεῖά γ᾿ ἀντὶ σώματος τοὐμοῦ τάφῳ.
ΟΡ. ἃ δ᾿ εἶδον αὐτός, τάδε φράσω τεκμήρια·
Πέλοπος παλαιὰν ἐν δόμοις λόγχην πατρός,
ἣν χερσὶ πάλλων παρθένον Πισάτιδα
ἐκτήσαθ᾿ Ἱπποδάμειαν, Οἰνόμαον κτανών,
ἐν παρθενῶσι τοῖσι σοῖς κεκρυμμένην.
ΙΦ. ὦ φίλτατ᾿, οὐδὲν ἄλλο, φίλτατος γὰρ εἶ,
ἔχω σ᾿, Ὀρέστα, τηλύγετον

χθονὸς ἀπὸ πατρίδος
Ἀργόθεν, ὦ φίλος.
ΟΡ. κἀγώ σε τὴν θανοῦσαν, ὡς δοξάζεται.
κατὰ δὲ δάκρυα, κατὰ δὲ γόος ἅμα χαρᾷ
. τὸ σὸν νοτίζει βλέφαρον, ὡσαύτως δ᾽ ἐμόν.
ΙΦ. τότ᾽ ἔτι βρέφος ἔλιπον ἔλιπον ἀγκάλαις
σὲ νεαρὸν τροφοῦ νεαρὸν ἐν δόμοις.
ὦ κρεῖσσον ἢ λόγοισιν εὐτυχῶν τυχᾶν.
τί φῶ; θαυμάτων πέρα καὶ λόγου
πρόσω τάδ᾽ ἐπέβα.
ΟΡ. τὸ λοιπὸν εὐτυχοῖμεν ἀλλήλων μέτα.
ΙΦ. ἄτοπον ἁδονὰν ἔλαβον, ὦ φίλαι·
δέδοικα δ᾽ ἐκ χερῶν με μὴ πρὸς αἰθέρα
ἀμπτάμενος φύγῃ·
ὦ Κυκλωπίδες ἑστίαι, ὦ πατρίς,
Μυκήνα φίλα,
χάριν ἔχω ζόας, χάριν ἔχω τροφᾶς,
ὅτι μοι συνομαίμονα
τόνδε δόμοισιν ἐξεθρέψω φάος.
ΟΡ. γένει μὲν εὐτυχοῦμεν, εἰς δὲ συμφοράς,
ὦ σύγγον᾽, ἡμῶν δυστυχὴς ἔφυ βίος.
ΙΦ. ἐγὼ * μέλεος οἶδ᾽, ὅτε φάσγανον
δέρᾳ ῎θηκέ μοι μελεόφρων πατήρ,
ΟΡ. οἴμοι. δοκῶ γὰρ οὐ παρών σ᾽ ὁρᾶν ἐκεῖ.
ΙΦ. ἀνυμέναιος, ὦ σύγγον᾽, Ἀχιλλέως
εἰς κλισίαν λέκτρων
δόλι᾽ ὅτ᾽ ἀγόμαν·
παρὰ δὲ βωμὸν ἦν δάκρυα καὶ γόοι.
φεῦ φεῦ χερνίβων τῶν ἐκεῖ.
ΟΡ. ᾤμωξα κἀγὼ τόλμαν ἣν ἔτλη πατήρ.
ΙΦ. ἀπάτορ᾽ ἀπάτορα πότμον ἔλαχον.
ἄλλα δ᾽ ἐξ ἄλλων κυρεῖ.

ΟΡ. εἰ σόν γ' ἀδελφόν, ὦ τάλαιν', ἀπώλεσας
δαίμονος τύχᾳ τινός.
ΙΦ. ὦ μελέα δεινᾶς τόλμας. δείν' ἔτλαν
δείν' ἔτλαν, ὤμοι σύγγονε. παρὰ δ' ὀλίγον
ἀπέφυγες ὄλεθρον ἀνόσιον ἐξ ἐμᾶν
δαϊχθεὶς χερῶν.
ἁ δ' ἐπ' αὐτοῖς τίς τελευτά;
τίς τύχα μοι συγκυρήσει;
τίνα σοι πόρον εὑρομένα
πάλιν ἀπὸ πόλεως, ἀπὸ φόνου πέμψω
πατρίδ' ἐς Ἀργείαν,
πρὶν ἐπὶ ξίφος αἵματι σῷ
πελάσσαι; τόδε σόν, ὦ μελέα ψυχά,
χρέος ἀνευρίσκειν,
πότερον κατὰ χέρσον, οὐχὶ ναΐ,
ἀλλὰ ποδῶν ῥιπᾷ
θανάτῳ πελάσεις ἀνὰ βάρβαρα φῦλα
καὶ δι' ὁδοὺς ἀνόδους στείχων· διὰ κυανέας μὴν
στενοπόρου πέτρας μακρὰ κέλευθα να-
ΐοισιν δρασμοῖς.
τάλαινα, τάλαινα.
τίς ἄρ' οὖν, τάλαν, ἢ θεὸς ἢ βροτὸς ἢ
τι τῶν ἀδοκήτων
πόρον εὔπορον ἐξανύσας
δυοῖν τοῖν μόνοιν Ἀτρείδαιν φανεῖ
κακῶν ἔκλυσιν;
ΧΟ. ἐν τοῖσι θαυμαστοῖσι καὶ μύθων πέρα
τάδ' εἶδον αὐτὴ κοὐ κλύουσ' ἀπ' ἀγγέλων.
ΠΥ. τὸ μὲν φίλους ἐλθόντας εἰς ὄψιν φίλων,
Ὀρέστα, χειρῶν περιβολὰς εἰκὸς λαβεῖν·
λήξαντα δ' οἴκτων κἀπ' ἐκεῖν' ἐλθεῖν χρεών,
ὅπως τὸ κλεινὸν ὄνομα τῆς σωτηρίας

λαβόντες ἐκ γῆς βησόμεσθα βαρβάρου.
σοφῶν γὰρ ἀνδρῶν ταῦτα, μὴ 'κβάντας τύχης,
καιρὸν λαβόντας, ἡδονὰς ἄλλας λαβεῖν.
ΟΡ. καλῶς ἔλεξας· τῇ τύχῃ δ' οἶμαι μέλειν
τοῦδε ξὺν ἡμῖν· ἢν δέ τις πρόθυμος ᾖ,
σθένειν τὸ θεῖον μᾶλλον εἰκότως ἔχει.
ΙΦ. οὐδέν μ' ἐπίσχει γ' οὐδ' ἀποστήσει λόγου
πρῶτον πυθέσθαι τίνα ποτ' Ἠλέκτρα πότμον
εἴληχε βιότου· φίλα γὰρ ἔσται πάντ' ἐμοί.
ΟΡ. τῷδε ξυνοικεῖ βίον ἔχουσ' εὐδαίμονα.
ΙΦ. οὗτος δὲ ποδαπὸς καὶ τίνος πέφυκε παῖς;
ΟΡ. Στρόφιος ὁ Φωκεὺς τοῦδε κλῄζεται πατήρ.
ΙΦ. ὁ δ' ἐστί γ' Ἀτρέως θυγατρός, ὁμογενὴς ἐμός;
ΟΡ. ἀνεψιός γε, μόνος ἐμοὶ σαφὴς φίλος.
ΙΦ. οὐκ ἦν τόθ' οὗτος ὅτε πατὴρ ἔκτεινέ με.
ΟΡ. οὐκ ἦν· χρόνον γὰρ Στρόφιος ἦν ἄπαις τινά.
ΙΦ. χαῖρ' ὦ πόσις μοι τῆς ἐμῆς ὁμοσπόρου.
ΟΡ. κἀμός γε σωτήρ, οὐχὶ συγγενὴς μόνον.
ΙΦ. τὰ δεινὰ δ' ἔργα πῶς ἔτλης μητρὸς πέρι;
ΟΡ. σιγῶμεν αὐτά· πατρὶ τιμωρῶν ἐμῷ.
ΙΦ. ἡ δ' αἰτία τίς ἀνθ' ὅτου κτείνει πόσιν;
ΟΡ. ἔα τὰ μητρός· οὐδὲ σοὶ κλύειν καλόν.
ΙΦ. σιγῶ· τὸ δ' Ἄργος πρὸς σὲ νῦν ἀποβλέπει;
ΟΡ. Μενέλαος ἄρχει· φυγάδες ἐσμὲν ἐκ πάτρας.
ΙΦ. οὔ που νοσοῦντας θεῖος ὕβρισεν δόμους;
ΟΡ. οὔκ, ἀλλ' Ἐρινύων δεῖμά μ' ἐκβάλλει χθονός.
ΙΦ. ταῦτ' ἆρ' ἐπ' ἀκταῖς κἀνθάδ' ἠγγέλθης μανείς;
ΟΡ. ὤφθημεν οὐ νῦν πρῶτον ὄντες ἄθλιοι.
ΙΦ. ἔγνωκα, μητρός σ' οὕνεκ' ἠλάστρουν θεαί.
ΟΡ. ὥσθ' αἱματηρὰ στόμι' ἐπεμβαλεῖν ἐμοί.
ΙΦ. τί γάρ ποτ' εἰς γῆν τήνδ' ἐπόρθμευσας πόδα;
ΟΡ. Φοίβου κελευσθεὶς θεσφάτοις ἀφικόμην.

ΙΦ. τί χρῆμα δράσων; ῥητὸν ἢ σιγώμενον;
ΟΡ. λέγοιμ᾽ ἄν· ἀρχαὶ δ᾽ αἵδε μοι πολλῶν πόνων.
ἐπεὶ τὰ μητρὸς ταῦθ᾽ ἃ σιγῶμεν κακὰ
εἰς χεῖρας ἦλθε, μεταδρομαῖς Ἐρινύων
ἠλαυνόμεσθα φυγάδες, ἔνθ᾽ ἐμὸν πόδα
εἰς τὰς Ἀθήνας δῆτ᾽ ἔπεμψε Λοξίας,
δίκην παρασχεῖν ταῖς ἀνωνύμοις θεαῖς.
ἔστιν γὰρ ὁσία ψῆφος, ἣν Ἄρει ποτὲ
Ζεὺς εἵσατ᾽ ἔκ του δὴ χερῶν μιάσματος.
ἐλθὼν δ᾽ ἐκεῖσε, πρῶτα μέν μ᾽ οὐδεὶς ξένων
ἑκὼν ἐδέξαθ᾽, ὡς θεοῖς στυγούμενον·
οἳ δ᾽ ἔσχον αἰδῶ, ξένια μονοτράπεζά μοι
παρέσχον, οἴκων ὄντες ἐν ταὐτῷ στέγει,
σιγῇ δ᾽ ἐτεκτήναντ᾽ ἀπόφθεγκτόν μ᾽, ὅπως
δαιτὸς γενοίμην πώματός τ᾽ αὐτῶν δίχα,
εἰς δ᾽ ἄγγος ἴδιον ἴσον ἅπασι βακχίου
μέτρημα πληρώσαντες εἶχον ἡδονήν.
κἀγὼ ᾽ξελέγξαι μὲν ξένους οὐκ ἠξίουν,
ἤλγουν δὲ σιγῇ κἀδόκουν οὐκ εἰδέναι,
μέγα στενάζων, οὕνεκ᾽ ἦν μητρὸς φονεύς.
κλύω δ᾽ Ἀθηναίοισι τἀμὰ δυστυχῆ
τελετὴν γενέσθαι, κἄτι τὸν νόμον μένειν,
χοῆρες ἄγγος Παλλάδος τιμᾶν λεών.
ὡς δ᾽ εἰς Ἄρειον ὄχθον ἧκον ἐς δίκην τ᾽
ἔστην, ἐγὼ μὲν θάτερον λαβὼν βάθρον,
τὸ δ᾽ ἄλλο πρέσβειρ᾽ ἥπερ ἦν Ἐρινύων,
εἰπὼν ἀκούσας θ᾽ αἵματος μητρὸς πέρι,
Φοῖβός μ᾽ ἔσωσε μαρτυρῶν· ἴσας δέ μοι
ψήφους διηρίθμησε Παλλὰς ὠλένῃ,
νικῶν δ᾽ ἀπῆρα φόνια πειρατήρια.
ὅσαι μὲν οὖν ἕζοντο πεισθεῖσαι δίκῃ,
ψῆφον παρ᾽ αὐτὴν ἱερὸν ὡρίσαντ᾽ ἔχειν·

ὅσαι δ' Ἐρινύων οὐκ ἐπείσθησαν νόμῳ,
δρόμοις ἀνιδρύτοισιν ἠλάστρουν μ' ἀεί,
ἕως ἐς ἁγνὸν ἦλθον αὖ Φοίβου πέδον,
καὶ πρόσθεν ἀδύτων ἐκταθείς, νῆστις βορᾶς,
ἐπώμοσ' αὐτοῦ βίον ἀπορρήξειν θανών,
εἰ μή με σώσει Φοῖβος, ὅς μ' ἀπώλεσεν.
ἐντεῦθεν αὐδὴν τρίποδος ἐκ χρυσοῦ λακὼν
Φοῖβός μ' ἔπεμψε δεῦρο, διοπετὲς λαβεῖν
ἄγαλμ' Ἀθηνῶν τ' ἐγκαθιδρῦσαι χθονί.
ἀλλ' ἥνπερ ἡμῖν ὥρισεν σωτηρίαν,
σύμπραξον· ἢν γὰρ θεᾶς κατάσχωμεν βρέτας,
μανιῶν τε λήξω καὶ σὲ πολυκώπῳ σκάφει
στείλας Μυκήναις ἐγκαταστήσω πάλιν.
ἀλλ' ὦ φιληθεῖσ', ὦ κασίγνητον κάρα,
σῶσον πατρῷον οἶκον, ἔκσωσον δ' ἐμέ·
ὡς τἄμ' ὄλωλε πάντα καὶ τὰ Πελοπιδῶν,
οὐράνιον εἰ μὴ ληψόμεσθα θεᾶς βρέτας.

ΧΟ. δεινή τις ὀργὴ δαιμόνων ἐπέζεσε
τὸ Ταντάλειον σπέρμα διὰ πόνων τ' ἄγει.

ΙΦ. τὸ μὲν πρόθυμον, πρίν σε δεῦρ' ἐλθεῖν, ἔχω
["Αργει γενέσθαι καὶ σέ, σύγγον', εἰσιδεῖν].
θέλω δ' ἅπερ σύ, σέ τε μεταστῆσαι πόνων
νοσοῦντά τ' οἶκον, οὐχὶ τῷ κτανόντι με
θυμουμένη, πατρῷον ὀρθῶσαι θέλω·
σφαγῆς τε γὰρ σῆς χεῖρ' ἀπαλλάξαιμεν ἂν
σώσαιμί τ' οἴκους· τὴν θεὸν δ' ὅπως λάθω
δέδοικα καὶ τύραννον, ἡνίκ' ἂν κενὰς
κρηπῖδας εὕρῃ λαΐνας ἀγάλματος.
πῶς δ' οὐ θανοῦμαι; τίς δ' ἔνεστί μοι λόγος;
ἀλλ' εἰ μὲν ἕν τι τοῦθ' ὁμοῦ γενήσεται,
ἄγαλμά τ' οἴσεις κἄμ' ἐπ' εὐπρύμνου νεὼς
ἄξεις, τὸ κινδύνευμα γίγνεται καλόν·

τούτου δὲ χωρισθεῖσ᾽ ἐγὼ μὲν ὄλλυμαι,
σὺ δ᾽ ἂν τὸ σαυτοῦ θέμενος εὖ νόστου τύχοις.
οὐ μήν τι φεύγω γ᾽ οὐδέ μ᾽ εἰ θανεῖν χρεών,
σώσασα σ᾽· οὐ γὰρ ἀλλ᾽ ἀνὴρ μὲν ἐκ δόμων
θανὼν ποθεινός, τὰ δὲ γυναικὸς ἀσθενῆ.
ΟΡ. οὐκ ἂν γενοίμην σοῦ τε καὶ μητρὸς φονεύς·
ἅλις τὸ κείνης αἷμα· κοινόφρων δὲ σοὶ
καὶ ζῆν θέλοιμ᾽ ἂν καὶ θανὼν λαχεῖν ἴσον.
ἄξω δέ σ᾽, ἤνπερ μὴ αὐτὸς ἐνταυθοῖ πέσω,
πρὸς οἶκον, ἢ σοῦ κατθανὼν μενῶ μέτα.
γνώμης δ᾽ ἄκουσον· εἰ πρόσαντες ἦν τόδε
Ἀρτέμιδι, πῶς ἂν Λοξίας ἐθέσπισε
κομίσαι μ᾽ ἄγαλμα θεᾶς πόλισμα Παλλάδος
καὶ σὸν πρόσωπον εἰσιδεῖν; ἅπαντα γὰρ
συνθεὶς τάδ᾽ εἰς ἓν νόστον ἐλπίζω λαβεῖν.
ΙΦ. πῶς οὖν γένοιτ᾽ ἂν ὥστε μήθ᾽ ἡμᾶς θανεῖν,
λαβεῖν θ᾽ ἃ βουλόμεσθα; τῇδε γὰρ νοσεῖ
νόστος πρὸς οἴκους· ἡ δὲ βούλησις πάρα.
ΟΡ. ἆρ᾽ ἂν τύραννον διολέσαι δυναίμεθ᾽ ἄν;
ΙΦ. δεινὸν τόδ᾽ εἶπας, ξενοφονεῖν ἐπήλυδας.
ΟΡ. ἀλλ᾽ εἰ σὲ σώσει κἀμέ, κινδυνευτέον.
ΙΦ. οὐκ ἂν δυναίμην, τὸ δὲ πρόθυμον ᾔνεσα.
ΟΡ. τί δ᾽, εἴ με ναῷ τῷδε κρύψειας λάθρᾳ;
ΙΦ. εἴσ᾽ ἔνδον ἱεροῦ φύλακες, οὓς οὐ λήσομεν.
ΟΡ. οἴμοι διεφθάρμεσθα· πῶς σωθεῖμεν ἄν;
ΙΦ. ἔχειν δοκῶ μοι καινὸν ἐξεύρημά τι.
ΟΡ. ποῖόν τι; δόξης μετάδος, ὡς κἀγὼ μάθω.
ΙΦ. ταῖς σαῖς ἀνίαις χρήσομαι σοφίσμασιν.
ΟΡ. δειναὶ γὰρ αἱ γυναῖκες εὑρίσκειν τέχνας.
ΙΦ. φονέα σε φήσω μητρὸς ἐξ Ἄργους μολεῖν.

ΙΦ. ὡς δὴ σκότος λαβόντες ἐκσωθεῖμεν ἄν;
ΟΡ. κλεπτῶν γὰρ ἡ νύξ, τῆς δ᾽ ἀληθείας τὸ φῶς.

ΟΡ. χρῆσαι κακοῖσι τοῖς ἐμοῖς, εἰ κερδανεῖς.
ΙΦ. ὡς οὐ θέμις σε λέξομεν θύειν θεᾷ,
ΟΡ. τίν' αἰτίαν ἔχουσ'; ὑποπτεύω τι γάρ.
ΙΦ. οὐ καθαρὸν ὄντα, τὸ δ' ὅσιον δώσω φόνῳ.
ΟΡ. τί δῆτα μᾶλλον θεᾶς ἄγαλμ' ἁλίσκεται;
ΙΦ. πόντου σε πηγαῖς ἁγνίσαι βουλήσομαι,
ΟΡ. ἔτ' ἐν δόμοισι βρέτας, ἐφ' ᾧ πεπλεύκαμεν.
ΙΦ. κἀκεῖνο νίψαι, σοῦ θιγόντος ὥς, ἐρῶ.
ΟΡ. ποῖ δῆτα; πόντου νοτερὸν εἶπας ἔκβολον;
ΙΦ. οὗ ναῦς χαλινοῖς λινοδέτοις ὁρμεῖ σέθεν.
ΟΡ. σὺ δ' ἤ τις ἄλλος ἐν χεροῖν οἴσει βρέτας;
ΙΦ. ἐγώ· θιγεῖν γὰρ ὅσιόν ἐστ' ἐμοὶ μόνῃ.
ΟΡ. Πυλάδης δ' ὅδ' ἡμῖν ποῦ τετάξεται πόνου;
ΙΦ. ταὐτὸν χεροῖν σοὶ λέξεται μίασμ' ἔχων.
ΟΡ. λάθρᾳ δ' ἄνακτος ἢ εἰδότος δράσεις τάδε;
ΙΦ. πείσασα μύθοις· οὐ γὰρ ἂν λάθοιμί γε.
ΟΡ. καὶ μὴν νεώς γε πίτυλος εὐήρης πάρα.
ΙΦ. σοὶ δὴ μέλειν χρὴ τἄλλ' ὅπως ἕξει καλῶς.
ΟΡ. ἑνὸς μόνου δεῖ, τάσδε συγκρύψαι τάδε.
ἀλλ' ἀντίαζε καὶ λόγους πειστηρίους
εὕρισκ'· ἔχει τοι δύναμιν εἰς οἶκτον γυνή.
τὰ δ' ἄλλ' ἴσως ἂν πάντα συμβαίη καλῶς.
ΙΦ. ὦ φίλταται γυναῖκες, εἰς ὑμᾶς βλέπω,
καὶ τἄμ' ἐν ὑμῖν ἐστιν ἢ καλῶς ἔχειν
ἢ μηδὲν εἶναι καὶ στερηθῆναι πάτρας
φίλου τ' ἀδελφοῦ φιλτάτης τε συγγόνου.
καὶ πρῶτα μέν μοι τοῦ λόγου τάδ' ἀρχέτω·
γυναῖκές ἐσμεν, φιλόφρον ἀλλήλαις γένος,
σώζειν τε κοινὰ πράγματ' ἀσφαλέσταται.
σιγήσαθ' ἡμῖν καὶ συνεκπονήσατε
φυγάς. καλόν τοι γλῶσσ' ὅτῳ πιστὴ παρῇ.
ὁρᾶτε δ' ὡς τρεῖς μία τύχη τοὺς φιλτάτους,

ἢ γῆς πατρῴας νόστος ἢ θανεῖν ἔχει.
σωθεῖσα δ', ὡς ἂν καὶ σὺ κοινωνῇς τύχης,
σώσω σ' ἐς Ἑλλάδ'. ἀλλὰ πρός σε δεξιᾶς,
σὲ καὶ σ' ἱκνοῦμαι, σὲ δὲ φίλης παρηίδος
γονάτων τε καὶ τῶν ἐν δόμοισι φιλτάτων
[μητρὸς πατρός τε καὶ τέκνων ὅτῳ κυρεῖ],
τί φατέ; τίς ὑμῶν φησιν ἢ τίς οὐ θέλει,
φθέγξασθε, ταῦτα; μὴ γὰρ αἰνουσῶν λόγους
ὄλωλα κἀγὼ καὶ κασίγνητος τάλας.

ΧΟ. θάρσει, φίλη δέσποινα, καὶ σῴζου μόνον·
ὡς ἔκ γ' ἐμοῦ σοι πάντα σιγηθήσεται,
ἴστω μέγας Ζεύς, ὧν ἐπισκήπτεις πέρι.

ΙΦ. ὄναισθε μύθων καὶ γένοισθ' εὐδαίμονες.
σὸν ἔργον ἤδη καὶ σὸν εἰσβαίνειν δόμους·
ὡς αὐτίχ' ἥξει τῆσδε κοίρανος χθονός,
θυσίαν ἐλέγξων, εἰ κατείργασται, ξένων.
ὦ πότνι', ἥπερ μ' Αὐλίδος κατὰ πτύχας
δεινῆς ἔσωσας ἐκ πατροκτόνου χερός,
σῶσόν με καὶ νῦν τούσδε τ'· ἢ τὸ Λοξίου
οὐκέτι βροτοῖσι διὰ σ' ἐτήτυμον στόμα.
ἀλλ' εὐμενὴς ἔκβηθι βαρβάρου χθονὸς
εἰς τὰς Ἀθήνας· καὶ γὰρ ἐνθάδ' οὐ πρέπει
ναίειν, παρόν σοι πόλιν ἔχειν εὐδαίμονα.

ΧΟ. ὄρνις, ἃ παρὰ πετρίνας στρ.
πόντου δειράδας, ἀλκυών,
ἔλεγον οἰκτρὸν ἀείδεις,
εὐξύνετον ξυνετοῖσι βοάν,
ὅτι πόσιν κελαδεῖς ἀεὶ μολπαῖς,
ἐγώ σοι παραβάλλομαι
θρήνους, ἄπτερος ὄρνις,
ποθοῦσ' Ἑλλάνων ἀγόρους,

1089—1105 = 1106—1122

ποθοῦσ᾽ Ἄρτεμιν λοχίαν,
ἃ παρὰ Κύνθιον ὄχθον οἰκεῖ
φοίνικά θ᾽ ἁβροκόμαν
δάφναν τ᾽ εὐερνέα καὶ
γλαυκᾶς θαλλὸν ἱρὸν ἐλαίας,
Λατοῦς ὠδῖνα φίλαν,
λίμναν θ᾽ εἱλίσσουσαν ὕδωρ
κύκλιον, ἔνθα κύκνος μελῳ-
δὸς Μούσας θεραπεύει.
ὦ πολλαὶ δακρύων λιβάδες, ἀντ.
αἳ παρηίδας εἰς ἐμὰς
ἔπεσον, ἁνίκα πύργων
ὀλλυμένων ἐπὶ ναυσὶν ἔβαν
πολεμίων ἐρετμοῖσι καὶ λόγχαις.
ζαχρύσου δὲ δι᾽ ἐμπολᾶς
νᾶσον βάρβαρον ἦλθον,
ἐν ᾇ τᾶς ἑλλανοφόνου
θεᾶς κούραν ἀμφίπολον
παῖδ᾽ Ἀγαμεμνονίαν λατρεύω
βωμούς τε μηλοθύτας,
ζηλοῦσ᾽ ἄταν διὰ παν-
τὸς δυσδαίμον᾽· ἐν γὰρ ἀνάγκαις
οὐ κάμνει σύντροφος ὤν·
μεταβάλλει δυσδαιμονίᾳ·
τὸ δὲ μετ᾽ εὐτυχίαν κακοῦ-
σθαι θνατοῖς βαρὺς αἰών.
καὶ σὲ μέν, πότνι᾽, Ἀργεία στρ.
πεντηκόντορος οἶκον ἄξει·
συρίζων δ᾽ ὁ κηροδέτας
κάλαμος οὐρείου Πανὸς
κώπαις ἐπιθωΰξει,

1123 — 1137 = 1138 — 1151

ὁ Φοῖβός θ᾽ ὁ μάντις ἔχων
κέλαδον ἑπτατόνου λύρας
ἀείδων ἄξει λιπαρὰν
εὖ σ᾽ Ἀθηναίων ἐπὶ γᾶν.
ἐμὲ δ᾽ αὐτοῦ προλιποῦ-
σα βήσει ῥοθίοις πλάταις·
ἀέρι δ᾽ ἱστία πρότονοι κατὰ
πρῷραν ὑπὲρ στόλον ἐκπετάσουσι πόδες
ναὸς ὠκυπόμπου.
λαμπρὸν ἱππόδρομον βαίην, ἀντ.
ἔνθ᾽ εὐάλιον ἔρχεται πῦρ·
οἰκείων δ᾽ ὑπὲρ θαλάμων
πτέρυγας ἐν νώτοις ἁμοῖς
λήξαιμι θοάζουσα·
χοροὺς δ᾽ ἱσταίην, ὅθι καὶ
πάροχος εὐδοκίμων γάμων,
παρὰ πόδ᾽ εἱλίσσουσα φίλας
ματρὸς ἡλίκων θιάσους,
ἐς ἁμίλλας χαρίτων,
χλιδᾶς ἁβροπλούτοι᾽ ἐς ἔριν
ὀρνυμένα, πολυποίκιλα φάρεα
καὶ πλοκάμους περιβαλλομένα γένυσιν
* * ἐσκίαζον.

ΘΟ. ποῦ ᾽σθ᾽ ἡ πυλωρὸς τῶνδε δωμάτων γυνὴ
Ἑλληνίς; ἤδη τῶν ξένων κατήρξατο,
ἀδύτοις τ᾽ ἐν ἁγνοῖς σῶμα δάπτονται πυρί;

ΧΟ. ἥδ᾽ ἐστίν, ἥ σοι πάντ᾽, ἄναξ, ἐρεῖ σαφῶς.

ΘΟ. ἔα·
τί τόδε μεταίρεις ἐξ ἀκινήτων βάθρων,
Ἀγαμέμνονος παῖ, θεᾶς ἄγαλμ᾽ ἐν ὠλέναις;

ΙΦ. ἄναξ, ἔχ᾽ αὐτοῦ πόδα σὸν ἐν παραστάσιν.

ΘΟ. τί δ᾽ ἔστιν, Ἰφιγένεια, καινὸν ἐν δόμοις;

ΙΦ. ἀπέπτυσ᾽· ὁσίᾳ γὰρ δίδωμ᾽ ἔπος τόδε.
ΘΟ. τί φροιμιάζει νεοχμόν; ἐξαύδα σαφῶς.
ΙΦ. οὐ καθαρά μοι τὰ θύματ᾽ ἠγρεύσασθ᾽, ἄναξ.
ΘΟ. τί τοὐκδιδάξαν τοῦτό σ᾽; ἢ δόξαν λέγεις;
ΙΦ. βρέτας τὸ τῆς θεοῦ πάλιν ἕδρας ἀπεστράφη.
ΘΟ. αὐτόματον, ἤ νιν σεισμὸς ἔστρεψε χθονός;
ΙΦ. αὐτόματον· ὄψιν δ᾽ ὀμμάτων ξυνήρμοσεν.
ΘΟ. ἡ δ᾽ αἰτία τίς; ἢ τὸ τῶν ξένων μύσος;
ΙΦ. ἥδ᾽, οὐδὲν ἄλλο· δεινὰ γὰρ δεδράκατον.
ΘΟ. ἀλλ᾽ ἦ τιν᾽ ἔκανον βαρβάρων ἀκτῆς ἔπι;
ΙΦ. οἰκεῖον ἦλθον τὸν φόνον κεκτημένοι.
ΘΟ. τίν᾽; εἰς ἔρον γὰρ τοῦ μαθεῖν πεπτώκαμεν.
ΙΦ. μητέρα κατειργάσαντο κοινωνῷ ξίφει.
ΘΟ. Ἄπολλον, οὐδ᾽ ἐν βαρβάροις γ᾽ ἔτλη τις ἄν.
ΙΦ. πάσης διωγμοῖς ἠλάθησαν Ἑλλάδος.
ΘΟ. ἦ τῶνδ᾽ ἕκατι δῆτ᾽ ἄγαλμ᾽ ἔξω φέρεις;
ΙΦ. σεμνόν γ᾽ ὑπ᾽ αἰθέρ᾽, ὡς μεταστήσω φόνου.
ΘΟ. μίασμα δ᾽ ἔγνως τοῖν ξένοιν ποίῳ τρόπῳ;
ΙΦ. ἤλεγχον, ὡς θεᾶς βρέτας ἀπεστράφη πάλιν.
ΘΟ. σοφήν σ᾽ ἔθρεψεν Ἑλλάς, ὡς ᾔσθου καλῶς.
ΙΦ. καὶ νῦν καθεῖσαν δέλεαρ ἡδύ μοι φρενῶν.
ΘΟ. τῶν Ἀργόθεν τι φίλτρον ἀγγέλλοντέ σοι;
ΙΦ. τὸν μόνον Ὀρέστην ἐμὸν ἀδελφὸν εὐτυχεῖν.
ΘΟ. ὡς δή σφε σώσαις ἡδοναῖς ἀγγελμάτων;
ΙΦ. καὶ πατέρα γε ζῆν καὶ καλῶς πράσσειν ἐμόν.
ΘΟ. σὺ δ᾽ εἰς τὸ τῆς θεοῦ γ᾽ ἐξένευσας εἰκότως.
ΙΦ. πᾶσάν γε μισοῦσ᾽ Ἑλλάδ᾽, ἥ μ᾽ ἀπώλεσεν.
ΘΟ. τί δῆτα δρῶμεν, φράζε, τοῖν ξένοιν πέρι;
ΙΦ. τὸν νόμον ἀνάγκη τὸν προκείμενον σέβειν.
ΘΟ. οὔκουν ἐν ἔργῳ χέρνιβες ξίφος τε σόν;
ΙΦ. ἁγνοῖς καθαρμοῖς πρῶτά νιν νίψαι θέλω.
ΘΟ. πηγαῖσιν ὑδάτων ἢ θαλασσίᾳ δρόσῳ;

ΙΦ. θάλασσα κλύζει πάντα τἀνθρώπων κακά.
ΘΟ. ὁσιώτερον γοῦν τῇ θεῷ πέσοιεν ἄν.
ΙΦ. καὶ τἀμά γ᾽ οὕτω μᾶλλον ἂν καλῶς ἔχοι.
ΘΟ. οὔκουν πρὸς αὐτὸν ναὸν ἐκπίπτει κλύδων;
ΙΦ. ἐρημίας δεῖ· καὶ γὰρ ἄλλα δράσομεν.
ΘΟ. ἄγ᾽ ἔνθα χρῄζεις· οὐ φιλῶ τἄρρηθ᾽ ὁρᾶν.
ΙΦ. ἁγνιστέον μοι καὶ τὸ τῆς θεοῦ βρέτας.
ΘΟ. εἴπερ γε κηλὶς ἔβαλέ νιν μητροκτόνος.
ΙΦ. οὐ γάρ ποτ᾽ ἄν νιν ἠράμην βάθρων ἄπο.
ΘΟ. δίκαιος ηὑσέβεια καὶ προμηθία.
ΙΦ. οἶσθά νυν ἅ μοι γενέσθω; ΘΟ. σὸν τὸ σημαίνειν τόδε.
ΙΦ. δεσμὰ τοῖς ξένοισι πρόσθες. ΘΟ. ποῖ δέ σ᾽ ἐκφύγοιεν ἄν;
ΙΦ. πιστὸν Ἑλλὰς οἶδεν οὐδέν. ΘΟ. ἴτ᾽ ἐπὶ δεσμά, πρόσπολοι.
ΙΦ. κἀκκομιζόντων δὲ δεῦρο τοὺς ξένους, ΘΟ. ἔσται τάδε.
ΙΦ. κρᾶτα κρύψαντες πέπλοισιν. ΘΟ. ἡλίου πρόσθεν φλογός.
ΙΦ. σῶν τέ μοι σύμπεμπ᾽ ὀπαδῶν. ΘΟ. οἵδ᾽ ὁμαρτήσουσί σοι.
ΙΦ. καὶ πόλει πέμψον τιν᾽ ὅστις σημανεῖ ΘΟ. ποίας τύχας;
ΙΦ. ἐν δόμοις μίμνειν ἅπαντας. ΘΟ. μὴ συναντῷεν φόνῳ;
ΙΦ. μυσαρὰ γὰρ τὰ τοιάδ᾽ ἐστί. ΘΟ. στεῖχε καὶ σήμαινε σύ.
ΙΦ. καὶ φίλων γ᾽ οὐ δεῖ μάλιστα ΘΟ. τοῦτ᾽ ἔλεξας εἰς ἐμέ.
ΙΦ. μηδέν᾽ εἰς ὄψιν πελάζειν. ΘΟ. εὖ γε κηδεύεις πόλιν.

ΙΦ. σὺ δὲ μένων αὐτοῦ πρὸ ναῶν τῇ θεῷ ΘΟ. τί χρῆμα δρῶ;
ΙΦ. ἅγνισον πυρσῷ μέλαθρον. ΘΟ. καθαρὸν ὡς μόλῃς πάλιν;
ΙΦ. ἡνίκ' ἂν δ' ἔξω περῶσιν οἱ ξένοι, ΘΟ. τί χρή με δρᾶν;
ΙΦ. πέπλον ὀμμάτων προθέσθαι. ΘΟ. μὴ παλαμναῖον λάβω;
ΙΦ. ἢν δ' ἄγαν δοκῶ χρονίζειν, ΘΟ. τοῦδ' ὅρος τίς ἐστί μοι;
ΙΦ. θαυμάσῃς μηδέν. ΘΟ. τὰ τῆς θεοῦ πρᾶσσ' ἐπὶ σχολῆς καλῶς.
ΙΦ. εἰ γὰρ ὡς θέλω καθαρμὸς ὅδε πέσοι. ΘΟ. συνεύχομαι.
ΙΦ. τούσδ' ἄρ' ἐκβαίνοντας ἤδη δωμάτων ὁρῶ ξένους
καὶ θεᾶς κόσμους νεογνούς τ' ἄρνας, ὡς φόνῳ φόνον
μυσαρὸν ἐκνίψω, σέλας τε λαμπάδων τά τ' ἄλλ' ὅσα
προυθέμην ἐγὼ ξένοισι καὶ θεᾷ καθάρσια.
ἐκποδὼν δ' αὐδῶ πολίταις τοῦδ' ἔχειν μιάσματος,
εἴ τις ἢ ναῶν πυλωρὸς χεῖρας ἁγνεύει θεοῖς
ἢ γάμον στείχει συνάψων ἢ τόκοις βαρύνεται.
φεύγετ' ἐξίστασθε, μή τῳ προσπέσῃ μύσος τόδε.
ὦ Διὸς Λητοῦς τ' ἄνασσα παρθέν', ἢν νίψω φόνον
τῶνδε καὶ θύσωμεν οὗ χρή, καθαρὸν οἰκήσεις δόμον,
εὐτυχεῖς δ' ἡμεῖς ἐσόμεθα. τἄλλα δ' οὐ λέγουσ' ὅμως

ὡς εἰκότως σε πᾶσα θαυμάζει πόλις. 1214

τοῖς τὰ πλείον᾽ εἰδόσιν θεοῖς σοί τε σημαίνω,
θεά.

ΧΟ. εὔπαις ὁ Λατοῦς γόνος, στρ.
τόν ποτε Δηλιάσιν
καρποφόροις γυάλοις
* * * χρυσοκόμαν
ἐν κιθάρᾳ σοφόν, ἅ τ᾽ ἐπὶ τόξων
εὐστοχίᾳ γάνυται, φέρεν ἶνιν
ἀπὸ δειράδος εἰναλίας,
λοχεῖα κλεινὰ λιποῦσ᾽
ἀστάκτων μάτηρ ὑδάτων,
τὰν βακχεύουσαν Διονύσῳ
Παρνάσιον κορυφάν,
ὅθι ποικιλόνωτος οἰνωπὸς δράκων
σκιερᾷ κατάχαλκος εὐφύλλῳ δάφνᾳ,
γᾶς πελώριον τέρας, ἄμφεπε
μαντεῖον χθόνιον.
ἔτι μιν ἔτι βρέφος, ἔτι φίλας
ἐπὶ ματέρος ἀγκάλαισι θρώσκων
ἔκανες, ὦ Φοῖβε, μαν-
τείων δ᾽ ἐπέβας ζαθέων,
τρίποδί τ᾽ ἐν χρυσέῳ
θάσσεις, ἐν ἀψευδεῖ θρόνῳ
μαντείας βροτοῖς
θεσφάτων νέμων
ἀδύτων ὕπο, Κασταλίας ῥεέθρων
γείτων, μέσον γᾶς ἔχων μέλαθρον.
Θέμιν δ᾽ ἐπεὶ γᾶς ἰὼν ἀντ.
παῖδ᾽ ἀπενάσσατο Λα-
τῷος ἀπὸ ζαθέων
χρηστηρίων, νύχια

1234 — 1258 = 1259 — 1283

χθὼν ἐτεκνώσατο φάσματ᾽ ὀνείρων,
οἳ πολέσιν μερόπων τά τε πρῶτα
τά τ᾽ ἔπειθ᾽ ἅ τ᾽ ἔμελλε τυχεῖν
ὕπνου κατὰ δνοφερὰς
εὐνὰς φράζον· Γαῖα δὲ τὰν
μαντείων ἀφείλετο τιμὰν
Φοῖβον φθόνῳ θυγατρός·
ταχύπους δ᾽ ἐς Ὄλυμπον ὁρμαθεὶς ἄναξ
χέρα παιδνὸν ἕλιξεν εἰς Δῖον θρόνον
Πυθίων δόμων χθονίας ἀφε-
λεῖν θεᾶς μῆνιν * *.
γέλασε δ᾽, ὅτι τέκος ἄφαρ ἔβα
πολύχρυσα θέλων λατρεύματα σχεῖν·
ἐπὶ δ᾽ ἔσεισεν κόμαν,
παῦσεν νυχίους ἐνοπάς,
ἀπὸ δὲ μαντοσύναν
νυκτωπὸν ἐξεῖλεν βροτῶν,
καὶ τιμὰς πάλιν
θῆκε Λοξίᾳ,
πολυάνορι δ᾽ ἐν ξενόεντι θρόνῳ
θάρση βροτοῖς θεσφάτων ἀοιδαῖς.

ΑΓΓ. ὦ ναοφύλακες βώμιοί τ᾽ ἐπιστάται,
Θόας ἄναξ γῆς τῆσδε ποῦ κυρεῖ βεβώς;
καλεῖτ᾽ ἀναπτύξαντες εὐγόμφους πύλας
ἔξω μελάθρων τῶνδε κοίρανον χθονός.

ΧΟ. τί δ᾽ ἔστιν, εἰ χρὴ μὴ κελευσθεῖσαν λέγειν;

ΑΓΓ. βεβᾶσι φροῦδοι δίπτυχοι νεανίαι
Ἀγαμεμνονείας παιδὸς ἐκ βουλευμάτων
φυγόντες ἐκ γῆς τῆσδε καὶ σεμνὸν βρέτας
λαβόντες ἐν κόλποισιν Ἑλλάδος νεώς.

ΧΟ. ἄπιστον εἶπας μῦθον· ὃν δ᾽ ἰδεῖν θέλεις
ἄνακτα χώρας, φροῦδος ἐκ ναοῦ συθείς.

ποῖ; δεῖ γὰρ αὐτὸν εἰδέναι τὰ δρώμενα.
οὐκ ἴσμεν· ἀλλὰ στεῖχε καὶ δίωκέ νιν
ὅπου κυρήσας τούσδ᾽ ἀπαγγελεῖς λόγους.
ὁρᾶτ᾽, ἄπιστον ὡς γυναικεῖον γένος,
μέτεστί θ᾽ ὑμῖν τῶν πεπραγμένων μέρος.
μαίνει; τί δ᾽ ἡμῖν τῶν ξένων δρασμοῦ μέτα;
οὐκ εἶ κρατούντων πρὸς πύλας ὅσον τάχος;
οὐ πρίν γ᾽ ἂν εἴπῃ τοὔπος ἑρμηνεὺς τόδε,
εἴτ᾽ ἔνδον εἴτ᾽ οὐκ ἔνδον ἀρχηγὸς χθονός.
ὠὴ χαλᾶτε κλῇθρα, τοῖς ἔνδον λέγω,
καὶ δεσπότῃ σημήναθ᾽ οὕνεκ᾽ ἐν πύλαις
πάρειμι, καινῶν φόρτον ἀγγέλλων κακῶν.
τίς ἀμφὶ δῶμα θεᾶς τόδ᾽ ἵστησιν βοήν,
πύλας ἀράξας καὶ ψόφον πέμψας ἔσω;
ψευδῶς ἔλεγον αἵδε καί μ᾽ ἀπήλαυνον δόμων,
ὡς ἐκτὸς εἴης· σὺ δὲ κατ᾽ οἶκον ἦσθ᾽ ἄρα.
τί προσδοκῶσαι κέρδος ἢ θηρώμεναι;
αὖθις τὰ τῶνδε σημανῶ· τὰ δ᾽ ἐν ποσὶ
παρόντ᾽ ἄκουσον. ἡ νεᾶνις ἢ ᾽νθάδε
βωμοῖς παρίστατ᾽, Ἰφιγένει᾽, ἔξω χθονὸς
σὺν τοῖς ξένοισιν οἴχεται, σεμνὸν θεᾶς
ἄγαλμ᾽ ἔχουσα· δόλια δ᾽ ἦν καθάρματα.
πῶς φῄς; τί πνεῦμα συμφορᾶς κεκτημένη;
σῴζουσ᾽ Ὀρέστην· τοῦτο γὰρ σὺ θαυμάσει.
τὸν ποῖον; ἆρ᾽ ὃν Τυνδαρὶς τίκτει κόρη;
ὃν τοῖσδε βωμοῖς θεὰ καθωσιώσατο.
ὦ θαῦμα, πῶς σε μεῖζον ὀνομάσας τύχω;
μὴ ᾽νταῦθα τρέψῃς σὴν φρέν᾽, ἀλλ᾽ ἄκουέ μου·
σαφῶς δ᾽ ἀθρήσας καὶ κλύων ἐκφρόντισον
διωγμὸς ὅστις τοὺς ξένους θηράσεται.
λέγ᾽· εὖ γὰρ εἶπας· οὐ γὰρ ἀγχίπλουν πόρον
φεύγουσιν, ὥστε διαφυγεῖν τοὐμὸν δόρυ.

ΑΓΓ. ἐπεὶ πρὸς ἀκτὰς ἤλθομεν θαλασσίας,
οὗ ναῦς Ὀρέστου κρύφιος ἦν ὡρμισμένη,
ἡμᾶς μέν, οὓς σὺ δεσμὰ συμπέμπεις ξένων
ἔχοντας, ἐξένευσ᾽ ἀποστῆναι πρόσω
Ἀγαμέμνονος παῖς, ὡς ἀπόρρητον φλόγα
θύουσα καὶ καθαρμὸν ὃν μετῴχετο.
αὐτὴ δ᾽ ὄπισθε δέσμ᾽ ἔχουσα τοῖν ξένοιν
ἔστειχε χερσί. καὶ τάδ᾽ ἦν ὕποπτά μοι,
ἤρεσκε μέντοι σοῖσι προσπόλοις, ἄναξ.
χρόνῳ δ᾽, ἵν᾽ ἡμῖν δρᾶν τι δὴ δοκοῖ πλέον,
ἀνωλόλυξε καὶ κατῆδε βάρβαρα
μέλη μαγεύουσ᾽, ὡς φόνον νίζουσα δή.
ἐπεὶ δὲ δαρὸν ἦμεν ἥμενοι χρόνον,
ἐσῆλθεν ἡμᾶς μὴ λυθέντες οἱ ξένοι
κτάνοιεν αὐτὴν δραπέται τ᾽ οἰχοίατο.
φόβῳ δ᾽ ἃ μὴ χρῆν εἰσορᾶν καθήμεθα
σιγῇ, τέλος δὲ πᾶσιν ἦν αὑτὸς λόγος,
στείχειν ἵν᾽ ἦσαν, καίπερ οὐκ ἐωμένοις.
κἀνταῦθ᾽ ὁρῶμεν Ἑλλάδος νεὼς σκάφος
ταρσῷ κατήρει πίτυλον ἐπτερωμένον,
ναύτας τε πεντήκοντ᾽ ἐπὶ σκαλμῶν πλάτας
ἔχοντας, ἐκ δεσμῶν δὲ τοὺς νεανίας
ἐλευθέρους πρύμνηθεν ἑστῶτας νεώς.
κοντοῖς δὲ πρῷραν εἶχον, οἱ δ᾽ ἐπωτίδων
ἄγκυραν ἐξανῆπτον, οἱ δὲ κλίμακας
σπεύδοντες ἦγον διὰ χερῶν πρυμνήσια,
πόντῳ δὲ δόντες τοῖν ξένοιν καθίεσαν.
ἡμεῖς δ᾽ ἀφειδήσαντες, ὡς ἐσείδομεν
δόλια τεχνήματ᾽, εἰχόμεσθα τῆς ξένης
πρυμνησίων τε, καὶ δι᾽ εὐθυντηρίας
οἴακας ἐξῃροῦμεν εὐπρύμνου νεώς.
λόγοι δ᾽ ἐχώρουν· τίνι λόγῳ πορθμεύετε

κλέπτοντες ἐκ γῆς ξόανα καὶ θυηπόλους;
τίνος τίς ὢν σὺ τήνδ᾽ ἀπεμπολᾷς χθονός;
ὁ δ᾽ εἶπ᾽· Ὀρέστης τῆσδ᾽ ὅμαιμος, ὡς μάθῃς,
Ἀγαμέμνονος παῖς, τήνδ᾽ ἐμὴν κομίζομαι
λαβὼν ἀδελφήν, ἣν ἀπώλεσ᾽ ἐκ δόμων.
ἀλλ᾽ οὐδὲν ἧσσον εἰχόμεσθα τῆς ξένης
[καὶ πρὸς σ᾽ ἕπεσθαι διεβιαζόμεσθά νιν],
ὅθεν τὰ δεινὰ πλήγματ᾽ ἦν γενειάδων.
κεῖνοί τε γὰρ σίδηρον οὐκ εἶχον χεροῖν
ἡμεῖς τε· πυγμαὶ δ᾽ ἦσαν ἐγκροτούμεναι,
καὶ κῶλ᾽ ἀπ᾽ ἀμφοῖν τοῖν νεανίαιν ἅμα
εἰς πλευρὰ καὶ πρὸς ἧπαρ ἠκοντίζετο,
ὥστε ξυνάπτειν καὶ συναποκαμεῖν μέλη.
δεινοῖς δὲ σημάντροισιν ἐσφραγισμένοι
ἐφεύγομεν πρὸς κρημνόν, οἱ μὲν ἐν κάρᾳ
κάθαιμ᾽ ἔχοντες τραύμαθ᾽, οἱ δ᾽ ἐν ὄμμασιν·
ὄχθοις δ᾽ ἐπισταθέντες εὐλαβεστέρως
ἐμαρνάμεσθα καὶ πέτρους ἐβάλλομεν.
ἀλλ᾽ εἶργον ἡμᾶς τοξόται πρύμνης ἔπι
σταθέντες ἰοῖς, ὥστ᾽ ἀναστεῖλαι πρόσω.
κἀν τῷδε, δεινὸς γὰρ κλύδων ὤκειλε ναῦν
πρὸς γῆν, φόβος δ᾽ ἦν ὥστε μὴ τέγξαι πόδα,
λαβὼν Ὀρέστης ὦμον εἰς ἀριστερόν,
βὰς εἰς θάλασσαν κἀπὶ κλίμακος θορών,
ἔθηκ᾽ ἀδελφὴν ἐντὸς εὐσέλμου νεώς,
τό τ᾽ οὐρανοῦ πέσημα, τῆς Διὸς κόρης
ἄγαλμα. ναὸς δ᾽ ἐκ μέσης ἐφθέγξατο
βοή τις· ὦ γῆς Ἑλλάδος ναῦται νεώς,
λάβεσθε κώπαις τε ῥόθια λευκαίνετε·
ἔχομεν γὰρ ὧνπερ οὕνεκ᾽ ἄξενον πόρον
Συμπληγάδων ἔσωθεν εἰσεπλεύσαμεν.
οἱ δὲ στεναγμὸν ἡδὺν ἐκβρυχώμενοι

ἔπαισαν ἅλμην. ναῦς δ᾽, ἕως μὲν ἐντὸς ἦν
λιμένος, ἐχώρει· στόμια διαπερῶσα δὲ
λάβρῳ κλύδωνι συμπεσοῦσ᾽ ἠπείγετο·
δεινὸς γὰρ ἐλθὼν ἄνεμος ἐξαίφνης νεὼς
ὤθει παλιμπρυμνηδόν· οἱ δ᾽ ἐκαρτέρουν
πρὸς κέντρα λακτίζοντες· εἰς γῆν δ᾽ αὖ πάλιν
κλύδων παλίρρους ἦγε ναῦν. σταθεῖσα δὲ
Ἀγαμέμνονος παῖς εὔξατ᾽· ὦ Λητοῦς κόρη,
σῶσόν με τὴν σὴν ἱερίαν πρὸς Ἑλλάδα
ἐκ βαρβάρου γῆς καὶ κλοπαῖς σύγγνωθ᾽ ἐμαῖς.
φιλεῖς δὲ καὶ σὺ σὸν κασίγνητον, θεά·
φιλεῖν δὲ κἀμὲ τοὺς ὁμαίμονας δόκει.
ναῦται δ᾽ ἐπευφήμησαν εὐχαῖσιν κόρης
παιᾶνα, γυμνὰς ἐκβαλόντες ὠλένας
κώπῃ προσαρμόσαντες ἐκ κελεύσματος.
μᾶλλον δὲ μᾶλλον πρὸς πέτρας ᾔει σκάφος·
χὠ μέν τις εἰς θάλασσαν ὡρμήθη ποσίν,
ἄλλος δὲ πλεκτὰς ἐξανῆπτεν ἀγκύλας.
κἀγὼ μὲν εὐθὺς πρὸς σὲ δεῦρ᾽ ἀπεστάλην,
σοὶ τὰς ἐκεῖθεν σημανῶν, ἄναξ, τύχας.
ἀλλ᾽ ἕρπε, δεσμὰ καὶ βρόχους λαβὼν χεροῖν·
εἰ μὴ γὰρ οἶδμα νήνεμον γενήσεται,
οὐκ ἔστιν ἐλπὶς τοῖς ξένοις σωτηρίας.
πόντου δ᾽ ἀνάκτωρ Ἴλιόν τ᾽ ἐπισκοπεῖ
σεμνὸς Ποσειδῶν, Πελοπίδαις δ᾽ ἐναντίος.
καὶ νῦν παρέξει τὸν Ἀγαμέμνονος γόνον
σοὶ καὶ πολίταις, ὡς ἔοικεν, ἐν χεροῖν
λαβεῖν τ᾽ ἀδελφήν, ἣ φόνον τὸν Αὐλίδι
ἀμνημόνευτον θεᾷ προδοῦσ᾽ ἁλίσκεται.

ΧΟ. ὦ τλῆμον Ἰφιγένεια, συγγόνου μέτα
θανεῖ πάλιν μολοῦσα δεσποτῶν χέρας.

ΘΟ. ὦ πάντες ἀστοὶ τῆσδε βαρβάρου χθονός,
οὐκ εἶα πώλοις ἐμβαλόντες ἡνίας
παράκτιοι δραμεῖσθε κἀκβολὰς νεὼς
Ἑλληνίδος δέξεσθε, σὺν δὲ τῇ θεῷ
σπεύδοντες ἄνδρας δυσσεβεῖς θηράσετε;
οἱ δ᾽ ὠκυπομποὺς ἕλξετ᾽ εἰς πόντον πλάτας;
ὡς ἐκ θαλάσσης ἔκ τε γῆς ἱππεύμασι
λαβόντες αὐτοὺς ἢ κατὰ στύφλου πέτρας

ῥίψωμεν, ἢ σκόλοψι πήξωμεν δέμας.
ὑμᾶς δὲ τὰς τῶνδ' ἵστορας βουλευμάτων
γυναῖκας αὖθις, ἡνίκ' ἂν σχολὴν λάβω,
ποινασόμεσθα· νῦν δὲ τὴν προκειμένην
σπουδὴν ἔχοντες οὐ μενοῦμεν ἥσυχοι.

ΑΘ. ποῖ ποῖ διωγμὸν τόνδε πορθμεύεις, ἄναξ
Θόας; ἄκουσον τῆσδ' Ἀθηναίας λόγους.
παῦσαι διώκων ῥεῦμά τ' ἐξορμῶν στρατοῦ·
πεπρωμένος γὰρ θεσφάτοισι Λοξίου
δεῦρ' ἦλθ' Ὀρέστης, τόν τ' Ἐρινύων χόλον
φεύγων ἀδελφῆς τ' Ἄργος εἰσπέμψων δέμας
ἄγαλμά θ' ἱερὸν εἰς ἐμὴν ἄξων χθόνα,
τῶν νῦν παρόντων πημάτων ἀναψυχάς.
πρὸς μὲν σ' ὅδ' ἡμῖν μῦθος· ὃν δ' ἀποκτενεῖν
δοκεῖς Ὀρέστην ποντίῳ λαβὼν σάλῳ,
ἤδη Ποσειδῶν χάριν ἐμὴν ἀκύμονα
πόντου τίθησι νῶτα πορθμεύων πλάτῃ.
μαθὼν δ', Ὀρέστα, τὰς ἐμὰς ἐπιστολάς,
κλύεις γὰρ αὐδὴν καίπερ οὐ παρὼν θεᾶς,
χώρει λαβὼν ἄγαλμα σύγγονόν τε σήν.
ὅταν δ' Ἀθήνας τὰς θεοδμήτους μόλῃς,
χῶρός τίς ἐστιν Ἀτθίδος πρὸς ἐσχάτοις
ὅροισι, γείτων δειράδος Καρυστίας,
ἱερός, Ἁλάς νιν οὑμὸς ὀνομάζει λεώς·
ἐνταῦθα τεύξας ναὸν ἵδρυσαι βρέτας,
ἐπώνυμον γῆς Ταυρικῆς πόνων τε σῶν,
οὓς ἐξεμόχθεις περιπολῶν καθ' Ἑλλάδα
οἴστροις Ἐρινύων. Ἄρτεμιν δέ νιν βροτοὶ
τὸ λοιπὸν ὑμνήσουσι Ταυροπόλον θεάν.
νόμον τε θὲς τόνδ'· ὅταν ἑορτάζῃ λεώς,
τῆς σῆς σφαγῆς ἄποιν' ἐπισχέτω ξίφος
δέρῃ πρὸς ἀνδρὸς αἷμά τ' ἐξανιέτω,
ὁσίας ἕκατι θεά θ' ὅπως τιμὰς ἔχῃ.
σὲ δ' ἀμφὶ σεμνάς, Ἰφιγένεια, κλίμακας
Βραυρωνίας δεῖ τῆσδε κληδουχεῖν θεᾶς·
οὗ καὶ τεθάψει κατθανοῦσα, καὶ πέπλων
ἄγαλμα σοι θήσουσιν εὐπήνους ὑφάς,
ἃς ἂν γυναῖκες ἐν τόκοις ψυχορραγεῖς
λείπωσ' ἐν οἴκοις. τάσδε δ' ἐκπέμπειν χθονὸς

Ἑλληνίδας γυναῖκας ἐξεφίεμαι
γνώμης δικαίας οὕνεκ᾽. ἐξέσωσά σε
καὶ πρίν γ᾽ Ἀρείοις ἐν πάγοις ψήφους ἴσας
κρίνασ᾽, Ὀρέστα· καὶ νόμισμ᾽ ἔστω τόδε,
νικᾶν ἰσήρεις ὅστις ἂν ψήφους λάβῃ.
ἀλλ᾽ ἐκκομίζου σὴν κασιγνήτην χθονός,
Ἀγαμέμνονος παῖ, καὶ σὺ μὴ θυμοῦ, Θόας.

ΘΟ. ἄνασσ᾽ Ἀθάνα, τοῖσι τῶν θεῶν λόγοις
ὅστις κλύων ἄπιστος, οὐκ ὀρθῶς φρονεῖ.
ἐγὼ δ᾽ Ὀρέστῃ τ᾽, εἰ φέρων βρέτας θεᾶς
βέβηκ᾽, ἀδελφῇ τ᾽ οὐχὶ θυμοῦμαι· τί γὰρ
πρὸς τοὺς σθένοντας θεοὺς ἁμιλλᾶσθαι καλόν;
ἴτωσαν εἰς σὴν σὺν θεᾶς ἀγάλματι
γαῖαν, καθιδρύσαιντό τ᾽ εὐτυχῶς βρέτας.
πέμψω δὲ καὶ τάσδ᾽ Ἑλλάδ᾽ εἰς εὐδαίμονα
γυναῖκας, ὥσπερ σὸν κέλευσμ᾽ ἐφίεται.
παύσω δὲ λόγχην ἣν ἐπαίρομαι ξένοις
νεῶν τ᾽ ἐρετμά, σοὶ τάδ᾽ ὡς δοκεῖ, θεά.

ΑΘ. [αἰνῶ· τὸ γὰρ χρεὼν σοῦ τε καὶ θεῶν κρατεῖ.]
ἴτ᾽ ὦ πνοαί, ναυσθλοῦσθε τὸν Ἀγαμέμνονος
παῖδ᾽ εἰς Ἀθήνας· συμπορεύσομαι δ᾽ ἐγώ,
σῴζουσ᾽ ἀδελφῆς τῆς ἐμῆς σεμνὸν βρέτας.

ΧΟ. ἴτ᾽ ἐπ᾽ εὐτυχίᾳ τῆς σῳζομένης
μοίρας εὐδαίμονες ὄντες.
ἀλλ᾽ ὦ σεμνὴ παρά τ᾽ ἀθανάτοις
καὶ παρὰ θνητοῖς, Παλλὰς Ἀθάνα,
δράσομεν οὕτως ὡς σὺ κελεύεις.
μάλα γὰρ τερπνὴν κἀνέλπιστον
φήμην ἀκοαῖσι δέδεγμαι.
[ὦ μέγα σεμνὴ Νίκη, τὸν ἐμὸν
βίοτον κατέχοις
καὶ μὴ λήγοις στεφανοῦσα.]

ΙΩΝ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΕΡΜΗΣ.
ΙΩΝ.
ΧΟΡΟΣ ΘΕΡΑΠΑΙΝΙΔΩΝ ΚΡΕΟΥΣΗΣ
ΚΡΕΟΥΣΑ.
ΞΟΥΘΟΣ.
ΠΡΕΣΒΥΤΗΣ ἢ ΠΑΙΔΑΓΩΓΟΣ.
ΘΕΡΑΠΩΝ ΚΡΕΟΥΣΗΣ.
ΠΥΘΙΑ ἤτοι ΠΡΟΦΗΤΙΣ.
ΑΘΗΝΑ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ.

Κρέουσαν τὴν Ἐρεχθέως Ἀπόλλων φθείρας ἔγκυον ἐποίησεν ἐν Ἀθήναις· ἡ δὲ τὸ γεννηθὲν ὑπὸ τὴν ἀκρόπολιν ἐξέθηκε, τὸν αὐτὸν τόπον καὶ τοῦ ἀδικήματος καὶ τῆς λοχείας μάρτυρα λαβοῦσα. τὸ μὲν οὖν βρέφος Ἑρμῆς ἀνελόμενος εἰς Δελφοὺς ἤνεγκεν· εὑροῦσα δ' ἡ προφῆτις ἀνέθρεψε. τὴν Κρέουσαν δὲ Ξοῦθος ἔγημε· συμμαχήσας γὰρ Ἀθηναίοις τὴν βασιλείαν καὶ τὸν τῆς προειρημένης γάμον ἔλαβε δῶρον. τούτῳ μὲν οὖν ἄλλος παῖς οὐκ ἐγένετο· τὸν δ' ἐκτραφέντα ὑπὸ τῆς προφήτιδος οἱ Δελφοὶ νεωκόρον ἐποίησαν. ὁ δὲ ἀγνοῶν ἐδούλευσε τῷ πατρί.

Ἡ σκηνὴ τοῦ δράματος ὑπόκειται ἐν Δελφοῖς.

ΕΥΡΙΠΙΔΟΥ

ΙΩΝ.

ΕΡ. Ἄτλας, ὁ χαλκέοισι νώτοις οὐρανὸν
θεῶν παλαιὸν οἶκον ἐκτρίβων, θεῶν
μιᾶς ἔφυσε Μαῖαν, ἣ 'μ' ἐγείνατο
Ἑρμῆν μεγίστῳ Ζηνί, δαιμόνων λάτριν.
ἥκω δὲ Δελφῶν τήνδε γῆν, ἵν' ὀμφαλὸν
μέσον καθίζων Φοῖβος ὑμνῳδεῖ βροτοῖς
τά τ' ὄντα καὶ μέλλοντα θεσπίζων ἀεί.
ἔστιν γὰρ οὐκ ἄσημος Ἑλλήνων πόλις,
τῆς χρυσολόγχου Παλλάδος κεκλημένη,
οὗ παῖδ' Ἐρεχθέως Φοῖβος ἔζευξεν γάμοις
βίᾳ Κρέουσαν, ἔνθα προσβόρρους πέτρας
Παλλάδος ὑπ' ὄχθῳ τῆς Ἀθηναίων χθονὸς
Μακρὰς καλοῦσι γῆς ἄνακτες Ἀτθίδος.
ἀγνὼς δὲ πατρί, τῷ θεῷ γὰρ ἦν φίλον,
γαστρὸς διήνεγκ' ὄγκον· ὡς δ' ἦλθεν χρόνος,
τεκοῦσ' ἐν οἴκοις παῖδ' ἀπήνεγκεν βρέφος
εἰς ταὐτὸν ἄντρον οὗπερ ηὐνάσθη θεῷ
Κρέουσα, κἀκτίθησιν ὡς θανούμενον
κοίλης ἐν ἀντίπηγος εὐτρόχῳ κύκλῳ,
προγόνων νόμον σῴζουσα τοῦ τε γηγενοῦς
Ἐριχθονίου· κείνῳ γὰρ ἡ Διὸς κόρη
φρουρὼ παραζεύξασα φύλακε σώματος

δισσὼ δράκοντε, παρθένοις Ἀγραυλίσι
δίδωσι σώζειν· ὅθεν Ἐρεχθείδαις ἔτι
νόμος τις ἔστιν ὄφεσιν ἐν χρυσηλάτοις
τρέφειν τέκν᾿. ἀλλ᾿ ἣν εἶχε παρθένος χλιδὴν
τέκνῳ προσάψασ᾿ ἔλιπεν, ὡς θανουμένῳ.
καί μ᾿ ὢν ἀδελφὸς Φοῖβος αἰτεῖται τάδε·
ὦ σύγγον᾿, ἐλθὼν λαὸν εἰς αὐτόχθονα
κλεινῶν Ἀθηνῶν, οἶσθα γὰρ θεᾶς πόλιν,
λαβὼν βρέφος νεογνὸν ἐκ κοίλης πέτρας
αὐτῷ σὺν ἄγγει σπαργάνοισί θ᾿ οἷς ἔχει
ἔνεγκε Δελφῶν τἀμὰ πρὸς χρηστήρια
καὶ θὲς πρὸς αὐταῖς εἰσόδοις δόμων ἐμῶν.
τὰ δ᾿ ἄλλ᾿, ἐμὸς γάρ ἐστιν, ὡς εἰδῇς, ὁ παῖς,
ἡμῖν μελήσει. Λοξίᾳ δ᾿ ἐγὼ χάριν
πράσσων ἀδελφῷ πλεκτὸν ἐξάρας κύτος
ἤνεγκα καὶ τὸν παῖδα κρηπίδων ἔπι
τίθημι ναοῦ τοῦδ᾿, ἀναπτύξας κύτος
ἑλικτὸν ἀντίπηγος, ὡς ὁρῷθ᾿ ὁ παῖς.
κυρεῖ δ᾿ ἅμ᾿ ἱππεύοντος ἡλίου κύκλῳ
προφῆτις εἰσβαίνουσα μαντεῖον θεοῦ·
ὄψιν δὲ προσβαλοῦσα παιδὶ νηπίῳ
ἐθαύμασ᾿ εἴ τις Δελφίδων τλαίη κόρη
λαθραῖον ὠδῖν᾿ εἰς θεοῦ ῥῖψαι δόμον,
ὑπὲρ δὲ θυμέλας διορίσαι πρόθυμος ἦν·
οἴκτῳ δ᾿ ἀφῆκεν ὠμότητα, καὶ θεὸς
συνεργὸς ἦν τῷ παιδὶ μὴ ᾿κπεσεῖν δόμων.
τρέφει δέ νιν λαβοῦσα· τὸν σπείραντα δὲ
οὐκ οἶδε Φοῖβον οὐδὲ μητέρ᾿ ἧς ἔφυ,
ὁ παῖς τε τοὺς τεκόντας οὐκ ἐπίσταται.
νέος μὲν οὖν ὢν ἀμφιβωμίους τροφὰς
ἠλᾶτ᾿ ἀθύρων· ὡς δ᾿ ἀπηνδρώθη δέμας,
Δελφοί σφ᾿ ἔθεντο χρυσοφύλακα τοῦ θεοῦ

ταμίαν τε πάντων πιστόν, ἐν δ' ἀνακτόροις
θεοῦ καταξῇ δεῦρ' ἀεὶ σεμνὸν βίον.
Κρέουσα δ' ἡ τεκοῦσα τὸν νεανίαν
Ξούθῳ γαμεῖται συμφορᾶς τοιᾶσδ' ὕπο.
ἦν ταῖς Ἀθήναις τοῖς τε Χαλκωδοντίδαις,
οἳ γῆν ἔχουσ' Εὐβοΐδα, πολέμιος κλύδων·
ὃν συμπονήσας καὶ ξυνεξελὼν δορὶ
γάμων Κρεούσης ἀξίωμ' ἐδέξατο,
οὐκ ἐγγενὴς ὤν, Αἰόλου δὲ τοῦ Διὸς
γεγὼς Ἀχαιός· χρόνια δὲ σπείρας λέχη
ἄτεκνός ἐστι, καὶ Κρέουσ'· ὧν οὕνεκα
ἥκουσι πρὸς μαντεῖ' Ἀπόλλωνος τάδε,
ἔρωτι παίδων. Λοξίας δὲ τὴν τύχην
εἰς τοῦτ' ἐλαύνει, κοὐ λέληθεν, ὡς δοκεῖ.
δώσει γὰρ εἰσελθόντι μαντεῖον τόδε
Ξούθῳ τὸν αὑτοῦ παῖδα, καὶ πεφυκέναι
κείνου σφε φήσει, μητρὸς ὡς ἐλθὼν δόμους
γνωσθῇ Κρεούσῃ, καὶ γάμοι τε Λοξίου
κρυπτοὶ γένωνται παῖς τ' ἔχῃ τὰ πρόσφορα.
Ἴωνα δ' αὐτόν, κτίστορ' Ἀσιάδος χθονός,
ὄνομα κεκλῆσθαι θήσεται καθ' Ἑλλάδα.
ἀλλ' εἰς δαφνώδη γύαλα βήσομαι τάδε,
τὸ κρανθὲν ὡς ἂν ἐκμάθω παιδὸς πέρι.
ὁρῶ γὰρ ἐκβαίνοντα Λοξίου γόνον
τόνδ', ὡς πρὸ ναοῦ λαμπρὰ θῇ πυλώματα
δάφνης κλάδοισιν. ὄνομα δ', οὗ μέλλει τυχεῖν,
Ἴων' ἐγώ σφε πρῶτος ὀνομάζω θεῶν.

ΙΩΝ. ἅρματα μὲν τάδε λαμπρὰ τεθρίππων
ἥλιος ἤδη κάμπτει κατὰ γῆν,
ἄστρα δὲ φεύγει πυρὶ τῷδ' αἰθέρος
εἰς νύχθ' ἱεράν,
Παρνησιάδες δ' ἄβατοι κορυφαὶ

καταλαμπόμεναι τὴν ἡμερίαν
ἁψῖδα βροτοῖσι δέχονται.
σμύρνης δ' ἀνύδρου καπνὸς εἰς ὀρόφους
Φοίβου πέτεται.
θάσσει δὲ γυνὴ τρίποδα ζάθεον
Δελφίς, ἀείδουσ' Ἕλλησι βοάς,
ἃς ἂν Ἀπόλλων κελαδήσῃ.
ἀλλ' ὦ Φοίβου Δελφοὶ θέραπες,
τὰς Κασταλίας ἀργυροειδεῖς
βαίνετε δίνας, καθαραῖς δὲ δρόσοις
ἀφυδρανάμενοι στείχετε ναούς·
στόμα τ' εὔφημον φρουρεῖτ' ἀγαθόν,
φήμας τ' ἀγαθὰς
τοῖς ἐθέλουσιν μαντεύεσθαι
γλώσσης ἰδίας ἀποφαίνειν.
ἡμεῖς δὲ πόνους οὓς ἐκ παιδὸς
μοχθοῦμεν ἀεί, πτόρθοισι δάφνης
στέφεσίν θ' ἱεροῖς ἐσόδους Φοίβου
καθαρὰς θήσομεν ὑγραῖς τε πέδον
ῥανίσιν νοτερόν, πτηνῶν τ' ἀγέλας,
αἳ βλάπτουσιν σέμν' ἀναθήματα,
τόξοισιν ἐμοῖς φυγάδας θήσομεν·
ὡς γὰρ ἀμήτωρ ἀπάτωρ τε γεγὼς
τοὺς θρέψαντας
Φοίβου ναοὺς θεραπεύω.
ἄγ' ὦ νεηθαλὲς ὦ *στρ.*
καλλίστας προπόλευμα δάφνας,
ἃ τὰν Φοίβου θυμέλαν
σαίρεις ὑπὸ ναοῖς
κήπων ἐξ ἀθανάτων,
ἵνα δρόσοι τέγγουσ' ἱεραὶ

112—127 = 128—143

* τὰν ἀέναον παγὰν
ἐκπροϊεῖσαι,
μυρσίνας ἱερὰν φόβαν,
ᾇ σαίρω δάπεδον θεοῦ
παναμέριος ἅμ' ἀλίου
πτέρυγι θοᾷ
λατρεύων τὸ κατ' ἦμαρ.
ὦ Παιὰν ὦ Παιάν,
εὐαίων εὐαίων
εἴης, ὦ Λατοῦς παῖ.
καλόν γε τὸν πόνον, ὦ ἀντ.
Φοῖβε, σοὶ πρὸ δόμων λατρεύω
τιμῶν μαντεῖον ἕδραν·
κλεινὸς δ' ὁ πόνος μοι
θεοῖσιν δούλαν χέρ' ἔχειν,
οὐ θνατοῖς ἀλλ' ἀθανάτοις·
εὐφάμους δὲ πόνους μοχθεῖν
οὐκ ἀποκάμνω.
Φοῖβός μοι γενέτωρ πατήρ·
τὸν βόσκοντα γὰρ εὐλογῶ,
τὸ δ' ὠφέλιμον ἐμοὶ πατέρος
ὄνομα λέγω,
Φοῖβον τὸν κατὰ ναόν.
ὦ Παιὰν ὦ Παιάν,
εὐαίων εὐαίων
εἴης, ὦ Λατοῦς παῖ.
ἀλλ' ἐκπαύσω γὰρ μόχθους
δάφνας ὁλκοῖς,
χρυσέων δ' ἐκ τευχέων ῥίψω
γαίας παγάν,
ἃν ἀποχεύονται
Κασταλίας δῖναι,

νοτερὸν ὕδωρ βάλλων,
ὅσιος ἀπ' εὐνᾶς ὤν.
εἴθ' οὕτως ἀεὶ Φοίβῳ
λατρεύων μὴ παυσαίμαν,
ἢ παυσαίμαν ἀγαθᾷ μοίρᾳ.
ἔα ἔα·
φοιτῶσ' ἤδη λείπουσίν τε
πτανοὶ Παρνασοῦ κοίτας·
αὐδῶ μὴ χρίμπτειν θριγκοῖς
μηδ' εἰς χρυσήρεις οἴκους.
μάρψω σ' αὖ τόξοις, ὦ Ζηνὸς
κῆρυξ, ὀρνίθων γαμφηλαῖς
ἰσχὺν νικῶν.
ὅδε πρὸς θυμέλας ἄλλος ἐρέσσει
κύκνος· οὐκ ἄλλᾳ
φοινικοφαῆ πόδα κινήσεις;
οὐδέν σ' ἁ φόρμιγξ ἁ Φοίβου
σύμμολπος τόξων ῥύσαιτ' ἄν·
πάραγε πτέρυγας,
λίμνας ἐπίβα τᾶς Δηλιάδος·
αἱμάξεις, εἰ μὴ πείσει,
τὰς καλλιφθόγγους ᾠδάς.
ἔα ἔα·
τίς ὅδ' ὀρνίθων καινὸς προσέβα;
μῶν ὑπὸ θριγκοὺς εὐναίας
καρφηρὰς θήσων τέκνοις;
ψαλμοί σ' εἴρξουσιν τόξων.
οὐ πείσει; χωρῶν ἐν δίναις
ταῖς Ἀλφειοῦ παιδούργει
ἢ νάπος Ἴσθμιον,
ὡς ἀναθήματα μὴ βλάπτηται
ναοί θ' οἱ Φοίβου.

κτείνειν δ' ὑμᾶς αἰδοῦμαι
τοὺς θεῶν ἀγγέλλοντας φήμας
θνατοῖς· οἷς δ' ἔγκειμαι μόχθοις,
.Φοίβῳ δουλεύσω, κοὐ λήξω
τοὺς βόσκοντας θεραπεύων.

ΗΜΙΧ. οὐκ ἐν ταῖς ζαθέαις Ἀθά- στρ.
ναις εὐκίονες ἦσαν αὐ-
λαὶ θεῶν μόνον, οὐδ' ἀγυι-
άτιδες θεραπεῖαι·
ἀλλὰ καὶ παρὰ Λοξίᾳ
τῷ Λατοῦς διδύμων προσώ-
πων καλλιβλέφαρον φῶς.
ἰδοὺ τάνδ' ἄθρησον,
Λερναῖον ὕδραν ἐναίρει
χρυσέαις ἅρπαις ὁ Διὸς παῖς·
φίλα, πρόσιδ' ὄσσοις.

ΗΜΙΧ. ὁρῶ. καὶ πέλας ἄλλος αὐ- ἀντ.
τοῦ πανὸν πυρίφλεκτον αἴ-
ρει τις· ἆρ' ὃς ἐμαῖσι μυ-
θεύεται παρὰ πήναις
ἀσπιστὰς Ἰόλαος, ὃς
κοινοὺς αἰρόμενος πόνους
Δίῳ παιδὶ συναντλεῖ;

ΗΜΙΧ. καὶ μὰν τόνδ' ἄθρησον
πτεροῦντος ἔφεδρον ἵππου·
τὰν πῦρ πνέουσαν ἐναίρει
τρισώματον ἀλκάν.

ΗΜΙΧ. παντᾷ τοι βλέφαρον διώ- στρ.
κω. σκέψαι κλόνον ἐν τείχε-
σι λαΐνοισι Γιγάντων.

184 — 193 = 194 — 204
205 — 218 = 219 — 236

ΗΜΙΧ. ὧδε δερκόμεθ', ὦ φίλαι, *
ΗΜΙΧ. λεύσσεις οὖν ἐπ' Ἐγκελάδῳ
γοργῶπιν πάλλουσαν ἴτυν;
ΗΜΙΧ. λεύσσω Παλλάδ' ἐμὰν θεόν.
ΗΜΙΧ. τί γάρ, κεραυνὸν
ἀμφίπυρον ὄβριμον ἐν Διὸς
ἑκηβόλοισι χερσίν;
ΗΜΙΧ. ὁρῶ, τὸν δάιον
Μίμαντα πυρὶ καταιθαλοῖ.
καὶ Βρόμιος ἄλλον ἀπολέμοισι
κισσίνοισι βάκτροις
ἐναίρει Γᾶς τέκνων ὁ Βακχεύς.
ΧΟ. σέ τοι τὸν παρὰ ναὸν αὐ- ἀντ.
δῶ· θέμις γυάλων ὑπερ-
βῆναι λευκῷ ποδὶ βαλόν;
ΙΩΝ. οὐ θέμις, ὦ ξέναι.
ΧΟ. οὐδ' ἂν ἐκ σέθεν ἂν πυθοίμαν,
ΙΩΝ. αὔδα· τί θέλεις;
ΧΟ. ἆρ' ὄντως μεσομφάλιον
γᾶς Φοίβου κατέχει δόμος;
ΙΩΝ. στέμμασί γ' ἐνδυτόν, ἀμφὶ δὲ Γοργόνες.
ΧΟ. οὕτω καὶ φάτις αὐδᾷ.
ΙΩΝ. εἰ μὲν ἐθύσατε πέλανον πρὸ δόμων
καί τι πυθέσθαι χρῄζετε Φοίβου,
πάριτ' εἰς θυμέλας, ἐπὶ δ' ἀσφάκτοις
μήλοισι δόμων μὴ πάριτ' εἰς μυχόν.
ΧΟ. ἔχω μαθοῦσα·
θεοῦ δὲ νόμον οὐ παραβαίνομεν·
ἃ δ' ἐκτός, ὄμμα τέρψει.
ΙΩΝ. πάντα θεᾶσθ', ὅ τι καὶ θέμις, ὄμμασι.
ΧΟ. μεθεῖσαν δεσπόται
με θεοῦ γύαλα τάδ' εἰσιδεῖν.

ΙΩΝ. δμωαὶ δὲ τίνων κλῄζεσθε δόμων;
ΧΟ. Παλλάδος ἔνοικα τρόφιμα μέλαθρα
τῶν ἐμῶν τυράννων.
παρούσας δ᾽ ἀμφὶ τᾶσδ᾽ ἐρωτᾷς.
ΙΩΝ. γενναιότης σοι, καὶ τρόπων τεκμήριον
τὸ σχῆμ᾽ ἔχεις τόδ᾽, ἥτις εἶ ποτ᾽, ὦ γύναι.
γνοίη δ᾽ ἂν ὡς τὰ πολλά γ᾽ ἀνθρώπου πέρι
τὸ σχῆμ᾽ ἰδών τις εἰ πέφυκεν εὐγενής.
ἔα·
ἀλλ᾽ ἐξέπληξάς μ᾽, ὄμμα συγκλῄσασα σὸν
δακρύοις θ᾽ ὑγράνασ᾽ εὐγενῆ παρηίδα,
ὡς εἶδες ἁγνὰ Λοξίου χρηστήρια.
τί ποτε μερίμνης εἰς τόδ᾽ ἦλθες, ὦ γύναι;
οὗ πάντες ἄλλοι γύαλα λεύσσοντες θεοῦ
χαίρουσιν, ἐνταῦθ᾽ ὄμμα σὸν δακρυρροεῖ;
ΚΡ. ὦ ξένε, τὸ μὲν σὸν οὐκ ἀπαιδεύτως ἔχει
εἰς θαύματ᾽ ἐλθεῖν δακρύων ἐμῶν πέρι·
ἐγὼ δ᾽ ἰδοῦσα τούσδ᾽ Ἀπόλλωνος δόμους
μνήμην παλαιὰν ἀνεμετρησάμην τινά·
οἴκοι δὲ τὸν νοῦν ἔσχον ἐνθάδ᾽ οὖσά περ.
ὦ τλήμονες γυναῖκες· ὦ τολμήματα
θεῶν. τί δῆτα; ποῖ δίκην ἀνοίσομεν,
εἰ τῶν κρατούντων ἀδικίαις ὀλούμεθα;
ΙΩΝ. τί χρῆμ᾽ ἀνερμήνευτα δυσθυμεῖ, γύναι;
ΚΡ. οὐδέν· μεθῆκα τόξα· τἀπὶ τῷδε δὲ
ἐγώ τε σιγῶ καὶ σὺ μὴ φρόντιζ᾽ ἔτι.
ΙΩΝ. τίς δ᾽ εἶ; πόθεν γῆς ἦλθες; ἐκ ποίου πατρὸς
πέφυκας; ὄνομα τί σε καλεῖν ἡμᾶς χρεών;
ΚΡ. Κρέουσα μέν μοι τοὔνομ᾽, ἐκ δ᾽ Ἐρεχθέως
πέφυκα, πατρὶς γῆ δ᾽ Ἀθηναίων πόλις.
ΙΩΝ. ὦ κλεινὸν οἰκοῦσ᾽ ἄστυ γενναίων τ᾽ ἄπο
τραφεῖσα πατέρων, ὥς σε θαυμάζω, γύναι.

ΚΡ. τοσαῦτα κεὐτυχοῦμεν, ὦ ξέν᾽, οὐ πέρα.
ΙΩΝ. πρὸς θεῶν ἀληθῶς, ὡς μεμύθευται βροτοῖς,
ΚΡ. τί χρῆμ᾽ ἐρωτᾷς, ὦ ξέν᾽; ἐκμαθεῖν θέλω.
ΙΩΝ. ἐκ γῆς πατρός σου πρόγονος ἔβλαστεν πατήρ;
ΚΡ. Ἐριχθόνιός γε· τὸ δὲ γένος μ᾽ οὐκ ὠφελεῖ.
ΙΩΝ. ἦ καί σφ᾽ Ἀθάνα γῆθεν ἐξανείλετο;
ΚΡ. εἰς παρθένους γε χεῖρας, οὐ τεκοῦσά νιν.
ΙΩΝ. δίδωσι δ᾽, ὥσπερ ἐν γραφῇ νομίζεται;
ΚΡ. Κέκροπός γε σῴζειν παισὶν οὐχ ὁρώμενον.
ΙΩΝ. ἤκουσα λῦσαι παρθένους τεῦχος θεᾶς.
ΚΡ. τοιγὰρ θανοῦσαι σκόπελον ᾕμαξαν πέτρας.
ΙΩΝ. εἶεν·
τί δαὶ τόδ᾽; ἆρ᾽ ἀληθὲς ἢ μάτην λόγος;
ΚΡ. τί χρῆμ᾽ ἐρωτᾷς; καὶ γὰρ οὐ κάμνω σχολῇ.
ΙΩΝ. πατὴρ Ἐρεχθεὺς σὰς ἔθυσε συγγόνους;
ΚΡ. ἔτλη πρὸ γαίας σφάγια παρθένους κτανεῖν.
ΙΩΝ. σὺ δ᾽ ἐξεσώθης πῶς κασιγνήτων μόνη;
ΚΡ. βρέφος νεογνὸν μητρὸς ἦν ἐν ἀγκάλαις.
ΙΩΝ. πατέρα δ᾽ ἀληθῶς χάσμα σὸν κρύπτει χθονός;
ΚΡ. πληγαὶ τριαίνης ποντίου σφ᾽ ἀπώλεσαν.
ΙΩΝ. Μακραὶ δὲ χῶρός ἐστ᾽ ἐκεῖ κεκλημένος;
ΚΡ. τί δ᾽ ἱστορεῖς τόδ᾽; ὥς μ᾽ ἀνέμνησάς τινος.
ΙΩΝ. τιμᾷ σφε Πύθιος ἀστραπαί τε Πύθιαι;
ΚΡ. τιμᾷ γ᾽ ἄτιμ᾽· ὡς μήποτ᾽ ὤφελόν σφ᾽ ἰδεῖν.
ΙΩΝ. τί δέ; στυγεῖς σὺ τοῦ θεοῦ τὰ φίλτατα;
ΚΡ. οὐδέν· ξύνοιδ᾽ ἄντροισιν αἰσχύνην τινά.
ΙΩΝ. πόσις δὲ τίς σ᾽ ἔγημ᾽ Ἀθηναίων, γύναι;
ΚΡ. οὐκ ἀστός, ἀλλ᾽ ἐπακτὸς ἐξ ἄλλης χθονός.
ΙΩΝ. τίς; εὐγενῆ νιν δεῖ πεφυκέναι τινά.
ΚΡ. Ξοῦθος, πεφυκὼς Αἰόλου Διός τ᾽ ἄπο.
ΙΩΝ. καὶ πῶς ξένος σ᾽ ὢν ἔσχεν οὖσαν ἐγγενῆ;
ΚΡ. Εὔβοι᾽ Ἀθήναις ἔστι τις γείτων πόλις·

ΙΩΝ. ὅροις ὑγροῖσιν, ὡς λέγουσ', ὡρισμένη.
ΚΡ. ταύτην ἔπερσε Κεκροπίδαις κοινῷ δορί.
ΙΩΝ. ἐπίκουρος ἐλθών; κᾆτα σὸν γαμεῖ λέχος;
ΚΡ. φερνάς γε πολέμου καὶ δορὸς λαβὼν γέρας.
ΙΩΝ. σὺν ἀνδρὶ δ' ἥκεις ἢ μόνη χρηστήρια;
ΚΡ. σὺν ἀνδρί. σηκοῖς δ' ἐνστρέφει Τροφωνίου
ΙΩΝ. πότερον θεατὴς, ἢ χάριν μαντευμάτων;
ΚΡ. κείνου τε Φοίβου θ' ἓν θέλων μαθεῖν ἔπος
ΙΩΝ. καρποῦ δ' ὕπερ γῆς ἥκετ', ἢ παίδων πέρι;
ΚΡ. ἄπαιδές ἐσμεν, χρόνι' ἔχοντ' εὐνήματα.
ΙΩΝ. οὐδ' ἔτεκες οὐδὲν πώποτ', ἀλλ' ἄτεκνος εἶ;
ΚΡ. ὁ Φοῖβος οἶδε τὴν ἐμὴν ἀπαιδίαν.
ΙΩΝ. ὦ τλῆμον, ὡς τἄλλ' εὐτυχοῦσ' οὐκ εὐτυχεῖ
ΚΡ. σὺ δ' εἶ τίς; ὥς σου τὴν τεκοῦσαν ὤλβισα.
ΙΩΝ. τοῦ θεοῦ καλοῦμαι δοῦλος εἰμί τ', ὦ γύναι
ΚΡ. ἀνάθημα πόλεως, ἤ τινος πραθεὶς ὕπο;
ΙΩΝ. οὐκ οἶδα πλὴν ἕν· Λοξίου κεκλήμεθα.
ΚΡ. ἡμεῖς σ' ἄρ' αὖθις, ὦ ξέν', ἀντοικτείρομεν
ΙΩΝ. ὡς μὴ εἰδόθ' ἥτις μ' ἔτεκεν ἐξ ὅτου τ' ἔφυ
ΚΡ. ναοῖσι δ' οἰκεῖς τοισίδ' ἢ κατὰ στέγας;
ΙΩΝ. ἅπαν θεοῦ μοι δῶμ', ἵν' ἂν λάβῃ μ' ὕπνος.
ΚΡ. παῖς δ' ὢν ἀφίκου ναὸν ἢ νεανίας;
ΙΩΝ. βρέφος λέγουσιν οἱ δοκοῦντες εἰδέναι.
ΚΡ. καὶ τίς γάλακτί σ' ἐξέθρεψε Δελφίδων;
ΙΩΝ. οὐπώποτ' ἔγνων μαστόν· ἣ δ' ἔθρεψέ με
ΚΡ. τίς, ὦ ταλαίπωρ'; ὡς νοσοῦσ' εὗρον νόσου
ΙΩΝ. Φοίβου προφῆτις, μητέρ' ὡς νομίζομεν.
ΚΡ. εἰς δ' ἄνδρ' ἀφίκου τίνα τροφὴν κεκτημένο
ΙΩΝ. βωμοί μ' ἔφερβον οὑπιών τ' ἀεὶ ξένος.
ΚΡ. τάλαινά σ' ἡ τεκοῦσα, τίς ποτ' ἦν ἄρα.
ΙΩΝ. ἀδίκημά του γυναικὸς ἐγενόμην ἴσως.
ΚΡ. ἔχεις δὲ βίοτον; εὖ γὰρ ἤσκησαι πέπλοις.

ΙΩΝ. τοῖς τοῦ θεοῦ κοσμούμεθ', ᾧ δουλεύομεν.
ΚΡ. οὐδ' ἦξας εἰς ἔρευναν ἐξευρεῖν γονάς;
ΙΩΝ. ἔχω γὰρ οὐδέν, ὦ γύναι, τεκμήριον.
ΚΡ. φεῦ·
πέπονθέ τις σῇ μητρὶ ταὔτ' ἄλλη γυνή,
ΙΩΝ. τίς; εἰ πόνου μοι ξυλλάβοι, χαίροιμεν ἄν.
ΚΡ. ἧς οὕνεκ' ἦλθον δεῦρο πρὶν πόσιν μολεῖν.
ΙΩΝ. ποῖόν τι χρῄζουσ'; ὡς ὑπουργήσω, γύναι.
ΚΡ. μάντευμα κρυπτὸν δεομένη Φοίβου μαθεῖν.
ΙΩΝ. λέγοις ἄν· ἡμεῖς τἄλλα προξενήσομεν.
ΚΡ. ἄκουε δὴ τὸν μῦθον· ἀλλ' αἰδούμεθα.
ΙΩΝ. οὔ τἄρα πράξεις οὐδέν· ἀργὸς ἡ θεός.
ΚΡ. Φοίβῳ μιγῆναί φησί τις φίλων ἐμῶν,
ΙΩΝ. Φοίβῳ γυνὴ γεγῶσα; μὴ λέγ', ὦ ξένη.
ΚΡ. καὶ παῖδά γ' ἔτεκε τῷ θεῷ λάθρᾳ πατρός.
ΙΩΝ. οὐκ ἔστιν· ἀνδρὸς ἀδικίαν αἰσχύνεται.
ΚΡ. οὔ φησιν αὐτή· καὶ πέπονθεν ἄθλια.
ΙΩΝ. τί χρῆμα δράσασ', εἰ θεῷ συνεζύγη;
ΚΡ. τὸν παῖδ' ὃν ἔτεκεν ἐξέθηκε δωμάτων.
ΙΩΝ. ὁ δ' ἐκτεθεὶς παῖς ποῦ 'στιν; εἰσορᾷ φάος;
ΚΡ. οὐκ οἶδεν οὐδείς. ταῦτα καὶ μαντεύομαι.
ΙΩΝ. εἰ δ' οὐκέτ' ἔστι, τίνι τρόπῳ διεφθάρη;
ΚΡ. θῆράς σφε τὸν δύστηνον ἐλπίζει κτανεῖν.
ΙΩΝ. ποίῳ τόδ' ἔγνω χρωμένη τεκμηρίῳ;
ΚΡ. ἐλθοῦσ' ἵν' αὐτὸν ἐξέθηκ', οὐχ εὗρ' ἔτι.
ΙΩΝ. ἦν δὲ σταλαγμὸς ἐν στίβῳ τις αἵματος;
ΚΡ. οὔ φησι· καίτοι πόλλ' ἐπεστράφη πέδον.
ΙΩΝ. χρόνος δὲ τίς τῷ παιδὶ διαπεπραγμένῳ;
ΚΡ. σοὶ ταὐτὸν ἥβης, εἴπερ ἦν, εἶχ' ἂν μέτρον.
ΙΩΝ. ἀδικεῖ νιν ὁ θεός· ἡ τεκοῦσα δ' ἀθλία.
ΚΡ. οὔκουν ἔτ' ἄλλον ὕστερον τίκτει γόνον.
ΙΩΝ. τί δ', εἰ λάθρᾳ νιν Φοῖβος ἐκτρέφει λαβών;

ΚΡ. τὰ κοινὰ χαίρων οὐ δίκαια δρᾷ μόνος.
ΙΩΝ. οἴμοι· προσῳδὸς ἡ τύχη τῷ 'μῷ πάθει.
ΚΡ. καὶ σ', ὦ ξέν', οἶμαι μητέρ' ἀθλίαν ποθεῖν.
ΙΩΝ. καὶ μή μ' ἐπ' οἶκτον ἔξαγ' οὗ 'λελήσμεθα.
ΚΡ. σιγῶ· πέραινε δ' ὧν σ' ἀνιστορῶ πέρι.
ΙΩΝ. οἶσθ' οὖν ὃ κάμνει τοῦ λόγου μάλιστά σοι;
ΚΡ. τί δ' οὐκ ἐκείνῃ τῇ ταλαιπώρῳ νοσεῖ;
ΙΩΝ. πῶς ὁ θεὸς ὃ λαθεῖν βούλεται μαντεύσεται;
ΚΡ. εἴπερ καθίζει τρίποδα κοινὸν Ἑλλάδος.
ΙΩΝ. αἰσχύνεται τὸ πρᾶγμα· μὴ 'ξέλεγχέ νιν.
ΚΡ. ἀλγύνεται δὲ χἠ παθοῦσα τῇ τύχῃ.
ΙΩΝ. οὐκ ἔστιν ὅστις σοι προφητεύσει τάδε.
ἐν τοῖς γὰρ αὑτοῦ δώμασιν κακὸς φανεὶς
Φοῖβος δικαίως τὸν θεμιστεύοντά σοι
δράσειεν ἄν τι πῆμ'· ἀπαλλάσσου, γύναι·
τῷ γὰρ θεῷ τἀναντί' οὐ μαντευτέον.
εἰς γὰρ τοσοῦτον ἀμαθίας ἔλθοιμεν ἄν,
εἰ τοὺς θεοὺς ἄκοντας ἐκπονήσομεν
φράζειν ἃ μὴ θέλουσιν ἢ προβωμίοις
σφαγαῖσι μήλων ἢ δι' οἰωνῶν πτεροῖς.
ἂν γὰρ βίᾳ σπεύδωμεν ἀκόντων θεῶν,
ἀνόνητα κεκτήμεσθα τἀγάθ', ὦ γύναι·
ἃ δ' ἂν διδῶσ' ἑκόντες, ὠφελούμεθα.
ΧΟ. πολλαί γε πολλοῖς εἰσι συμφοραὶ βροτοῖς,
μορφαὶ δὲ διαφέρουσιν. ἓν δ' ἂν εὐτυχὲς
μόλις ποτ' ἐξεύροι τις ἀνθρώπων βίῳ.
ΚΡ. ὦ Φοῖβε, κἀκεῖ κἀνθάδ' οὐ δίκαιος εἶ
εἰς τὴν ἀποῦσαν, ἧς πάρεισιν οἱ λόγοι.
σύ γ' οὔτ' ἔσωσας τὸν σὸν ὃν σῶσαί σ' ἐχρῆν,
οὔθ' ἱστορούσῃ μητρὶ μάντις ὢν ἐρεῖς,
ὡς εἰ μὲν οὐκέτ' ἔστιν, ὀγκωθῇ τάφῳ,
εἰ δ' ἔστιν, ἔλθῃ μητρὸς εἰς ὄψιν ποτέ.

ἄλλως ἔδη * χρῆ τάδ᾽, εἰ πρὸς τοῦ θεοῦ
κωλυόμεσθα μὴ μαθεῖν ἃ βούλομαι.
ἀλλ᾽ ὦ ξέν᾽, εἰσορῶ γὰρ εὐγενῆ πόσιν
Ξοῦθον πέλας δὴ τόνδε τὰς Τροφωνίου
λιπόντα θαλάμας, τοὺς λελεγμένους λόγους
σίγα πρὸς ἄνδρα, μή τιν᾽ αἰσχύνην λάβω
διακονοῦσα κρυπτά, κἀποβῇ λόγος
οὐχ ᾗπερ ἡμεῖς αὐτὸν ἐξειλίσσομεν.
τὰ γὰρ γυναικῶν δυσχερῆ πρὸς ἄρσενας,
κἂν ταῖς κακαῖσιν ἁγαθαὶ μεμιγμέναι
μισούμεθ᾽· οὕτω δυστυχεῖς πεφύκαμεν.

ΞΟΥ. πρῶτον μὲν ὁ θεὸς τῶν ἐμῶν προσφθεγμάτων
λαβὼν ἀπαρχὰς χαιρέτω, σύ τ᾽, ὦ γύναι.
μῶν χρόνιος ἐλθών σ᾽ ἐξέπληξ᾽ ὀρρωδίᾳ;

ΚΡ. οὐδέν γ᾽· ἀφίκου δ᾽ εἰς μέριμναν. ἀλλά μοι
λέξον, τί θέσπισμ᾽ ἐκ Τροφωνίου φέρεις,
παίδων ὅπως νῷν σπέρμα συγκραθήσεται;

ΞΟΥ. οὐκ ἠξίωσε τοῦ θεοῦ προλαμβάνειν
μαντεύμαθ᾽· ἓν δ᾽ οὖν εἶπεν, οὐκ ἄπαιδά με
πρὸς οἶκον ἥξειν οὐδὲ σ᾽ ἐκ χρηστηρίων.

ΚΡ. ὦ πότνια Φοίβου μῆτερ, εἰ γὰρ αἰσίως
ἔλθοιμεν, ἅ τε νῷν συμβόλαια πρόσθεν ἦν
ἐς παῖδα τὸν σόν, μεταπέσοι βελτίονα.

ΞΟΥ. ἔσται τάδ᾽· ἀλλὰ τίς προφητεύει θεοῦ;

ΙΩΝ. ἡμεῖς τά γ᾽ ἔξω, τῶν ἔσω δ᾽ ἄλλοις μέλει,
οἳ πλησίον θάσσουσι τρίποδος, ὦ ξένε,
Δελφῶν ἀριστῆς, οὓς ἐκλήρωσεν πάλος.

ΞΟΥ. καλῶς· ἔχω δὴ πάνθ᾽ ὅσων ἐχρῄζομεν.
στείχοιμ᾽ ἂν εἴσω· καὶ γάρ, ὡς ἐγὼ κλύω,
χρηστήριον πέπτωκε τοῖς ἐπήλυσι
κοινὸν πρὸ ναοῦ· βούλομαι δ᾽ ἐν ἡμέρᾳ
τῇδ᾽, αἰσία γάρ, θεοῦ λαβεῖν μαντεύματα.

σὺ δ' ἀμφὶ βωμούς, ὦ γύναι, δαφνηφόρους
λαβοῦσα κλῶνας, εὐτέκνους εὔχου θεοῖς
χρησμούς μ' ἐνεγκεῖν ἐξ Ἀπόλλωνος δόμων.
ΚΡ. ἔσται τάδ' ἔσται. Λοξίας δ' ἐὰν θέλῃ
νῦν ἀλλὰ τὰς πρὶν ἀναλαβεῖν ἁμαρτίας,
ἅπας μὲν οὐ γένοιτ' ἂν εἰς ἡμᾶς φίλος,
ὅσον δὲ χρῄζει, θεὸς γάρ ἐστι, δέξομαι.
ΙΩΝ. τί ποτε λόγοισιν ἡ ξένη πρὸς τὸν θεὸν
κρυπτοῖσιν ἀεὶ λοιδοροῦσ' αἰνίσσεται,
ἤτοι φιλοῦσά γ' ἧς ὕπερ μαντεύεται,
ἢ καί τι σιγῶσ' ὧν σιωπᾶσθαι χρεών;
ἀτὰρ θυγατρὸς τῆς Ἐρεχθέως τί μοι
μέλει, προσῆκόν γ' οὐδέν; ἀλλὰ χρυσέαις
πρόχοισιν ἐλθὼν εἰς ἀπορραντήρια
δρόσον καθήσω. νουθετητέος δέ μοι
Φοῖβος, τί πάσχει· παρθένους βίᾳ γαμῶν
προδίδωσι, παῖδας ἐκτεκνούμενος λάθρᾳ
θνήσκοντας ἀμελεῖ. μὴ σύ γ'· ἀλλ' ἐπεὶ κρατεῖς,
ἀρετὰς δίωκε. καὶ γὰρ ὅστις ἂν βροτῶν
κακὸς πεφύκῃ, ζημιοῦσιν οἱ θεοί.
πῶς οὖν δίκαιον τοὺς νόμους ὑμᾶς βροτοῖς
γράψαντας αὐτοὺς ἀνομίαν ὀφλισκάνειν;
εἰ δ', οὐ γὰρ ἔσται, τῷ λόγῳ δὲ χρήσομαι,
δίκας βιαίων δώσετ' ἀνθρώποις γάμων,
σὺ καὶ Ποσειδῶν Ζεύς θ' ὃς οὐρανοῦ κρατεῖ,
ναοὺς τίνοντες ἀδικίας κενώσετε.
τὰς ἡδονὰς γὰρ τῆς προμηθίας πάρος
σπεύδοντες ἀδικεῖτ'. οὐκέτ' ἀνθρώπους κακοὺς
λέγειν δίκαιον, εἰ τὰ τῶν θεῶν κακὰ
μιμούμεθ', ἀλλὰ τοὺς διδάσκοντας τάδε.
ΧΟ. σὲ τὰν ὠδίνων λοχιᾶν στρ.

452 — 471 = 472 — 491

ἀνειλείθυιαν, ἐμὰν
Ἀθάναν ἱκετεύω,
Προμηθεῖ Τιτᾶνι λοχευ-
θεῖσαν κατ' ἀκροτάτας
κορυφᾶς Διός, ὦ πότνα Νίκα,
μόλε Πύθιον οἶκον,
Οὐλύμπου χρυσέων θαλάμων
πταμένα πρὸς ἀγυιάς,
Φοιβήιος ἔνθα γᾶς
μεσσόμφαλος ἑστία
παρὰ χορευομένῳ τρίποδι
μαντεύματα κραίνει,
σὺ καὶ παῖς ἁ Λατογενής,
δύο θεαὶ δύο παρθένοι,
κασίγνηται σεμναὶ τοῦ Φοίβου.
ἱκετεύσατε δ', ὦ κόραι,
τὸ παλαιὸν Ἐρεχθέως
γένος εὐτεκνίας χρονίου καθαροῖς
μαντεύμασι κῦρσαι.
ὑπερβαλλούσας γὰρ ἔχει ἀντ.
θνατοῖς εὐδαιμονίας
ἀκίνητον ἀφορμάν,
τέκνων οἷς ἂν καρποτρόφοι
λάμπωσιν ἐν θαλάμοις
πατρίοισι νεάνιδες ἧβαι,
διαδέκτορα πλοῦτον
ὡς ἕξοντες ἐκ πατέρων
ἑτέροις ἐπὶ τέκνοις.
ἀλκά τε γὰρ ἐν κακοῖς
σύν τ' εὐτυχίαις φίλον,
δορί τε γᾷ πατρίᾳ φέρει
σωτήριον ἀλκάν.

ἐμοὶ μὲν πλούτου τε πάρος
βασιλικῶν θαλάμων τ' εἶεν
τροφαὶ κήδειοι κεδνῶν τέκνων.
τὸν ἄπαιδα δ' ἀποστυγῶ
βίον ᾧ τε δοκεῖ ψέγω·
μετὰ δὲ κτεάνων μετρίων βιοτᾶς
εὔπαιδος ἐχοίμαν.
ὦ Πανὸς θακήματα καὶ
παραυλίζουσα πέτρα
μυχώδεσι Μακραῖς,
ἵνα χοροὺς στείβουσι ποδοῖν
Ἀγραύλου κόραι τρίγονοι
στάδια χλοερὰ πρὸ Παλλάδος
ναῶν, συρίγγων
ὑπ' αἰόλας ἰαχᾶς
ὕμνων, ὅταν αὐλίοις
συρίζῃς, ὦ Πάν,
τοῖσι σοῖς ἐν ἄντροις,
ἵνα τεκοῦσά τις
παρθένος, ὦ μελέα, βρέφος
Φοίβῳ, πτανοῖς ἐξώρισε θοίναν
θηρσί τε φοινίαν δαῖτα, πικρῶν γάμων
ὕβριν. οὔτ' ἐπὶ κερκίσιν οὔτε λόγοις
φάτιν ἄιον εὐτυχίας μετέχειν
θεόθεν τέκνα θνατοῖς.

ΙΩΝ. πρόσπολοι γυναῖκες, αἳ τῶνδ' ἀμφὶ κρηπῖδας δόμων
θυοδόκων φρούρημ' ἔχουσαι δεσπότην φυλάσσετε,
ἐκλέλοιπ' ἤδη τὸν ἱερὸν τρίποδα καὶ χρηστήριον
Ξοῦθος, ἢ μίμνει κατ' οἶκον ἱστορῶν ἀπαιδίαν;

ΧΟ. ἐν δόμοις ἔστ', ὦ ξέν'· οὔπω δῶμ' ὑπερβαίνει τόδε.

ὡς δ' ἐπ' ἐξόδοισιν ὄντος τῶνδ' ἀκούομεν πυλῶν
δοῦπον, ἐξιόντα τ' ἤδη δεσπότην ὁρᾶν πάρα.
ΞΟΥ. ὦ τέκνον, χαῖρ'· ἡ γὰρ ἀρχὴ τοῦ λόγου πρέπουσά μοι.
ΙΩΝ. χαίρομεν· σὺ δ' εὖ φρόνει γε, καὶ δύ' ὄντ' εὖ πράξομεν.
ΞΟΥ. δὸς χερὸς φίλημά μοι σῆς σώματός τ' ἀμφιπτυχάς.
ΙΩΝ. εὖ φρονεῖς μέν; ἤ σ' ἔμηνε θεοῦ τις, ὦ ξένε, βλάβη;
ΞΟΥ. οὐ φρονῶ, τὰ φίλταθ' εὑρὼν εἰ φιλεῖν ἐφίεμαι;
ΙΩΝ. παῦε· μὴ ψαύσας τὰ τοῦ θεοῦ στέμματα ῥήξῃς χερί.
ΞΟΥ. ἅψομαι· κοὐ ῥυσιάζω, τἀμὰ δ' εὑρίσκω φίλα.
ΙΩΝ. οὐκ ἀπαλλάξει, πρὶν εἴσω τόξα πνευμόνων λαβεῖν;
ΞΟΥ. ὡς τί δὴ φεύγεις με σαυτοῦ γνωρίσας τὰ φίλτατα;
ΙΩΝ. οὐ φιλῶ φρενῶν ἀμοίρους καὶ μεμηνότας ξένους.
ΞΟΥ. κτεῖνε καὶ πίμπρη· πατρὸς γάρ, ἢν κτάνῃς, ἔσει φονεύς.
ΙΩΝ. ποῦ δέ μοι πατὴρ σύ; ταῦτ' οὖν οὐ γέλως [κλύειν ἐμοί];
ΞΟΥ. οὔ· τρέχων ὁ μῦθος ἄν σοι τἀμὰ σημήνειεν ἄν.
ΙΩΝ. καὶ τί μοι λέξεις; ΞΟΥ. πατὴρ σός εἰμι καὶ σὺ παῖς ἐμός.
ΙΩΝ. τίς λέγει τάδ'; ΞΟΥ. ὅς σ' ἔθρεψεν ὄντα Λοξίας ἐμόν.
ΙΩΝ. μαρτυρεῖς σαυτῷ. ΞΟΥ. τὰ τοῦ θεοῦ γ' ἐκμαθὼν χρηστήρια.
ΙΩΝ. ἐσφάλης αἴνιγμ' ἀκούσας. ΞΟΥ. οὐκ ἄρ' ὄρθ' ἀκούομεν.
ΙΩΝ. ὁ δὲ λόγος τίς ἐστὶ Φοίβου; ΞΟΥ. τὸν συναντήσαντά μοι

ΙΩΝ. τίνα συνάντησιν; ΞΟΥ. δόμων τῶνδ' ἐξιόντι τοῦ θεοῦ

ΙΩΝ. συμφορᾶς τίνος κυρῆσαι; ΞΟΥ. παῖδ' ἐμὸν πεφυκέναι.

ΙΩΝ. σὸν γεγῶτ', ἢ δῶρον ἄλλων; ΞΟΥ. δῶρον, ὄντα δ' ἐξ ἐμοῦ.

ΙΩΝ. πρῶτα δῆτ' ἐμοὶ ξυνάπτεις πόδα σόν; ΞΟΥ. οὐκ ἄλλῳ, τέκνον.

ΙΩΝ. ἡ τύχη πόθεν ποθ' ἥκει; ΞΟΥ. δύο μίαν θαυμάζομεν.

ΙΩΝ. ἐκ τίνος δέ σοι πέφυκα μητρός; ΞΟΥ. οὐκ ἔχω φράσαι.

ΙΩΝ. οὐδὲ Φοῖβος εἶπε; ΞΟΥ. τερφθεὶς τοῦτο, κεῖν' οὐκ ἠρόμην.

ΙΩΝ. γῆς ἄρ' ἐκπέφυκα μητρός. ΞΟΥ. οὐ πέδον τίκτει τέκνα.

ΙΩΝ. πῶς ἂν οὖν εἴην σός; ΞΟΥ. οὐκ οἶδ', ἀναφέρω δ' εἰς τὸν θεόν.

ΙΩΝ. φέρε λόγων ἁψώμεθ' ἄλλων. ΞΟΥ. ταῦτ' ἄμεινον, ὦ τέκνον.

ΙΩΝ. ἦλθες εἰς νόθον τι λέκτρον; ΞΟΥ. μωρίᾳ γε τοῦ νέου.

ΙΩΝ. πρὶν κόρην λαβεῖν Ἐρεχθέως; ΞΟΥ. οὐ γὰρ ὕστερόν γέ πω.

ΙΩΝ. ἆρα δῆτ' ἐκεῖ μ' ἔφυσας; ΞΟΥ. τῷ χρόνῳ γε συντρέχει.

ΙΩΝ. κᾆτα πῶς ἀφικόμεσθα δεῦρο; ΞΟΥ. ταῦτ' ἀμηχανῶ.

ΙΩΝ. διὰ μακρᾶς ἐλθὼν κελεύθου; ΞΟΥ. τοῦτο κἄμ' ἀπαιολᾷ.

ΙΩΝ. Πυθίαν δ' ἦλθες πέτραν πρίν; ΞΟΥ. εἰς φανάς γε Βακχίου.

ΙΩΝ. προξένων δ' ἔν του κατέσχες; *ΞΟΥ.* ὅς με Δελφίσιν κόραις

ΙΩΝ. ἐθιάσευσ', ἢ πῶς τάδ' αὐδᾷς; *ΞΟΥ.* Μαινάσιν γε Βακχίου

ΙΩΝ. ἔμφρον' ἢ κάτοινον ὄντα; *ΞΟΥ.* Βακχίου πρὸς ἡδοναῖς

ΙΩΝ. τοῦτ' ἐκεῖν' ἵν' ἐσπάρημεν. *ΞΟΥ.* ὁ πότμος ἐξεῦρεν, τέκνον.

ΙΩΝ. πῶς δ' ἀφικόμεσθα ναούς; *ΞΟΥ.* ἔκβολον κόρης ἴσως.

ΙΩΝ. ἐκπεφεύγαμεν τὸ δοῦλον. *ΞΟΥ.* πατέρα νυν δέχου, τέκνον.

ΙΩΝ. τῷ θεῷ γοῦν οὐκ ἀπιστεῖν εἰκός. *ΞΟΥ.* εὖ φρονεῖς ἄρα.

ΙΩΝ. καὶ τί βουλόμεσθά γ' ἄλλο *ΞΟΥ.* [νῦν ὁρᾷς ἃ χρή σ' ὁρᾶν.]

ΙΩΝ. ἢ Διὸς παιδὸς γενέσθαι παῖς; *ΞΟΥ.* ὃ σοί γε γίγνεται.

ΙΩΝ. ἦ θίγω δῆθ' οἵ μ' ἔφυσαν; *ΞΟΥ.* πιθόμενός γε τῷ θεῷ.

ΙΩΝ. χαῖρέ μοι, πάτερ, *ΞΟΥ.* φίλον γε φθέγμ' ἐδεξάμην τόδε.

ΙΩΝ. ἡμέρα θ' ἡ νῦν παροῦσα. *ΞΟΥ.* μακάριόν γ' ἔθηκέ με.

ΙΩΝ. ὦ φίλη μῆτερ, πότ' ἆρα καὶ σὸν ὄψομαι δέμας;
νῦν ποθῶ σε μᾶλλον ἢ πρὶν ἥτις εἶ ποτ' εἰσιδεῖν.
ἀλλ' ἴσως τέθνηκας, ἡμεῖς δ' οὐδὲν ἂν δυναίμεθα.

ΧΟ. κοιναὶ μὲν ἡμῖν δωμάτων εὐπραξίαι·
ὅμως δὲ καὶ δέσποιναν εἰς τέκν' εὐτυχεῖν
ἐβουλόμην ἂν τούς τ' Ἐρεχθέως δόμους.

ΞΟΥ. ὦ τέκνον, εἰς μὲν σὴν ἀνεύρεσιν θεὸς

ὀρθῶς ἔκρανε, καὶ συνῆψ᾽ ἐμοί τε σέ,
σύ τ᾽ αὖ τὰ φίλταθ᾽ εὗρες οὐκ εἰδὼς πάρος.
ὃ δ᾽ ᾖξας ὀρθῶς, τοῦτο κἄμ᾽ ἔχει πόθος,
ὅπως σύ τ᾽, ὦ παῖ, μητέρ᾽ εὑρήσεις σέθεν,
ἐγώ θ᾽ ὁποίας μοι γυναικὸς ἐξέφυς.
χρόνῳ δὲ δόντες ταῦτ᾽ ἴσως εὕροιμεν ἄν.
ἀλλ᾽ ἐκλιπὼν θεοῦ δάπεδ᾽ ἀλητείαν τε σὴν
εἰς τὰς Ἀθήνας στεῖχε κοινόφρων πατρί,
οὗ σ᾽ ὄλβιον μὲν σκῆπτρον ἀναμένει πατρός,
πολὺς δὲ πλοῦτος· οὐδὲ θάτερον νοσῶν
δυοῖν κεκλήσει δυσγενὴς πένης θ᾽ ἅμα,
ἀλλ᾽ εὐγενής τε καὶ πολυκτήμων βίου.
σιγᾷς; τί πρὸς γῆν ὄμμα σὸν βαλὼν ἔχεις,
εἰς φροντίδας δ᾽ ἀπῆλθες, ἐκ δὲ χαρμονῆς
πάλιν μεταστὰς δεῖμα προσβάλλεις πατρί;

ΙΩΝ. οὐ ταὐτὸν εἶδος φαίνεται τῶν πραγμάτων
πρόσωθεν ὄντων ἐγγύθεν θ᾽ ὁρωμένων.
ἐγὼ δὲ τὴν μὲν συμφορὰν ἀσπάζομαι,
πατέρα σ᾽ ἀνευρών· ὧν δὲ γιγνώσκω πέρι
ἄκουσον. εἶναί φασι τὰς αὐτόχθονας
κλεινὰς Ἀθήνας οὐκ ἐπείσακτον γένος,
ἵν᾽ εἰσπεσοῦμαι δύο νόσω κεκτημένος,
πατρός τ᾽ ἐπακτοῦ καὐτὸς ὢν νοθαγενής.
καὶ τοῦτ᾽ ἔχων τοὔνειδος, ἀσθενὴς μὲν ὤν,
* * * μηδὲν κοὐδένων κεκλήσομαι·
ἢν δ᾽ εἰς τὸ πρῶτον πόλεος ὁρμηθεὶς ζυγὸν
ζητῶ τις εἶναι, τῶν μὲν ἀδυνάτων ὕπο
μισησόμεσθα· λυπρὰ γὰρ τὰ κρείσσονα·
ὅσοι δὲ χρηστοὶ δυνάμενοί τ᾽ εἶναι σοφοὶ
σιγῶσι κοὐ σπεύδουσιν εἰς τὰ πράγματα,
γέλωτ᾽ ἐν αὐτοῖς μωρίαν τε λήψομαι
οὐχ ἡσυχάζων ἐν πόλει φόβου πλέᾳ.

τῶν δ᾽ αὖ λογίων τε χρωμένων τε τῇ πόλει
εἰς ἀξίωμα βὰς πλέον φρουρήσομαι
ψήφοισιν. οὕτω γὰρ τάδ᾽, ὦ πάτερ, φιλεῖ·
οἳ τὰς πόλεις ἔχοντες ἀξιώματος
τοῖς ἀνθαμίλλοις εἰσὶ πολεμιώτατοι.
ἐλθὼν δ᾽ ἐς οἶκον ἀλλότριον ἔπηλυς ὢν
γυναῖκά θ᾽ ὡς ἄτεκνον, ἣ κοινουμένη
τὰς συμφοράς σοι πρόσθεν, ἀπολαχοῦσα νῦν
αὐτὴ καθ᾽ αὑτὴν τὴν τύχην οἴσει πικρῶς,
πῶς δ᾽ οὐχ ὑπ᾽ αὐτῆς εἰκότως μισήσομαι,
ὅταν παραστῶ σοὶ μὲν ἐγγύθεν ποδός,
ἡ δ᾽ οὖσ᾽ ἄτεκνος τὰ σὰ φίλ᾽ εἰσορᾷ πικρῶς;
ἄλλως τε τὴν σὴν ἄλοχον οἰκτείρω, πάτερ,
ἄπαιδα γηράσκουσαν· οὐ γὰρ ἀξία
πατέρων ἀπ᾽ ἐσθλῶν οὖσ᾽ ἀπαιδίᾳ νοσεῖν.
τυραννίδος δὲ τῆς μάτην αἰνουμένης
τὸ μὲν πρόσωπον ἡδύ, τἀν δόμοισι δὲ
λυπηρά· τίς γὰρ μακάριος, τίς εὐτυχής,
ὅστις δεδοικὼς καὶ παραβλέπων βίου
αἰῶνα τείνει; δημότης ἂν εὐτυχὴς
ζῆν ἂν θέλοιμι μᾶλλον ἢ τύραννος ὤν,
ᾧ τοὺς πονηροὺς ἡδονὴ φίλους ἔχειν,
ἐσθλοὺς δὲ μισεῖ κατθανεῖν φοβούμενος.
εἴποις ἂν ὡς ὁ χρυσὸς ἐκνικᾷ τάδε,
πλουτεῖν τε τερπνόν· οὐ φιλῶ ψόγους κλύειν
ἐν χερσὶ σῴζων ὄλβον οὐδ᾽ ἔχειν πόνους·
εἴη δ᾽ ἔμοιγε μέτρια μὴ λυπουμένῳ.

κᾆτ᾽ ἢ προδοὺς σύ μ᾽ ἐς δάμαρτα σὴν βλέπῃς
ἢ τἀμὰ τιμῶν δῶμα συγχέας ἔχῃς;
ὅσας σφαγὰς δὴ φαρμάκων θανασίμων
γυναῖκες εὗρον ἀνδράσιν διαφθοράς.

ἃ δ' ἐνθάδ' εἶχον ἀγάθ' ἄκουσόν μου, πάτερ·
τὴν φιλτάτην μὲν πρῶτον ἀνθρώπῳ σχολὴν
ὄχλον τε μέτριον, οὐδέ μ' ἐξέπληξ' ὁδοῦ
πονηρὸς οὐδείς· κεῖνο δ' οὐκ ἀνασχετόν,
εἴκειν ὁδοῦ χαλῶντα τοῖς κακίοσιν.
θεῶν δ' ἐν εὐχαῖς ἢ λόγοισιν ἦ βροτῶν,
ὑπηρετῶν χαίρουσιν, οὐ γοωμένοις.
καὶ τοὺς μὲν ἐξέπεμπον, οἱ δ' ἧκον ξένοι,
ὥσθ' ἡδὺς ἀεὶ καινὸς ὢν καινοῖσιν ἦν.
ὃ δ' εὐκτὸν ἀνθρώποισι, κἂν ἄκουσιν ᾖ,
δίκαιον εἶναί μ' ὁ νόμος ἡ φύσις θ' ἅμα
παρεῖχε τῷ θεῷ. ταῦτα συννοούμενος
κρείσσω νομίζω τἀνθάδ' ἢ τἀκεῖ, πάτερ.
ἔα δ' ἔμ' αὐτοῦ ζῆν· ἴση γὰρ ἡ χάρις,
μεγάλοισι χαίρειν σμικρά θ' ἡδέως ἔχειν.

ΧΟ. καλῶς ἔλεξας, εἴπερ οὓς ἐγὼ φιλῶ
ἐν τοῖσι σοῖσιν εὐτυχήσουσιν λόγοις.

ΞΟΥ. παῦσαι λόγων τῶνδ', εὐτυχεῖν δ' ἐπίστασο·
θέλω γὰρ οὗπέρ σ' εὗρον ἄρξασθαι, τέκνον,
κοινῆς τραπέζης δαῖτα πρὸς κοινὴν πεσών,
θῦσαί θ' ἅ σου πρὶν γενέθλι' οὐκ ἐθύσαμεν.
καὶ νῦν μὲν ὡς δὴ ξένον ἄγων σ' ἐφέστιον
δείπνοισι τέρψω· τῆς δ' Ἀθηναίων χθονὸς
ἄξω θεατὴν δῆθεν, ὡς οὐκ ὄντ' ἐμόν.
καὶ γὰρ γυναῖκα τὴν ἐμὴν οὐ βούλομαι
λυπεῖν ἄτεκνον οὖσαν αὐτὸς εὐτυχῶν.
χρόνῳ δὲ καιρὸν λαμβάνων προσάξομαι
δάμαρτ' ἐᾶν σε σκῆπτρα τἄμ' ἔχειν χθονός.
Ἴωνα δ' ὀνομάζω σε, τῇ τύχῃ πρέπον,
ὁθούνεκ' ἀδύτων ἐξιόντι μοι θεοῦ
ἴχνος συνῆψας πρῶτος. ἀλλὰ τῶν φίλων
πλήρωμ' ἀθροίσας βουθύτῳ σὺν ἡδονῇ

πρόσειπε, μέλλων Δελφίδ᾽ ἐκλιπεῖν πόλιν.
ὑμῖν δὲ σιγᾶν, δμωίδες, λέγω τάδε,
ἢ θάνατον εἰπούσαισι πρὸς δάμαρτ᾽ ἐμήν.

ΙΩΝ. στείχοιμ᾽ ἄν· ἓν δὲ τῆς τύχης ἄπεστί μοι·
εἰ μὴ γὰρ ἥτις μ᾽ ἔτεκεν εὑρήσω, πάτερ,
ἀβίωτον ἡμῖν· εἰ δ᾽ ἐπεύξασθαι χρεών,
ἐκ τῶν Ἀθηνῶν μ᾽ ἡ τεκοῦσ᾽ εἴη γυνή,
ὥς μοι γένηται μητρόθεν παρρησία.
καθαρὰν γὰρ ἤν τις εἰς πόλιν πέσῃ ξένος,
κἂν τοῖς νόμοισιν ἀστὸς ᾖ, τό γε στόμα
δοῦλον πέπαται κοὐκ ἔχει παρρησίαν.

ΧΟ. ὁρῶ δάκρυα καὶ πενθίμους στρ.
ἀλάστων στεναγμάτων εἰσβολάς,
ὅταν ἐμὰ τύραννος εὐπαιδίαν
πόσιν ἔχοντ᾽ εἰδῇ,
αὐτὴ δ᾽ ἄπαις ᾖ καὶ λελειμμένη τέκνων.
τίν᾽, ὦ παῖ πρόμαντι Λατοῦς ἔχρη-
σας ὑμνῳδίαν;
πόθεν ὁ παῖς ὅδ᾽ ἀμφὶ ναοὺς σέθεν
τρόφιμος ἐξέβα, γυναικῶν τίνος;
οὐ γάρ με σαίνει
θέσφατα, μή τιν᾽ ἔχῃ δόλον.
δειμαίνω συμφορὰν
ἐφ᾽ ὅ ποτε βάσεται.
ἄτοπος ἄτοπα γὰρ παραδίδωσί μοι
τάδε θεοῦ φήμα.
ἔχει δόλον τύχαν θ᾽ ὁ παῖς
ἄλλων τραφεὶς ἐξ αἱμάτων.
τίς οὐ τάδε ξυνοίσεται;
φίλαι, πότερ᾽ ἐμᾷ δεσποίνᾳ ἀντ.
τάδε τορῶς ἐς οὖς γεγωνήσομεν,

676 — 694 = 695 — 713

πόσιν, ἐν ᾧ τὰ πάντ᾽ ἔχουσ᾽ ἐλπίδων
μέτοχος ἦν τλάμων;
νῦν δ᾽ ἡ μὲν ἔρρει συμφοραῖς, ὁ δ᾽ εὐτυχεῖ,
πολιὸν εἰσπεσοῦσα γῆρας, πόσις δ᾽
ἀτίετος φίλων.
μέλεος, ὃς θυραῖος ἐλθὼν δόμους
μέγαν ἐς ὄλβον οὐκ ἔσωσεν τύχας.
ὄλοιτ᾽ ὄλοιτ᾽ ὦ
πότνιαν ἐξαπαφὼν ἐμάν·
καὶ θεοῖσιν μὴ τύχοι
καλλίφλογα πέλανον ἐπὶ
πυρὶ καθαγνίσας· τὸ δ᾽ ἐμὸν εἴσεται
* * * * *
** * τυραννίδος φίλα.*
ἤδη πέλας δείπνων κυρεῖ
παῖς καὶ πατὴρ νέος νέων.
ἰὼ δειράδες Παρνασοῦ πέτρας
ἔχουσαι σκόπελον οὐράνιόν θ᾽ ἕδραν,
ἵνα Βάκχιος ἀμφιπύρους ἀνέχων πεύκας
λαιψηρὰ πηδᾷ νυκτιπόλοις ἅμα σὺν Βάκχαις.
μή τί ποτ᾽ εἰς ἐμὰν πόλιν ἵκοιθ᾽ ὁ παῖς,
νέαν δ᾽ ἁμέραν ἀπολιπὼν θάνοι.
στενομένα γὰρ ἂν πόλις ἔχοι σκῆψιν
ξενικὸν εἰσβολάν.
ἅλις δ᾽ ὁ πάρος ἀρχαγὸς ὢν
Ἐρεχθεὺς ἄναξ.
ΚΡ. *ὦ πρέσβυ παιδαγώγ᾽ Ἐρεχθέως πατρὸς*
τοὐμοῦ ποτ᾽ ὄντος, ἡνίκ᾽ ἦν ἔτ᾽ ἐν φάει,
ἔπαιρε σαυτὸν πρὸς θεοῦ χρηστήρια,
ὥς μοι συνησθῇς, εἴ τι Λοξίας ἄναξ
θέσπισμα παίδων εἰς γονὰς ἐφθέγξατο·
σὺν τοῖς φίλοις γὰρ ἡδὺ μὲν πράσσειν καλῶς·

ὃ μὴ γένοιτο δ', εἴ τι τυγχάνοι κακόν,
εἰς ὄμματ' εὔνου φωτὸς ἐμβλέψαι γλυκύ.
ἐγὼ δέ σ', ὥσπερ καὶ σὺ πατέρ' ἐμόν ποτε,
δέσποιν' ὅμως οὖσ' ἀντικηδεύω πατρός.
ΠΑΙ. ὦ θύγατερ, ἄξι' ἀξίων γεννητόρων
ἤθη φυλάσσεις κοὐ καταισχύνασ' ἔχεις
τοὺς σοὺς παλαιοὺς ἐκγόνους αὐτόχθονας.
ἕλχ' ἕλκε πρὸς μέλαθρα καὶ κόμιζέ με.
αἰπεινά τοι μαντεῖα· τοῦ γήρως δέ μοι
συνεκπονοῦσα κῶλον ἰατρὸς γενοῦ.
ΚΡ. ἕπου νυν· ἴχνος δ' ἐκφύλασσ' ὅπου τίθης.
ΠΑΙ. ἰδού.
τὸ τοῦ ποδὸς μὲν βραδύ, τὸ τοῦ δὲ νοῦ ταχύ.
ΚΡ. βάκτρῳ δ' ἐρείδου περιφερῆ στίβον χθονός.
ΠΑΙ. καὶ τοῦτο τυφλόν, ὅταν ἐγὼ βλέπω βραχύ.
ΚΡ. ὀρθῶς ἔλεξας· ἀλλὰ μὴ πάρες κόπῳ.
ΠΑΙ. οὔκουν ἑκών γε· τοῦ δ' ἀπόντος οὐ κρατῶ.
ΚΡ. γυναῖκες, ἱστῶν τῶν ἐμῶν καὶ κερκίδος
δούλευμα πιστόν, τίνα τύχην λαβὼν πόσις
βέβηκε παίδων ὧνπερ οὕνεχ' ἥκομεν;
σημήνατ'· εἰ γὰρ ἀγαθά μοι μηνύσετε,
οὐκ εἰς ἄπιστον δεσπότας βαλεῖς χαράν.
ΧΟ. ἰὼ δαῖμον.
ΚΡ. τὸ φροίμιον μὲν τῶν λόγων οὐκ εὐτυχές.
ΧΟ. ἰὼ τλᾶμον.
ΠΑΙ. ἀλλ' ἦ τι θεσφάτοισι δεσποτῶν νοσῶ;
ΧΟ. εἶεν· τί δρῶμεν, θάνατος ὧν κεῖται πέρι;
ΚΡ. τίς ἥδε μοῦσα, χὠ φόβος τίνων πέρι;
ΧΟ. εἴπωμεν ἢ σιγῶμεν; ἢ τί δράσομεν;
ΚΡ. εἴφ'· ὡς ἔχεις γε συμφοράν τιν' εἰς ἐμέ.
ΧΟ. εἰρήσεταί τοι, κεἰ θανεῖν μέλλω διπλῆ.

οὐκ ἔστι σοι, δέσποιν', ἐπ' ἀγκάλαις λαβεῖν
τέκν' οὐδὲ μαστῷ σῷ προσαρμόσαι ποτέ.
ΚΡ. ὤμοι, θάνοιμι.
ΠΑΙ. θύγατερ. ΚΡ. ὦ τάλαιν' ἐγὼ συμφορᾶς.
ἔλαβον, ἔπαθον ἄχος ἄβιον, ὦ φίλαι.
ΠΑΙ. διοιχόμεσθα, τέκνον.
ΚΡ. αἰαῖ αἰαῖ·
διανταῖος ἔτυπεν [ἔτυπεν] ὀδύνα με πνευ-
μόνων τῶνδ' ἔσω.
ΠΑΙ. μήπω στενάξῃς, ΚΡ. ἀλλὰ πάρεισι γόοι.
ΠΑΙ. πρὶν ἂν μάθωμεν, ΚΡ. ἀγγελίαν τίνα μοι;
ΠΑΙ. εἰ ταὐτὰ πράσσων δεσπότης τῆς συμφορᾶς
κοινωνός ἐστιν, ἢ μόνη σὺ δυστυχεῖς.
ΧΟ. κείνῳ μέν, ὦ γεραιέ, παῖδα Λοξίας
ἔδωκεν, ἰδίᾳ δ' εὐτυχεῖ ταύτης δίχα.
ΚΡ. τόδ' ἐπὶ τῷδε κακὸν ἄκρον ἔλακες ἔλακες
ἄχος ἐμοὶ στένειν.
ΠΑΙ. πότερα δὲ φῦναι δεῖ γυναικὸς ἔκ τινος
τὸν παῖδ' ὃν εἶπας, ἢ γεγῶτ' ἐθέσπισεν;
ΧΟ. ἤδη πεφυκότ' ἐκτελῆ νεανίαν
δίδωσιν αὐτῷ Λοξίας· παρῆν δ' ἐγώ.
ΚΡ. πῶς φῄς; ἄφατον ἄφατον * ἀναύδητον
λόγον ἐμοὶ θροεῖς.
ΠΑΙ. κἄμοιγε. πῶς δ' ὁ χρησμὸς ἐκπεραίνεται
σαφέστερόν μοι φράζε, χὤστις ἔσθ' ὁ παῖς.
ΧΟ. ὅτῳ ξυναντήσειεν ἐκ θεοῦ συθεὶς
πρώτῳ πόσις σός, παῖδ' ἔδωκ' αὐτῷ θεός.
ΚΡ. ὀτοτοτοῖ· τὸ δ' ἐμὸν ἄτεκνον ἄτεκνον ἔλα-
βεν ἔλαβεν ἄρα βίοτον, ἐν ἐρημίᾳ δ'
ὀρφανοὺς δόμους οἰκήσω.
ΠΑΙ. τίς οὖν ἐχρήσθη; τῷ συνῆψ' ἴχνος ποδὸς
πόσις ταλαίνης; πῶς δὲ ποῦ νιν εἰσιδών;

ΧΟ. οἶσθ', ὦ φίλη δέσποινα, τὸν νεανίαν
ὃς τόνδ' ἔσαιρε ναόν; οὗτος ἔσθ' ὁ παῖς.
ΚΡ. ἀν' ὑγρὸν ἀμπταίην αἰθέρα πόρσω γαί-
ας Ἑλλανίας, ἀστέρας ἑσπέρους,
οἷον οἷον ἄλγος ἔπαθον φίλαι.
ΠΑΙ. ὄνομα δὲ ποῖον αὐτὸν ὀνομάζει πατήρ;
οἶσθ', ἢ σιωπῇ τοῦτ' ἀκύρωτον μένει;
ΧΟ. Ἴων', ἐπείπερ πρῶτος ἤντησεν πατρί.
ΠΑΙ. μητρὸς δ' ὁποίας ἐστίν; ΧΟ. οὐκ ἔχω φράσαι.
φροῦδος δ', ἵν' εἰδῇς πάντα τἀπ' ἐμοῦ, γέρον,
παιδὸς προθύσων ξένια καὶ γενέθλια,
σκηνὰς ἐς ἱερὰς τῆσδε λαθραίως πόσις,
κοινῇ ξυνάψων δαῖτα παιδὶ τῷ νέῳ.
ΠΑΙ. δέσποινα, προδεδόμεσθα, σὺν γάρ σοι νοσῶ,
τοῦ σοῦ πρὸς ἀνδρὸς καὶ μεμηχανημένως
ὑβριζόμεσθα δωμάτων τ' Ἐρεχθέως
ἐκβαλλόμεσθα· καὶ σὸν οὐ στυγῶν πόσιν
λέγω, σὲ μέντοι μᾶλλον ἢ κεῖνον φιλῶν·
ὅστις σε γήμας ξένος ἐπεισελθὼν πόλιν
καὶ δῶμα καὶ σὴν παραλαβὼν παγκληρίαν,
ἄλλης γυναικὸς παῖδας ἐκκαρπούμενος
λάθρᾳ πέφηνεν· ὡς λάθρᾳ δ', ἐγὼ φράσω·
ἐπεί σ' ἄτεκνον ᾔσθετ', οὐκ ἔστεργέ σοι
ὅμοιος εἶναι τῆς τύχης τ' ἴσον φέρειν,
λαβὼν δὲ δοῦλα λέκτρα νυμφεύσας λάθρᾳ
τὸν παῖδ' ἔφυσεν, ἐξενωμένον δέ τῳ
Δελφῶν δίδωσιν ἐκτρέφειν· ὁ δ' ἐν θεοῦ
δόμοισιν ἄφετος, ὡς λάθοι, παιδεύεται.
νεανίαν δ' ὡς ᾔσθετ' ἐκτεθραμμένον,
ἐλθεῖν σ' ἔπεισε δεῦρ' ἀπαιδίας χάριν.
κᾆθ' ὁ θεὸς οὐκ ἐψεύσαθ', ὅδε δ' ἐψεύσατο
πάλαι τρέφων τὸν παῖδα, κἄπλεκεν πλοκὰς

τοιάσδ᾿· ἄλους μὲν ἀνέφερ᾿ εἰς τὸν δαίμονα,
λαθὼν δὲ καὶ τὸν χρόνον ἀμύνεσθαι θέλων
τυραννίδ᾿ αὐτῷ περιβαλεῖν ἔμελλε γῆς.
καινὸν δὲ τοὔνομ᾿ ἀνὰ χρόνον πεπλασμένον,
Ἴων, ἰόντι δῆθεν ὅτι συνήντετο.

ΧΟ. οἴμοι, κακούργους ἄνδρας ὡς ἀεὶ στυγῶ,
οἳ συντιθέντες τἄδικ᾿ εἶτα μηχαναῖς
κοσμοῦσι. φαῦλον χρηστὸν ἂν λαβεῖν φίλον
θέλοιμι μᾶλλον ἢ κακὸν σοφώτερον.

ΠΑΙ. καὶ τῶνδ᾿ ἁπάντων ἔσχατον πείσει κακόν·
ἀμήτορ᾿, ἀναρίθμητον, ἐκ δούλης τινὸς
γυναικός, εἰς σὸν δῶμα δεσπότην ἄγει.
ἁπλοῦν ἂν ἦν γὰρ τὸ κακόν, εἰ παρ᾿ εὐγενοῦς
μητρός, πιθών σε, σὴν λέγων ἀπαιδίαν,
ἐσῴκισ᾿ οἴκους· εἰ δὲ σοὶ τόδ᾿ ἦν πικρόν,
τῶν Αἰόλου νιν χρῆν ὀρεχθῆναι γάμων.
ἐκ τῶνδε δεῖ σε δὴ γυναικεῖόν τι δρᾶν·
ἢ γὰρ ξίφος λαβοῦσαν ἢ δόλῳ τινὶ
ἢ φαρμάκοισι σὸν κατακτεῖναι πόσιν
καὶ παῖδα, πρὶν σοὶ θάνατον ἐκ κείνων μολεῖν.
[εἰ γάρ γ᾿ ὑφήσεις τοῦδ᾿, ἀπαλλάξει βίου·
δυοῖν γὰρ ἐχθροῖν εἰς ἓν ἐλθόντοιν στέγος,
ἢ θάτερον δεῖ δυστυχεῖν ἢ θάτερον.]
ἐγὼ μὲν οὖν σοι καὶ συνεκπονεῖν θέλω,
καὶ συμφονεύειν παῖδ᾿ ἐπεισελθὼν δόμοις
οὗ δαῖθ᾿ ὁπλίζει, καὶ τροφεῖα δεσπόταις
ἀποδοὺς θανεῖν τε ζῶν τε φέγγος εἰσορᾶν.
ἓν γάρ τι τοῖς δούλοισιν αἰσχύνην φέρει,
τοὔνομα· τὰ δ᾿ ἄλλα πάντα τῶν ἐλευθέρων
οὐδεὶς κακίων δοῦλος, ὅστις ἐσθλὸς ᾖ.

ΧΟ. κἀγώ, φίλη δέσποινα, συμφορὰν θέλω
κοινουμένη τήνδ᾿ ἢ θανεῖν ἢ ζῆν καλῶς.

ΚΡ. ὦ ψυχά, πῶς σιγάσω;
πῶς δὲ σκοτίας ἀναφήνω
εὐνάς, αἰδοῦς δ' ἀπολειφθῶ;
τί γὰρ ἐμπόδιον κώλυμ' ἔτι μοι;
πρὸς τίν' ἀγῶνας τιθέμεσθ' ἀρετῆς,
οὐ πόσις ἡμῶν προδότης γέγονεν;
στέρομαι δ' οἴκων, στέρομαι παίδων,
φροῦδαι δ' ἐλπίδες, ἃς διαθέσθαι
χρῄζουσα καλῶς οὐκ ἐδυνήθην,
σιγῶσα γάμους,
σιγῶσα τόκους πολυκλαύτους.
ἀλλ' οὐ τὸ Διὸς πολύαστρον ἕδος
καὶ τὴν ἐπ' ἐμοῖς σκοπέλοισι θεὰν
λίμνης τ' ἐνύδρου Τριτωνιάδος
πότνιαν ἀκτὰν
οὐκέτι κρύψω λέχος, ὡς στέρνων
ἀπονησαμένη ῥᾴων ἔσομαι.
στάζουσι κόραι δακρύοισιν ἐμαί,
ψυχὰ δ' ἀλγεῖ κακοβουληθεῖσ'
ἔκ τ' ἀνθρώπων ἔκ τ' ἀθανάτων,
οὓς ἀποδείξω
λέκτρων προδότας ἀχαρίστους.
ὦ τᾶς ἑπταφθόγγου μέλπων
κιθάρας ἐνοπάν, ἅτ' ἀγραύλοις
κέρασιν ἐν ἀψύχοις ἀχεῖ
μουσᾶν ὕμνους εὐαχήτους,
σοὶ μομφάν, ὦ Λατοῦς παῖ,
πρὸς τάνδ' αὐγὰν αὐδάσω.
* * * * * * * στρ.
ἦλθές μοι χρυσῷ χαίταν
μαρμαίρων, εὖτ' εἰς κόλπους

887 — 896 = 897 — 906

κρόκεα πέταλα φάρεσιν ἔδρεπον
ἀνθίζειν χρυσανταυγῆ·
λευκοῖς δ᾽ ἐμφὺς καρποῖς χειρῶν
εἰς ἄντρου κοίτας
κραυγάν, ὦ μᾶτέρ, μ᾽ αὐδῶσαν
θεὸς ὁμευνέτας ἆγες ἀναιδείᾳ
Κύπριδι χάριν πράσσων.
τίκτω δ᾽ ἁ δύστηνός σοι ἀντ.
κοῦρον, τὸν φρίκᾳ ματρὸς
εἰς εὐνὰν βάλλω τὰν σάν,
ἵνα με λέχεσι μέλεα μέλεος
ἐξεύξω τὰν δύστανον.
οἴμοι μοι· καὶ νῦν ἔρρει πτανοῖς
ἁρπασθεὶς θοίνα
παῖς μοι καὶ σὸς τλάμων * *
* * * * * * * * * * * *
σὺ δὲ κιθάρᾳ κλάζεις παιᾶνας μέλπων.
ὠή, τὸν Λατοῦς αὐδῶ,
ὃς ὀμφὰν κληροῖς
πρὸς χρυσέους θάκους καὶ
γαίας μεσσήρεις ἕδρας,
εἰς οὖς αὐδὰν καρύξω·
ἰὼ κακὸς εὐνάτωρ,
ὃς τῷ μὲν ἐμῷ νυμφεύτᾳ
χάριν οὐ προλαβὼν
παῖδ᾽ εἰς οἴκους οἰκίζεις·
ὁ δ᾽ ἐμὸς γενέτας καὶ σός γ᾽ ἀμαθὴς
οἰωνοῖς ἔρρει συλαθείς, [οἰκεῖα]
σπάργανα ματέρος ἐξαλλάξας.
μισεῖ σ᾽ ἁ Δᾶλος καὶ δάφνας
ἔρνεα φοίνικα παρ᾽ ἁβροκόμαν,

ἔνθα λοχεύματα σέμν᾽ ἐλοχεύσατο
Λατὼ Δίοισί σε καρποῖς.
ΧΟ. οἴμοι, μέγας θησαυρὸς ὡς ἀνοίγνυται
κακῶν, ἐφ᾽ οἷσι πᾶς ἂν ἐκβάλοι δάκρυ.
ΠΑΙ. ὦ θύγατερ, οὔτοι σὸν βλέπων ἐμπίπλαμαι
πρόσωπον, ἔξω δ᾽ ἐγενόμην γνώμης ἐμῆς.
κακῶν γὰρ ἄρτι κῦμ᾽ ὑπεξαντλῶν φρενί,
πρύμνηθεν αἴρει μ᾽ ἄλλο σῶν λόγων ὕπο,
οὓς ἐκβαλοῦσα τῶν παρεστώτων κακῶν
μετῆλθες ἄλλων πημάτων καινὰς ὁδούς.
τί φής; τίνα λόγον Λοξίου κατηγορεῖς;
ποῖον τεκεῖν φὴς παῖδα; ποῦ θεῖναι πόλεως
θηρσὶν φίλον τύμβευμ᾽; ἄνελθέ μοι πάλιν.
ΚΡ. αἰσχύνομαι μέν σ᾽, ὦ γέρον, λέξω δ᾽ ὅμως.
ΠΑΙ. ὡς συστενάξειν γ᾽ οἶδα γενναίως φίλοις.
ΚΡ. ἄκουε τοίνυν· οἶσθα Κεκροπίας πέτρας
[πρόσβορρον ἄντρον, ἃς Μακρὰς κικλήσκομεν];
ΠΑΙ. οἶδ᾽, ἔνθα Πανὸς ἄδυτα καὶ βωμοὶ πέλας.
ΚΡ. ἐνταῦθ᾽ ἀγῶνα δεινὸν ἠγωνίσμεθα.
ΠΑΙ. τίν᾽; ὡς ἀπαντᾷ δάκρυά μοι τοῖς σοῖς λόγοις.
ΚΡ. Φοίβῳ ξυνῆψ᾽ ἄκουσα δύστηνον γάμον.
ΠΑΙ. ὦ θύγατερ· ἆρ᾽ ἦν ταῦθ᾽ ἅ γ᾽ ᾐσθόμην ἐγώ;
ΚΡ. οὐκ οἶδ᾽· ἀληθῆ δ᾽ εἰ λέγεις φαίημεν ἄν.
ΠΑΙ. νόσον κρυφαίαν ἡνίκ᾽ ἔστενες λάθρᾳ;
ΚΡ. τοῦτ᾽ ἦν· ἃ νῦν σοι φανερὰ σημαίνω κακά.
ΠΑΙ. κᾆτ᾽ ἐξέκλεψας πῶς Ἀπόλλωνος γάμους;
ΚΡ. ἔτεκον· ἀνάσχου ταῦτ᾽ ἐμοῦ κλύων, γέρον.
ΠΑΙ. ποῦ τίς λοχεύει σ᾽; ἢ μόνη μοχθεῖς τάδε;
ΚΡ. μόνη κατ᾽ ἄντρον οὗπερ ἐξεύχθην γάμοις.
ΠΑΙ. ὁ παῖς δὲ ποῦ ᾽στιν, ἵνα σὺ μηκέτ᾽ ἦς ἄπαις;
ΚΡ. τέθνηκεν, ὦ γεραιέ, θηρσὶν ἐκτεθείς.
ΠΑΙ. τέθνηκ᾽; Ἀπόλλων δ᾽ ὁ κακὸς οὐδὲν ἤρκεσεν;

ΚΡ. οὐκ ἤρκεσ᾽· Ἅιδου δ᾽ ἐν δόμοις παιδεύεται.
ΠΑΙ. τίς γάρ νιν ἐξέθηκεν; οὐ γὰρ δή σύ γε.
ΚΡ. ἡμεῖς, ἐν ὄρφνῃ σπαργανώσαντες πέπλοις.
ΠΑΙ. οὐδὲ ξυνῄδει σοί τις ἔκθεσιν τέκνου;
ΚΡ. αἱ ξυμφοραί γε καὶ τὸ λανθάνειν μόνον.
ΠΑΙ. καὶ πῶς ἐν ἄντρῳ παῖδα σὸν λιπεῖν ἔτλης;
ΚΡ. πῶς δ᾽; οἰκτρὰ πολλὰ στόματος ἐκβαλοῦσ᾽ ἔπη.
ΠΑΙ. φεῦ·
τλήμων σὺ τόλμης, ὁ δὲ θεὸς μᾶλλον σέθεν.
ΚΡ. εἰ παῖδά γ᾽ εἶδες χεῖρας ἐκτείνοντά μοι.
ΠΑΙ. μαστὸν διώκοντ᾽ ἢ πρὸς ἀγκάλαις πεσεῖν;
ΚΡ. ἐνταῦθ᾽, ἵν᾽ οὐκ ὢν ἄδικ᾽ ἔπασχεν ἐξ ἐμοῦ.
ΠΑΙ. σοὶ δ᾽ ἐς τί δόξ᾽ εἰσῆλθεν ἐκβαλεῖν τέκνον;
ΚΡ. ὡς τὸν θεὸν σώσοντα τόν γ᾽ αὑτοῦ γόνον.
ΠΑΙ. οἴμοι, δόμων σῶν ὄλβος ὡς χειμάζεται.
ΚΡ. τί κρᾶτα κρύψας, ὦ γέρον, δακρυρροεῖς;
ΠΑΙ. σὲ καὶ πατέρα σὸν δυστυχοῦντας εἰσορῶν.
ΚΡ. τὰ θνητὰ τοιαῦτ᾽· οὐδὲν ἐν ταὐτῷ μένει.
ΠΑΙ. μή νυν ἔτ᾽ οἴκτων, θύγατερ, ἀντεχώμεθα.
ΚΡ. τί γάρ με χρὴ δρᾶν; ἀπορία τὸ δυστυχεῖν.
ΠΑΙ. τὸν πρῶτον ἀδικήσαντά σ᾽ ἀποτίνου θεόν.
ΚΡ. καὶ πῶς τὰ κρείσσω θνητὸς οὖσ᾽ ὑπερδράμω;
ΠΑΙ. πίμπρη τὰ σεμνὰ Λοξίου χρηστήρια.
ΚΡ. δέδοικα· καὶ νῦν πημάτων ἄδην ἔχω.
ΠΑΙ. τὰ δυνατά νυν τόλμησον, ἄνδρα σὸν κτανεῖν.
ΚΡ. αἰδούμεθ᾽ εὐνὰς τὰς τόθ᾽ ἡνίκ᾽ ἐσθλὸς ἦν.
ΠΑΙ. σὺ δ᾽ ἀλλὰ παῖδα τὸν ἐπὶ σοὶ πεφηνότα.
ΚΡ. πῶς; εἰ γὰρ εἴη δυνατόν· ὡς θέλοιμί γ᾽ ἄν.
ΠΑΙ. ξιφηφόρους σοὺς ὁπλίσασ᾽ ὀπάονας.
ΚΡ. στείχοιμ᾽ ἄν· ἀλλὰ ποῦ γενήσεται τόδε;
ΠΑΙ. ἱεραῖσιν ἐν σκηναῖσιν, οὗ θοινᾷ φίλους.
ΚΡ. ἐπίσημον ὁ φόνος, καὶ τὸ δοῦλον ἀσθενές.

ΠΑΙ. ὤμοι, κακίζει. φέρε, σύ νυν βούλευέ τι.
ΚΡ. καὶ μὴν ἔχω γε δόλια καὶ δραστήρια.
ΠΑΙ. ἀμφοῖν ἂν εἴην τοῖνδ᾽ ὑπηρέτης ἐγώ.
ΚΡ. ἄκουε τοίνυν· οἶσθα γηγενῆ μάχην;
ΠΑΙ. οἶδ᾽, ἣν Φλέγρᾳ Γίγαντες ἔστησαν θεοῖς.
ΚΡ. ἐνταῦθα Γοργόν᾽ ἔτεκε Γῆ, δεινὸν τέρας.
ΠΑΙ. ἦ παισὶν αὑτῆς σύμμαχον, θεῶν πόνον;
ΚΡ. ναί· καί νιν ἔκτειν᾽ ἡ Διὸς Παλλὰς θεά.
ΠΑΙ. ποῖόν τι μορφῆς σχῆμ᾽ ἔχουσαν ἀγρίας;
ΚΡ. θώρακ᾽ ἐχίδνης περιβόλοις ὡπλισμένον.
ΠΑΙ. ἆρ᾽ οὗτός ἐσθ᾽ ὁ μῦθος ὃν κλύω πάλαι;
ΚΡ. ταύτης Ἀθάναν δέρος ἐπὶ στέρνοις ἔχειν.
ΠΑΙ. ἣν αἰγίδ᾽ ὀνομάζουσι, Παλλάδος στολήν;
ΚΡ. τόδ᾽ ἔσχεν ὄνομα θεῶν ὅτ᾽ ἦλθεν εἰς δόρυ.
ΠΑΙ. τί δῆτα, θύγατερ, τοῦτο σοῖς ἐχθροῖς βλάβος;
ΚΡ. Ἐριχθόνιον οἶσθας, τί δ᾽ οὐ μέλλεις, γέρον;
ΠΑΙ. ὃν πρῶτον ὑμῶν πρόγονον ἐξανῆκε γῆ;
ΚΡ. τούτῳ δίδωσι Παλλὰς ὄντι νεογόνῳ
ΠΑΙ. τί χρῆμα; μέλλον γάρ τι προσφέρεις ἔπος.
ΚΡ. δισσοὺς σταλαγμοὺς αἵματος Γοργοῦς ἄπο.
ΠΑΙ. ἰσχὺν ἔχοντας τίνα πρὸς ἀνθρώπου φύσιν;
ΚΡ. τὸν μὲν θανάσιμον, τὸν δ᾽ ἀκεσφόρον νόσων.
ΠΑΙ. ἐν τῷ καθάψασ᾽ ἀμφὶ παιδὶ σώματος;
ΚΡ. χρυσοῖσι δεσμοῖς· ὁ δὲ δίδωσ᾽ ἐμῷ πατρί.
ΠΑΙ. κείνου δὲ κατθανόντος εἰς σ᾽ ἀφίκετο;
ΚΡ. ναί· κἀπὶ καρπῷ γ᾽ αὔτ᾽ ἐγὼ χερὸς φέρω.
ΠΑΙ. πῶς οὖν κέκρανται δίπτυχον δῶρον θεᾶς;
ΚΡ. κοίλης μὲν ὅστις φλεβὸς ἀπέσταξεν φόνος
ΠΑΙ. τί τῷδε χρῆσθαι; δύνασιν ἐκφέρει τίνα;
ΚΡ. νόσους ἀπείργει καὶ τροφὰς ἔχει βίου.
ΠΑΙ. ὁ δεύτερος δ᾽ ἀριθμὸς ὃν λέγεις τί δρᾷ;
ΚΡ. κτείνει, δρακόντων ἰὸς ὢν τῶν Γοργόνος.

ΠΑΙ. εἰς ἓν δὲ κραθέντ᾽ αὐτὸν ἢ χωρὶς φορεῖς;
ΚΡ. χωρίς· κακῷ γὰρ ἐσθλὸν οὐ συμμίγνυται.
ΠΑΙ. ὦ φιλτάτη παῖ, πάντ᾽ ἔχεις ὅσων σε δεῖ.
ΚΡ. τούτῳ θανεῖται παῖς· σὺ δ᾽ ὁ κτείνων ἔσει.
ΠΑΙ. ποῦ καὶ τί δράσας; σὸν λέγειν, τολμᾶν δ᾽ ἐμό
ΚΡ. ἐν ταῖς Ἀθήναις, δῶμ᾽ ὅταν τοὐμὸν μόλῃ.
ΠΑΙ. οὐκ εὖ τόδ᾽ εἶπας· καὶ σὺ γὰρ τοὐμὸν ψέγεις.
ΚΡ. πῶς; ἆρ᾽ ὑπείδου τοῦθ᾽ ὃ κἄμ᾽ εἰσέρχεται;
ΠΑΙ. σὺ παῖδα δόξεις διολέσαι, κεἰ μὴ κτενεῖς.
ΚΡ. ὀρθῶς· φθονεῖν γάρ φασι μητρυιὰς τέκνοις.
ΠΑΙ. αὐτοῦ νυν αὐτὸν κτεῖν᾽, ἵν᾽ ἀρνήσει φόνους.
ΚΡ. προλάζυμαι γοῦν τῷ χρόνῳ τῆς ἡδονῆς.
ΠΑΙ. καὶ σόν γε λήσεις πόσιν ἅ σε σπεύδει λαθεῖν.
ΚΡ. οἶσθ᾽ οὖν ὃ δρᾶσον; χειρὸς ἐξ ἐμῆς λαβὼν
χρύσωμ᾽ Ἀθάνας τόδε, παλαιὸν ὄργανον,
ἐλθὼν ἵν᾽ ἡμῖν βουθυτεῖ λάθρᾳ πόσις,
δείπνων ὅταν λήγωσι καὶ σπονδὰς θεοῖς
μέλλωσι λείβειν, ἐν πέπλοις ἔχων τόδε
κάθες βαλὼν εἰς πῶμα τῷ νεανίᾳ,
ἰδίᾳ δέ, μή τι πᾶσι, χωρίσας ποτὸν
τῷ τῶν ἐμῶν μέλλοντι δεσπόζειν δόμων.
κἄνπερ διέλθῃ λαιμόν, οὔποθ᾽ ἵξεται
κλεινὰς Ἀθήνας, κατθανὼν δ᾽ αὐτοῦ μενεῖ.
ΠΑΙ. σὺ μέν νυν εἴσω προξένων μέθες πόδα·
ἡμεῖς δ᾽ ἐφ᾽ ᾧ τετάγμεθ᾽ ἐκπονήσομεν.
ἄγ᾽, ὦ γεραιὲ πούς, νεανίας γενοῦ
ἔργοισι, κεἰ μὴ τῷ χρόνῳ πάρεστί σοι.
ἐχθρὸν δ᾽ ἐπ᾽ ἄνδρα στεῖχε δεσποτῶν μέτα,
καὶ συμφόνευε καὶ συνεξαίρει δόμων.
τὴν δ᾽ εὐσέβειαν εὐτυχοῦσι μὲν καλὸν
τιμᾶν· ὅταν δὲ πολεμίους δρᾶσαι κακῶς
θέλῃ τις, οὐδεὶς ἐμποδὼν κεῖται νόμος.

ΧΟ. Εἰνοδία θύγατερ Δάματρος, ἃ τῶν στρ.
νυκτιπόλων ἐφόδων ἀνάσσεις
καὶ μεθαμερίων, ὅδωσον δυσθανάτων
κρατήρων πληρώματ᾽, ἐφ᾽ οἷσι πέμπει
πότνια πότνι᾽ ἐμὰ χθονίας
Γοργοῦς λαιμοτόμων ἀπὸ σταλαγμῶν
τῷ τῶν Ἐρεχθεϊδᾶν
δόμων ἐφαπτομένῳ·
μηδέ ποτ᾽ ἄλλος ἄλλων ἀπ᾽ οἴκων
πόλεως ἀνάσσοι
πλὴν τῶν εὐγενετᾶν Ἐρεχθειδᾶν.
εἰ δ᾽ ἀτελὴς θάνατος σπουδαί τε δεσποί- ἀντ.
νας, ὅ τε καιρὸς ἄπεισι τόλμας,
ἅ τε νῦν φέρετ᾽ ἐλπίς, ἢ θηκτὸν ξίφος ἢ
λαιμῶν ἐξάψει βρόχον ἀμφὶ δειρήν,
πάθεσι πάθεα δ᾽ ἐξανύτουσ᾽
εἰς ἄλλας βιότου μορφὰς κάτεισιν.
οὐ γὰρ δόμων γ᾽ ἑτέρους
ἄρχοντας ἀλλοδαποὺς
ζῶσά ποτ᾽ ὀμμάτων ἐν φαενναῖς
ἀνέχοιτ᾽ ἂν αὐγαῖς
ἁ τῶν εὐπατριδᾶν γεγῶσ᾽ οἴκων.
αἰσχύνομαι τὸν πολύυμνον στρ.
θεόν, εἰ παρὰ καλλιχόροισι παγαῖς
λαμπάδα θεωρὸν εἰκάδων
ὄψεται ἐννύχιος ἄυπνος ὤν,
ὅτε καὶ Διὸς ἀστερωπὸς
ἀνεχόρευσεν αἰθήρ,
χορεύει δὲ σελάνα
καὶ πεντήκοντα κόραι

1048—1060 = 1061—1073
1074—1089 = 1090—1105

Νηρέος, αἳ κατὰ πόντον
ἀενάων τε ποταμῶν
δίνας χορευόμεναι,
τὰν χρυσοστέφανον κόραν
καὶ ματέρα σεμνάν·
ἵν' ἐλπίζει βασιλεύσειν
ἄλλων πόνον εἰσπεσὼν
ὁ Φοίβειος ἀλάτας.
ὁρᾶθ' ὅσοι δυσκελάδοισιν ἀντ.
κατὰ μοῦσαν ἰόντες ἀείδεθ' ὕμνοις
ἁμέτερα λέχεα καὶ γάμους
Κύπριδος ἀθεμίτους ἀνοσίους,
ὅσον εὐσεβίᾳ κρατοῦμεν
ἄδικον ἄροτον ἀνδρῶν.
παλίμφαμος ἀοιδὰ
καὶ μοῦσ' εἰς ἄνδρας ἴτω
δυσκέλαδος ἀμφὶ λέκτρων.
δείκνυσι γὰρ ὁ Διὸς ἐκ
παίδων ἀμνημοσύναν,
οὐ κοινὰν τεκέων τύχαν
οἴκοισι φυτεύσας
δεσποίνᾳ· πρὸς δ' Ἀφροδίταν
ἄλλαν θέμενος χάριν
νόθου παιδὸς ἔκυρσεν.
ΘΕ. κλεινήν, γυναῖκες, ποῦ κόρην Ἐρεχθέως
δέσποιναν εὕρω; πανταχῇ γὰρ ἄστεως
ζητῶν νιν ἐξέπλησα κοὐκ ἔχω λαβεῖν.
ΧΟ. τί δ' ἔστιν, ὦ ξύνδουλε; τίς προθυμία
ποδῶν ἔχει σε, καὶ λόγους τίνας φέρεις;
ΘΕ. θηρώμεθ'· ἀρχαὶ δ' ἀπιχώριοι χθονὸς
ζητοῦσιν αὐτήν, ὡς θάνῃ πετρουμένη.

ΧΟ. οἴμοι, τί λέξεις; οὔτι που λελήμμεθα
κρυφαῖον εἰς παῖδ᾽ ἐκπορίζουσαι φόνον;
ΘΕ. ἔγνως· μεθέξεις δ᾽ οὐκ ἐν ὑστάτοις κακοῦ.
ΧΟ. ὤφθη δὲ πῶς τὰ κρυπτὰ μηχανήματα;
ΘΕ. τὸ μὴ δίκαιον τῆς δίκης ἡσσώμενον
ἐξεῦρεν ὁ θεός, οὐ μιανθῆναι θέλων.
ΧΟ. πῶς; ἀντιάζω σ᾽ ἱκέτις ἐξειπεῖν τάδε.
πεπυσμέναι γὰρ εἰ θανεῖν ἡμᾶς χρεών,
ἥδιον ἂν θάνοιμεν, εἴθ᾽ ὁρᾶν φάος.
ΘΕ. ἐπεὶ θεοῦ μαντεῖον ᾤχετ᾽ ἐκλιπὼν
πόσις Κρεούσης, παῖδα τὸν καινὸν λαβὼν
πρὸς δεῖπνα θυσίας θ᾽ ἃς θεοῖς ὡπλίζετο,
Ξοῦθος μὲν ᾤχετ᾽ ἔνθα πῦρ πηδᾷ θεοῦ
βακχεῖον, ὡς σφαγαῖσι Διονύσου πέτρας
δεύσειε δισσὰς παιδὸς ἀντ᾽ ὀπτηρίων,
λέξας· σὺ μὲν νῦν, τέκνον, ἀμφήρεις μένων
σκηνὰς ἀνίστη τεκτόνων μοχθήμασιν.
θύσας δὲ γενέταις θεοῖσιν ἢν μακρὸν χρόνον
μένω, παροῦσι δαῖτες ἔστωσαν φίλοις.
λαβὼν δὲ μόσχους ᾤχεθ᾽· ὁ δὲ νεανίας
σεμνῶς ἀτοίχους περιβολὰς σκηνωμάτων
ὀρθοστάταις ἱδρύεθ᾽ ἡλίου φλόγα
καλῶς φυλάξας, οὔτε πρὸς μέσας βολὰς
ἀκτῖνος, οὔτ᾽ αὖ πρὸς τελευτώσας βίον,
πλέθρου σταθμήσας μῆκος εἰς εὐγωνίαν,
μέτρημ᾽ ἔχουσαν τοὐν μέσῳ γε μυρίων
ποδῶν ἀριθμόν, ὡς λέγουσιν οἱ σοφοί,
ὡς πάντα Δελφῶν λαὸν εἰς θοίνην καλῶν.
λαβὼν δ᾽ ὑφάσμαθ᾽ ἱερὰ θησαυρῶν πάρα
κατεσκίαζε, θαύματ᾽ ἀνθρώποις ὁρᾶν.
πρῶτον μὲν ὀρόφῳ πτέρυγα περιβάλλει πέπλων,
ἀνάθημα Δίου παιδός, οὓς Ἡρακλέης

Ἀμαζόνων σκυλεύματ᾽ ἤνεγκεν θεῷ.
ἐνῆν δ᾽ ὑφανταὶ γράμμασιν τοιαίδ᾽ ὑφαί·
Οὐρανὸς ἀθροίζων ἄστρ᾽ ἐν αἰθέρος κύκλῳ·
ἵππους μὲν ἤλαυν᾽ εἰς τελευταίαν φλόγα
Ἥλιος, ἐφέλκων λαμπρὸν Ἑσπέρου φάος.
μελάμπεπλος δὲ Νὺξ ἀσείρωτον ζυγοῖς
ὄχημ᾽ ἔπαλλεν· ἄστρα δ᾽ ὡμάρτει θεᾷ.
Πλειὰς μὲν ᾔει μεσοπόρου δι᾽ αἰθέρος,
ὅ τε ξιφήρης Ὠρίων· ὕπερθε δὲ
Ἄρκτος στρέφουσ᾽ οὐραῖα χρυσήρει πόλῳ.
κύκλος δὲ πανσέληνος ἠκόντιζ᾽ ἄνω
μηνὸς διχήρης, Ὑάδες τε ναυτίλοις
σαφέστατον σημεῖον, ἥ τε φωσφόρος
Ἕως διώκουσ᾽ ἄστρα. τοίχοισιν δ᾽ ἔπι
ἤμπισχεν ἄλλα βαρβάρων ὑφάσματα,
εὐηρέτμους ναῦς ἀντίας Ἑλληνίσιν,
καὶ μιξόθηρας φῶτας ἱππείας τ᾽ ἄγρας,
ἐλάφων λεόντων τ᾽ ἀγρίων θηράματα.
κατ᾽ εἰσόδους δὲ Κέκροπα θυγατέρων πέλας
σπείραισιν εἰλίσσοντ᾽, Ἀθηναίων τινὸς
ἀνάθημα, χρυσέους τ᾽ ἐν μέσῳ συσσιτίῳ
κρατῆρας ἔστησ᾽· ἐν δ᾽ ἄκροισι βὰς ποσὶ
κῆρυξ ἀνεῖπε τὸν θέλοντ᾽ ἐγχωρίων
ἐς δαῖτα χωρεῖν. ὡς δ᾽ ἐπληρώθη στέγη,
στεφάνοισι κοσμηθέντες, εὐόχθου βορᾶς
ψυχὴν ἐπλήρουν. ὡς δ᾽ ἀνεῖσαν ἡδονήν,
* * παρελθὼν πρέσβυς εἰς μέσον πέδον
ἔστη, γέλων δ᾽ ἔθηκε συνδείπνοις πολύν,
πρόθυμα πράσσων· ἔκ τε γὰρ κρωσσῶν ὕδωρ
χεροῖν ἔπεμπε νίπτρα κἀξεθυμία
σμύρνης ἱδρῶτα χρυσέων τ᾽ ἐκπωμάτων
ἦρχ᾽, αὐτὸς αὑτῷ τόνδε προστάξας πόνον.

ἐπεὶ δ' ἐς αὐλοὺς ἧκον ἐς κρατῆρά τε
κοινόν, γέρων ἔλεξ'· ἀφαρπάζειν χρεὼν
οἰνηρὰ τεύχη σμικρά, μεγάλα δ' εἰσφέρειν,
ὡς θᾶσσον ἔλθωσ' οἵδ' ἐς ἡδονὰς φρενῶν.
ἦν δὴ φερόντων μόχθος ἀργυρηλάτους
χρυσέας τε φιάλας· ὁ δὲ λαβὼν ἐξαίρετον,
ὡς τῷ νέῳ δὴ δεσπότῃ χάριν φέρων,
ἔδωκε πλῆρες τεῦχος, εἰς οἶνον βαλὼν
ὅ φασι δοῦναι φάρμακον δραστήριον
δέσποιναν, ὡς παῖς ὁ νέος ἐκλίποι φάος·
κοὐδεὶς τάδ' ᾔδειν· ἐν χεροῖν ἔχοντι δὲ
σπονδὰς μετ' ἄλλων παιδὶ τῷ πεφηνότι
βλασφημίαν τις οἰκετῶν ἐφθέγξατο·
ὁ δ' ὡς ἐν ἱερῷ μάντεσίν τ' ἐσθλοῖς τραφείς,
οἰωνὸν ἔθετο κἀκέλευσ' ἄλλον νέον
κρατῆρα πληροῦν· τὰς δὲ πρὶν σπονδὰς θεοῦ
δίδωσι γαίᾳ, πᾶσί τ' ἐκσπένδειν λέγει.
σιγὴ δ' ὑπῆλθεν. ἐκ δ' ἐπίμπλαμεν δρόσου
κρατῆρας ἱεροὺς Βιβλίνου τε πώματος.
κἀν τῷδε μόχθῳ πτηνὸς εἰσπίπτει δόμοις
κῶμος πελειῶν· Λοξίου γὰρ ἐν δόμοις
ἄτρεστα ναίουσ'· ὡς δ' ἀπέσπεισαν μέθυ,
εἰς αὐτὸ χείλη πώματος κεχρημέναι
καθῆκαν, εἷλκον δ' εὐπτέρους ἐς αὐχένας.
καὶ ταῖς μὲν ἄλλαις ἄνοσος ἦν λοιβὴ θεοῦ·
ἣ δ' ἕζετ' ἔνθ' ὁ καινὸς ἔσπεισεν γόνος,
ποτοῦ τ' ἐγεύσατ', εὐθὺς εὔπτερον δέμας
ἔσεισε κἀβάκχευσεν, ἐκ δ' ἔκλαγξ' ὄπα
ἀξύνετον αἰάζουσ'· ἐθάμβησεν δὲ πᾶς
θοινατόρων ὅμιλος ὄρνιθος πόνους·
θνῄσκει δ' ἀπασπαίρουσα, φοινικοσκελεῖς
χηλὰς παρεῖσα. γυμνὰ δ' ἐκ πέπλων μέλη

ὑπὲρ τραπέζης ἦχ᾽ ὁ μαντευτὸς γόνος,
βοᾷ δέ· τίς μ᾽ ἔμελλεν ἀνθρώπων κτανεῖν;
σήμαινε, πρέσβυ· σὴ γὰρ ἡ προθυμία,
καὶ πῶμα χειρὸς σῆς ἐδεξάμην πάρα.
εὐθὺς δ᾽ ἐρευνᾷ γραῖαν ὠλένην λαβών,
ἐπ᾽ αὐτοφώρῳ πρέσβυν ὡς ἔχονθ᾽ ἕλοι.
ὤφθη δὲ καὶ κατεῖπ᾽ ἀναγκασθεὶς μόγις
τόλμας Κρεούσης πώματός τε μηχανάς.
θεῖ δ᾽ εὐθὺς ἔξω συλλαβὼν θοινάτορας
ὁ πυθόχρηστος Λοξίου νεανίας,
κἀν κοιράνοισι Πυθικοῖς σταθεὶς λέγει·
ὦ γαῖα σεμνή, τῆς Ἐρεχθέως ὕπο
ξένης γυναικὸς φαρμάκοισι θνήσκομεν.
Δελφῶν δ᾽ ἄνακτες ὥρισαν πετρορριφῆ
θανεῖν ἐμὴν δέσποιναν οὐ ψήφῳ μιᾷ,
τὸν ἱερὸν ὡς κτείνουσαν ἔν τ᾽ ἀνακτόροις
φόνον τιθεῖσαν. πᾶσα δὲ ζητεῖ πόλις
τὴν ἀθλίως σπεύσασαν ἀθλίαν ὁδόν·
παίδων γὰρ ἐλθοῦσ᾽ εἰς ἔρον Φοίβου πάρα,
τὸ σῶμα κοινῇ τοῖς τέκνοις ἀπώλεσεν.

ΧΟ. οὐκ ἔστ᾽ οὐκ ἔστιν θανάτου
παρατροπὰ μελέᾳ μοι·
φανερὰ γὰρ φανερὰ τάδ᾽ ἤδη
σπονδᾶς ἐκ Διονύσου
βοτρύων θοᾶς ἐχίδνας
σταγόσι μιγνυμένας φόνῳ·
φανερὰ θύματα νερτέρων,
συμφοραὶ μὲν ἐμῷ βίῳ,
λεύσιμοι δὲ καταφθοραὶ δεσποίνᾳ.
τίνα φυγὰν πτερόεσσαν ἢ
χθονὸς ὑπὸ σκοτίων μυχῶν
πορευθῶ, θανάτου λεύσιμον ἄταν

ἀποφεύγουσα, τεθρίππων
ὠκίσταν χαλὰν ἐπιβᾶσ',
ἢ πρύμνας ἐπὶ ναῶν;
οὐκ ἔστι λαθεῖν, ὅτε μὴ χρῄζων
θεὸς ἐκκλέπτει.
τί ποτ', ὦ μελέα δέσποινα, μένει
ψυχῇ σε παθεῖν; ἆρα θέλουσαι
δρᾶσαί τι κακὸν τοὺς πέλας αὐταὶ
πεισόμεθ', ὥσπερ τὸ δίκαιον;
ΚΡ. πρόσπολοι, διωκόμεσθα θανασίμους ἐπὶ σφαγάς,
Πυθίᾳ ψήφῳ κρατηθεῖσ', ἔκδοτος δὲ γίγνομαι.
ΧΟ. ἴσμεν, ὦ τάλαινα, τὰς σὰς συμφοράς, ἵν' εἶ τύχης.
ΚΡ. ποῖ φύγω δῆτ'; ἐκ γὰρ οἴκων προὔλαβον μόγις πόδα,
μὴ θανεῖν· κλοπῇ δ' ἀφῖγμαι διαφυγοῦσα πολεμίους.
ΧΟ. ποῖ δ' ἂν ἄλλοσ' ἢ 'πὶ βωμόν; ΚΡ. καὶ τί μοι πλέον τόδε;
ΧΟ. ἱκέτιν οὐ θέμις φονεύειν. ΚΡ. τῷ νόμῳ δέ γ' ὄλλυμαι.
ΧΟ. χειρία γ' ἁλοῦσα. ΚΡ. καὶ μὴν οἵδ' ἀγωνισταὶ πικροὶ
δεῦρ' ἐπείγονται ξιφήρεις. ΧΟ. ἵζε νυν πυρᾶς ἔπι.
κἂν θάνῃς γὰρ ἐνθάδ' οὖσα, τοῖς ἀποκτείνασί σε
προστρόπαιον αἷμα θήσεις· οἰστέον δὲ τὴν τύχην.
ΙΩ. ὦ ταυρόμορφον ὄμμα Κηφισοῦ πατρός,
οἵαν ἔχιδναν τήνδ' ἔφυσας ἢ πυρὸς
δράκοντ' ἀναβλέποντα φοινίαν φλόγα,
ᾗ τόλμα πᾶσ' ἔνεστιν, οὐδ' ἥσσων ἔφυ
Γοργοῦς σταλαγμῶν, οἷς ἔμελλέ με κτανεῖν.
λάζυσθ', ἵν' αὐτῆς τοὺς ἀκηράτους πλόκους

κόμης καταξήνωσι Παρνασοῦ πλάκες,
ὅθεν πετραῖον ἅλμα δισκηθήσεται.
ἐσθλοῦ δ' ἔκυρσα δαίμονος, πρὶν ἐς πόλιν
μολεῖν Ἀθηνῶν χὐπὸ μητρυιὰν πεσεῖν.
ἐν συμμάχοις γὰρ ἀνεμετρησάμην φρένας
τὰς σάς, ὅσον μοι πῆμα δυσμενής τ' ἔφυς·
εἴσω γὰρ ἄν με περιβαλοῦσα δωμάτων
ἄρδην ἂν ἐξέπεμψας εἰς Ἅιδου δόμους.
ἀλλ' οὔτε βωμὸς οὔτ' Ἀπόλλωνος δόμος
σώσει σ'· ὁ δ' οἶκτος ὁ σὸς ἐμοὶ κρείσσων πάρα
καὶ μητρὶ τῇ 'μῇ· καὶ γὰρ εἰ τὸ σῶμά μοι
ἄπεστιν αὐτῆς, τοὔνομ' οὐκ ἄπεστί πω.
ἴδεσθε τὴν πανοῦργον, ἐκ τέχνης τέχνην
οἵαν ἔπλεξε· βωμὸν ἔπτηξεν θεοῦ,
ὡς οὐ δίκην δώσουσα τῶν εἰργασμένων.

ΚΡ. ἀπεννέπω σε μὴ κατακτείνειν ἐμὲ
ὑπέρ τ' ἐμαυτῆς τοῦ θεοῦ θ' ἵν' ἕσταμεν.
ΙΩΝ. τί δ' ἐστὶ Φοίβῳ σοί τε κοινὸν ἐν μέσῳ;
ΚΡ. ἱερὸν τὸ σῶμα τῷ θεῷ δίδωμ' ἔχειν.
ΙΩΝ. κᾆτ' ἔκτανες σὺ φαρμάκοις τὸν τοῦ θεοῦ;
ΚΡ. ἀλλ' οὐκέτ' ἦσθα Λοξίου, πατρὸς δὲ σοῦ.
ΙΩΝ. ἀλλ' ἐγενόμεσθα, πατρὸς δ' οὐσίαν λέγω.
ΚΡ. οὐκοῦν τότ' ἦσθα· νῦν δ' ἐγώ, σὺ δ' οὐκέτ' εἶ.
ΙΩΝ. οὐκ εὐσεβής γε· τἀμὰ δ' εὐσεβῆ τότ' ἦν.
ΚΡ. ἔκτεινά σ' ὄντα πολέμιον δόμοις ἐμοῖς.
ΙΩΝ. οὔτοι σὺν ὅπλοις ἦλθον εἰς τὴν σὴν χθόνα;
ΚΡ. μάλιστα· κἀπίμπρας γ' Ἐρεχθέως δόμους.
ΙΩΝ. ποίοισι πανοῖς ἢ πυρὸς ποίᾳ φλογί;
ΚΡ. ἔμελλες οἰκεῖν τἄμ', ἐμοῦ βίᾳ λαβών.
ΙΩΝ. κἄπειτα τοῦ μέλλειν μ' ἀπέκτεινες φόβῳ;
ΚΡ. ὡς μὴ θάνοιμί γ', εἰ σὺ μὴ μέλλων τύχοις.
ΙΩΝ. φθονεῖς ἄπαις οὖσ', εἰ πατὴρ ἐξεῦρέ με.

ΚΡ. συ τῶν ἀτέκνων δῆτ' ἀναρπάσεις δόμους;
ΙΩΝ. πατρός γε γῆν διδόντος ἣν ἐκτήσατο.
ΚΡ. τοῖς Αἰόλου δὲ πῶς μετῆν τῆς Παλλάδος;
ΙΩΝ. ὅπλοισιν αὐτὴν οὐ λόγοις ἐρρύσατο.
ΚΡ. ἐπίκουρος οἰκήτωρ γ' ἂν οὐκ εἴη χθονός.
ΙΩΝ. ἡμῖν δέ γ' ἀλλὰ πατρικῆς οὐκ ἦν μέρος;
ΚΡ. ὅσ' ἀσπὶς ἔγχος θ'· ἥδε σοὶ παμπησία.
ΙΩΝ. ἔκλειπε βωμὸν καὶ θεηλάτους ἕδρας.
ΚΡ. τὴν σὴν ὅπου σοι μητέρ' ἐστὶ νουθέτει.
ΙΩΝ. σὺ δ' οὐχ ὑφέξεις ζημίαν, κτείνουσ' ἐμέ;
ΚΡ. ἤν γ' ἐντὸς ἀδύτων τῶνδέ με σφάξαι θέλῃς.
ΙΩΝ. τίς ἡδονή σοι θεοῦ θανεῖν ἐν στέμμασι;
ΚΡ. λυπήσομέν τιν', ὧν λελυπήμεσθ' ὕπο.
ΙΩΝ. φεῦ.
δεινόν γε, θνητοῖς τοὺς νόμους ὡς οὐ καλῶς
ἔθηκεν ὁ θεὸς οὐδ' ἀπὸ γνώμης σοφῆς·
τοὺς μὲν γὰρ ἀδίκους βωμὸν οὐχ ἵζειν ἐχρῆν,
ἀλλ' ἐξελαύνειν· οὐδὲ γὰρ ψαύειν καλὸν
θεῶν πονηρὰν χεῖρα, τοῖσι δ' ἐνδίκοις
ἱερὰ καθίζειν, ὅστις ἠδικεῖτ', ἐχρῆν,
καὶ μὴ 'πὶ ταὐτὸ τοῦτ' ἰόντ' ἔχειν ἴσον
τόν τ' ἐσθλὸν ὄντα τόν τε μὴ θεῶν πάρα.
ΠΥ. ἐπίσχες, ὦ παῖ· τρίποδα γὰρ χρηστήριον
λιποῦσα θριγκοῦ τοῦδ' ὑπερβάλλω πόδα
Φοίβου προφῆτις, τρίποδος ἀρχαῖον νόμον
σῴζουσα, πασῶν Δελφίδων ἐξαίρετος.
ΙΩΝ. χαῖρ' ὦ φίλη μοι μῆτερ, οὐ τεκοῦσά περ.
ΠΥ. ἀλλ' οὖν ἐλεγόμεσθ'· ἡ φάτις δ' οὔ μοι πικρά.
ΙΩΝ. ἤκουσας ὥς μ' ἔκτεινεν ἥδε μηχαναῖς;
ΠΥ. ἤκουσα· καὶ σύ γ' ὠμὸς ὢν ἁμαρτάνεις.
ΙΩΝ. οὐ χρή με τοὺς κτείνοντας ἀνταπολλύναι;
ΠΥ. προγονοῖς δάμαρτες δυσμενεῖς ἀεί ποτε.

ΙΩΝ. ἡμεῖς δὲ μητρυιαῖς γε πάσχοντες κακῶς.
ΠΥ. μὴ ταῦτα· λείπων ἱερὰ καὶ στείχων πάτραν
ΙΩΝ. τί δή με δρᾶσαι νουθετούμενον χρεών;
ΠΥ. καθαρὸς Ἀθήνας ἔλθ᾽ ὑπ᾽ οἰωνῶν καλῶν.
ΙΩΝ. καθαρὸς ἅπας τοι πολεμίους ὃς ἂν κτάνῃ.
ΠΥ. μὴ σύ γε· παρ᾽ ἡμῶν δ᾽ ἔκλαβ᾽ οὓς ἔχω λόγους.
ΙΩΝ. λέγοις ἄν· εὔνους δ᾽ οὖσ᾽ ἐρεῖς ὅσ᾽ ἂν λέγῃς.
ΠΥ. ὁρᾷς τόδ᾽ ἄγγος χερὸς ὑπ᾽ ἀγκάλαις ἐμαῖς;
ΙΩΝ. ὁρῶ παλαιὰν ἀντίπηγ᾽ ἐν στέμμασιν.
ΠΥ. ἐν τῇδέ σ᾽ ἔλαβον νεόγονον βρέφος ποτέ.
ΙΩΝ. τί φῄς; ὁ μῦθος εἰσενήνεκται νέος.
ΠΥ. σιγῇ γὰρ εἶχον αὐτά· νῦν δὲ δείκνυμεν.
ΙΩΝ. πῶς οὖν ἔκρυπτες τότε λαβοῦσ᾽ ἡμᾶς πάλαι;
ΠΥ. ὁ θεὸς ἐβούλετ᾽ ἐν δόμοις σ᾽ ἔχειν λάτριν.
ΙΩΝ. νῦν δ᾽ οὐχὶ χρῄζει; τῷ τόδε γνῶναί με χρή;
ΠΥ. πατέρα κατειπὼν τῆσδέ σ᾽ ἐκπέμπει χθονός.
ΙΩΝ. σὺ δ᾽ ἐκ κελευσμῶν ἢ πόθεν σῴζεις τάδε;
ΠΥ. ἐνθύμιόν μοι τότε τίθησι Λοξίας
ΙΩΝ. τί χρῆμα δρᾶσαι; λέγε, πέραινε σοὺς λόγους.
ΠΥ. σῶσαι τόδ᾽ εὕρημ᾽ εἰς τὸν ὄντα νῦν χρόνον.
ΙΩΝ. ἔχει δέ μοι τί κέρδος ἢ τίνα βλάβην;
ΠΥ. ἐνθάδε κέκρυπται σπάργαν᾽ οἷς ἐνῆσθα σύ.
ΙΩΝ. μητρὸς τάδ᾽ ἡμῖν ἐκφέρεις ζητήματα;
ΠΥ. ἐπεί γ᾽ ὁ δαίμων βούλεται· πάροιθε δ᾽ οὔ.
ΙΩΝ. ὦ μακαρίων μοι φασμάτων ἥδ᾽ ἡμέρα.
ΠΥ. λαβὼν νυν αὐτὰ τὴν τεκοῦσαν ἐκπόνει.
πᾶσαν δ᾽ ἐπελθὼν Ἀσιάδ᾽ Εὐρώπης θ᾽ ὅρους
γνώσει τάδ᾽ αὐτός. τοῦ θεοῦ δ᾽ ἕκατί σε
ἔθρεψά τ᾽, ὦ παῖ, καὶ τάδ᾽ ἀποδίδωμί σοι,
ἃ κεῖνος ἀκέλευστόν μ᾽ ἐβουλήθη λαβεῖν
σῶσαί θ᾽· ὅτου δ᾽ ἐβούλετ᾽, οὐκ ἔχω λέγειν.
ᾔδει δὲ θνητῶν οὔτις ἀνθρώπων τάδε

ἔχοντας ἡμᾶς, οὐδ᾽ ἵν᾽ ἦν κεκρυμμένα.
καὶ χαῖρ᾽· ἴσον γάρ σ᾽ ὡς τεκοῦσ᾽ ἀσπάζομαι.
ἄρξαι δ᾽ ὅθεν σὴν μητέρα ζητεῖν σε χρή·
πρῶτον μὲν εἴ τις Δελφίδων τεκοῦσά σε
εἰς τούσδε ναοὺς ἐξέθηκε παρθένος,
ἔπειτα δ᾽ εἴ τις Ἑλλάς· ἐξ ἡμῶν δ᾽ ἔχεις
ἅπαντα Φοίβου θ᾽, ὃς μετέσχε τῆς τύχης.
ΙΩΝ. φεῦ φεῦ· κατ᾽ ὄσσων ὡς ὑγρὸν βάλλω δάκρυ,
ἐκεῖσε τὸν νοῦν δούς, ὅθ᾽ ἡ τεκοῦσά με
κρυφαῖα νυμφευθεῖσ᾽ ἀπημπόλα λάθρᾳ
καὶ μαστὸν οὐχ ὑπέσχεν· ἀλλ᾽ ἀνώνυμος
ἐν θεοῦ μελάθροις εἶχον οἰκέτην βίον.
τὰ τοῦ θεοῦ μὲν χρηστά, τοῦ δὲ δαίμονος
βαρέα· χρόνον γὰρ ὅν μ᾽ ἐχρῆν ἐν ἀγκάλαις
μητρὸς τρυφῆσαι καί τι τερφθῆναι βίου,
ἀπεστερήθην φιλτάτης μητρὸς τροφῆς.
τλήμων δὲ χἠ τεκοῦσά μ᾽, ὡς ταὐτὸν πάθος
πέπονθε, παιδὸς ἀπολέσασα χαρμονάς.
καὶ νῦν λαβὼν τήνδ᾽ ἀντίπηγ᾽ οἴσω θεῷ
ἀνάθημ᾽, ἵν᾽ εὕρω μηδὲν ὧν οὐ βούλομαι.
εἰ γάρ με δούλη τυγχάνει τεκοῦσά τις,
εὑρεῖν κάκιον μητέρ᾽ ἢ σιγῶντ᾽ ἐᾶν.
ὦ Φοῖβε, ναοῖς ἀνατίθημι τήνδε σοῖς.
καίτοι τί πάσχω; τοῦ θεοῦ προθυμίᾳ
πολεμῶ, τὰ μητρὸς σύμβολ᾽ ὃς σέσωκέ μοι.
ἀνοικτέον τάδ᾽ ἐστὶ καὶ τολμητέον.
τὰ γὰρ πεπρωμέν᾽ οὐδ᾽ ὑπερβαίην ποτ᾽ ἄν.
ὦ στέμμαθ᾽ ἱερά, τί ποτέ μοι κεκεύθατε,
καὶ σύνδεθ᾽, οἷσι τἄμ᾽ ἐφρουρήθη φίλα;
ἰδοὺ περίπτυγμ᾽ ἀντίπηγος εὐκύκλου
ὡς οὐ γεγήρακ᾽ ἔκ τινος θεηλάτου,

εὐρώς τ' ἄπεστι πλεγμάτων· ὁ δ' ἐν μέσῳ
χρόνος πολὺς δὴ τοῖσδε θησαυρίσμασιν.
ΚΡ. τί δῆτα φάσμα τῶν ἀνελπίστων ὁρῶ;
ΙΩΝ. σίγα σύ· πολλὴ καὶ πάροιθεν ἦσθά μοι.
ΚΡ. οὐκ ἐν σιωπῇ τἀμά· μή με νουθέτει.
ὁρῶ γὰρ ἄγγος οὗ 'ξέθηκ' ἐγώ ποτε
σέ γ' ὦ τέκνον μοι, βρέφος ἔτ' ὄντα νήπιον,
Κέκροπος ἐς ἄντρα καὶ Μακρὰς πετρηρεφεῖς.
λείψω δὲ βωμὸν τόνδε, κεἰ θανεῖν με χρή.
ΙΩΝ. λάζυσθε τήνδε· θεομανὴς γὰρ ἥλατο
βωμοῦ λιποῦσα ξόανα· δεῖτε δ' ὠλένας.
ΚΡ. σφάζοντες οὐ λήγοιτ' ἄν· ὡς ἀνθέξομαι
καὶ τῆσδε καὶ σοῦ τῶν τε σῶν κεκρυμμένων.
ΙΩΝ. τάδ' οὐχὶ δεινά; ῥυσιάζομαι λόγῳ.
ΚΡ. οὔκ· ἀλλὰ σοῖς φίλοισιν εὑρίσκει φίλος.
ΙΩΝ. ἐγὼ φίλος σός; κᾆτά μ' ἔκτεινες λάθρᾳ;
ΚΡ. παῖς γ', εἰ τόδ' ἐστὶ τοῖς τεκοῦσι φίλτατον.
ΙΩΝ. παῦσαι πλέκουσα· λήψομαί σ' ἐγὼ καλῶς.
ΚΡ. εἰς τοῦθ' ἱκοίμην, τοῦδε τοξεύω, τέκνον.
ΙΩΝ. κενὸν τόδ' ἄγγος ἢ στέγει πλήρωμά τι;
ΚΡ. σά γ' ἔνδυθ', οἷσί σ' ἐξέθηκ' ἐγώ ποτε.
ΙΩΝ. καὶ τοὔνομ' αὐτῶν ἐξερεῖς πρὶν εἰσιδεῖν;
ΚΡ. κἂν μὴ φράσω γε, κατθανεῖν ὑφίσταμαι.
ΙΩΝ. λέγ'. ὡς ἔχει τι δεινὸν ἥ τόλμη γέ σου.
ΚΡ. σκέψασθ' ὃ παῖς ποτ' οὖσ' ὕφασμ' ὕφην' ἐγώ.
ΙΩΝ. ποῖόν τι; πολλὰ παρθένων ὑφάσματα.
ΚΡ. οὐ τέλεον, οἷον δ' ἐκδίδαγμα κερκίδος.
ΙΩΝ. μορφὴν ἔχον τίν'; ὥς με μὴ ταύτῃ λάβῃς.
ΚΡ. Γοργὼν μὲν ἐν μέσοισιν ἠτρίοις πέπλων.
ΙΩΝ. ὦ Ζεῦ, τίς ἡμᾶς ἐκκυνηγετεῖ πότμος;
ΚΡ. κεκρασπέδωται δ' ὄφεσιν αἰγίδος τρόπον.

ΙΩΝ. ἰδού.
τόδ᾽ ἔσθ᾽ ὕφασμα δεσμά θ᾽, ὡς εὑρίσκομεν.
ΚΡ. ὦ χρόνιον ἱστῶν παρθένευμα τῶν ἐμῶν.
ΙΩΝ. ἔστιν τι πρὸς τῷδ᾽, ἢ μόνῳ τῷδ᾽ εὐτυχεῖς;
ΚΡ. δράκοντε μαρμαίροντε παγχρύσῳ γένυι.
ΙΩΝ. δώρημ᾽ Ἀθάνας, ἣ τέκν᾽ ἐντρέφειν; λέγε.
ΚΡ. Ἐριχθονίου γε τοῦ πάλαι μιμήματα.
ΙΩΝ. τί δρᾶν, τί χρῆσθαι, φράζε μοι, χρυσώματι;
ΚΡ. δέραια παιδὶ νεογόνῳ φέρειν, τέκνον.
ΙΩΝ. ἔνεισιν οἵδε· τὸ δὲ τρίτον ποθῶ μαθεῖν.
ΚΡ. στέφανον ἐλαίας ἀμφέθηκά σοι τότε,
ἣν πρῶτ᾽ Ἀθάνας σκόπελος ἐξηνέγκατο,
ὅς, εἴπερ ἔστιν, οὔποτ᾽ ἐκλείπει χλόην
θάλλει δ᾽ ἐλαίας ἐξ ἀγηράτου γεγώς.
ΙΩΝ. ὦ φιλτάτη μοι μῆτερ, ἄσμενός σ᾽ ἰδὼν
πρὸς ἀσμένας πέπτωκα σὰς παρηίδας.
ΚΡ. ὦ τέκνον, ὦ φῶς μητρὶ κρεῖσσον ἡλίου,
συγγνώσεται γὰρ ὁ θεός, ἐν χεροῖν σ᾽ ἔχω,
ἄελπτον εὕρημ᾽, ὃν κατὰ γᾶς ἐνέρων
χθόνιον μετὰ Περσεφόνας τ᾽ ἐδόκουν ναίειν.
ΙΩΝ. ἀλλ᾽ ὦ φίλη μοι μῆτερ, ἐν χεροῖν σέθεν
ὁ κατθανών τε κοὐ θανὼν φαντάζομαι.
ΚΡ. ἰὼ ἰώ, λαμπρᾶς αἰθέρος ἀμπτυχαί,
τίν᾽ αὐδὰν ἀύσω
βοάσω; πόθεν μοι
συνέκυρσ᾽ ἀδόκητος ἁδονά; πόθεν
ἐλάβομεν χαράν;
ΙΩΝ. ἐμοὶ γενέσθαι πάντα μᾶλλον ἄν ποτε,
μῆτερ, παρέστη τῶνδ᾽ ὅπως σός εἰμ᾽ ἐγώ.
ΚΡ. ἔτι φόβῳ τρέμω.
ΙΩΝ. μῶν οὐκ ἔχειν μ᾽ ἔχουσα; ΚΡ. τὰς γὰρ ἐλπίδας
ἀπέβαλον πρόσω.

ἰὼ γύναι, πόθεν πόθεν ἔλαβες ἐμὸν
βρέφος ἐς ἀγκάλας;
τίν᾽ ἀνὰ χέρα δόμους ἔβα Λοξίου;
ΙΩΝ. θεῖον τόδ᾽· ἀλλὰ τἀπίλοιπα τῆς τύχης
εὐδαιμονοῖμεν, ὡς τὰ πρόσθε δυστυχῆ.
ΚΡ. τέκνον, οὐκ ἀδάκρυτος ἐκλοχεύει,
γόοις δὲ ματρὸς ἐκ χερῶν ὁρίζει·
νῦν δὲ γενειάσιν παρὰ σέθεν πνέω
μακαριωτάτας τυχοῦσ᾽ ἁδονᾶς.
ΙΩΝ. τοὐμὸν λέγουσα καὶ τὸ σὸν κοινῶς λέγεις.
ΚΡ. ἄπαιδες οὐκέτ᾽ ἐσμὲν οὐδ᾽ ἄτεκνοι·
δῶμ᾽ ἑστιοῦται, γᾶ δ᾽ ἔχει τυράννους·
ἀνηβᾷ δ᾽ Ἐρεχθεύς,
ὅ τε γηγενέτας δόμος οὐκέτι νύκτα
δέρκεται, ἀελίου δ᾽ ἀναβλέπει λαμπάσιν.
ΙΩΝ. μῆτερ, παρών μοι καὶ πατὴρ μετασχέτω
τῆς ἡδονῆς τῆσδ᾽ ἧς ἔδωχ᾽ ὑμῖν ἐγώ.
ΚΡ. ὦ τέκνον, τί φής; οἷον οἷον ἀνελέγχομαι.
ΙΩΝ. πῶς εἶπας; ΚΡ. ἄλλοθέν γε γέγονας, ἄλλοθεν.
ΙΩΝ. ὤμοι· νόθον με παρθένευμ᾽ ἔτικτε σόν;
ΚΡ. οὐχ ὑπὸ λαμπάδων οὐδὲ χορευμάτων
ὑμέναιος ἐμός,
τέκνον, ἔτικτε σὸν κάρα.
ΙΩΝ. αἰαῖ· πέφυκα δυσγενής, μῆτερ, πόθεν;
ΚΡ. ἴστω Γοργοφόνα, ΙΩΝ. τί τοῦτ᾽ ἔλεξας;
ΚΡ. ἃ σκοπέλοις ἐπ᾽ ἐμοῖς
τὸν ἐλαιοφυῆ πάγον θάσσει.
ΙΩΝ. λέγεις λέγεις μοι δόλια κοὐ σαφῆ τάδε.
ΚΡ. παρ᾽ ἀηδόνιον πέτραν Φοίβῳ
ΙΩΝ. τί Φοῖβον αὐδᾷς;
ΚΡ. κρυπτόμενον λέχος ηὐνάσθην.
ΙΩΝ. λέγ᾽· ὡς ἐρεῖς τι κεδνὸν εὐτυχές τέ μοι.

ΚΡ. δεκάτῳ δέ σε μηνὸς ἐν
κύκλῳ κρύφιον ὠδῖν᾽ ἔτεκον Φοίβῳ.
ΙΩΝ. ὦ φίλτατ᾽ εἰποῦσ᾽, εἰ λέγεις ἐτήτυμα.
ΚΡ. παρθένια δ᾽ ἐμᾶς ματέρος
σπάργαν᾽ ἀμφίβολά σοι τάδ᾽ ἐξ-
ῆψα, κερκίδος ἐμᾶς πλάνους.
γάλακτι δ᾽ οὐκ ἐπέσχον, οὐδὲ μαστῷ
τροφεῖα ματρὸς οὐδὲ λουτρὰ χεροῖν,
ἀνὰ δ᾽ ἄντρον ἔρημον οἰωνῶν
γαμφηλαῖς φόνευμα θοίναμά τ᾽ εἰς
Ἅιδαν ἐκβάλλει.
ΙΩΝ. ὦ δεινὰ τλᾶσα μῆτερ.
ΚΡ. ἐν φόβῳ καταδεθεῖσα σὰν
ψυχὰν ἀπέβαλον, τέκνον·
ἔκτεινά σ᾽ ἄκουσ᾽.
ΙΩΝ. ἐξ ἐμοῦ τ᾽ οὐχ ὅσι᾽ ἔθνησκες.
ΚΡ. ἰώ· δειναὶ μὲν τότε τύχαι,
δεινὰ δὲ καὶ τάδ᾽· ἑλισσόμεσθ᾽ ἐκεῖθεν
ἐνθάδε δυστυχίαισιν
εὐτυχίαις τε πάλιν,
μεθίσταται δὲ πνεύματα.
μενέτω· τὰ πάροιθεν ἅλις κακά· νῦν δ᾽
ἐγένετό τις οὖρος ἐκ κακῶν, ὦ παῖ.
ΧΟ. μηδεὶς δοκείτω μηδὲν ἀνθρώπῳ ποτὲ
ἄελπτον εἶναι πρὸς τὰ τυγχάνοντα νῦν.
ΙΩΝ. ὦ μεταβαλοῦσα μυρίους ἤδη βροτῶν
καὶ δυστυχῆσαι καὖθις αὖ πρᾶξαι καλῶς,
τύχη, παρ᾽ οἵαν ἤλθομεν στάθμην βίου,
μητέρα φονεῦσαι καὶ παθεῖν ἀνάξια.
φεῦ·
ἆρ᾽ ἐν φαενναῖς ἡλίου περιπτυχαῖς
ἔνεστι πάντα τάδε καθ᾽ ἡμέραν μαθεῖν;

φίλον μὲν οὖν σ' εὕρημα, μῆτερ, εὕρομεν,
καὶ τὸ γένος οὐδὲν μεμπτὸν ὡς ἡμῖν τόδε·
τὰ δ' ἄλλα πρὸς σὲ βούλομαι μόνην φράσαι.
δεῦρ' ἔλθ'· ἐς οὖς γὰρ τοὺς λόγους εἰπεῖν θέλω
καὶ περικαλύψαι τοῖσι πράγμασι σκότον.
ὅρα σύ, μῆτερ, μὴ σφαλεῖσ' ἃ παρθένοις
ἐγγίγνεται νοσήματ' εἰς κρυπτοὺς γάμους,
ἔπειτα τῷ θεῷ προστίθης τὴν αἰτίαν,
καὶ τοὐμὸν αἰσχρὸν ἀποφυγεῖν πειρωμένη,
Φοίβῳ τεκεῖν με φῄς, τεκοῦσ' οὐκ ἐκ θεοῦ.
ΚΡ. μὰ τὴν παρασπίζουσαν ἅρμασίν ποτε
Νίκην Ἀθάναν Ζηνὶ γηγενεῖς ἔπι,
οὐκ ἔστιν ὅστις σοι πατὴρ θνητῶν, τέκνον,
ἀλλ' ὅσπερ ἐξέθρεψε Λοξίας σ' ἄναξ.
ΙΩΝ. πῶς οὖν τὸν αὑτοῦ παῖδ' ἔδωκ' ἄλλῳ πατρὶ
Ξούθου τέ φησι παῖδά μ' ἐκπεφυκέναι;
ΚΡ. πεφυκέναι μὲν οὐχί, δωρεῖται δέ σε
αὑτοῦ γεγῶτα· καὶ γὰρ ἂν φίλος φίλῳ
δοίη τὸν αὑτοῦ παῖδα δεσπότην δόμων.
ΙΩΝ. ὁ θεὸς ἀληθής, ἢ μάτην μαντεύεται,
ἐμοῦ ταράσσει, μῆτερ, εἰκότως φρένα.
ΚΡ. ἄκουε δή νυν ἅμ' ἐσῆλθεν, ὦ τέκνον·
εὐεργετῶν σε Λοξίας ἐς εὐγενῆ
δόμον καθίζει· τοῦ θεοῦ δὲ λεγόμενος,
οὐκ ἔσχες ἄν ποτ' οὔτε παγκλήρους δόμους
οὔτ' ὄνομα πατρός. πῶς γάρ, οὗ γ' ἐγὼ γάμους
ἔκρυπτον αὐτὴ καί σ' ἀπέκτεινον λάθρᾳ;
ὁ δ' ὠφελῶν σε προστίθησ' ἄλλῳ πατρί.
ΙΩΝ. οὐχ ὧδε φαύλως αὔτ' ἐγὼ μετέρχομαι,
ἀλλ' ἱστορήσω Φοῖβον εἰσελθὼν δόμους,
εἴτ' εἰμὶ θνητοῦ πατρὸς εἴτε Λοξίου.
ἔα· τίς οἴκων θυοδόκων ὑπερτελὴς
ἀντήλιον πρόσωπον ἐκφαίνει θεῶν;
φεύγωμεν, ὦ τεκοῦσα, μὴ τὰ δαιμόνων
ὁρῶμεν, εἰ μὴ καιρός ἐσθ' ἡμᾶς ὁρᾶν.
ΑΘ. μὴ φεύγετ'· οὐ γὰρ πολεμίαν με φεύγετε,
ἀλλ' ἔν τ' Ἀθήναις κἀνθάδ' οὖσαν εὐμενῆ.
ἐπώνυμος δὲ σῆς ἀφικόμην χθονός,
Παλλάς, δρόμῳ σπεύσασ' Ἀπόλλωνος πάρα,

ὃς εἰς μὲν ὄψιν σφῷν μολεῖν οὐκ ἠξίου,
μὴ τῶν πάροιθε μέμψις εἰς μέσον μόλῃ,
ἡμᾶς δὲ πέμπει τοὺς λόγους ὑμῖν φράσαι,
ὡς ἥδε τίκτει σ' ἐξ Ἀπόλλωνος πατρός,
δίδωσι δ' οἷς ἔδωκεν, οὐ φύσασί σε,
ἀλλ' ὡς νομίζῃς οἶκον εὐγενέστατον.
ἐπεὶ δ' ἀνεῴχθη πρᾶγμα μηνυθὲν τόδε,
θανεῖν σε δείσας μητρὸς ἐκ βουλευμάτων
καὶ τήνδε πρὸς σοῦ, μηχαναῖς ἐρρύσατο.
ἔμελλε δ' αὐτὰ διασιωπήσας ἄναξ
ἐν ταῖς Ἀθήναις γνωριεῖν ταύτην τε σήν,
σέ θ' ὡς πέφυκας τῆσδε καὶ Φοίβου πατρός.
ἀλλ' ὡς περαίνω πρᾶγμα, καὶ χρησμοὺς θεῶν,
ἐφ' οἷσιν ἔζευξ' ἅρματ', εἰσακούσατον.
λαβοῦσα τόνδε παῖδα Κεκροπίαν χθόνα
χώρει, Κρέουσα, κεἰς θρόνους τυραννικοὺς
ἵδρυσον· ἐκ γὰρ τῶν Ἐρεχθέως γεγὼς
δίκαιος ἄρχειν τῆς γ' ἐμῆς ὅδε χθονός.
ἔσται δ' ἀν' Ἑλλάδ' εὐκλεής· οἱ τοῦδε γὰρ
παῖδες γενόμενοι τέσσαρες ῥίζης μιᾶς,
ἐπώνυμοι γῆς κἀπιφυλίου χθονὸς
λαῶν ἔσονται, σκόπελον οἳ ναίουσ' ἐμόν.
Γελέων μὲν ἔσται πρῶτος· εἶτα δεύτερον
Ὅπλητες Ἀργαδῆς τ' ἐμῆς τ' ἀπ' αἰγίδος
ἓν φῦλον ἕξουσ' Αἰγικορῆς. οἱ τῶνδε δ' αὖ
παῖδες γενόμενοι σὺν χρόνῳ πεπρωμένῳ
Κυκλάδας ἐποικήσουσι νησαίας πόλεις
χέρσους τε παράλους, ὃ σθένος τῇ 'μῇ χθονὶ
δίδωσιν· ἀντίπορθμα δ' ἠπείροιν δυοῖν
πεδία κατοικήσουσιν, Ἀσιάδος τε γῆς
Εὐρωπίας τε· τοῦδε δ' ὀνόματος χάριν
Ἴωνες ὀνομασθέντες ἕξουσιν κλέος.
Ξούθῳ δὲ καὶ σοὶ γίγνεται κοινὸν γένος,
Δῶρος μέν, ἔνθεν Δωρὶς ὑμνηθήσεται
πόλις· κατ' αἶαν Πελοπίαν δ' ὁ δεύτερος
Ἀχαιός, ὃς γῆς παραλίας Ῥίου πέλας
τύραννος ἔσται, κἀπισημανθήσεται
κείνου κεκλῆσθαι λαὸς ὄνομ' ἐπώνυμος.
καλῶς δ' Ἀπόλλων πάντ' ἔπραξε· πρῶτα μὲν

ἄνοσον λοχεύει σ', ὥστε μὴ γνῶναι φίλους·
ἐπεὶ δ' ἔτικτες τόνδε παῖδα κἀπέθου
ἐν σπαργάνοισιν, ἁρπάσαντ' ἐς ἀγκάλας
Ἑρμῆν κελεύει δεῦρο πορθμεῦσαι βρέφος,
ἔθρεψέ τ' οὐδ' εἴασεν ἐκπνεῦσαι βίον.
νῦν οὖν σιώπα, παῖς ὅδ' ὡς πέφυκε σός,
ἵν' ἡ δόκησις Ξοῦθον ἡδέως ἔχῃ,
σύ τ' αὖ τὰ σαυτῆς ἀγάθ' ἔχουσ' ἴῃς, γύναι.
καὶ χαίρετ'· ἐκ γὰρ τῆσδ' ἀναψυχῆς πόνων
εὐδαίμον' ὑμῖν πότμον ἐξαγγέλλομαι.

ΙΩΝ. ὦ Διὸς Παλλὰς μεγίστου θύγατερ, οὐκ ἀπιστίᾳ
σοὺς λόγους ἐνδεξόμεσθα· πείθομαι δ' εἶναι πατρὸς
Λοξίου καὶ τῆσδε· καὶ πρὶν τοῦτο δ' οὐκ ἄπιστον ἦν.

ΚΡ. τἀμὰ νῦν ἄκουσον· αἰνῶ Φοῖβον οὐκ αἰνοῦσα πρίν,
οὕνεχ' οὗ ποτ' ἠμέλησε παιδὸς ἀποδίδωσί μοι.
αἵδε δ' εὔωποὶ πύλαι μοι καὶ θεοῦ χρηστήρια,
δυσμενῆ πάροιθεν ὄντα. νῦν δὲ καὶ ῥόπτρων χέρας
ἡδέως ἐκκρημνάμεσθα καὶ προσεννέπω πύλας.

ΑΘ. ᾔνεσ' οὕνεκ' εὐλογεῖς θεὸν μεταβαλοῦσ'· ἀεί ποτε
χρόνια μὲν τὰ τῶν θεῶν πως, εἰς τέλος δ' οὐκ ἀσθενῆ.

ΚΡ. ὦ τέκνον, στείχωμεν οἴκους. ΑΘ. στείχεθ', ἕψομαι δ' ἐγώ.

ΙΩΝ. ἀξία γ' ἡμῶν ὁδουρός. ΚΡ. καὶ φιλοῦσά γε πτόλιν.

ΑΘ. εἰς θρόνους δ' ἵζου παλαιούς. ΙΩΝ. ἄξιον τὸ κτῆμά μοι.

ΧΟ. ὦ Διὸς Λητοῦς τ' Ἄπολλον, χαῖρ'· ὅτῳ δ' ἐλαύνεται
συμφοραῖς οἶκος, σέβοντα δαίμονας θαρσεῖν χρεών·
εἰς τέλος γὰρ οἱ μὲν ἐσθλοὶ τυγχάνουσιν ἀξίων,
οἱ κακοὶ δ', ὥσπερ πεφύκασ', οὔποτ' εὖ πράξειαν ἄν.

ΚΥΚΛΩΨ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΣΕΙΛΗΝΟΣ.
ΧΟΡΟΣ ΣΑΤΥΡΩΝ.
ΟΔΥΣΣΕΥΣ.
ΚΥΚΛΩΨ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ.

Ὀδυσσεὺς ἀναχθεὶς ἐξ Ἰλίου εἰς Σικελίαν ἀπερρίφη, ἔνθα ὁ Πολύφημος· εὑρὼν δὲ δουλεύοντας ἐκεῖ τοὺς Σατύρους, οἶνον δοὺς ἄρνας ἤμελλε λαμβάνειν καὶ γάλα παρ' αὐτῶν. ἐπιφανεὶς δ' ὁ Πολύφημος ζητεῖ τὴν αἰτίαν τῆς τῶν ἰδίων ἐκφορήσεως. ὁ Σειληνὸς δὲ τὸν ξένον ληστεύοντα καταλαβεῖν φησι. * * *

ΕΥΡΙΠΙΔΟΥ

ΚΥΚΛΩΨ.

ΣΕΙ. Ὦ Βρόμιε, διὰ σὲ μυρίους ἔχω πόνους
νῦν χὤτ᾽ ἐν ἥβῃ τοὐμὸν εὐσθένει δέμας·
πρῶτον μὲν ἡνίκ᾽ ἐμμανὴς Ἥρας ὕπο
Νύμφας ὀρείας ἐκλιπὼν ᾤχου τροφούς·
ἔπειθ᾽ ὅτ᾽ ἀμφὶ γηγενῆ μάχην δορὸς
ἐνδέξιος σῷ ποδὶ παρασπιστὴς γεγὼς
Ἐγκέλαδον ἰτέαν μέσην θένων δορὶ
ἔκτεινα. φέρ᾽ ἴδω, τοῦτ᾽ ἰδὼν ὄναρ λέγω;
οὐ μὰ Δί᾽, ἐπεὶ καὶ σκῦλ᾽ ἔδειξα Βακχίῳ.
καὶ νῦν ἐκείνων μεῖζον᾽ ἐξαντλῶ πόνον.
ἐπεὶ γὰρ Ἥρα σοι γένος Τυρσηνικὸν
λῃστῶν ἐπῶρσεν, ὡς ὁδηθείης μακράν,
ἐγὼ πυθόμενος σὺν τέκνοισι ναυστολῶ
σέθεν κατὰ ζήτησιν. ἐν πρύμνῃ δ᾽ ἄκρᾳ
αὐτὸς λαβὼν εὔθυνον ἀμφῆρες δόρυ,
παῖδές τ᾽ ἐρετμοῖς ἥμενοι, γλαυκὴν ἅλα
ῥοθίοισι λευκαίνοντες, ἐζήτουν σ᾽ ἄναξ.
ἤδη δὲ Μαλέας πλησίον πεπλευκότας
ἀπηλιώτης ἄνεμος ἐμπνεύσας δορὶ
ἐξέβαλεν ἡμᾶς τήνδ᾽ ἐς Αἰτναίαν πέτραν,
ἵν᾽ οἱ μονῶπες ποντίου παῖδες θεοῦ
Κύκλωπες οἰκοῦσ᾽ ἄντρ᾽ ἔρημ᾽ ἀνδροκτόνοι.

τούτων ἑνὸς ληφθέντες ἐσμὲν ἐν δόμοις
δοῦλοι· καλοῦσι δ᾽ αὐτὸν ᾧ λατρεύομεν
Πολύφημον. ἀντὶ δ᾽ εὐίων βακχευμάτων
ποίμνας Κύκλωπος ἀνοσίου ποιμαίνομεν.
παῖδες μὲν οὖν μοι κλιτύων ἐν ἐσχάτοις
νέμουσι μῆλα νέα νέοι πεφυκότες,
ἐγὼ δὲ πληροῦν πίστρα καὶ σαίρειν στέγας
μένων τέταγμαι τάσδε, τῷ τε δυσσεβεῖ
Κύκλωπι δείπνων ἀνοσίων διάκονος.
καὶ νῦν τὰ προσταχθέντ᾽ ἀναγκαίως ἔχει,
σαίρειν σιδηρᾷ τῇδέ μ᾽ ἁρπάγῃ δόμους,
ὡς τόν τ᾽ ἀπόντα δεσπότην Κύκλωπ᾽ ἐμὸν
καθαροῖσιν ἄντροις μῆλά τ᾽ εἰσδεχώμεθα.
ἤδη δὲ παῖδας προσνέμοντας εἰσορῶ
ποίμνας. τί ταῦτα; μῶν κρότος σικινίδων
ὅμοιος ὑμῖν νῦν τε χὤτε Βακχίῳ
κώμῳ συνασπίζοντες Ἀλθαίας δόμους
προσῆτ᾽ ἀοιδαῖς βαρβίτων σαυλούμενοι;

ΧΟ. πᾷ μοι γενναίων πατέρων στρ.
γενναίων τ᾽ ἐκ τοκάδων,
πᾷ δή μοι νίσσει σκοπέλους;
οὐ τᾷδ᾽ ὑπήνεμος αὔρα
καὶ ποιηρὰ βοτάνα,
δινᾶέν θ᾽ ὕδωρ ποταμῶν
ἐν πίστραις κεῖται πέλας ἄν-
τρων, οὗ σοι βλαχαὶ τεκέων;
ψύττα, σὺ τάδ᾽ οὔ, κοὐ τάδε νεμεῖ,
οὐδ᾽ αὖ κλιτὺν δροσεράν;
ὠή, ῥίψω πέτρον τάχα σου·
ὕπαγ᾽ ὦ ὕπαγ᾽ ὦ κεράστα,
μηλοβότα στασίωρον

41 — 54 = 55 — 68

Κύκλωπος ἀγροβότα.
σπαργῶντας μαστοὺς χάλασον· ἀντ.
δέξαι θηλαῖσι σποράς,
ἃς λείπεις ἀρνῶν θαλάμοις.
ποθοῦσί σ' ἁμερόκοιτοι
βλαχαὶ σμικρῶν τεκέων.
εἰς αὐλάν ποτ', ἀμφιθαλεῖς
ποιηροὺς λείπουσα νομούς,
Αἰτναίων εἴσει σκοπέλων;
οὐ τάδε Βρόμιος, οὐ τάδε χοροὶ
Βάκχαι τε θυρσοφόροι,
οὐ τυπάνων ἀραγμοί,
οὐκ οἴνου χλωραὶ σταγόνες 67
κρήναις παρ' ὑδροχύτοις, 66
οὐ λυσσάματα Νυμφᾶν.
ἴακχον ἴακχον ᾠδὰν
μέλπω πρὸς τὰν Ἀφροδίταν,
ἃν θηρεύων πετόμαν
Βάκχαις σὺν λευκόποσιν.
ὦ φίλος ὦ φίλε Βακχεῖε, ποῖ οἰοπολεῖς
ξανθὰν χαίταν σείων;
ἐγὼ δ' ὁ σὸς πρόπολος
θητεύω Κύκλωπι
τῷ μονοδέρκτᾳ, δοῦλος ἀλαίνων
σὺν τᾷδε τράγου χλαίνᾳ μελέᾳ
σᾶς χωρὶς φιλίας.

ΣΕΙ. *σιγήσατ', ὦ τέκν', ἄντρα δ' εἰς πετρηρεφῆ*
ποίμνας ἀθροῖσαι προσπόλοις κελεύσατε.

ΧΟ. *χωρεῖτ'· ἀτὰρ δὴ τίνα, πάτερ, σπουδὴν ἔχεις;*

ΣΕΙ. *ὁρῶ πρὸς ἀκταῖς ναὸς Ἑλλάδος σκάφος*
κώπης τ' ἄνακτας σὺν στρατηλάτῃ τινὶ
στείχοντας εἰς τόδ' ἄντρον, ἀμφὶ δ' αὐχέσι

τεύχη φέρονται κενά, βορᾶς κεχρημένοι,
κρωσσούς θ' ὑδρηλούς. ὦ ταλαίπωροι ξένοι.
τίνες πότ' εἰσιν; οὐκ ἴσασι δεσπότην
Πολύφημον οἷός ἐστιν, ἄξενον στέγην
τήνδ' ἐμβεβῶτες καὶ Κυκλωπίαν γνάθον
τὴν ἀνδροβρῶτα δυστυχῶς ἀφιγμένοι.
ἀλλ' ἥσυχοι γίγνεσθ', ἵν' ἐκπυθώμεθα
πόθεν πάρεισι Σικελὸν Αἰτναῖον πάγον.
ΟΔ. ξένοι, φράσαιτ' ἂν νᾶμα ποτάμιον πόθεν
δίψης ἄκος λάβοιμεν; εἴτε τις θέλει
βορὰν ὁδῆσαι ναυτίλοις κεχρημένοις;
τί χρῆμα; Βρομίου πόλιν ἔοιγμεν εἰσβαλεῖν·
Σατύρων πρὸς ἄντροις τόνδ' ὅμιλον εἰσορῶ.
χαίρειν προσεῖπα πρῶτα τὸν γεραίτατον.
ΣΕΙ. χαῖρ', ὦ ξέν', ὅστις δ' εἶ φράσον πάτραν τε σήν.
ΟΔ. Ἴθακος Ὀδυσσεύς, γῆς Κεφαλλήνων ἄναξ.
ΣΕΙ. οἶδ' ἄνδρα κρόταλον, δριμὺ Σισύφου γένος.
ΟΔ. ἐκεῖνος οὗτός εἰμι· λοιδόρει δὲ μή.
ΣΕΙ. πόθεν Σικελίαν τήνδε ναυστολῶν πάρει;
ΟΔ. ἐξ Ἰλίου γε κἀπὸ Τρωικῶν πόνων.
ΣΕΙ. πῶς; πορθμὸν οὐκ ᾔδεισθα πατρῴας χθονός;
ΟΔ. ἀνέμων θύελλαι δεῦρό μ' ἥρπασαν βίᾳ.
ΣΕΙ. παπαῖ· τὸν αὐτὸν δαίμον' ἐξαντλεῖς ἐμοί.
ΟΔ. ἦ καὶ σὺ δεῦρο πρὸς βίαν ἀπεστάλης;
ΣΕΙ. λῃστὰς διώκων, οἳ Βρόμιον ἀνήρπασαν.
ΟΔ. τίς δ' ἥδε χώρα, καὶ τίνες ναίουσί νιν;
ΣΕΙ. Αἰτναῖος ὄχθος Σικελίας ὑπέρτατος.
ΟΔ. τείχη δὲ ποῦ 'στι καὶ πόλεως πυργώματα;
ΣΕΙ. οὐκ εἴσ'· ἔρημοι πρῶνες ἀνθρώπων, ξένε.
ΟΔ. τίνες δ' ἔχουσι γαῖαν; ἢ θηρῶν γένος;
ΣΕΙ. Κύκλωπες ἄντρ' οἰκοῦντες, οὐ στέγας δόμων.
ΟΔ. τίνος κλύοντες; ἢ δεδήμευται κράτος;

ΣΕΙ. νομάδες· ἀκούει δ᾽ οὐδὲν οὐδεὶς οὐδενός.
ΟΔ. σπείρουσι δ᾽, ἢ τῷ ζῶσι, Δήμητρος στάχυν;
ΣΕΙ. γάλακτι καὶ τυροῖσι καὶ μήλων βορᾷ.
ΟΔ. Βρομίου δὲ πῶμ᾽ ἔχουσιν, ἀμπέλου ῥοάς;
ΣΕΙ. ἥκιστα· τοιγὰρ ἄχορον οἰκοῦσι χθόνα.
ΟΔ. φιλόξενοι δὲ χὤσιοι περὶ ξένους;
ΣΕΙ. γλυκύτατά φασι τὰ κρέα τοὺς ξένους φορεῖν.
ΟΔ. τί φής; βορᾷ χαίρουσιν ἀνθρωποκτόνῳ;
ΣΕΙ. οὐδεὶς μολὼν δεῦρ᾽ ὅστις οὐ κατεσφάγη.
* * * * * *
ΟΔ. αὐτὸς δὲ Κύκλωψ ποῦ 'στιν; ἢ δόμων ἔσω;
ΣΕΙ. φροῦδος πρὸς Αἴτνῃ θῆρας ἰχνεύων κυσίν.
ΟΔ. οἶσθ᾽ οὖν ὃ δρᾶσον, ὡς ἀπαίρωμεν χθονός;
ΣΕΙ. οὐκ οἶδ᾽, Ὀδυσσεῦ· πᾶν δέ σοι δρῴημεν ἄν.
ΟΔ. ὅδησον ἡμῖν σῖτον, οὗ σπανίζομεν.
ΣΕΙ. οὐκ ἔστιν, ὥσπερ εἶπον, ἄλλο πλὴν κρέας.
ΟΔ. ἀλλ᾽ ἡδὺ λιμοῦ καὶ τόδε σχετήριον.
ΣΕΙ. καὶ τυρὸς ὀπίας ἐστὶ καὶ βοὸς γάλα.
ΟΔ. ἐκφέρετε· φῶς γὰρ ἐμπολήμασιν πρέπει.
ΣΕΙ. σὺ δ᾽ ἀντιδώσεις, εἰπέ μοι, χρυσὸν πόσον;
ΟΔ. οὐ χρυσόν, ἀλλὰ πῶμα Διονύσου φέρω.
ΣΕΙ. ὦ φίλτατ᾽ εἰπών, οὗ σπανίζομεν πάλαι.
ΟΔ. καὶ μὴν Μάρων μοι πῶμ᾽ ἔδωκε, παῖς θεοῦ.
ΣΕΙ. ὃν ἐξέθρεψα ταῖσδ᾽ ἐγώ ποτ᾽ ἀγκάλαις;
ΟΔ. ὁ Βακχίου παῖς, ὡς σαφέστερον μάθῃς.
ΣΕΙ. ἐν σέλμασι νεώς ἐστιν, ἢ φέρεις σύ νιν;
ΟΔ. ὅδ᾽ ἀσκός, ὃς κεύθει νιν· εἰσορᾷς, γέρον;
ΣΕΙ. οὗτος μὲν οὐδ᾽ ἂν τὴν γνάθον πλήσειέ μου.
ΟΔ. ναὶ δὶς τόσον πῶμ᾽ ὅσον ἂν ἐξ ἀσκοῦ ῥυῇ.
ΣΕΙ. καλήν γε κρήνην εἶπας ἡδεῖάν τ᾽ ἐμοί.
ΟΔ. βούλει σε γεύσω πρῶτον ἄκρατον μέθυ;
ΣΕΙ. δίκαιον· ἦ γὰρ γεῦμα τὴν ὠνὴν καλεῖ.

ΟΔ. καὶ μὴν ἐφέλκω καὶ ποτῆρ' ἀσκοῦ μέτα.
ΣΕΙ. φέρ' ἐγκάναξον, ὡς ἀναμνησθῶ πιών.
ΟΔ. ἰδού. ΣΕΙ. παπαιάξ, ὡς καλὴν ὀσμὴν ἔχει.
ΟΔ. εἶδες γὰρ αὐτήν; ΣΕΙ. οὐ μὰ Δί', ἀλλ' ὀσφραίνομαι.
ΟΔ. γεῦσαί νυν, ὡς ἂν μὴ λόγῳ 'παινῇς μόνον.
ΣΕΙ. βαβαί· χορεῦσαι παρακαλεῖ μ' ὁ Βάκχιος.
ἆ ἆ ἆ.
ΟΔ. μῶν τὸν λάρυγγα διεκάναξέ σου καλῶς;
ΣΕΙ. ὥστ' εἰς ἄκρους γε τοὺς ὄνυχας ἀφίκετο.
ΟΔ. πρὸς τῷδε μέντοι καὶ νόμισμα δώσομεν.
ΣΕΙ. χάλα τὸν ἀσκὸν μόνον· ἔα τὸ χρυσίον.
ΟΔ. ἐκφέρετέ νυν τυρεύματ' ἢ μήλων τόκον.
ΣΕΙ. δράσω τάδ', ὀλίγον φροντίσας γε δεσποτῶν.
ὡς ἐκπιεῖν γ' ἂν κύλικα μαινοίμην μίαν,
πάντων Κυκλώπων ἀντιδοὺς βοσκήματα,
ῥῖψαί τ' ἐς ἅλμην λευκάδος πέτρας ἄπο,
ἅπαξ μεθυσθεὶς καταβαλών τε τὰς ὀφρῦς.
ὡς ὅς γε πίνων μὴ γέγηθε μαίνεται·
ἵν' ἔστι τουτί τ' ὀρθὸν ἐξανιστάναι
μαστοῦ τε δραγμὸς καὶ παρεσκευασμένου
ψαῦσαι χεροῖν λειμῶνος, ὀρχηστύς θ' ἅμα
κακῶν τε λῆστις. εἶτ' ἐγὼ οὐ κυνήσομαι
τοιόνδε πῶμα, τὴν Κύκλωπος ἀμαθίαν
κλαίειν κελεύων καὶ τὸν ὀφθαλμὸν μέσον;
ΧΟ. ἄκου', Ὀδυσσεῦ, διαλαλήσωμέν τί σοι.
ΟΔ. καὶ μὴν φίλοι γε προσφέρεσθε πρὸς φίλον.
ΧΟ. ἐλάβετε Τροίαν τὴν Ἑλένην τε χειρίαν;
ΟΔ. καὶ πάντα γ' οἶκον Πριαμιδῶν ἐπέρσαμεν.
ΧΟ. οὔκουν ἐπειδὴ τὴν νεᾶνιν εἵλετε,
ἅπαντες αὐτὴν διεκροτήσατ' ἐν μέρει,
ἐπεί γε πολλοῖς ἥδεται γαμουμένη;

τὴν προδότιν, ἣ τοὺς θυλάκους τοὺς ποικίλους
περὶ τοῖν σκελοῖν ἰδοῦσα καὶ τὸν χρύσεον
κλοιὸν φοροῦντα περὶ μέσον τὸν αὐχένα
ἐξεπτοήθη, Μενέλεων ἀνθρώπιον
λῷστον λιποῦσα. μηδαμοῦ γένος ποτὲ
φῦναι γυναικῶν ὤφελ᾽, εἰ μὴ ᾽μοὶ μόνῳ.
ΣΕΙ. ἰδοὺ τάδ᾽ ὑμῖν ποιμνίων βοσκήματα,
ἄναξ Ὀδυσσεῦ, μηκάδων ἀρνῶν τροφαί,
πηκτοῦ γάλακτός τ᾽ οὐ σπάνια τυρεύματα.
φέρεσθε, χωρεῖθ᾽ ὡς τάχιστ᾽ ἄντρων ἄπο,
βότρυος ἐμοὶ πῶμ᾽ ἀντιδόντες εὐίου.
οἴμοι· Κύκλωψ ὅδ᾽ ἔρχεται· τί δράσομεν;
ΟΔ. ἀπολώλαμεν γάρ, ὦ γέρον· ποῖ χρὴ φυγεῖν;
ΣΕΙ. ἔσω πέτρας τῆσδ᾽, οὗπερ ἂν λάθοιτέ γε.
ΟΔ. δεινὸν τόδ᾽ εἶπας, ἀρκύων μολεῖν ἔσω.
ΣΕΙ. οὐ δεινόν· εἰσὶ καταφυγαὶ πολλαὶ πέτρας.
ΟΔ. οὐ δῆτ᾽· ἐπεί τἂν μεγάλ᾽ ἂν ἡ Τροία στένοι,
εἰ φευξόμεσθ᾽ ἕν᾽ ἄνδρα· μυρίον δ᾽ ὄχλον
Φρυγῶν ὑπέστην πολλάκις σὺν ἀσπίδι.
ἀλλ᾽ εἰ θανεῖν δεῖ, κατθανούμεθ᾽ εὐγενῶς,
ἢ ζῶντες αἶνον τὸν πάρος γε σώσομεν.
ΚΥ. ἄνεχε, πάρεχε, τί τάδε; τίς ἡ ῥᾳθυμία;
τί βακχιάζετ᾽; οὐχὶ Διόνυσος τάδε,
οὐ κρόταλα χαλκοῦ τυμπάνων τ᾽ ἀράγματα.
πῶς μοι κατ᾽ ἄντρα νεόγονα βλαστήματα;
ἦ πρός τε μαστοῖς εἰσι χὐπὸ μητέρων
πλευρὰς τρέχουσι, σχοινίνοις τ᾽ ἐν τεύχεσι
πλήρωμα τυρῶν ἐστιν ἐξημελγμένον;
τί φατε; τί λέγετε; τάχα τις ὑμῶν τῷ ξύλῳ
δάκρυα μεθήσει· βλέπετ᾽ ἄνω καὶ μὴ κάτω.
ΧΟ. ἰδού, πρὸς αὐτὸν τὸν Δί᾽ ἀνακεκύφαμεν,
τά τ᾽ ἄστρα καὶ τὸν Ὠρίωνα δέρκομαι.

ΚΥ. ἄριστόν ἐστιν εὖ παρεσκευασμένον;
ΧΟ. πάρεστιν. ὁ φάρυγξ εὐτρεπὴς ἔστω μόνον.
ΚΥ. ἦ καὶ γάλακτός εἰσι κρατῆρες πλέῳ;
ΧΟ. ὥστ' ἐκπιεῖν γέ σ', ἢν θέλῃς, ὅλον πίθον.
ΚΥ. μήλειον ἢ βόειον ἢ μεμιγμένον;
ΧΟ. ὃν ἂν θέλῃς σύ· μὴ 'μὲ καταπίῃς μόνον.
ΚΥ. ἥκιστ'· ἐπεί μ' ἂν ἐν μέσῃ τῇ γαστέρι
πηδῶντες ἀπολέσαιτ' ἂν ὑπὸ τῶν σχημάτων.
ἔα· τίν' ὄχλον τόνδ' ὁρῶ πρὸς αὐλίοις;
λῃσταί τινες κατέσχον ἢ κλῶπες χθόνα;
ὁρῶ γέ τοι τούσδ' ἄρνας ἐξ ἄντρων ἐμῶν
στρεπταῖς λύγοισι σῶμα συμπεπλεγμένους,
τεύχη τε τυρῶν συμμιγῆ, γέροντά τε
πληγαῖς πρόσωπον φαλακρὸν ἐξῳδηκότα.
ΣΕΙ. ὤμοι, πυρέσσω συγκεκομμένος τάλας.
ΚΥ. ὑπὸ τοῦ; τίς εἰς σὸν κρᾶτ' ἐπύκτευσεν, γέρον;
ΣΕΙ. ὑπὸ τῶνδε, Κύκλωψ, ὅτι τὰ σ' οὐκ εἴων φέρειν.
ΚΥ. οὐκ ἦσαν ὄντα θεόν με καὶ θεῶν ἄπο; 231
ΣΕΙ. ἔλεγον ἐγὼ τάδ'· οἱ δ' ἐφόρουν τὰ χρήματα
καὶ τόν γε τυρὸν οὐκ ἐῶντος ἤσθιον
τούς τ' ἄρνας ἐξεφοροῦντο· δήσαντες δὲ σὲ
κλῳῷ τριπήχει κατὰ τὸν ὀμφαλὸν μέσον
τὰ σπλάγχν' ἔφασκον ἐξαμήσεσθαι βίᾳ,
μάστιγί τ' εὖ τὸ νῶτον ἀποθλίψειν σέθεν,
κἄπειτα συνδήσαντες ἐς θἀδώλια
τῆς νηὸς ἐμβαλόντες ἀποδώσειν τινὶ
πέτρους μοχλεύειν, ἢ 's μυλῶνα καταβαλεῖν.
ΚΥ. ἄληθες; οὔκουν κοπίδας ὡς τάχιστ' ἰὼν
θήξεις μαχαίρας καὶ μέγαν φάκελον ξύλων
ἐπιθεὶς ἀνάψεις; ὡς σφαγέντες αὐτίκα
πλήσουσι νηδὺν τὴν ἐμὴν ἀπ' ἄνθρακος
θερμὴν ἔδοντος δαῖτ' ἄτερ κρεανόμων,

τὰ δ' ἐκ λέβητος ἑφθὰ καὶ τετηκότα·
ὡς ἔκπλεώς γε δαιτός εἰμ' ὀρεσκόου·
ἅλις λεόντων ἐστί μοι θοινωμένῳ
ἐλάφων τε, χρόνιος δ' εἴμ' ἀπ' ἀνθρώπων βορᾶς.
ΣΕΙ. τὰ καινά γ' ἐκ τῶν ἠθάδων, ὦ δέσποτα,
ἡδίον' ἐστίν. οὐ γὰρ αὖ νεωστί γε
ἄλλοι πρὸς ἄντρα τὰ σά γ' ἀφίκοντο ξένοι.
ΟΔ. Κύκλωψ, ἄκουσον ἐν μέρει καὶ τῶν ξένων.
ἡμεῖς βορᾶς χρῄζοντες ἐμπολὴν λαβεῖν
σῶν ἆσσον ἄντρων ἤλθομεν νεὼς ἄπο.
τοὺς δ' ἄρνας ἡμῖν οὗτος ἀντ' οἴνου σκύφου
ἀπημπόλα τε κἀδίδου πιεῖν λαβών,
ἑκὼν ἑκοῦσι, κοὐδὲν ἦν τούτων βίᾳ.
ἀλλ' οὗτος ὑγιὲς οὐδὲν ὧν φησιν λέγει,
ἐπεὶ κατελήφθη σοῦ λάθρᾳ πωλῶν τὰ σά.
ΣΕΙ. ἐγώ; κακῶς γὰρ ἐξόλοι'. ΟΔ. εἰ ψεύδομαι.
ΣΕΙ. μὰ τὸν Ποσειδῶ τὸν τεκόντα σ', ὦ Κύκλωψ,
μὰ τὸν μέγαν Τρίτωνα καὶ τὸν Νηρέα,
μὰ τὴν Καλυψὼ τάς τε Νηρέως κόρας,
μά θ' ἱερὰ κύματ' ἰχθύων τε πᾶν γένος,
ἀπώμοσ', ὦ κάλλιστον ὦ Κυκλώπιον,
ὦ δεσποτίσκε, μὴ τὰ σ' ἐξοδᾶν ἐγὼ
ξένοισι χρήματ'. ἢ κακῶς οὗτοι κακοὶ
οἱ παῖδες ἀπόλοινθ', οὓς μάλιστ' ἐγὼ φιλῶ.
ΧΟ. αὐτὸς ἔχ'. ἔγωγε τοῖς ξένοις τὰ χρήματα
περνάντα σ' εἶδον· εἰ δ' ἐγὼ ψευδῆ λέγω,
ἀπόλοιθ' ὁ πατήρ μου, τοὺς ξένους δὲ μὴ ἀδίκει.
ΚΥ. ψεύδεσθ'· ἔγωγε τῷδε τοῦ Ῥαδαμάνθυος
πλείω πέποιθα καὶ δικαιότερον λέγω.
θέλω δ' ἐρέσθαι· πόθεν ἐπλεύσατ', ὦ ξένοι;
ποδαποί, τίς ὑμᾶς ἐξεπαίδευσεν πόλις;
ΟΔ. Ἰθακήσιοι μὲν τὸ γένος, Ἰλίου δ' ἄπο,

πέρσαντες ἄστυ, πνεύμασιν θαλασσίοις
σὴν γαῖαν ἐξωσθέντες ἥκομεν, Κύκλωψ.
ΚΥ. ἦ τῆς κακίστης οἳ μετήλθεθ᾽ ἁρπαγὰς
Ἑλένης Σκαμάνδρου γείτον᾽ Ἰλίου πόλιν;
ΟΔ. οὗτοι, πόνον τὸν δεινὸν ἐξηντληκότες.
ΚΥ. αἰσχρὸν στράτευμά γ᾽, οἵτινες μιᾶς χάριν
γυναικὸς ἐξεπλεύσατ᾽ εἰς γαῖαν Φρυγῶν.
ΟΔ. θεοῦ τὸ πρᾶγμα· μηδέν᾽ αἰτιῶ βροτῶν.
ἡμεῖς δέ σ᾽, ὦ θεοῦ ποντίου γενναῖε παῖ,
ἱκετεύομέν τε καὶ λέγομεν ἐλευθέρως,
μὴ τλῇς πρὸς ἄντρα σοὺς ἀφιγμένους φίλους
κτανεῖν βοράν τε δυσσεβῆ θέσθαι γνάθοις·
οἳ τὸν σόν, ὦναξ, πατέρ᾽ ἔχειν ναῶν ἕδρας
ἱδρυσάμεσθα γῆς ἐν Ἑλλάδος μυχοῖς.
ἱερός τ᾽ ἄθραυστος Ταινάρου μένει λιμὴν
Μαλέας τ᾽ ἄκροι κευθμῶνες ἥ τε Σουνίου
δίας Ἀθάνας σῶς ὑπάργυρος πέτρα
Γεραίστιοί τε καταφυγαί, τά θ᾽ Ἑλλάδος
δύσφορά γ᾽ ὀνείδη Φρυξὶν οὐκ ἐδώκαμεν·
ὧν καὶ σὺ κοινοῖ· γῆς γὰρ Ἑλλάδος μυχοὺς
οἰκεῖς ὑπ᾽ Αἴτνῃ, τῇ πυριστάκτῳ πέτρᾳ.
νόμος δὲ θνητοῖς, εἰς λόγους ἀποστρέφῃ,
ἱκέτας δέχεσθαι ποντίους ἐφθαρμένους,
ξένιά τε δοῦναι καὶ πέπλοις ἐπαρκέσαι,
οὐκ ἀμφὶ βουπόροισι πηχθέντας μέλη
ὀβελοῖσι νηδὺν καὶ γνάθον πλῆσαι σέθεν.
ἅλις δὲ Πριάμου γαῖ᾽ ἐχήρωσ᾽ Ἑλλάδα,
πολλῶν νεκρῶν πιοῦσα δορυπετῆ φόνον,
ἀλόχους τ᾽ ἀνάνδρους γραῦς τ᾽ ἄπαιδας ὤλεσε
πολιούς τε πατέρας. εἰ δὲ τοὺς λελειμμένους
σὺ συμπυρώσας δαῖτ᾽ ἀναλώσεις πικράν,
ποῖ τρέψεταί τις; ἀλλ᾽ ἐμοὶ πιθοῦ, Κύκλωψ,

πάρες τὸ μάργον σῆς γνάθου, τὸ δ' εὐσεβὲς
τῆς δυσσεβείας ἀνθελοῦ· πολλοῖσι γὰρ
κέρδη πονηρὰ ζημίαν ἠμείψατο.

ΣΕΙ. παραινέσαι σοι βούλομαι· τῶν μὲν κρεῶν
μηδὲν λίπῃς τοῦδ'· ἢν δὲ τὴν γλῶσσαν δάκῃς,
κομψὸς γενήσει καὶ λαλίστατος, Κύκλωψ.

ΚΥ. ὁ πλοῦτος, ἀνθρωπίσκε, τοῖς σοφοῖς θεός·
τὰ δ' ἄλλα κόμποι καὶ λόγων εὐμορφίαι.
ἄκρας δ' ἐναλίας ἃς κάθ' ἵδρυται πατὴρ
χαίρειν κελεύω· τί τάδε προυστήσω λόγῳ;
Ζηνὸς δ' ἐγὼ κεραυνὸν οὐ φρίσσω, ξένε,
οὐδ' οἶδ' ὅ τι Ζεύς ἐστ' ἐμοῦ κρείσσων θεός.
οὔ μοι μέλει τὸ λοιπόν· ὡς δ' οὔ μοι μέλει
ἄκουσον. ὅταν ἄνωθεν ὄμβρον ἐκχέῃ,
ἐν τῇδε πέτρᾳ στέγν' ἔχω σκηνώματα,
ἢ μόσχον ὀπτὸν ἤ τι θήρειον δάκος
δαινύμενος, εὖ τέγγων τε γαστέρ' ὑπτίαν,
ἐπεκπιὼν γάλακτος ἀμφορέα, πέπλον
κρούω, Διὸς βρονταῖσιν εἰς ἔριν κτυπῶν.
ὅταν δὲ βορρᾶς χιόνα Θρῄκιος χέῃ,
δοραῖσι θηρῶν σῶμα περιβαλὼν ἐμὸν
καὶ πῦρ ἀναίθων, χιόνος οὐδέν μοι μέλει.
ἡ γῆ δ' ἀνάγκῃ, κἂν θέλῃ κἂν μὴ θέλῃ,
τίκτουσα ποίαν τἀμὰ πιαίνει βοτά.
ἁγὼ οὔτινι θύω πλὴν ἐμοί, θεοῖσι δ' οὔ,
καὶ τῇ μεγίστῃ γαστρὶ τῇδε δαιμόνων·
ὡς τοὐμπιεῖν γε καὶ φαγεῖν τοὐφ' ἡμέραν,
Ζεὺς οὗτος ἀνθρώποισι τοῖσι σώφροσι,
λυπεῖν δὲ μηδὲν αὑτόν· οἳ δὲ τοὺς νόμους
ἔθεντο ποικίλλοντες ἀνθρώπων βίον,
κλαίειν ἄνωγα· τὴν δ' ἐμὴν ψυχὴν ἐγὼ
οὐ παύσομαι δρῶν εὖ κατεσθίων τε σέ.

ξένια δὲ λήψει τοιάδ᾽, ὡς ἄμεμπτος ὦ,
πῦρ καὶ πατρῷον τόδε λέβητά θ᾽, ὃς ζέσας
σὴν σάρκα διαφόρητον ἀμφέξει καλῶς.
ἀλλ᾽ ἕρπετ᾽ εἴσω, τῷ κατ᾽ αὔλιον θεῷ
ἵν᾽ ἀμφὶ βωμὸν στάντες εὐωχῆτέ με.
ΟΔ. αἰαῖ, πόνους μὲν Τρωικοὺς ὑπεξέδυν
θαλασσίους τε, νῦν δ᾽ ἐς ἀνδρὸς ἀνοσίου
γνώμην κατέσχον ἀλίμενόν τε καρδίαν.
ὦ Παλλάς, ὦ δέσποινα Διογενὲς θεά,
νῦν νῦν ἄρηξον· κρείσσονας γὰρ Ἰλίου
πόνους ἀφῖγμαι κἀπὶ κινδύνου βάθρα.
σύ τ᾽, ὦ φαεννῶν ἀστέρων οἰκῶν ἕδρας
Ζεῦ ξένι᾽, ὅρα τάδ᾽· εἰ γὰρ αὐτὰ μὴ βλέπεις,
ἄλλως νομίζει Ζεύς, τὸ μηδὲν ὤν, θεός.
ΧΟ. εὐρείας φάρυγγος, ὦ Κύκλωψ,
ἀναστόμου τὸ χεῖλος· ὡς ἕτοιμά σοι
ἑφθὰ καὶ ὀπτὰ καὶ ἀνθρακιᾶς ἄπο χναύειν,
βρύκειν, κρεοκοπεῖν μέλη ξένων,
δασυμάλλῳ ἐν αἰγίδι κλινομένῳ.
μή μοι μὴ προδίδου·
μόνος μόνῳ κόμιζε πορθμίδος σκάφος.
χαιρέτω μὲν αὖλις ἥδε,
χαιρέτω δὲ θυμάτων
ἀποβώμιος ἃν ἔχει θυσίαν
Κύκλωψ Αἰτναῖος ξενικῶν
κρεῶν κεχαρμένος βορᾷ·
νηλὴς ὁ τλάμων, ὅστις
δωμάτων ἐφεστίους ξενικοὺς
ἱκτῆρας ἐκθύει δόμων,
κόπτων βρύκων,
ἑφθά τε δαινύμενος μυσαροῖσιν ὀδοῦσιν
ἀνθρώπων θέρμ᾽ ἀπ᾽ ἀνθράκων κρέα.

ΟΔ. ὦ Ζεῦ, τί λέξω, δείν' ἰδὼν ἄντρων ἔσω
κοὐ πιστά, μύθοις εἰκότ' οὐδ' ἔργοις βροτῶν;
ΧΟ. τί δ' ἔστ', Ὀδυσσεῦ; μῶν τεθοίναται σέθεν
φίλους ἑταίρους ἀνοσιώτατος Κύκλωψ;
ΟΔ. δισσούς γ' ἀθρήσας κἀπιβαστάσας χεροῖν,
οἳ σαρκὸς εἶχον εὐτρεφέστατον πάχος.
ΧΟ. πῶς, ὦ ταλαίπωρ', ἦτε πάσχοντες τάδε;
ΟΔ. ἐπεὶ πετραίαν τήνδ' ἐσήλθομεν [χθόνα],
ἀνέκαυσε μὲν πῦρ πρῶτον, ὑψηλῆς δρυὸς
κορμοὺς πλατείας ἐσχάρας βαλὼν ἔπι,
τρισσῶν ἁμαξῶν ὡς ἀγώγιμον βάρος.
ἔπειτα φύλλων ἐλατίνων χαμαιπετῆ
ἔνησεν εὐνὴν πλησίον πυρὸς φλογί.
κρατῆρα δ' ἐξέπλησεν ὡς δεκάμφορον,
μόσχους ἀμέλξας, λευκὸν εἰσχέας γάλα.
σκύφος τε κισσοῦ παρέθετ' εἰς εὖρος τριῶν
πήχεων, βάθος δὲ τεσσάρων ἐφαίνετο.
καὶ χάλκεον λέβητ' ἐπέζεσεν πυρί,
ὀβελούς τ' ἄκρους μὲν ἐγκεκαυμένους πυρί,
ξεστοὺς δὲ δρεπάνῳ γ', ἀλλὰ παλιούρου κλάδῳ.
Αἰτναῖά τε σφαγεῖα πελέκεων γνάθοις.
ὡς δ' ἦν ἕτοιμα πάντα τῷ θεοστυγεῖ
Ἅιδου μαγείρῳ, φῶτε συμμάρψας δύο
ἔσφαξ' ἑταίρων τῶν ἐμῶν ῥυθμῷ τινι
τὸν μὲν λέβητος εἰς κύτος χαλκήλατον,
τὸν δ' αὖ, τένοντος ἁρπάσας ἄκρου ποδός,
παίων πρὸς ὀξὺν στόνυχα πετραίου λίθου,
ἐγκέφαλον ἐξέρρανε, καὶ καθαρπάσας
λάβρῳ μαχαίρᾳ σάρκας ἐξώπτα πυρί,
τὰ δ' εἰς λέβητ' ἐφῆκεν ἕψεσθαι μέλη.
ἐγὼ δ' ὁ τλήμων δάκρυ' ἀπ' ὀφθαλμῶν χέων
ἐχριμπτόμην Κύκλωπι κἀδιακόνουν·

ἄλλοι δ' ὅπως ὄρνιθες ἐν μυχοῖς πέτρας
πτήξαντες εἶχον, αἷμα δ' οὐκ ἐνῆν χροΐ.
ἐπεὶ δ' ἑταίρων τῶν ἐμῶν πλησθεὶς βορᾶς
ἀνέπεσε, φάρυγος αἰθέρ' ἐξανεὶς βαρύν,
εἰσῆλθέ μοί τι θεῖον· ἐμπλήσας σκύφος
Μάρωνος αὐτῷ τοῦδε προσφέρω πιεῖν,
λέγων τάδ'· ὦ παῖ ποντίου θεοῦ, Κύκλωψ,
σκέψαι τόδ' οἷον Ἑλλὰς ἀμπέλων ἄπο
θεῖον κομίζει πῶμα, Διονύσου γάνος.
ὁ δ' ἔκπλεως ὢν τῆς ἀναισχύντου βορᾶς
ἐδέξατ' ἔσπασέν τ' ἄμυστιν ἑλκύσας
κἀπήνεσ' ἄρας χεῖρα· φίλτατε ξένων,
καλὸν τὸ πῶμα δαιτὶ πρὸς καλῇ δίδως.
ἡσθέντα δ' αὐτὸν ὡς ἐπῃσθόμην ἐγώ,
ἄλλην ἔδωκα κύλικα, γιγνώσκων ὅτι
τρώσει νιν οἶνος καὶ δίκην δώσει τάχα.
καὶ δὴ πρὸς ᾠδὰς εἷρπ'. ἐγὼ δ' ἐπεγχέων
ἄλλην ἐπ' ἄλλῃ σπλάγχν' ἐθέρμαινον ποτῷ.
ᾄδει δὲ παρὰ κλαίουσι συνναύταις ἐμοῖς
ἄμουσ', ἐπήχει δ' ἄντρον. ἐξελθὼν δ' ἐγὼ
σιγῇ, σὲ σῶσαι κἄμ', ἐὰν βούλῃ, θέλω.
ἀλλ' εἴπατ' εἴτε χρῄζετ' εἴτ' οὐ χρῄζετε
φεύγειν ἄμικτον ἄνδρα καὶ τὰ Βακχίου
ναίειν μέλαθρα Ναΐδων νυμφῶν μέτα.
ὁ μὲν γὰρ ἔνδον σὸς πατὴρ τάδ' ᾔνεσεν.
ἀλλ' ἀσθενὴς γὰρ κἀποκερδαίνων ποτοῦ,
ὥσπερ πρὸς ἰξῷ τῇ κύλικι λελημμένος
πτέρυγας ἀλύει· σὺ δέ, νεανίας γὰρ εἶ,
σώθητι μετ' ἐμοῦ καὶ τὸν ἀρχαῖον φίλον
Διόνυσον ἀνάλαβ', οὐ Κύκλωπι προσφερῆ.

ΧΟ. ὦ φίλτατ', εἰ γὰρ τήνδ' ἴδοιμεν ἡμέραν,
Κύκλωπος ἐκφυγόντες ἀνόσιον κάρα.

ὡς διὰ μακροῦ γε τὸν σίφωνα τὸν φίλον
χηρεύομεν, τὸν δ' οὐκ ἔχομεν καταφαγεῖν.
ΟΔ. ἄκουε δή νυν ἣν ἔχω τιμωρίαν
θηρὸς πανούργου σῆς τε δουλείας φυγήν.
ΧΟ. λέγ', ὡς Ἀσιάδος οὐκ ἂν ἥδιον ψόφον
κιθάρας κλύοιμεν ἢ Κύκλωπ' ὀλωλότα.
ΟΔ. ἐπὶ κῶμον ἕρπειν πρὸς κασιγνήτους θέλει
Κύκλωπας ἡσθεὶς τῷδε Βακχίου ποτῷ.
ΧΟ. ξυνῆκ', ἔρημον ξυλλαβὼν δρυμοῖσί νιν
σφάξαι μενοινᾷς ἢ πετρῶν ὦσαι κάτω.
ΟΔ. οὐδὲν τοιοῦτον, δόλιος ἡ 'πιθυμία.
ΧΟ. πῶς δαί; σοφόν τοί σ' ὄντ' ἀκούομεν πάλαι.
ΟΔ. κώμου μὲν αὐτὸν τοῦδ' ἀπαλλάξαι, λέγων
ὡς οὐ Κύκλωψι πῶμα χρὴ δοῦναι τόδε,
μόνον δ' ἔχοντα βίοτον ἡδέως ἄγειν.
ὅταν δ' ὑπνώσσῃ Βακχίου νικώμενος,
ἀκρεμὼν ἐλαίας ἐστὶν ἐν δόμοισί τις,
ὃν φασγάνῳ τῷδ' ἐξαποξύνας ἄκρον,
εἰς πῦρ καθήσω· κᾆθ' ὅταν κεκαυμένον
ἴδω νιν, ἄρας θερμὸν εἰς μεσην βαλὼν
Κύκλωπος ὄψιν ὄμματ' ἐκτήξω πυρί.
ναυπηγίαν δ' ὡσεί τις ἁρμόζων ἀνὴρ
διπλοῖν χαλινοῖν τρύπανον κωπηλατεῖ,
οὕτω κυκλώσω δαλὸν ἐν φαεσφόρῳ
Κύκλωπος ὄψει καὶ συναυανῶ κόρας.
ΧΟ. ἰοῦ ἰοῦ,
γέγηθα, μαινόμεσθα τοῖς εὑρήμασιν.
ΟΔ. κἄπειτα καὶ σὲ καὶ φίλους γέροντά τε
νεὼς μελαίνης κοῖλον ἐμβήσας σκάφος
διπλαῖσι κώπαις τῆσδ' ἀποστελῶ χθονός.
ΧΟ. ἔστ' οὖν ὅπως ἂν ὥσπερ ἐκ σπονδῆς θεοῦ

κἀγὼ λαβοίμην τοῦ τυφλοῦντος ὄμματα
δαλοῦ; φόνου γὰρ τοῦδε κοινωνεῖν θέλω.
ΟΔ. δεῖ γοῦν· μέγας γὰρ δαλός, ὃν ξυλληπτέον.
ΧΟ. ὡς κἂν ἁμαξῶν ἑκατὸν ἀροίμην βάρος,
εἰ τοῦ Κύκλωπος τοῦ κακῶς ὀλουμένου
ὀφθαλμὸν ὥσπερ σφηκιὰν ἐκτρίψομεν.
ΟΔ. σιγᾶτέ νυν· δόλον γὰρ ἐξεπίστασαι·
χὤταν κελεύω, τοῖσιν ἀρχιτέκτοσι
πείθεσθ'· ἐγὼ γὰρ ἄνδρας ἀπολιπὼν φίλους
τοὺς ἔνδον ὄντας οὐ μόνος σωθήσομαι.
καίτοι φύγοιμ' ἄν, κἀκβέβηκ' ἄντρου μυχῶν·
ἀλλ' οὐ δίκαιον ἀπολιπόντ' ἐμοὺς φίλους,
ξὺν οἷσπερ ἦλθον δεῦρο, σωθῆναι μόνον.
ΗΜ. ἄγε, τίς πρῶτος; τίς δ' ἐπὶ πρώτῳ
ταχθεὶς δαλοῦ κώπην ὀχμάσας
Κύκλωπος ἔσω βλεφάρων ὤσας
λαμπρὰν ὄψιν διακναίσει;
ΗΜ. σίγα σίγα. καὶ δὴ μεθύων
ἄχαριν κέλαδον μουσιζόμενος
σκαιὸς ἀπῳδὸς καὶ κλαυσόμενος
χωρεῖ πετρίνων ἔξω μελάθρων.
φέρε νιν κώμοις παιδεύσωμεν
τὸν ἀπαίδευτον.
πάντως μέλλει τυφλὸς εἶναι.
ΧΟ. μάκαρ ὅστις εὐιάζει στρ.
βοτρύων φίλαισι πηγαῖς
ἐπὶ κῶμον ἐκπετασθείς,
φίλον ἄνδρ' ὑπαγκαλίζων,
ἐπὶ δεμνίοισί τ' ἄνθος
χλιδανῆς ἔχων ἑταίρας

495 — 502 = 503 — 510 = 511 — 518

μυρόχριστος λιπαρὸν βό-
στρυχον, αὐδᾷ δέ· θύραν τίς οἴξει μοι;
ΚΥ. παπαπαῖ, πλέως μὲν οἴνου, ἀντ.
γάνυμαι δὲ δαιτὸς ἥβῃ,
σκάφος ὁλκὰς ὣς γεμισθεὶς
ποτὶ σέλμα γαστρὸς ἄκρας.
ὑπάγει μ' ὁ χόρτος εὔφρων
ἐπὶ κῶμον ἦρος ὥραις,
ἐπὶ Κύκλωπας ἀδελφούς.
φέρε μοι, ξεῖνε, φέρ', ἀσκὸν ἔνδος μοι.
ΧΟ. καλὸν ὄμμασιν δεδορκὼς ἀντ. β'
καλὸς ἐκπερᾷ μελάθρων.
* * φιλεῖ τις ἡμᾶς.
λύχνα δ' ἀμμένει δάια σὸν
χρόα χὼς τέρεινα νύμφα
δροσερῶν ἔσωθεν ἄντρων.
στεφάνων δ' οὐ μία χροιὰ
περὶ σὸν κρᾶτα τάχ' ἐξομιλήσει.
ΟΔ. Κύκλωψ, ἄκουσον, ὡς ἐγὼ τοῦ Βακχίου
τούτου τρίβων εἴμ', ὃν πιεῖν ἔδωκά σοι.
ΚΥ. ὁ Βάκχιος δὲ τίς; θεὸς νομίζεται;
ΟΔ. μέγιστος ἀνθρώποισιν εἰς τέρψιν βίου.
ΚΥ. ἐρυγγάνω γοῦν αὐτὸν ἡδέως ἐγώ.
ΟΔ. τοιόσδ' ὁ δαίμων· οὐδένα βλάπτει βροτῶν.
ΚΥ. θεὸς δ' ἐν ἀσκῷ πῶς γέγηθ' οἴκους ἔχων;
ΟΔ. ὅπου τιθῇ τις, ἐνθάδ' ἐστὶν εὐπετής.
ΚΥ. οὐ τοὺς θεοὺς χρῆν σῶμ' ἔχειν ἐν δέρμασιν.
ΟΔ. τί δ', εἴ σε τέρπει γ'; ἢ τὸ δέρμα σοι πικρόν;
ΚΥ. μισῶ τὸν ἀσκόν· τὸ δὲ ποτὸν φιλῶ τόδε.
ΟΔ. μένων νυν αὐτοῦ πῖνε κεὐθύμει, Κύκλωψ.
ΚΥ. οὐ χρή μ' ἀδελφοῖς τοῦδε προσδοῦναι ποτοῦ;
ΟΔ. ἔχων γὰρ αὐτὸς τιμιώτερος φανεῖ.

ΚΥ. διδοὺς δὲ τοῖς φίλοισι χρησιμώτερος.
ΟΔ. πυγμὰς ὁ κῶμος λοίδορόν τ' ἔριν φιλεῖ.
ΚΥ. μεθύωμεν· ἔμπας δ' οὔτις ἂν ψαύσειέ μου.
ΟΔ. ὦ τᾶν, πεπωκότ' ἐν δόμοισι χρὴ μένειν.
ΚΥ. ἠλίθιος ὅστις μὴ πιὼν κῶμον φιλεῖ.
ΟΔ. ὃς δ' ἂν μεθυσθείς γ' ἐν δόμοις μείνῃ, σοφός.
ΚΥ. τί δρῶμεν, ὦ Σειληνέ; σοὶ μένειν δοκεῖ;
ΣΕΙ. δοκεῖ. τί γὰρ δεῖ συμποτῶν ἄλλων, Κύκλωψ;
ΚΥ. καὶ μὴν λαχνῶδές γ' οὖδας ἀνθηρᾶς χλόης.
ΣΕΙ. καὶ πρός γε θάλπος ἡλίου πίνειν καλόν.
κλίθητί νύν μοι πλευρὰ θεὶς ἐπὶ χθονός.
ΚΥ. ἰδού·
τί δῆτα τὸν κρατῆρ' ὄπισθέ μου τίθης;
ΣΕΙ. ὡς μὴ παριών τις καταλάβῃ. ΚΥ. πίνειν μὲν οὖν
κλέπτων σὺ βούλει· κάτθες αὐτὸν εἰς μέσον.
σὺ δ', ὦ ξέν', εἰπὲ τοὔνομ' ὅ τι σε χρὴ καλεῖν.
ΟΔ. Οὖτιν· χάριν δὲ τίνα λαβών σ' ἐπαινέσω;
ΚΥ. πάντων σ' ἑταίρων ὕστατον θοινάσομαι.
ΣΕΙ. καλόν γε τὸ γέρας τῷ ξένῳ δίδως, Κύκλωψ.
ΚΥ. οὗτος, τί δρᾷς; τὸν οἶνον ἐκπίνεις λάθρᾳ;
ΣΕΙ. οὔκ, ἀλλ' ἔμ' οὗτος ἔκυσεν, ὅτι καλὸν βλέπω.
ΚΥ. κλαύσει, φιλῶν τὸν οἶνον οὐ φιλοῦντά σε.
ΣΕΙ. ναὶ μὰ Δί', ἐπεί μού φησ' ἐρᾶν ὄντος καλοῦ.
ΚΥ. ἔγχει, πλέων δὲ τὸν σκύφον. δίδου μόνον.
ΣΕΙ. πῶς οὖν κέκραται; φέρε διασκεψώμεθα.
ΚΥ. ἀπολεῖς· δὸς οὕτως. ΣΕΙ. ναὶ μὰ Δί' οὐ πρὶν ἄν γε σὲ
στέφανον ἴδω λαβόντα, γεύσωμαί τέ τι.
ΚΥ. ᾠνοχόος ἄδικος. ΣΕΙ. οὐ μὰ Δί', ἀλλ' ᾦνος γλυκύς.
ἀπομυκτέον δέ σοί γ', ὅπως λήψει πιεῖν.
ΚΥ. ἰδού, καθαρὸν τὸ χεῖλος αἱ τρίχες τέ μου.

ΣΕΙ. θές νυν τὸν ἀγκῶν᾽ εὐρύθμως, κᾆτ᾽ ἔκπιε,
ὥσπερ μ᾽ ὁρᾷς πίνοντα χὤσπερ οὐκέτι.
ΚΥ. ἆ ἆ, τί δράσεις; ΣΕΙ. ἡδέως ἠμύστισα.
ΚΥ. λάβον, ξέν᾽, αὐτὸς οἰνοχόος τέ μοι γενοῦ.
ΟΔ. γιγνώσκεται γοῦν ἡ ἄμπελος τῇ ᾽μῇ χερί.
ΚΥ. φέρ᾽ ἔγχεόν νυν. ΟΔ. ἐγχέω, σίγα μόνον.
ΚΥ. χαλεπὸν τόδ᾽ εἶπας, ὅστις ἂν πίνῃ πολύν.
ΟΔ. ἰδοὺ λαβὼν ἔκπιθι καὶ μηδὲν λίπῃς.
συνεκθανεῖν δὲ σπῶντα χρὴ τῷ πώματι.
ΚΥ. παπαῖ, σοφόν γε τὸ ξύλον τῆς ἀμπέλου.
ΟΔ. κἂν μὲν σπάσῃς γε δαιτὶ πρὸς πολλῇ πολύν,
τέγξας ἄδιψον νηδύν, εἰς ὕπνον βαλεῖ·
ἢν δ᾽ ἐκλίπῃς τι, ξηρανεῖ σ᾽ ὁ Βάκχιος.
ΚΥ. ἰοὺ ἰού,
ὡς ἐξένευσα μόγις· ἄκρατος ἡ χάρις·
ὁ δ᾽ οὐρανός μοι συμμεμιγμένος δοκεῖ
τῇ γῇ φέρεσθαι, τοῦ Διός τε τὸν θρόνον
λεύσσω τὸ πᾶν τε δαιμόνων ἁγνὸν σέβας.
οὐκ ἂν φιλήσαιμ᾽· αἱ Χάριτες πειρῶσί με.
ἅλις Γανυμήδην τόνδ᾽ ἔχων ἀναπαύσομαι
κάλλιστα νὴ τὰς Χάριτας. ἥδομαι δέ πως
τοῖς παιδικοῖσι μᾶλλον ἢ τοῖς θήλεσιν.
ΣΕΙ. ἐγὼ γὰρ ὁ Διός εἰμι Γανυμήδης, Κύκλωψ;
ΚΥ. ναὶ μὰ Δί᾽, ὃν ἁρπάζω γ᾽ ἐγὼ ᾽κ τῆς Δαρδάνου.
ΣΕΙ. ἀπόλωλα, παῖδες· σχέτλια πείσομαι κακά.
ΧΟ. μέμφει τὸν ἐραστὴν κἀντρυφᾷς πεπωκότα;
ΣΕΙ. οἴμοι· πικρότατον οἶνον ὄψομαι τάχα.
ΟΔ. ἄγε δή, Διονύσου παῖδες, εὐγενῆ τέκνα,
ἔνδον μὲν ἀνήρ· τῷ δ᾽ ὕπνῳ παρειμένος
τάχ᾽ ἐξ ἀναιδοῦς φάρυγος ὠθήσει κρέα.
δαλὸς δ᾽ ἔσωθεν αὐλίων ὠθεῖ καπνόν.

παρευτρέπισται δ' οὐδὲν ἄλλο πλὴν πυροῦν
Κύκλωπος ὄψιν· ἀλλ' ὅπως ἀνὴρ ἔσει.
ΧΟ. πέτρας τὸ λῆμα κἀδάμαντος ἕξομεν.
χώρει δ' ἐς οἴκους, πρίν τι τὸν πατέρα παθεῖν
ἀπάλαμνον, ὥς σοι τἀνθάδ' ἐστὶν εὐτρεπῆ.
ΟΔ. Ἥφαιστ' ἄναξ Αἰτναῖε, γείτονος κακοῦ
λαμπρὸν πυρώσας ὄμμ' ἀπαλλάχθηθ' ἅπαξ,
σύ τ' ὦ μελαίνης Νυκτὸς ἐκπαίδευμ', Ὕπνε,
ἄκρατος ἐλθὲ θηρὶ τῷ θεοστυγεῖ,
καὶ μὴ 'πὶ καλλίστοισι Τρωικοῖς πόνοις
αὐτόν τε ναύτας τ' ἀπολέσητ' Ὀδυσσέα
ὑπ' ἀνδρός, ᾧ θεῶν οὐδὲν ἢ βροτῶν μέλει.
ἢ τὴν τύχην μὲν δαίμον' ἡγεῖσθαι χρεών,
τὰ δαιμόνων δὲ τῆς τύχης ἐλάσσονα.
ΧΟ. λήψεται τὸν τράχηλον
ἐντόνως ὁ καρκίνος
τοῦ ξένων δαιτυμόνος· πυρὶ γὰρ τάχα
φωσφόρους ὀλεῖ κόρας·
ἤδη δαλὸς ἠνθρακωμένος
κρύπτεται εἰς σποδιάν, δρυὸς ἄσπετον ἔρνος.
ἀλλ' ἴτω Μάρων, πρασσέτω·
μαινομένου 'ξελέτω βλέφαρον
Κύκλωπος, ὡς πίῃ κακῶς.
κἀγὼ τὸν φιλοκισσοφόρον Βρόμιον
ποθεινὸν εἰσιδεῖν θέλω,
Κύκλωπος λιπὼν ἐρημίαν.
ἆρ' ἐς τοσόνδ' ἀφίξομαι;
ΟΔ. σιγᾶτε πρὸς θεῶν, θῆρες, ἡσυχάζετε,
συνθέντες ἄρθρα στόματος· οὐδὲ πνεῖν ἐῶ,
οὐ σκαρδαμύσσειν οὐδὲ χρέμπτεσθαί τινα,
ὡς μὴ 'ξεγερθῇ τὸ κακόν, ἔστ' ἂν ὄμματος
ὄψις Κύκλωπος ἐξαμιλληθῇ πυρί.

ΧΟ. σιγῶμεν ἐγκάψαντες αἰθέρα γνάθοις.
ΟΔ. ἄγε νυν ὅπως ἅψεσθε τοῦ δαλοῦ χεροῖν
ἔσω μολόντες· διάπυρος δ' ἐστὶν καλῶς.
ΧΟ. οὔκουν σὺ τάξεις οὕστινας πρώτους χρεὼν
καυτὸν μοχλὸν λαβόντας ἐκκαίειν τὸ φῶς
Κύκλωπος, ὡς ἂν τῆς τύχης κοινώμεθα.
ΗΜ. ἡμεῖς μέν ἐσμεν μακρότερον πρὸ τῶν θυρῶν
ἑστῶτες ὠθεῖν ἐς τὸν ὀφθαλμὸν τὸ πῦρ.
ΗΜ. ἡμεῖς δὲ χωλοί γ' ἀρτίως γεγενήμεθα.
ΗΜ. ταὐτὸν πεπόνθατ' ἆρ' ἐμοί. ΗΜ. τοὺς γὰρ πόδας
ἑστῶτες ἐσπάσθημεν οὐκ οἶδ' ἐξ ὅτου.
ΟΔ. ἑστῶτες ἐσπάσθητε; ΗΜ. καὶ τά γ' ὄμματα
μέστ' ἐστὶν ἡμῶν κόνεος ἢ τέφρας ποθέν.
ΟΔ. ἄνδρες πονηροὶ κοὐδὲν οἵδε σύμμαχοι.
ΧΟ. ὁτιὴ τὸ νῶτον τὴν ῥάχιν τ' οἰκτείρομεν,
καὶ τοὺς ὀδόντας ἐκβαλεῖν οὐ βούλομαι
τυπτόμενος, αὕτη γίγνεται πονηρία;
ἀλλ' οἶδ' ἐπῳδὴν Ὀρφέως ἀγαθὴν πάνυ,
ὡς αὐτόματον τὸν δαλὸν εἰς τὸ κρανίον
στείχονθ' ὑφάπτειν τὸν μονῶπα παῖδα γῆς.
ΟΔ. πάλαι μὲν ᾔδειν σ' ὄντα τοιοῦτον φύσει,
νῦν δ' οἶδ' ἄμεινον. τοῖσι δ' οἰκείοις φίλοις
χρῆσθαί μ' ἀνάγκη. χειρὶ δ' εἰ μηδὲν σθένεις,
ἀλλ' οὖν ἐπεγκέλευέ γ', ὡς εὐψυχίαν
φίλων κελευσμοῖς τοῖσι σοῖς κτησώμεθα.
ΧΟ. δράσω τάδ'. ἐν τῷ Καρὶ κινδυνεύσομεν.
κελευσμάτων δ' ἕκατι τυφέσθω Κύκλωψ.
ἰὼ ἰώ,
γενναιότατ' ὠθεῖτε, σπεύδετε.
ἐκκαίετε τὴν ὀφρὺν
θηρὸς τοῦ ξενοδαίτα.
τύφετ' ὦ, καίετ' ὦ

τὸν Αἴτνας μηλονόμον.
τόρνευ᾿, ἕλκε, μή σ᾿ ἐξοδυνηθεὶς
δράσῃ τι μάταιον.
ΚΥ. ὤμοι, κατηνθρακώμεθ᾿ ὀφθαλμοῦ σέλας.
ΧΟ. καλός γ᾿ ὁ παιάν· μέλπε μοι τόνδ᾿, ὦ Κύκλωψ.
ΚΥ. ὤμοι μάλ᾿, ὡς ὑβρίσμεθ᾿, ὡς ὀλώλαμεν.
ἀλλ᾿ οὔτι μὴ φύγητε τῆσδ᾿ ἔξω πέτρας
χαίροντες, οὐδὲν ὄντες· ἐν πύλαισι γὰρ
σταθεὶς φάραγγος τῆσδ᾿ ἐναρμόσω χέρας.
ΧΟ. τί χρῆμ᾿ ἀυτεῖς, ὦ Κύκλωψ; ΚΥ. ἀπωλόμην.
ΧΟ. αἰσχρός γε φαίνει. ΚΥ. κἀπὶ τοῖσδέ γ᾿ ἄθλιος.
ΧΟ. μεθύων κατέπεσες εἰς μέσους τοὺς ἄνθρακας;
ΚΥ. Οὖτίς μ᾿ ἀπώλεσ᾿. ΧΟ. οὐκ ἄρ᾿ οὐδείς σ᾿ ἠδίκει;
ΚΥ. Οὖτίς με τυφλοῖ βλέφαρον. ΧΟ. οὐκ ἄρ᾿ εἶ τυ-
φλός;
ΚΥ. ὡς δὴ σύ ΧΟ. καὶ πῶς σ᾿ οὔτις ἂν θείη τυφλόν;
ΚΥ. σκώπτεις. ὁ δ᾿ Οὖτις ποῦ ᾿στιν; ΧΟ. οὐδαμοῦ,
Κύκλωψ.
ΚΥ. ὁ ξένος, ἵν᾿ ὀρθῶς ἐκμάθῃς, μ᾿ ἀπώλεσεν,
ὁ μιαρός, ὅς μοι δοὺς τὸ πῶμα κατέκλυσεν.
ΧΟ. δεινὸς γὰρ οἶνος καὶ παλαίεσθαι βαρύς.
ΚΥ. πρὸς θεῶν, πεφεύγασ᾿ ἢ μένουσ᾿ εἴσω δόμων;
ΧΟ. οὗτοι σιωπῇ τὴν πέτραν ἐπήλυγα
λαβόντες ἑστήκασι. ΚΥ. ποτέρας τῆς χερός;
ΧΟ. ἐν δεξιᾷ σου. ΚΥ. ποῦ; ΧΟ. πρὸς αὐτῇ τῇ πέτρᾳ.
ἔχεις; ΚΥ. κακόν γε πρὸς κακῷ· τὸ κρανίον
παίσας κατέαγα. ΧΟ. καί σε διαφεύγουσί γε;
ΚΥ. οὐ τῇδ᾿ ἐπείγειν εἶπας; ΧΟ. οὔ· ταύτῃ λέγω.
ΚΥ. πῇ γάρ; ΧΟ. περιάγου, κεῖσε, πρὸς τἀριστερά.
ΚΥ. οἴμοι γελῶμαι· κερτομεῖτέ μ᾿ ἐν κακοῖς.
ΧΟ. ἄλλου μετάλλα· πρόσθεν ΟΥΤΙΣ ἐστί σου.

ΚΥ. ὦ παγκάκιστε, ποῦ ποτ' εἶ; ΟΔ. τηλοῦ σέθεν
φυλακαῖσι φρουρῶ σῶμ' Ὀδυσσέως τόδε.
ΚΥ. πῶς εἶπας; ὄνομα μεταβαλὼν καινὸν λέγεις;
ΟΔ. ὅπερ μ' ὁ φύσας ὠνόμαζ' Ὀδυσσέα.
δώσειν δ' ἔμελλες ἀνοσίου δαιτὸς δίκας·
κακῶς γὰρ ἂν Τροίαν γε διεπυρώσαμεν,
εἰ μή σ' ἑταίρων φόνον ἐτιμωρησάμην.
ΚΥ. αἰαῖ· παλαιὸς χρησμὸς ἐκπεραίνεται.
τυφλὴν γὰρ ὄψιν ἐκ σέθεν σχήσειν μ' ἔφη
Τροίας ἀφορμηθέντος. ἀλλὰ καὶ σέ τοι
δίκας ὑφέξειν ἀντὶ τῶνδ' ἐθέσπισεν,
πολὺν θαλάσσῃ χρόνον ἐναιωρούμενον.
ΟΔ. κλαίειν σ' ἄνωγα· καὶ δέδραχ' ὅπερ λέγω.
ἐγὼ δ' ἐπ' ἀκτὰς εἶμι καὶ νεὼς σκάφος
ἥσω 'πὶ πόντον Σικελὸν ἔς τ' ἐμὴν πάτραν.
ΚΥ. οὐ δῆτ', ἐπεί σε τῆσδ' ἀπορρήξας πέτρας
αὐτοῖσι συνναύταισι συντρίψω βαλών.
ἄνω δ' ἐπ' ὄχθον εἶμι, καίπερ ὢν τυφλός,
δι' ἀμφιτρῆτος τῆσδε προσβαίνων ποδί.
ΧΟ. ἡμεῖς δὲ συνναῦταί γε τοῦδ' Ὀδυσσέως
ὄντες τὸ λοιπὸν Βακχίῳ δουλεύσομεν.

ΟΡΕΣΤΗΣ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΗΛΕΚΤΡΑ.
ΕΛΕΝΗ.
ΕΡΜΙΟΝΗ.
ΧΟΡΟΣ.
ΟΡΕΣΤΗΣ.
ΜΕΝΕΛΑΟΣ.
ΤΥΝΔΑΡΕΩΣ.
ΠΥΛΑΔΗΣ.
ΑΓΓΕΛΟΣ.
ΦΡΥΞ.
ΑΠΟΛΛΩΝ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ.

Ὀρέστης τὸν φόνον τοῦ πατρὸς μεταπορευόμενος ἀνεῖλεν Αἴγισθον καὶ Κλυταιμνήστραν· μητροκτονῆσαι δὲ τολμήσας, παραχρῆμα τὴν δίκην ἔδωκεν ἐμμανὴς γενόμενος. Τυνδάρεω δὲ τοῦ πατρὸς τῆς ἀνῃρημένης κατηγορήσαντος κατ' αὐτοῦ, ἔμελλον κοινὴν Ἀργεῖοι ψῆφον ἐκφέρεσθαι περὶ τοῦ τί δεῖ παθεῖν τὸν ἀσεβήσαντα· κατὰ τύχην δὲ Μενέλαος ἐκ τῆς πλάνης ὑποστρέψας, νυκτὸς μὲν Ἑλένην εἰσαπέστειλε, μεθ' ἡμέραν δὲ αὐτὸς ἦλθε. καὶ παρακαλούμενος ὑπ' Ὀρέστου βοηθῆσαι αὐτῷ, ἀντιλέγοντα Τυνδάρεων μᾶλλον ηὐλαβήθη. λεχθέντων δὲ λόγων ἐν τοῖς ὄχλοις, ἐπηνέχθη τὸ πλῆθος ἀποκτείνειν Ὀρέστην. *** συνὼν δὲ τούτοις ὁ Πυλάδης ὁ φίλος αὐτοῦ συνεβούλευσε πρῶτον Μενελάου τιμωρίαν λαβεῖν, Ἑλένην ἀποκτείναντας. αὐτοὶ μὲν οὖν ἐπὶ τούτοις ἐλθόντες διεψεύσθησαν τῆς ἐλπίδος, θεῶν τὴν Ἑλένην ἁρπασάντων· Ἠλέκτρα δὲ Ἑρμιόνην ἐπιφανεῖσαν ἔδωκεν εἰς χεῖρας αὐτοῖς· οἱ δὲ ταύτην φονεύειν ἔμελλον. ἐπιφανεὶς δὲ Μενέλαος καὶ βλέπων ἑαυτὸν ἅμα γυναικὸς καὶ τέκνου στερούμενον ὑπ' αὐτῶν, ἐπεβάλετο τὰ βασίλεια πορθεῖν· οἱ δὲ φθάσαντες ὑφάψειν ἠπείλησαν. ἐπιφανεὶς δὲ Ἀπόλλων Ἑλένην μὲν ἔφησεν εἰς θεοὺς διακομίζειν, Ὀρέστῃ δὲ Ἑρμιόνην ἐπέταξε λαβεῖν, Πυλάδῃ δὲ Ἠλέκτραν συνοικίσαι, καθαρθέντι δὲ τοῦ φόνου Ἄργους ἄρχειν.

Ἡ μὲν σκηνὴ τοῦ δράματος ὑπόκειται ἐν Ἄργει· ὁ δὲ χορὸς συνέστηκεν ἐκ γυναικῶν Ἀργείων, ἡλικιωτίδων Ἠλέκτρας, αἳ καὶ παραγίνονται ὑπὲρ τῆς τοῦ Ὀρέστου πυνθανόμεναι συμφορᾶς. προλογίζει δὲ Ἠλέκτρα. τὸ δὲ δρᾶμα κωμικωτέραν ἔχει τὴν καταστροφήν. ἡ δὲ διασκευὴ τοῦ δράματός ἐστι τοιαύτη. πρὸς τὰ τοῦ Ἀγαμέμνονος βασίλεια ὑπόκειται Ὀρέστης κάμνων καὶ κείμενος ὑπὸ μανίας ἐπὶ κλινιδίου, ᾧ προσκαθέζεται πρὸς τοῖς ποσὶν Ἠλέκτρα. διαπορεῖται δὲ τί δήποτε οὐ πρὸς τῇ κεφαλῇ καθέζεται· οὕτω δὲ μᾶλλον ἂν ἐδόκει τὸν ἀδελφὸν τημελεῖν, πλησιαίτερον προσκαθεζομένη. ἔοικεν οὖν διὰ τὸν χορὸν ὁ ποιητὴς διασκευάσαι· διηγέρθη γὰρ ἂν ὁ Ὀρέστης, ἄρτι καὶ μόγις καταδραθείς, πλησιαίτερον αὐτῷ τῶν κατὰ τὸν χορὸν γυναικῶν παρισταμένων. ἔστι δὲ ὑπονοῆσαι τοῦτο ἐξ ὧν φησιν Ἠλέκτρα τῷ χορῷ· ‘σίγα σίγα, λεπτὸν ἴχνος ἀρβύλης’. πιθανὸν οὖν ταύτην εἶναι τὴν πρόφασιν τῆς τοιαύτης διαθέσεως. τὸ δρᾶμα τῶν ἐπὶ σκηνῆς εὐδοκιμούντων, χείριστον δὲ τοῖς ἤθεσι· πλὴν γὰρ Πυλάδου πάντες φαῦλοί εἰσιν.

ΑΛΛΩΣ.

Ὅτε κατὰ τῶν Τρώων ἡ Ἑλλὰς ὥρμησεν, Ἀγαμέμνων στρατηγὸς ᾑρέθη παντὸς τοῦ στόλου, ἅτε τῶν ἄλλων προέχειν δοκῶν ἀρχῆς τε μεγέθει καὶ πλήθει νεῶν· ἑκατὸν γὰρ ναῦς εἰς τὴν τοῦ στόλου συντέλειαν εἰσέφερε. καὶ ὃς μέλλων ἀνάγεσθαι καταλείπει τῶν οἴκοι πραγμάτων αὐτοῦ ἐπιμελητὴν καὶ προστάτην Αἴγισθον. ἐπεὶ δὲ πολὺς ἠνύετο χρόνος καὶ Ἀγαμέμνων οὐκέτ' ἐπανῄει, οἷα δὴ [πολλὰ] γίνεται, συνῆλθεν ἀθέσμως Αἴγισθος Κλυταιμνήστρᾳ τῇ τοῦ Ἀγα-

μέμνονος γυναικί. μαθόντες δὲ Κλυταιμνήστρα καὶ Αἴγισθος τήν τε Τροίαν ἁλοῦσαν καὶ Ἀγαμέμνονα μετὰ τῶν ἄλλων οἴκαδε πλέοντα, βουλεύονται τοῦτον τῆς οἰκίας ἐπειλημμένον ἀποκτενεῖν, ἵνα μὴ τούτῳ γνωσθέντος τοῦ σφῶν πονηρεύματος αὐτοὶ παραδοθεῖεν θανάτῳ· ὃ δὴ καὶ ἤνυσαν καὶ ἐπανελθόντα τὸν Ἀγαμέμνονα ἀποκτείνουσι. χιτῶνα γὰρ μὴ διεξόδους κεφαλῆς καὶ χειρῶν ἔχοντα μετὰ τὸ λουτρὸν ἐνδιδύσκουσι καὶ ἐν τῷ πελέκει τοῦτον φονεύουσι. μεταξὺ γοῦν τοῦ Ἀγαμεμνονείου φόνου Ἠλέκτρα τὸν ἀδελφὸν Ὀρέστην, ἵνα μὴ καὶ οὗτος ἀναιρεθείη, κλέψασα καί τινι δοῦσα παιδαγωγῷ εἰς Φωκίδα παρὰ Στρόφιον πέμπει, φίλον καὶ συγγενῆ τοῦ πατρὸς αὐτῆς τυγχάνοντα. Ὀρέστης δὲ εἰς ἄνδρας ἥκων, παραλαβὼν Πυλάδην τὸν παῖδα Στροφίου, ἐφ᾽ ᾧ μετ᾽ αὐτοῦ Αἴγισθον καὶ Κλυταιμνήστραν τιμωρήσαιτο, καταλαμβάνει λάθρᾳ τὸ Ἄργος. καὶ χρησμὸν παρὰ τοῦ Πυθίου δεξάμενος τοῦτο ποιεῖν, πρῶτον μὲν ἔρχεται πρὸς τὸν τοῦ πατρὸς τάφον καὶ θύει, εἶτά τι μηχανᾶται τοιόνδε. τὸν γὰρ παιδαγωγὸν ᾧ παρὰ τῆς Ἠλέκτρας πάλαι πιστευθεὶς ἧκεν, ὡς ἔφημεν, εἰς τὴν Φωκίδα, τοῦτον προπέμπει εἰς Αἴγισθον καὶ Κλυταιμνήστραν λέγοντα ὡς Ὀρέστης ἐν Πυθικοῖς ἄθλοις ἀνηρέθη καὶ νῦν ἄνδρες τὰ τούτου ὀστᾶ ἐν κιβωτίῳ κομίζουσιν, ἵνα πατρῴων γοῦν τάφων τύχῃ. ὑπαχθέντες δὲ τῇ τοιαύτῃ ἀπάτῃ Κλυταιμνήστρα καὶ Αἴγισθος, ἵνα μὴ μακρολογῶ, ἀναιροῦνται ὑπὸ Ὀρέστου καὶ Πυλάδου, πρώτη μὲν Κλυταιμνήστρα, ὕστερος δὲ Αἴγισθος. μητροκτονήσας τοίνυν Ὀρέστης Ἐρινύσι παραχρῆμα τὴν δίκην ἔδωκε μανείς. Μενέλαος δὲ ἐκ Τροίας ἐλθών, ὕστερος γὰρ Ἀγαμέμνονος ἐπανῆκε, καὶ τῷ Ναυπλίῳ λιμένι προσσχών, νυκτὸς μὲν Ἑλέ-

νην εἰσπέμπει πρὸς Μυκήνας, μεθ' ἡμέραν δὲ αὐτὸς εἰσήει, καὶ τὸν Ὀρέστην μεμηνότα εὑρών, παρακαλεῖται μὲν ὑπὸ Ὀρέστου καὶ Ἠλέκτρας σῶσαι αὐτούς· ὁ γὰρ τῆς Κλυταιμνήστρας πατὴρ Τυνδάρεως πάντας Ἀργείους κατ' αὐτῶν ἐκίνησεν, ἵνα τούτους ὡς μητροκτόνους ἀνέλοιεν· ὡς δὲ τὸν Τυνδάρεων ἀντιλέγοντα εὗρε, καὶ ἅμα καὶ αὐτὸς ὑπολογιζόμενος ὡς εἰ Ὀρέστης ἀναιρεθείη βασιλεὺς αὐτὸς ἔσται τοῦ Ἄργους, οὐκ ἤθελεν Ὀρέστῃ τε καὶ τῇ ἀδελφῇ συμμαχεῖν, ἀλλὰ τὸ τῶν Ἀργείων πλῆθος ἔλεγεν εὐλαβεῖσθαι. πρῶτον μὲν οὖν Ὀρέστης καὶ Τυνδάρεως διελέχθησαν πρὸς ἀλλήλους, ὁ μὲν ὡς οὐ δικαίως ἀνείλετο Κλυταιμνήστραν δεικνύς, Ὀρέστης δὲ ὡς καὶ μάλα δικαίως, εἰ καὶ μυριάκις αὐτὴν ἔδει τεθνάναι. ἔπειτα ἐκκλησίας ἐν ἀκροπόλει Μυκηνῶν γενομένης καὶ συνιόντων τῶν προυχόντων ἐν Ἄργει, Ὀρέστης ὑπὸ Πυλάδου φοράδην ἐκεῖσε κομίζεται. λόγων δὲ πολλῶν γινομένων καὶ τῶν μὲν βοηθούντων Ὀρέστῃ, τῶν δὲ ἐναντιουμένων, τέλος ἐνίκησαν οἱ κακοί, καὶ κατακρίνεται Ὀρέστης αὐτός τε καὶ ἡ ἀδελφὴ λίθοις βληθέντες ἀποθανεῖν. Ὀρέστης δὲ ἐπηγγείλατο πρὸς τὸ πλῆθος αὐτοχειρίᾳ ἑαυτὸν καὶ τὴν ἀδελφὴν ἀποσφάξαι. καὶ ὁ φίλος Πυλάδης καὶ παρὰ τὴν συμφορὰν φίλος ἔμεινε καὶ κοινωνεῖν αὐτῷ τῆς τελευτῆς ἠξίωσε προθυμότατα. ἐπεὶ δὲ σφίσι τοῦτο παθεῖν προύκειτο, συμβουλεύει Πυλάδης, Μενέλεω πρῶτον τιμωρίαν λαβεῖν, λέγων ὡς οὐ δεῖ τοῦτον τρυφᾶν ἡμῶν ἀπιόντων. ὅθεν εἰσελθόντες εἴσω τῶν βασιλείων Ἑλένης δῆθεν δεησόμενοι, ἵνα μὴ περιίδῃ σφᾶς ὀλλυμένους, ἀλλὰ χεῖρα ὀρέξῃ καὶ Μενέλεων καὶ ἄκοντα πρὸς σωτηρίαν κινήσῃ, ἐπεὶ ταύτην φονεύειν ἔμελλον, ταύτης μὲν ἥμαρτον, ὑπὸ Ἀπόλλωνος ἁρ-

πασθείσης κελεύσει Διός, Ἑρμιόνην δὲ συλλαμβάνουσιν ἐκ τοῦ τῆς Κλυταιμνήστρας τάφου ἐπανήκουσαν· πρώην γὰρ αὐτὴν Ἑλένη πεπόμφει τῇ ἀδελφῇ θύσουσαν. λαβόντες δὲ Ἑρμιόνην καὶ ἔνδοθεν τὰς τῶν βασιλείων ἀσφαλίσαντες πύλας, ἀνῆλθον ἐν μετεώρῳ τῶν βασιλείων, ἔχοντές τε τὴν Ἑρμιόνην καὶ ξίφος πρὸς τῇ δέρῃ αὐτῆς καὶ μέλλοντες μετὰ τὴν ταύτης διαχείρισιν, ἂν μὴ σφᾶς Μενέλεως σώσῃ, καὶ τοὺς δόμους ὑφάψειν πυρί. Μενέλεως μὲν ὑπὸ τούτων Ἑλένην τεθνάναι μαθών, ἵνα κἂν σώσῃ τὴν παῖδα ἐλθών, ἤρξατο πορθεῖν τὰ βασίλεια· ἐπιφανεὶς δὲ Ἀπόλλων διήλλαξε τούτους, Ἑλένην μὲν εἰς οὐρανοὺς φήσας διακομίσαι, Μενέλεων δὲ ἑτέραν λαβεῖν κελεύσας γυναῖκα, Ὀρέστῃ δὲ Ἑρμιόνην συνάψαι μετὰ τὴν τοῦ φόνου κάθαρσιν· ἧς Ἀθήνησιν ἔτυχε μετὰ Ἐρινύων εἰς Ἄρειον πάγον κριθείς, ὅτε καὶ καταδικασθῆναι μέλλοντα ὑπὸ πάντων θεῶν Ἀθηνᾶ ψῆφον βαλοῦσα νικῆσαι τοῦτον ἐποίησε. καὶ οὕτως Ὀρέστης ὕστερον Ἑρμιόνην γυναῖκα λαμβάνει κατὰ τὸ τοῦ Ἀπόλλωνος θέσπισμα καὶ Ἄργους κρατεῖ, Πυλάδῃ δὲ Ἠλέκτραν δίδωσι τὴν καὶ πρότερον ὑπ' αὐτοῦ κατεγγυηθεῖσαν τούτῳ. ἰστέον δὲ ὅτι πᾶσα τραγῳδία σύμφωνον ἔχει καὶ τὸ τέλος· ἐκ λύπης γὰρ ἄρχεται καὶ εἰς λύπην τελευτᾷ· τὸ παρὸν δὲ δρᾶμά ἐστιν ἐκ τραγικοῦ κωμικόν· λήγει γὰρ εἰς τὰς παρ' Ἀπόλλωνος διαλλαγὰς ἐκ συμφορῶν εἰς εὐθυμίαν κατηντηκός· ἡ δὲ κωμῳδία γέλωσι καὶ εὐφροσύναις ἐνύφανται.

ΕΥΡΙΠΙΔΟΥ

ΟΡΕΣΤΗΣ.

ΗΛ. Οὐκ ἔστιν οὐδὲν δεινὸν ὧδ᾽ εἰπεῖν ἔπος
οὐδὲ πάθος οὐδὲ συμφορὰ θεήλατος,
ἧς οὐκ ἂν ἄραιτ᾽ ἄχθος ἀνθρώπου φύσις.
ὁ γὰρ μακάριος, κοὐκ ὀνειδίζω τύχας,
Διὸς πεφυκώς, ὥς λέγουσι, Τάνταλος
κορυφῆς ὑπερτέλλοντα δειμαίνων πέτρον
ἀέρι ποτᾶται καὶ τίνει ταύτην δίκην,
ὡς μὲν λέγουσιν, ὅτι θεοῖς ἄνθρωπος ὢν
κοινῆς τραπέζης ἀξίωμ᾽ ἔχων ἴσον,
ἀκόλαστον ἔσχε γλῶσσαν, αἰσχίστην νόσον.
οὗτος φυτεύει Πέλοπα, τοῦ δ᾽ Ἀτρεὺς ἔφυ,
ᾧ στέμματα ξήνασ᾽ ἐπέκλωσεν θεὰ
ἔριν Θυέστῃ πόλεμον ὄντι συγγόνῳ
θέσθαι· τί τἄρρητ᾽ ἀναμετρήσασθαί με δεῖ;
ἔδαισε δ᾽ οὖν νιν τέκν᾽ ἀποκτείνας Ἀτρεύς·
Ἀτρέως δέ, τὰς γὰρ ἐν μέσῳ σιγῶ τύχας,
ὁ κλεινὸς εἰ δὴ κλεινὸς Ἀγαμέμνων ἔφυ
Μενέλεώς τε Κρήσσης μητρὸς Ἀερόπης ἄπο.
γαμεῖ δ᾽ ὁ μὲν δὴ τὴν θεοῖς στυγουμένην
Μενέλαος Ἑλένην, ὁ δὲ Κλυταιμνήστρας λέχος
ἐπίσημον εἰς Ἕλληνας Ἀγαμέμνων ἄναξ·
ᾧ παρθένοι μὲν τρεῖς ἔφυμεν ἐκ μιᾶς,

Χρυσόθεμις Ἰφιγένειά τ' Ἠλέκτρα τ' ἐγώ,
ἄρσην τ' Ὀρέστης, μητρὸς ἀνοσιωτάτης,
ἣ πόσιν ἀπείρῳ περιβαλοῦσ' ὑφάσματι
ἔκτεινεν· ὧν δ' ἕκατι, παρθένῳ λέγειν
οὐ καλόν· ἐῶ τοῦτ' ἀσαφὲς ἐν κοινῷ σκοπεῖν.
Φοίβου δ' ἀδικίαν μὲν τί δεῖ κατηγορεῖν;
πείθει δ' Ὀρέστην μητέρ' ἥ σφ' ἐγείνατο
κτεῖναι, πρὸς οὐχ ἅπαντας εὔκλειαν φέρον.
ὅμως δ' ἀπέκτειν' οὐκ ἀπειθήσας θεῷ·
κἀγὼ μετέσχον, οἷα δὴ γυνή, φόνου
Πυλάδης θ' ὃς ἡμῖν συγκατείργασται τάδε.
ἐντεῦθεν ἀγρίᾳ συντακεὶς νόσῳ νοσεῖ
τλήμων Ὀρέστης ὅδε πεσών τ' ἐν δεμνίοις
κεῖται, τὸ μητρὸς δ' αἷμά νιν τροχηλατεῖ
μανίαισιν· ὀνομάζειν γὰρ αἰδοῦμαι θεὰς
Εὐμενίδας, αἳ τόνδ' ἐξαμιλλῶνται φόβῳ.
ἕκτον δὲ δὴ τόδ' ἦμαρ ἐξ ὅτου σφαγαῖς
θανοῦσα μήτηρ πυρὶ καθήγνισται δέμας,
ὧν οὔτε σῖτα διὰ δέρης ἐδέξατο,
οὐ λούτρ' ἔδωκε χρωτί· χλανιδίων δ' ἔσω
κρυφθείς, ὅταν μὲν σῶμα κουφισθῇ νόσου,
ἔμφρων δακρύει, ποτὲ δὲ δεμνίων ἄπο
πηδᾷ δρομαῖος, πῶλος ὣς ἀπὸ ζυγοῦ.
ἔδοξε δ' Ἄργει τῷδε μήθ' ἡμᾶς στέγαις,
μὴ πυρὶ δέχεσθαι, μήτε προσφωνεῖν τινα
μητροκτονοῦντας· κυρία δ' ἥδ' ἡμέρα,
ἐν ᾗ διοίσει ψῆφον Ἀργείων πόλις,
εἰ χρὴ θανεῖν νὼ λευσίμῳ πετρώματι,
ἢ φάσγανον θήξαντ' ἐπ' αὐχένος βαλεῖν.
ἐλπίδα δὲ δή τιν' ἔχομεν ὥστε μὴ θανεῖν·
ἥκει γὰρ εἰς γῆν Μενέλεως Τροίας ἄπο,
λιμένα δὲ Ναυπλίειον ἐκπληρῶν πλάτῃ

ἀκταῖσιν ὁρμεῖ, δαρὸν ἐκ Τροίας χρόνον
ἄλαισι πλαγχθείς· τὴν δὲ δὴ πολύστονον
Ἑλένην, φυλάξας νύκτα, μή τις εἰσιδὼν
μεθ᾿ ἡμέραν στείχουσαν, ὧν ὑπ᾿ Ἰλίῳ
παῖδες τεθνᾶσιν, εἰς πέτρων ἔλθῃ βολάς,
προύπεμψεν εἰς δῶμ᾿ ἡμέτερον· ἔστιν δ᾿ ἔσω
κλαίουσ᾿ ἀδελφὴν ξυμφοράς τε δωμάτων.
ἔχει δὲ δή τιν᾿ ἀλγέων παραψυχήν·
ἣν γὰρ κατ᾿ οἴκους ἔλιφ᾿, ὅτ᾿ ἐς Τροίαν ἔπλει,
παρθένον ἐμῇ τε μητρὶ παρέδωκεν τρέφειν
Μενέλαος ἀγαγὼν Ἑρμιόνην Σπάρτης ἄπο,
ταύτῃ γέγηθε κἀπιλήθεται κακῶν.
βλέπω δὲ πᾶσαν εἴσοδον, πότ᾿ ὄψομαι
Μενέλαον ἥκονθ᾿· ὡς τά γ᾿ ἄλλ᾿ ἐπ᾿ ἀσθενοῦς
ῥώμης ὀχούμεθ᾿, ἤν τι μὴ κείνου πάρα
σωθῶμεν. ἄπορον χρῆμα δυστυχῶν δόμος.

ΕΛ. ὦ παῖ Κλυταιμνήστρας τε κἀγαμέμνονος,
παρθένε μακρὸν δὴ μῆκος Ἠλέκτρα χρόνου,
πῶς, ὦ τάλαινα, σύ τε κασίγνητός τε σὸς
τλήμων Ὀρέστης μητρὸς ὅδε φονεὺς ἔφυ;
προσφθέγμασιν γὰρ οὐ μιαίνομαι σέθεν,
εἰς Φοῖβον ἀναφέρουσα τὴν ἁμαρτίαν.
καίτοι στένω γε τὸν Κλυταιμνήστρας μόρον
ἐμῆς ἀδελφῆς, ἥν, ἐπεὶ πρὸς Ἴλιον
ἔπλευσ᾿ ὅπως ἔπλευσα θεομανεῖ πότμῳ,
οὐκ εἶδον, ἀπολειφθεῖσα δ᾿ αἰάζω τύχας.

ΗΛ. Ἑλένη, τί σοι λέγοιμ᾿ ἂν ἅ γε παροῦσ᾿ ὁρᾷς,
ἐν συμφοραῖσι τὸν Ἀγαμέμνονος γόνον;
ἐγὼ μὲν ἄυπνος πάρεδρος ἀθλίῳ νεκρῷ,
νεκρὸς γὰρ οὗτος οὕνεκα σμικρᾶς πνοῆς,
θάσσω· τὰ τούτου δ᾿ οὐκ ὀνειδίζω κακά·

σὺ δ' εἶ μακαρία μακάριός θ' ὁ σὸς πόσις,
ἥκετον ἐφ' ἡμᾶς ἀθλίως πεπραγότας.
ΕΛ. πόσον χρόνον δὲ δεμνίοις πέπτωχ' ὅδε;
ΗΛ. ἐξ οὗπερ αἷμα γενέθλιον κατήνυσεν.
ΕΛ. ὦ μέλεος, ἡ τεκοῦσά θ', ὡς διώλετο.
ΗΛ. οὕτως ἔχει τάδ', ὥστ' ἀπείρηκεν κακοῖς.
ΕΛ. πρὸς θεῶν, πίθοι' ἂν δῆτά μοί τι, παρθένε;
ΗΛ. ὡς ἄσχολός γε συγγόνου προσεδρίᾳ.
ΕΛ. βούλει τάφον μοι πρὸς κασιγνήτης μολεῖν;
ΗΛ. μητρὸς κελεύεις τῆς ἐμῆς; τίνος χάριν;
ΕΛ. κόμης ἀπαρχὰς καὶ χοὰς φέρουσ' ἐμάς.
ΗΛ. σοὶ δ' οὐχὶ θεμιτὸν πρὸς φίλων στείχειν τάφον;
ΕΛ. δεῖξαι γὰρ Ἀργείοισι σῶμ' αἰσχύνομαι.
ΗΛ. ὀψέ γε φρονεῖς εὖ, τότε λιποῦσ' αἰσχρῶς δόμους.
ΕΛ. ὀρθῶς ἔλεξας, οὐ φίλως δέ μοι λέγεις.
ΗΛ. αἰδὼς δὲ δὴ τίς σ' ἐς Μυκηναίους ἔχει;
ΕΛ. δέδοικα πατέρας τῶν ὑπ' Ἰλίῳ νεκρῶν.
ΗΛ. δεινὸν γὰρ Ἄργει γ' ἀναβοᾷ διὰ στόμα.
ΕΛ. σύ νυν χάριν μοι τὸν φόβον λύσασα δός.
ΗΛ. οὐκ ἂν δυναίμην μητρὸς εἰσβλέψαι τάφον.
ΕΛ. αἰσχρόν γε μέντοι προσπόλους φέρειν τάδε.
ΗΛ. τί δ' οὐχὶ θυγατρὸς Ἑρμιόνης πέμπεις δέμας;
ΕΛ. εἰς ὄχλον ἕρπειν παρθένοισιν οὐ καλόν.
ΗΛ. καὶ μὴν τίνοι γ' ἂν τῇ τεθνηκυίᾳ τροφάς.
ΕΛ. καλῶς ἔλεξας, πείθομαί τέ σοι, κόρη.
ὦ τέκνον ἔξελθ', Ἑρμιόνη, δόμων πάρος
καὶ λαβὲ χοὰς τάσδ' ἐν χεροῖν κόμας τ' ἐμάς·
ἐλθοῦσα δ' ἀμφὶ τὸν Κλυταιμνήστρας τάφον
μελίκρατ' ἄφες γάλακτος οἰνωπόν τ' ἄχνην,
καὶ στᾶσ' ἐπ' ἄκρου χώματος λέξον τάδε·

καὶ πέμψομαί γε θυγατέρ'· εὖ γάρ τοι λέγεις. 111

Ἑλένη σ᾽ ἀδελφὴ ταῖσδε δωρεῖται χοαῖς,
φόβῳ προσελθεῖν μνῆμα σόν, ταρβοῦσά τε
Ἀργεῖον ὄχλον. εὐμενῆ δ᾽ ἄνωγέ νιν
ἐμοί τε καὶ σοὶ καὶ πόσει γνώμην ἔχειν
τοῖν τ᾽ ἀθλίοιν τοῖνδ᾽ οὓς ἀπώλεσεν θεός.
ἃ δ᾽ εἰς ἀδελφὴν καιρὸς ἐκπονεῖν ἐμέ,
ἅπανθ᾽ ὑπισχνοῦ νερτέρων δωρήματα.
ἴθ᾽ ὦ τέκνον μοι, σπεῦδε καὶ χοὰς τάφῳ
δοῦσ᾽ ὡς τάχιστα τῆς πάλιν μέμνησ᾽ ὁδοῦ.

ΗΛ. ὦ φύσις, ἐν ἀνθρώποισιν ὡς μέγ᾽ εἶ κακόν,
σωτήριόν τε τοῖς καλῶς κεκτημένοις.
εἴδετε παρ᾽ ἄκρας ὡς ἀπέθρισεν τρίχας,
σώζουσα κάλλος; ἔστι δ᾽ ἡ πάλαι γυνή.
θεοί σε μισήσειαν, ὥς μ᾽ ἀπώλεσας
καὶ τόνδε πᾶσάν θ᾽ Ἑλλάδ᾽. ὢ τάλαιν᾽ ἐγώ.
αἵδ᾽ αὖ πάρεισι τοῖς ἐμοῖς θρηνήμασι
φίλαι ξυνῳδοί· τάχα μεταστήσουσ᾽ ὕπνου
τόνδ᾽ ἡσυχάζοντ᾽, ὄμμα δ᾽ ἐκτήξουσ᾽ ἐμὸν
δακρύοις, ἀδελφὸν ὅταν ὁρῶ μεμηνότα.
ὦ φίλταται γυναῖκες, ἡσύχῳ ποδὶ
χωρεῖτε, μὴ ψοφεῖτε, μηδ᾽ ἔστω κτύπος.
φιλία γὰρ ἡ σὴ πρευμενὴς μέν, ἀλλ᾽ ἐμοὶ
τόνδ᾽ ἐξεγεῖραι ξυμφορὰ γενήσεται.

ΧΟ. σῖγα σῖγα, λεπτὸν ἴχνος ἀρβύλης στρ.
τίθετε, μὴ κτυπεῖτ᾽.

ΗΛ. ἀποπρὸ βᾶτ᾽ ἐκεῖσ᾽, ἀποπρό μοι κοίτας.

ΧΟ. ἰδού, πείθομαι.

ΗΛ. ἆ ἆ σύριγγος ὅπως πνοὰ
λεπτοῦ δόνακος, ὦ φίλα, φώνει μοι.

ΧΟ. ἴδ᾽, ἀτρεμαίαν ὡς ὑπόροφον φέρω
βοάν. ΗΛ. ναὶ οὕτως

140 — 151 = 152 — 165

κάταγε κάταγε, πρόσιθ᾽ ἀτρέμας, ἀτρέμας ἴθι·
λόγον ἀπόδος ἐφ᾽ ὅ τι χρέος ἐμόλετέ ποτε.
χρόνια γὰρ πεσὼν ὅδ᾽ εὐνάζεται.
ΧΟ. *πῶς ἔχει; λόγου μετάδος, ὦ φίλα,* ἀντ.
[τίνα τύχαν εἴπω;] τίνα δὲ συμφοράν;
ΗΛ. *ἔτι μὲν ἐμπνέει, βραχὺ δ᾽ ἀναστένει.*
ΧΟ. *τί φής; ὦ τάλας.*
ΗΛ. *ὀλεῖς, εἰ βλέφαρα κινήσεις*
ὕπνου γλυκυτάταν φερομένῳ χάριν.
ΧΟ. *μέλεος ἐχθίστων θεόθεν ἐργμάτων,*
τάλας. ΗΛ. *φεῦ μόχθων.*
ἄδικος ἄδικα τότ᾽ ἄρ᾽ ἔλακεν ἔλακεν, ἀπό-
φονον ὅτ᾽ ἐπὶ τρίποδι Θέμιδος ἄρ᾽ ἐδίκασε
φόνον ὁ Λοξίας ἐμᾶς ματέρος.
ΧΟ. *ὁρᾷς; ἐν πέπλοισι κινεῖ δέμας.* στρ.
ΗΛ. *σὺ γάρ νιν, ὦ τάλαινα,*
θωΰξασ᾽ ἔβαλες ἐξ ὕπνου.
ΧΟ. *εὕδειν μὲν οὖν ἔδοξα.*
ΗΛ. *οὐκ ἀφ᾽ ἡμῶν, οὐκ ἀπ᾽ οἴκων*
πάλιν ἄρα μεθεμένα κτύπου
πόδα σὸν εἱλίξεις;
ΧΟ. *ὑπνώσσει.* ΗΛ. *λέγεις εὖ.*
πότνια, πότνια νύξ,
ὑπνοδότειρα τῶν πολυπόνων βροτῶν,
ἐρεβόθεν ἴθι, μόλε μόλε κατάπτερος
τὸν Ἀγαμεμνόνιον ἐπὶ δόμον.
ὑπὸ γὰρ ἀλγέων ὑπό τε συμφορᾶς
διοιχόμεθ᾽, οἰχόμεθα. κτύπον ἠγάγετ᾽· οὐχὶ σῖγα
σῖγα φυλασσομένα
στόματος ἀνακέλαδον ἄπο λέχεος ἥ-
συχον ὕπνου χάριν παρέξεις, φίλα;

166—186 = 187—207

ΧΟ. θρόει, τίς κακῶν τελευτὰ μένει; ἀντ.
ΗΛ. θανεῖν· τί δ᾽ ἄλλο γ᾽; ἔμπας
οὐδὲν γὰρ πόθον ἔχει βορᾶς.
ΧΟ. πρόδηλος ἆρ᾽ ὁ πότμος.
ΗΛ. ἐξέθυσ᾽ ὁ Φοῖβος ἡμᾶς
μέλεον ἀπόφονον αἷμα δοὺς
πατροφόνου ματρός.
ΧΟ. δίκᾳ μέν. *ΗΛ.* καλῶς δ᾽ οὔ.
ἔθανες ἔθανες, ὦ
τεκομένα με μᾶτερ, ἀπὸ δ᾽ ὤλεσας
πατέρα τέκνα τε τάδε σέθεν ἀφ᾽ αἵματος·
ὀλόμεθ᾽ ἰσονέκυες, ὀλόμεθα.
σύ τε γὰρ ἐν νεκροῖς, τό τ᾽ ἐμὸν οἴχεται
βίου τὸ πλέον μέρος ἐν στοναχαῖσί τε καὶ γόοισι
δάκρυσί τ᾽ ἐννυχίοις·
ἄγαμος, ἔπιδ᾽, ἄτεκνος ἅτε βίοτον ἃ
μέλεος εἰς τὸν αἰὲν ἕλκω χρόνον.
ΧΟ. ὅρα παροῦσα, παρθέν᾽ Ἠλέκτρα, πέλας,
μὴ κατθανών σε σύγγονος λέληθ᾽ ὅδε·
οὐ γάρ μ᾽ ἀρέσκει τῷ λίαν παρειμένῳ.
ΟΡ. ὦ φίλον ὕπνου θέλγητρον, ἐπίκουρον νόσου,
ὡς ἡδύ μοι προσῆλθες ἐν δέοντί τε.
ὦ πότνια λήθη τῶν κακῶν, ὡς εἶ σοφὴ
καὶ τοῖσι δυστυχοῦσιν εὐκταία θεός.
πόθεν ποτ᾽ ἦλθον δεῦρο; πῶς δ᾽ ἀφικόμην;
ἀμνημονῶ γάρ, τῶν πρὶν ἀπολειφθεὶς φρενῶν.
ΗΛ. ὦ φίλταθ᾽, ὥς μ᾽ εὔφρανας εἰς ὕπνον πεσών.
βούλει θίγω σου κἀνακουφίσω δέμας;
ΟΡ. λαβοῦ λαβοῦ δῆτ᾽, ἐκ δ᾽ ὄμορξον ἀθλίου
στόματος ἀφρώδη πέλανον ὀμμάτων τ᾽ ἐμῶν.
ΗΛ. ἰδοὺ τὸ δούλευμ᾽ ἡδύ, κοὐκ ἀναίνομαι
ἀδέλφ᾽ ἀδελφῇ χειρὶ θεραπεύειν μέλη.

ΟΡ. ὑπόβαλε πλευροῖς πλευρά, καὐχμώδη κόμην
ἄφελε προσώπου· λεπτὰ γὰρ λεύσσω κόραις.
ΗΛ. ὦ βοστρύχων πινῶδες ἄθλιον κάρα,
ὡς ἠγρίωσαι διὰ μακρᾶς ἀλουσίας.
ΟΡ. κλῖνόν μ' ἐς εὐνὴν αὖθις· ὅταν ἀνῇ νόσος
μανιάς, ἄναρθρός εἰμι κἀσθενῶ μέλη.
ΗΛ. ἰδού. φίλον τοι τῷ νοσοῦντι δέμνιον,
ἀνιαρὸν ὂν τὸ κτῆμ', ἀναγκαῖον δ' ὅμως.
ΟΡ. αὖθίς μ' ἐς ὀρθὸν στῆσον, ἀνακύκλει δέμας·
δυσάρεστον οἱ νοσοῦντες ἀπορίας ὕπο.
ΗΛ. ἦ κἀπὶ γαίας ἁρμόσαι πόδας θέλεις,
χρόνιον ἴχνος θείς; μεταβολὴ πάντων γλυκύ.
ΟΡ. μάλιστα· δόξαν γὰρ τόδ' ὑγιείας ἔχει.
κρεῖσσον δὲ τὸ δοκεῖν, κἂν ἀληθείας ἀπῇ.
ΗΛ. ἄκουε δὴ νῦν, ὦ κασίγνητον κάρα,
ἕως ἐῶσί σ' εὖ φρονεῖν Ἐρινύες.
ΟΡ. λέξεις τι καινόν; κεἰ μὲν εὖ, χάριν φέρεις·
εἰ δ' εἰς βλάβην τιν', ἅλις ἔχω τοῦ δυστυχεῖν.
ΗΛ. Μενέλαος ἥκει, σοῦ κασίγνητος πατρός,
ἐν Ναυπλίᾳ δὲ σέλμαθ' ὥρμισται νεῶν.
ΟΡ. πῶς εἶπας; ἥκει φῶς ἐμοῖς καὶ σοῖς κακοῖς,
ἀνὴρ ὁμογενὴς καὶ χάριτας ἔχων πατρός;
ΗΛ. ἥκει, τὸ πιστὸν τόδε λόγων ἐμῶν δέχου,
Ἑλένην ἀγόμενος Τρωικῶν ἐκ τειχέων.
ΟΡ. εἰ μόνος ἐσώθη, μᾶλλον ἂν ζηλωτὸς ἦν·
εἰ δ' ἄλοχον ἄγεται, κακὸν ἔχων ἥκει μέγα.
ΗΛ. ἐπίσημον ἔτεκε Τυνδάρεως γὰρ εἰς ψόγον
γένος θυγατέρων δυσκλεές τ' ἀν' Ἑλλάδα.
ΟΡ. σύ νυν διάφερε τῶν κακῶν· ἔξεστι γάρ·
καὶ μὴ μόνον λέγ', ἀλλὰ καὶ φρόνει τάδε.
ΗΛ. οἴμοι, κασίγνητ', ὄμμα σὸν ταράσσεται,
ταχὺς δὲ μετέθου λύσσαν, ἄρτι σωφρονῶν.

ΟΡ. ὦ μῆτερ, ἱκετεύω σε, μὴ 'πίσειέ μοι
τὰς αἱματωποὺς καὶ δρακοντώδεις κόρας·
αὗται γὰρ αὗται πλησίον θρώσκουσί μου.
ΗΛ. μέν', ὦ ταλαίπωρ', ἀτρέμα σοῖς ἐν δεμνίοις.
ὁρᾷς γὰρ οὐδὲν ὧν δοκεῖς σάφ' εἰδέναι.
ΟΡ. ὦ Φοῖβ', ἀποκτενοῦσί μ' αἱ κυνώπιδες
γοργῶπες ἐνέρων ἱερίαι, δειναὶ θεαί.
ΗΛ. οὔτοι μεθήσω· χεῖρα δ' ἐμπλέξασ' ἐμὴν
σχήσω σε πηδᾶν δυστυχῆ πηδήματα.
ΟΡ. μέθες· μί' οὖσα τῶν ἐμῶν Ἐρινύων,
μέσον μ' ὀχμάζεις, ὡς βάλῃς εἰς Τάρταρον.
ΗΛ. οἲ 'γὼ τάλαινα, τίν' ἐπικουρίαν λάβω,
ἐπεὶ τὸ θεῖον δυσμενὲς κεκτήμεθα;
ΟΡ. δὸς τόξα μοι κερουλκά, δῶρα Λοξίου,
οἷς μ' εἶπ' Ἀπόλλων ἐξαμύνεσθαι θεάς,
εἴ μ' ἐκφοβοῖεν μανιάσιν λυσσήμασιν.
βεβλήσεταί τις θεῶν βροτησίᾳ χερί,
εἰ μὴ 'ξαμείψει χωρὶς ὀμμάτων ἐμῶν.
οὐκ εἰσακούετ'; οὐχ ὁρᾶθ' ἑκηβόλων
τόξων πτερωτὰς γλυφίδας ἐξορμωμένας;
ἆ ἆ·
τί δῆτα μέλλετ'; ἐξακρίζετ' αἰθέρα
πτεροῖς· τὰ Φοίβου δ' αἰτιᾶσθε θέσφατα.
ἔα·
τί χρῆμ' ἀλύω, πνεῦμ' ἀνεὶς ἐκ πνευμόνων;
ποῖ ποῖ ποθ' ἡλάμεσθα δεμνίων ἄπο;
ἐκ κυμάτων γὰρ αὖθις αὖ γαλήν' ὁρῶ.
σύγγονε, τί κλαίεις κρᾶτα θεῖσ' εἴσω πέπλων;
αἰσχύνομαί σοι μεταδιδοὺς πόνων ἐμῶν
ὄχλον τε παρέχων παρθένῳ νόσοις ἐμαῖς.
μὴ τῶν ἐμῶν ἕκατι συντήκου κακῶν·
σὺ μὲν γὰρ ἐπένευσας τάδ', εἴργασται δ' ἐμοὶ

μητρῷον αἷμα· Λοξίᾳ δὲ μέμφομαι,
ὅστις μ' ἐπάρας ἔργον ἀνοσιώτατον,
τοῖς μὲν λόγοις εὔφρανε, τοῖς δ' ἔργοισιν οὔ.
οἶμαι δὲ πατέρα τὸν ἐμόν, εἰ κατ' ὄμματα
ἐξιστόρουν νιν, μητέρ' εἰ κτεῖναί με χρή,
πολλὰς γενείου τοῦδ' ἂν ἐκτεῖναι λιτὰς
μήποτε τεκούσης εἰς σφαγὰς ὦσαι ξίφος,
εἰ μήτ' ἐκεῖνος ἀναλαβεῖν ἔμελλε φῶς,
ἐγὼ δ' ὁ τλήμων τοιάδ' ἐκπλήσειν κακά.
καὶ νῦν ἀνακάλυπτ', ὦ κασίγνητον κάρα,
ἐκ δακρύων τ' ἄπελθε, κεἰ μάλ' ἀθλίως
ἔχομεν· ὅταν δὲ τἄμ' ἀθυμήσαντ' ἴδῃς,
σύ μου τὸ δεινὸν καὶ διαφθαρὲν φρενῶν
ἴσχναινε παραμυθοῦ θ'· ὅταν δὲ σὺ στένῃς,
ἡμᾶς παρόντας χρή σε νουθετεῖν φίλα·
ἐπικουρίαι γὰρ αἵδε τοῖς φίλοις καλαί.
ἀλλ', ὦ τάλαινα, βᾶσα δωμάτων ἔσω
ὕπνῳ τ' ἄυπνον βλέφαρον ἐκταθεῖσα δός,
σῖτόν τ' ὄρεξαι λουτρά τ' ἐπιβαλοῦ χροΐ.
εἰ γὰρ προλείψεις μ' ἢ προσεδρίᾳ νόσον
κτήσει τιν', οἰχόμεσθα· σὲ γὰρ ἔχω μόνην
ἐπίκουρον, ἄλλων ὡς ὁρᾷς ἔρημος ὤν.

ΗΛ. οὐκ ἔστι· σὺν σοὶ καὶ θανεῖν αἱρήσομαι
καὶ ζῆν· ἔχει γὰρ ταὐτόν· ἢν σὺ κατθάνῃς,
γυνὴ τί δράσω; πῶς μόνη σωθήσομαι,
ἀνάδελφος ἀπάτωρ ἄφιλος; εἰ δὲ σοὶ δοκεῖ,
δρᾶν χρὴ τάδ'. ἀλλὰ κλῖνον εἰς εὐνὴν δέμας,
καὶ μὴ τὸ ταρβοῦν κἀκφοβοῦν σ' ἐκ δεμνίων
ἄγαν ἀποδέχου, μένε δ' ἐπὶ στρωτοῦ λέχους.
κἂν μὴ νοσῇ γάρ, ἀλλὰ δοξάζῃ νοσεῖν,
κάματος βροτοῖσιν ἀπορία τε γίγνεται.

ΧΟ. αἰαῖ, στρ.
δρομάδες ὦ πτεροφόροι
ποτνιάδες θεαί,
ἀβάκχευτον αἳ θίασον ἐλλάχετε
δάκρυσι καὶ γόοις,
μελάγχρωτες Εὐμενίδες, αἵ τε τὸν
ταναὸν αἰθέρ' ἀμπάλλεσθ', αἵματος
τινύμεναι δίκαν, τινύμεναι φόνον,
καθικετεύομαι καθικετεύομαι,
τὸν Ἀγαμέμνονος
γόνον ἐάσατ' ἐκλαθέσθαι λύσσας
μανιάδος φοιταλέου. κακῶν φεῦ μόχθων,
οἵων, ὦ τάλας, ὀρεχθεὶς ἔρρεις,
τρίποδος ἄπο φάτιν, ἃν ὁ Φοῖβος
ἔλακεν ἔλακε, δεξάμενος ἀνὰ δάπεδον,
ἵνα μεσόμφαλοι λέγονται μυχοί.
ὦ Ζεῦ, ἀντ.
τίς ἔλεος, τίς ὅδ' ἀγὼν
φόνιος ἔρχεται,
θοάζων σε τὸν μέλεον, ᾧ δάκρυα
δάκρυσι συμβάλλει
πορεύων τις εἰς δόμον ἀλαστόρων
ματέρος αἷμα σᾶς, ὅ σ' ἀναβακχεύει;
κατολοφύρομαι κατολοφύρομαι.
ὁ μέγας ὄλβος οὐ μόνιμος ἐν βροτοῖς·
ἀνὰ δὲ λαῖφος ὥς
τις ἀκάτου θοᾶς τινάξας δαίμων
κατέκλυσεν δεινῶν πόνων, ὡς πόντου
λάβροις ὀλεθρίοισιν ἐν κύμασιν.
τίνα γὰρ ἔτι πάρος οἶκον ἄλλον
ἕτερον ἢ τὸν ἀπὸ θεογόνων γάμων

316—331 = 332—347

τὸν ἀπὸ Ταντάλου, σέβεσθαί με χρή;
καὶ μὴν βασιλεὺς ὅδε δὴ στείχει,
Μενέλαος ἄναξ, πολλῇ ἁβροσύνῃ
δῆλος ὁρᾶσθαι
τῶν Ταντα λιδῶν ἐξ αἵματος ὤν.
ὦ χιλιόναυν στρατὸν ὁρμήσας
εἰς γῆν Ἀσίαν,
χαῖρ', εὐτυχίᾳ δ' αὐτὸς ὁμιλεῖς,
θεόθεν πράξας ἅπερ ηὔχου.

ΜΕ. ὦ δῶμα, τῇ μέν σ' ἡδέως προσδέρκομαι
Τροίαθεν ἐλθών, τῇ δ' ἰδὼν καταστένω·
κύκλῳ γὰρ εἱλιχθεῖσαν ἀθλίοις κακοῖς
οὐπώποτ' ἄλλην μᾶλλον εἶδον ἑστίαν.
Ἀγαμέμνονος μὲν γὰρ τύχας ἠπιστάμην
καὶ θάνατον, οἵῳ πρὸς δάμαρτος ὤλετο,
Μαλέᾳ προσίσχων πρῷραν· ἐκ δὲ κυμάτων
ὁ ναυτίλοισι μάντις ἐξήγγειλέ μοι
Νηρέως προφήτης Γλαῦκος ἀψευδὴς θεός,
ὅς μοι τάδ' εἶπεν ἐμφανῶς παρασταθείς·
Μενέλαε, κεῖται σὸς κασίγνητος θανών,
λουτροῖσιν ἀλόχου περιπεσὼν ἀρκυστάτοις.
δακρύων δ' ἔπλησεν ἐμέ τε καὶ ναύτας ἐμοὺς
πολλῶν. ἐπεὶ δὲ Ναυπλίας ψαύω χθονός,
ἤδη δάμαρτος ἐνθάδ' ἐξορμωμένης,
δοκῶν Ὀρέστην παῖδα τὸν Ἀγαμέμνονος
φίλαισι χερσὶ περιβαλεῖν καὶ μητέρα,
ὡς εὐτυχοῦντας, ἔκλυον ἁλιτύπων τινὸς
τῆς Τυνδαρείας θυγατρὸς ἀνόσιον φόνον.
καὶ νῦν ὅπου 'στὶν εἴπατ', ὦ νεάνιδες,
Ἀγαμέμνονος παῖς, ὃς τὰ δείν' ἔτλη κακά.
βρέφος γὰρ ἦν τότ' ἐν Κλυταιμνήστρας χεροῖν,

ὅτ᾽ ἐξέλειπον μέλαθρον εἰς Τροίαν ἰών,
ὥστ᾽ οὐκ ἂν αὐτὸν γνωρίσαιμ᾽ ἂν εἰσιδών.
ΟΡ. ὅδ᾽ εἰμ᾽ Ὀρέστης, Μενέλεως, ὃν ἱστορεῖς.
ἑκὼν ἐγώ σοι τἀμὰ σημανῶ κακά.
τῶν σῶν δὲ γονάτων πρωτόλεια θιγγάνω
ἱκέτης, ἀφύλλου στόματος ἐξάπτων λιτάς·
σῶσόν μ᾽· ἀφῖξαι δ᾽ αὐτὸν εἰς καιρὸν κακῶν.
ΜΕ. ὦ θεοί, τί λεύσσω; τίνα δέδορκα νερτέρων;
ΟΡ. εὖ γ᾽ εἶπας· οὐ γὰρ ζῶ κακοῖς, φάος δ᾽ ὁρῶ.
ΜΕ. ὡς ἠγρίωσαι πλόκαμον αὐχμηρόν, τάλας,
ΟΡ. οὐχ ἡ πρόσοψίς μ᾽, ἀλλὰ τἄργ᾽ αἰκίζεται.
ΜΕ. δεινὸν δὲ λεύσσεις ὀμμάτων ξηραῖς κόραις.
ΟΡ. τὸ σῶμα φροῦδον· τὸ δ᾽ ὄνομ᾽ οὐ λέλοιπέ με.
ΜΕ. ὦ παρὰ λόγον μοι σὴ φανεῖσ᾽ ἀμορφία.
ΟΡ. ὅδ᾽ εἰμὶ μητρὸς τῆς ταλαιπώρου φονεύς.
ΜΕ. ἤκουσα· φείδου δ᾽ ὀλιγάκις λέγειν κακά.
ΟΡ. φειδόμεθ᾽· ὁ δαίμων δ᾽ εἴς με πλούσιος κακῶν.
ΜΕ. τί χρῆμα πάσχεις; τίς σ᾽ ἀπόλλυσιν νόσος;
ΟΡ. ἡ σύνεσις, ὅτι σύνοιδα δείν᾽ εἰργασμένος.
ΜΕ. πῶς φής; σοφόν τοι τὸ σαφές, οὐ τὸ μὴ σαφές.
ΟΡ. λύπη μάλιστά γ᾽ ἡ διαφθείρουσά με,
ΜΕ. δεινὴ γὰρ ἡ θεός, ἀλλ᾽ ὅμως ἰάσιμος.
ΟΡ. μανίαι τε, μητρὸς αἵματος τιμωρίαι.
ΜΕ. ἤρξω δὲ λύσσης πότε; τίς ἡμέρα τότ᾽ ἦν;
ΟΡ. ἐν ᾗ τάλαιναν μητέρ᾽ ἐξώγκουν τάφῳ.
ΜΕ. πότερα κατ᾽ οἴκους ἢ προσεδρεύων πυρᾷ;
ΟΡ. νυκτὸς φυλάσσων ὀστέων ἀναίρεσιν.
ΜΕ. παρῆν τις ἄλλος, ὃς σὸν ὤρθευεν δέμας;
ΟΡ. Πυλάδης, ὁ συνδρῶν αἷμα καὶ μητρὸς φόνον.
ΜΕ. φαντασμάτων δὲ τάδε νοσεῖς ποίων ὕπο;
ΟΡ. ἔδοξ᾽ ἰδεῖν τρεῖς νυκτὶ προσφερεῖς κόρας.
ΜΕ. οἶδ᾽ ἃς ἔλεξας, ὀνομάσαι δ᾽ οὐ βούλομαι.

ΟΡ. σεμναὶ γάρ· εὐπαίδευτα δ' ἀποτρέπει λέγειν.
ΜΕ. αὗταί σε βακχεύουσι συγγενεῖ φόνῳ;
ΟΡ. οἴμοι διωγμῶν, οἷς ἐλαύνομαι τάλας.
ΜΕ. οὐ δεινὰ πάσχειν δεινὰ τοὺς εἰργασμένους.
ΟΡ. ἀλλ' ἔστιν ἡμῖν ἀναφορὰ τῆς ξυμφορᾶς
ΜΕ. μὴ θάνατον εἴπῃς· τοῦτο μὲν γὰρ οὐ σοφόν.
ΟΡ. Φοῖβος, κελεύσας μητρὸς ἐκπρᾶξαι φόνον.
ΜΕ. ἀμαθέστερός γ' ὢν τοῦ καλοῦ καὶ τῆς δίκης.
ΟΡ. δουλεύομεν θεοῖς, ὅ τι ποτ' εἰσὶν οἱ θεοί.
ΜΕ. κᾆτ' οὐκ ἀμύνει Λοξίας τοῖς σοῖς κακοῖς;
ΟΡ. μέλλει· τὸ θεῖον δ' ἐστὶ τοιοῦτον φύσει.
ΜΕ. πόσον χρόνον δὲ μητρὸς οἴχονται πνοαί;
ΟΡ. ἕκτον τόδ' ἦμαρ· ἔτι πυρὰ θερμὴ τάφου.
ΜΕ. ὡς ταχὺ μετῆλθόν σ' αἷμα μητέρος θεαί.
ΟΡ. οὐ σοφός, ἀληθὴς δ' εἰς φίλους ἔφυν φίλος.
ΜΕ. πατρὸς δὲ δή τι σ' ὠφελεῖ τιμωρία;
ΟΡ. οὔπω· τὸ μέλλον δ' ἴσον ἀπραξίᾳ λέγω.
ΜΕ. τὰ πρὸς πόλιν δὲ πῶς ἔχεις δράσας τάδε;
ΟΡ. μισούμεθ' οὕτως ὥστε μὴ προσεννέπειν.
ΜΕ. οὐδ' ἥγνισαι σὸν αἷμα κατὰ νόμους χεροῖν;
ΟΡ. ἐκκλείομαι γὰρ δωμάτων ὅπῃ μόλω.
ΜΕ. τίνες πολιτῶν ἐξαμιλλῶνταί σε γῆς;
ΟΡ. Οἴαξ, τὸ Τροίας μῖσος ἀναφέρων πατρί.
ΜΕ. ξυνῆκα· Παλαμήδους σε τιμωρεῖ φόνος.
ΟΡ. οὗ γ' οὐ μετῆν μοι· διὰ τριῶν δ' ἀπόλλυμαι.
ΜΕ. τίς δ' ἄλλος; ἦ που τῶν ἀπ' Αἰγίσθου φίλων;
ΟΡ. οὗτοί μ' ὑβρίζουσ', ὧν πόλις τὰ νῦν κλύει.
ΜΕ. Ἀγαμέμνονος δὲ σκῆπτρ' ἐᾷ σ' ἔχειν πόλις;
ΟΡ. πῶς, οἵτινες ζῆν οὐκ ἐῶσ' ἡμᾶς ἔτι;
ΜΕ. τί δρῶντες ὅ τι καὶ σαφὲς ἔχεις εἰπεῖν ἐμοί;
ΟΡ. ψῆφος καθ' ἡμῶν οἴσεται τῇδ' ἡμέρᾳ.
ΜΕ. φεύγειν πόλιν τήνδ' ἢ θανεῖν ἢ μὴ θανεῖν;

ΟΡ. θανεῖν ὑπ᾽ ἀστῶν λευσίμῳ πετρώματι.
ΜΕ. κᾆτ᾽ οὐχὶ φεύγεις γῆς ὑπερβαλὼν ὅρους;
ΟΡ. κύκλῳ γὰρ εἱλισσόμεθα παγχάλκοις ὅπλοις.
ΜΕ. ἰδίᾳ πρὸς ἐχθρῶν ἢ πρὸς Ἀργείας χερός;
ΟΡ. πάντων πρὸς ἀστῶν, ὡς θάνω· βραχὺς λόγος.
ΜΕ. ὦ μέλεος, ἥκεις ξυμφορᾶς πρὸς τοὔσχατον.
ΟΡ. εἰς σ᾽ ἐλπὶς ἡμὴ καταφυγὰς ἔχει κακῶν.
ἀλλ᾽ ἀθλίως πράσσουσιν εὐτυχὴς μολὼν
μετάδος φίλοισι σοῖσι σῆς εὐπραξίας,
καὶ μὴ μόνος τὸ χρηστὸν ἀπολαβὼν ἔχε,
ἀλλ᾽ ἀντιλάζου καὶ πόνων ἐν τῷ μέρει,
χάριτας πατρῴας ἐκτίνων εἰς οὓς σε δεῖ.
ὄνομα γάρ, ἔργον δ᾽ οὐκ ἔχουσιν οἱ φίλοι
οἱ μὴ ᾿πὶ ταῖσι συμφοραῖς ὄντες φίλοι.
ΧΟ. καὶ μὴν γέροντι δεῦρ᾽ ἁμιλλᾶται ποδὶ
ὁ Σπαρτιάτης Τυνδάρεως, μελάμπεπλος
κουρᾷ τε θυγατρὸς πενθίμῳ κεκαρμένος.
ΟΡ. ἀπωλόμην, Μενέλαε· Τυνδάρεως ὅδε
στείχει πρὸς ἡμᾶς, οὗ μάλιστ᾽ αἰδώς μ᾽ ἔχει
εἰς ὄμματ᾽ ἐλθεῖν τοῖσιν ἐξειργασμένοις.
καὶ γάρ μ᾽ ἔθρεψε μικρὸν ὄντα, πολλὰ δὲ
φιλήματ᾽ ἐξέπλησε, τὸν Ἀγαμέμνονος
παῖδ᾽ ἀγκάλαισι περιφέρων, Λήδα θ᾽ ἅμα,
τιμῶντέ μ᾽ οὐδὲν ἧσσον ἢ Διοσκόρω·
οἷς, ὦ τάλαινα καρδία ψυχή τ᾽ ἐμή,
ἀπέδωκ᾽ ἀμοιβὰς οὐ καλάς. τίνα σκότον
λάβω προσώπῳ; ποῖον ἐπίπροσθεν νέφος
θῶμαι, γέροντος ὀμμάτων φεύγων κόρας;
ΤΥ. ποῦ ποῦ θυγατρὸς τῆς ἐμῆς ἴδω πόσιν,
Μενέλαον; ἐπὶ γὰρ τῷ Κλυταιμνήστρας τάφῳ
χοὰς χεόμενος ἔκλυον ὡς εἰς Ναυπλίαν
ἥκοι σὺν ἀλόχῳ πολυετὴς σεσωσμένος.

ἄγετέ με· πρὸς γὰρ δεξιὰν αὐτοῦ θέλω
στὰς ἀσπάσασθαι, χρόνιον εἰσιδὼν φίλον.
ΜΕ. ὦ πρέσβυ χαῖρε, Ζηνὸς ὁμόλεκτρον κάρα.
ΤΥ. ὦ χαῖρε καὶ σὺ Μενέλεως, κήδευμ' ἐμόν.
ἔα· τὸ μέλλον ὡς κακὸν τὸ μὴ εἰδέναι.
ὁ μητροφόντης ὅδε πρὸ δωμάτων δράκων
στίλβει νοσώδεις ἀστραπάς, στύγημ' ἐμόν.
Μενέλαε, προσφθέγγει νιν ἀνόσιον κάρα;
ΜΕ. τί γάρ; φίλου μοι πατρός ἐστιν ἔκγονος.
ΤΥ. κείνου γὰρ ὅδε πέφυκε, τοιοῦτος γεγώς;
ΜΕ. πέφυκεν· εἰ δὲ δυστυχεῖ, τιμητέος.
ΤΥ. βεβαρβάρωσαι, χρόνιος ὢν ἐν βαρβάροις.
ΜΕ. Ἑλληνικόν τοι τὸν ὁμόθεν τιμᾶν ἀεί.
ΤΥ. καὶ τῶν νόμων γε μὴ πρότερον εἶναι θέλειν.
ΜΕ. πᾶν τοὐξ ἀνάγκης δοῦλόν ἐστ' ἐν τοῖς σοφοῖς.
ΤΥ. κέκτησό νυν σὺ τοῦτ', ἐγὼ δ' οὐ κτήσομαι.
ΜΕ. ὀργὴ γὰρ ἅμα σου καὶ τὸ γῆρας οὐ σοφόν.
ΤΥ. πρὸς τόνδ' ἀγὼν ἂν τί σοφίας εἴη πέρι;
εἰ τὰ καλὰ πᾶσι φανερὰ καὶ τὰ μὴ καλά,
τούτου τίς ἀνδρῶν ἐγένετ' ἀσυνετώτερος,
ὅστις τὸ μὲν δίκαιον οὐκ ἐσκέψατο
οὐδ' ἦλθεν ἐπὶ τὸν κοινὸν Ἑλλήνων νόμον;
ἐπεὶ γὰρ ἐξέπνευσεν Ἀγαμέμνων βίον
πληγεὶς θυγατρὸς τῆς ἐμῆς ὕπαι κάρα,
αἴσχιστον ἔργον, οὐ γὰρ αἰνέσω ποτέ,
χρῆν αὐτὸν ἐπιθεῖναι μὲν αἵματος δίκην
ὁσίαν διώκοντ' ἐκβαλεῖν τε δωμάτων
μητέρα· τὸ σῶφρόν τ' ἔλαβεν ἀντὶ συμφορᾶς,
καὶ τοῦ νόμου τ' ἂν εἴχετ' εὐσεβής τ' ἂν ἦν.
νῦν δ' εἰς τὸν αὐτὸν δαίμον' ἦλθε μητέρι.
κακὴν γὰρ αὐτὴν ἐνδίκως ἡγούμενος,
αὐτὸς κακίων γέγονε μητέρα κτανών.

ἐρήσομαι δὲ Μενέλεως τοσόνδε σε·
εἰ τόνδ᾽ ἀποκτείνειεν ὁμόλεκτρος γυνή,
χὠ τοῦδε παῖς αὖ μητέρ᾽ ἀνταποκτενεῖ,
κἄπειθ᾽ ὁ κείνου γενόμενος φόνῳ φόνον
λύσει, πέρας δὴ ποῖ κακῶν προβήσεται;
καλῶς ἔθεντο ταῦτα πατέρες οἱ πάλαι·
εἰς ὀμμάτων μὲν ὄψιν οὐκ εἴων περᾶν
οὐδ᾽ εἰς ἀπάντημ᾽, ὅστις αἷμ᾽ ἔχων κυρεῖ,
φυγαῖσι δ᾽ ὁσιοῦν, ἀνταποκτείνειν δὲ μή.
ἀεὶ γὰρ εἷς ἔμελλεν ἕξεσθαι φόνου,
τὸ λοίσθιον μίασμα λαμβάνων χεροῖν.
ἐγὼ δὲ μισῶ μὲν γυναῖκας ἀνοσίους,
πρώτην δὲ θυγατέρ᾽, ἣ πόσιν κατέκτανεν·
Ἑλένην τε τὴν σὴν ἄλοχον οὔποτ᾽ αἰνέσω
οὐδ᾽ ἂν προσείποιμ᾽· οὐδὲ σὲ ζηλῶ, κακῆς
γυναικὸς ἐλθόνθ᾽ οὕνεκ᾽ ἐς Τροίας πέδον.
ἀμυνῶ δ᾽ ὅσονπερ δυνατός εἰμι τῷ νόμῳ,
τὸ θηριῶδες τοῦτο καὶ μιαιφόνον
παύων, ὃ καὶ γῆν καὶ πόλεις ὄλλυσ᾽ ἀεί.
ἐπεὶ τίν᾽ εἶχες, ὦ τάλας, ψυχὴν τότε
ὅτ᾽ ἐξέβαλλε μαστὸν ἱκετεύουσά σε
μήτηρ; ἐγὼ μὲν οὐκ ἰδὼν τἀκεῖ κακά,
δακρύοις γέροντ᾽ ὀφθαλμὸν ἐκτήκω τάλας.
ἓν οὖν λόγοισι τοῖς ἐμοῖς ὁμορροθεῖ·
μισεῖ γε πρὸς θεῶν καὶ τίνεις μητρὸς δίκας,
μανίαις ἀλαίνων καὶ φόβοις. τί μαρτύρων
ἄλλων ἀκούειν δεῖ μ᾽, ἅ γ᾽ εἰσορᾶν πάρα;
ὡς οὖν ἂν εἰδῇς, Μενέλεως, τοῖσιν θεοῖς
μὴ πρᾶσσ᾽ ἐναντί᾽, ὠφελεῖν τοῦτον θέλων.
* * * * * * * * * * * *

ἔα δ᾽ ὑπ᾽ ἀστῶν καταφονευθῆναι πέτροις,
ἢ μὴ ᾽πίβαινε Σπαρτιάτιδος χθονός.

θυγάτηρ ἐμὴ θανοῦσ᾽ ἔπραξεν ἔνδικα·
ἀλλ᾽ οὐχὶ πρὸς τοῦδ᾽ εἰκὸς ἦν αὐτὴν θανεῖν.
ἐγὼ δὲ τἄλλα μακάριος πέφυκ᾽ ἀνήρ,
πλὴν εἰς θυγατέρας· τοῦτο δ᾽ οὐκ εὐδαιμονῶ.
ΧΟ. ζηλωτὸς ὅστις εὐτύχησεν εἰς τέκνα
καὶ μὴ ᾽πισήμους συμφορὰς ἐκτήσατο.
ΟΡ. ὦ γέρον, ἐγώ τοι πρὸς σὲ δειμαίνω λέγειν,
ὅπου γε μέλλω σήν τι λυπήσειν φρένα.
ἐγῷδ᾽, ἀνόσιός εἰμι μητέρα κτανών,
ὅσιος δέ γ᾽ ἕτερον ὄνομα, τιμωρῶν πατρί.
ἀπελθέτω δὴ τοῖς λόγοισιν ἐκποδὼν
τὸ γῆρας ἡμῖν τὸ σόν, ὅ μ᾽ ἐκπλήσσει λόγου,
καὶ καθ᾽ ὁδὸν εἶμι· νῦν δὲ σὴν ταρβῶ τρίχα.
τί χρῆν με δρᾶσαι; δύο γὰρ ἀντίθες δυοῖν·
πατὴρ μὲν ἐφύτευσέν με, σὴ δ᾽ ἔτικτε παῖς,
τὸ σπέρμ᾽ ἄρουρα παραλαβοῦσ᾽ ἄλλου πάρα·
ἄνευ δὲ πατρὸς τέκνον οὐκ εἴη ποτ᾽ ἄν.
ἐλογισάμην οὖν τῷ γένους ἀρχηγέτῃ
μᾶλλόν μ᾽ ἀμῦναι τῆς ὑποστάσης τροφάς·
ἡ σὴ δὲ θυγάτηρ, μητέρ᾽ αἰδοῦμαι λέγειν,
ἰδίοισιν ὑμεναίοισι κοὐχὶ σώφροσιν
εἰς ἀνδρὸς ᾔει λέκτρ᾽· ἐμαυτόν, ἢν λέγω
κακῶς ἐκείνην, ἐξερῶ· λέξω δ᾽ ὅμως.
Αἴγισθος ἦν ὁ κρυπτὸς ἐν δόμοις πόσις.
τοῦτον κατέκτειν᾽, ἐπὶ δ᾽ ἔθυσα μητέρα,
ἀνόσια μὲν δρῶν, ἀλλὰ τιμωρῶν πατρί.
ἐφ᾽ οἷς δ᾽ ἀπειλεῖς ὡς πετρωθῆναί με δεῖ,
ἄκουσον ὡς ἅπασαν Ἑλλάδ᾽ ὠφελῶ.
εἰ γὰρ γυναῖκες εἰς τόδ᾽ ἥξουσιν θράσους,
ἄνδρας φονεύειν, καταφυγὰς ποιούμεναι
εἰς τέκνα, μαστοῖς τὸν ἔλεον θηρώμεναι,
παρ᾽ οὐδὲν αὐταῖς ἦν ἂν ὀλλύναι πόσεις

ἐπίκλημ᾽ ἐχούσαις ὅ τι τύχοι. δράσας δ᾽ ἐγὼ
δείν᾽, ὡς σὺ κομπεῖς, τόνδ᾽ ἔπαυσα τὸν νόμον.
μισῶν δὲ μητέρ᾽ ἐνδίκως ἀπώλεσα,
ἥτις μεθ᾽ ὅπλων ἄνδρ᾽ ἀπόντ᾽ ἐκ δωμάτων
πάσης ὑπὲρ γῆς Ἑλλάδος στρατηλάτην
προύδωκε κοὐκ ἔσωσ᾽ ἀκήρατον λέχος·
ἐπεὶ δ᾽ ἁμαρτοῦσ᾽ ᾔσθετ᾽, οὐχ αὑτῇ δίκην
ἐπέθηκεν, ἀλλ᾽ ὡς μὴ δίκην δοίη πόσει,
ἐζημίωσε πατέρα κἀπέκτειν᾽ ἐμόν.
πρὸς θεῶν, ἐν οὐ καλῷ μὲν ἐμνήσθην θεῶν,
φόνον δικάζων, εἰ δὲ δὴ τὰ μητέρος
σιγῶν ἐπῄνουν, τί μ᾽ ἂν ἔδρασ᾽ ὁ κατθανών;
οὐκ ἄν με μισῶν ἀνεχόρευ᾽ Ἐρινύσιν;
ἢ μητρὶ μὲν πάρεισι σύμμαχοι θεαί,
τῷ δ᾽ οὐ πάρεισι μᾶλλον ἠδικημένῳ;
σύ τοι φυτεύσας θυγατέρ᾽, ὦ γέρον, κακὴν
ἀπώλεσάς με· διὰ τὸ γὰρ κείνης θράσος
πατρὸς στερηθείς, ἐγενόμην μητροκτόνος.
ὁρᾷς Ὀδυσσέως ἄλοχον· οὐ κατέκτανε
Τηλέμαχος· οὐ γὰρ ἐπεγάμει πόσει πόσιν,
μένει δ᾽ ἐν οἴκοις ὑγιὲς εὐναστήριον.
ὁρᾷς, Ἀπόλλων ὃς μεσομφάλους ἕδρας
ναίων βροτοῖσι στόμα νέμει σαφέστατον,
ᾧ πειθόμεσθα πάνθ᾽ ὅσ᾽ ἂν κεῖνος λέγῃ,
τούτῳ πιθόμενος τὴν τεκοῦσαν ἔκτανον.
ἐκεῖνον ἡγεῖσθ᾽ ἀνόσιον καὶ κτείνετε·
ἐκεῖνος ἥμαρτ᾽, οὐκ ἐγώ. τί χρῆν με δρᾶν;
ἢ οὐκ ἀξιόχρεως ὁ θεὸς ἀναφέροντί μοι
μίασμα λῦσαι; ποῖ τις οὖν ἔτ᾽ ἂν φύγοι,
εἰ μὴ ὁ κελεύσας ῥύσεταί με μὴ θανεῖν;
ἀλλ᾽ ὡς μὲν οὐκ εὖ μὴ λέγ᾽ εἴργασται τάδε,
ἡμῖν δὲ τοῖς δράσασιν οὐκ εὐδαιμόνως.

γάμοι δ' ὅσοις μὲν εὖ καθεστᾶσιν βροτῶν,
μακάριος αἰών· οἷς δὲ μὴ πίπτουσιν εὖ,
τά τ' ἔνδον εἰσὶ τά τε θύραζε δυστυχεῖς.

ΧΟ. ἀεὶ γυναῖκες ἐμποδὼν ταῖς ξυμφοραῖς
ἔφυσαν ἀνδρῶν πρὸς τὸ δυστυχέστερον.

ΤΥ. ἐπεὶ θρασύνει κοὐχ ὑποστέλλει λόγῳ,
οὕτω δ' ἀμείβει μ' ὥστε μ' ἀλγῆσαι φρένα,
μᾶλλόν μ' ἀνάψεις ἐπὶ σὸν ἐξελθεῖν φόνον·
καλὸν πάρεργον δ' αὐτὸ θήσομαι πόνων
ὧν οὕνεκ' ἦλθον θυγατρὶ κοσμήσων τάφον.
μολὼν γὰρ εἰς ἔκκλητον Ἀργείων ὄχλον
ἑκοῦσαν οὐχ ἑκοῦσαν ἐπισείσω πόλιν
σοὶ σῇ τ' ἀδελφῇ, λεύσιμον δοῦναι δίκην.
μᾶλλον δ' ἐκείνη σοῦ θανεῖν ἐστ' ἀξία,
ἣ τῇ τεκούσῃ σ' ἠγρίωσ', εἰς οὖς ἀεὶ
πέμπουσα μύθους ἐπὶ τὸ δυσμενέστερον,
ὀνείρατ' ἀγγέλλουσα τἀγαμέμνονος,
καὶ τοῦθ' ὃ μισήσειαν Αἰγίσθου λέχος
οἱ νέρτεροι θεοί, καὶ γὰρ ἐνθάδ' ἦν πικρόν,
ἕως ὑφῆψε δῶμ' ἀνηφαίστῳ πυρί.
Μενέλαε, σοὶ δὲ τάδε λέγω δράσω τε πρός·
εἰ τοὐμὸν ἔχθος ἐναριθμεῖ κῆδός τ' ἐμόν,
μὴ τῷδ' ἀμύνειν φόνον ἐναντίον θεοῖς·
ἔα δ' ὑπ' ἀστῶν καταφονευθῆναι πέτροις,
ἢ μὴ 'πίβαινε Σπαρτιάτιδος χθονός.
τοσαῦτ' ἀκούσας ἴσθι, μηδὲ δυσσεβεῖς
ἕλῃ παρώσας εὐσεβεστέρους φίλους·
ἡμᾶς δ' ἀπ' οἴκων ἄγετε τῶνδε, πρόσπολοι.

ΟΡ. στεῖχ', ὡς ἀθορύβως οὑπιὼν ἡμῖν λόγος
πρὸς τόνδ' ἵκηται, γῆρας ἀποφυγὼν τὸ σόν.
Μενέλαε, ποῖ σὸν πόδ' ἐπὶ συννοίᾳ κυκλεῖς,
διπλῆς μερίμνης διπτύχους ἰὼν ὁδούς;

ΜΕ. ἔασον· ἐν ἐμαυτῷ τι συννοούμενος,
ὅποι τράπωμαι τῆς τύχης ἀμηχανῶ.
ΟΡ. μή νυν πέραινε τὴν δόκησιν, ἀλλ᾽ ἐμοὺς
λόγους ἀκούσας πρόσθε, βουλεύου τότε.
ΜΕ. λέγ᾽· εὖ γὰρ εἶπας. ἔστι δ᾽ οὗ σιγὴ λόγου
κρείσσων γένοιτ᾽ ἄν, ἔστι δ᾽ οὗ σιγῆς λόγος.
ΟΡ. λέγοιμ᾽ ἂν ἤδη. τὰ μακρὰ τῶν σμικρῶν λόγων
ἐπίπροσθέν ἐστι καὶ σαφῆ μᾶλλον κλύειν.
ἐμοὶ σὺ τῶν σῶν, Μενέλεως, μηδὲν δίδου,
ἃ δ᾽ ἔλαβες ἀπόδος πατρὸς ἐμοῦ λαβὼν πάρα.
οὐ χρήματ᾽ εἶπον· χρήματ᾽, ἢν ψυχὴν ἐμὴν
σώσῃς, ἅπερ μοι φίλτατ᾽ ἐστὶ τῶν ἐμῶν.
ἀδικῶ· λαβεῖν χρή μ᾽ ἀντὶ τοῦδε τοῦ κακοῦ
ἄδικόν τι παρὰ σοῦ· καὶ γὰρ Ἀγαμέμνων πατὴρ
ἀδίκως ἀθροίσας Ἑλλάδ᾽ ἦλθ᾽ εἰς Ἴλιον,
οὐκ ἐξαμαρτὼν αὐτός, ἀλλ᾽ ἁμαρτίαν
τῆς σῆς γυναικὸς ἀδικίαν τ᾽ ἰώμενος.
ἓν μὲν τόδ᾽ ἡμῖν ἀνθ᾽ ἑνὸς δοῦναί σε χρή.
ἀπέδοτο δ᾽, ὡς χρὴ τοῖς φίλοισι τοὺς φίλους,
τὸ σῶμ᾽ ἀληθῶς, σοὶ παρ᾽ ἀσπίδ᾽ ἐκπονῶν,
ὅπως σὺ τὴν σὴν ἀπολάβοις ξυνάορον.
ἀπότισον οὖν μοι ταὐτὸ τοῦτ᾽ ἐκεῖ λαβών,
μίαν πονήσας ἡμέραν ἡμῶν ὕπερ
σωτήριος στάς, μὴ δέκ᾽ ἐκπλήσας ἔτη.
ἃ δ᾽ Αὐλὶς ἔλαβε σφάγι᾽ ἐμῆς ὁμοσπόρου,
ἐῶ σ᾽ ἔχειν ταῦθ᾽· Ἑρμιόνην μὴ κτεῖνε σύ.
δεῖ γάρ σ᾽ ἐμοῦ πράσσοντος ὡς πράσσω τὰ νῦν
πλέον φέρεσθαι, κἀμὲ συγγνώμην ἔχειν.
ψυχὴν δ᾽ ἐμὴν δὸς τῷ ταλαιπώρῳ πατρὶ
κἀμῆς ἀδελφῆς, παρθένου μακρὸν χρόνον·
θανὼν γὰρ οἶκον ὀρφανὸν λείψω πατρός.
ἐρεῖς, ἀδύνατον; αὐτὸ τοῦτο· τοὺς φίλους

ἐν τοῖς κακοῖς χρὴ τοῖς φίλοισιν ὠφελεῖν·
ὅταν δ᾽ ὁ δαίμων εὖ διδῷ, τί δεῖ φίλων;
ἀρκεῖ γὰρ αὐτὸς ὁ θεὸς ὠφελεῖν θέλων.
φιλεῖν δάμαρτα πᾶσιν Ἕλλησιν δοκεῖς·
κοὐχ ὑποτρέχων σε τοῦτο θωπείᾳ λέγω·
ταύτης ἱκνοῦμαί σ᾽. ὢ μέλεος ἐμῶν κακῶν,
εἰς οἷον ἥκω. τί δὲ ταλαιπωρεῖν με δεῖ;
ὑπὲρ γὰρ οἴκου παντὸς ἱκετεύω τάδε.
ὦ πατρὸς ὅμαιμε θεῖε, τὸν κατὰ χθονὸς
θανόντ᾽ ἀκούειν τάδε δόκει, ποτωμένην
ψυχὴν ὑπὲρ σοῦ, καὶ λέγειν ἁγὼ λέγω.
ταῦτ᾽ εἴς τε δάκρυα καὶ γόους καὶ συμφορὰς
εἴρηκα, κἀπῄτηκα τὴν σωτηρίαν,
θηρῶν ὃ πάντες κοὐκ ἐγὼ ζητῶ μόνος.

ΧΟ. κἀγώ σ᾽ ἱκνοῦμαι καὶ γυνή περ οὖσ᾽ ὅμως
τοῖς δεομένοισιν ὠφελεῖν· οἷός τε δ᾽ εἶ.

ΜΕ. Ὀρέστ᾽, ἐγώ τοι σὸν καταιδοῦμαι κάρα
καὶ ξυμπονῆσαι σοῖς κακοῖσι βούλομαι·
καὶ χρὴ γὰρ οὕτω τῶν ὁμαιμόνων κακὰ
ξυνεκκομίζειν, δύναμιν ἢν διδῷ θεός
[θνήσκοντα καὶ κτείνοντα τοὺς ἐναντίους]·
τὸ δ᾽ αὖ δύνασθαι πρὸς θεῶν χρῄζω τυχεῖν.
ἥκω γὰρ ἀνδρῶν συμμάχων κενὸν δόρυ
ἔχων, πόνοισι μυρίοις ἀλώμενος,
σμικρᾷ ξὺν ἀλκῇ τῶν λελειμμένων φίλων.
μάχῃ μὲν οὖν ἂν οὐχ ὑπερβαλοίμεθα
Πελασγὸν Ἄργος· εἰ δὲ μαλθακοῖς λόγοις
δυναίμεθ᾽, ἐνταῦθ᾽ ἐλπίδος προσήκομεν.
σμικροῖσι γὰρ τὰ μεγάλα πῶς ἕλοι τις ἂν
πόνοισιν; ἀμαθὲς καὶ τὸ βούλεσθαι τάδε.
ὅταν γὰρ ἡβᾷ δῆμος εἰς ὀργὴν πεσών,
ὅμοιον ὥστε πῦρ κατασβέσαι λάβρον·

εἰ δ' ἡσύχως τις αὐτὸς ἐντείνοντι μὲν
χαλῶν ὑπείκοι καιρὸν εὐλαβούμενος,
ἴσως ἂν ἐκπνεύσει'· ὅταν δ' ἀνῇ πνοάς,
τύχοις ἂν αὐτοῦ ῥᾳδίως ὅσον θέλεις.
ἔνεστι δ' οἶκτος, ἔνι δὲ καὶ θυμὸς μέγας,
καραδοκοῦντι κτῆμα τιμιώτατον.
ἐλθὼν δὲ Τυνδάρεών τέ σοι πειράσομαι
πόλιν τε πεῖσαι τῷ λίαν χρῆσθαι καλῶς.
καὶ ναῦς γὰρ ἐνταθεῖσα πρὸς βίαν ποδὶ
ἔβαψεν, ἔστη δ' αὖθις, ἢν χαλᾷ πόδα.
μισεῖ γὰρ ὁ θεὸς τὰς ἄγαν προθυμίας,
μισοῦσι δ' ἀστοί· δεῖ δέ μ', οὐκ ἄλλως λέγω,
σώζειν σε σοφίᾳ, μὴ βίᾳ τῶν κρεισσόνων.
ἀλκῇ δέ σ' οὐκ ἄν, ᾗ σὺ δοξάζεις ἴσως,
σώσαιμ' ἄν· οὐ γὰρ ῥᾴδιον λόγχῃ μιᾷ
στῆσαι τρόπαια τῶν κακῶν ἅ σοι πάρα.
οὐ γάρ ποτ' Ἄργους γαῖαν εἰς τὸ μαλθακὸν
προσηγόμεσθα· νῦν δ' ἀναγκαίως ἔχει
δούλοισιν εἶναι τοῖς σοφοῖσι τῆς τύχης.

ΟΡ. ὦ πλὴν γυναικὸς οὕνεκα στρατηλατεῖν
τἄλλ' οὐδέν, ὦ κάκιστε τιμωρεῖν φίλοις·
φεύγεις ἀποστραφείς με, τὰ δ' Ἀγαμέμνονος
φροῦδ'; ἄφιλος ἦσθ' ἄρ', ὦ πάτερ, πράσσων κακῶς.
οἴμοι προδέδομαι, κοὐκέτ' εἰσὶν ἐλπίδες,
ὅποι τραπόμενος θάνατον Ἀργείων φύγω·
οὗτος γὰρ ἦν μοι καταφυγὴ σωτηρίας.
ἀλλ' εἰσορῶ γὰρ τόνδε φίλτατον βροτῶν
Πυλάδην δρόμῳ στείχοντα Φωκέων ἄπο,
ἡδεῖαν ὄψιν· πιστὸς ἐν κακοῖς ἀνὴρ
κρείσσων γαλήνης ναυτίλοισιν εἰσορᾶν.

ΠΥ. θᾶσσον ἤ μ' ἐχρῆν προβαίνων ἱκόμην δι' ἄστεως,

ξύλλογον πόλεως ἀκούσας, τὸν δ' ἰδὼν αὐτὸς σαφῶς,
ἐπὶ σὲ σύγγονόν τε τὴν σήν, ὡς κτενοῦντας αὐτίκα.
τί τάδε; πῶς ἔχεις, τί πράσσεις; φίλταθ' ἡλίκων ἐμοὶ
καὶ φίλων καὶ συγγενείας· πάντα γὰρ τάδ' εἶ σύ μοι.

ΟΡ. οἰχόμεσθ', ὡς ἐν βραχεῖ σοι τἀμὰ δηλώσω κακά.

ΠΥ. συγκατασκάπτοις ἂν ἡμᾶς· κοινὰ γὰρ τὰ τῶν φίλων.

ΟΡ. Μενέλεως κάκιστος εἴς με καὶ κασιγνήτην ἐμήν.

ΠΥ. εἰκότως, κακῆς γυναικὸς ἄνδρα γίγνεσθαι κακόν.

ΟΡ. ὥσπερ οὐκ ἐλθὼν ἔμοιγε ταὐτὸν ἀπέδωκεν μολών.

ΠΥ. ἦ γάρ ἐστιν ὡς ἀληθῶς τήνδ' ἀφιγμένος χθόνα;

ΟΡ. χρόνιος· ἀλλ' ὅμως τάχιστα κακὸς ἐφωράθη φίλοις.

ΠΥ. καὶ δάμαρτα τὴν κακίστην ναυστολῶν ἐλήλυθεν;

ΟΡ. οὐκ ἐκεῖνος, ἀλλ' ἐκείνη κεῖνον ἐνθάδ' ἤγαγεν.

ΠΥ. ποῦ 'στιν ἣ πλείστους Ἀχαιῶν ὤλεσεν γυνὴ μία;

ΟΡ. ἐν δόμοις ἐμοῖσιν, εἰ δὴ τούσδ' ἐμοὺς καλεῖν χρεών.

ΠΥ. σὺ δὲ τίνας λόγους ἔλεξας σοῦ κασιγνήτῳ πατρός;

ΟΡ. μή μ' ἰδεῖν θανόνθ' ὑπ' ἀστῶν καὶ κασιγνήτην ἐμήν.

ΠΥ. πρὸς θεῶν, τί πρὸς τάδ' εἶπε; τόδε γὰρ εἰδέναι θέλω.

ΟΡ. εὐλαβεῖθ', ὃ τοῖς φίλοισι δρῶσιν οἱ κακοὶ φίλοι.

ΠΥ. σκῆψιν εἰς ποίαν προβαίνων; τοῦτο πάντ' ἔχω μαθών.

ΟΡ. οὗτος ἦλθ' ὁ τὰς ἀρίστους θυγατέρας σπείρων πατήρ.
ΠΥ. Τυνδάρεων λέγεις; ἴσως σοι θυγατέρος θυμούμενος.
ΟΡ. αἰσθάνει. τὸ τοῦδε κῆδος μᾶλλον εἵλετ' ἢ πατρός.
ΠΥ. κοὐκ ἐτόλμησεν πόνων σῶν ἀντιλάζυσθαι παρών;
ΟΡ. οὐ γὰρ αἰχμητὴς πέφυκεν, ἐν γυναιξὶ δ' ἄλκιμος.
ΠΥ. ἐν κακοῖς ἄρ' εἶ μεγίστοις, καί σ' ἀναγκαῖον θανεῖν.
ΟΡ. ψῆφον ἀμφ' ἡμῶν πολίτας ἐπὶ φόνῳ θέσθαι χρεών.
ΠΥ. ἣ κρινεῖ τί χρῆμα; λέξον· διὰ φόβου γὰρ ἔρχομαι.
ΟΡ. ἢ θανεῖν ἢ ζῆν· ὁ μῦθος οὐ μακρὸς μακρῶν πέρι.
ΠΥ. φεῦγέ νυν λιπὼν μέλαθρα σὺν κασιγνήτῃ σέθεν.
ΟΡ. οὐχ ὁρᾷς; φυλασσόμεσθα φρουρίοισι πανταχῇ.
ΠΥ. εἶδον ἄστεως ἀγυιὰς τεύχεσιν πεφραγμένας.
ΟΡ. ὡσπερεὶ πόλις πρὸς ἐχθρῶν σῶμα πυργηρούμεθα.
ΠΥ. κἀμέ νυν ἐροῦ τί πάσχω· καὶ γὰρ αὐτὸς οἴχομαι.
ΟΡ. πρὸς τίνος; τοῦτ' ἂν προσείη τοῖς ἐμοῖς κακοῖς κακόν.
ΠΥ. Στρόφιος ἤλασέν μ' ἀπ' οἴκων φυγάδα θυμωθεὶς πατήρ.
ΟΡ. ἴδιον ἢ κοινὸν πολίταις ἐπιφέρων ἔγκλημά τι;
ΠΥ. ὅτι συνηράμην φόνον σοι μητρός, ἀνόσιον λέγων.
ΟΡ. ὦ τάλας, ἔοικε καὶ σὲ τἀμὰ λυπήσειν κακά.
ΠΥ. οὐχὶ Μενέλεω τρόποισι χρώμεθ'· οἰστέον τάδε.
ΟΡ. οὐ φοβεῖ μή σ' Ἄργος ὥσπερ κἄμ' ἀποκτεῖναι θέλῃ;
ΠΥ. οὐ προσήκομεν κολάζειν τοῖσδε, Φωκέων δὲ γῇ.

ΟΡ. δεινὸν οἱ πολλοί, κακούργους ὅταν ἔχωσι προστάτας.
ΠΥ. ἀλλ' ὅταν χρηστοὺς λάβωσι, χρηστὰ βουλεύουσ' ἀεί.
ΟΡ. εἶεν. εἰς κοινὸν λέγειν χρή. ΠΥ. τίνος ἀναγκαίου πέρι;
ΟΡ. εἰ λέγοιμ' ἀστοῖσιν ἐλθὼν ΠΥ. ὡς ἔπραξας ἔνδικα;
ΟΡ. πατρὶ τιμωρῶν ἐμαυτοῦ; ΠΥ. μὴ λάβωσί σ' ἅσμενοι.
ΟΡ. ἀλλ' ὑποπτήξας σιωπῇ κατθάνω; ΠΥ. δειλὸν τόδε.
ΟΡ. πῶς ἂν οὖν δρῴην; ΠΥ. ἔχεις τιν', ἢν μένῃς, σωτηρίαν;
ΟΡ. οὐκ ἔχω. ΠΥ. μολόντα δ' ἐλπίς ἐστι σωθῆναι κακῶν;
ΟΡ. εἰ τύχοι, γένοιτ' ἄν. ΠΥ. οὐκοῦν τοῦτο κρεῖσσον ἢ μένειν.
ΟΡ. ἀλλὰ δῆτ' ἔλθω. ΠΥ. θανὼν γοῦν ὧδε κάλλιον θανεῖ.
ΟΡ. καὶ τὸ πρᾶγμά γ' ἔνδικόν μοι. ΠΥ. τῷ δοκεῖν εὔχου μόνον.
ΟΡ. εὖ λέγεις· φεύγω τὸ δειλὸν τῇδε. ΠΥ. μᾶλλον ἢ μένων.
ΟΡ. καί τις ἄν γέ μ' οἰκτίσειε ΠΥ. μέγα γὰρ ηὑγένειά σου.
ΟΡ. θάνατον ἀσχάλλων πατρῷον. ΠΥ. πάντα ταῦτ' ἐν ὄμμασιν.
ΟΡ. ἰτέον, ὡς ἄνανδρον ἀκλεῶς κατθανεῖν. ΠΥ. αἰνῶ τάδε.
ΟΡ. ἦ λέγωμεν οὖν ἀδελφῇ ταῦτ' ἐμῇ; ΠΥ. μὴ πρὸς θεῶν.

ΟΡ. δάκρυα γοῦν γένοιτ᾽ ἄν. ΠΥ. οὐκοῦν οὗτος οἰωνὸς μέγας.
ΟΡ. δηλαδὴ σιγᾶν ἄμεινον. ΠΥ. τῷ χρόνῳ δὲ κερδανεῖς.
ΟΡ. κεῖνό μοι μόνον πρόσαντες, ΠΥ. τί τόδε καινὸν αὖ λέγεις;
ΟΡ. μὴ θεαί μ᾽ οἴστρῳ κατάσχωσ᾽. ΠΥ. ἀλλὰ κηδεύσω σ᾽ ἐγώ.
ΟΡ. δυσχερὲς ψαύειν νοσοῦντος ἀνδρός. ΠΥ. οὐκ ἔμοιγε σοῦ.
ΟΡ. εὐλαβοῦ λύσσης μετασχεῖν τῆς ἐμῆς. ΠΥ. τόδ᾽ οὖν ἴτω.
ΟΡ. οὐκ ἄρ᾽ ὀκνήσεις; ΠΥ. ὄκνος γὰρ τοῖς φίλοις κακὸν μέγα.
ΟΡ. ἕρπε νυν οἴαξ ποδός μοι. ΠΥ. φίλα γ᾽ ἔχων κηδεύματα.
ΟΡ. καί με πρὸς τύμβον πόρευσον πατρός. ΠΥ. ὡς τί δὴ τόδε;
ΟΡ. ὥς νιν ἱκετεύσω με σῶσαι. ΠΥ. τό γε δίκαιον ὧδ᾽ ἔχει.
ΟΡ. μητέρος δὲ μηδ᾽ ἴδοιμι μνῆμα. ΠΥ. πολεμία γὰρ ἦν.
ἀλλ᾽ ἔπειγ᾽, ὥς μή σε πρόσθε ψῆφος Ἀργείων ἕλῃ,
περιβαλὼν πλευροῖς ἐμοῖσι πλευρὰ νωχελῆ νόσῳ,
ὡς ἐγὼ δι᾽ ἄστεώς σε σμικρὰ φροντίζων ὄχλου
οὐδὲν αἰσχυνθεὶς ὀχήσω. ποῦ γὰρ ὢν δείξω φίλος,
εἴ σε μὴ ᾽ν δειναῖσιν ὄντα συμφοραῖς ἐπαρκέσω;
ΟΡ. τοῦτ᾽ ἐκεῖνο, κτᾶσθ᾽ ἑταίρους, μὴ τὸ συγγενὲς μόνον·
ὡς ἀνὴρ ὅστις τρόποισι συντακῇ, θυραῖος ὢν
μυρίων κρείσσων ὁμαίμων ἀνδρὶ κεκτῆσθαι φίλος.

ΧΟ. ὁ μέγας ὄλβος ἅ τ' ἀρετὰ στρ.
μέγα φρονοῦσ' ἀν' Ἑλλάδα καὶ
παρὰ Σιμουντίοις ὀχετοῖς
πάλιν ἀνῆλθ' ἐξ εὐτυχίας Ἀτρείδαις
πάλαι παλαιᾶς ἀπὸ συμφορᾶς δόμων,
ὁπότε χρυσείας ἔρις ἀρνὸς
ἤλυθε Ταντταλίδαις,
οἰκτρότατα θοινάματα καὶ
σφάγια γενναίων τεκέων·
ὅθεν φόνῳ φόνος ἐξαμεί-
βων δι' αἵματος οὐ προλεί-
πει δισσοῖσιν Ἀτρείδαις.
τὸ καλὸν οὐ καλόν, τοκέων ἀντ.
πυριγενεῖ τεμεῖν παλάμᾳ
χρόα, μελάνδετον δὲ φόνῳ
ξίφος ἐς αὐγὰς ἀελίοιο δεῖξαι·
τὸ δ' αὖ κακουργεῖν ἀσέβεια μαινόλις
κακοφρόνων τ' ἀνδρῶν παράνοια.
θανάτου γὰρ ἀμφὶ φόβῳ
Τυνδαρὶς ἰάχησε τάλαι-
να· τέκνον, οὐ τολμᾷς ὅσια·
κτείνων σὺ ματέρα, μὴ πατρῴ-
αν τιμῶν χάριν ἐξανά-
ψῃ δύσκλειαν ἐσαεί.
τίς νόσος ἢ τίνα δάκρυα καὶ
τίς ἔλεος μείζων κατὰ γᾶν
ἢ ματροκτόνον αἷμα χειρὶ θέσθαι;
οἷον ἔργον τελέσας
βεβάκχευται μανίαις,
Εὐμενίσιν θήραμα φόνῳ
δρομάσι δινεύων βλεφάροις

807 — 818 = 819 — 830

Ἀγαμεμνόνιος παῖς.
ὢ μέλεος, ματρὸς ὅτε
χρυσεοπηνήτων φαρέων
μαστὸν ὑπερτέλλοντ' ἐσιδὼν
σφάγιον ἔθετο ματέρα, πατρῴ-
ων παθέων ἀμοιβάν.

ΗΛ. γυναῖκες, ἦ που τῶνδ' ἀφώρμηται δόμων
τλήμων Ὀρέστης θεομανεῖ λύσσῃ δαμείς;

ΧΟ. ἥκιστα· πρὸς δ' Ἀργεῖον οἴχεται λεών,
ψυχῆς ἀγῶνα τὸν προκείμενον πέρι
δώσων, ἐν ᾧ ζῆν ἢ θανεῖν ὑμᾶς χρεών.

ΗΛ. οἴμοι· τί χρῆμ' ἔδρασε; τίς δ' ἔπεισέ νιν;

ΧΟ. Πυλάδης· ἔοικε δ' οὐ μακρὰν ὅδ' ἄγγελος
λέξειν τὰ κεῖθεν σοῦ κασιγνήτου πέρι.

ΑΓ. ὦ τλῆμον, ὦ δύστηνε τοῦ στρατηλάτου
Ἀγαμέμνονος παῖ, πότνι' Ἠλέκτρα, λόγους
ἄκουσον οὕς σοι δυστυχεῖς ἥκω φέρων.

ΗΛ. αἰαῖ, διοιχόμεσθα· δῆλος εἶ λόγῳ.
[κακῶν γὰρ ἥκεις, ὡς ἔοικεν, ἄγγελος.]

ΑΓ. ψήφῳ Πελασγῶν σὸν κασίγνητον θανεῖν
καὶ σ', ὦ τάλαιν', ἔδοξε τῇδ' ἐν ἡμέρᾳ.

ΗΛ. οἴμοι· προσῆλθεν ἐλπίς, ἣν φοβουμένη
πάλαι τὸ μέλλον ἐξετηκόμην γόοις.
ἀτὰρ τίς ἁγών, τίνες ἐν Ἀργείοις λόγοι
καθεῖλον ἡμᾶς κἀπεκύρωσαν θανεῖν;
λέγ', ὦ γεραιέ, πότερα λευσίμῳ χερὶ
ἢ διὰ σιδήρου πνεῦμ' ἀπορρῆξαί με δεῖ,
κοινὰς ἀδελφῷ συμφορὰς κεκτημένην.

ΑΓ. ἐτύγχανον μὲν ἀγρόθεν πυλῶν ἔσω
βαίνων, πυθέσθαι δεόμενος τά τ' ἀμφὶ σοῦ
τά τ' ἀμφ' Ὀρέστου· σῷ γὰρ εὔνοιαν πατρὶ
ἀεί ποτ' εἶχον, καί μ' ἔφερβε σὸς δόμος

πένητα μέν, χρῆσθαι δὲ γενναῖον φίλοις.
ὁρῶ δ᾽ ὄχλον στείχοντα καὶ θάσσοντ᾽ ἄκραν,
οὗ φασι πρῶτον Δαναὸν Αἰγύπτῳ δίκας
διδόντ᾽ ἀθροῖσαι λαὸν εἰς κοινὰς ἕδρας.
ἀστῶν δὲ δή τιν᾽ ἠρόμην ἄθροισμ᾽ ἰδών·
τί καινὸν Ἄργει; μῶν τι πολεμίων πάρα
ἄγγελμ᾽ ἀνεπτέρωκε Δαναϊδῶν πόλιν;
ὁ δ᾽ εἶπ᾽· Ὀρέστην κεῖνον οὐχ ὁρᾷς πέλας
στείχοντ᾽, ἀγῶνα θανάσιμον δραμούμενον;
ὁρῶ δ᾽ ἄελπτον φάσμ᾽, ὃ μήποτ᾽ ὤφελον,
Πυλάδην τε καὶ σὸν σύγγονον στείχονθ᾽ ὁμοῦ,
τὸν μὲν κατηφῆ καὶ παρειμένον νόσῳ,
τὸν δ᾽ ὥστ᾽ ἀδελφὸν ἴσα φίλῳ λυπούμενον,
νόσημα κηδεύοντα παιδαγωγίᾳ.
ἐπεὶ δὲ πλήρης ἐγένετ᾽ Ἀργείων ὄχλος,
κῆρυξ ἀναστὰς εἶπε· τίς χρῄζει λέγειν,
πότερον Ὀρέστην κατθανεῖν ἢ μὴ χρεὼν
μητροκτονοῦντα; κἀπὶ τῷδ᾽ ἀνίσταται
Ταλθύβιος, ὃς σῷ πατρὶ συνεπόρθει Φρύγας.
ἔλεξε δ᾽ ὑπὸ τοῖς δυναμένοισιν ὢν ἀεὶ
διχόμυθα, πατέρα μὲν σὸν ἐκπαγλούμενος,
σὸν δ᾽ οὐκ ἐπαινῶν σύγγονον, καλοῖς κακοὺς
λόγους ἑλίσσων, ὅτι καθισταίη νόμους
εἰς τοὺς τεκόντας οὐ καλούς· τὸ δ᾽ ὄμμ᾽ ἀεὶ
φαιδρωπὸν ἐδίδου τοῖσιν Αἰγίσθου φίλοις.
τὸ γὰρ γένος τοιοῦτον· ἐπὶ τὸν εὐτυχῆ
πηδῶσ᾽ ἀεὶ κήρυκες· ὅδε δ᾽ αὐτοῖς φίλος,
ὃς ἂν δύνηται πόλεος ἔν τ᾽ ἀρχαῖσιν ᾖ.
ἐπὶ τῷδε δ᾽ ἠγόρευε Διομήδης ἄναξ.
οὗτος κτανεῖν μὲν οὔτε σ᾽ οὔτε σύγγονον
εἴα, φυγῇ δὲ ζημιοῦντας εὐσεβεῖν.
ἐπερρόθησαν δ᾽ οἱ μὲν ὡς καλῶς λέγοι,

οἱ δ᾽ οὐκ ἐπῄνουν. κἀπὶ τῷδ᾽ ἀνίσταται
ἀνήρ τις ἀθυρόγλωσσος, ἰσχύων θράσει,
Ἀργεῖος οὐκ Ἀργεῖος, ἠναγκασμένος,
θορύβῳ τε πίσυνος κἀμαθεῖ παρρησίᾳ,
πιθανὸς ἔτ᾽ αὐτοὺς περιβαλεῖν κακῷ τινι.
ὅταν γὰρ ἡδὺς τοῖς λόγοις φρονῶν κακῶς
πείθῃ τὸ πλῆθος, τῇ πόλει κακὸν μέγα·
ὅσοι δὲ σὺν νῷ χρηστὰ βουλεύουσ᾽ ἀεί,
κἂν μὴ παραυτίκ᾽, αὖθίς εἰσι χρήσιμοι
πόλει. θεᾶσθαι δ᾽ ὧδε χρὴ τὸν προστάτην
ἰδόνθ᾽· ὅμοιον γὰρ τὸ χρῆμα γίγνεται
τῷ τοὺς λόγους λέγοντι καὶ τιμωμένῳ.
ὃς εἶπ᾽ Ὀρέστην καὶ σ᾽ ἀποκτεῖναι πέτροις
βάλλοντας· ὑπὸ δ᾽ ἔτεινε Τυνδάρεως λόγους
τῷ σφὼ κατακτείνοντι τοιούτους λέγειν.
ἄλλος δ᾽ ἀναστὰς ἔλεγε τῷδ᾽ ἐναντία,
μορφῇ μὲν οὐκ εὐωπός, ἀνδρεῖος δ᾽ ἀνήρ,
ὀλιγάκις ἄστυ κἀγορᾶς χραίνων κύκλον,
αὐτουργός, οἵπερ καὶ μόνοι σῴζουσι γῆν,
ξυνετὸς δὲ χωρεῖν ὁμόσε τοῖς λόγοις θέλων
ἀκέραιος, ἀνεπίπληκτον ἠσκηκὼς βίον·
ὃς εἶπ᾽ Ὀρέστην παῖδα τὸν Ἀγαμέμνονος
στεφανοῦν, ὃς ἠθέλησε τιμωρεῖν πατρί,
κακὴν γυναῖκα κἄθεον κατακτανών,
ἣ κεῖν᾽ ἀφῄρει, μήθ᾽ ὁπλίζεσθαι χέρα
μήτε στρατεύειν ἐκλιπόντα δώματα,
εἰ τἄνδον οἰκουρήμαθ᾽ οἱ λελειμμένοι
φθείρουσιν, ἀνδρῶν εὔνιδας λωβώμενοι.
καὶ τοῖς γε χρηστοῖς εὖ λέγειν ἐφαίνετο,
κοὐδεὶς ἔτ᾽ εἶπε. σὸς δ᾽ ἐπῆλθε σύγγονος,
ἔλεξε δ᾽· ὦ γῆν Ἰνάχου κεκτημένοι,

πάλαι Πελασγοί, Δαναΐδαι δεύτερον, 933

ὑμῖν ἀμύνων οὐδὲν ἧσσον ἢ πατρὶ
ἔκτεινα μητέρ᾽. εἰ γὰρ ἀρσένων φόνος
ἔσται γυναιξὶν ὅσιος, οὐ φθάνοιτ᾽ ἔτ᾽ ἂν
θνήσκοντες, ἢ γυναιξὶ δουλεύειν χρεών·
τοὐναντίον δὲ δράσετ᾽ ἢ δρᾶσαι χρεών.
νῦν μὲν γὰρ ἡ προδοῦσα λέκτρ᾽ ἐμοῦ πατρὸς
τέθνηκεν· εἰ δὲ δὴ κατακτενεῖτέ με,
ὁ νόμος ἀνεῖται, κοὐ φθάνοι θνήσκων τις ἄν,
ὡς τῆς γε τόλμης οὐ σπάνις γενήσεται.
ἀλλ᾽ οὐκ ἔπειθ᾽ ὅμιλον, εὖ δοκῶν λέγειν.
νικᾷ δ᾽ ἐκεῖνος ὁ κακὸς ἐν πλήθει λέγων,
ὃς ἠγόρευε σύγγονον σέ τε κτανεῖν.
μόλις δ᾽ ἔπεισε μὴ πετρούμενος θανεῖν
τλήμων Ὀρέστης· αὐτόχειρι δὲ σφαγῇ
ὑπέσχετ᾽ ἐν τῇδ᾽ ἡμέρᾳ λείψειν βίον
σὺν σοί. πορεύει δ᾽ αὐτὸν ἐκκλήτων ἄπο
Πυλάδης δακρύων· σὺν δ᾽ ὁμαρτοῦσιν φίλοι
κλαίοντες οἰκτείροντες· ἔρχεται δέ σοι
πικρὸν θέαμα καὶ πρόσοψις ἀθλία.
ἀλλ᾽ εὐτρέπιζε φάσγαν᾽ ἢ βρόχον δέρῃ,
ὡς δεῖ λιπεῖν σε φέγγος· ηὑγένεια δὲ
οὐδέν σ᾽ ἐπωφέλησεν, οὐδ᾽ ὁ Πύθιος
τρίποδα καθίζων Φοῖβος, ἀλλ᾽ ἀπώλεσεν.

ΧΟ. ὦ δυστάλαινα παρθέν᾽, ὡς ξυνηρεφὲς
πρόσωπον εἰς γῆν σὸν βαλοῦσ᾽ ἄφθογγος εἶ,
ὡς εἰς στεναγμοὺς καὶ γόους δραμουμένη.

ΗΛ. κατάρχομαι στεναγμόν, ὦ Πελασγία, στρ.
τιθεῖσα λευκὸν ὄνυχα διὰ παρηίδων,
τὰν αἱματηρὸν ἄταν,
κτύπον τε κρατός, ὃν ἔλαχ᾽ ἁ κατὰ χθονὸς
νερτέρων Περσέφασσα καλλίπαις θεά.

960—970 = 971—981

ἰαχείτω δὲ γᾶ Κυκλωπία,
σίδαρον ἐπὶ κάρα τιθεῖσα κούριμον,
πήματ᾽ οἴκων.
ἔλεος ἔλεος ὅδ᾽ ἔρχεται
τῶν θανουμένων ὕπερ,
στρατηλατῶν Ἑλλάδος ποτ᾽ ὄντων.
βέβακε γὰρ βέβακεν, οἴχεται τέκνων ἀντ.
πρόπασα γέννα Πέλοπος ὅ τ᾽ ἐπὶ μακαρίοις
ζηλωτὸς ὤν ποτ᾽ οἶκος·
φθόνος νιν εἷλε θεόθεν, ἅ τε δυσμενὴς
φοινία ψῆφος ἐν πολίταις.
ἰὼ ἰώ, πανδάκρυτ᾽ ἐφαμέρων
ἔθνη πολύπονα, λεύσσεθ᾽, ὡς παρ᾽ ἐλπίδας
μοῖρα βαίνει.
ἕτερα δ᾽ ἕτερος ἀμείβεται
πήματ᾽ ἐν χρόνῳ μακρῷ·
βροτῶν δ᾽ ὁ πᾶς ἀστάθμητος αἰών.
μόλοιμι τὰν οὐρανοῦ
μέσον χθονός τε τεταμέναν αἰωρήμασι
πέτραν ἁλύσεσι χρυσέαισι φερομέναν
δίναισι βῶλον ἐξ Ὀλύμπου,
ἵν᾽ ἐν θρήνοισιν ἀναβοάσω
γέροντι πατρὶ Ταντάλῳ
ὃς ἔτεκεν ἔτεκε γενέτορας ἐμέθεν δόμων,
οἳ κατεῖδον ἄτας,
ποτανὸν μὲν δίωγμα πώλων
τεθριπποβάμονι στόλῳ Πέλοψ ὅτε
πελάγεσι διεδίφρευσε, Μυρτίλου φόνον
δικὼν ἐς οἶδμα πόντου,
λευκοκύμοσιν
πρὸς Γεραιστίαις
ποντίων σάλων

ᾐόσιν ἁρματεύσας.
ὅθεν δόμοισι τοῖς ἐμοῖς
ἦλθ' ἀρὰ πολύστονος,
λόχευμα ποιμνίοισι Μαιάδος τόκου,
τὸ χρυσόμαλλον ἀρνὸς ὁπότ'
ἐγένετο τέρας ὀλοὸν ὀλοὸν
'Ατρέος ἱπποβώτα·
ὅθεν Ἔρις τό τε πτερωτὸν
ἁλίου μετέβαλεν ἅρμα,
τὰν πρὸς ἑσπέραν κέλευθον
οὐρανοῦ προσαρμόσασα
μονόπωλον ἐς Ἀῶ,
ἑπταπόρου τε δρόμημα Πελειάδος
εἰς ὁδὸν ἄλλαν Ζεὺς μεταβάλλει,
τῶνδέ τ' ἀμείβει ἀεὶ θανάτους θανά-
των τά τ' ἐπώνυμα δεῖπνα Θυέστου
λέκτρα τε Κρήσσας Ἀερόπας δολί-
ας δολίοισι γάμοις· τὰ πανύστατα δ'
εἰς ἐμὲ καὶ γενέταν ἐμὸν ἤλυθε
δόμων πολυπόνοις ἀνάγκαις.

ΧΟ. καὶ μὴν ὅδε σὸς ξύγγονος ἕρπει
ψήφῳ θανάτου κατακυρωθείς,
ὅ τε πιστότατος πάντων Πυλάδης
ἰσάδελφος ἀνήρ,
ἰθύνων νοσερὸν κῶλον Ὀρέστου,
ποδὶ κηδοσύνῳ παράσειρος.

ΗΛ. οἴ 'γώ· πρὸ τύμβου γάρ σ' ὁρῶσ' ἀναστένω,
ἀδελφέ, καὶ πάροιθε νερτέρων πυρᾶς.
οἴ 'γὼ μάλ' αὖθις· ὥς σ' ἰδοῦσ' ἐν ὄμμασι
πανυστάτην πρόσοψιν ἐξέστην φρενῶν.

ΟΡ. οὐ σῖγ' ἀφεῖσα τοὺς γυναικείους γόους

στέρξεις τὰ κρανθέντ᾽; οἰκτρὰ μὲν τάδ᾽, ἀλλ᾽ ὅμως
φέρειν ἀνάγκη τὰς παρεστώσας τύχας.
ΗΛ. καὶ πῶς σιωπῶ; φέγγος εἰσορᾶν θεοῦ
τόδ᾽ οὐκέθ᾽ ἡμῖν τοῖς ταλαιπώροις μέτα.
ΟΡ. σὺ μή μ᾽ ἀπόκτειν᾽· ἅλις ὑπ᾽ Ἀργείας χερὸς
τέθνηχ᾽ ὁ τλήμων· τὰ δὲ παρόντ᾽ ἔα κακά.
ΗΛ. ὢ μέλεος ἥβης σῆς, Ὀρέστα, καὶ πότμου
θανάτου τ᾽ ἀώρου. ζῆν ἐχρῆν σ᾽, ὅτ᾽ οὐκέτ᾽ εἶ.
ΟΡ. μὴ πρὸς θεῶν μοι περιβάλῃς ἀνανδρίαν,
εἰς δάκρυα πορθμεύουσ᾽ ὑπομνήσει κακῶν.
ΗΛ. θανούμεθ᾽· οὐχ οἷόν τε μὴ στένειν κακά.
πᾶσιν γὰρ οἰκτρὸν ἡ φίλη ψυχὴ βροτοῖς.
ΟΡ. τόδ᾽ ἦμαρ ἡμῖν κύριον· δεῖ δ᾽ ἢ βρόχους
ἅπτειν κρεμαστοὺς ἢ ξίφος θήγειν χερί.
ΗΛ. σύ νύν μ᾽, ἀδελφέ, μή τις Ἀργείων κτάνῃ
ὕβρισμα θέμενος τὸν Ἀγαμέμνονος γόνον.
ΟΡ. ἅλις τὸ μητρὸς αἷμ᾽ ἔχω· σὲ δ᾽ οὐ κτενῶ,
ἀλλ᾽ αὐτόχειρι θνῆσχ᾽ ὅτῳ βούλει τρόπῳ.
ΗΛ. ἔσται τάδ᾽· οὐδὲν σοῦ ξίφους λελείψομαι·
ἀλλ᾽ ἀμφιθεῖναι σῇ δέρῃ θέλω χέρας.
ΟΡ. τέρπου κενὴν ὄνησιν, εἰ τερπνὸν τόδε
θανάτου πέλας βεβῶσι, περιβαλεῖν χέρας.
ΗΛ. ὦ φίλτατ᾽, ὦ ποθεινὸν ἥδιστόν τ᾽ ἔχων
τῆς σῆς ἀδελφῆς ὄνομα καὶ ψυχὴν μίαν.
ΟΡ. ἔκ τοί με τήξεις· καί σ᾽ ἀμείψασθαι θέλω
φιλότητι χειρῶν. τί γὰρ ἔτ᾽ αἰδοῦμαι τάλας;
ὦ στέρν᾽ ἀδελφῆς, ὦ φίλον πρόσπτυγμ᾽ ἐμόν,
τάδ᾽ ἀντὶ παίδων καὶ γαμηλίου λέχους
προσφθέγματ᾽ ἀμφὶ τοῖς ταλαιπώροις πάρα.
ΗΛ. φεῦ·

πῶς ἂν ξίφος νὼ ταὐτόν, εἰ θέμις, κτάνοι
καὶ μνῆμα δέξαιθ᾽ ἕν, κέδρου τεχνάσματα;
ΟΡ. ἥδιστ᾽ ἂν εἴη ταῦθ᾽· ὁρᾷς δὲ δὴ φίλων
ὡς ἐσπανίσμεθ᾽, ὥστε κοινωνεῖν τάφου.
ΗΛ. οὐδ᾽ εἶφ᾽ ὑπὲρ σοῦ, μὴ θανεῖν σπουδὴν ἔχων,
Μενέλαος ὁ κακός, ὁ προδότης τοὐμοῦ πατρός;
ΟΡ. οὐδ᾽ ὄμμ᾽ ἔδειξεν, ἀλλ᾽ ἐπὶ σκήπτροις ἔχων
τὴν ἐλπίδ᾽, εὐλαβεῖτο μὴ σώζειν φίλους.
ἀλλ᾽ εἶ᾽ ὅπως γενναῖα κἀγαμέμνονος
δράσαντε κατθανούμεθ᾽ ἀξιώτατα.
κἀγὼ μὲν εὐγένειαν ἀποδείξω πόλει,
παίσας πρὸς ἧπαρ φασγάνῳ· σὲ δ᾽ αὖ χρεὼν
ὅμοια πράσσειν τοῖς ἐμοῖς τολμήμασι.
Πυλάδη, σὺ δ᾽ ἡμῖν τοῦ φόνου γενοῦ βραβεύς,
καὶ κατθανόντοιν εὖ περίστειλον δέμας
θάψον τε κοινῇ πρὸς πατρὸς τύμβον φέρων.
καὶ χαῖρ᾽· ἐπ᾽ ἔργον δ᾽, ὡς ὁρᾷς, πορεύομαι.
ΠΥ. ἐπίσχες. ἓν μὲν πρῶτά σοι μομφὴν ἔχω,
εἰ ζῆν με χρῄζειν σοῦ θανόντος ἤλπισας.
ΟΡ. τί γὰρ προσήκει κατθανεῖν σ᾽ ἐμοῦ μέτα;
ΠΥ. ἤρου; τί δὲ ζῆν σῆς ἑταιρείας ἄτερ;
ΟΡ. οὐκ ἔκτανες σὺ μητέρ᾽, ὡς ἐγὼ τάλας.
ΠΥ. σὺν σοί γε κοινῇ· ταὐτὰ καὶ πάσχειν με δεῖ.
ΟΡ. ἀπόδος τὸ σῶμα πατρί, μὴ σύνθνησκέ μοι.
σοὶ μὲν γάρ ἐστι πόλις, ἐμοὶ δ᾽ οὐκ ἔστι δή,
καὶ δῶμα πατρὸς καὶ μέγας πλούτου λιμήν.
γάμων δὲ τῆς μὲν δυσπότμου τῆσδ᾽ ἐσφάλης,
ἥν σοι κατηγγύησ᾽, ἑταιρείαν σέβων·
σὺ δ᾽ ἄλλο λέκτρον παιδοποίησαι λαβών,
κῆδος δὲ τοὐμὸν καὶ σὸν οὐκέτ᾽ ἔστι δή.
ἀλλ᾽ ὦ ποθεινὸν ὄνομ᾽ ὁμιλίας ἐμῆς,

χαῖρ᾽· οὐ γὰρ ἡμῖν ἔστι τοῦτο, σοί γε μήν·
οἱ γὰρ θανόντες χαρμάτων τητώμεθα.

ΠΥ. ἦ πολὺ λέλειψαι τῶν ἐμῶν βουλευμάτων.
μήθ᾽ αἷμά μου δέξαιτο κάρπιμον πέδον,
μὴ λαμπρὸς αἰθήρ, εἴ σ᾽ ἐγὼ προδούς ποτε
ἐλευθερώσας τοὐμὸν ἀπολίποιμί σε.
καὶ συγκατέκτανον γάρ, οὐκ ἀρνήσομαι,
καὶ πάντ᾽ ἐβούλευσ᾽ ὧν σὺ νῦν τίνεις δίκας·
καὶ συνθανεῖν οὖν δεῖ με σοὶ καὶ τῇδ᾽ ὁμοῦ.
ἐμὴν γὰρ αὐτήν, ἧς γε λέχος ἐπῄνεσα,
κρίνω δάμαρτα· τί γὰρ ἐρῶ καλόν ποτε
τὴν Δελφίδ᾽ ἐλθὼν Φωκέων ἀκρόπτολιν,
ὃς πρὶν μὲν ὑμᾶς δυστυχεῖν φίλος παρῆν,
νῦν δ᾽ οὐκέτ᾽ εἰμὶ δυστυχοῦντί σοι φίλος;
οὐκ ἔστιν, ἀλλὰ ταῦτα μὲν κἀμοὶ μέλει.
ἐπεὶ δὲ κατθανούμεθ᾽, εἰς κοινοὺς λόγους
ἔλθωμεν, ὡς ἂν Μενέλεως ξυνδυστυχῇ.

ΟΡ. ὦ φίλτατ᾽, εἰ γὰρ τοῦτο κατθάνοιμ᾽ ἰδών.

ΠΥ. πιθοῦ νυν, ἀνάμεινον δὲ φασγάνου τομάς.

ΟΡ. μενῶ, τὸν ἐχθρὸν εἴ τι τιμωρήσομαι.

ΠΥ. σίγα νυν· ὡς γυναιξὶ πιστεύω βραχύ.

ΟΡ. μηδὲν τρέσῃς τάσδ᾽· ὡς πάρεισ᾽ ἡμῖν φίλαι.

ΠΥ. Ἑλένην κτάνωμεν, Μενέλεῳ λύπην πικράν.

ΟΡ. πῶς; τὸ γὰρ ἕτοιμον ἔστιν, εἴ γ᾽ ἔσται καλῶς.

ΠΥ. σφάξαντες. ἐν δόμοις δὲ κρύπτεται σέθεν.

ΟΡ. μάλιστα· καὶ δὴ πάντ᾽ ἀποσφραγίζεται.

ΠΥ. ἀλλ᾽ οὐκέθ᾽, Ἅιδην νυμφίον κεκτημένη.

ΟΡ. καὶ πῶς; ἔχει γὰρ βαρβάρους ὀπάονας.

ΠΥ. τίνας; Φρυγῶν γὰρ οὐδέν᾽ ἂν τρέσαιμ᾽ ἐγώ.

ΟΡ. οἵους ἐνόπτρων καὶ μύρων ἐπιστάτας.

ΠΥ. τρυφὰς γὰρ ἥκει δεῦρ᾽ ἔχουσα Τρωικάς;

ΟΡ. ὥσθ᾽ Ἑλλὰς αὐτῇ σμικρὸν οἰκητήριον.

ΠΥ. οὐδὲν τὸ δοῦλον πρὸς τὸ μὴ δοῦλον γένος.
ΟΡ. καὶ μὴν τόδ᾽ ἔρξας δὶς θανεῖν οὐχ ἅζομαι.
ΠΥ. ἀλλ᾽ οὐδ᾽ ἐγὼ μήν, σοί γε τιμωρούμενος.
ΟΡ. τὸ πρᾶγμα δήλου καὶ πέραιν᾽, ὅπως λέγεις.
ΠΥ. εἴσιμεν ἐς οἴκους δῆθεν, ὡς θανούμενοι.
ΟΡ. ἔχω τοσοῦτον, τἀπίλοιπα δ᾽ οὐκ ἔχω.
ΠΥ. γόους πρὸς αὐτὴν θησόμεσθ᾽ ἃ πάσχομεν.
ΟΡ. ὥστ᾽ ἐκδακρῦσαί γ᾽ ἔνδοθεν κεχαρμένην.
ΠΥ. καὶ νῷν παρέσται ταῦθ᾽ ἅπερ κείνῃ τότε.
ΟΡ. ἔπειτ᾽ ἀγῶνα πῶς ἀγωνιούμεθα;
ΠΥ. κρύπτ᾽ ἐν πέπλοισι τοισίδ᾽ ἕξομεν ξίφη.
ΟΡ. πρόσθεν δ᾽ ὀπαδῶν τίς ὄλεθρος γενήσεται;
ΠΥ. ἐκκλείσομεν σφᾶς ἄλλον ἄλλοσε στέγης.
ΟΡ. καὶ τόν γε μὴ σιγῶντ᾽ ἀποκτείνειν χρεών.
ΠΥ. εἶτ᾽ αὐτὸ δηλοῖ τοὔργον οἷ τείνειν χρεών.
ΟΡ. Ἑλένην φονεύειν· μανθάνω τὸ σύμβολον.
ΠΥ. ἔγνως· ἄκουσον δ᾽ ὡς καλῶς βουλεύομαι.
εἰ μὲν γὰρ εἰς γυναῖκα σωφρονεστέραν
ξίφος μεθεῖμεν, δυσκλεὴς ἂν ἦν φόνος·
νῦν δ᾽ ὑπὲρ ἁπάσης Ἑλλάδος δώσει δίκην,
ὧν πατέρας ἔκτειν᾽ ὧν τ᾽ ἀπώλεσεν τέκνα,
νύμφας τ᾽ ἔθηκεν ὀρφανὰς ξυναόρων.
ὀλολυγμὸς ἔσται, πῦρ τ᾽ ἀνάψουσιν θεοῖς,
σοὶ πολλὰ κἀμοὶ κέδν᾽ ἀρώμενοι τυχεῖν,
κακῆς γυναικὸς οὕνεχ᾽ αἷμ᾽ ἐπράξαμεν.
ὁ μητροφόντης δ᾽ οὐ καλεῖ ταύτην κτανών,
ἀλλ᾽ ἀπολιπὼν τοῦτ᾽ ἐπὶ τὸ βέλτιον πεσεῖ,
Ἑλένης λεγόμενος τῆς πολυκτόνου φονεύς.
οὐ δεῖ ποτ᾽ οὐ δεῖ Μενέλεων μὲν εὐτυχεῖν,
τὸν σὸν δὲ πατέρα καὶ σὲ κἀδελφὴν θανεῖν,

μητέρα τ᾽, ἐῶ τοῦτ᾽, οὐ γὰρ εὐπρεπὲς λέγειν,

δόμους τ' ἔχειν σούς, δι' Ἀγαμέμνονος δόρυ
λαβόντα νύμφην· μὴ γὰρ οὖν ζῴην ἔτι,
εἰ μὴ 'π' ἐκείνῃ φάσγανον σπάσω μέλαν.
ἢν δ' οὖν τὸν Ἑλένης μὴ κατάσχωμεν φόνον,
πρήσαντες οἴκους τούσδε κατθανούμεθα.
[ἑνὸς γὰρ οὐ σφαλέντες ἕξομεν κλέος,
καλῶς θανόντες ἢ καλῶς σεσωσμένοι.]

ΧΟ. πάσαις γυναιξὶν ἀξία στυγεῖν ἔφυ
ἡ Τυνδαρὶς παῖς, ἣ κατῄσχυνεν γένος.

ΟΡ. φεῦ·
οὐκ ἔστιν οὐδὲν κρεῖσσον ἢ φίλος σαφής,
οὐ πλοῦτος, οὐ τυραννίς· ἀλόγιστον δέ τι
τὸ πλῆθος ἀντάλλαγμα γενναίου φίλου.
σὺ γὰρ τά τ' εἰς Αἴγισθον ἐξεῦρες κακὰ
καὶ πλησίον παρῆσθα κινδύνων ἐμοί,
νῦν τ' αὖ δίδως μοι πολεμίων τιμωρίαν
κοὐκ ἐκποδὼν εἶ. παύσομαί σ' αἰνῶν, ἐπεὶ
βάρος τι κἀν τῷδ' ἐστίν, αἰνεῖσθαι λίαν.
ἐγὼ δὲ πάντως ἐκπνέων ψυχὴν ἐμὴν
δράσας τι χρῄζω τοὺς ἐμοὺς ἐχθροὺς θανεῖν,
ἵν' ἀνταναλώσω μὲν οἵ με προὔδοσαν,
στένωσι δ' οἵπερ κἄμ' ἔθηκαν ἄθλιον.
Ἀγαμέμνονός τοι παῖς πέφυχ', ὃς Ἑλλάδος
ἦρξ' ἀξιωθείς, οὐ τύραννος, ἀλλ' ὅμως
ῥώμην θεοῦ τιν' ἔσχ'· ὃν οὐ καταισχυνῶ
δοῦλον παρασχὼν θάνατον, ἀλλ' ἐλευθέρως
ψυχὴν ἀφήσω, Μενέλεων δὲ τίσομαι.
ἑνὸς γὰρ εἰ λαβοίμεθ', εὐτυχοῖμεν ἄν,
εἴ ποθεν ἄελπτος παραπέσοι σωτηρία
κτανοῦσι μὴ θανοῦσιν· εὔχομαι τάδε.
ὃ βούλομαι γὰρ ἡδὺ καὶ διὰ στόμα
πτηνοῖσι μύθοις ἀδαπάνως τέρψαι φρένα.

ΗΛ. ἐγώ, κασίγνητ', αὐτὸ τοῦτ' ἔχειν δοκῶ,
σωτηρίαν σοὶ τῷδέ τ' ἐκ τρίτων τ' ἐμοί.
ΟΡ. θεοῦ λέγεις πρόνοιαν. ἀλλὰ ποῦ τόδε;
ἐπεὶ τὸ συνετὸν οἶδα σῇ ψυχῇ παρόν.
ΗΛ. ἄκουε δή νυν καὶ σὺ δεῦρο νοῦν ἔχε.
ΟΡ. λέγ'· ὡς τὸ μέλλειν ἀγάθ' ἔχει τιν' ἡδονήν.
ΗΛ. Ἑλένης κάτοισθα θυγατέρ'; εἰδότ' ἠρόμην.
ΟΡ. οἶδ', ἣν ἔθρεψεν Ἑρμιόνην μήτηρ ἐμή.
ΗΛ. αὕτη βέβηκε πρὸς Κλυταιμνήστρας τάφον.
ΟΡ. τί χρῆμα δράσουσ'; ὑποτίθης τίν' ἐλπίδα;
ΗΛ. χοὰς κατασπείσουσ' ὑπὲρ μητρὸς τάφῳ.
ΟΡ. καὶ δὴ τί μοι τοῦτ' εἶπας εἰς σωτηρίαν;
ΗΛ. συλλάβεθ' ὅμηρον τήνδ', ὅταν στείχῃ πάλιν.
ΟΡ. τίνος τόδ' εἶπας φάρμακον τρισσοῖς φίλοις;
ΗΛ. Ἑλένης θανούσης, ἤν τι Μενέλεως σὲ δρᾷ
ἢ τόνδε κἀμέ, πᾶν γὰρ ἓν φίλον τόδε,
λέγ' ὡς φονεύσεις Ἑρμιόνην· ξίφος δὲ χρὴ
δέρῃ πρὸς αὐτῇ παρθένου σπάσαντ' ἔχειν.
κἂν μέν σε σώζῃ μὴ θανεῖν χρῄζων κόρην
Μενέλαος, Ἑλένης πτῶμ' ἰδὼν ἐν αἵματι,
μέθες πεπᾶσθαι πατρὶ παρθένου δέμας·
ἢν δ' ὀξυθύμου μὴ κρατῶν φρονήματος
κτείνῃ σε, καὶ σὺ σφάζε παρθένου δέρην.
καί νιν δοκῶ, τὸ πρῶτον ἢν πολὺς παρῇ,
χρόνῳ μαλάξειν σπλάγχνον· οὔτε γὰρ θρασὺς
οὔτ' ἄλκιμος πέφυκε· τήνδ' ἡμῖν ἔχω
σωτηρίας ἔπαλξιν. εἴρηται λόγος.
ΟΡ. ὦ τὰς φρένας μὲν ἄρσενας κεκτημένη,
τὸ σῶμα δ' ἐν γυναιξὶ θηλείαις πρέπον,
ὡς ἀξία ζῆν μᾶλλον ἢ θανεῖν ἔφυς.
Πυλάδη, τοιαύτης ἆρ' ἁμαρτήσει τάλας
γυναικὸς ἢ ζῶν μακάριον κτήσει λέχος.

ΠΥ. εἰ γὰρ γένοιτο, Φωκέων δ' ἔλθοι πόλιν
καλοῖσιν ὑμεναίοισιν ἀξιουμένη.
ΟΡ. ἥξει δ' ἐς οἴκους Ἑρμιόνη τίνος χρόνου;
ὡς τἄλλα γ' εἶπας, εἴπερ εὐτυχήσομεν,
κάλλισθ', ἑλόντες σκύμνον ἀνοσίου πατρός.
ΗΛ. καὶ δὴ πέλας νιν δωμάτων εἶναι δοκῶ·
τοῦ γὰρ χρόνου τὸ μῆκος αὐτὸ συντρέχει.
ΟΡ. καλῶς· σὺ μέν νυν, σύγγον' Ἠλέκτρα, δόμων
πάρος μένουσα παρθένου δέχου πόδα·
φύλασσε δ' ἤν τις, πρὶν τελευτηθῇ φόνος,
ἢ ξύμμαχός τις ἢ κασίγνητος πατρὸς
ἐλθὼν ἐς οἴκους φθῇ, γέγωνέ τ' εἰς δόμους,
ἢ σανίδα παίσασ' ἢ λόγους πέμψασ' ἔσω.
ἡμεῖς δ' ἔσω στείχοντες ἐπὶ τὸν ἔσχατον
ἀγῶν' ὁπλιζώμεσθα φασγάνῳ χέρας
[Πυλάδη· σὺ γὰρ δὴ συμπονεῖς ἐμοὶ πόνους].
ὦ δῶμα ναίων νυκτὸς ὀρφναίας πάτερ,
καλεῖ σ' Ὀρέστης παῖς σὸς ἐπίκουρον μολεῖν
τοῖς δεομένοισι. διὰ σὲ γὰρ πάσχω τάλας
ἀδίκως· προδέδομαι δ' ὑπὸ κασιγνήτου σέθεν,
δίκαια πράξας· οὗ θέλω δάμαρθ' ἑλὼν
κτεῖναι· σὺ δ' ἡμῖν τοῦδε συλλήπτωρ γενοῦ.
ΗΛ. ὦ πάτερ, ἱκοῦ δῆτ', εἰ κλύεις εἴσω χθονὸς
τέκνων καλούντων, οἳ σέθεν θνήσκουσ' ὕπερ.
ΠΥ. ὦ συγγένεια πατρὸς ἐμοῦ, κἀμὰς λιτάς,
Ἀγάμεμνον, εἰσάκουσον, ἔκσωσον τέκνα.
ΟΡ. ἔκτεινα μητέρ', ΠΥ. ἡψάμην δ' ἐγὼ ξίφους.
ΗΛ. ἐγὼ δ' ἐπενεκέλευσα κἀπέλυσ' ὄκνου.
ΟΡ. σοί, πάτερ, ἀρήγων. ΗΛ. οὐδ' ἐγὼ προύδωκά σε.
ΠΥ. οὔκουν ὀνείδη τάδε κλύων ῥῦσαι τέκνα.
ΟΡ. δακρύοις κατασπένδω σ'. ΗΛ. ἐγὼ δ' οἴκτοισί γε.
ΠΥ. παύσασθε, καὶ πρὸς ἔργον ἐξορμώμεθα.

εἴπερ γὰρ εἴσω γῆς ἀκοντίζουσ᾽ ἀραί,
κλύει. σὺ δ᾽, ὦ Ζεῦ πρόγονε καὶ Δίκης σέβας,
δότ᾽ εὐτυχῆσαι τῷδ᾽ ἐμοί τε τῇδέ τε·
τρισσοῖς φίλοις γὰρ εἷς ἀγών, δίκη μία
[ἢ ζῆν ἅπασιν ἢ θανεῖν ὀφείλεται].

ΗΛ. Μυκηνίδες ὦ φίλιαι, στρ.
τὰ πρῶτα κατὰ Πελασγὸν ἕδος Ἀργείων.

ΧΟ. τίνα θροεῖς αὐδάν, πότνια; παραμένει
γὰρ ἔτι σοι τόδ᾽ ἐν Δαναϊδῶν πόλει.

ΗΛ. στῆθ᾽ αἱ μὲν ὑμῶν τόνδ᾽ ἁμαξήρη τρίβον,
αἱ δ᾽ ἐνθάδ᾽ ἄλλον οἶμον εἰς φρουρὰν δόμων.

ΧΟ. τί δέ με τόδε χρέος ἀπύεις,
ἔνεπέ μοι, φίλα.

ΗΛ. φόβος ἔχει με μή τις ἐπὶ δώμασι
σταθεὶς ἐπὶ φοίνιον αἷμα
πήματα πήμασιν ἐξεύρῃ.

ΗΜΙΧ. χωρεῖτ᾽, ἐπειγώμεσθ᾽· ἐγὼ μὲν οὖν τρίβον
τόνδ᾽ ἐκφυλάξω, τὸν πρὸς ἡλίου βολάς.

ΗΜΙΧ. καὶ μὴν ἐγὼ τόνδ᾽, ὃς πρὸς ἑσπέραν φέρει.

ΗΛ. δόχμιά νυν κόρας διάφερ᾽ ὀμμάτων
ἐκεῖθεν ἐνθάδ᾽, εἶτα παλινσκοπιάν.

ΗΜΙΧ. ἔχομεν ὡς θροεῖς.

ΗΛ. ἑλίσσετέ νυν βλέφαρον ἀντ.
κόρας διάδοτε διὰ βοτρύχων πάντῃ.

ΗΜΙΧ. ὅδε τίς ἐν τρίβῳ; πρόσεχε, τίς ὅδ᾽ ἄρ᾽ ἀμ-
φὶ μέλαθρον πολεῖ σὸν ἀγρότας ἀνήρ;

ΗΛ. ἀπωλόμεσθ᾽ ἄρ᾽, ὦ φίλαι· κεκρυμμένους
θῆρας ξιφήρεις αὐτίκ᾽ ἐχθροῖσιν φανεῖ.

ΗΜΙΧ. ἄφοβος ἔχε· κενός, ὦ φίλα,
στίβος ὃν οὐ δοκεῖς.

ΗΛ. τί δέ; τὸ σὸν βέβαιον ἔτι μοι μένει;

1246 — 1265 = 1266 — 1285

δὸς ἀγγελίαν ἀγαθάν τιν',
εἰ τάδ' ἔρημα τὰ πρόσθ' αὐλᾶς.
ΗΜΙΧ. καλῶς τά γ' ἔνθεν· ἀλλὰ τἀπὶ σοῦ σκόπει·
ὡς οὔτις ἡμῖν Δαναϊδῶν πελάζεται.
ΗΜΙΧ. εἰς ταὐτὸν ἥκεις· καὶ γὰρ οὐδὲ τῇδ' ὄχλος.
ΗΛ. φέρε νυν ἐν πύλαισιν ἀκοὰν βάλω·
τί μέλλεθ' οἱ κατ' οἶκον ἐν ἡσυχίᾳ
σφάγια φοινίσσειν;
οὐκ εἰσακούουσ'· ὦ τάλαιν' ἐγὼ κακῶν.
ἆρ' ἐς τὸ κάλλος ἐκκεκώφηται ξίφη;
τάχα τις Ἀργείων ἔνοπλος ὁρμήσας
ποδὶ βοηδρόμῳ μέλαθρα προσμίξει.
σκέψασθέ νυν ἄμεινον· οὐχ ἕδρας ἀγών·
ἀλλ' αἱ μὲν ἐνθάδ', αἱ δ' ἐκεῖσ' ἑλίσσετε.
ΧΟ. ἀμείβω κέλευθον σκοποῦσα πάντα.
ΕΛ. ἰὼ Πελασγὸν Ἄργος, ὄλλυμαι κακῶς.
ΗΜΙΧ. ἠκούσαθ'; ἄνδρες χεῖρ' ἔχουσιν ἐν φόνῳ.
ΗΜΙΧ. Ἑλένης τὸ κώκυμ' ἐστίν, ὡς ἀπεικάσαι.
ΗΛ. ὦ Διός, ὦ Διὸς ἀέναον κράτος,
ἔλθ' ἐπίκουρον ἐμοῖς φίλοισι πάντως.
ΕΛ. Μενέλαε, θνήσκω· σὺ δὲ παρὼν μ' οὐκ ὠφελεῖς.
ΗΛ. φονεύετε καίνετε [θείνετε] ὄλλυτε,
δίπτυχα δίστομα φάσγανα [πέμπετε]
ἐκ χερὸς ἱέμε–
νοι λιποπάτορα λιπόγαμόν θ', ἃ πλείστους
ἔκανεν Ἑλλάνων
δόρει παρὰ ποταμὸν ὀλομένους, ὁπόθι
δάκρυα δάκρυσι συνέπεσε σιδαρέοις
βέλεσιν ἀμφὶ τὰς Σκαμάνδρου δίνας.
ΧΟ. σιγᾶτε σιγᾶτ'· ᾐσθόμην κτύπου τινὸς
κέλευθον εἰσπεσόντος ἀμφὶ δώματα.
ΗΛ. ὦ φίλταται γυναῖκες, εἰς μέσον φόνον

ἥδ' Ἑρμιόνη πάρεστι· παύσωμεν βοήν.
στείχει γὰρ εἰσπεσοῦσα δικτύων βρόχους.
καλὸν τὸ θήραμ', ἢν ἁλῷ, γενήσεται.
πάλιν κατάστηθ' ἡσύχῳ μὲν ὄμματι,
χρόᾳ τ' ἀδήλῳ τῶν δεδραμένων πέρι·
κἀγὼ σκυθρωποὺς ὀμμάτων ἕξω κόρας,
ὡς δῆθεν οὐκ εἰδυῖα τἀξειργασμένα.
ὦ παρθέν', ἥκεις τὸν Κλυταιμνήστρας τάφον
στέψασα καὶ σπείσασα νερτέροις χοάς;
ΕΡ. ἥκω, λαβοῦσα πρευμένειαν. ἀλλά μοι
φόβος τις εἰσελήλυθ', ἥντιν' ἐν δόμοις
τηλουρὸς οὖσα δωμάτων κλύω βοήν.
ΗΛ. τί δ'; ἄξι' ἡμῖν τυγχάνει στεναγμάτων.
ΕΡ. εὔφημος ἴσθι· τί δὲ νεώτερον λέγεις;
ΗΛ. θανεῖν Ὀρέστην κἄμ' ἔδοξε τῇδε γῇ.
ΕΡ. μὴ δῆτ', ἐμούς γε συγγενεῖς πεφυκότας.
ΗΛ. ἄραρ'· ἀνάγκης δ' ἐς ζυγὸν καθέσταμεν.
ΕΡ. ἦ τοῦδ' ἕκατι καὶ βοὴ κατὰ στέγας;
ΗΛ. ἱκέτης γὰρ Ἑλένης γόνασι προσπεσὼν βοᾷ
ΕΡ. τίς; οὐδὲν οἶδα μᾶλλον, ἢν σὺ μὴ λέγῃς.
ΗΛ. τλήμων Ὀρέστης μὴ θανεῖν, ἐμοῦ θ' ὕπερ.
ΕΡ. ἐπ' ἀξίοισί τἄρ' ἀνευφημεῖ δόμος.
ΗΛ. περὶ τοῦ γὰρ ἄλλου μᾶλλον ἂν φθέγξαιτό τις;
ἀλλ' ἐλθὲ καὶ μετάσχες ἱκεσίας φίλοις,
σῇ μητρὶ προσπεσοῦσα τῇ μέγ' ὀλβίᾳ,
Μενέλαον ἡμᾶς μὴ θανόντας εἰσιδεῖν.
ἀλλ' ὦ τραφεῖσα μητρὸς ἐν χεροῖν ἐμῆς,
οἴκτειρον ἡμᾶς κἀποκούφισον κακῶν.
ἴθ' εἰς ἀγῶνα δεῦρ', ἐγὼ δ' ἡγήσομαι·
σωτηρίας γὰρ τέρμ' ἔχεις ἡμῖν μόνη.
ΕΡ. ἰδού, διώκω τὸν ἐμὸν εἰς δόμους πόδα.
σώθηθ' ὅσον γε τοὐπ' ἔμ'. ΗΛ. ὦ κατὰ στέγας

φίλοι ξιφήρεις, οὐχὶ συλλήψεσθ᾽ ἄγραν;
ΕΡ. οἴ ᾽γώ· τίνας τούσδ᾽ εἰσορῶ; ΟΡ. σιγᾶν χρεών·
ἡμῖν γὰρ ἥκεις, οὐχὶ σοί, σωτηρία.
ΗΛ. ἔχεσθ᾽ ἔχεσθε· φάσγανον δὲ πρὸς δέρῃ
βαλόντες ἡσυχάζεθ᾽, ὡς εἰδῇ τόδε
Μενέλαος, οὕνεκ᾽ ἄνδρας, οὐ Φρύγας κακούς,
εὑρὼν ἔπραξεν οἷα χρὴ πράσσειν κακούς.
ΧΟ. ἰὼ ἰὼ φίλαι, στρ.
κτύπον ἐγείρετε, κτύπον καὶ βοὰν
πρὸ μελάθρων, ὅπως ὁ πραχθεὶς φόνος
μὴ δεινὸν Ἀργείοισιν ἐμβάλῃ φόβον,
βοηδρομῆσαι πρὸς δόμους τυραννικούς,
πρὶν ἐτύμως ἴδω τὸν Ἑλένας φόνον
καθαιμακτὸν ἐν δόμοις κείμενον,
ἢ καὶ λόγον του προσπόλων πυθώμεθα·
τὰς μὲν γὰρ οἶδα συμφοράς, τὰς δ᾽ οὐ σαφῶς.
διὰ δίκας ἔβα θεῶν
νέμεσις ἐς Ἑλέναν.
δακρύοισι γὰρ Ἑλλάδα πᾶσαν ἔπλησε,
διὰ τὸν ὀλόμενον ὀλόμενον Ἰδαῖον
Πάριν, ὃς ἄγαγ᾽ Ἑλλάδ᾽ εἰς Ἴλιον.
ἀλλὰ κτυπεῖ γὰρ κλῇθρα βασιλείων δόμων,
σιγήσατ᾽· ἔξω γάρ τις ἐκβαίνει Φρυγῶν,
οὗ πευσόμεσθα τἀν δόμοις ὅπως ἔχει.
ΦΡ. Ἀργεῖον ξίφος ἐκ θανάτου πέφευγα
βαρβάροις εὐμάρισιν,
κεδρωτὰ παστάδων ὑπὲρ τέρεμνα
Δωρικάς τε τριγλύφους,
φροῦδα φροῦδα, γᾶ γᾶ,
βαρβάροισι δρασμοῖς.

1353—1365 = 1537—1548

αἰαῖ· πᾷ φύγω, ξέναι,
πολιὸν αἰθέρ' ἀμ-
πτάμενος ἢ πόντον, Ὠκεανὸς ὃν
ταυρόκρανος ἀγκάλαις ἑλίσ-
σων κυκλοῖ χθόνα;

ΧΟ. τί δ' ἔστιν, Ἑλένης πρόσπολ', Ἰδαῖον κάρα;

ΦΡ. Ἴλιον Ἴλιον, ὤμοι μοι, Φρύγιον
ἄστυ καλλίβωλον, Ἴδας
ὄρος θ' ἱερόν, ὥς σ' ὀλόμενον στένω,
ἁρμάτειον ἁρμάτειον
μέλος βαρβάρῳ βοᾷ, διὰ τὸ τᾶς
ὀρνιθόγονον ὄμμα κυκνόπτερον
καλλοσύνας Λήδας σκύμνου δυσελένας,
ξεστῶν περγάμων Ἀπολλωνίων
ἐρινύν· ὀτοτοῖ·
ἰαλέμων ἰαλέμων
Δαρδανία τλάμων Γανυμήδεος
ἱπποσύνᾳ Διὸς εὐνέτα.

ΧΟ. σαφῶς λέγ' ἡμῖν αὔθ' ἕκαστα τἀν δόμοις·
τὰ γὰρ πρὶν οὐκ εὔγνωστα συμβαλοῦσ' ἔχω.

ΦΡ. αἴλινον αἴλινον ἀρχὰν θανάτου
βάρβαροι λέγουσιν, αἰαῖ,
Ἀσιάδι φωνᾷ,
βασιλέων ὅταν αἷμα χυθῇ κατὰ γαῖαν
ξίφεσι σιδαρέοισιν Ἅιδα.
ἦλθον εἰς δόμους, ἵν' αὔθ' ἕκαστά σοι λέγω,
λέοντες Ἕλλανες δύο διδύμω·
τῷ μὲν ὁ στρατηλάτας πατὴρ ἐκλῄζετο,
ὁ δὲ παῖς Στροφίου, κακόμητις ἀνήρ,
οἷος Ὀδυσσεύς, σιγᾷ δόλιος,
πιστὸς δὲ φίλοις, θρασὺς εἰς ἀλκάν,
ξυνετὸς πολέμου, φόνιός τε δράκων.

ἔρροι τᾶς ἡσύχου προνοί-
ας κακοῦργος ὤν.
οἱ δὲ πρὸς θρόνους ἔσω
μολόντες ἇς ἔγημ᾽ ὁ τοξότας Πάρις
γυναικός, ὄμμα δακρύοις
πεφυρμένοι, ταπεινοὶ
ἕζονθ᾽, ὁ μὲν τὸ κεῖθεν, ὁ δὲ
τὸ κεῖθεν, ἄλλος ἄλλοθεν πεφραγμένοι.
περὶ δὲ γόνυ χέρας ἱκεσίους
ἔβαλον ἔβαλον Ἑλένας ἄμφω.
ἀνὰ δὲ δρομάδες ἔθορον ἔθορον
ἀμφίπολοι Φρύγες·
προσεῖπε δ᾽ ἄλλος ἄλλον πεσὼν ἐν φόβῳ,
μή τις εἴη δόλος.
κᾀδόκει τοῖς μὲν οὔ,
τοῖς δ᾽ ἐς ἀρκυστάταν
μηχανὰν ἐμπλέκειν
παῖδα τὰν Τυνδαρίδ᾽ ὁ
μητροφόντας δράκων.
ΧΟ. *σὺ δ᾽ ἦσθα ποῦ τότ᾽, ἢ πάλαι φεύγεις φόβῳ;*
ΦΡ. *Φρυγίοις ἔτυχον Φρυγίοισι νόμοις*
παρὰ βόστρυχον αὔραν αὔραν
Ἑλένας Ἑλένας εὐπᾶγι κύκλῳ
πτερίνῳ πρὸ παρηίδος ᾄσσων
βαρβάροις νόμοισιν.
ἁ δὲ λίνον ἠλακάτᾳ
δακτύλοις ἕλισσε,
νῆμά θ᾽ ἵετο πέδῳ,
σκύλων Φρυγίων ἐπὶ τύμβον ἀγάλ-
ματα συστολίσαι χρῄζουσα λίνῳ,
φάρεα πορφύρεα, δῶρα Κλυταιμνήστρᾳ.
προσεῖπε δ᾽ ὧδ᾽ Ὀρέστας Λάκαιναν κόραν·

ὦ Διὸς παῖ, θὲς ἴ-
χνος πέδῳ δεῦρ' ἀπο-
στᾶσα κλισμοῦ, Πέλοπος
ἐπὶ προπάτορος παλαι-
ᾶς ἕδραν ἑστίας,
ἵν' εἰδῇς λόγους ἐμούς.
ἄγει δ' ἄγει νιν· ἁ δ' ἐφεί-
πετ', οὐ πρόμαντις ὤν ἔμελ-
λεν· ὁ δὲ συνεργὸς ἄλλ' ἔπρασσ'
ἰὼν κακὸς Φωκεύς·
οὐκ ἐκποδὼν ἴτ', ἀλλ' ἀεὶ κακοὶ Φρύγες;
ἔκλῃσε δ' ἄλλον ἄλλοσε στέγης·
τοὺς μὲν ἐν σταθμοῖσιν ἱππικοῖς,
τοὺς δ' ἐν ἐξέδραισι, τοὺς δ' ἐκεῖσ' ἐκεῖθεν
ἄλλον ἄλλοσε διαρμόσας ἀποπρὸ δεσποίνας.
ΧΟ. τί τοὐπὶ τῷδε συμφορᾶς ἐγίγνετο;
ΦΡ. Ἰδαία μᾶτερ μᾶτερ
ὀβρίμα ὀβρίμα, αἰαῖ,
φονίων παθέων ἀνόμων τε κακῶν
ἅπερ ἔδρακον ἔδρακον ἐν δόμοις τυράννων.
ἀμφὶ πορφυρέων πέπλων ὑπὸ σκότου
ξίφη σπάσαντες ἐν χεροῖν,
ἄλλος ἄλλοσε
δίνασεν ὄμμα, μή τις παρὼν τύχοι.
ὡς κάπροι δ' ὀρέστεροι γυναικὸς ἀντίοι στα-
θέντες
ἐννέπουσι· κατθανεῖ
κατθανεῖ, κακός σ' ἀποκτείνει πόσις,
τὸν κασιγνήτου προδοὺς
ἐν Ἄργει θανεῖν γόνον.
ἁ δ' ἴαχεν ἴαχεν, ὤμοι μοι·
λευκὸν δ' ἐμβαλοῦσα πῆχυν στέρνοις,

κτύπησε κρᾶτα μέλεον πλαγάν·
φυγᾷ δὲ ποδὶ τὸ χρυσοσάνδαλον
ἴχνος ἔφερεν ἔφερεν·
ἐς κόμας δὲ δακτύλους δικὼν Ὀρέστας,
Μυκηνίδ᾽ ἀρβύλαν προβάς,
ὤμοις ἀριστεροῖσιν ἀνακλάσας δέρην,
παίειν λαιμὸν ἔμελλεν
ἔσω μέλαν ξίφος.

ΧΟ. ποῦ δῆτ᾽ ἀμύνειν οἱ κατὰ στέγας Φρύγες;

ΦΡ. ἰαχᾷ δόμων θύρετρα καὶ σταθμοὺς
μοχλοῖσιν ἐκβαλόντες, ἔνθ᾽ ἐμίμνομεν,
βοηδρομοῦμεν ἄλλος ἄλλοθεν στέγης,
ὁ μὲν πέτρους, ὁ δ᾽ ἀγκύλας,
ὁ δὲ ξίφος πρόκωπον ἐν χεροῖν ἔχων.
ἔναντα δ᾽ ἦλθεν
Πυλάδης ἀλίαστος, οἷος οἷος
Ἕκτωρ ὁ Φρύγιος ἢ τρικόρυθος Αἴας,
ὃν εἶδον εἶδον ἐν πύλαισι Πριαμίσιν·
φασγάνων δ᾽ ἀκμὰς ξυνήψαμεν.
τότε δὲ τότε διαπρεπεῖς ἐγένοντο Φρύγες,
ὅσον Ἄρεος ἀλκὰν ἥσσονες Ἑλλάδος
ἐγενόμεσθ᾽ αἰχμᾶς.
ὁ μὲν οἰχόμενος φυγάς, ὁ δὲ νέκυς ὤν,
ὁ δὲ τραῦμα φέρων, ὁ δὲ λισσόμενος,
θανάτου προβολάν·
ὑπὸ σκότον δ᾽ ἐφεύγομεν·
νεκροὶ δ᾽ ἔπιπτον, οἱ δ᾽ ἔμελλον, οἱ δ᾽ ἔκειντ᾽.
ἔμολε δ᾽ ἁ τάλαιν᾽ Ἑρμιόνα δόμους
ἐπὶ φόνῳ χαμαιπετεῖ ματρός, ἅ νιν ἔτεκεν τλά-
μων.
ἄθυρσοι δ᾽ οἷά νιν δραμόντε βάκχαι
σκύμνον ἐν χεροῖν ὀρείαν

ξυνήρπασαν· πάλιν δὲ τὰν Διὸς κόραν
ἐπὶ σφαγὰν ἔτεινον· ἁ δ' ἐκ θαλάμων
ἐγένετο διαπρὸ δωμάτων ἄφαντος,
ὦ Ζεῦ καὶ γᾶ καὶ φῶς καὶ νύξ,
ἤτοι φαρμάκοισιν ἢ μάγων
τέχναισιν ἢ θεῶν κλοπαῖς.
τὰ δ' ὕστερ' οὐκέτ' οἶδα· δρα-
πέτην γὰρ ἐξέκλεπτον ἐκ δόμων πόδα.
πολύπονα δὲ πολύπονα πάθεα
Μενέλαος ἀνασχόμενος ἀνόνητον ἀπὸ
Τροίας ἔλαβε τὸν Ἑλένας γάμον.

ΧΟ. καὶ μὴν ἀμείβει καινὸν ἐκ καινῶν τόδε·
ξιφηφόρον γὰρ εἰσορῶ πρὸ δωμάτων
βαίνοντ' Ὀρέστην ἐπτοημένῳ ποδί.

ΟΡ. ποῦ 'στιν οὗτος ὃς πέφευγεν ἐκ δόμων ἐμὸν ξίφος;

ΦΡ. προσκυνῶ σ', ἄναξ, νόμοισι βαρβάροισι προσπίτνων.

ΟΡ. οὐκ ἐν Ἰλίῳ τάδ' ἐστίν, ἀλλ' ἐν Ἀργείᾳ χθονί.

ΦΡ. πανταχοῦ ζῆν ἡδὺ μᾶλλον ἢ θανεῖν τοῖς σώφροσιν.

ΟΡ. οὔτι που κραυγὴν ἔθηκας Μενέλεῳ βοηδρομεῖν;

ΦΡ. σοὶ μὲν οὖν ἔγωγ' ἀμύνειν· ἀξιώτερος γὰρ εἶ.

ΟΡ. ἐνδίκως ἡ Τυνδάρειος ἆρα παῖς διώλετο;

ΦΡ. ἐνδικώτατ', εἴ γε λαιμοὺς εἶχε τριπτύχους θανεῖν.

ΟΡ. δειλίᾳ γλώσσῃ χαρίζει, τἄνδον οὐχ οὕτω φρονῶν.

ΦΡ. οὐ γάρ, ἥτις Ἑλλάδ' αὐτοῖς Φρυξὶ διελυμήνατο;

ΟΡ. ὄμοσον, εἰ δὲ μή, κτενῶ σε, μὴ λέγειν ἐμὴν χάριν.

ΦΡ. τὴν ἐμὴν ψυχὴν κατώμοσ', ἣν ἂν εὐορκοῖμ' ἐγώ.

ΟΡ. ὧδε κἀν Τροίᾳ σίδηρος πᾶσι Φρυξὶν ἦν φόβος;
ΦΡ. ἄπεχε φάσγανον· πέλας γὰρ δεινὸν ἀνταυγεῖ φόνον.
ΟΡ. μὴ πέτρος γένῃ δέδοικας, ὥστε Γοργόν᾽ εἰσιδών;
ΦΡ. μὴ μὲν οὖν νεκρός· τὸ Γοργοῦς δ᾽ οὐ κάτοιδ᾽ ἐγὼ κάρα.
ΟΡ. δοῦλος ὢν φοβεῖ τὸν Ἅιδην, ὅς σ᾽ ἀπαλλάξει κακῶν;
ΦΡ. πᾶς ἀνήρ, κἂν δοῦλος ᾖ τις, ἥδεται τὸ φῶς ὁρῶν.
ΟΡ. εὖ λέγεις, σώζει σε σύνεσις· ἀλλὰ βαῖν᾽ εἴσω δόμων.
ΦΡ. οὐκ ἄρα κτενεῖς μ᾽; ΟΡ. ἀφεῖσαι. ΦΡ. καλὸν ἔπος λέγεις τόδε.
ΟΡ. ἀλλὰ μεταβουλευσόμεσθα. ΦΡ. τοῦτο δ᾽ οὐ καλῶς λέγεις.
ΟΡ. μῶρος εἶ δοκῶν με τλῆναι σὴν καθαιμάξαι δέρην·
οὔτε γὰρ γυνὴ πέφυκας οὔτ᾽ ἐν ἀνδράσιν σύ γ᾽ εἶ.
τοῦ δὲ μὴ στῆσαί σε κραυγὴν οὕνεκ᾽ ἐξῆλθον δόμων·
ὀξὺ γὰρ βοῆς ἀκοῦσαν Ἄργος ἐξεγείρεται.
Μενέλεων δ᾽ οὐ τάρβος ἡμῖν ἀναλαβεῖν εἴσω ξίφους·
ἀλλ᾽ ἴτω ξανθοῖς ἐπ᾽ ὤμων βοστρύχοις γαυρούμενος·
εἰ γὰρ Ἀργείους ἐπάξει τοῖσδε δώμασιν λαβών,
τὸν Ἑλένης φόνον διώκων, κἀμὲ μὴ σώζειν θέλῃ
ξύγγονόν τ᾽ ἐμὴν Πυλάδην τε τὸν τάδε ξυνδρῶντά μοι,
παρθένον τε καὶ δάμαρτα δύο νεκρὼ κατόψεται.
ΧΟ. ἰὼ ἰὼ τύχα, ἀντ.

ἕτερον εἰς ἀγῶν᾽, ἕτερον αὖ δόμος
φοβερὸν ἀμφὶ τοὺς Ἀτρείδας πίτνει.
ΗΜΙΧ. τί δρῶμεν; ἀγγέλλωμεν εἰς πόλιν τάδε;
ἢ σῖγ᾽ ἔχωμεν; ΗΜΙΧ. ἀσφαλέστερον, φίλαι.
ΗΜΙΧ. ἴδε πρὸ δωμάτων ἴδε προκηρύσσει
θοάζων ὅδ᾽ αἰθέρος ἄνω καπνός.
ΗΜΙΧ. ἅπτουσι πεύκας ὡς πυρώσοντες δόμους
τοὺς Ταντάλειους, οὐδ᾽ ἀφίστανται φόνου.
ΧΟ. τέλος ἔχει δαίμων βροτοῖς,
τέλος ὅπα θέλει.
μεγάλα δέ τις ἁ δύναμις· δι᾽ ἀλάστορ᾽
ἔπεσ᾽ ἔπεσε μέλαθρα τάδε δι᾽ αἱμάτων
διὰ τὸ Μυρτίλου πέσημ᾽ ἐκ δίφρου.
ἀλλὰ μὴν καὶ τόνδε λεύσσω Μενέλεων δόμων πέλας
ὀξύπουν, ᾐσθημένον που τὴν τύχην ἣ νῦν πάρα.
οὐκέτ᾽ ἂν φθάνοιτε κλῇθρα συμπεραίνοντες μοχλοῖς,
ὦ κατὰ στέγας Ἀτρεῖδαι. δεινὸν εὐτυχῶν ἀνὴρ
πρὸς κακῶς πράσσοντας, ὡς σὺ νῦν Ὀρέστα δυστυχεῖς.
ΜΕ. ἥκω κλύων τὰ δεινὰ καὶ δραστήρια
δισσοῖν λεόντοιν· οὐ γὰρ ἄνδρ᾽ αὐτὼ καλῶ.
ἤκουσα γὰρ δὴ τὴν ἐμὴν ξυνάορον
ὡς οὐ τέθνηκεν, ἀλλ᾽ ἄφαντος οἴχεται,
κενὴν ἀκούσας βάξιν, ἣν φόβῳ σφαλεὶς
ἤγγειλέ μοί τις. ἀλλὰ τοῦ μητροκτόνου
τεχνάσματ᾽ ἐστὶ ταῦτα καὶ πολὺς γέλως.
ἀνοιγέτω τις δῶμα· προσπόλοις λέγω
ὠθεῖν πύλας τάσδ᾽, ὡς ἂν ἀλλὰ παῖδ᾽ ἐμὴν
ῥυσώμεθ᾽ ἀνδρῶν ἐκ χερῶν μιαιφόνων
καὶ τὴν τάλαιναν ἀθλίαν δάμαρτ᾽ ἐμὴν

λάβωμεν, ᾗ δεῖ ξυνθανεῖν ἐμῇ χερὶ
τοὺς διολέσαντας τὴν ἐμὴν ξυνάορον.
ΟΡ. οὗτος σύ, κλείθρων τῶνδε μὴ ψαύσῃς χερί,
Μενέλαον εἶπον, ὃς πεπύργωσαι θράσει·
ἢ τῷδε θριγκῷ κρᾶτα συνθραύσω σέθεν,
ῥήξας παλαιὰ γεῖσα τεκτόνων πόνον.
μοχλοῖς δ᾽ ἄραρε κλεῖθρα, σῆς βοηδρόμου
σπουδῆς ἅ σ᾽ εἴρξει, μὴ δόμων εἴσω περᾶν.
ΜΕ. ἔα, τί χρῆμα; λαμπάδων ὁρῶ σέλας,
δόμων δ᾽ ἐπ᾽ ἄκρων τούσδε πυργηρουμένους,
ξίφος δ᾽ ἐμῆς θυγατρὸς ἐπίφρουρον δέρῃ.
ΟΡ. πότερον ἐρωτᾶν ἢ κλύειν ἐμοῦ θέλεις;
ΜΕ. οὐδέτερ᾽· ἀνάγκη δ᾽, ὡς ἔοικε, σοῦ κλύειν.
ΟΡ. μέλλω κτανεῖν σου θυγατέρ᾽, εἰ βούλει μαθεῖν.
ΜΕ. Ἑλένην φονεύσας ἐπὶ φόνῳ πράσσεις φόνον;
ΟΡ. εἰ γὰρ κατέσχον μὴ θεῶν κλεφθεὶς ὕπο.
ΜΕ. ἀρνεῖ κατακτὰς κἀφ᾽ ὕβρει λέγεις τάδε;
ΟΡ. λυπράν γε τὴν ἄρνησιν· εἰ γὰρ ὤφελον
ΜΕ. τί χρῆμα δρᾶσαι; παρακαλεῖς γὰρ εἰς φόβον.
ΟΡ. τὴν Ἑλλάδος μιάστορ᾽ εἰς Ἅιδου βαλεῖν.
ΜΕ. ἀπόδος δάμαρτος νέκυν, ὅπως χώσω τάφῳ.
ΟΡ. θεοὺς ἀπαίτει· παῖδα δὲ κτενῶ σέθεν.
ΜΕ. ὁ μητροφόντης ἐπὶ φόνῳ πράσσει φόνον.
ΟΡ. ὁ πατρὸς ἀμύντωρ, ὃν σὺ προὔδωκας θανεῖν.
ΜΕ. οὐκ ἤρκεσέν σοι τὸ παρὸν αἷμα μητέρος;
ΟΡ. οὐκ ἂν κάμοιμι τὰς κακὰς κτείνων ἀεί.
ΜΕ. ἦ καὶ σὺ Πυλάδη τοῦδε κοινωνεῖς φόνου;
ΟΡ. φησὶν σιωπῶν· ἀρκέσω δ᾽ ἐγὼ λέγων.
ΜΕ. ἀλλ᾽ οὔτι χαίρων, ἤν γε μὴ φύγῃς πτεροῖς.
ΟΡ. οὐ φευξόμεσθα· πυρὶ δ᾽ ἀνάψομεν δόμους.
ΜΕ. ἦ γὰρ πατρῷον δῶμα πορθήσεις τόδε;
ΟΡ. ὡς μή γ᾽ ἔχῃς σύ, τήνδ᾽ ἐπισφάξας πυρί.

ΜΕ. κτεῖν'· ὡς κτανών γε τῶνδέ μοι δώσεις δίκην.
ΟΡ. ἔσται τάδ'. ΜΕ. ἆ ἆ, μηδαμῶς δράσῃς τάδε.
ΟΡ. σίγα νυν, ἀνέχου δ' ἐνδίκως πράσσων κακῶς.
ΜΕ. ἦ γὰρ δίκαιον ζῆν σε; ΟΡ. καὶ κρατεῖν γε γῆς.
ΜΕ. ποίας; ΟΡ. ἐν Ἄργει τῷδε τῷ Πελασγικῷ.
ΜΕ. εὖ γοῦν θίγοις ἂν χερνίβων ΟΡ. τί δὴ γὰρ οὔ;
ΜΕ. καὶ σφάγια πρὸ δορὸς καταβάλοις. ΟΡ. σὺ δ' ἂν καλῶς;
ΜΕ. ἁγνὸς γάρ εἰμι χεῖρας. ΟΡ. ἀλλ' οὐ τὰς φρένας.
ΜΕ. τίς δ' ἂν προσείποι σ'; ΟΡ. ὅστις ἐστὶ φιλοπάτωρ.
ΜΕ. ὅστις δὲ τιμᾷ μητέρ'; ΟΡ. εὐδαίμων ἔφυ.
ΜΕ. οὔκουν σύ γ'. ΟΡ. οὐ γὰρ ἁνδάνουσιν αἱ κακαί.
ΜΕ. ἄπαιρε θυγατρὸς φάσγανον. ΟΡ. ψευδὴς ἔφυς.
ΜΕ. ἀλλὰ κτενεῖς μου θυγατέρ'; ΟΡ. οὐ ψευδὴς ἔτ' εἶ.
ΜΕ. οἴμοι, τί δράσω; ΟΡ. πεῖθ' ἐς Ἀργείους μολὼν
ΜΕ. πειθὼ τίν'; ΟΡ. ἡμᾶς μὴ θανεῖν αἰτοῦ πόλιν.
ΜΕ. ἢ παῖδά μου φονεύσεθ'; ΟΡ. ὧδ' ἔχει τάδε.
ΜΕ. ὦ τλῆμον Ἑλένη, ΟΡ. τἀμὰ δ' οὐχὶ τλήμονα;
ΜΕ. σοὶ σφάγιον ἐκόμισ' ἐκ Φρυγῶν, ΟΡ. εἰ γὰρ τόδ' ἦν.
ΜΕ. πόνους πονήσας μυρίους. ΟΡ. πλὴν εἰς ἐμέ.
ΜΕ. πέπονθα δεινά. ΟΡ. τότε γὰρ ἦσθ' ἀνωφελής.
ΜΕ. ἔχεις με. ΟΡ. σαυτὸν σύ γ' ἔλαβες κακὸς γεγώς.
ἀλλ' εἶ', ὕφαπτε δώματ', Ἠλέκτρα, τάδε·
σύ τ', ὦ φίλων μοι τῶν ἐμῶν σαφέστατε,
Πυλάδη, κάταιθε γεῖσα τειχέων τάδε.
ΜΕ. ὦ γαῖα Δαναῶν ἱππίου τ' Ἄργους κτίται,
οὐκ εἶ' ἐνόπλῳ ποδὶ βοηδρομήσετε;
πᾶσαν γὰρ ὑμῶν ὅδε βιάζεται πόλιν
ζῆν, αἷμα μητρὸς μυσαρὸν ἐξειργασμένος.

ΑΠ. Μενέλαε, παῦσαι λῆμ᾽ ἔχων τεθηγμένον,
Φοῖβός σ᾽ ὁ Λητοῦς παῖς ὅδ᾽ ἐγγὺς ὢν καλῶ,
σύ θ᾽ ὃς ξιφήρης τῇδ᾽ ἐφεδρεύεις κόρῃ
Ὀρέσθ᾽, ἵν᾽ εἰδῇς οὓς φέρων ἥκω λόγους·
Ἑλένην μὲν ἣν σὺ διολέσαι πρόθυμος ὢν
ἥμαρτες, ὀργὴν Μενέλεῳ ποιούμενος,
[ἥδ᾽ ἐστίν, ἣν ὁρᾶτ᾽ ἐν αἰθέρος πτυχαῖς,]
σεσωσμένη τε κοὐ θανοῦσα πρὸς σέθεν.
ἐγώ νιν ἐξέσωσα κἀπὸ φασγάνου
τοῦ σοῦ κελευσθεὶς ἥρπασ᾽ ἐκ Διὸς πατρός.
Ζηνὸς γὰρ οὖσαν ζῆν νιν ἄφθιτον χρεών,
Κάστορί τε Πολυδεύκει τ᾽ ἐν αἰθέρος πτυχαῖς
ξύνθακος ἔσται, ναυτίλοις σωτήριος.
ἄλλην δὲ νύμφην εἰς δόμους κτῆσαι λαβών,
ἐπεὶ θεοὶ τῷ τῆσδε καλλιστεύματι
Ἕλληνας εἰς ἓν καὶ Φρύγας ξυνήγαγον,
θανάτους τ᾽ ἔθηκαν, ὡς ἀπαντλοῖεν χθονὸς
ὕβρισμα θνητῶν ἀφθόνου πληρώματος.
τὰ μὲν καθ᾽ Ἑλένην ὧδ᾽ ἔχει· σὲ δ᾽ αὖ χρεών,
Ὀρέστα, γαίας τῆσδ᾽ ὑπερβαλόνθ᾽ ὅρους
Παρράσιον οἰκεῖν δάπεδον ἐνιαυτοῦ κύκλον.
κεκλήσεται δὲ σῆς φυγῆς ἐπώνυμον
Ἀζᾶσιν Ἀρκάσιν τ᾽ Ὀρέστειον καλεῖν.
ἐνθένδε δ᾽ ἐλθὼν τὴν Ἀθηναίων πόλιν
δίκην ὑπόσχες αἵματος μητροκτόνου
Εὐμενίσι τρισσαῖς· θεοὶ δέ σοι δίκης βραβῆς
πάγοισιν ἐν Ἀρείοισιν εὐσεβεστάτην
ψῆφον διοίσουσ᾽, ἔνθα νικῆσαί σε χρή.
ἐφ᾽ ἧς δ᾽ ἔχεις, Ὀρέστα, φάσγανον δέρῃ,
γῆμαι πέπρωταί σ᾽ Ἑρμιόνην· ὃς δ᾽ οἴεται
Νεοπτόλεμος γαμεῖν νιν, οὐ γαμεῖ ποτε.
θανεῖν γὰρ αὐτῷ μοῖρα Δελφικῷ ξίφει,

δίκας Ἀχιλλέως πατρὸς ἐξαιτοῦντί με.
Πυλάδῃ δ' ἀδελφῆς λέκτρον, ὥς ποτ' ᾔνεσας,
δός· ὁ δ' ἐπιὼν νιν βίοτος εὐδαίμων μένει.
Ἄργους δ' Ὀρέστην, Μενέλεως, ἔα κρατεῖν,
ἐλθὼν δ' ἄνασσε Σπαρτιάτιδος χθονός,
φερνὰς ἔχων δάμαρτος, ἥ σε μυρίοις
πόνοις διδοῦσα δεῦρ' ἀεὶ διήνυσε.
τὰ πρὸς πόλιν δὲ τῷδ' ἐγὼ θήσω καλῶς,
ὅς νιν φονεῦσαι μητέρ' ἐξηνάγκασα.
ΟΡ. ὦ Λοξία μαντεῖε σῶν θεσπισμάτων·
οὐ ψευδόμαντις ἦσθ' ἄρ', ἀλλ' ἐτήτυμος.
καίτοι μ' ἐσῄει δεῖμα μή τινος κλύων
ἀλαστόρων δόξαιμι σὴν κλύειν ὄπα.
ἀλλ' εὖ τελεῖται, πείσομαι δὲ σοῖς λόγοις.
ἰδοὺ μεθίημ' Ἑρμιόνην ἀπὸ σφαγῆς,
καὶ λέκτρ' ἐπῄνεσ', ἡνίκ' ἂν διδῷ πατήρ.
ΜΕ. ὦ Ζηνὸς Ἑλένη χαῖρε παῖ· ζηλῶ δέ σε
θεῶν κατοικήσασαν ὄλβιον δόμον.
Ὀρέστα, σοὶ δὲ παῖδ' ἐγὼ κατεγγυῶ,
Φοίβου λέγοντος· εὐγενὴς δ' ἀπ' εὐγενοῦς
γήμας ὄναιο καὶ σὺ χὠ διδοὺς ἐγώ.
ΑΠ. χωρεῖτέ νυν ἕκαστος οἷ προστάσσομεν,
νείκους τε διαλύεσθε. ΜΕ. πείθεσθαι χρεών.
ΟΡ. κἀγὼ τοιοῦτος· σπένδομαι δὲ συμφοραῖς,
Μενέλαε, καὶ σοῖς Λοξία θεσπίσμασιν.
ΑΠ. ἴτε νυν καθ' ὁδόν, τὴν καλλίστην
θεῶν Εἰρήνην τιμῶντες· ἐγὼ δ'
Ἑλένην Δίοις μελάθροις πελάσω,
λαμπρῶν ἄστρων πόλον ἐξανύσας,
ἔνθα παρ' Ἥρᾳ τῇ θ' Ἡρακλέους
Ἥβῃ πάρεδρος θεὸς ἀνθρώποις
ἔσται σπονδαῖς ἔντιμος ἀεί,

σὺν Τυνδαρίδαις τοῖς Διὸς υἱοῖς,
ναύταις μεδέουσα θαλάσσης.

ΧΟ. *ὦ μέγα σεμνὴ Νίκη, τὸν ἐμὸν*
βίοτον κατέχοις
καὶ μὴ λήγοις στεφανοῦσα.

ΡΗΣΟΣ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΧΟΡΟΣ ΦΥΛΑΚΩΝ ΤΡΩΙΚΩΝ.
ΕΚΤΩΡ.
ΑΙΝΕΙΑΣ.
ΔΟΛΩΝ.
ΑΓΓΕΛΟΣ.
ΡΗΣΟΣ.
ΟΔΥΣΣΕΥΣ.
ΔΙΟΜΗΔΗΣ.
ΑΘΗΝΑ.
ΠΑΡΙΣ.
ΡΗΣΟΥ ΗΝΙΟΧΟΣ.
ΜΟΥΣΑ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ ΡΗΣΟΥ.

Ἕκτωρ τοῖς Ἕλλησιν ἐπικοιτῶν ἀκούσας αὐτοὺς πυρκαίειν, εὐλαβήθη μὴ φύγωσιν. ἐξοπλίζειν δὲ διεγνωκὼς τὰς δυνάμεις μετενόησεν Αἰνείου συμβουλεύσαντος ἡσυχάζειν, κατάσκοπον δὲ πέμψαντας δι᾽ ἐκείνου τὴν ἀλήθειαν ἱστορῆσαι. Δόλωνα δὲ πρὸς τὴν χρείαν ὑπακούσαντα ἐκπέμπεσθαι [καὶ] τόπον εἰς τὴν παρεμβολὴν ἀφώρισεν αὐτῷ. ἐπιφανέντες δὲ οἱ περὶ τὸν Ὀδυσσέα, καὶ Δόλωνα μὲν ἀνηρηκότες, ἐπὶ δὲ τὴν Ἕκτορος κοίτην ἐλθόντες πάλιν ὑπέστρεφον οὐχ εὑρόντες τὸν στρατηγόν. οὓς Ἀθηνᾶ ἐπιφανεῖσα κατέσχεν. καὶ τὸν μὲν Ἕκτορα ἐκέλευσε μὴ ζητεῖν, Ῥῆσον δὲ ἀναιρεῖν ἐπέταξε· τὸν γὰρ ἐκ τούτου κίνδυνον μείζονα ἔσεσθαι τοῖς Ἕλλησιν, ἐὰν βιώσῃ. τούτων δὲ ἐπιφανεὶς Ἀλέξανδρος . . . .
πολέμου παρουσίαν. ἐξαπατηθεὶς δὲ ὑπὸ Ἀθηνᾶς, ὡς δῆθεν ὑπὸ Ἀφροδίτης, ἄπρακτος ὑπέστρεψεν· οἱ δὲ περὶ Διομήδην φονεύσαντες Ῥῆσον ἐχωρίσθησαν. καὶ ἡ συμφορὰ τῶν ἀνηρημένων καθ᾽ ὅλον ἦλθε τὸ στράτευμα. παραγενομένου δὲ Ἕκτορος ἵνα αὐτὸς περιγίνηται τῶν πεπραγμένων, τετρωμένος ὁ τοῦ Ῥήσου ἐπιμελητὴς δι᾽ αὐτοῦ . . . . Ἕκτορος φόνον γεγενῆσθαι. τοῦ

δὲ Ἕκτορος ἀπολογουμένου τὴν ἀλήθειαν αὐτοῖς ἐμήνυσεν ἡ τοῦ Ῥήσου μήτηρ ἡ Μοῦσα νεκρὸν κομίζειν τὸ σῶμα, κἀποδυρομένη δὲ καὶ τὸν ἐπιπλακέντα αὐτῇ Στρυμόνα διὰ τὸ τοῦ παιδὸς πένθος· καὶ τὸν ἐξ ἐκείνου γεγενημένον Ῥῆσον οὐδ' Ἀχιλλεῖ φησιν ἀδάκρυτον ἔσεσθαι, τῶν κοινῶν φανερῷ θανάτῳ τὴν ἰδίαν παραμυθουμένη λύπην.

Τοῦτο τὸ δρᾶμα ἔνιοι νόθον ὑπενόησαν, Εὐριπίδου δὲ μὴ εἶναι· τὸν γὰρ Σοφόκλειον μᾶλλον ὑποφαίνειν χαρακτῆρα. ἐν μέντοι ταῖς διδασκαλίαις ὡς γνήσιον ἀναγέγραπται, καὶ ἡ περὶ τὰ μετάρσια δὲ ἐν αὐτῷ πολυπραγμοσύνη τὸν Εὐριπίδην ὁμολογεῖ.

Πρόλογοι δὲ διττοὶ φέρονται. ὁ γοῦν Δικαίαρχος ἐκτιθεὶς τὴν ὑπόθεσιν τοῦ Ῥήσου γράφει κατὰ λέξιν οὕτως·

Νῦν εὐσέληνον φέγγος ἡ διφρήλατος.

ἐν ἐνίοις δὲ τῶν ἀντιγράφων ἕτερός τις φέρεται πρόλογος, πεζὸς πάνυ καὶ οὐ πρέπων Εὐριπίδῃ· καὶ τάχα ἄν τινες τῶν ὑποκριτῶν διεσκευακότες εἶεν αὐτόν. ἔχει δὲ οὕτως·

Ὦ τοῦ μεγίστου Ζηνὸς ἄλκιμον τέκος
Παλλάς, παρῶμεν· οὐκ ἐχρῆν ἡμᾶς ἔτι
μέλλειν Ἀχαιῶν ὠφελεῖν στρατεύματα.
νῦν γὰρ κακῶς πράσσουσιν ἐν μάχῃ δορός,
λόγχῃ βιαίως Ἕκτορος στροβούμενοι.
ἐμοὶ γὰρ οὐδέν ἐστιν ἄλγιον βάρος,
ἐξ οὗ γ' ἔκρινε Κύπριν Ἀλέξανδρος θεὰν
κάλλει προήκειν τῆς ἐμῆς εὐμορφίας
καὶ σῆς, Ἀθάνα, φιλτάτης ἐμοὶ θεῶν,
εἰ μὴ κατασκαφεῖσαν ὄψομαι πόλιν
Πριάμου βίᾳ πρόρριζον ἐκτετριμμένην.

ΑΡΙΣΤΟΦΑΝΟΥΣ ΥΠΟΘΕΣΙΣ.

Ῥῆσος μὲν ἦν Στρυμόνος τοῦ ποταμοῦ καὶ Τερψιχόρης Μουσῶν μιᾶς παῖς, Θρᾳκῶν δὲ ἡγούμενος εἰς Ἴλιον παραγίνεται νυκτός, στρατευομένων Τρώων παρὰ ταῖς ναυσὶ τῶν Ἑλλήνων. τοῦτον Ὀδυσσεὺς καὶ Διομήδης κατάσκοποι ὄντες ἀναιροῦσιν, Ἀθηνᾶς αὐτοῖς ὑποθεμένης· μέγαν γὰρ ἔσεσθαι τοῖς Ἕλλησι κίνδυνον ἐκ τούτου. Τερψιχόρη δὲ ἐπιφανεῖσα τὸ τοῦ παιδὸς σῶμα ἀνείλετο. [ὡς ἐν παρόδῳ δὲ διαλαμβάνει καὶ περὶ τοῦ φόνου τοῦ Δόλωνος.]

Ἡ σκηνὴ τοῦ δράματος ἐν Τροίᾳ. ὁ χορὸς συνέστηκεν ἐκ φυλάκων Τρωικῶν, οἳ καὶ προλογίζουσι. περιέχει δὲ τὴν νυκτεγερσίαν.

ΕΥΡΙΠΙΔΟΥ

Ρ Η Σ Ο Σ.

ΧΟ. Βᾶθι πρὸς εὐνὰς
τὰς Ἑκτορέους τις ὑπασπιστῶν
ἄγρυπνος βασιλέως ἢ τευχοφόρων,
δέξαιτο νέων κληδόνα μύθων,
οἳ τετράμοιρον νυκτὸς φυλακὴν
πάσης στρατιᾶς προκάθηνται.
ὄρθου κεφαλὴν πῆχυν ἐρείσας,
λῦσον βλεφάρων γοργωπὸν ἕδραν,
λεῖπε χαμεύνας φυλλοστρώτους,
Ἕκτορ· καιρὸς γὰρ ἀκοῦσαι.
ΕΚ. τίς ὅδ'; ἦ φίλιος φθόγγος; τίς ἀνήρ;
τί τὸ σῆμα θρόει·
τίνες ἐκ νυκτῶν τὰς ἁμετέρας
κοίτας πλάθουσ' ἐνέπειν χρή.
ΧΟ. φύλακες στρατιᾶς. ΕΚ. τί φέρει θορύβῳ;
ΧΟ. θάρσει. ΕΚ. θαρσῶ.
μῶν τις λόχος ἐκ νυκτῶν; ΧΟ. οὐκέτι.
ΕΚ. τί σὺ γὰρ φυλακὰς προλιπὼν κινεῖς
στρατιάν; τίν' ἔχων νυκτηγορίαν;
οὐκ οἶσθα δορὸς πέλας Ἀργείου
νυχίαν ἡμᾶς
κοίταν πανόπλους κατέχοντας;

ΧΟ. ὁπλίζου χέρα, συμμάχων, στρ.
῞Εκτορ, βᾶθι πρὸς εὐνάς,
ὄτρυνον ἔγχος ἀείρειν, ἀφύπνισον,
πέμπε φίλους ἰέναι ποτὶ σὸν λόχον,
ἁρμόσατε ψαλίοις ἵππους.
τίς εἶσ' ἐπὶ Πανθοΐδαν,
ἢ τὸν Εὐρώπας, Λυκίων ἀγὸν ἀνδρῶν;
ποῦ σφαγίων ἔφοροι;
ποῦ δὲ γυμνήτων μόναρχοι;
τοξοφόροι δὲ Φρυγῶν
ζεύγνυτε κερόδετα τόξα νευραῖς.
ΕΚ. τὰ μὲν ἀγγέλλεις δείματ' ἀκούειν,
τὰ δὲ θαρσύνεις, κοὐδὲν καθαρῶς·
ἀλλ' ἢ Κρονίου Πανὸς τρομερᾷ
μάστιγι φοβεῖ; [φυλακὰς δὲ λιπὼν
κινεῖς στρατιάν·] τί θροεῖς; τί σε φῶ
νέον ἀγγέλλειν; πολλὰ γὰρ εἰπὼν
οὐδὲν τρανῶς ἀπέδειξας.
ΧΟ. πύρ' αἴθει στρατὸς Ἀργόλας, ἀντ.
῞Εκτορ, πᾶσαν ἀν' ὄρφναν,
διιπετῆ δὲ νεῶν πυρσοῖς σταθμά.
πᾶς δ' Ἀγαμεμνονίαν προσέβα στρατὸς
ἐννύχιος θορύβῳ σκηνάν,
νέαν τιν' ἐφιέμενοι
βάξιν. οὐ γάρ πω πάρος ὧδ' ἐφοβήθη
ναυσιπόρος στρατιά.
σοὶ δ', ὑποπτεύων τὸ μέλλον,
ἤλυθον ἄγγελος, ὡς
μήποτέ τιν' ἐς ἐμὲ μέμψιν εἴπῃς.
ΕΚ. εἰς καιρὸν ἦλθες, καίπερ ἀγγέλλων φόβον·
ἄνδρες γὰρ ἐκ γῆς τῆσδε νυκτέρῳ πλάτῃ

23 — 33 = 41 — 51

λαθόντες ὄμμα τοὐμὸν αἴρεσθαι φυγὴν
μέλλουσι· σαίνει μ' ἔννυχος φρυκτωρία.
ὦ δαῖμον, ὅστις μ' εὐτυχοῦντ' ἐνόσφισας
θοίνης λέοντα, πρὶν τὸν Ἀργείων στρατὸν
σύρδην ἅπαντα τῷδ' ἀναλῶσαι δορί.
εἰ γὰρ φαεννοὶ μὴ ξυνέσχον ἡλίου
λαμπτῆρες, οὐκ ἂν ἔσχον εὐτυχοῦν δόρυ,
πρὶν ναῦς πυρῶσαι καὶ διὰ σκηνῶν μολεῖν
κτείνων Ἀχαιοὺς τῇδε πολυφόνῳ χερί.
κἀγὼ μὲν ἦν πρόθυμος ἱέναι δόρυ
ἐν νυκτὶ χρῆσθαί τ' εὐτυχεῖ ῥύμῃ θεοῦ·
ἀλλ' οἱ σοφοί με καὶ τὸ θεῖον εἰδότες
μάντεις ἔπεισαν ἡμέρας μεῖναι φάος,
κἄπειτ' Ἀχαιῶν μηδέν' ἐν χέρσῳ λιπεῖν.
οἱ δ' οὐ μένουσι τῶν ἐμῶν θυοσκόων
βουλάς· ἐν ὄρφνῃ δραπέτης μέγα σθένει.
ἀλλ' ὡς τάχιστα χρὴ παραγγέλλειν στρατῷ
τεύχη πρόχειρα λαμβάνειν λῆξαί θ' ὕπνου,
ὡς ἄν τις αὐτῶν καὶ νεὼς θρῴσκων ἔπι
νῶτον χαραχθεὶς κλίμακας ῥάνῃ φόνῳ,
οἱ δ' ἐν βρόχοισι δέσμιοι λελημμένοι
Φρυγῶν ἀρούρας ἐκμάθωσι γαπονεῖν.

ΧΟ. Ἕκτορ, ταχύνεις πρὶν μαθεῖν τὸ δρώμενον·
ἄνδρες γὰρ εἰ φεύγουσιν οὐκ ἴσμεν τορῶς.
ΕΚ. τίς γὰρ πυρ' αἴθειν πρόφασις Ἀργείων στρατόν;
ΧΟ. οὐκ οἶδ'· ὕποπτον δ' ἐστὶ κάρτ' ἐμῇ φρενί.
ΕΚ. πάντ' ἂν φοβηθεὶς ἴσθι, δειμαίνων τόδε.
ΧΟ. οὔπω πρὶν ἧψαν πολέμιοι τοσόνδε φῶς.
ΕΚ. οὐδ' ὧδέ γ' αἰσχρῶς ἔπεσον ἐν τροπῇ δορός.
ΧΟ. σὺ ταῦτ' ἔπραξας· καὶ τὰ λοιπὰ νῦν σκόπει.
ΕΚ. ἁπλοῦς ἐπ' ἐχθροῖς μῦθος ὁπλίζειν χέρα.

ΧΟ. καὶ μὴν ὅδ᾽ Αἰνέας καὶ μάλα σπουδῇ ποδὸς
στείχει, νέον τι πρᾶγμ᾽ ἔχων φίλοις φράσαι.
ΑΙ. Ἕκτορ, τί χρῆμα νύκτεροι κατὰ στρατὸν
τὰς σὰς πρὸς εὐνὰς φύλακες ἐλθόντες φόβῳ
νυκτηγοροῦσι καὶ κεκίνηται στρατός;
ΕΚ. Αἰνέα, πυκάζου τεύχεσιν δέμας σέθεν.
ΑΙ. τί δ᾽ ἔστι; μῶν τις πολεμίων ἀγγέλλεται
δόλος κρυφαῖος ἑστάναι κατ᾽ εὐφρόνην;
ΕΚ. φεύγουσιν ἄνδρες κἀπιβαίνουσιν νεῶν.
ΑΙ. τί τῶνδ᾽ ἂν εἴποις ἀσφαλὲς τεκμήριον;
ΕΚ. αἴθουσι πᾶσαν νύκτα λαμπάδας πυρός·
κἀμοὶ δοκοῦσιν οὐ μενεῖν ἐς αὔριον,
ἀλλ᾽ ἐκκέαντες πύρσ᾽ ἐπ᾽ εὐσέλμων νεῶν
φυγῇ πρὸς οἴκους τῆσδ᾽ ἀφορμήσειν χθονός.
ΑΙ. σὺ δ᾽ ὡς τί δράσων πρὸς τάδ᾽ ὁπλίζει χέρα;
ΕΚ. φεύγοντας αὐτοὺς κἀπιθρῴσκοντας νεῶν
λόγχῃ καθέξω κἀπικείσομαι βαρύς·
αἰσχρὸν γὰρ ἡμῖν καὶ πρὸς αἰσχύνῃ κακὸν
θεοῦ διδόντος πολεμίους ἄνευ μάχης
φεύγειν ἐᾶσαι πολλὰ δράσαντας κακά.
ΑΙ. εἴθ᾽ ἦσθ᾽ ἀνὴρ εὔβουλος, ὡς δρᾶσαι χερί.
ἀλλ᾽ οὐ γὰρ αὐτὸς πάντ᾽ ἐπίστασθαι βροτῶν
πέφυκεν· ἄλλῳ δ᾽ ἄλλο πρόσκειται γέρας,
σὲ μὲν μάχεσθαι, τοὺς δὲ βουλεύειν καλῶς.
ὅστις πυρὸς λαμπτῆρας ἐξήρθης κλύων
φεύγειν Ἀχαιούς, καὶ στρατὸν μέλλεις ἄγειν
τάφρους ὑπερβὰς νυκτὸς ἐν καταστάσει.
καίτοι περάσας κοῖλον αὐλώνων βάθος,
εἰ μὴ κυρήσεις πολεμίους ἀπὸ χθονὸς
φεύγοντας, ἀλλὰ σὸν βλέποντας εἰς δόρυ,
νικώμενος μὲν τήνδε μὴ οὐ μόλῃς πόλιν·
πῶς γὰρ περάσεις σκόλοπας ἐν τροπῇ δορός;

πῶς δ᾽ αὖ γεφύρας διαβαλοῦσ᾽ ἱππηλάται,
ἢν ἄρα μὴ θραύσαντες ἀντύγων χνόας;
νικῶν δ᾽ ἔφεδρον παῖδ᾽ ἔχεις τὸν Πηλέως,
ὅς σ᾽ οὐκ ἐάσει ναυσὶν ἐμβαλεῖν φλόγα
οὐδ᾽ ὧδ᾽ Ἀχαιοὺς ὡς δοκεῖς ἀναρπάσαι.
αἴθων γὰρ ἁνὴρ καὶ πεπύργωται θράσει.
ἀλλὰ στρατὸν μὲν ἥσυχον παρ᾽ ἀσπίδας
εὕδειν ἐῶμεν ἐκ κόπων ἀρειφάτων,
κατάσκοπον δὲ πολεμίων, ὃς ἂν θέλῃ,
πέμπειν δοκεῖ μοι· κἂν μὲν αἴρωνται φυγήν,
στείχοντες ἐμπέσωμεν Ἀργείων στρατῷ·
εἰ δ᾽ εἰς δόλον τιν᾽ ἥδ᾽ ἄγει φρυκτωρία,
μαθόντες ἐχθρῶν μηχανὰς κατασκόπου
βουλευσόμεσθα· τήνδ᾽ ἔχω γνώμην ἐγώ.

ΧΟ. τάδε δοκεῖ, τάδε μεταθέμενος νόει. στρ.
σφαλερὰ δ᾽ οὐ φιλῶ στρατηγῶν κράτη.
τί γὰρ ἄμεινον ἢ
ταχυβάταν νεῶν κατόπταν μολεῖν
πέλας ὅ τί ποτ᾽ ἄρα δαΐοις
πυρὰ κατ᾽ ἀντίπρῳρα ναυστάθμων δαίεται.

ΕΚ. νικᾶτ᾽, ἐπειδὴ πᾶσιν ἁνδάνει τάδε.
στείχων δὲ κόσμει συμμάχους· τάχ᾽ ἂν στρατὸς
κινοῖτ᾽ ἀκούσας νυκτέρους ἐκκλησίας.
ἐγὼ δὲ πέμψω πολεμίων κατάσκοπον.
κἂν μέν τιν᾽ ἐχθρῶν μηχανὴν πυθώμεθα,
σὺ πάντ᾽ ἀκούσει καὶ παρὼν εἴσει λόγους·
ἐὰν δ᾽ ἀπαίρωσ᾽ εἰς φυγὴν ὁρμώμενοι,
σάλπιγγος αὐδὴν προσδοκῶν καραδόκει,
ὡς οὐ μενοῦντά μ᾽· ἀλλὰ προσμίξω νεῶν
ὁλκοῖσι νυκτὸς τῆσδ᾽ ἐπ᾽ Ἀργείων στρατῷ.

131—136 = 195—200

ΑΙ. πέμφ᾽ ὡς τάχιστα· νῦν γὰρ ἀσφαλῶς φρονεῖς.
σὺν σοὶ δ᾽ ἔμ᾽ ὄψει καρτεροῦνθ᾽, ὅταν δέῃ.
ΕΚ. τίς δῆτα Τρώων οἳ πάρεισιν ἐν λόγῳ
θέλει κατόπτης ναῦς ἐπ᾽ Ἀργείων μολεῖν;
τίς ἂν γένοιτο τῆσδε γῆς εὐεργέτης;
τίς φησιν; οὔτοι πάντ᾽ ἐγὼ δυνήσομαι
πόλει πατρῴᾳ συμμάχοις θ᾽ ὑπηρετεῖν.
ΔΟ. ἐγὼ πρὸ γαίας τόνδε κίνδυνον θέλω
ῥίψας κατόπτης ναῦς ἐπ᾽ Ἀργείων μολεῖν,
καὶ πάντ᾽ Ἀχαιῶν ἐκμαθὼν βουλεύματα
ἥξω· ᾽πὶ τούτοις τόνδ᾽ ὑφίσταμαι πόνον.
ΕΚ. ἐπώνυμος μὲν κάρτα καὶ φιλόπτολις
Δόλων· πατρὸς δὲ καὶ πρὶν εὐκλεᾶ δόμον
νῦν δὶς τόσῳ τέθεικας εὐκλεέστερον.
ΔΟ. οὐκοῦν πονεῖν μὲν χρή, πονοῦντα δ᾽ ἄξιον
μισθὸν φέρεσθαι. παντὶ γὰρ προκείμενον
κέρδος πρὸς ἔργῳ τὴν χάριν τίκτει διπλῆν.
ΕΚ. ναί, καὶ δίκαια ταῦτα κοὐκ ἄλλως λέγω.
τάξαι δὲ μισθὸν πλὴν ἐμὴν τυραννίδα.
ΔΟ. οὐ σῆς ἐρῶμεν πολιόχου τυραννίδος.
ΕΚ. σὺ δ᾽ ἀλλὰ γήμας Πριαμιδῶν γαμβρὸς γενοῦ.
ΔΟ. οὐκ ἐξ ἐμαυτοῦ μειζόνων γαμεῖν θέλω.
ΕΚ. χρυσὸς πάρεστιν, εἰ τόδ᾽ αἰτήσει γέρας.
ΔΟ. ἀλλ᾽ ἔστ᾽ ἐν οἴκοις· οὐ βίου σπανίζομεν.
ΕΚ. τί δῆτα χρῄζεις ὧν κέκευθεν Ἴλιος;
ΔΟ. ἑλὼν Ἀχαιοὺς δῶρά μοι ξυναίνεσον.
ΕΚ. δώσω· σὺ δ᾽ αἴτει πλὴν στρατηλάτας νεῶν.
ΔΟ. κτεῖν᾽, οὔ σ᾽ ἀπαιτῶ Μενέλεω σχέσθαι χέρα.
ΕΚ. οὐ μὴν τὸν Ἰλέως παῖδά μ᾽ ἐξαιτεῖ λαβεῖν;
ΔΟ. κακαὶ γεωργεῖν χεῖρες εὖ τεθραμμέναι.
ΕΚ. τίν᾽ οὖν Ἀχαιῶν ζῶντ᾽ ἀποινᾶσθαι θέλεις;
ΔΟ. καὶ πρόσθεν εἶπον· ἔστι χρυσὸς ἐν δόμοις.

ΕΚ. καὶ μὴν λαφύρων γ' αὐτὸς αἱρήσει παρών.
ΔΟ. θεοῖσιν αὐτὰ πασσάλευε πρὸς δόμους.
ΕΚ. τί δῆτα μεῖζον τῶνδέ μ' αἰτήσει γέρας;
ΔΟ. ἵππους Ἀχιλλέως· χρὴ δ' ἐπ' ἀξίοις πονεῖν
ψυχὴν προβάλλοντ' ἐν κύβοισι δαίμονος.
ΕΚ. καὶ μὴν ἐρῶντί γ' ἀντερᾷς ἵππων ἐμοί·
ἐξ ἀφθίτων γὰρ ἄφθιτοι πεφυκότες
τὸν Πηλέως φέρουσι θούριον γόνον·
δίδωσι δ' αὐτοὺς πωλοδαμνήσας ἄναξ
Πηλεῖ Ποσειδῶν, ὡς λέγουσι, πόντιος.
ἀλλ' οὔ σ' ἐπάρας ψεύσομαι· δώσω δέ σοι
κάλλιστον οἴκοις κτῆμ' Ἀχιλλέως ὄχον.
ΔΟ. αἰνῶ· λαβὼν δέ φημι κάλλιστον Φρυγῶν
δῶρον δέχεσθαι τῆς ἐμῆς εὐσπλαγχνίας.
σὲ δ' οὐ φθονεῖν χρή· μυρί' ἔστιν ἄλλα σοί,
ἐφ' οἷσι τέρψει τῆσδ' ἀριστεύων χθονός.
ΧΟ. μέγας ἀγών, μεγάλα δ' ἐπινοεῖς ἑλεῖν· ἀντ.
μακάριός γε μὴν κυρήσας ἔσει.
πόνος ὅδ' εὐκλεής·
μέγα δὲ κοιράνοισι γαμβρὸν πέλειν.
τὰ θεόθεν ἐπιδέτω Δίκα,
τὰ δὲ παρ' ἀνδράσιν τέλειά σοι φαίνεται.
ΔΟ. στείχοιμ' ἄν· ἐλθὼν ἐς δόμους ἐφέστιος
σκευῇ πρεπόντως σῶμ' ἐμὸν καθάψομαι,
κἀκεῖθεν ἥσω ναῦς ἐπ' Ἀργείων πόδα.
ΧΟ. εἴπ' εἴ τιν' ἄλλην ἀντὶ τῆσδ' ἕξεις στολήν.
ΔΟ. πρέπουσαν ἔργῳ κλωπικοῖς τε βήμασιν.
ΧΟ. σοφοῦ παρ' ἀνδρὸς χρὴ σοφόν τι μανθάνειν·
λέξον, τίς ἔσται τοῦδε σώματος σάγη;
ΔΟ. λύκειον ἀμφὶ νῶτον ἅψομαι δορὰν
καὶ χάσμα θηρὸς ἀμφ' ἐμῷ θήσω κάρᾳ,
βάσιν τε χερσὶ προσθίαν καθαρμόσας

καὶ κῶλα κώλοις, τετράπουν μιμήσομαι
λύκου κέλευθον πολεμίοις δυσεύρετον,
τάφροις πελάζων καὶ νεῶν προβλήμασιν.
ὅταν δ᾽ ἔρημον χῶρον ἐμβαίνω ποδί,
δίβαμος εἶμι· τῇδε σύγκειται δόλος.
ΧΟ. ἀλλ᾽ εὖ σ᾽ ὁ Μαίας παῖς ἐκεῖσε καὶ πάλιν
πέμψειεν Ἑρμῆς, ὅς γε φηλητῶν ἄναξ.
ἔχεις δὲ τοὔργον, εὐτυχεῖν μόνον σε χρή.
ΔΟ. σωθήσομαί τε καὶ κτανὼν Ὀδυσσέως
οἴσω κάρα σοι, σύμβολον δ᾽ ἔχων σαφὲς
φήσεις Δόλωνα ναῦς ἐπ᾽ Ἀργείων μολεῖν,
ἢ παῖδα Τυδέως· οὐδ᾽ ἀναιμάκτῳ χερὶ
ἥξω πρὸς οἴκους πρὶν φάος μολεῖν χθόνα.
ΧΟ. Θυμβραῖε καὶ Δάλιε καὶ Λυκίας στρ.
ναὸν ἐμβατεύων,
Ἄπολλον, ὦ δία κεφαλά, μόλε τοξήρης, ἱκοῦ ἐν-
νύχιος
καὶ γενοῦ σωτήριος ἀνέρι πομπᾶς
ἁγεμὼν καὶ ξύλλαβε Δαρδανίδαις,
ὦ παγκρατές, ὦ Τροΐας
τείχη παλαιὰ δείμας.
μόλοι δὲ ναυκλήρια, καὶ στρατιᾶς ἀντ.
Ἑλλάδος διόπτας
ἵκοιτο, καὶ κάμψειε πάλιν θυμέλας οἴκων πατρὸς
Ἰλιάδας.
Φθιάδων δ᾽ ἵππων ποτ᾽ ἐπ᾽ ἄντυγα βαίη,
δεσπότου πέρσαντος Ἀχαιὸν Ἄρη,
τὰς πόντιος Αἰακίδᾳ
Πηλεῖ δίδωσι δαίμων.
ἐπεὶ πρό τ᾽ οἴκων πρό τε γᾶς ἔτλα μόνος στρ.

224—232 = 233—241
242—252 = 253—263

ναύσταθμα βὰς κατιδεῖν· ἄγαμαι
λήματος· ἦ σπανία
τῶν ἀγαθῶν, ὅταν ᾖ
δυσάλιον ἐν πελάγει καὶ σαλεύῃ
πόλις. ἔστι Φρυγῶν τις ἔστιν ἄλκιμος·
ἔνι δὲ θράσος ἐν αἰχμᾷ· ποτὶ Μυσῶν, ὃς ἐμὰν
συμμαχίαν ἀτίζει.
τίν' ἄνδρ' Ἀχαιῶν ὁ πεδοστιβὴς σφαγεὺς ἀντ.
οὐτάσει ἐν κλισίαις, τετράπουν
μῖμον ἔχων ἐπὶ γᾶν
θηρός; ἕλοι Μενέλαν,
κτανὼν δ' Ἀγαμεμνόνιον κρᾶτ' ἐνέγκοι
Ἑλένᾳ κακόγαμβρον ἐς χέρας γόον,
ὃς ἐπὶ πόλιν, ὃς ἐς γᾶν Τροΐαν χιλιόναυν ἤλυθ'
ἔχων στρατείαν.

ΑΓΓ. ἄναξ, τοιούτων δεσπόταισιν ἄγγελος
εἴην τὸ λοιπὸν οἷά σοι φέρω μαθεῖν.

ΕΚ. ἦ πόλλ' ἀγρώσταις σκαιὰ πρόσκειται φρενί·
καὶ γὰρ σὺ ποίμνας δεσπόταις τελεσφόρους
ἥκειν ἔοικας ἀγγελῶν ἵν' οὐ πρέπει.
οὐκ οἶσθα δῶμα τοὐμὸν ἢ θρόνους πατρός,
οἷ χρῆν γεγωνεῖν σ' εὐτυχοῦντα ποιμνίων;

ΑΓΓ. σκαιοὶ βοτῆρές ἐσμεν· οὐκ ἄλλως λέγεις.
ἀλλ' οὐδὲν ἧσσόν σοι φέρω κεδνοὺς λόγους.

ΕΚ. παῦσαι λέγων μοι τὰς προσαυλείους τύχας·
μάχας πρὸ χειρῶν καὶ δόρη βαστάζομεν.

ΑΓΓ. τοιαῦτα κἀγὼ σημανῶν ἐλήλυθα·
ἀνὴρ γὰρ ἀρχῆς μυρίας στρατηλατῶν
στείχει φίλος σοὶ σύμμαχός τε τῇδε γῇ.

ΕΚ. ποίας πατρῴας γῆς ἐρημώσας πέδον;

ΑΓΓ. Θρῄκης· πατρὸς δὲ Στρυμόνος κικλήσκεται.

ΕΚ. Ῥῆσον τιθέντ' ἔλεξας ἐν Τροίᾳ πόδα;

ΑΓΓ. ἔγνως· λόγου δὲ δὶς τόσου μ᾽ ἐκούφισας.
ΕΚ. καὶ πῶς πρὸς Ἴδης ὀργάδας πορεύεται,
πλαγχθεὶς πλατείας πεδιάδος θ᾽ ἁμαξιτοῦ;
ΑΓΓ. οὐκ οἶδ᾽ ἀκριβῶς, εἰκάσαι γε μὴν πάρα.
νυκτὸς γὰρ οὔτι φαῦλον ἐμβαλεῖν στρατόν,
κλύοντα πλήρη πεδία πολεμίας χερός.
φόβον δ᾽ ἀγρώσταις, οἳ κατ᾽ Ἰδαῖον λέπας
οἰκοῦμεν αὐτόρριζον ἑστίαν χθονός,
παρέσχε δρυμὸν νυκτὸς ἔνθηρον μολών.
πολλῇ γὰρ ἠχῇ Θρῄκιος ῥέων στρατὸς
ἔστειχε· θάμβει δ᾽ ἐκπλαγέντες ἵεμεν
ποίμνας πρὸς ἄκρας, μή τις Ἀργείων μόλῃ
λεηλατήσων καὶ σὰ πορθήσων σταθμά,
πρὶν δὴ δι᾽ ὤτων γῆρυν οὐχ Ἑλληνικὴν
ἐδεξάμεσθα καὶ μετέστημεν φόβου.
στείχων δ᾽ ἄνακτος προυξερευνητὰς ὁδοῦ
ἀνιστόρησα Θρῃκίοις προσφθέγμασιν,
τίς ὁ στρατηγὸς καὶ τίνος κεκλημένος
στείχει πρὸς ἄστυ Πριαμίδαισι σύμμαχος.
καὶ πάντ᾽ ἀκούσας ὧν ἐφιέμην μαθεῖν,
ἔστην· ὁρῶ δὲ Ῥῆσον ὥστε δαίμονα
ἑστῶτ᾽ ἐν ἱππείοισι Θρῃκίοις ὄχοις.
χρυσῆ δὲ πλάστιγξ αὐχένα ζυγηφόρον
πώλων ἔκληε χιόνος ἐξαυγεστέρων.
πέλτη δ᾽ ἐπ᾽ ὤμων χρυσοκολλήτοις τύποις
ἔλαμπε· Γοργὼν δ᾽ ὡς ἀπ᾽ αἰγίδος θεᾶς
χαλκῆ μετώποις ἱππικοῖσι πρόσδετος
πολλοῖσι σὺν κώδωσιν, ἐκτύπει φόβον.
στρατοῦ δὲ πλῆθος οὐδ᾽ ἂν ἐν ψήφου λόγῳ
θέσθαι δύναι᾽ ἄν, ὡς ἄπλατον ἦν ἰδεῖν,
πολλοὶ μὲν ἱππεῖς, πολλὰ πελταστῶν τέλη,
πολλοὶ δ᾽ ἀτράκτων τοξόται, πολὺς δ᾽ ὄχλος

γυμνῆς ὁμαρτῇ, Θρῃκίαν ἔχων στολήν.
τοιόσδε Τροίᾳ σύμμαχος πάρεστ᾽ ἀνήρ,
ὃν οὔτε φεύγων οὔθ᾽ ὑποσταθεὶς δορὶ
ὁ Πηλέως παῖς ἐκφυγεῖν δυνήσεται.
ΧΟ. ὅταν πολίταις εὐσταθῶσι δαίμονες,
ἕρπει κατάντης ξυμφορὰ πρὸς τἀγαθά.
ΕΚ. πολλούς, ἐπειδὴ τοὐμὸν εὐτυχεῖ δόρυ
καὶ Ζεὺς πρὸς ἡμῶν ἐστιν, εὑρήσω φίλους.
ἀλλ᾽ οὐδὲν αὐτῶν δεόμεθ᾽, οἵτινες πάλαι
μὴ ξυμπονοῦσιν, ἡνίκ᾽ ἐξώστης Ἄρης
ἔθραυε λαίφη τῆσδε γῆς μέγας πνέων.
Ῥῆσος δ᾽ ἔδειξεν οἷος ἦν Τροίᾳ φίλος·
ἥκει γὰρ εἰς δαῖτ᾽, οὐ παρὼν κυνηγέταις
αἱροῦσι λείαν οὐδὲ συγκαμὼν δορί.
ΧΟ. ὀρθῶς ἀτίζεις κἀπίμομφος εἶ φίλοις·
δέχου δὲ τοὺς θέλοντας ὠφελεῖν πόλιν.
ΕΚ. ἀρκοῦμεν οἱ σῴζοντες Ἴλιον πάλαι.
ΧΟ. πέποιθας ἤδη πολεμίους ᾑρηκέναι;
ΕΚ. πέποιθα· δείξει τοὐπιὸν σέλας θεοῦ.
ΧΟ. ὅρα τὸ μέλλον· πόλλ᾽ ἀναστρέφει θεός.
ΕΚ. μισῶ φίλοισιν ὕστερον βοηδρομεῖν.
ὁ δ᾽ οὖν ἐπείπερ ἦλθε, σύμμαχος μὲν οὔ,
ξένος δὲ πρὸς τράπεζαν ἡκέτω ξένων·
χάρις γὰρ αὐτῷ Πριαμιδῶν διώλετο.
ΧΟ. ἄναξ, ἀπωθεῖν συμμάχους ἐπίφθονον.
ΑΓΓ. φόβος γένοιτ᾽ ἂν πολεμίοις ὀφθεὶς μόνον.
ΕΚ. σύ τ᾽ εὖ παραινεῖς καὶ σὺ καιρίως σκοπεῖς.
ὁ χρυσοτευχὴς οὖν ὅδ᾽ ἀγγέλου λόγῳ
Ῥῆσος παρέσται τῇδε σύμμαχος χθονί.
ΧΟ. Ἀδράστεια μὲν ἁ Διὸς παῖς στρ.
εἴργοι στομάτων φθόνον·

342—350 = 351—359

φράσω γὰρ δὴ ὅσον μοι
ψυχᾷ προσφιλές ἐστιν εἰπεῖν.
ἥκεις, ὦ ποταμοῦ παῖ,
ἥκεις, ἐπλάθης Φρυγίαν πρὸς αὐλὰν
ἀσπαστός, ἐπεί σε χρόνῳ
Πιερὶς μάτηρ ὅ τε καλλιγέφυ-
ρος ποταμὸς πορεύει
Στρυμών, ὅς ποτε τᾶς μελῳδοῦ *ἀντ.*
Μούσας δι' ἀκηράτων
δινηθεὶς ὑδροειδὴς
κόλπων σὰν ἐφύτευσεν ἥβαν.
σύ μοι Ζεὺς ὁ φαναῖος
ἥκεις διφρεύων βαλιαῖσι πώλοις.
νῦν, ὦ πατρὶς ὦ Φρυγία,
ξὺν θεῷ νῦν σοι τὸν ἐλευθέριον
Ζῆνα πάρεστιν εἰπεῖν.
ἆρά ποτ' αὖθις ἁ παλαιὰ *στρ.*
Τροία τοὺς προπότας παναμερεύσει
θιάσους ἐρώτων
ψαλμοῖσι καὶ κυλίκων οἰνοπλανήτοις
ἐπιδεξίαις ἁμίλλαις,
κατὰ πόντον Ἀτρειδᾶν
Σπάρταν οἰχομένων Ἰλιάδος παρ' ἀκτᾶς;
ὦ φίλος, εἴθε μοι
σᾷ χερὶ καὶ σῷ δορὶ πρά-
ξας τάδ' ἐς οἶκον ἔλθοις.
ἐλθέ, φάνηθι, τὰν ζάχρυσον *ἀντ.*
Πηλείδᾳ προβαλοῦ κατ' ὄμμα πέλταν,
δοχμίαν πεδαίρων
σχιστὰν παρ' ἄντυγα, πώλους ἐρεθίζων
δίβολόν τ' ἄκοντα πάλλων.

360—369 = 370—379

σὲ γάρ οὔτις ὑποστὰς
Ἀργείας ποτ' ἐν Ἥρας δαπέδοις χορεύσει·
ἀλλά νιν ἅδε γᾶ
καταφθίμενον Θρῃκὶ μόρῳ
φίλτατον ἄχθος οἴσει.
ἰὼ ἰώ.
μέγας ὦ βασιλεῦ, καλόν, ὦ Θρῄκη,
σκύμνον ἔθρεψας πολίαρχον ἰδεῖν.
ἴδε χρυσόδετον σώματος ἀλκήν,
κλύε καὶ κόμπους κωδωνοκρότους,
παρὰ πορπάκων κελαδοῦντας.
θεός, ὦ Τροία, θεὸς αὐτὸς Ἄρης,
ὁ Στρυμόνιος πῶλος ἀοιδοῦ
Μούσης ἥκων καταπνεῖ σε.

ΡΗ. χαῖρ', ἐσθλὸς ἐσθλοῦ παῖ, τύραννε τῆσδε γῆς,
Ἕκτορ· παλαιᾷ σ' ἡμέρᾳ προσεννέπω.
χαίρω δέ σ' εὐτυχοῦντα καὶ προσήμενον
πύργοισιν ἐχθρῶν· συγκατασκάψων δ' ἐγὼ
τείχη πάρειμι καὶ νεῶν πρήσων σκάφη.

ΕΚ. παῖ τῆς μελῳδοῦ μητέρος Μουσῶν μιᾶς
Θρῃκός τε ποταμοῦ Στρυμόνος, φιλῶ λέγειν
τἀληθὲς ἀεὶ κοὐ διπλοῦς πέφυκ' ἀνήρ.
πάλαι πάλαι χρῆν τῇδε συγκάμνειν χθονὶ
ἐλθόντα, καὶ μὴ τοὐπὶ σ' Ἀργείων ὕπο
Τροίαν ἐᾶσαι πολεμίων πεσεῖν δορί.
οὐ γάρ τι λέξεις ὡς ἄκλητος ὢν φίλοις
οὐκ ἦλθες οὐδ' ἤμυνας οὐδ' ἐπεστράφης.
τίς γάρ σε κῆρυξ ἢ γερουσία Φρυγῶν
ἐλθοῦσ' ἀμύνειν οὐκ ἐπέσκηψεν πόλει;
ποίων δὲ δώρων κόσμον οὐκ ἐπέμψαμεν;
σὺ δ' ἐγγενὴς ὢν βάρβαρός τε βαρβάρου
Ἕλλησιν ἡμᾶς προὔπιες τὸ σὸν μέρος.

καίτοι σε μικρᾶς ἐκ τυραννίδος μέγαν
Θρῃκῶν ἄνακτα τῇδ᾽ ἔθηκ᾽ ἐγὼ χερί,
ὅτ᾽ ἀμφὶ Πάγγαιόν τε Παιόνων τε γῆν
Θρῃκῶν ἀρίστοις ἐμπεσὼν κατὰ στόμα
ἔρρηξα πέλτην, σοὶ δὲ δουλώσας λεὼν
παρέσχον· ὧν σὺ λακτίσας πολλὴν χάριν,
φίλων νοσούντων ὕστερον βοηδρομεῖς.
οἱ δ᾽ οὐδὲν ἡμῖν ἐγγενεῖς πεφυκότες,
πάλαι παρόντες, οἱ μὲν ἐν χωστοῖς τάφοις
κεῖνται πεσόντες, πίστις οὐ σμικρὰ πόλει,
οἱ δ᾽ ἔν θ᾽ ὅπλοισι καὶ παρ᾽ ἱππείοις ὄχοις
ψυχρὰν ἄησιν δίψιόν τε πῦρ θεοῦ
μένουσι καρτεροῦντες, οὐκ ἐν δεμνίοις
πυκνὴν ἄμυστιν ὡς σὺ δεξιούμενοι.
ταῦθ᾽, ὡς ἂν εἰδῇς Ἕκτορ᾽ ὄντ᾽ ἐλεύθερον,
καὶ μέμφομαί σοι καὶ λέγω κατ᾽ ὄμμα σόν.

ΡΗ. τοιοῦτός εἰμι καὐτός, εὐθεῖαν λόγων
τέμνων κέλευθον, κοὐ διπλοῦς πέφυκ᾽ ἀνήρ.
ἐγὼ δὲ μεῖζον ἢ σὺ τῆσδ᾽ ἀπὼν χθονὸς
λύπῃ πρὸς ἧπαρ δυσφορῶν ἐτειρόμην·
ἀλλ᾽ ἀγχιτέρμων γαῖά μοι, Σκύθης λεώς,
μέλλοντι νόστον τὸν πρὸς Ἴλιον περᾶν
ξυνῆψε πόλεμον· Εὐξένου δ᾽ ἀφικόμην
πόντου πρὸς ἀκτάς, Θρῇκα πορθμεύσας στρατόν.
ἔνθ᾽ αἱματηρὸς πέλανος εἰς γαῖαν Σκύθης
ἠντλεῖτο λόγχῃ Θρῄξ τε συμμιγὴς φόνος.
τοιάδε τοί μ᾽ ἀπεῖργε συμφορὰ πέδον
Τροίας ἱκέσθαι σύμμαχόν τέ σοι μολεῖν.
ἐπεὶ δ᾽ ἔπερσα, τῶνδ᾽ ὁμηρεύσας τέκνα,
τάξας ἔτειον δασμὸν εἰς δόμους φέρειν,
ἥκω περάσας ναυσὶ πόντιον στόμα,
τὰ δ᾽ ἄλλα πεζὸς γῆς περῶν ὁρίσματα,

οὐχ ὡς σὺ κομπεῖς τὰς ἐμὰς ἀμύστιδας,
οὐδ' ἐν ζαχρύσοις δώμασιν κοιμώμενος,
ἀλλ' οἷα πόντον Θρῄκιον φυσήματα
κρυσταλλόπηκτα Παίονάς τ' ἐπεζάρει,
ξὺν τοῖσδ' ἄυπνος οἶδα τλὰς πορπάμασιν.
ἀλλ' ὕστερον μὲν ἦλθον, ἐν καιρῷ δ' ὅμως·
σὺ μὲν γὰρ ἤδη δέκατον αἰχμάζεις ἔτος
κοὐδὲν περαίνεις, ἡμέραν δ' ἐξ ἡμέρας
ῥίπτεις κυβεύων τὸν πρὸς Ἀργείους Ἄρην·
ἐμοὶ δὲ φῶς ἓν ἡλίου καταρκέσει
πέρσαντι πύργους ναυστάθμοις ἐπεισπεσεῖν
κτεῖναί τ' Ἀχαιούς· θατέρᾳ δ' ἀπ' Ἰλίου
πρὸς οἶκον εἶμι, συντεμὼν τοὺς σοὺς πόνους.
ὑμῶν δὲ μή τις ἀσπίδ' ἄρηται χερί·
ἐγὼ γὰρ ἕξω τοὺς μέγ' αὐχοῦντας δορὶ
πέρσας Ἀχαιούς, καίπερ ὕστερος μολών.

ΧΟ. ἰὼ ἰώ. στρ.
φίλα θροεῖς, φίλος Διόθεν εἶ· μόνον
φθόνον ἄμαχον ὕπατος
Ζεὺς ἐθέλοι τὸν ἀμφὶ
σοῖσι λόγοισιν εἴργειν.
τὸ δὲ νάιον Ἀργόθεν δόρυ
οὔτε πρίν τιν' οὔτε νῦν τιν'
ἀνδρῶν ἐπόρευσε σέθεν κρείσσω. πῶς μοι
Ἀχιλεὺς τὸ σὸν ἔγχος ἂν δύναιτο,
πῶς δ' Αἴας ὑπομεῖναι;
εἰ γὰρ ἐγὼ τόδ' ἦμαρ εἰσίδοιμ', ἄναξ,
ὅτῳ πολυφόνου
χειρὸς ἀποινάσαιο λόγχᾳ.

ΡΗ. τοιαῦτα μέν σοι τῆς μακρᾶς ἀπουσίας
πρᾶξαι παρέξω· σὺν δ' Ἀδραστείᾳ λέγω,

454—466 = 820—832

ἐπειδὰν ἐχθρῶν τήνδ᾽ ἐλευθέραν πόλιν
θῶμεν θεοῖσί τ᾽ ἀκροθίνι᾽ ἐξέλῃς,
ξὺν σοὶ στρατεύειν γῆν ἐπ᾽ Ἀργείων θέλω
καὶ πᾶσαν ἐλθὼν Ἑλλάδ᾽ ἐκπέρσαι δορί,
ὡς ἂν μάθωσιν ἐν μέρει πάσχειν κακῶς.
ΕΚ. εἰ τοῦ παρόντος τοῦδ᾽ ἀπαλλαχθεὶς κακοῦ
πόλιν νεμοίμην ὡς τὸ πρίν ποτ᾽ ἀσφαλῆ,
ἦ κάρτα πολλὴν θεοῖς ἂν εἰδείην χάριν.
τὰ δ᾽ ἀμφί τ᾽ Ἄργος καὶ νομὸν τὸν Ἑλλάδος
οὐχ ὧδε πορθεῖν ῥᾴδι᾽, ὡς λέγεις, δορί.
ΡΗ. οὐ τούσδ᾽ ἀριστῆς φασιν Ἑλλήνων μολεῖν;
ΕΚ. κοὐ μεμφόμεσθά γ᾽, ἀλλ᾽ ἅδην ἐλαύνομεν.
ΡΗ. οὐκοῦν κτανόντες τούσδε πᾶν εἰργάσμεθα.
ΕΚ. μή νυν τὰ πόρρω τἀγγύθεν μεθεὶς σκόπει.
ΡΗ. ἀρκεῖν ἔοικέ σοι παθεῖν, δρᾶσαι δὲ μή.
ΕΚ. πολλῆς γὰρ ἄρχω κἀνθάδ᾽ ὢν τυραννίδος.
ἀλλ᾽ εἴτε λαιὸν εἴτε δεξιὸν κέρας,
εἴτ᾽ ἐν μέσοισι συμμάχοις, πάρεστί σοι
πέλτην ἐρεῖσαι καὶ καταστῆσαι στρατόν.
ΡΗ. μόνος μάχεσθαι πολεμίοις, Ἕκτορ, θέλω.
εἰ δ᾽ αἰσχρὸν ἡγεῖ μὴ συνεμπρῆσαι νεῶν
πρύμνας, πονήσας τὸν πάρος πολὺν χρόνον,
τάξον μ᾽ Ἀχιλλέως καὶ στρατοῦ κατὰ στόμα.
ΕΚ. οὐκ ἔστ᾽ ἐκείνῳ θοῦρον ἐντάξαι δόρυ.
ΡΗ. καὶ μὴν λόγος γ᾽ ἦν ὡς ἔπλευσ᾽ ἐπ᾽ Ἴλιον.
ΕΚ. ἔπλευσε καὶ πάρεστιν· ἀλλὰ μηνίων
στρατηλάταισιν οὐ συναίρεται δόρυ.
ΡΗ. τίς δὴ μετ᾽ αὐτὸν ἄλλος εὐδοξεῖ στρατοῦ;
ΕΚ. Αἴας ἐμοὶ μὲν οὐδὲν ἡσσᾶσθαι δοκεῖ
χὠ Τυδέως παῖς· ἔστι δ᾽ αἱμυλώτατον
κρότημ᾽ Ὀδυσσεύς, λῆμά τ᾽ ἀρκούντως θρασὺς
καὶ πλεῖστα χώραν τήνδ᾽ ἀνὴρ καθυβρίσας.

ὃς εἰς Ἀθάνας σηκὸν ἔννυχος μολὼν
κλέψας ἄγαλμα ναῦς ἐπ᾽ Ἀργείων φέρει.
ἤδη δ᾽ ἀγύρτης πτωχικὴν ἔχων στολὴν
εἰσῆλθε πύργους, πολλὰ δ᾽ Ἀργείοις κακὰ
ἠρᾶτο, πεμφθεὶς Ἰλίου κατάσκοπος·
κτανὼν δὲ φρουροὺς καὶ παραστάτας πυλῶν
ἐξῆλθεν· ἀεὶ δ᾽ ἐν λόχοις εὑρίσκεται
Θυμβραῖον ἀμφὶ βωμὸν ἄστεως πέλας
θάσσων· κακῷ δὲ μερμέρῳ παλαίομεν.

ΡΗ. οὐδεὶς ἀνὴρ εὔψυχος ἀξιοῖ λάθρᾳ
κτεῖναι τὸν ἐχθρόν, ἀλλ᾽ ἰὼν κατὰ στόμα.
τοῦτον δ᾽ ὃν ἵζειν φὴς σὺ κλωπικὰς ἕδρας
καὶ μηχανᾶσθαι, ζῶντα συλλαβὼν ἐγὼ
πυλῶν ἐπ᾽ ἐξόδοισιν ἀμπείρας ῥάχιν
στήσω πετεινοῖς γυψὶ θοινατήριον.
λῃστὴν γὰρ ὄντα καὶ θεῶν ἀνάκτορα
συλῶντα δεῖ νιν τῷδε κατθανεῖν μόρῳ.

ΕΚ. νῦν μὲν καταυλίσθητε· καὶ γὰρ εὐφρόνη.
δείξω δ᾽ ἐγώ σοι χῶρον, ἔνθα χρὴ στρατὸν
τὸν σὸν νυχεῦσαι τοῦ τεταγμένου δίχα.
ξύνθημα δ᾽ ἡμῖν Φοῖβος, ἤν τι καὶ δέῃ,
μέμνησ᾽ ἀκούσας Θρῃκί τ᾽ ἄγγειλον στρατῷ.
ὑμᾶς δὲ βάντας χρὴ προταινὶ τάξεων
φρουρεῖν ἐγερτὶ καὶ νεῶν κατάσκοπον
δέχθαι Δόλωνα· καὶ γὰρ εἴπερ ἐστὶ σῶς,
ἤδη πελάζει στρατοπέδοισι Τρωικοῖς.

ΧΟ. τίνος ἁ φυλακά; τίς ἀμείβει στρ.
τὰν ἐμάν; πρῶτα
δύεται σημεῖα καὶ ἑπτάποροι
Πλειάδες αἰθέριαι·
μέσα δ᾽ αἰετὸς οὐρανοῦ ποτᾶται.

527—545 = 546—564

ἔγρεσθε, τί μέλλετε; κοιτᾶν
ἔγρεσθε πρὸς φυλακάν.
οὐ λεύσσετε μηνάδος αἴγλαν;
ἀὼς δὴ πέλας ἀὼς
γίγνεται, καί τις προδρόμων
ὅδε γ' ἐστὶν ἀστήρ.
ΗΜΙΧΟ. τίς ἐκηρύχθη πρώτην φυλακήν;
* * * *
ΗΜ. Μυγδόνος ὅν φασι Κόροιβον.
ΗΜ. τίς γὰρ ἐπ' αὐτῷ; ΗΜ. Κίλικας Παίων
στρατὸς ἤγειρεν. ΗΜ. Μυσοὶ δ' ἡμᾶς.
ΗΜ. οὐκοῦν Λυκίους πέμπτην φυλακὴν
βάντας ἐγείρειν
καιρὸς κλήρου κατὰ μοῖραν.
ΧΟ. καὶ μὴν ἀίω Σιμόεντος ἀντ.
ἡμένα κοίτας
φοινίας ὑμνεῖ πολυχορδοτάτᾳ
γήρυϊ παιδολέτωρ
μελοποιὸς ἀηδονὶς μέριμνα·
ἤδη δὲ νέμουσι κατ' Ἴδαν
ποίμνια· νυκτιβρόμου
σύριγγος ἰὰν κατακούω·
θέλγει δ' ὄμματος ἕδραν
ὕπνος· ἅδιστος γὰρ ἔβα
βλεφάροις πρὸς ἀοῦς.
ΗΜ. τί ποτ' οὐ πελάθει σκοπός, ὃν ναῶν
Ἕκτωρ ὤτρυνε κατόπταν;
ΗΜ. ταρβῶ· χρόνιος γὰρ ἄπεστιν.
ΗΜ. ἀλλ' ἦ κρυπτὸν λόχον εἰσπαίσας
διόλωλε; τάχ' ἂν εἴη φοβερόν [μοι].
ΗΜ. αὐδῶ Λυκίους πέμπτην φυλακὴν

βάντας ἐγείρειν
ἡμᾶς κλήρου κατὰ μοῖραν.

ΟΔ. Διόμηδες, οὐκ ἤκουσας — ἢ κενὸς ψόφος
στάζει δι' ὤτων; — τευχέων τινὰ κτύπον;
ΔΙ. οὔκ, ἀλλὰ δεσμὰ πωλικῶν ἐξ ἀντύγων
κλάζει σιδήρου· κἀμέ τοι, πρὶν ᾐσθόμην
δεσμῶν ἀραγμὸν ἱππικῶν, ἔδυ φόβος.
ΟΔ. ὅρα κατ' ὄρφνην μὴ φύλαξιν ἐντύχῃς.
ΔΙ. φυλάξομαί τοι κἀν σκότῳ τιθεὶς πόδα.
ΟΔ. ἢν δ' οὖν ἐγείρῃς, οἶσθα σύνθημα στρατοῦ;
ΔΙ. Φοῖβον Δόλωνος οἶδα σύμβολον κλύων.
ΟΔ. ἔα·
εὐνὰς ἐρήμους τάσδε πολεμίων ὁρῶ.
ΔΙ. καὶ μὴν Δόλων γε τάσδ' ἔφραζεν Ἕκτορος
κοίτας, ἐφ' ᾧπερ ἔγχος εἴλκυσται τόδε.
ΟΔ. τί δῆτ' ἂν εἴη; μῶν λόχος βέβηκέ ποι;
ΔΙ. ἴσως ἐφ' ἡμῖν μηχανὴν στήσων τινά.
ΟΔ. θρασὺς γὰρ Ἕκτωρ νῦν ἐπεὶ κρατεῖ, θρασύς.
ΔΙ. τί δῆτ', Ὀδυσσεῦ, δρῶμεν; οὐ γὰρ εὕρομεν
τὸν ἄνδρ' ἐν εὐναῖς, ἐλπίδων δ' ἡμάρτομεν.
ΟΔ. στείχωμεν ὡς τάχιστα ναυστάθμων πέλας.
σῴζει γὰρ αὐτὸν ὅστις εὐτυχῆ θεῶν
τίθησιν· ἡμῖν δ' οὐ βιαστέον τύχην.
ΔΙ. οὐκοῦν ἐπ' Αἰνέαν ἢ τὸν ἔχθιστον Φρυγῶν
Πάριν μολόντε χρὴ καρατομεῖν ξίφει.
ΟΔ. πῶς οὖν ἐν ὄρφνῃ πολεμίων ἀνὰ στρατὸν
ζητῶν δυνήσει τούσδ' ἀκινδύνως κτανεῖν;
ΔΙ. αἰσχρόν γε μέντοι ναῦς ἐπ' Ἀργείων μολεῖν,
δράσαντε μηδὲν πολεμίους νεώτερον.
ΟΔ. πῶς δ' οὐ δέδρακας; οὐ κτανόντε ναυστάθμων
κατάσκοπον Δόλωνα σῴζομεν τάδε

σκυλεύματ᾽; ἢ πᾶν στρατόπεδον πέρσειν δοκεῖς;
πείθου, πάλιν στείχωμεν· εὖ δ᾽ εἴη τυχεῖν.

ΑΘ. ποῖ δὴ λιπόντε Τρωικῶν ἐκ τάξεων
χωρεῖτε, λύπῃ καρδίαν δεδηγμένοι,
εἰ μὴ κτανεῖν σφῷν Ἕκτορ᾽ ἢ Πάριν θεὸς
δίδωσιν; ἄνδρα δ᾽ οὐ πέπυσθε σύμμαχον
Τροίᾳ μολόντα Ῥῆσον οὐ φαύλῳ τρόπῳ;
ὃς εἰ διοίσει νύκτα τήνδ᾽ ἐς αὔριον,
οὔτ᾽ ἄν σφ᾽ Ἀχιλλέως οὔτ᾽ ἂν Αἴαντος δόρυ
μὴ πάντα πέρσαι ναύσταθμ᾽ Ἀργείων σχέθοι,
τείχη κατασκάψαντα καὶ πυλῶν ἔσω
λόγχῃ πλατεῖαν εἰσδρομὴν ποιούμενον·
τοῦτον κατακτὰς πάντ᾽ ἔχεις. τὰς δ᾽ Ἕκτορος
εὐνὰς ἔασον καὶ καρατόμους σφαγάς·
ἔσται γὰρ αὐτῷ θάνατος ἐξ ἄλλης χερός.

ΟΔ. δέσποιν᾽ Ἀθάνα, φθέγματος γὰρ ᾐσθόμην
τοῦ σοῦ συνήθη γῆρυν· ἐν πόνοισι γὰρ
παροῦσ᾽ ἀμύνεις τοῖς ἐμοῖς ἀεί ποτε·
τὸν ἄνδρα δ᾽ ἡμῖν ποῦ κατεύνασται φράσον,
πόθεν τέτακται βαρβάρου στρατεύματος.

ΑΘ. ὅδ᾽ ἐγγὺς ἧσται κοὐ συνήθροισται στρατῷ,
ἀλλ᾽ ἐκτὸς αὐτὸν τάξεων κατεύνασεν
Ἕκτωρ, ἕως ἂν νὺξ ἀμείψηται φάος.
πέλας δὲ πῶλοι Θρῃκίων ἐξ ἁρμάτων
λευκαὶ δέδενται, διαπρεπεῖς ἐν εὐφρόνῃ·
στίλβουσι δ᾽ ὥστε ποταμίου κύκνου πτερόν.
ταύτας κτανόντες δεσπότην κομίζετε,
κάλλιστον οἴκοις σκῦλον· οὐ γὰρ ἔσθ᾽ ὅπου
τοιόνδ᾽ ὄχημα χθὼν κέκευθε πωλικόν.

ΟΔ. Διόμηδες, ἢ σὺ κτεῖνε Θρῄκιον λεών,
ἢ ᾽μοὶ πάρες γε, σοὶ δὲ χρὴ πώλων μέλειν.

ΔΙ. ἐγὼ φονεύσω, πωλοδαμνήσεις δὲ σύ.

τρίβων γὰρ εἶ τὰ κομψὰ καὶ νοεῖν σοφός.
χρὴ δ' ἄνδρα τάσσειν οὗ μάλιστ' ἂν ὠφελῇ.

ΑΘ. καὶ μὴν καθ' ἡμᾶς τόνδ' Ἀλέξανδρον βλέπω
στείχοντα, φυλάκων ἔκ τινος πεπυσμένον
δόξας ἀσήμους πολεμίων μεμβλωκότων.

ΔΙ. πότερα σὺν ἄλλοις ἢ μόνος πορεύεται;

ΑΘ. μόνος· πρὸς εὐνὰς δ', ὡς ἔοικεν, Ἕκτορος
χωρεῖ, κατόπτας σημανῶν ἥκειν στρατοῦ.

ΔΙ. οὔκουν ὑπάρχειν τόνδε κατθανόντα χρή;

ΑΘ. οὐκ ἂν δύναιο τοῦ πεπρωμένου πλέον.
τοῦτον δὲ πρὸς σῆς χειρὸς οὐ θέμις θανεῖν.
ἀλλ' ᾧπερ ἥκεις μορσίμους φέρων σφαγάς,
τάχυν'· ἐγὼ δὲ τῷδε σύμμαχος Κύπρις
δοκοῦσ' ἀρωγὸς ἐν πόνοις παραστατεῖν,
σαθροῖς λόγοισιν ἐχθρὸν ἄνδρ' ἀμείψομαι.
καὶ ταῦτ' ἐγὼ μὲν εἶπον· ὃν δὲ χρὴ παθεῖν,
οὐκ οἶδεν οὐδ' ἤκουσεν ἐγγὺς ὢν λόγου.

ΠΑ. σὲ τὸν στρατηγὸν καὶ κασίγνητον λέγω,
Ἕκτορ, καθεύδεις; οὐκ ἐγείρεσθαί σ' ἐχρῆν;
ἐχθρῶν τις ἡμῖν χρίμπτεται στρατεύματι,
ἢ κλῶπες ἄνδρες ἢ κατάσκοποί τινες.

ΑΘ. θάρσει· φυλάσσει σ' ἥδε πρευμενὴς Κύπρις.
μέλει δ' ὁ σός μοι πόλεμος, οὐδ' ἀμνημονῶ
τιμῆς, ἐπαινῶ δ' εὖ παθοῦσα πρὸς σέθεν.
καὶ νῦν ἐπ' εὐτυχοῦντι Τρωικῷ στρατῷ
ἥκω πορεύουσ' ἄνδρα σοι μέγαν φίλον,
τῆς ὑμνοποιοῦ παῖδα Θρῄκιον θεᾶς
Μούσης, πατρὸς δὲ Στρυμόνος κικλήσκεται.

ΠΑ. ἀεί ποτ' εὖ φρονοῦσα τυγχάνεις πόλει
κἀμοί, μέγιστον δ' ἐν βίῳ κειμήλιον
κρίνας σέ φημι τῇδε προσθέσθαι πόλει.
ἥκω δ' ἀκούσας οὐ τορῶς, φήμη δέ τις

φύλαξιν ἐμπέπτωκεν ὡς κατάσκοποι
ἥκουσ᾽ Ἀχαιῶν. χὠ μὲν οὐκ ἰδὼν λέγει,
ὁ δ᾽ εἰσιδὼν μολόντας οὐκ ἔχει φράσαι,
ὧν οὕνεκ᾽ εὐνὰς ἤλυθον πρὸς Ἕκτορος.

ΑΘ. μηδὲν φοβηθῇς· οὐδὲν ἐν στρατῷ νέον·
Ἕκτωρ δὲ φροῦδος Θρῇκα κοιμήσων στρατόν.

ΠΑ. σύ τοί με πείθεις, σοῖς δὲ πιστεύων λόγοις
τάξιν φυλάξων εἶμ᾽ ἐλεύθερος φόβου.

ΑΘ. χώρει· μέλειν γὰρ πάντ᾽ ἐμοὶ δόκει τὰ σά,
ὥστ᾽ εὐτυχοῦντας συμμάχους ἐμοὺς ὁρᾶν.
γνώσει δὲ καὶ σὺ τὴν ἐμὴν προθυμίαν.
ὑμᾶς δ᾽ αὐτῶ τοὺς ἄγαν ἐρρωμένους,
Λαερτίου παῖ, θηκτὰ κοιμίσαι ξίφη.
κεῖται γὰρ ἡμῖν Θρῄκιος στρατηλάτης,
ἵπποι τ᾽ ἔχονται, πολέμιοι δ᾽ ᾐσθημένοι
χωροῦσ᾽ ἐφ᾽ ὑμᾶς· ἀλλ᾽ ὅσον τάχιστα χρὴ
φεύγειν πρὸς ὁλκοὺς ναυστάθμων. τί μέλλετε
σκηπτοῦ ᾽πιόντος πολεμίων σῶσαι βίον;

ΧΟ. ἔα ἔα·
βάλε βάλε βάλε βάλε,
θένε θένε· τίς ὅδ᾽ ἀνήρ;
λεύσσετε, τοῦτον αὐδῶ.
κλῶπες οἵτινες κατ᾽ ὄρφνην
τόνδε κινοῦσι στρατόν.
δεῦρο δεῦρο πᾶς.
τούσδ᾽ ἔχω καὶ τούσδ᾽ ἔμαρψα.
τίς ὁ λόχος; πόθεν ἔβας; ποδαπὸς εἶ;

[ΟΔ. οὔ σε χρὴ εἰδέναι· θανεῖ γὰρ σήμερον δράσας κακῶς.]

ΗΜ. οὐκ ἐρεῖς ξύνθημα, λόγχην πρὶν διὰ στέρνων μολεῖν;

ΟΔ. ἴστω. θάρσει. ΗΜ. πέλας ἴθι. παῖε πᾶς.

ΗΜ. ἦ σὺ δὴ Ῥῆσον κατέκτας; ΟΔ. ἀλλὰ τὸν κτενοῦντα σέ.
ΟΔ. ἴσχε πᾶς τις. ΗΜ. οὐ μὲν οὖν. ΟΔ. ἆ, φίλιον ἄνδρα μὴ θένῃς.
ΧΟ. καὶ τί δὴ τὸ σῆμα; ΟΔ. Φοῖβος. ΧΟ. ἔμαθον· ἴσχε πᾶς δόρυ.
ΗΜ. οἶσθ' ὅποι βεβᾶσιν ἄνδρες; ΗΜ. τῇδέ πῃ κατείδομεν.
ΗΜ. ἕρπε πᾶς κατ' ἴχνος αὐτῶν, ἢ βοὴν ἐγερτέον.
ΗΜ. ἀλλὰ συμμάχους ταράσσειν δεινὸν ἐννύχῳ φόβῳ.
ΧΟ. τίς ἀνδρῶν ὁ βάς; στρ.
τίς ὃ μέγα θράσος ἐπεύξεται,
χέρα φυγὼν ἐμάν;
πόθεν νιν κυρήσω;
τίνι προσεικάσω,
ὅστις δι' ὄρφνης ἦλθ' ἀδειμάντῳ ποδὶ
διά τε τάξεων καὶ φυλάκων ἕδρας;
Θεσσαλὸς ἢ
παραλίαν Λοκρῶν νεμόμενος πόλιν;
ἢ νησιώτην σποράδα κέκτηται βίον;
τίς ἦν πόθεν ποίας πάτρας;
ποῖον ἐπεύχεται τὸν ὕπατον θεῶν;
ΗΜ. ἆρ' ἔστ' Ὀδυσσέως τοὔργον ἢ τίνος τόδε;
ΗΜ. εἰ τοῖς πάροιθε χρὴ τεκμαίρεσθαι, δοκεῖ.
ΗΜ. δοκεῖ γάρ; ΗΜ. τί μὴν οὔ;
ΗΜ. θρασὺς γοῦν ἐς ἡμᾶς.
ΗΜ. τίν' ἀλκήν; τίν' αἰνεῖς; ΗΜ. Ὀδυσσῆ.
ΗΜ. μὴ κλωπὸς αἴνει φωτὸς αἱμύλον δόρυ.
ΧΟ. ἔβα καὶ πάρος ἀντ.
κατὰ πόλιν, ὕπαφρον ὄμμ' ἔχων
ῥακοδύτῳ στολᾷ

692—709 = 710—727

πυκασθείς, ξιφήρης
κρύφιος ἐν πέπλοις.
βίον δ' ἐπαιτῶν εἷρπ' ἀγύρτης τις λάτρις,
ψαφαρόχρουν κάρα πουλυπινές τ' ἔχων·
πολλὰ δὲ τὰν
βασιλίδ' ἑστίαν Ἀτρειδᾶν κακῶς
ἔβαζε δῆθεν ἐχθρὸς ὢν στρατηλάταις.
ὄλοιτ' ὄλοιτο πανδίκως,
πρὶν ἐπὶ γᾶν Φρυγῶν ποδὸς ἴχνος βαλεῖν.
ΗΜ. εἴτ' οὖν Ὀδυσσέως εἴτε μή, φόβος μ' ἔχει.
ΗΜ. Ἕκτωρ γὰρ ἡμῖν τοῖς φύλαξι μέμψεται.
ΗΜ. τί λάσκων; ΗΜ. δυσοίζων.
ΗΜ. τί δρᾶσαι; τί ταρβεῖς;
ΗΜ. καθ' ἡμᾶς περᾶσαι ΗΜ. τίν' ἀνδρῶν;
ΗΜ. οἳ τῆσδε νυκτὸς ἦλθον εἰς Φρυγῶν στρατόν.
ΗΝ. ἰώ, δαίμονος τύχα βαρεῖα. φεῦ φεῦ.
ΧΟ. ἔα· σῖγα πᾶς.
ὕφιζ'· ἴσως γὰρ εἰς βόλον τις ἔρχεται.
ΗΝ. ἰὼ ἰώ,
συμφορὰ βαρεῖα Θρῃκῶν. ΧΟ. συμμάχων τις ὁ στένων;
ΗΝ. ἰώ.
δύστηνος ἐγὼ σύ τ', ἄναξ Θρῃκῶν,
ὦ στυγνοτάτην Τροίαν ἐσιδών·
οἷόν σε βίου τέλος εἷλεν.
ΧΟ. τίς εἶ ποτ' ἀνδρῶν συμμάχων; κατ' εὐφρόνην
ἀμβλῶπες αὐγαί, κοὔ σε γιγνώσκω τορῶς.
ΗΝ. ποῦ τιν' ἀνάκτων Τρωικῶν εὕρω;
ποῦ δῆθ' Ἕκτωρ
τὸν ὑπασπίδιον κοῖτον ἰαύει;
τίνι σημήνω διόπων στρατιᾶς;
οἷα πεπόνθαμεν, οἷά τις ἡμᾶς

δράσας ἀφανῆ φροῦδος, φανερὸν
Θρῃξὶν πένθος τολυπεύσας.

ΧΟ. κακὸν κυρεῖν τι Θρῃκίῳ στρατεύματι
ἔοικεν, οἷα τοῦδε γιγνώσκω κλύων.

ΗΝ. ἔρρει στρατιά, πέπτωκεν ἄναξ
δολίῳ πληγῇ.
ἆ ἆ ἆ ἆ,
οἵα μ' ὀδύνη τείρει φονίου
τραύματος εἴσω. πῶς ἂν ὀλοίμην.
χρῆν γάρ μ' ἀκλεῶς Ῥῆσόν τε θανεῖν,
Τροίᾳ κέλσαντ' ἐπίκουρον;

ΧΟ. τάδ' οὐκ ἐν αἰνιγμοῖσι σημαίνει κακά·
σαφῶς γὰρ αὐδᾷ συμμάχους ὀλωλότας.

ΗΝ. κακῶς πέπρακται κἀπὶ τοῖς κακοῖσι πρὸς
αἴσχιστα· καίτοι δὶς τόσον κακὸν τόδε·
θανεῖν γὰρ εὐκλεῶς μέν, εἰ θανεῖν χρεών,
λυπρὸν μὲν οἶμαι τῷ θανόντι· πῶς γὰρ οὔ;
τοῖς ζῶσι δ' ὄγκος καὶ δόμων εὐδοξία.
ἡμεῖς δ' ἀβούλως κἀκλεῶς ὀλώλαμεν.
ἐπεὶ γὰρ ἡμᾶς εὔνασ' Ἑκτόρεια χείρ,
ξύνθημα λέξας, εὕδομεν πεδοστιβεῖς,
κόπῳ δαμέντες, οὐδ' ἐφρουρεῖτο στρατὸς
φυλακαῖσι νυκτέροισιν, οὐδ' ἐν τάξεσιν
ἔκειτο τεύχη, πλῆκτρά τ' οὐκ ἐπὶ ζυγοῖς
ἵππων καθήρμοσθ', ὡς ἄναξ ἐπεύθετο
κρατοῦντας ὑμᾶς κἀφεδρεύοντας νεῶν
πρύμναισι· φαύλως δ' εὕδομεν πεπτωκότες.
κἀγὼ μελούσῃ καρδίᾳ λήξας ὕπνου
πώλοισι χόρτον, προσδοκῶν ἑωθινὴν
ζεύξειν ἐς ἀλκήν, ἀφθόνῳ μετρῶ χερί.
λεύσσω δὲ φῶτε περιπολοῦνθ' ἡμῶν στρατὸν
πυκνῆς δι' ὄρφνης· ὡς δ' ἐκινήθην ἐγώ,

ἐπτηξάτην τε κἀνεχωρείτην πάλιν·
ἤπυσα δ' αὐτοῖς μὴ πελάζεσθαι στρατῷ,
κλῶπας δοκήσας συμμάχων πλάθειν τινάς.
οἱ δ' οὐδέν· οὐ μὴν οἶδ' ἐγὼ τὰ πλείονα,
εὗδον δ' ἀπελθὼν αὖθις εἰς κοίτην πάλιν.
καί μοι καθ' ὕπνον δόξα τις παρίσταται·
ἵππους γὰρ ἃς ἔθρεψα κἀδιφρηλάτουν
Ῥήσῳ παρεστώς, εἶδον, ὡς ὄναρ δοκῶν,
λύκους ἐπεμβεβῶτας ἑδραίαν ῥάχιν·
θείνοντε δ' οὐρᾷ πωλικῆς ῥινοῦ τρίχα,
ἤλαυνον, αἱ δ' ἔρρεγκον ἐξ ἀντηρίδων
θυμὸν πνέουσαι κἀνεχαίτιζον φόβῳ.
ἐγὼ δ' ἀμύνων θῆρας ἐξεγείρομαι
πώλοισιν· ἔννυχος γὰρ ἐξώρμα φόβος.
κλύω δ' ἐπάρας κρᾶτα μυχθισμὸν νεκρῶν.
θερμὸς δὲ κρουνὸς δεσπότου παρὰ σφαγαῖς
βάλλει με δυσθνητοῦντος αἵματος νέου.
ὀρθὸς δ' ἀνᾴσσω χειρὶ σὺν κενῇ δορός.
καί μ' ἔγχος αὐγάζοντα καὶ θηρώμενον
παίει παραστὰς νεῖραν εἰς πλευρὰν ξίφει
ἀνὴρ ἀκμάζων· φασγάνου γὰρ ᾐσθόμην
πληγήν, βαθεῖαν ἄλοκα τραύματος λαβών.
πίπτω δὲ πρηνής· οἱ δ' ὄχημα πωλικὸν
λαβόντες ἵππων ἵεσαν φυγῇ πόδα.
ἆ ἆ.
ὀδύνη με τείρει, κοὐκέτ' ὀρθοῦμαι τάλας.
καὶ ξυμφορὰν μὲν οἶδ' ὁρῶν, τρόπῳ δ' ὅτῳ
τεθνᾶσιν οἱ θανόντες οὐκ ἔχω φράσαι,
οὐδ' ἐξ ὁποίας χειρός. εἰκάσαι δέ μοι
πάρεστι λυπρὰ πρὸς φίλων πεπονθέναι.
ΧΟ. ἡνίοχε Θρῃκὸς τοῦ κακῶς πεπραγότος,
μηδὲν δύσοιζ' οὐ πολεμίους δρᾶσαι τάδε.

Ἕκτωρ δὲ καὐτὸς συμφορᾶς πεπυσμένος
χωρεῖ· συναλγεῖ δ᾽, ὡς ἔοικε, σοῖς κακοῖς.

ΕΚ. πῶς οἱ μέγιστα πήματ᾽ ἐξειργασμένοι
μολόντες ὑμᾶς πολεμίων κατάσκοποι
λήθουσιν αἰσχρῶς, καὶ κατεσφάγη στρατός,
κοὔτ᾽ εἰσιόντας στρατόπεδ᾽ ἐξαπώσατε
οὔτ᾽ ἐξιόντας; τῶνδε τίς δώσει δίκην
πλὴν σοῦ; σὲ γὰρ δὴ φύλακά φημ᾽ εἶναι στρατοῦ.
φροῦδοι δ᾽ ἄπληκτοι, τῇ Φρυγῶν κακανδρίᾳ
πόλλ᾽ ἐγγελῶντες τῷ στρατηλάτῃ τ᾽ ἐμοί.
εὖ νυν τόδ᾽ ἴστε, Ζεὺς ὀμώμοται πατήρ,
ἤτοι μάραγνά γ᾽ ἢ καρανιστὴς μόρος
μένει σε δρῶντα τοιάδ᾽, ἢ τὸν Ἕκτορα
τὸ μηδὲν εἶναι καὶ κακὸν νομίζετε.

ΧΟ. ἰὼ ἰώ, ἀντ.
μέγα σύ μοι μέγ᾽ ὦ πολίοχον κράτος·
τότ᾽ ἄρ᾽ ἔμολον, ὅτε σοι
ἄγγελος ἦλθον, ἀμφὶ
ναυσὶ πῦρ᾽ αἴθειν Ἀργείων [στρατόν],
ἐπεὶ ἄγρυπνον ὄμμ᾽ ἐν εὐφρόνῃ
οὔτ᾽ ἐκοίμισ᾽ οὔτ᾽ ἔβριξεν,
οὐ τὰς Σιμοεντιάδας πηγάς· μή μοι
κότον, ὦ ἄνα, θῇς· ἀναίτιος γὰρ
ἔγωγε πάντων.
ἢν δὲ χρόνῳ παράκαιρον ἔργον ἢ λόγον
πύθῃ, κατά με γᾶς
ζῶντα πόρευσον· οὐ παραιτοῦμαι.

ΗΝ. τί τοῖσδ᾽ ἀπειλεῖς, βάρβαρός τε βαρβάρου
γνώμην ὑφαιρεῖ τὴν ἐμήν, πλέκων λόγους;
σὺ ταῦτ᾽ ἔδρασας· οὐδέν᾽ ἂν δεξαίμεθα
οὔθ᾽ οἱ παθόντες οὔτ᾽ ἂν οἱ τετρωμένοι
ἄλλον· μακροῦ γε δεῖ σε καὶ σοφοῦ λόγου,

ὅτῳ με πείσεις μὴ φίλους κατακτανεῖν,
ἵππων ἐρασθείς, ὧν ἕκατι συμμάχους
τοὺς σοὺς φονεύεις, πόλλ᾿ ἐπισκήπτων μολεῖν.
ἦλθον, τεθνᾶσιν· εὐπρεπέστερον Πάρις
ξενίαν κατῄσχυν᾿ ἢ σὺ συμμάχους κτανών.
μὴ γάρ τι λέξῃς ὥς τις Ἀργείων μολὼν
διώλεσ᾿ ἡμᾶς· τίς δ᾿ ὑπερβαλὼν λόχους
Τρώων ἐφ᾿ ἡμᾶς ἦλθεν, ὥστε καὶ λαθεῖν;
σὺ πρόσθεν ἡμῶν ἧσο καὶ Φρυγῶν στρατός.
τίς οὖν τέτρωται, τίς τέθνηκε συμμάχων
τῶν σῶν, μολόντων ὡς σὺ πολεμίων λέγεις;
ἡμεῖς δὲ καὶ τετρώμεθ᾿, οἱ δὲ μειζόνως
παθόντες οὐχ ὁρῶσιν ἡλίου φάος.
ἁπλῶς δ᾿ Ἀχαιῶν οὐδέν᾿ αἰτιώμεθα.
τίς δ᾿ ἂν χαμεύνας πολεμίων κατ᾿ εὐφρόνην
Ῥήσου μολὼν ἐξεῦρεν, εἰ μή τις θεῶν
ἔφραζε τοῖς κτανοῦσιν; οὐδ᾿ ἀφιγμένον
τὸ πάμπαν ᾖσαν· ἀλλὰ μηχανᾷ τάδε.
ΕΚ. *χρόνον μὲν ἤδη συμμάχοισι χρώμεθα*
ὅσονπερ ἐν γῇ τῇδ᾿ Ἀχαιικὸς λεώς,
κοὐδὲν πρὸς αὐτῶν οἶδα πλημμελὲς κλύων·
ἐν σοὶ δ᾿ ἄρ᾿ ἀρχώμεσθα; μή μ᾿ ἔρως ἕλοι
τοιοῦτος ἵππων ὥστ᾿ ἀποκτείνειν φίλους.
καὶ ταῦτ᾿ Ὀδυσσεύς· τίς γὰρ ἄλλος ἄν ποτε
ἔδρασεν ἢ ᾿βούλευσεν Ἀργείων ἀνήρ;
δέδοικα δ᾿ αὐτὸν καί τί μου θράσσει φρένας,
μὴ καὶ Δόλωνα συντυχὼν κατακτάνῃ·
χρόνον γὰρ ἤδη φροῦδος ὢν οὐ φαίνεται.
ΗΝ. *οὐκ οἶδα τοὺς σοὺς οὓς λέγεις Ὀδυσσέας·*
ἡμεῖς δ᾿ ὑπ᾿ ἐχθρῶν οὐδενὸς πεπλήγμεθα.
ΕΚ. *σὺ δ᾿ οὖν νόμιζε ταῦτ᾿, ἐπείπερ σοι δοκεῖ.*
ΗΝ. *ὦ γαῖα πατρίς, πῶς ἂν ἐνθάνοιμί σοι.*

ΕΚ. μὴ θνῇσχ᾽· ἅλις γὰρ τῶν τεθνηκότων ὄχλος.
ΗΝ. ποῖ δὴ τράπωμαι δεσποτῶν μονούμενος;
ΕΚ. οἶκός σε κεύθων οὑμὸς ἐξιάσεται.
ΗΝ. καὶ πῶς με κηδεύσουσιν αὐθεντῶν χέρες;
ΕΚ. ὅδ᾽ αὖ τὸν αὐτὸν μῦθον οὐ λήξει λέγων.
ΗΝ. ὄλοιθ᾽ ὁ δράσας. οὐ γὰρ εἰς σὲ τείνεται
γλῶσσ᾽, ὡς σὺ κομπεῖς· ἡ Δίκη δ᾽ ἐπίσταται.
ΕΚ. λάζυσθ᾽ ἄγοντες αὐτὸν εἰς δόμους ἐμούς,
οὕτως ὅπως ἂν μὴ ᾽γκαλῇ πορσύνετε·
ὑμᾶς δ᾽ ἰόντας τοῖσιν ἐν τείχει χρεὼν
Πριάμῳ τε καὶ γέρουσι σημῆναι νεκροὺς
θάπτειν κελεύειν λεωφόρου πρὸς ἐκτροπάς.
ΧΟ. τί ποτ᾽ εὐτυχίας ἐκ τῆς μεγάλης
Τροίαν ἀνάγει πάλιν εἰς πένθος
δαίμων ἄλλος, τί φυτεύων;
ἔα ἔα. ὢ ὤ.
τίς ὑπὲρ κεφαλῆς θεός, ὦ βασιλεῦ,
τὸν νεόδμητον νεκρὸν ἐν χειροῖν
φοράδην πέμπει;
ταρβῶ λεύσσων τόδε πῆμα.
ΜΟΥ. ὁρᾶν πάρεστι, Τρῶες· ἡ γὰρ ἐν σοφοῖς
τιμὰς ἔχουσα Μοῦσα συγγόνων μία
πάρειμι, παῖδα τόνδ᾽ ὁρῶσ᾽ οἰκτρῶς φίλον
θανόνθ᾽ ὑπ᾽ ἐχθρῶν· ὅν ποθ᾽ ὁ κτείνας χρόνῳ
δόλιος Ὀδυσσεὺς ἀξίαν τίσει δίκην.
ἰαλέμῳ αὐθιγενεῖ στρ.
τέκνον σ᾽ ὀλοφύρομαι, ὦ
ματρὸς ἄλγος, οἵαν
ἔκελσας ὁδὸν ποτὶ Τροίαν,
ἦ δυσδαίμονα καὶ μελέαν,

895 — 903 = 906 — 914

ἀπὸ μεμψαμένας ἐμοῦ πορευθείς,
ἀπὸ δ' ἀντομένου πατρὸς βιαίως.
ὤμοι ἐγὼ σέθεν, ὦ φιλία
φιλία κεφαλά, τέκνον, ὤμοι.

ΧΟ. ὅσον προσήκει μὴ γένους κοινωνίαν
ἔχοντι, λύπῃ τὸν σὸν οἰκτείρω γόνον.

ΜΟΥ. ὄλοιτο μὲν Οἰνεΐδας, ἀντ.
ὄλοιτο δὲ Λαρτιάδας,
ὅς μ' ἄπαιδα γέννας
ἔθηκεν ἀριστοτόκοιο·
ἅ θ' Ἑλένα προλιποῦσα δόμον
Φρυγίων λεχέων ἔπλευσε πλαθεῖσ'·
ὑπ' Ἰλίῳ ὤλεσε μὲν [σὲ] κατὰ Τροίας,
φίλτατε, μυριάδας τε πόλεις
ἀνδρῶν ἀγαθῶν ἐκένωσεν.
ἦ πολλὰ μὲν ζῶν, πολλὰ δ' εἰς Ἅιδου μολών,
Φιλάμμονος παῖ, τῆς ἐμῆς ἥψω φρενός·
ὕβρις γάρ, ἥ σ' ἔσφηλε, καὶ Μουσῶν ἔρις
τεκεῖν μ' ἔθηκε τόνδε δύστηνον γόνον.
περῶσα γὰρ δὴ ποταμίους διὰ ῥοὰς
λέκτροις ἐπλάθην Στρυμόνος φυταλμίοις,
ὅτ' ἤλθομεν γῆς χρυσόβωλον εἰς λέπας
Πάγγαιον ὀργάνοισιν ἐξησκημέναι
Μοῦσαι μεγίστην εἰς ἔριν μελῳδίας
κλεινῷ σοφιστῇ Θρῃκί, κἀτυφλώσαμεν
Θάμυριν, ὃς ἡμῶν πόλλ' ἐδέννασεν τέχνην.
κἀπεὶ σὲ τίκτω, συγγόνους αἰδουμένη
καὶ παρθενείαν, ἧκ' ἐς εὐύδρου πατρὸς
δίνας· τρέφειν δέ σ' οὐ βρότειαν ἐς χέρα
Στρυμὼν δίδωσιν, ἀλλὰ πηγαίαις κόραις.
ἔνθ' ἐκτραφεὶς κάλλιστα παρθένων ὕπο,

Θρῄκης ἀνάσσων πρῶτος ἦσθ' ἀνδρῶν, τέκνον.
καί σ' ἀμφὶ γῆν μὲν πατρίαν φιλαιμάτους
ἀλκὰς κορύσσοντ' οὐκ ἐδείμαινον θανεῖν·
Τροίας δ' ἀπηύδων ἄστυ μὴ κέλσαι ποτέ,
εἰδυῖα τὸν σὸν πότμον· ἀλλά σ' Ἕκτορος
πρεσβεύμαθ' αἵ τε μυρίαι γερουσίαι
ἔπεισαν ἐλθεῖν κἀπικουρῆσαι φίλοις.
καὶ τοῦδ' Ἀθάνα παντὸς αἰτία μόρου,
οὐδὲν δ' Ὀδυσσεὺς οὐδ' ὁ Τυδέως τόκος
ἔδρασε δράσας· μὴ δόκει λεληθέναι.
καίτοι πόλιν σὴν σύγγονοι πρεσβεύομεν
Μοῦσαι μάλιστα κἀπιχρώμεθα χθονί,
μυστηρίων τε τῶν ἀπορρήτων φανὰς
ἔδειξεν Ὀρφεύς, αὐτανέψιος νεκροῦ
τοῦδ' ὃν κατακτείνεις σύ· Μουσαῖόν τε σὸν
σεμνὸν πολίτην κἀπὶ πλεῖστον ἄνδρ' ἕνα
ἐλθόντα, Φοῖβος σύγγονοί τ' ἠσκήσαμεν.
καὶ τῶνδε μισθὸν παῖδ' ἔχουσ' ἐν ἀγκάλαις
θρηνῶ· σοφιστὴν δ' ἄλλον οὐκ ἐπάξομαι.

ΧΟ. μάτην ἄρ' ἡμᾶς Θρῄκιος τροχηλάτης
ἐδέννασ', Ἕκτορ, τῷδε βουλεῦσαι φόνον.

ΕΚ. ᾔδη τάδ'· οὐδὲν μάντεως ἔδει φράσαι
Ὀδυσσέως τέχναισι τόνδ' ὀλωλότα.
ἐγὼ δὲ γῆς ἔφεδρον Ἑλλήνων στρατὸν
λεύσσων, τί μὴν ἔμελλον οὐ πέμψειν φίλοις
κήρυκας, ἐλθεῖν κἀπικουρῆσαι χθονί;
ἔπεμψ'· ὀφείλων δ' ἦλθε συμπονεῖν ἐμοί.
οὐ μὴν θανόντι γ' οὐδαμῶς συνήδομαι.
καὶ νῦν ἕτοιμος τῷδε καὶ τεῦξαι τάφον
καὶ ξυμπυρῶσαι μυρίων πέπλων χλιδήν·
φίλος γὰρ ἐλθὼν δυστυχῶς ἀπέρχεται.

ΜΟΥ. οὐκ εἶσι γαίας εἰς μελάγχιμον πέδον·
τοσόνδε Νύμφην τὴν ἔνερθ᾽ αἰτήσομαι
τῆς καρποποιοῦ παῖδα Δήμητρος θεᾶς,
ψυχὴν ἀνεῖναι τοῦδ᾽· ὀφειλέτις δέ μοι
τοὺς Ὀρφέως τιμῶσα φαίνεσθαι φίλους.
κἀμοὶ μὲν ὡς θανών τε κοὐ λεύσσων φάος
ἔσται τὸ λοιπόν· οὐ γὰρ ἐς ταὐτόν ποτε
οὔτ᾽ εἶσιν οὔτε μητρὸς ὄψεται δέμας,
κρυπτὸς δ᾽ ἐν ἄντροις τῆς ὑπαργύρου χθονὸς
ἀνθρωποδαίμων κείσεται βλέπων φάος,
Βάκχου προφήτης ὥστε Παγγαίου πέτραν
ᾤκησε σεμνὸς τοῖσιν εἰδόσιν θεός.
ῥᾷον δὲ πένθος τῆς θαλασσίας θεοῦ
οἴσω· θανεῖν γὰρ καὶ τὸν ἐκ κείνης χρεών.
θρήνοις δ᾽ ἀδελφαὶ πρῶτα μὲν σ᾽ ὑμνήσομεν,
ἔπειτ᾽ Ἀχιλλέα Θέτιδος ἐν πένθει ποτέ.
οὐ ῥύσεταί νιν Παλλάς, ἥ σ᾽ ἀπέκτανε·
τοῖον φαρέτρα Λοξίου σῴζει βέλος.
ὦ παιδοποιοὶ συμφοραί, πόνοι βροτῶν,
ὡς ὅστις ὑμᾶς μὴ κακῶς λογίζεται,
ἄπαις διοίσει κοὐ τεκὼν θάψει τέκνα.
ΧΟ. οὗτος μὲν ἤδη μητρὶ κηδεύειν μέλει·
σὺ δ᾽ εἴ τι πράσσειν τῶν προκειμένων θέλεις,
Ἕκτορ, πάρεστι· φῶς γὰρ ἡμέρας τόδε.
ΕΚ. χωρεῖτε, συμμάχους δ᾽ ὁπλίζεσθαι τάχος
ἄνωχθε πληροῦν τ᾽ αὐχένας ξυνωρίδων.
πανοὺς δ᾽ ἔχοντας χρὴ μένειν Τυρσηνικῆς
σάλπιγγος αὐδήν· ὡς ὑπερβαλὼν στρατὸν
τείχη τ᾽ Ἀχαιῶν ναυσὶν αἶθον ἐμβαλεῖν
πέποιθα Τρωσί θ᾽ ἡμέραν ἐλευθέραν
ἀκτῖνα τὴν στείχουσαν ἡλίου φέρειν.

ΧΟ. πείθου βασιλεῖ· στείχωμεν ὅπλοις
κοσμησάμενοι καὶ ξυμμαχίᾳ
τάδε φράζωμεν· τάχα δ᾿ ἂν νίκην
δοίη δαίμων ὁ μεθ᾿ ἡμῶν.

ΤΡΩΙΑΔΕΣ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΠΟΣΕΙΔΩΝ.
ΑΘΗΝΑ.
ΕΚΑΒΗ.
ΧΟΡΟΣ ΑΙΧΜΑΛΩΤΙΔΩΝ ΤΡΩΙΑΔΩΝ.
ΤΑΛΘΥΒΙΟΣ.
ΚΑΣΑΝΔΡΑ.
ΑΝΔΡΟΜΑΧΗ.
ΜΕΝΕΛΑΟΣ.
ΕΛΕΝΗ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ.

Μετὰ τὴν Ἰλίου πόρθησιν ἔδοξεν Ἀθηνᾷ τε καὶ Ποσειδῶνι τὸ τῶν Ἀχαιῶν στράτευμα διαφθεῖραι, τοῦ μὲν εὐνοοῦντος τῇ πόλει διὰ τὴν κτίσιν, τῆς δὲ μισησάσης τοὺς Ἕλληνας διὰ τὴν Αἴαντος εἰς Κασάνδραν ὕβριν. οἱ δὲ Ἕλληνες κληρωσάμενοι περὶ τῶν αἰχμαλώτων γυναικῶν τὰς ἐν ἀξιώμασιν ἔδωκαν Ἀγαμέμνονι μὲν Κασάνδραν, Ἀνδρομάχην δὲ Νεοπτολέμῳ, Πολυξένην δὲ [τῷ] Ἀχιλλεῖ. ταύτην μὲν οὖν ἐπὶ τοῦ τοῦ Ἀχιλλέως τάφου κατέσφαξαν, Ἀστυάνακτα δὲ τὸν τοῦ Ἕκτορος ἀπὸ τῶν τειχέων ἔρριψαν, Ἑλένην δὲ ὡς ἀποκτενῶν Μενέλαος ἤγαγεν, Ἀγαμέμνων δὲ τὴν χρησμῳδὸν ἐνυμφαγώγησεν. Ἑκάβη δὲ τῆς μὲν Ἑλένης κατηγορήσασα, τοὺς ἀναιρεθέντας δὲ κατοδυραμένη τε καὶ θρηνήσασα καὶ κηδεύσασα, πρὸς τὰς Ὀδυσσέως ἤχθη σκηνάς, τούτῳ λατρεύειν δοθεῖσα.

ΕΥΡΙΠΙΔΟΥ

ΤΡΩΙΑΔΕΣ.

ΠΟ. Ἥκω λιπὼν Αἴγαιον ἁλμυρὸν βάθος
πόντου Ποσειδῶν, ἔνθα Νηρῄδων χοροὶ
κάλλιστον ἴχνος ἐξελίσσουσιν ποδός.
ἐξ οὗ γὰρ ἀμφὶ τήνδε Τρωικὴν χθόνα
Φοῖβός τε κἀγὼ λαΐνους πύργους πέριξ
ὀρθοῖσιν ἔθεμεν κανόσιν, οὔποτ᾽ ἐκ φρενῶν
εὔνοι᾽ ἀπέστη τῶν ἐμῶν Φρυγῶν πόλει,
ἣ νῦν καπνοῦται καὶ πρὸς Ἀργείου δορὸς
ὄλωλε πορθηθεῖσ᾽. ὁ γὰρ Παρνάσιος
Φωκεὺς Ἐπειὸς μηχαναῖσι Παλλάδος
ἐγκύμον᾽ ἵππον τευχέων συναρμόσας
πύργων ἔπεμψεν ἐντὸς ὀλέθριον βρέτας·
ὅθεν πρὸς ἀνδρῶν ὑστέρων κεκλήσεται
δούρειος ἵππος, κρυπτὸν ἀμπισχὼν δόρυ.
ἔρημα δ᾽ ἄλση καὶ θεῶν ἀνάκτορα
φόνῳ καταρρεῖ· πρὸς δὲ κρηπίδων βάθροις
πέπτωκε Πρίαμος Ζηνὸς Ἑρκείου θανών.
πολὺς δὲ χρυσὸς Φρύγιά τε σκυλεύματα
πρὸς ναῦς Ἀχαιῶν πέμπεται· μένουσι δὲ
πρύμνηθεν οὖρον, ὡς δεκασπόρῳ χρόνῳ
ἀλόχους τε καὶ τέκν᾽ εἰσίδωσιν ἄσμενοι,
οἳ τήνδ᾽ ἐπεστράτευσαν Ἕλληνες πόλιν.

ἐγὼ δέ, νικῶμαι γὰρ Ἀργείας θεᾶς
Ἥρας Ἀθάνας θ', αἳ συνεξεῖλον Φρύγας,
λείπω τὸ κλεινὸν Ἴλιον βωμούς τ' ἐμούς·
ἐρημία γὰρ πόλιν ὅταν λάβῃ κακή,
νοσεῖ τὰ τῶν θεῶν οὐδὲ τιμᾶσθαι θέλει.
πολλοῖς δὲ κωκυτοῖσιν αἰχμαλωτίδων
βοᾷ Σκάμανδρος δεσπότας κληρουμένων.
καὶ τὰς μὲν Ἀρκάς, τὰς δὲ Θεσσαλὸς λεὼς
εἴληχ' Ἀθηναίων τε Θησεῖδαι πρόμοι.
ὅσαι δ' ἄκληροι Τρῳάδων, ὑπὸ στέγαις
ταῖσδ' εἰσὶ τοῖς πρώτοισιν ἐξῃρημέναι
στρατοῦ, σὺν αὐταῖς δ' ἡ Λάκαινα Τυνδαρὶς
Ἑλένη, νομισθεῖσ' αἰχμάλωτος ἐνδίκως.
τὴν δ' ἀθλίαν τήνδ' εἴ τις εἰσορᾶν θέλει,
πάρεστιν, Ἑκάβην κειμένην πυλῶν πάρος,
δάκρυα χέουσαν πολλὰ καὶ πολλῶν ὕπερ·
ᾗ παῖς μὲν ἀμφὶ μνῆμ' Ἀχιλλείου τάφου
λάθρᾳ τέθνηκε τλημόνως Πολυξένη,
φροῦδος δὲ Πρίαμος καὶ τέκν'· ἣν δὲ παρθένον
μεθῆκ' Ἀπόλλων δρομάδα Κασάνδραν ἄναξ,
τὸ τοῦ θεοῦ τε παραλιπὼν τό τ' εὐσεβὲς
γαμεῖ βιαίως σκότιον Ἀγαμέμνων λέχος.
ἀλλ' ὦ ποτ' εὐτυχοῦσα, χαῖρέ μοι, πόλις
ξεστόν τε πύργωμ'· εἴ σε μὴ διώλεσε
Παλλὰς Διὸς παῖς, ἦσθ' ἂν ἐν βάθροις ἔτι.

ΑΘ. ἔξεστι τὸν γένει μὲν ἄγχιστον πατρὸς
μέγαν τε δαίμον' ἐν θεοῖς τε τίμιον
λύσασαν ἔχθραν τὴν πάρος προσεννέπειν;

ΠΟ. ἔξεστιν· αἱ γὰρ συγγενεῖς ὁμιλίαι,
ἄνασσ' Ἀθάνα, φίλτρον οὐ σμικρὸν φρενῶν.

ΑΘ. ἐπῄνεσ' ὀργὰς ἠπίους· φέρω δὲ σοὶ
κοινοὺς ἐμαυτῇ τ' εἰς μέσον λόγους, ἄναξ.

ΠΟ. μῶν ἐκ θεῶν του καινὸν ἀγγελεῖς ἔπος,
ἢ Ζηνὸς ἢ καὶ δαιμόνων τινὸς πάρα;
ΑΘ. οὔκ, ἀλλὰ Τροίας οὕνεκ᾽, ἔνθα βαίνομεν,
πρὸς σὴν ἀφῖγμαι δύναμιν, ὡς κοινὴν λάβω.
ΠΟ. ἦ πού νιν ἔχθραν τὴν πρὶν ἐκβαλοῦσα νῦν
εἰς οἶκτον ἦλθες πυρὶ κατηθαλωμένης;
ΑΘ. ἐκεῖσε πρῶτ᾽ ἄνελθε· κοινώσει λόγους
καὶ συνθελήσεις ἂν ἐγὼ πρᾶξαι θέλω;
ΠΟ. μάλιστ᾽· ἀτὰρ δὴ καὶ τὸ σὸν θέλω μαθεῖν·
πότερον Ἀχαιῶν ἦλθες οὕνεκ᾽ ἢ Φρυγῶν;
ΑΘ. τοὺς μὲν πρὶν ἐχθροὺς Τρῶας εὐφρᾶναι θέλω,
στρατῷ δ᾽ Ἀχαιῶν νόστον ἐμβαλεῖν πικρόν.
ΠΟ. τί δ᾽ ὧδε πηδᾷς ἄλλοτ᾽ εἰς ἄλλους τρόπους
μισεῖς τε λίαν καὶ φιλεῖς ὃν ἂν τύχῃς;
ΑΘ. οὐκ οἶσθ᾽ ὑβρισθεῖσάν με καὶ ναοὺς ἐμούς;
ΠΟ. οἶδ᾽, ἡνίκ᾽ Αἴας εἷλκε Κασάνδραν βίᾳ.
ΑΘ. κοὐδὲν Ἀχαιῶν ἔπαθεν οὐδ᾽ ἤκουσ᾽ ὕπο.
ΠΟ. καὶ μὴν ἔπερσάν γ᾽ Ἴλιον τῷ σῷ σθένει.
ΑΘ. τοιγάρ σφε σὺν σοὶ βούλομαι δρᾶσαι κακῶς.
ΠΟ. ἕτοιμ᾽ ἃ βούλει τἀπ᾽ ἐμοῦ. δράσεις δὲ τί;
ΑΘ. δύστηνον αὐτοῖς νόστον ἐμβαλεῖν θέλω.
ΠΟ. ἐν γῇ μενόντων ἢ καθ᾽ ἁλμυρὰν ἅλα;
ΑΘ. ὅταν πρὸς οἴκους ναυστολῶσ᾽ ἀπ᾽ Ἰλίου.
καὶ Ζεὺς μὲν ὄμβρον καὶ χάλαζαν ἄσπετον
πέμψει γνοφώδη τ᾽ αἰθέρος φυσήματα,
ἐμοὶ δὲ δώσειν φησὶ πῦρ κεραύνιον,
βάλλειν Ἀχαιοὺς ναῦς τε πιμπράναι πυρί.
σὺ δ᾽ αὖ τὸ σὸν παράσχες Αἴγαιον πόρον
τρικυμίαις βρέμοντα καὶ δίναις ἁλός,
πλῆσον δὲ νεκρῶν κοῖλον Εὐβοίας μυχόν,
ὡς ἂν τὸ λοιπὸν τἄμ᾽ ἀνάκτορ᾽ εὐσεβεῖν
εἰδῶσ᾽ Ἀχαιοὶ θεούς τε τοὺς ἄλλους σέβειν.

ΠΟ. ἔσται τάδ'· ἡ χάρις γὰρ οὐ μακρῶν λόγων
δεῖται· ταράξω πέλαγος Αἰγαίας ἁλός.
ἀκταὶ δὲ Μυκόνου Δήλιοί τε χοιράδες
Σκῦρός τε Λῆμνός θ' αἱ Καφήρειοί τ' ἄκραι
πολλῶν θανόντων σώμαθ' ἕξουσιν νεκρῶν.
ἀλλ' ἕρπ' Ὄλυμπον καὶ κεραυνίους βολὰς
λαβοῦσα πατρὸς ἐκ χερῶν καραδόκει,
ὅταν στράτευμ' Ἀργεῖον ἐξίῃ κάλως.
μῶρος δὲ θνητῶν ὅστις ἐκπορθεῖ πόλεις,
ναούς τε τύμβους θ', ἱερὰ τῶν κεκμηκότων,
ἐρημίᾳ δοὺς αὐτὸς ὤλεθ' ὕστερον.
ΕΚ. ἄνα δύσδαιμον πεδόθεν κεφαλήν,
ἐπάειρε δέρην· οὐκέτι Τροία
τάδε καὶ βασιλεῖς ἐσμεν Τροίας.
μεταβαλλομένου δαίμονος ἀνέχου.
πλεῖ κατὰ πορθμόν, πλεῖ κατὰ δαίμονα,
μηδὲ προσίστω πρῷραν βιότου
πρὸς κῦμα πλέουσα τύχαισιν.
αἰαῖ αἰαῖ.
τί γὰρ οὐ πάρα μοι μελέᾳ στενάχειν,
ᾗ πατρὶς ἔρρει καὶ τέκνα καὶ πόσις;
ὦ πολὺς ὄγκος συστελλόμενος
προγόνων, ὡς οὐδὲν ἄρ' ἦσθα.
τί με χρὴ σιγᾶν; τί δὲ μὴ σιγᾶν;
τί δὲ θρηνῆσαι;
δύστηνος ἐγὼ τῆς βαρυδαίμονος
ἄρθρων κλίσεως, ὡς διάκειμαι,
νῶτ' ἐν στερροῖς λέκτροισι ταθεῖσ'.
οἴμοι κεφαλῆς, οἴμοι κροτάφων
πλευρῶν θ', ὥς μοι πόθος εἱλίξαι
καὶ διαδοῦναι νῶτον ἄκανθάν τ'
εἰς ἀμφοτέρους τοίχους μελέων

ἐπὶ τοὺς ἀεὶ δακρύων ἐλέγους.
μοῦσα δὲ χαὐτὴ τοῖς δυστήνοις
ἄτας κελαδεῖν ἀχορεύτους.
πρῷραι ναῶν ὠκεῖαι,
Ἴλιον ἱερὸν αἳ κώπαις
δι' ἅλα πορφυροειδέα καὶ λιμένας
Ἑλλάδος εὐόρμους
αὐλῶν παιᾶνι στυγνῷ
συρίγγων τ' εὐφθόγγων φωναῖς
βαίνουσαι πλεκτὰν Αἰγύπτου
παιδείαν ἐξηρτήσασθ',
αἰαῖ, Τροίας ἐν κόλποις
τὰν Μενελάου μετανισσόμεναι
στυγνὰν ἄλοχον, Κάστορι λώβαν
τῷ τ' Εὐρώτᾳ δυσκλείαν,
ἃ σφάζει μὲν
τὸν πεντήκοντ' ἀροτῆρα τέκνων
Πρίαμον, ἐμέ τε μελέαν Ἑκάβαν
εἰς τάνδ' ἐξώκειλ' ἄταν.
ὤμοι θάκους οἵους θάσσω
σκηναῖς ἔφεδρος Ἀγαμεμνονίαις.
δούλα δ' ἄγομαι γραῦς ἐξ οἴκων,
κουρᾷ ξυρήκει πενθήρει
κρᾶτ' ἐκπορθηθεῖσ' οἰκτρῶς.
ἀλλ' ὦ τῶν χαλκεγχέων Τρώων
ἄλοχοι μέλεαι καὶ [κόραι] δύσνυμφοι
τύφεται Ἴλιον, αἰάζωμεν·
μάτηρ δ' ὡσεὶ πτανοῖς κλαγγὰν
ὄρνισιν ὅπως ἐξάρξω 'γὼ
μολπὰν οὐ τὰν αὐτὰν
οἵαν ποτὲ δὴ
σκήπτρῳ Πριάμου διερειδομένα

ποδὸς ἀρχεχόρου πλαγαῖς Φρυγίαις
εὐκόμποις ἐξῆρχον θεούς.
ΗΜΙΧ. Ἑκάβη, τί θροεῖς; τί δὲ θωΰσσεις; στρ.
ποῖ λόγος ἥκει; διὰ γὰρ μελάθρων
ἄιον οἴκτους οὓς οἰκτίζει.
διὰ δὲ στέρνων φόβος ἀίσσει
Τρῳάσιν, αἳ τῶνδ᾽ οἴκων εἴσω
δουλείαν αἰάζουσιν.
ΕΚ. [ὦ] τέκν᾽, Ἀργείων πρὸς ναῦς ἤδη
κινεῖται κωπήρης χείρ.
ΗΜΙΧ. οἳ ᾽γὼ τλάμων, τί θέλουσ᾽; ἦ πού μ᾽ ἤδη
ναυσθλώσουσιν πατρῴας ἐκ γᾶς;
ΕΚ. οὐκ οἶδ᾽, εἰκάζω δ᾽ ἄταν.
ΗΜΙΧ. ἰὼ ἰώ.
μέλεαι μόχθων ἐπακουσόμεναι
Τρῳάδες, ἔξω κομίσασθ᾽ οἴκων·
στέλλουσ᾽ Ἀργεῖοι νόστον.
ΕΚ. ἓ ἕ.
μή νύν μοι τὰν
ἐκβακχεύουσαν Κασάνδραν
πέμψητ᾽ ἔξω,
αἰσχύναν Ἀργείοισιν,
μαινάδ᾽, ἐπ᾽ ἄλγει δ᾽ ἀλγυνθῶ.
ἰὼ
Τροία Τροία δύσταν᾽, ἔρρεις,
δύστανοι δ᾽ οἵ σ᾽ ἐκλείποντες
καὶ ζῶντες καὶ δμαθέντες.
ΗΜΙΧ. οἴμοι. τρομερὰ σκηνὰς ἔλιπον ἀντ.
τάσδ᾽ Ἀγαμέμνονος ἐπακουσομένα,
βασίλεια, σέθεν, μή με κτείνειν
δόξ᾽ Ἀργείων κεῖται μελέαν,

153 — 175 = 176 — 196

ἢ κατὰ πρύμνας ἤδη ναῦται
στέλλονται κινεῖν κώπας.
ΕΚ. ὦ τέκνον, ὀρθρεύου σὰν ψυχάν,
ἐκπληχθεῖσ' ἦλθον φρίκᾳ.
ΗΜΙΧ. ἤδη τις ἔβα Δαναῶν κῆρυξ;
τῷ πρόσκειμαι δούλα τλάμων;
ΕΚ. ἐγγύς που κεῖσαι κλήρου.
ΗΜΙΧ. ἰὼ ἰώ.
τίς μ' Ἀργείων ἢ Φθιωτᾶν
ἢ νησαίαν μ' ἄξει χώραν
δύστανον πόρσω Τροίας;
ΕΚ. φεῦ φεῦ.
τῷ δ' ἁ τλάμων
ποῦ πᾷ γαίας δουλεύσω γραῦς,
ὡς κηφήν, ἁ
δειλαία νεκροῦ μορφά,
νεκύων ἀμενηνὸν ἄγαλμ', ἢ
τὰν παρὰ προθύροις φυλακὰν κατέχουσ'
ἢ παίδων θρέπτειρ', ἃ Τροίας
ἀρχαγοὺς εἶχον τιμάς;
ΧΟ. αἰαῖ αἰαῖ. ποίοις δ' οἴκτοις στρ.
τὰν σὰν λύμαν ἐξαιάζεις·
οὐκ Ἰδαίοις ἱστοῖς κερκίδα
δινεύουσ' ἐξαλλάξω.
νέατον τεκέων σώματα λεύσσω,
νέατον· μόχθους ἕξω κρείσσους,
ἢ λέκτροις πλαθεῖσ' Ἑλλάνων·
ἔρροι νὺξ αὕτα καὶ δαίμων·
ἢ Πειρήνας ὑδρευσομένα
πρόπολος σεμνῶν ὑδάτων ἔσομαι.
τὰν κλεινὰν εἴθ' ἔλθοιμεν

197 — 213 = 214 — 229

Θησέως εὐδαίμονα χώραν.
μὴ γὰρ δὴ δίναν γ' Εὐρώτα,
τὰν ἐχθίσταν θεράπναν Ἑλένας,
ἔνθ' ἀντάσω Μενέλᾳ δούλα,
τῷ τᾶς Τροίας πορθητᾷ.
τὰν Πηνειοῦ σεμνὰν χώραν, *ἀντ.*
κρηπῖδ' Οὐλύμπου καλλίσταν,
ὄλβῳ βρίθειν φάμαν ἤκουσ'
εὐθαλεῖ τ' εὐκαρπείᾳ·
τάδε δεύτερά μοι μετὰ τὰν ἱερὰν
Θησέως ζαθέαν ἐλθεῖν χώραν.
καὶ τὰν Αἰτναίαν Ἡφαίστου
Φοινίκας ἀντήρη χώραν,
Σικελῶν ὀρέων ματέρ', ἀκούω
κηρύσσεσθαι στεφάνοις ἀρετᾶς.
τάν τ' ἀγχιστεύουσαν γᾶν
Ἰονίῳ ναύταις πόντῳ,
ἃν ὑγραίνει καλλιστεύων
ὁ ξανθὰν χαίταν πυρσαίνων
Κρᾶθις ζαθέαις παγαῖσι τρέφων
εὔανδρόν τ' ὀλβίζων γᾶν.
καὶ μὴν Δαναῶν ὅδ' ἀπὸ στρατιᾶς
κῆρυξ νεοχμῶν μύθων ταμίας
στείχει ταχύπουν ἴχνος ἐξανύων.
τί φέρει; τί λέγει; δοῦλαι γὰρ δὴ
Δωρίδος ἐσμὲν χθονὸς ἤδη.

ΤΑ. *Ἑκάβη, πυκνὰς γὰρ οἶσθά μ' εἰς Τροίαν ὁδοὺς*
ἐλθόντα κήρυκ' ἐξ Ἀχαϊκοῦ στρατοῦ,
ἐγνωσμένος δὲ καὶ πάροιθέ σοι, γύναι,
Ταλθύβιος ἥκω καινὸν ἀγγελῶν λόγον.

ΕΚ. *τόδε τόδε, φίλαι γυναῖκες, ὃ φόβος ἦν πάλαι.*

ΤΑ. *ἤδη κεκλήρωσθ', εἰ τόδ' ἦν ὑμῖν φόβος.*

ΕΚ. αἰαῖ, τίν' ἢ Θεσσαλίας πόλιν ἢ
Φθιάδος εἶπας ἢ Καδμείας χθονός;
ΤΑ. κατ' ἄνδρ' ἑκάστη κοὐχ ὁμοῦ λελόγχατε.
ΕΚ. τίν' ἄρα τίς ἔλαχε; τίνα πότμος εὐτυχὴς
Ἰλιάδων μένει;
ΤΑ. οἶδ'· ἀλλ' ἕκαστα πυνθάνου, μὴ πάνθ' ὁμοῦ.
ΕΚ. τοὐμὸν τίς τίς ἔλαχε τέκος, ἔννεπε,
τλάμονα Κασάνδραν;
ΤΑ. ἐξαίρετόν νιν ἔλαβεν Ἀγαμέμνων ἄναξ.
ΕΚ. ἦ τᾷ Λακεδαιμονίᾳ νύμφᾳ δούλαν;
ἰώ μοί μοι.
ΤΑ. οὔκ, ἀλλὰ λέκτρων σκότια νυμφευτήρια.
ΕΚ. ἦ τὰν τοῦ Φοίβου παρθένον, ᾇ γέρας ὁ
χρυσοκόμας ἔδωκ' ἄλεκτρον ζωάν;
ΤΑ. ἔρως ἐτόξευσ' αὐτὸν ἐνθέου κόρης.
ΕΚ. ῥῖπτε, τέκνον, ζαθέους
κλεῖδας, ἀπὸ χροὸς ἐν-
δυτῶν στεφέων ἱεροὺς στολμούς.
ΤΑ. οὐ γὰρ μέγ' αὐτῇ βασιλικῶν λέκτρων τυχεῖν;
ΕΚ. τί δ' ὃ νεοχμὸν ἀπ' ἐμέθεν ἐλάβετε τέκος [ποῦ μοι];
ΤΑ. Πολυξένην ἔλεξας, ἢ τίν' ἱστορεῖς;
ΕΚ. [ταύταν] τῷ πάλος ἔζευξεν;
ΤΑ. τύμβῳ τέτακται προσπολεῖν Ἀχιλλέως.
ΕΚ. οἴμοι ἐγώ· τάφῳ πρόσπολον ἐτεκόμαν.
ἀτὰρ τίς ὅδ' ἢ νόμος ἢ
τί θέσμιον, ὦ φίλος, Ἑλλάνων;
ΤΑ. εὐδαιμόνιζε παῖδα σήν· ἔχει καλῶς.
ΕΚ. τί τόδ' ἔλακες; ἆρά μοι ἀέλιον λεύσσει;
ΤΑ. ἔχει πότμος νιν, ὥστ' ἀπηλλάχθαι πόνων.
ΕΚ. τί δ' ἡ τοῦ χαλκεομήστορος Ἕκτορος δάμαρ,
Ἀνδρομάχα τάλαινα, τίν' ἔχει τύχαν;
ΤΑ. καὶ τήνδ' Ἀχιλλέως ἔλαβε παῖς ἐξαίρετον.

ΕΚ. ἐγὼ δὲ τῷ πρόσπολος ἁ τριτοβάμονος χερὶ
δευομένα βάκτρου γεραιῷ κάρᾳ;
ΤΑ. Ἰθάκης Ὀδυσσεὺς ἔλαχ' ἄναξ δούλην σ' ἔχειν.
ΕΚ. ἒ ἔ.
ἄρασσε κρᾶτα κούριμον,
ἕλκ' ὀνύχεσσι δίπτυχον παρειάν.
ἰώ μοί μοι.
μυσαρῷ δολίῳ λέλογχα φωτὶ δουλεύειν,
πολεμίῳ δίκας, παρανόμῳ δάκει,
ὃς πάντα τἀκεῖθεν ἐνθάδ'
ἀντίπαλ' αὖθις ἐκεῖσε διπτύχῳ γλώσσᾳ
φίλα τὰ πρότερ' ἄφιλα τιθέμενος. πάντως
γοᾶσθ', ὦ Τρῳάδες, με.
βέβακα δύσποτμος, οἴχομαι
ἁ τάλαινα, δυστυχεστάτῳ
προσέπεσον κλήρῳ.
ΧΟ. τὸ μὲν σὸν οἶσθα, πότνια, τὰς δ' ἐμὰς τύχας
τίς ἆρ' Ἀχαιῶν ἢ τίς Ἑλλήνων ἔχει;
ΤΑ. ἴτ', ἐκκομίζειν δεῦρο Κασάνδραν χρεὼν
ὅσον τάχιστα, δμῶες, ὡς στρατηλάτῃ
εἰς χεῖρα δῶμεν· εἶτα τὰς εἰλῃγμένας
καὶ τοῖσιν ἄλλοις αἰχμαλωτίδων ἄγω.
ἔα, τί πεύκης ἔνδον ἵσταται σέλας;
πιμπρᾶσιν ἢ τί δρῶσι Τρῳάδες μυχούς,
ὡς ἐξάγεσθαι τῆσδε μέλλουσαι χθονὸς
πρὸς Ἄργος, αὑτῶν τ' ἐκπυροῦσι σώματα
θανεῖν θέλουσαι; κάρτα τοι τοὐλεύθερον
ἐν τοῖς τοιούτοις δυσλόφως φέρει κακά.
ἄνοιγ' ἄνοιγε, μὴ τὸ ταῖσδε πρόσφορον,
ἐχθρὸν δ' Ἀχαιοῖς, εἰς ἔμ' αἰτίαν βάλῃ.
ΕΚ. οὐκ ἔστιν, οὐ πιμπρᾶσιν, ἀλλὰ παῖς ἐμὴ
μαινὰς θοάζει δεῦρο Κασάνδρα δρόμῳ.

ΚΑ. ἄνεχε, πάρεχε, φῶς φέρε· σέβω, φλέγω στρ.
λαμπάσι τόδ' ἱερόν.
Ὑμήν, ὦ Ὑμέναι' ἄναξ, ἰοὺ ἰού.
μακάριος ὁ γαμέτας,
μακαρία δ' ἐγὼ βασιλικοῖς λέκτροις
κατ' Ἄργος ἁ γαμουμένα.
Ὑμήν, ὦ Ὑμέναι' ἄναξ.
ἐπεὶ σύ, μᾶτερ, ἐπὶ δάκρυσι καὶ
γόοισι τὸν θανόντα πατέρα πατρίδα τε
φίλαν καταστένουσ' ἔχεις,
ἐγὼ τόδ' ἐπὶ γάμοις ἐμοῖς
ἀναφλέγω πυρὸς φῶς
ἐς αὐγάν, ἐς αἴγλαν,
διδοῦσ' ὦ Ὑμέναιε σοί,
διδοῦσ' ὦ Ἑκάτα φάος,
παρθένων ἐπὶ λέκτροις ἃ νόμος ἔχει.
πάλλε πόδ' αἰθέριον, ἄνεχε χορόν, εὐὰν εὐοῖ, ἀντ.
ὡς ἐπὶ πατρὸς ἐμοῦ
μακαριωτάταις τύχαις.
ὁ χορὸς ὅσιος,
ἄγε σὺ Φοῖβέ νυν· κατὰ σὸν ἐν δάφναις
ἀνάκτορον θυηπολῶ,
Ὑμήν, ὦ Ὑμέναι', Ὑμήν.
χόρευε, μᾶτερ, ἄναγε, πόδα σὸν
ἕλισσε τᾷδ' ἐκεῖσε μετ' ἐμέθεν ποδῶν
φέρουσα φιλτάταν βάσιν.
βοᾶτε τὸν Ὑμέναιον, ὤ,
μακαρίαις ἀοιδαῖς
ἰαχαῖς τε νύμφαν.
ἴτ', ὦ καλλίπεπλοι Φρυγῶν

308—324 = 325—341

κόραι, μέλπετ' ἐμῶν γάμων
τὸν πεπρωμένον εὐνᾷ πόσιν ἐμέθεν.
ΧΟ. βασίλεια, βακχεύουσαν οὐ λήψει κόρην,
μὴ κοῦφον αἴρῃ βῆμ' ἐς Ἀργείων στρατόν;
ΕΚ. Ἥφαιστε, δᾳδουχεῖς μὲν ἐν γάμοις βροτῶν,
ἀτὰρ λυγράν γε τήνδ' ἀναιθύσσεις φλόγα
ἔξω τε μεγάλων ἐλπίδων. οἴμοι, τέκνον,
ὡς οὐχ ὑπ' αἰχμῆς σ' οὐδ' ὑπ' Ἀργείου δορὸς
γάμους γαμεῖσθαι τούσδ' ἐδόξαζόν ποτε.
παράδος ἐμοὶ φῶς· οὐ γὰρ ὀρθὰ πυρφορεῖς
μαινὰς θοάζουσ', οὐδὲ σαὶ τύχαι, τέκνον,
σεσωφρονήκασ', ἀλλ' ἔτ' ἐν ταὐτῷ μένεις.
εἰσφέρετε πεύκας δάκρυά τ' ἀνταλλάσσετε
τοῖς τῆσδε μέλεσι, Τρῳάδες, γαμηλίοις.
ΚΑ. μῆτερ, πύκαζε κρᾶτ' ἐμὸν νικηφόρον
καὶ χαῖρε τοῖς ἐμοῖσι βασιλικοῖς γάμοις
καὶ πέμπε, κἂν μὴ τἀμά σοι πρόθυμά γ' ᾖ,
ὤθει βιαίως· εἰ γὰρ ἔστι Λοξίας,
Ἑλένης γαμεῖ με δυσχερέστερον γάμον
ὁ τῶν Ἀχαιῶν κλεινὸς Ἀγαμέμνων ἄναξ.
κτενῶ γὰρ αὐτὸν κἀντιπορθήσω δόμους
ποινὰς ἀδελφῶν καὶ πατρὸς λαβοῦσ' ἐμοῦ.
ἀλλ' αὔτ' ἐάσω· πέλεκυν οὐχ ὑμνήσομεν,
ὃς εἰς τράχηλον τὸν ἐμὸν εἶσι χἀτέρων,
μητροκτόνους τ' ἀγῶνας, οὓς οὑμοὶ γάμοι
θήσουσιν, οἴκων τ' Ἀτρέως ἀνάστασιν·
πόλιν δὲ δείξω τήνδε μακαριωτέραν
ἢ τοὺς Ἀχαιούς, ἔνθεος μέν, ἀλλ' ὅμως
τοσόνδε γ' ἔξω στήσομαι βακχευμάτων·
οἳ διὰ μίαν γυναῖκα καὶ μίαν Κύπριν
θηρῶντες Ἑλένην μυρίους ἀπώλεσαν.
ὁ δὲ στρατηγὸς ὁ σοφὸς ἐχθίστων ὕπερ

τὰ φίλτατ᾽ ὤλεσ᾽, ἡδονὰς τὰς οἴκοθεν
τέκνων ἀδελφῷ δοὺς γυναικὸς οὕνεκα
καὶ ταῦθ᾽ ἑκούσης κοὐ βίᾳ λελῃσμένης.
ἐπεὶ δ᾽ ἐπ᾽ ἀκτὰς ἤλυθον Σκαμανδρίους,
ἔθνησκον, οὐ γῆς ὅρι᾽ ἀποστερούμενοι
οὐδ᾽ ὑψιπύργου πατρίδος· οὓς δ᾽ Ἄρης ἕλοι,
οὐ παῖδας εἶδον, οὐ δάμαρτος ἐν χεροῖν
πέπλοις συνεστάλησαν, ἐν ξένῃ δὲ γῇ
κεῖνται. τὰ δ᾽ οἴκοι τοῖσδ᾽ ὅμοι᾽ ἐγίγνετο·
χῆραί τ᾽ ἔθνησκον, οἱ δ᾽ ἄπαιδες ἐν δόμοις
ἄλλοις τέκν᾽ ἐκθρέψαντες, οὐδὲ πρὸς τάφους
ἔσθ᾽ ὅστις αὐτοῖς αἷμα γῇ δωρήσεται.
ἦ τοῦδ᾽ ἐπαίνου τὸ στράτευμ᾽ ἐπάξιον.
σιγᾶν ἄμεινον τἀσχρά, μηδὲ μοῦσά μοι
γένοιτ᾽ ἀοιδὸς ἥτις ὑμνήσει κακά.
Τρῶες δὲ πρῶτον μέν, τὸ κάλλιστον κλέος,
ὑπὲρ πάτρας ἔθνησκον· οὓς δ᾽ ἕλοι δόρυ,
νεκροί γ᾽ ἐς οἴκους φερόμενοι φίλων ὕπο
ἐν γῇ πατρῴᾳ περιβολὰς εἶχον χθονός,
χερσὶν περισταλέντες ὧν ἐχρῆν ὕπο·
ὅσοι δὲ μὴ θάνοιεν ἐν μάχῃ Φρυγῶν,
ἀεὶ κατ᾽ ἦμαρ σὺν δάμαρτι καὶ τέκνοις
ᾤκουν, Ἀχαιοῖς ὧν ἀπῆσαν ἡδοναί.
τὰ δ᾽ Ἕκτορός σοι λύπρ᾽ ἄκουσον ὡς ἔχει·
δόξας ἀνὴρ ἄριστος οἴχεται θανών,
καὶ ταῦτ᾽ Ἀχαιῶν ἧξις ἐξεργάζεται·
εἰ δ᾽ ἦσαν οἴκοι, χρηστὸς ἔλαθεν ἂν γεγώς.
Πάρις τ᾽ ἔγημε τὴν Διός· γήμας δὲ μή,
σιγώμενον τὸ κῦδος εἶδεν ἐν δόμοις.
φεύγειν μὲν οὖν χρὴ πόλεμον ὅστις εὖ φρονεῖ·
εἰ δ᾽ εἰς τόδ᾽ ἔλθοι, στέφανος οὐκ αἰσχρὸς πόλει
καλῶς ὀλέσθαι, μὴ καλῶς δὲ δυσκλεές.

ὧν οὕνεκ᾽ οὐ χρή, μῆτερ, οἰκτείρειν σε γῆν,
οὐ τἀμὰ λέκτρα· τοὺς γὰρ ἐχθίστους ἐμοὶ
καὶ σοὶ γάμοισι τοῖς ἐμοῖς διαφθερῶ.

ΧΟ. ὡς ἡδέως κακοῖσιν οἰκείοις γελᾷς
μέλπεις θ᾽ ἃ μέλπουσ᾽ οὐ σαφῆ δείξεις ἴσως.

ΤΑ. εἰ μή σ᾽ Ἀπόλλων ἐξεβάκχευσεν φρένας,
οὐκ ἂν ἀμισθὶ τοὺς ἐμοὺς στρατηλάτας
τοιαῖσδε φήμαις ἐξέπεμπες ἂν χθονός.
ἀτὰρ τὰ σεμνὰ καὶ δοκήμασιν σοφὰ
οὐδέν τι κρείσσω τῶν τὸ μηδὲν ἦν ἄρα.
ὁ γὰρ μέγιστος τῶν Πανελλήνων ἄναξ,
Ἀτρέως φίλος παῖς, τῆσδ᾽ ἔρωτ᾽ ἐξαίρετον
μαινάδος ὑπέστη· καὶ πένης μέν εἰμ᾽ ἐγώ,
ἀτὰρ λέχος γε τῆσδ᾽ ἂν οὐκ ἐκτησάμην.
καὶ σοὶ μέν, οὐ γὰρ ἀρτίας ἔχεις φρένας,
Ἀργεῖ᾽ ὀνείδη καὶ Φρυγῶν ἐπαινέσεις
ἀνέμοις φέρεσθαι παραδίδωμ᾽· ἕπου δέ μοι
πρὸς ναῦς, καλὸν νύμφευμα τῷ στρατηλάτῃ.
σὺ δ᾽, ἡνίκ᾽ ἄν σε Λαρτίου χρῄζῃ τόκος
ἄγειν, ἕπεσθαι· σώφρονος δ᾽ ἔσει λάτρις
γυναικός, ὥς φασ᾽ οἱ μολόντες Ἴλιον.

ΚΑ. ἦ δεινὸς ὁ λάτρις. τί ποτ᾽ ἔχουσι τοὔνομα
κήρυκες; ἓν ἀπέχθημα πάγκοινον βροτοῖς
οἱ περὶ τυράννους καὶ πόλεις ὑπηρέται.
σὺ τὴν ἐμὴν φὴς μητέρ᾽ εἰς Ὀδυσσέως
ἥξειν μέλαθρα; ποῦ δ᾽ Ἀπόλλωνος λόγοι,
οἵ φασιν αὐτὴν εἰς ἔμ᾽ ἡρμηνευμένοι
αὐτοῦ θανεῖσθαι; τἄλλα δ᾽ οὐκ ὀνειδιῶ.
δύστηνος, οὐκ οἶδ᾽ οἷά νιν μένει παθεῖν·
ὡς χρυσὸς αὐτῷ τἀμὰ καὶ Φρυγῶν κακὰ
δόξει ποτ᾽ εἶναι. δέκα γὰρ ἐκπλήσας ἔτη
πρὸς τοῖσιν ἐνθάδ᾽, ἵξεται μόνος πάτραν.

οὗ δὴ στενὸν δίαυλον ᾤκισται πέτρας
δεινὴ Χάρυβδις, ὠμόφρων τ' ἐπιστάτης
Κύκλωψ, Λιγυστίς θ' ἡ συῶν μορφώτρια
Κίρκη, θαλάσσης θ' ἁλμυρᾶς ναυάγια,
λωτοῦ τ' ἔρωτες, Ἡλίου θ' ἁγναὶ βόες,
αἳ σάρκα φωνήεσσαν ἥσουσίν ποτε,
πικρὰν Ὀδυσσεῖ γῆρυν. ὡς δὲ συντέμω,
καὶ ζῶν ἐς Ἅιδην κἀκφυγὼν λίμνης ὕδωρ
κάκ' ἐν δόμοισι μυρί' εὑρήσει μολών.
ἀλλὰ γὰρ τί τοὺς Ὀδυσσέως ἐξακοντίζω πόνους;
στεῖχ' ὅπως τάχιστ'· ἐς Ἅιδου νυμφίῳ γαμώμεθα.
ἦ κακὸς κακῶς ταφήσει νυκτός, οὐκ ἐν ἡμέρᾳ,
ὦ δοκῶν σεμνόν τι πράσσειν, Δαναϊδῶν ἀρχηγέτα.
κἀμέ τοι νεκρὸν φάραγγες γυμνάδ' ἐκβεβλημένην
ὕδατι χειμάρρῳ ῥέουσαι νυμφίου πέλας τάφου
θηρσὶ δώσουσιν δάσασθαι, τὴν Ἀπόλλωνος λάτριν.
ὦ στέφη τοῦ φιλτάτου μοι θεῶν, ἀγάλματ' εὔια,
χαίρετ'· ἐκλέλοιπα δ' ὁρτάς, αἷς πάροιθ' ἠγαλλόμην.
ἴτ' ἀπ' ἐμοῦ χρωτὸς σπαραγμοῖς, ὡς ἔτ' οὖσ' ἁγνὴ χρόα
δῶ θοαῖς αὔραις φέρεσθαί σοι τάδ', ὦ μαντεῖ' ἄναξ.
ποῦ σκάφος τὸ τοῦ στρατηγοῦ; ποῦ ποτ' ἐμβαίνειν με χρή;
οὐκέτ' ἂν φθάνοις ἂν αὔραν ἱστίοις καραδοκῶν,
ὡς μίαν τριῶν Ἐρινὺν τῆσδέ μ' ἐξάξων χθονός.
χαῖρέ μοι, μῆτερ, δακρύσῃς μηδέν, ὦ φίλη πατρίς·

οἵ τε γῆς ἔνερθ' ἀδελφοὶ χὠ τεκὼν ἡμᾶς πατήρ,
οὐ μακρὰν δέξεσθέ μ'· ἥκω δ' εἰς νεκροὺς νικη-
φόρος
καὶ δόμους πέρσασ' Ἀτρειδῶν, ὧν ἀπωλόμεσθ'
ὕπο.

ΧΟ. Ἑκάβης γεραιᾶς φύλακες, οὐ δεδόρκατε
δέσποιναν ὡς ἄναυδος εἰς πέδον πίτνει;
οὐκ ἀντιλήψεσθ'; ἢ μεθήσετ', ὦ κακαί,
γραῖαν πεσοῦσαν; αἴρετ' εἰς ὀρθὸν δέμας.

ΕΚ. ἐᾶτέ μ', οὔτοι φίλα τὰ μὴ φίλ', ὦ κόραι,
κεῖσθαι πεσοῦσαν· πτωμάτων γὰρ ἄξια
πάσχω τε καὶ πέπονθα κἄτι πείσομαι.
ὦ θεοί· κακοὺς μὲν ἀνακαλῶ τοὺς συμμάχους,
ὅμως δ' ἔχει τι σχῆμα κικλήσκειν θεούς,
ὅταν τις ἡμῶν δυστυχῆ λάβῃ τύχην.
πρῶτον μὲν οὖν μοι τἀγάθ' ἐξᾆσαι φίλον·
τοῖς γὰρ κακοῖσι πλείον' οἶκτον ἐμβαλῶ.
ἥμην τύραννος κεἰς τύραννν' ἐγημάμην,
κἀνταῦθ' ἀριστεύοντ' ἐγεινάμην τέκνα,
οὐκ ἀριθμὸν ἄλλως, ἀλλ' ὑπερτάτους Φρυγῶν·
οὐ Τρῳὰς οὐδ' Ἑλληνὶς οὐδὲ βάρβαρος
γυνὴ τεκοῦσα κομπάσειεν ἄν ποτε.
κἀκεῖνά τ' εἶδον δορὶ πεσόνθ' Ἑλληνικῷ,
τρίχας δ' ἐτμήθην τάσδε πρὸς τύμβοις νεκρῶν,
καὶ τὸν φυτουργὸν Πρίαμον οὐκ ἄλλων πάρα
κλύουσ' ἔκλαυσα, τοῖσδε δ' εἶδον ὄμμασιν
αὐτὴ κατασφαγέντ' ἐφ' ἑρκείῳ πυρᾷ,
πόλιν θ' ἁλοῦσαν. ἃς δ' ἔθρεψα παρθένους
εἰς ἀξίωμα νυμφίων ἐξαίρετον,
ἄλλοισι θρέψασ' ἐκ χερῶν ἀφῃρέθην.
κοὔτ' ἐξ ἐκείνων ἐλπὶς ὡς ὀφθήσομαι,
αὐτή τ' ἐκείνας οὐκέτ' ὄψομαί ποτε.

τὸ λοίσθιον δὲ θριγκὸς ἀθλίων κακῶν,
δούλη γυνὴ γραῦς Ἑλλάδ᾽ εἰσαφίξομαι.
ἃ δ᾽ ἐστὶ γήρᾳ τῷδ᾽ ἀσυμφορώτατα,
τούτοις με προσθήσουσιν, ἢ θυρῶν λάτριν
κλεῖδας φυλάσσειν, τὴν τεκοῦσαν Ἕκτορα,
ἢ σιτοποιεῖν, κἀν πέδῳ κοίτας ἔχειν
ῥυσοῖσι νώτοις βασιλικῶν ἐκ δεμνίων,
τρυχηρὰ περὶ τρυχηρὸν εἱμένην χρόα
πέπλων λακίσματ᾽, ἀδόκιμ᾽ ὀλβίοις ἔχειν.
οἲ ᾽γὼ τάλαινα, διὰ γάμον μιᾶς ἕνα
γυναικὸς οἵων ἔτυχον ὧν τε τεύξομαι.
ὦ τέκνον, ὦ σύμβακχε Κασάνδρα θεοῖς,
οἵαις ἔλυσας συμφοραῖς ἅγνευμα σόν.
σύ τ᾽ ὦ τάλαινα, ποῦ ποτ᾽ εἶ, Πολυξένη;
ὡς οὔτε μ᾽ ἄρσην οὔτε θήλεια σπορὰ
πολλῶν γενομένων τὴν τάλαιναν ὠφελεῖ.
τί δῆτά μ᾽ ὀρθοῦτ᾽; ἐλπίδων ποίων ὕπο;
ἄγετε τὸν ἁβρὸν δήποτ᾽ ἐν Τροίᾳ πόδα,
νῦν δ᾽ ὄντα δοῦλον, στιβάδα πρὸς χαμαιπετῆ
πέτρινά τε κρήδεμν᾽, ὡς πεσοῦσ᾽ ἀποφθαρῶ
δακρύοις καταξανθεῖσα. τῶν δ᾽ εὐδαιμόνων
μηδένα νομίζετ᾽ εὐτυχεῖν πρὶν ἂν θάνῃ.

ΧΟ. ἀμφί μοι Ἴλιον, ὦ στρ.
Μοῦσα, καινῶν ὕμνων
ἆεισον ἐν δακρύοις
ᾠδὰν ἐπικήδειον·
νῦν γὰρ μέλος εἰς Τροίαν
ἰαχήσω,
τετραβάμονος ὡς ὑπ᾽ ἀπήνας
Ἀργείων ὀλόμαν τάλαινα δοριάλωτος,
ὅτ᾽ ἔλιπον ἵππον οὐράνια

511—530 = 531—550

βρέμοντα χρυσεοφάλαρον ἔνοπλον
ἐν πύλαις Ἀχαιοί·
ἀνὰ δ' ἐβόασεν λεὼς
Τρῳάδος ἀπὸ πέτρας σταθείς·
ἴτ' ὦ πεπαυμένοι πόνων,
τόδ' ἱερὸν ἀγάγετε ξόανον
Ἰλιάδι Διογενεῖ κόρᾳ.
τίς οὐκ ἔβα νεανίδων,
τίς οὐ γεραιὸς ἐκ δόμων;
κεχαρμένοι δ' ἀοιδαῖς
δόλιον ἔσχον ἄταν.
πᾶσα δὲ γέννα Φρυγῶν ἀντ.
πρὸς πύλας ὡρμάθη,
πεύκᾳ ἐν οὐρείᾳ
ξεστὸν λόχον Ἀργείων
καὶ Δαρδανίας ἄταν
θεᾷ δώσων
χάριν ἄζυγος ἀμβροτοπώλου·
κλωστοῦ δ' ἀμφιβόλοις λίνοιο, ναὸς ὡσεὶ
σκάφος κελαινὸν εἰς ἕδρανα
λάινα δάπεδά τε φόνια πατρίδι
Παλλάδος θέσαν θεᾶς.
ἐν δὲ πόνῳ καὶ χαρᾷ
νύχιον ἐπὶ κνέφας παρῆν,
Λίβυς τε λωτὸς ἐκτύπει
Φρύγιά τε μέλεα, παρθένοι δ'
ἀέριον ἀνὰ κρότον ποδῶν
βοάν τ' ἔμελπον εὔφρον'· ἐν
δόμοις δὲ παμφαὲς σέλας
πυρὸς μέλαιναν αἴγλαν
* * ἔδωκεν ὕπνῳ.
ἐγὼ δὲ τὰν ὀρεστέραν

τότ᾽ ἀμφὶ μέλαθρα παρθένον,
Διὸς κόραν ἐμελπόμαν
χοροῖσι· φοινία δ᾽ ἀνὰ
πτόλιν βοὰ κατεῖχε Περ-
γάμων ἕδρας· βρέφη δὲ φίλι-
α περὶ πέπλους ἔβαλλε μα-
τρὶ χεῖρας ἐπτοημένας·
λόχου δ᾽ ἐξέβαιν᾽ Ἄρης,
κόρας ἔργα Παλλάδος.
σφαγαὶ δ᾽ ἀμφιβώμιοι
Φρυγῶν, ἔν τε δεμνίοις
καράτομος ἐρημία
νεανίδων στέφανον ἔφερεν
Ἑλλάδι κουροτρόφον,
Φρυγῶν δὲ πατρίδι πένθος.
Ἑκάβη, λεύσσεις τήνδ᾽ Ἀνδρομάχην
ξενικοῖς ἐπ᾽ ὄχοις πορθμευομένην;
παρὰ δ᾽ εἰρεσίᾳ μαστῶν ἕπεται
φίλος Ἀστυάναξ, Ἕκτορος ἶνις.
ΕΚ. ποῖ ποτ᾽ ἀπήνης νώτοισι φέρει,
δύστανε γύναι, πάρεδρος χαλκέοις
Ἕκτορος ὅπλοις σκύλοις τε Φρυγῶν
δοριθηράτοις,
οἷσιν Ἀχιλλέως παῖς Φθιώτας
στέψει ναοὺς ἀπὸ Τροίας;
ΑΝ. Ἀχαιοὶ δεσπόται μ᾽ ἄγουσιν. στρ.
ΕΚ. ὤμοι. ΑΝ. τί παιᾶν᾽ ἐμὸν στενάζεις
ΕΚ. αἰαῖ. ΑΝ. τῶνδ᾽ ἀλγέων
ΕΚ. ὦ Ζεῦ. ΑΝ. καὶ συμφορᾶς;
ΕΚ. τέκεα, ΑΝ. πρίν ποτ᾽ ἦμεν.
ΕΚ. βέβακ᾽ ὄλβος, βέβακε Τροία ἀντ.

577—581 = 582—586

ΑΝ. τλάμων. ΕΚ. ἐμῶν τ' εὐγένεια παίδων.
ΑΝ. φεῦ φεῦ. ΕΚ. φεῦ δῆτ' ἐμῶν
ΑΝ. κακῶν. ΕΚ. οἰκτρὰ τύχα
ΑΝ. πόλεος, ΕΚ. ἃ καπνοῦται.
ΑΝ. μόλοις ὦ πόσις μοι, στρ.
ΕΚ. βοᾷς τὸν παρ' Ἅιδᾳ
παῖδ' ἐμόν, ὦ μελέα.
ΑΝ. σᾶς δάμαρτος ἄλκαρ.
ΕΚ. σύ τ' ὦ λῦμ' Ἀχαιῶν, ἀντ.
ΑΝ. τέκνων δέσποθ' ἁμῶν
πρεσβυγενὲς Πρίαμε.
ΕΚ. κοίμισαί μ' ἐς Ἅιδου.
ΑΝ. οἵδε πόθοι μεγάλοι· σχετλία, τάδε πάσχομεν ἄλγη,
οἰχομένας πόλεως, ἐπὶ δ' ἄλγεσιν ἄλγεα κεῖνται
δυσφροσύναισι θεῶν, ὅτε σὸς γόνος ἔκφυγεν ᾅδαν,
ὃς λεχέων στυγερῶν χάριν ὤλεσε πέργαμα Τροίας.
αἱματόεντα δὲ θεᾷ παρὰ Παλλάδι σώματα νεκρῶν
γυψὶ φέρειν τέταται· ζυγὰ δ' ἤνυσε δούλια Τροία.
ΕΚ. ὦ πατρὶς ὦ μελέα, καταλειπομέναν σε δακρύω,
νῦν τέλος οἰκτρὸν ὁρᾷς, καὶ ἐμὸν δόμον ἔνθ' ἐλοχεύθην.
ὦ τέκν', ἐρημόπολις μάτηρ ἀπολείπεται ὑμῶν.
οἷος ἰάλεμος οἷά τε πένθη * * * * * *
δάκρυά τ' ἐκ δακρύων καταλείβεται * * * * *
ἁμετέροισι δόμοις. ὁ θανὼν δ' ἐπι- * * * * *
[λάθεται ἀλγέων ἀδάκρυτος.]
ΧΟ. ὡς ἡδὺ δάκρυα τοῖς κακῶς πεπραγόσι
θρήνων τ' ὀδυρμοὶ μοῦσά θ' ἣ λύπας ἔχει.

587 — 590 = 591 — 594

ΑΝ. ὦ μῆτερ ἀνδρός, ὅς ποτ' Ἀργείων δορὶ
πλείστους διώλεσ', Ἕκτορος, τάδ' εἰσορᾷς;
ΕΚ. ὁρῶ τὰ τῶν θεῶν, ὡς τὰ μὲν πυργοῦσ' ἄνω
τὰ μηδὲν ὄντα, τὰ δὲ δοκοῦντ' ἀπώλεσαν.
ΑΝ. ἀγόμεθα λεία σὺν τέκνῳ, τὸ δ' εὐγενὲς
εἰς δοῦλον ἥκει, μεταβολὰς τοιάσδ' ἔχον.
ΕΚ. τὸ τῆς ἀνάγκης δεινόν· ἄρτι κἀπ' ἐμοῦ
βέβηκ' ἀποσπασθεῖσα Κασάνδρα βίᾳ.
ΑΝ. φεῦ φεῦ·
ἄλλος τις Αἴας, ὡς ἔοικε, δεύτερος
παιδὸς πέφηνε σῆς· νοσεῖς δὲ χἄτερα.
ΕΚ. ὧν γ' οὔτε μέτρον οὔτ' ἀριθμός ἐστί μοι·
κακῷ κακὸν γὰρ εἰς ἅμιλλαν ἔρχεται.
ΑΝ. τέθνηκέ σοι παῖς πρὸς τάφῳ Πολυξένη
σφαγεῖσ' Ἀχιλλέως, δῶρον ἀψύχῳ νεκρῷ.
ΕΚ. οἲ 'γὼ τάλαινα. τοῦτ' ἐκεῖνό μοι πάλαι
Ταλθύβιος αἴνιγμ' οὐ σαφῶς εἶπεν σαφές.
ΑΝ. εἶδόν νιν αὐτὴ κἀποβᾶσα τῶνδ' ὄχων
ἔκρυψα πέπλοις κἀπεκοψάμην νεκρόν.
ΕΚ. αἰαῖ, τέκνον, σῶν ἀνοσίων προσφαγμάτων·
αἰαῖ μάλ' αὖθις, ὡς κακῶς διόλλυσαι.
ΑΝ. ὄλωλεν ὡς ὄλωλεν, ἀλλ' ὅμως ἐμοῦ
ζώσης γ' ὄλωλεν εὐτυχεστέρῳ πότμῳ.
ΕΚ. οὐ ταὐτόν, ὦ παῖ, τῷ βλέπειν τὸ κατθανεῖν·
τὸ μὲν γὰρ οὐδέν, τῷ δ' ἔνεισιν ἐλπίδες.
ΑΝ. ὦ μῆτερ ὦ τεκοῦσα, κάλλιστον λόγον
ἄκουσον, ὥς σοι τέρψιν ἐμβάλω φρενί.
τὸ μὴ γενέσθαι τῷ θανεῖν ἴσον λέγω,
τοῦ ζῆν δὲ λυπρῶς κρεῖσσόν ἐστι κατθανεῖν.
ἀλγεῖ γὰρ οὐδὲν τῶν κακῶν ᾐσθημένος·
ὁ δ' εὐτυχήσας εἰς τὸ δυστυχὲς πεσὼν
ψυχὴν ἀλᾶται τῆς πάροιθ' εὐπραξίας.

κείνη δ᾽ ὁμοίως ὥσπερ οὐκ ἰδοῦσα φῶς
τέθνηκε κοὐδὲν οἶδε τῶν αὑτῆς κακῶν.
ἐγὼ δὲ τοξεύσασα τῆς εὐδοξίας
λαχοῦσα πλεῖον τῆς τύχης ἡμάρτανον.
ἃ γὰρ γυναιξὶ σώφρον᾽ ἔσθ᾽ εὑρημένα,
ταῦτ᾽ ἐξεμόχθουν Ἕκτορος κατὰ στέγας.
πρῶτον μέν, ἔνθα κἂν προσῇ κἂν μὴ προσῇ
ψόγος γυναιξίν, αὐτὸ τοῦτ᾽ ἐφέλκεται
κακῶς ἀκούειν, ἥτις οὐκ ἔνδον μένει,
τούτου παρεῖσα πόθον ἔμιμνον ἐν δόμοις
εἴσω μελάθρων· κομψὰ θηλειῶν ἔπη
οὐκ εἰσεφρούμην, τὸν δὲ νοῦν διδάσκαλον
οἴκοθεν ἔχουσα χρηστὸν ἐξήρκουν ἐμοί.
γλώσσης τε σιγὴν ὄμμα θ᾽ ἥσυχον πόσει
παρεῖχον· ᾔδειν δ᾽ ἁμὲ χρῆν νικᾶν πόσιν,
κείνῳ τε νίκην ὧν ἐχρῆν παριέναι.
καὶ τῶνδε κληδὼν εἰς στράτευμ᾽ Ἀχαϊκὸν
ἐλθοῦσ᾽ ἀπώλεσέν μ᾽· ἐπεὶ γὰρ ἡρέθην,
Ἀχιλλέως με παῖς ἐβουλήθη λαβεῖν
δάμαρτα· δουλεύσω δ᾽ ἐν αὐθεντῶν δόμοις.
κεἰ μὲν παρώσασ᾽ Ἕκτορος φίλον κάρα
πρὸς τὸν παρόντα πόσιν ἀναπτύξω φρένα,
κακὴ φανοῦμαι τῷ θανόντι· τόνδε δ᾽ αὖ
στυγοῦσ᾽ ἐμαυτῆς δεσπόταις μισήσομαι.
καίτοι λέγουσιν ὡς μί᾽ εὐφρόνη χαλᾷ
τὸ δυσμενὲς γυναικὸς εἰς ἀνδρὸς λέχος·
[ἀπέπτυσ᾽ αὐτήν, ἥτις ἄνδρα τὸν πάρος
καινοῖσι λέκτροις ἀποβαλοῦσ᾽ ἄλλον φιλεῖ.]
ἀλλ᾽ οὐδὲ πῶλος ἥτις ἂν διαζυγῇ
τῆς συντραφείσης, ῥᾳδίως ἕλξει ζυγόν.
καίτοι τὸ θηριῶδες ἄφθογγόν τ᾽ ἔφυ
ξυνέσει τ᾽ ἄχρηστον τῇ φύσει τε λείπεται.

σὲ δ', ὦ φίλ' Ἕκτορ, εἶχον ἄνδρ' ἀρκοῦντά μοι
ξυνέσει γένει πλούτῳ τε κἀνδρείᾳ μέγαν·
ἀκήρατον δέ μ' ἐκ πατρὸς λαβὼν δόμων
πρῶτος τὸ παρθένειον ἐζεύξω λέχος.
καὶ νῦν ὄλωλας μὲν σύ, ναυσθλοῦμαι δ' ἐγὼ
πρὸς Ἑλλάδ' αἰχμάλωτος εἰς δοῦλον ζυγόν.
ἆρ' οὐκ ἐλάσσω τῶν ἐμῶν ἡγεῖ κακῶν
Πολυξένης ὄλεθρον, ἣν καταστένεις;
ἐμοὶ γὰρ οὐδ' ὃ πᾶσι λείπεται βροτοῖς
ξύνεστιν ἐλπίς, οὐδὲ κλέπτομαι φρένας
πράξειν τι κεδνόν· ἡδὺ δ' ἐστὶ καὶ δοκεῖν.

ΧΟ. εἰς ταὐτὸν ἥκεις συμφορᾶς· θρηνοῦσα δὲ
τὸ σὸν διδάσκεις μ' ἔνθα πημάτων κυρῶ.

ΕΚ. αὐτὴ μὲν οὔπω ναὸς εἰσέβην σκάφος,
γραφῇ δ' ἰδοῦσα καὶ κλύουσ' ἐπίσταμαι.
ναύταις γὰρ ἢν μὲν μέτριος ᾖ χειμὼν φέρειν,
προθυμίαν ἔχουσι σωθῆναι πόνων,
ὁ μὲν παρ' οἴαχ', ὁ δ' ἐπὶ λαίφεσιν βεβώς,
ὁ δ' ἄντλον εἴργων ναός· ἢν δ' ὑπερβάλῃ
πολὺς ταραχθεὶς πόντος, ἐνδόντες φορᾷ
παρεῖσαν αὑτοὺς κυμάτων δρομήμασιν.
οὕτω δὲ κἀγὼ πόλλ' ἔχουσα πήματα
ἄφθογγός εἰμι καὶ παρεῖσ' ἐῶ στόμα·
νικᾷ γὰρ οὑκ θεῶν με δύστηνος κλύδων.
ἀλλ' ὦ φίλη παῖ, τὰς μὲν Ἕκτορος τύχας
ἔασον· οὐ γὰρ δάκρυά νιν σώσει τὰ σά·
τίμα δὲ τὸν παρόντα δεσπότην σέθεν,
φίλον διδοῦσα δέλεαρ ἀνδρὶ σῶν τρόπων.
κἂν δρᾷς τάδ', εἰς τὸ κοινὸν εὐφρανεῖς φίλους
καὶ παῖδα τόνδε παιδὸς ἐκθρέψειας ἂν
Τροίᾳ μέγιστον ὠφέλημ', ἵν' ἄν ποτε
ἐκ σοῦ γενόμενοι παῖδες ὕστερον πάλιν

κατοικίσειαν, καὶ πόλις γένοιτ' ἔτι.
ἀλλ' ἐκ λόγου γὰρ ἄλλος ἐκβαίνει λόγος,
τίν' αὖ δέδορκα τόνδ' Ἀχαϊκὸν λάτριν
στείχοντα καινῶν ἄγγελον βουλευμάτων;

ΤΑ. Φρυγῶν ἀρίστου πρίν ποθ' Ἕκτορος δάμαρ,
μὴ 'με στυγήσῃς· οὐχ ἑκὼν γὰρ ἀγγελῶ
Δαναῶν τε κοινὰ Πελοπιδῶν τ' ἀγγέλματα.

ΑΝ. τί δ' ἔστιν; ὥς μοι φροιμίων ἄρχει κακῶν.

ΤΑ. ἔδοξε τόνδε παῖδα — πῶς εἴπω λόγον;

ΑΝ. μῶν οὐ τὸν αὐτὸν δεσπότην ἡμῖν ἔχειν;

ΤΑ. οὐδεὶς Ἀχαιῶν τοῦδε δεσπόσει ποτέ.

ΑΝ. ἀλλ' ἐνθάδ' αὐτοῦ λείψανον Φρυγῶν λιπεῖν;

ΤΑ. οὐκ οἶδ' ὅπως σοι ῥᾳδίως εἴπω κακά.

ΑΝ. ἐπῄνεσ' αἰδῶ, πλὴν ἐὰν λέγῃς καλά.

ΤΑ. κτενοῦσι σὸν παῖδ', ὡς πύθῃ κακὸν μέγα.

ΑΝ. οἴμοι, γάμων τόδ' ὡς κλύω μεῖζον κακόν.

ΤΑ. νικᾷ δ' Ὀδυσσεὺς ἐν Πανέλλησιν λέγων.

ΑΝ. αἰαῖ μάλ', οὐ γὰρ μέτρια πάσχομεν κακά.

ΤΑ. λέξας ἀρίστου παῖδα μὴ τρέφειν πατρός,

ΑΝ. τοιαῦτα νικήσειε τῶν αὑτοῦ πέρι.

ΤΑ. ῥῖψαι δὲ πύργων δεῖν σφε Τρωικῶν ἄπο.
ἀλλ' ὣς γενέσθω, καὶ σοφωτέρα φανεῖ·
μήτ' ἀντέχου τοῦδ', εὐγενῶς δ' ἄλγει κακοῖς,
μήτε σθένουσα μηδὲν ἰσχύειν δόκει.
ἔχεις γὰρ ἀλκὴν οὐδαμῇ· σκοπεῖν δὲ χρή·
πόλις τ' ὄλωλε καὶ πόσις, κρατεῖ δὲ σύ,
ἡμεῖς τε πρὸς γυναῖκα μάρνασθαι μίαν
οἷοί τε· τούτων οὕνεκ' οὐ μάχης ἐρᾶν
οὐδ' αἰσχρὸν οὐδὲν οὐδ' ἐπίφθονόν σε δρᾶν,
οὔτ' αὖ σ' Ἀχαιῶν βούλομαι ῥίπτειν ἀράς.
εἰ γάρ τι λέξεις ᾧ χολώσεται στρατός,
οὔτ' ἂν ταφείη παῖς ὅδ' οὔτ' οἴκτου τύχοι.

σιγῶσα δ' εὖ τε τὰς τύχας κεκτημένη
τὸν τοῦδε νεκρὸν οὐκ ἄθαπτον ἂν λίποις
αὐτή τ' Ἀχαιῶν πρευμενεστέρων τύχοις.
ΑΝ. ὦ φίλτατ', ὦ περισσὰ τιμηθεὶς τέκνον,
θανεῖ πρὸς ἐχθρῶν μητέρ' ἀθλίαν λιπών.
[ἡ τοῦ πατρὸς δέ σ' εὐγένει' ἀπώλεσεν,
ἣ τοῖσιν ἄλλοις γίγνεται σωτηρία,]
τὸ δ' ἐσθλὸν οὐκ εἰς καιρὸν ἦλθε σοὶ πατρός.
ὦ λέκτρα τἀμὰ δυστυχῆ τε καὶ γάμοι,
οἷς ἦλθον εἰς μέλαθρον Ἕκτορός ποτε,
οὐ σφάγιον υἱὸν Δαναΐδαις τέξουσ' ἐμόν,
ἀλλ' ὡς τύραννον Ἀσιάδος πολυσπόρου.
ὦ παῖ, δακρύεις; αἰσθάνει κακῶν σέθεν,
τί μου δέδραξαι χερσὶ κἀντέχει πέπλων,
νεοσσὸς ὡσεὶ πτέρυγας εἰσπίτνων ἐμάς;
οὐκ εἶσιν Ἕκτωρ κλεινὸς ἁρπάσας δόρυ
γῆς ἐξανελθὼν σοὶ φέρων σωτηρίαν,
οὐ συγγένεια πατρός, οὐκ ἰσχὺς Φρυγῶν·
λυγρὸν δὲ πήδημ' εἰς τράχηλον ὑψόθεν
πεσὼν ἀνοίκτως, πνεῦμ' ἀπορρήξεις σέθεν.
ὦ νέον ὑπαγκάλισμα μητρὶ φίλτατον,
ὦ χρωτὸς ἡδὺ πνεῦμα· διὰ κενῆς ἄρα
ἐν σπαργάνοις σε μαστὸς ἐξέθρεψ' ὅδε,
μάτην δ' ἐμόχθουν καὶ κατεξάνθην πόνοις.
νῦν, οὔποτ' αὖθις, μητέρ' ἀσπάζου σέθεν,
πρόσπιτνε τὴν τεκοῦσαν, ἀμφὶ δ' ὠλένας
ἕλισσ' ἐμοῖς νώτοισι καὶ στόμ' ἅρμοσον.
ὦ βάρβαρ' ἐξευρόντες Ἕλληνες κακά,
τί τόνδε παῖδα κτείνετ' οὐδὲν αἴτιον;
ὦ Τυνδάρειον ἔρνος, οὔποτ' εἶ Διός,
πολλῶν δὲ πατέρων φημί σ' ἐκπεφυκέναι,
Ἀλάστορος μὲν πρῶτον, εἶτα δὲ Φθόνου,

Φόνου τε Θανάτου θ᾽ ὅσα τε γῆ τρέφει κακά.
οὐ γάρ ποτ᾽ αὐχῶ Ζῆνά γ᾽ ἐκφῦσαί σ᾽ ἐγώ,
πολλοῖσι κῆρα βαρβάροις Ἕλλησί τε.
ὄλοιο· καλλίστων γὰρ ὀμμάτων ἄπο
αἰσχρῶς τὰ κλεινὰ πεδί᾽ ἀπώλεσας Φρυγῶν.
ἀλλ᾽ ἄγετε φέρετε ῥίπτετ᾽, εἰ ῥίπτειν δοκεῖ·
δαίνυσθε τοῦδε σάρκας. ἔκ τε γὰρ θεῶν
διολλύμεσθα παιδί τ᾽ οὐ δυναίμεθ᾽ ἂν
θάνατον ἀρῆξαι. κρύπτετ᾽ ἄθλιον δέμας
καὶ ῥίπτετ᾽ εἰς ναῦς· ἐπὶ καλὸν γὰρ ἔρχομαι
ὑμέναιον, ἀπολέσασα τοὐμαυτῆς τέκνον.

ΧΟ. τάλαινα Τροία, μυρίους ἀπώλεσας
μιᾶς γυναικὸς καὶ λέχους στυγνοῦ χάριν.

ΑΝ. ἄγε παῖ, φίλιον πρόσπτυγμα μεθεὶς
[μητρὸς μογερᾶς, βαῖνε πατρῴων]
πύργων ἐπ᾽ ἄκρας στεφάνας, ὅθι σοι
πνεῦμα μεθεῖναι ψῆφος ἐκράνθη.
λαμβάνετ᾽ αὐτόν. τὰ δὲ τοιάδε χρὴ
κηρυκεύειν, ὅστις ἄνοικτος
καὶ ἀναιδείᾳ τῆς ὑμετέρας
γνώμης μᾶλλον φίλος ἐστίν.

ΕΚ. ὦ τέκνον, ὦ παῖ παιδὸς μογεροῦ,
συλώμεθα σὴν ψυχὴν ἀδίκως
μήτηρ κἀγώ. τί πάθω; τί σ᾽ ἐγὼ
δύσμορε δράσω; τάδε σοι δίδομεν
πλήγματα κρατὸς στέρνων τε κόπους·
τῶνδε γὰρ ἄρχομεν· οἲ ᾽γὼ πόλεως,
οἴμοι δὲ σέθεν· τί γὰρ οὐκ ἔχομεν,
τίνος ἐνδέομεν μὴ οὐ πανσυδίᾳ
χωρεῖν ὀλέθρου διὰ παντός;

ΧΟ. μελισσοτρόφου Σαλαμῖνος ὦ βασιλεῦ Τελαμών, στρ.

799 — 807 = 808 — 819

νάσου περικύμονος οἰκήσας ἕδρας
τᾶς ἐπικεκλιμένας ὄχθοις ἱεροῖς, ἵν᾽ ἐλαίας
πρῶτον ἔδειξε κλάδον γλαυκᾶς Ἀθάνα,
οὐράνιον στέφανον λιπαραῖσί τε κόσμον Ἀθήναις,
ἔβας ἔβας τῷ τοξοφόρῳ συναρι-
στεύων ἅμ᾽ Ἀλκμήνας γόνῳ
Ἴλιον Ἴλιον ἐκπέρσων πόλιν ἁμετέραν
[τὸ πάροιθεν ὅτ᾽ ἔβας ἀφ᾽ Ἑλλάδος]·
ὅθ᾽ Ἑλλάδος ἄγαγε πρῶτον ἄνθος ἀτυζόμενος ἀντ.
πώλων, Σιμόεντι δ᾽ ἐπ᾽ εὐρείτᾳ πλάταν
ἔσχασε ποντοπόρον καὶ ναύδετ᾽ ἀνήψατο πρυμνᾶν
καὶ χερὸς εὐστοχίαν ἐξεῖλε ναῶν,
Λαομέδοντι φόνον· κανόνων δὲ τυκίσματα Φοίβου
* * *πυρὸς φοίνικι πνοᾷ καθελὼν*
Τροίας ἐπόρθησε χθόνα,
δὶς δὲ δυοῖν πιτύλοιν τείχη περὶ Δαρδανίας
φοινία κατέλυσεν αἰχμά.
μάταν ἄρ᾽, ὦ χρυσέαις στρ.
ἐν οἰνοχόαις ἁβρὰ βαίνων,
Λαομεδόντιε παῖ,
Ζηνὸς ἔχεις κυλίκων
πλήρωμα, καλλίσταν λατρείαν·
ἁ δέ σε γειναμένα πυρὶ δαίεται·
ἠιόνες δ᾽ ἅλιαι
ἴαχον· οἷον οἰωνὸς
* *ὑπὲρ τεκέων βοᾷ,*
αἱ μὲν ἄορας, αἱ δὲ παῖδας,

820 — 839 = 840 — 859

αἱ δὲ ματέρας γεραιάς.
τὰ δὲ σὰ δροσόεντα λουτρὰ
γυμνασίων τε δρόμοι
βεβᾶσι· σὺ δὲ πρόσωπα νεα-
ρὰ χάρισι παρὰ Διὸς θρόνοις
καλλιγάλανα τρέφεις·
Πριάμοιο δὲ γαῖαν
Ἑλλὰς ὤλεσ' αἰχμά.
Ἔρως Ἔρως, ὃς τὰ Δαρ- ἀντ.
δάνεια μέλαθρά ποτ' ἦλθες
οὐρανίδαισι μέλων·
ὡς τότε μὲν μεγάλως
Τροίαν ἐπύργωσας, θεοῖσιν
κῆδος ἀναψάμενος. τὸ μὲν οὖν Διὸς
οὐκέτ' ὄνειδος ἐρῶ·
τὸ τᾶς δὲ λευκοπτέρου
ἁμέρας φίλιον βροτοῖς
φέγγος ὀλοὸν εἶδε γαῖαν,
εἶδε περγάμων ὄλεθρον,
τεκνοποιὸν ἔχουσα τᾶσδε
γᾶς πόσιν ἐν θαλάμοις,
ὃν ἀστέρων τέθριππος ἔλα-
βε χρύσεος ὄχος ἀναρπάσας,
ἐλπίδα γᾷ πατρίᾳ
μεγάλαν· τὰ θεῶν δὲ
φίλτρα φροῦδα Τροίᾳ.

ΜΕ. *ὦ καλλιφεγγὲς ἡλίου σέλας τόδε,*
ἐν ᾧ δάμαρτα τὴν ἐμὴν χειρώσομαι
Ἑλένην· ὁ γὰρ δὴ πολλὰ μοχθήσας ἐγὼ
Μενέλαός εἰμι καὶ στράτευμ' Ἀχαϊκόν.
ἦλθον δὲ Τροίαν οὐχ ὅσον δοκοῦσί με
γυναικὸς οὕνεκ', ἀλλ' ἐπ' ἄνδρ' ὃς ἐξ ἐμῶν

δόμων δάμαρτα ξεναπάτης ἐλῄσατο.
κεῖνος μὲν οὖν ἔδωκε σὺν θεοῖς δίκην
αὐτός τε καὶ γῆ δορὶ πεσοῦσ᾽ Ἑλληνικῷ.
ἥκω δὲ τὴν τάλαιναν, οὐ γὰρ ἡδέως
ὄνομα δάμαρτος ἥ ποτ᾽ ἦν ἐμὴ λέγω,
ἄξων· δόμοις γὰρ τοῖσδ᾽ ἐν αἰχμαλωτικοῖς
κατηρίθμηται Τρῳάδων ἄλλων μέτα.
οἵπερ γὰρ αὐτὴν ἐξεμόχθησαν δορί,
κτανεῖν ἐμοί νιν ἔδοσαν, εἴτε μὴ κτανὼν
θέλοιμ᾽ ἄγεσθαι πάλιν ἐς Ἀργείων χθόνα.
ἐμοὶ δ᾽ ἔδοξε τὸν μὲν ἐν Τροίᾳ μόρον
Ἑλένης ἐᾶσαι, ναυπόρῳ δ᾽ ἄγειν πλάτῃ
Ἑλληνίδ᾽ εἰς γῆν κᾆτ᾽ ἐκεῖ δοῦναι κτανεῖν,
ποινὰς ὅσων τεθνᾶσ᾽ ἐν Ἰλίῳ φίλοι.
ἀλλ᾽ εἶα χωρεῖτ᾽ εἰς δόμους, ὀπάονες,
κομίζετ᾽ αὐτὴν τῆς μιαιφονωτάτης
κόμης ἐπισπάσαντες· οὔριοι δ᾽ ὅταν
πνοαὶ μόλωσι, πέμψομέν νιν Ἑλλάδα.
ΕΚ. ὦ γῆς ὄχημα κἀπὶ γῆς ἔχων ἕδραν,
ὅστις ποτ᾽ εἶ σύ, δυστόπαστος εἰδέναι,
Ζεύς, εἴτ᾽ ἀνάγκη φύσεος εἴτε νοῦς βροτῶν,
προσευξάμην σε· πάντα γὰρ δι᾽ ἀψόφου
βαίνων κελεύθου κατὰ δίκην τὰ θνήτ᾽ ἄγεις.
ΜΕ. τί δ᾽ ἔστιν; εὐχὰς ὡς ἐκαίνισας θεῶν.
ΕΚ. αἰνῶ σε, Μενέλα᾽, εἰ κτενεῖς δάμαρτα σήν.
ὁρῶν δὲ τήνδε φεῦγε, μή σ᾽ ἕλῃ πόθῳ.
αἱρεῖ γὰρ ἀνδρῶν ὄμματ᾽, ἐξαιρεῖ πόλεις,
πίμπρησι δ᾽ οἴκους· ὧδ᾽ ἔχει κηλήματα.
ἐγώ νιν οἶδα καὶ σὺ χοἰ πεπονθότες.
ΕΛ. Μενέλαε, φροίμιον μὲν ἄξιον φόβου
τόδ᾽ ἐστίν· ἐν γὰρ χερσὶ προσπόλων σέθεν
βίᾳ πρὸ τῶνδε δωμάτων ἐκπέμπομαι.

ἀτὰρ σχεδὸν μὲν οἶδά σοι στυγουμένη,
ὅμως δ' ἐρέσθαι βούλομαι· γνῶμαι τίνες
Ἕλλησι καὶ σοὶ τῆς ἐμῆς ψυχῆς πέρι;
ΜΕ. οὐκ εἰς ἀκριβὲς ἦλθες, ἀλλὰ πᾶς στρατὸς
κτανεῖν ἐμοί σ' ἔδωκεν, ὅνπερ ἠδίκεις.
ΕΛ. ἔξεστιν οὖν πρὸς ταῦτ' ἀμείψασθαι λόγῳ,
ὡς οὐ δικαίως, ἢν θάνω, θανούμεθα;
ΜΕ. οὐκ εἰς λόγους ἐλήλυθ', ἀλλά σε κτενῶν.
ΕΚ. ἄκουσον αὐτῆς, μὴ θάνῃ τοῦδ' ἐνδεής,
Μενέλαε, καὶ δὸς τοὺς ἐναντίους λόγους
ἡμῖν κατ' αὐτῆς· τῶν γὰρ ἐν Τροίᾳ κακῶν
οὐδὲν κάτοισθα. συντεθεὶς δ' ὁ πᾶς λόγος
κτενεῖ νιν οὕτως ὥστε μηδαμοῦ φυγεῖν.
ΜΕ. σχολῆς τὸ δῶρον· εἰ δὲ βούλεται λέγειν,
ἔξεστι. τῶν σῶν δ' οὕνεχ', ὡς μάθῃ, λόγων
δώσω τόδ' αὐτῇ, τῇσδε δ' οὐ δώσω χάριν.
ΕΛ. ἴσως με, κἂν εὖ κἂν κακῶς δόξω λέγειν,
οὐκ ἀνταμείψει πολεμίαν ἡγούμενος.
ἐγὼ δ', ἅ σ' οἶμαι διὰ λόγων ἰόντ' ἐμοῦ
κατηγορήσειν, ἀντιθεῖσ' ἀμείψομαι
τοῖς σοῖσι τἀμὰ καὶ τὰ σ' αἰτιάματα.
πρῶτον μὲν ἀρχὰς ἔτεκεν ἥδε τῶν κακῶν
Πάριν τεκοῦσα· δεύτερον δ' ἀπώλεσε
Τροίαν τε κἄμ' ὁ πρέσβυς οὐ κτανὼν βρέφος,
δαλοῦ πικρὸν μίμημ', Ἀλέξανδρόν ποτε.
ἐνθένδε τἀπίλοιπ' ἄκουσον ὡς ἔχει.
ἔκρινε τρισσὸν ζεῦγος ὅδε τρισσῶν θεῶν·
καὶ Παλλάδος μὲν ἦν Ἀλεξάνδρῳ δόσις
Φρυξὶ στρατηγοῦνθ' Ἑλλάδ' ἐξανιστάναι,
Ἥρα θ' ὑπέσχετ' Ἀσιάδ' Εὐρώπης θ' ὅρους
[τυραννίδ' ἕξειν, εἴ σφε κρίνειεν Πάρις]·
Κύπρις δὲ τοὐμὸν εἶδος ἐκπαγλουμένη

δώσειν ὑπέσχετ᾿, εἰ θεὰς ὑπερδράμοι
κάλλει. τὸν ἐνθένδ᾿ ὡς ἔχει σκέψαι λόγον·
νικᾷ Κύπρις θεά, καὶ τοσόνδ᾿ οὑμοὶ γάμοι
ὤνησαν Ἑλλάδ᾿, οὐ κρατεῖσθ᾿ ἐκ βαρβάρων,
οὔτ᾿ εἰς δόρυ σταθέντες, οὐ τυραννίδι.
ἃ δ᾿ εὐτύχησεν Ἑλλάς, ὠλόμην ἐγὼ
εὐμορφίᾳ πραθεῖσα κὠνειδίζομαι
ἐξ ὧν ἐχρῆν με στέφανον ἐπὶ κάρᾳ λαβεῖν.
οὔπω με φήσεις αὐτὰ τἀν ποσὶν λέγειν,
ὅπως ἀφώρμησ᾿ ἐκ δόμων τῶν σῶν λάθρᾳ.
ἦλθ᾿ οὐχὶ μικρὰν θεὸν ἔχων αὑτοῦ μέτα
ὁ τῆσδ᾿ ἀλάστωρ, εἴτ᾿ Ἀλέξανδρον θέλεις
ὀνόματι προσφωνεῖν νιν εἴτε [καὶ Πάριν]·
ὅν, ὦ κάκιστε, σοῖσιν ἐν δόμοις λιπὼν
Σπάρτης ἀπῆρας νηὶ Κρησίαν χθόνα.
εἶεν.
οὐ σ᾿, ἀλλ᾿ ἐμαυτὴν τοὐπὶ τῷδ᾿ ἐρήσομαι·
τί δὴ φρονήσασ᾿ ἐκ δόμων ἅμ᾿ ἑσπόμην
ξένῳ προδοῦσα πατρίδα καὶ δόμους ἐμούς;
τὴν θεὸν κόλαζε καὶ Διὸς κρείσσων γενοῦ,
ὃς τῶν μὲν ἄλλων δαιμόνων ἔχει κράτος,
κείνης δὲ δοῦλός ἐστι· συγγνώμη δ᾿ ἐμοί.
ἔνθεν δ᾿ ἔχοις ἂν εἰς ἔμ᾿ εὐπρεπῆ λόγον·
ἐπεὶ θανὼν γῆς ἦλθ᾿ Ἀλέξανδρος μυχούς,
χρῆν μ᾿, ἡνίκ᾿ οὐκ ἦν θεοπόνητά μου λέχη,
λιποῦσαν οἴκους ναῦς ἐπ᾿ Ἀργείων μολεῖν.
ἔσπευδον αὐτὸ τοῦτο· μάρτυρες δέ μοι
πύργων πυλωροὶ κἀπὸ τειχέων σκοποί,
οἳ πολλάκις μ᾿ ἐφεῦρον ἐξ ἐπάλξεων
πλεκταῖσιν εἰς γῆν σῶμα κλέπτουσαν τόδε.
βίᾳ δ᾿ ὁ καινός μ᾿ οὗτος ἁρπάσας πόσις
Δηίφοβος ἄλοχον εἶχεν ἀκόντων Φρυγῶν.

πῶς οὖν ἔτ' ἂν θνήσκοιμ' ἂν ἐνδίκως, πόσι,
πρὸς σοῦ δικαίως, ἣν ὁ μὲν βίᾳ γαμεῖ,
τὰ δ' οἴκοθεν κεῖν' ἀντὶ νικητηρίων
πικρῶς ἐδούλευσ'; εἰ δὲ τῶν θεῶν κρατεῖν
βούλει, τὸ χρῄζειν ἀμαθές ἐστί σοι τόδε.

ΧΟ. βασίλει', ἄμυνον σοῖς τέκνοισι καὶ πάτρᾳ
πειθὼ διαφθείρουσα τῆσδ', ἐπεὶ λέγει
καλῶς κακοῦργος οὖσα· δεινὸν οὖν τόδε.

ΕΚ. ταῖς θεαῖσι πρῶτα σύμμαχος γενήσομαι
καὶ τήνδε δείξω μὴ λέγουσαν ἐνδίκως.
ἐγὼ γὰρ Ἥραν παρθένον τε Παλλάδα
οὐκ εἰς τοσοῦτον ἀμαθίας ἐλθεῖν δοκῶ,
ὥσθ' ἡ μὲν Ἄργος βαρβάροις ἀπημπόλα,
Παλλὰς δ' Ἀθήνας Φρυξὶ δουλεύειν ποτέ.
αἳ παιδιαῖσι καὶ χλιδῇ μορφῆς πέρι
ἦλυθον ἐπ' Ἴδην. τοῦ γὰρ οὕνεκ' ἂν θεὰ
Ἥρα τοσοῦτον ἔσχ' ἔρωτα καλλονῆς;
πότερον ἀμείνον' ὡς λάβοι Διὸς πόσιν,
ἢ γάμον Ἀθάνα θεῶν τινος θηρωμένη,
ἢ παρθενείαν πατρὸς ἐξῃτήσατο
φεύγουσα λέκτρα; μὴ ἀμαθεῖς ποίει θεὰς
τὸ σὸν κακὸν κοσμοῦσα· μὴ οὐ πείσῃς σοφούς.
Κύπριν δ' ἔλεξας, ταῦτα γὰρ γέλως πολύς,
ἐλθεῖν ἐμῷ ξὺν παιδὶ Μενέλεω δόμους.
οὐκ ἂν μένουσ' ἂν ἥσυχός σ' ἐν οὐρανῷ
αὐταῖς Ἀμύκλαις ἤγαγεν πρὸς Ἴλιον;
ἦν οὑμὸς υἱὸς κάλλος ἐκπρεπέστατος,
ὁ σὸς δ' ἰδών νιν νοῦς ἐποιήθη Κύπρις·
τὰ μῶρα γὰρ πάντ' ἐστὶν Ἀφροδίτη βροτοῖς,
καὶ τοὔνομ' ὀρθῶς ἀφροσύνης ἄρχει θεᾶς.
ὃν εἰσιδοῦσα βαρβάροις ἐσθήμασι
χρυσῷ τε λαμπρὸν ἐξεμαργώθης φρένας.

ἐν μὲν γὰρ Ἄργει μίκρ᾽ ἔχουσ᾽ ἀνεστρέφου,
Σπάρτης δ᾽ ἀπαλλαχθεῖσα τὴν Φρυγῶν πόλιν
χρυσῷ ῥέουσαν ἤλπισας κατακλύσειν
δαπάναισιν· οὐδ᾽ ἦν ἱκανά σοι τὰ Μενέλεω
μέλαθρα ταῖς σαῖς ἐγκαθυβρίζειν τρυφαῖς.
εἶεν, βίᾳ γὰρ παῖδα φὴς σ᾽ ἄγειν ἐμόν·
τίς Σπαρτιατῶν ᾔσθετ᾽, ἢ ποίαν βοὴν
ἀνωλόλυξας, Κάστορος νεανίου
τοῦ συζύγου τ᾽ ἔτ᾽ ὄντος οὐ κατ᾽ ἄστρα πω;
ἐπεὶ δὲ Τροίαν ἦλθες Ἀργεῖοί τέ σου
κατ᾽ ἴχνος, ἦν δὲ δοριπετὴς ἀγωνία,
εἰ μὲν τὰ τοῦδε κρείσσον᾽ ἀγγέλλοιτό σοι,
Μενέλαον ᾔνεις, παῖς ὅπως λυποῖτ᾽ ἐμὸς
ἔχων ἔρωτος ἀνταγωνιστὴν μέγαν·
εἰ δ᾽ εὐτυχοῖεν Τρῶες, οὐδὲν ἦν ὅδε.
εἰς τὴν τύχην δ᾽ ὁρῶσα τοῦτ᾽ ἤσκεις ὅπως
ἕποι᾽ ἅμ᾽ αὐτῇ, τἀρετῇ δ᾽ οὐκ ἤθελες.
κἄπειτα πλεκταῖς σῶμα σὸν κλέπτειν λέγεις
πύργων καθιεῖσ᾽ ὡς μένουσ᾽ ἀκουσίως;
ποῦ δῆτ᾽ ἐλήφθης ἢ βρόχους ἀρτωμένη
ἢ φάσγανον θήγουσ᾽, ἃ γενναία γυνὴ
δράσειεν ἂν ποθοῦσα τὸν πάρος πόσιν;
καίτοι γ᾽ ἐνουθέτουν σε πολλὰ πολλάκις·
ὦ θύγατερ ἔξελθ᾽, οἱ δ᾽ ἐμοὶ παῖδες γάμους
ἄλλους γαμοῦσι, σὲ δ᾽ ἐπὶ ναῦς Ἀχαϊκὰς
πέμψω συνεκκλέψασα, καὶ παῦσον μάχης
Ἕλληνας ἡμᾶς τ᾽. ἀλλὰ σοὶ τόδ᾽ ἦν πικρόν.
ἐν τοῖς Ἀλεξάνδρου γὰρ ὕβριζες δόμοις
καὶ προσκυνεῖσθαι βαρβάρων ὕπ᾽ ἤθελες.
μεγάλα γὰρ ἦν σοι· κἀπὶ τοῖσδε σὸν δέμας
ἐξῆλθες ἀσκήσασα κἄβλεψας πόσει
τὸν αὐτὸν αἰθέρ᾽, ὦ κατάπτυστον κάρα·

ἣν χρῆν ταπεινὴν ἐν πέπλων ἐρειπίοις
φρίκῃ τρέμουσαν κρᾶτ᾽ ἀπεσκυθισμένην
ἐλθεῖν, τὸ σῶφρον τῆς ἀναιδείας πλέον
ἔχουσαν ἐπὶ τοῖς πρόσθεν ἡμαρτημένοις.
Μενέλα᾽, ἵν᾽ εἰδῇς οἷ τελευτήσω λόγον,
στεφάνωσον Ἑλλάδ᾽ ἀξίως τήνδε κτανὼν
σαυτοῦ, νόμον δὲ τόνδε ταῖς ἄλλαισι θὲς
γυναιξί, θνῄσκειν ἥτις ἂν προδῷ πόσιν.
ΧΟ. Μενέλαε, προγόνων ἀξίως δόμων τε σῶν
τῖσαι δάμαρτα κἀφελοῦ πρὸς Ἑλλάδος
ψόγον τὸ θῆλύ τ᾽, εὐγενὴς ἐχθροῖς φανείς.
ΜΕ. ἐμοὶ σὺ συμπέπτωκας εἰς ταὐτὸν λόγου,
ἑκουσίως τήνδ᾽ ἐκ δόμων ἐλθεῖν ἐμῶν
ξένας ἐς εὐνάς, χἠ Κύπρις κόμπου χάριν
λόγοις ἐνεῖται. βαῖνε λευστήρων πέλας
πόνους τ᾽ Ἀχαιῶν ἀπόδος ἐν μικρῷ μακροὺς
θανοῦσ᾽, ἵν᾽ εἰδῇς μὴ καταισχύνειν ἐμέ.
ΕΛ. μή, πρός σε γονάτων, τὴν νόσον τὴν τῶν θεῶν
προσθεὶς ἐμοὶ κτάνῃς με, συγγίγνωσκε δέ.
ΕΚ. μηδ᾽ οὓς ἀπέκτειν᾽ ἥδε συμμάχους προδῷς·
ἐγὼ πρὸ κείνων καὶ τέκνων σε λίσσομαι.
ΜΕ. παῦσαι, γεραιά· τῆσδε δ᾽ οὐκ ἐφρόντισα.
λέγω δὲ προσπόλοισι πρὸς πρύμνας νεῶν
τήνδ᾽ ἐκκομίζειν, ἔνθα ναυστολήσεται.
ΕΚ. μή νυν νεὼς σοὶ ταὐτὸν εἰσβήτω σκάφος.
ΜΕ. τί δ᾽ ἔστι; μεῖζον βρῖθος ἢ πάροιθ᾽ ἔχει;
ΕΚ. οὐκ ἔστ᾽ ἐραστὴς ὅστις οὐκ ἀεὶ φιλεῖ.
ΜΕ. ὅπως ἂν ἐκβῇ τῶν ἐρωμένων ὁ νοῦς.
ἔσται δ᾽ ἃ βούλει· ναῦν γὰρ οὐκ εἰσβήσεται
εἰς ἥνπερ ἡμεῖς· καὶ γὰρ οὐ κακῶς λέγεις·
ἐλθοῦσα δ᾽ Ἄργος ὥσπερ ἀξία κακῶς
κακὴ θανεῖται καὶ γυναιξὶ σωφρονεῖν

πάσαισι θήσει. ῥᾴδιον μὲν οὐ τόδε·
ὅμως δ᾽ ὁ τῆσδ᾽ ὄλεθρος εἰς φόβον βαλεῖ
τὸ μῶρον αὐτῶν, κἂν ἔτ᾽ ὦσ᾽ αἰσχίονες.

ΧΟ. οὕτω δὴ τὸν ἐν Ἰλίῳ — στρ.
ναὸν καὶ θυόεντα βω-
μὸν προὔδωκας Ἀχαιοῖς,
ὦ Ζεῦ, καὶ πελάνων φλόγα
σμύρνης αἰθερίας τε κα-
πνὸν καὶ Πέργαμον ἱρὰν
Ἰδαῖά τ᾽ Ἰδαῖα κισσοφόρα νάπη
χιόνι κατάρυτα ποταμίᾳ
τέρμονά τε πρωτόβολον ἀελίῳ
τὰν καταλαμπομέναν ζαθέαν θεράπναν.

φροῦδαί σοι θυσίαι χορῶν τ᾽ — ἀντ.
εὔφημοι κέλαδοι κατ᾽ ὄρ-
φναν τε παννυχίδες θεῶν
χρυσέων τε ξοάνων τύποι
Φρυγῶν τε ζάθεοι σελᾶ-
ναι συνδώδεκα πλήθει.
μέλει μέλει μοι τάδ᾽ εἰ φρονεῖς, ἄναξ,
οὐράνιον ἕδρανον ἐπιβεβὼς
αἰθέρα τ᾽ ἐμᾶς πόλεος ὀλομένας,
ἃν πυρὸς αἰθομένα κατέλυσεν ὁρμά.

ὦ φίλος ὦ πόσι μοι, — στρ.
σὺ μὲν φθίμενος ἀλαίνεις
ἄθαπτος ἄνυδρος, ἐμὲ δὲ πόντιον σκάφος
ἀίσσον πτεροῖσι πορεύσει
ἱππόβοτον Ἄργος, ἵνα τείχεα
λάινα Κυκλώπι᾽ οὐράνια νέμονται.
τέκνων δὲ πλῆθος ἐν πύλαις

1060—1070 = 1071—1080
1081—1099 = 1100—1117

δάκρυσι κατάορα στένει, βοᾷ βοᾷ·
μᾶτερ, ὤμοι, μόναν δή μ' Ἀχαιοὶ κομί-
ζουσι σέθεν ἀπ' ὀμμάτων
κυανέαν ἐπὶ ναῦν
εἰναλίαισι πλάταις
ἢ Σαλαμῖν' ἱερὰν
ἢ δίπορον κορυφὰν
Ἴσθμιον, ἔνθα πύλας
Πέλοπος ἔχουσιν ἕδραι.
εἴθ' ἀκάτου Μενέλα *ἀντ.*
μέσον πέλαγος ἰούσας,
δίπαλτον ἱερὸν ἀνὰ μέσον πλάταν πέσοι
Αἰγαίου κεραυνοφαὲς πῦρ,
Ἰλιόθεν ὅς με πολύδακρυν
Ἑλλάδι λάτρευμα γᾶθεν ἐξορίζει·
χρύσεα δ' ἔνοπτρα, παρθένων
χάριτας, ἔχουσα τυγχάνει Διὸς κόρα·
μηδὲ γαῖάν ποτ' ἔλθοι Λάκαιναν πατρῷ-
όν τε θάλαμον ἑστίας,
μηδὲ πόλιν Πιτάνας
χαλκόπυλόν τε θεάν,
δύσγαμον αἶσχος ἑλὼν
Ἑλλάδι τᾷ μεγάλᾳ
καὶ Σιμοεντιάσιν
μέλεα πάθεα ῥοαῖσιν.
ἰὼ ἰώ,
καιναὶ καινῶν μεταβάλλουσαι
χθονὶ συντυχίαι. λεύσσετε Τρώων
τόνδ' Ἀστυάνακτ' ἄλοχοι μέλεαι
νεκρόν, ὃν πύργων δίσκημα πικρὸν
Δαναοὶ κτείναντες ἔχουσιν.

ΤΑ. *Ἑκάβη, νεὼς μὲν πίτυλος εἷς λελειμμένος*

λάφυρα τἀπίλοιπ' Ἀχιλλείου τόκου
μέλλει πρὸς ἀκτὰς ναυστολεῖν Φθιώτιδας·
αὐτὸς δ' ἀνῆκται Νεοπτόλεμος, καινάς τινας
Πηλέως ἀκούσας συμφοράς, ὥς νιν χθονὸς
Ἄκαστος ἐκβέβληκεν ὁ Πελίου γόνος.
οὗ θᾶσσον οὕνεκ' ἢ χάριν μονῆς ἔχων
φροῦδος, μετ' αὐτοῦ δ' Ἀνδρομάχη, πολλῶν ἐμοὶ
δακρύων ἀγωγός, ἡνίκ' ἐξώρμα χθονὸς
πάτραν τ' ἀναστένουσα καὶ τὸν Ἕκτορος
τύμβον προσεννέπουσα. καί σφ' ᾐτήσατο
θάψαι νεκρὸν τόνδ', ὃς πεσὼν ἐκ τειχέων
ψυχὴν ἀφῆκεν Ἕκτορος τοῦ σοῦ γόνος,
φόβον τ' Ἀχαιῶν, χαλκόνωτον ἀσπίδα
τήνδ', ἣν πατὴρ τοῦδ' ἀμφὶ πλεύρ' ἐβάλλετο,
μή νιν πορεῦσαι Πηλέως ἐφ' ἑστίαν,
μηδ' εἰς τὸν αὐτὸν θάλαμον, οὗ νυμφεύσεται
μήτηρ νεκροῦ τοῦδ' Ἀνδρομάχη, λύπας ὁρᾶν,
ἀλλ' ἀντὶ κέδρου περιβόλων τε λαΐνων
ἐν τῇδε θάψαι παῖδα· σὰς δ' ἐς ὠλένας
δοῦναι, πέπλοισιν ὡς περιστείλῃς νεκρὸν
στεφάνοις θ', ὅση σοι δύναμις, ὡς ἔχει τὰ σά,
ἐπεὶ βέβηκε καὶ τὸ δεσπότου τάχος
ἀφείλετ' αὐτὴν παῖδα μὴ δοῦναι τάφῳ.
ἡμεῖς μὲν οὖν, ὅταν σὺ κοσμήσῃς νέκυν,
γῆν τῷδ' ἐπαμπισχόντες ἀροῦμεν δόρυ·
σὺ δ' ὡς τάχιστα πρᾶσσε τἀπεσταλμένα.
ἑνὸς μὲν οὖν μόχθου σ' ἀπαλλάξας ἔχω·
Σκαμανδρίους γὰρ τάσδε διαπερῶν ῥοὰς
ἔλουσα νεκρὸν κἀπένιψα τραύματα.
ἀλλ' εἶμ' ὀρυκτὸν τῷδ' ἀναρρήξων τάφον,

ὡς σύντομ' ἡμῖν τἀπ' ἐμοῦ τε κἀπὸ σοῦ
εἰς ἓν ξυνελθόντ' οἴκαδ' ὁρμήσῃ πλάτην.
ΕΚ. θέσθ' ἀμφίτορνον ἀσπίδ' Ἕκτορος πέδῳ,
λυπρὸν θέαμα κοὐ φίλον λεύσσειν ἐμοί.
ὦ μείζον' ὄγκον δορὸς ἔχοντες ἢ φρενῶν,
τί τόνδ', Ἀχαιοί, παῖδα δείσαντες φόνον
καινὸν διειργάσασθε; μὴ Τροίαν ποτὲ
πεσοῦσαν ὀρθώσειεν; οὐδὲν ἦτ' ἄρα·
ὅθ' Ἕκτορος μὲν εὐτυχοῦντος εἰς δόρυ
διολλύμεσθα μυρίου τ' ἄλλης χερός·
πόλεως δ' ἁλούσης καὶ Φρυγῶν ἐφθαρμένων
βρέφος τοσόνδ' ἐδείσατ'; οὐκ αἰνῶ φόβον,
ὅστις φοβεῖται μὴ διεξελθὼν λόγῳ.
ὦ φίλταθ', ὥς σοι θάνατος ἦλθε δυστυχής.
εἰ μὲν γὰρ ἔθανες πρὸ πόλεως, ἥβης τυχὼν
γάμων τε καὶ τῆς ἰσοθέου τυραννίδος,
μακάριος ἦσθ' ἄν, εἴ τι τῶνδε μακάριον.
νῦν αὔτ' ἰδὼν μὲν γνούς τε σῇ ψυχῇ, τέκνον,
οὐκ οἶσθ', ἐχρήσω δ' οὐδὲν ἐν δόμοις ἔχων.
δύστηνε, κρατὸς ὥς σ' ἔκειρεν ἀθλίως
τείχη πατρῷα, Λοξίου πυργώματα,
ὃν πόλλ' ἐκήπευσ' ἡ τεκοῦσα βόστρυχον
φιλήμασίν τ' ἔδωκεν, ἔνθεν ἐκγελᾷ
ὀστέων ῥαγέντων φόνος, ἵν' αἰσχρὰ μὴ λέγω.
ὦ χεῖρες, ὡς εἰκοὺς μὲν ἡδείας πατρὸς
κέκτησθ', ἐν ἄρθροις δ' ἔκλυτοι πρόκεισθέ [μοι].
ὦ πολλὰ κόμπους ἐκβαλὸν φίλον στόμα,
ὄλωλας, ἐψεύσω μ', ὅτ' εἰσπίπτων λέχος,
ὦ μῆτερ, ηὔδας, ἦ πολύν σοι βοστρύχων
πλόκαμον κεροῦμαι πρὸς τάφον θ' ὁμηλίκων
κώμους ἀπάξω, φίλα διδοὺς προσφθέγματα.
σὺ δ' οὐκ ἔμ', ἀλλ' ἐγὼ σὲ τὸν νεώτερον

γραῦς ἄπολις ἄτεκνος ἄθλιον θάπτω νεκρόν.
οἴμοι, τὰ πόλλ᾽ ἀσπάσμαθ᾽ αἵ τ᾽ ἐμαὶ τροφαὶ
ὕπνοι τ᾽ ἐκεῖνοι φροῦδά μοι. τί καί ποτε
γράψειεν ἄν σε μουσοποιὸς ἐν τάφῳ;
τὸν παῖδα τόνδ᾽ ἔκτειναν Ἀργεῖοί ποτε
δείσαντες; αἰσχρὸν τοὐπίγραμμά γ᾽ Ἑλλάδι.
ἀλλ᾽ οὖν πατρῴων οὐ λαχὼν ἕξεις ὅμως
ἐν ᾗ ταφήσει χαλκόνωτον ἰτέαν.
ὦ καλλίπηχυν Ἕκτορος βραχίονα
σῴζουσ᾽, ἄριστον φύλακ᾽ ἀπώλεσας σέθεν.
ὡς ἡδὺς ἐν πόρπακι σὸς κεῖται τύπος
ἴτυός τ᾽ ἐν εὐτόρνοισι περιδρόμοις ἱδρώς,
ὃν ἐκ μετώπου πολλάκις πόνους ἔχων
ἔσταξεν Ἕκτωρ προστιθεὶς γενειάδι.
φέρετε, κομίζετ᾽ ἀθλίῳ κόσμον νεκρῷ
ἐκ τῶν παρόντων· οὐ γὰρ εἰς κάλλος τύχας
δαίμων δίδωσιν· ὧν δ᾽ ἔχω, λήψει τάδε.
θνητῶν δὲ μῶρος ὅστις εὖ πράσσειν δοκῶν
βέβαια χαίρει· τοῖς τρόποις γὰρ αἱ τύχαι
ἔμπληκτος ὡς ἄνθρωπος, ἄλλοτ᾽ ἄλλοσε
πηδῶσι, κοὐδεὶς αὐτὸς εὐτυχεῖ ποτε.

ΧΟ. καὶ μὴν πρὸ χειρῶν αἵδε σοι σκυλευμάτων
Φρυγίων φέρουσι κόσμον ἐξάπτειν νεκρῷ.

ΕΚ. ὦ τέκνον, οὐχ ἵπποισι νικήσαντά σε
οὐδ᾽ ἥλικας τόξοισιν, οὓς Φρύγες νόμους
τιμῶσιν, οὐκ εἰς πλησμονὰς θηρώμενοι,
μήτηρ πατρός σοι προστίθησ᾽ ἀγάλματα
τῶν σῶν ποτ᾽ ὄντων, νῦν δέ σ᾽ ἡ θεοστυγὴς
ἀφείλεθ᾽ Ἑλένη, πρὸς δὲ καὶ ψυχὴν σέθεν
ἔκτεινε καὶ πάντ᾽ οἶκον ἐξαπώλεσεν.

ΧΟ. ἒ ἔ, φρενῶν

ἔθιγες ἔθιγες· ὦ μέγας ἐμοί ποτ᾽ ὢν
ἀνάκτωρ πόλεως.
ΕΚ. ἃ δ᾽ ἐν γάμοις ἐχρῆν σε προσθέσθαι χροῒ
Ἀσιατίδων γήμαντα τὴν ὑπερτάτην,
Φρύγια πέπλων ἀγάλματ᾽ ἐξάπτω χροός.
σύ τ᾽ ὦ ποτ᾽ οὖσα καλλίνικε μυρίων
μῆτερ τροπαίων, Ἕκτορος φίλον σάκος,
στεφανοῦ· θανεῖ γὰρ οὐ θανοῦσα σὺν νεκρῷ·
ἐπεὶ σὲ πολλῷ μᾶλλον ἢ τὰ τοῦ σοφοῦ
κακοῦ τ᾽ Ὀδυσσέως ἄξιον τιμᾶν ὅπλα.
ΧΟ. αἰαῖ αἰαῖ,
πικρὸν ὄδυρμα γαῖά σ᾽, ὦ
τέκνον, δέξεται.
στέναξον, μάτηρ, ΕΚ. αἰαῖ.
ΧΟ. νεκρῶν ἴακχον. ΕΚ. οἴμοι μοι.
ΧΟ. οἴμοι δῆτα σῶν ἀλάστων κακῶν.
ΕΚ. τελαμῶσιν ἕλκη τὰ μὲν ἐγώ σ᾽ ἰάσομαι,
τλήμων ἰατρὸς ὄνομ᾽ ἔχουσα, τἄργα δ᾽ οὔ·
τὰ δ᾽ ἐν νεκροῖσι φροντιεῖ πατὴρ σέθεν.
ΧΟ. ἄρασσ᾽ ἄρασσε κρᾶτα
πιτύλους διδοῦσα χειρός, ἰώ μοί μοι.
ΕΚ. ὦ φίλταται γυναῖκες.
ΧΟ. * * * ἔνεπε, τίνα θροεῖς αὐδάν;
ΕΚ. οὐκ ἦν ἄρ᾽ ἐν θεοῖσι πλὴν οὑμοὶ πόνοι
Τροία τε πόλεων ἔκκριτον μισουμένη,
μάτην δ᾽ ἐβουθυτοῦμεν. εἰ δ᾽ ἡμᾶς θεὸς
ἔστρεψε τἄνω περιβαλὼν κάτω χθονός,
ἀφανεῖς ἂν ὄντες οὐκ ἂν ὑμνηθεῖμεν ἂν
μούσαις ἀοιδὰς δόντες ἀφθίτους βροτῶν.
χωρεῖτε, θάπτετ᾽ ἀθλίῳ τύμβῳ νεκρόν·
ἔχει γὰρ οἷα δεῖ γε νερτέρων στέφη.
δοκῶ δὲ τοῖς θανοῦσι διαφέρειν βραχύ,

εἰ πλουσίων τις τεύξεται κτερισμάτων.
κενὸν δὲ γαύρωμ' ἐστὶ τῶν ζώντων τόδε.

ΧΟ. ἰὼ ἰώ·
μελέα μάτηρ, ἣ τὰς μεγάλας
ἐλπίδας ἐν σοὶ κατέκαμψε βίου.
μέγα δ' ὀλβισθεὶς ὡς ἐκ πατέρων
ἀγαθῶν ἐγένου,
δεινῷ θανάτῳ διόλωλας.
ἔα ἔα·
τίνας Ἰλιάσιν ταῖσδ' ἐν κορυφαῖς
λεύσσω φλογέας δαλοῖσι χέρας
διερέσσοντας; μέλλει Τροίᾳ
καινόν τι κακὸν προσέσεσθαι.

ΤΑ. αὐδῶ λοχαγοῖς, οἳ τέταχθε πιμπράναι
Πριάμου τόδ' ἄστυ, μηκέτ' ἀργοῦσαν φλόγα
ἐν χερσὶ σῴζειν, ἀλλὰ πῦρ ἐνιέναι,
ὡς ἂν κατασκάψαντες Ἰλίου πόλιν
στελλώμεθ' οἴκαδ' ἄσμενοι Τροίας ἄπο.
ὑμεῖς δ', ἵν' αὑτὸς λόγος ἔχῃ μορφὰς δύο,
χωρεῖτε Τρώων παῖδες, ὀρθίαν ὅταν
σάλπιγγος ἠχὼ δῶσιν ἀρχηγοὶ στρατοῦ,
πρὸς ναῦς Ἀχαιῶν, ὡς ἀποστέλλησθε γῆς.
σύ τ' ὦ γεραιὰ δυστυχεστάτη γύναι,
ἕπου. μεθήκουσίν σ' Ὀδυσσέως πάρα
οἵδ', ᾧ σε δούλην κλῆρος ἐκπέμπει χθονός.

ΕΚ. οἲ 'γὼ τάλαινα· τοῦτο δὴ τὸ λοίσθιον
καὶ τέρμα πάντων ἦλθε τῶν ἐμῶν κακῶν·
ἔξειμι πατρίδος, πόλις ὑφάπτεται πυρί.
ἀλλ' ὦ γεραιὲ πούς, ἐπίσπευσον μόλις,
ὡς ἀσπάσωμαι τὴν ταλαίπωρον πόλιν.
ὦ μεγάλα δή ποτ' ἐμπνέουσ' ἐν βαρβάροις
Τροία, τὸ κλεινὸν ὄνομ' ἀφαιρήσει τάχα.

πιμπρᾶσί σ᾽, ἡμᾶς δ᾽ ἐξάγουσ᾽ ἤδη χθονὸς
δούλας· ἰὼ θεοί. καὶ τί τοὺς θεοὺς καλῶ;
καὶ πρὶν γὰρ οὐκ ἤκουσαν ἀνακαλούμενοι.
φέρ᾽ εἰς πυρὰν δράμωμεν, ὡς κάλλιστά μοι
σὺν τῇδε πατρίδι κατθανεῖν πυρουμένῃ.

ΤΑ. ἐνθουσιᾷς, δύστηνε, τοῖς σαυτῆς κακοῖς·
ἀλλ᾽ ἄγετε, μὴ φείδεσθ᾽· Ὀδυσσέως δὲ χρὴ
εἰς χεῖρα δοῦναι τήνδε καὶ πέμπειν γέρας.

ΕΚ. ὀτοτοτοτοτοῖ.
Κρόνιε, πρύτανι Φρύγιε, γενέτα
πάτερ, ἀνάξια τᾶς Δαρδάνου
γονᾶς τάδ᾽ οἷα πάσχομεν δέδορκας;

ΧΟ. δέδορκεν, ἁ δὲ μεγαλόπολις
ἄπολις ὄλωλεν οὐδ᾽ ἔτ᾽ ἔστι Τροία.

ΕΚ. ὀτοτοτοτοτοῖ.
λέλαμπεν Ἴλιος περ-
γάμων τε πυρὶ καταίθεται τέραμνα
καὶ πόλις ἄκρα τε τειχέων.

ΧΟ. πτέρυγι δὲ καπνὸς ὥς τις οὐ-
ρανίᾳ πεσοῦσα δορὶ καταφθίνει γᾶ.
μαλερὰ μέλαθρα πυρὶ κατάδρομα
δαΐῳ τε λόγχᾳ.

ΕΚ. ἰὼ γᾶ τρόφιμε τῶν ἐμῶν τέκνων. στρ.

ΧΟ. ἒ ἔ.

ΕΚ. ὦ τέκνα, κλύετε, μάθετε ματρὸς αὐδάν.

ΧΟ. ἰαλέμῳ τοὺς θανόντας ἀπύεις.

ΕΚ. γεραιά τ᾽ εἰς πέδον τιθεῖσα μέλεα,
καὶ χερσὶ γαῖαν κτυποῦσα δισσαῖς.

ΧΟ. διάδοχά σοι γόνυ τίθημι γαίᾳ
τοὺς ἐμοὺς καλοῦσα νέρθεν
ἀθλίους ἀκοίτας.

1302—1316 = 1317—1332

ΕΚ. ἀγόμεθα φερόμεθ᾽ ΧΟ. ἄλγος ἄλγος βοᾷς.
ΕΚ. δούλειον ὑπὸ μέλαθρον ἐκ πάτρας γ᾽ ἐμᾶς.
ἰὼ ἰώ.
Πρίαμε Πρίαμε, σὺ μὲν ὀλόμενος
ἄταφος ἄφιλος
ἄτας ἐμᾶς ἄιστος εἶ.
ΧΟ. μέλας γὰρ ὄσσε κατακαλύπτει
θάνατος ὅσιον ἀνοσίαις σφαγαῖσιν.
ΕΚ. ἰὼ θεῶν μέλαθρα καὶ πόλις φίλα. ἀντ.
ΧΟ. ἒ ἔ.
ΕΚ. τὰν φόνιον ἔχετε φλόγα δορός τε λόγχαν.
ΧΟ. τάχ᾽ εἰς φίλαν γᾶν πεσεῖσθ᾽ ἀνώνυμοι.
ΕΚ. κόνις δ᾽ ἴσα καπνῷ πτέρυγι πρὸς αἰθέρ᾽
ἄιστον οἴκων ἐμῶν με θήσει.
ΧΟ. ὄνομα δὲ γᾶς ἀφανὲς εἶσιν· ἄλλᾳ δ᾽
ἄλλο φροῦδον, οὐδ᾽ ἔτ᾽ ἔστιν
ἁ τάλαινα Τροία.
ΕΚ. ἐμάθετ᾽, ἐκλύετε; ΧΟ. περγάμων κτύπον.
ΕΚ. ἔνοσις ἅπασαν ἔνοσις ἐπικλύσει πόλιν.
ἰὼ ἰώ,
τρομερὰ τρομερὰ μέλεα, φέρετ᾽ ἐ-
μὸν ἴχνος. ἴτ᾽ ἐπὶ [τάλαιναν]
δούλειον ἁμέραν βίου.
ΧΟ. ἰὼ τάλαινα πόλις· ὅμως δὲ
πρόφερε πόδα σὸν ἐπὶ πλάτας Ἀχαιῶν.

ΦΟΙΝΙΣΣΑΙ.

ΤΑ ΤΟΥ ΔΡΑΜΑΤΟΣ ΠΡΟΣΩΠΑ.

ΙΟΚΑΣΤΗ.
ΠΑΙΔΑΓΩΓΟΣ.
ΑΝΤΙΓΟΝΗ.
ΧΟΡΟΣ ΦΟΙΝΙΣΣΩΝ ΓΥΝΑΙΚΩΝ.
ΠΟΛΥΝΕΙΚΗΣ.
ΕΤΕΟΚΛΗΣ.
ΚΡΕΩΝ.
ΜΕΝΟΙΚΕΥΣ.
ΤΕΙΡΕΣΙΑΣ.
ΑΓΓΕΛΟΣ.
ΕΤΕΡΟΣ ΑΓΓΕΛΟΣ.
ΟΙΔΙΠΟΥΣ.

ΥΠΟΘΕΣΙΣ.

Ἐτεοκλῆς παραλαβὼν τὴν Θηβῶν βασιλείαν ἀποστερεῖ τοῦ μέρους τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ Πολυνείκην· φυγὰς δ' ἐκεῖνος εἰς Ἄργος παραγενόμενος ἔγημε τὴν θυγατέρα τοῦ βασιλέως Ἀδράστου. κατελθεῖν δὲ εἰς τὴν πατρίδα φιλοτιμούμενος καὶ πείσας τὸν πενθερόν, συνήθροισεν ἀξιόχρεων στρατὸν κατὰ τοῦ ἀδελφοῦ καὶ εἰς Θήβας ἐλήλυθεν. ἡ δὲ μήτηρ αὐτοῦ Ἰοκάστη ἔπεισεν αὐτὸν ὑπόσπονδον ἐλθεῖν εἰς τὴν πόλιν καὶ διαλεχθῆναι πρότερον τῷ ἀδελφῷ περὶ τῆς ἀρχῆς· δεινοπροσωπήσαντος δὲ ὑπὸ τῆς τυραννίδος τοῦ Ἐτεοκλέους ἡ μὲν Ἰοκάστη τὰ τέκνα εἰς φιλίαν συναγαγεῖν οὐκ ἠδύνατο· Πολυνείκης δὲ ὡς πρὸς πολέμιον λοιπὸν παραταξάμενος ἀνεχώρησε τῆς πόλεως. ἔχρησε δὲ ὁ Τειρεσίας νικήσειν τοὺς ἐκ τῆς πόλεως, ἐὰν ὁ παῖς Κρέοντος Μενοικεὺς σφάγιον Ἄρει γένηται. ὁ μὲν οὖν Κρέων ἠρνήσατο ἐπιδοῦναι τῇ πόλει τὸν παῖδα· ὁ δὲ νεανίσκος ἐβούλετο καὶ τοῦ πατρὸς αὐτοῦ φυγὴν μετὰ χρημάτων διδόντος ἑαυτὸν ἀπέσφαξε. Θηβαῖοι δὲ τοὺς ἡγεμόνας τῶν Ἀργείων ἔσφαξαν. Ἐτεοκλῆς δὲ καὶ Πολυνείκης μονομαχήσαντες ἀνεῖλον ἀλλήλους. ἡ μὲν οὖν μήτηρ αὐτῶν εὑροῦσα νεκροὺς τοὺς υἱοὺς κατέσφαξεν ἑαυτήν· ὁ δὲ ταύτης ἀδελφὸς Κρέων παρέλαβε τὴν δυναστείαν. οἱ δὲ Ἀργεῖοι νικηθέντες τῆς μάχης ἀνεχώρησαν. Κρέων δὲ δυσχερῶς φέρων τοὺς μὲν ὑπὸ τῇ Καδμείᾳ τῶν πο-

λεμίων πεσόντας οὐκ ἔδωκεν εἰς ταφήν, Πολυνείκην δὲ ἀκήδευτον ἔρριψεν, Οἰδίπουν δὲ φυγάδα τῆς πατρίδος ἀπέπεμψεν, ἐφ᾽ ὧν μὲν οὐ φυλάξας τὸν ἀνθρώπινον νόμον, ἐφ᾽ ὧν δὲ τὴν ὀργὴν λογοποιήσας οὐδὲ παρὰ τὴν δυστυχίαν ἐλεήσας.

ΑΛΛΩΣ.

Περιπαθεῖς ἄγαν αἱ Φοίνισσαι τῇ τραγῳδίᾳ. ἀπώλετο γὰρ ὁ Κρέοντος υἱὸς ἀπὸ τοῦ τείχους ὑπὲρ τῆς πόλεως ἀποθανών· ἀπέθανον δὲ καὶ οἱ δύο ἀδελφοὶ ὑπ᾽ ἀλλήλων, καὶ Ἰοκάστη ἡ μήτηρ αὐτῶν ἑαυτὴν ἀνεῖλεν ἐπὶ τοῖς παισί, καὶ οἱ ἐπὶ Θήβας στρατευόμενοι Ἀργεῖοι ἀπώλοντο, καὶ ἄταφος Πολυνείκης πρόκειται, καὶ Οἰδίπους τῆς πατρίδος ἐκβάλλεται καὶ σὺν αὐτῷ ἡ θυγάτηρ Ἀντιγόνη. ἔστι δὲ τὸ δρᾶμα καὶ πολυπρόσωπον καὶ γνωμῶν πολλῶν μεστὸν καὶ καλῶν. [ὁ χορὸς ἐκ Φοινισσῶν παρθένων, ὅθεν καὶ τὸ δρᾶμα ἐπεκλήθη, τῶν ἐκ τῆς Παλαιτύρου.]

ΑΛΛΩΣ.

Ἔστι μὲν ταῖς σκηνικαῖς ὄψεσι καλὸν τὸ δρᾶμα * * * ἐπεὶ καὶ παραπληρωματικόν. ἥ τε ἀπὸ τῶν τειχέων Ἀντιγόνη θεωροῦσα μέρος οὐκ ἔστι τοῦ δράματος, καὶ ὑπόσπονδος Πολυνείκης οὐδενὸς ἕνεκα παραγίνεται, ὅ τε ἐπὶ πᾶσι μετ᾽ ᾠδῆς ἀδολέσχου φυγαδευόμενος Οἰδίπους προσέρριπται διὰ κενῆς.

ΑΛΛΩΣ.

Ἁρπασθείσης Εὐρώπης ὑπὸ Διὸς γενομένου ταύρου καὶ μετακομισθείσης ἀπὸ Φοινίκης διὰ θαλάττης εἰς Κρήτην, ὁ μὲν πατὴρ αὐτῆς Ἀγήνωρ ἔπεμψε τὸν υἱὸν Κάδμον ἐπὶ ζήτησιν τῆς κόρης εἰ-

πών, εἰ μὴ ταύτην εὑρὼν ἄξοι, μηδ' ἂν αὐτὸν ἐπανελθεῖν οἴκαδε. Κάδμος δὲ οὐκ ἔχων ὅ τι καὶ δράσειε, μόνην ἔγνω τῆς ἀπορίας λύσιν καταφυγεῖν εἰς Ἀπόλλω κἀκ τούτου γνῶναι τί δεῖ ποιεῖν. ἐλθὼν οὖν εἰς Δελφοὺς ἤρετο τοῦτον περὶ τῆς ἀδελφῆς· καὶ ὃς χρᾷ μὲν οὐδὲν αὐτῷ περὶ τῆς Εὐρώπης, λέγει δὲ ὡς ἐξελθόντα ἐκεῖθεν, ἀκολουθήσαντα βοΐ, οἷ ἂν αὕτη γε πέσῃ, κἀκεῖ κτίζειν πόλιν. ὁ δὲ πεισθεὶς τῷ χρησμῷ τὴν μὲν πρὸς τὴν πατρίδα ἐπάνοδον εἴασε, βοῦν δὲ κατὰ τύχην εὑρὼν ἡγεμόνα τῆς ὁδοῦ ἐποιήσατο. ἐλθούσης δὲ αὐτῆς ἐν ᾧ νῦν ἑστήκασι τόπῳ αἱ Θῆβαι κἀκεῖ παραχρῆμα πεσούσης, ἔγνω τε οὗτος τὸν χρησμὸν τελεσφόρον καὶ πόλιν ἑπτάπυλον κτίζει τὰς Θήβας ὁμωνύμους τῶν ἑκατονταπύλων Αἰγυπτίων Θηβῶν, χρησάμενος ἐπιστήμονι τῆς οἰκοδομῆς καὶ ἐργάτῃ Ἀμφίονι τῷ μουσικῷ· τοῦτον γάρ φασιν ἀνακρουόμενον μέλος θέλγειν τε τῷ μέλει τοὺς λίθους καὶ ἀλλεπαλλήλως αὐτῶν τιθεμένων ἀποδεῖξαι τὰ τείχη· πύλας δὲ ἔχειν τὴν πόλιν ἑπτά, ἐπειδὴ καὶ οἱ τῆς λύρας τόνοι ἑπτά εἰσι. καὶ τὸ μὲν μυθῶδες τοιοῦτον· πέπλασται δὲ διὰ τὸ ἄκρως ἡρμόσθαι τὰ τείχη πρὸς ἄλληλα· ἡ γὰρ ἁρμονία μουσικῆς ἴδιον.

Κάδμος οὖν γήμας τὴν Ἀφροδίτης καὶ Ἄρεως παῖδα Ἁρμονίαν ἐγέννησε Πολύδωρον, ὁ δὲ Λάβδακον, ὁ δὲ Λάιον. οὗτος ἀφικόμενός ποτε εἰς Ἦλιν καὶ τὸν τοῦ Πέλοπος υἱὸν Χρύσιππον ἰδών, ὃς ἦν ἐξ ἄλλης αὐτῷ γυναικὸς καὶ οὐκ ἐκ τῆς θυγατρὸς Οἰνομάου Ἱπποδαμείας, καὶ ἁλοὺς τούτου κατάκρας τῷ ἔρωτι, ἁρπάσας εἰς Θήβας ἤνεγκε καὶ συνῆν αὐτῷ τὰ ἐρωτικά, πρῶτος ἐν ἀνθρώποις τὴν ἀρρενοφθορίαν εὑρών, καθὼς δὴ καὶ ὁ Ζεὺς ἐν θεοῖς τὸν Γανυμήδην ἁρπάσας. ὁ δὲ Πέλοψ μαθὼν τοῦτο κατηράσατο Λαΐῳ

μηδέποτε μὲν παῖδα τεκεῖν, εἰ δ' ἄρα καὶ συμβαίη, ὑπ' αὐτοῦ τούτου ἀναιρεθήσεσθαι. διὰ ταῦτα πολὺν ἤδη χρόνον ὁ Λάιος ἄπαις ὢν παραγίνεται εἰς Πυθίαν καὶ παίδων αἰτεῖ γονήν. καὶ ἀκούει τοιόνδε χρησμόν·

Λάιε Λαβδακίδη, παίδων γένος ὄλβιον αἰτεῖς;
τέξεις μὲν φίλον υἱόν, ἀτὰρ τόδε σοι μόρος ἔσται,
παιδὸς ἑοῦ χείρεσσι λιπεῖν βίον· ὣς γὰρ ἔνευσε
Ζεὺς Κρονίδης Πέλοπος στυγεραῖς ἀραῖσι πιθήσας,
οὗ φίλον ἥρπασας υἱόν· ὁ δ' ηὔξατό σοι τάδε πάντα.

ὧντινων θεσπισμάτων τῇ τῆς γυναικὸς Ἰοκάστης ἐπιθυμίᾳ καὶ ἡδονῇ ὥσπερ ἐκλαθόμενος Λάιος, ἢ ὥς τινές φασι μιᾷ τῶν ἡμερῶν βαρυνθεὶς τῷ οἴνῳ καὶ συνελθὼν τῇ αὐτοῦ γυναικὶ Οἰδίποδα σπείρει, καὶ μετὰ τὸ τεχθῆναι αὐτὸν ἀναπεμπάσας τοὺς χρησμοὺς καὶ φόβον λαβών, διατορήσας τοὺς πόδας αὐτοῦ καὶ χρυσέους κρίκους διαπερονησάμενος ῥίπτει διὰ τῶν οἰκείων βουκόλων εἰς τὸ ὄρος τὸν Κιθαιρῶνα, ὡς ὑπὸ θηρίων ἐνταῦθα ἀναιρεθησόμενον. ἔτυχε δὲ κατ' ἐκεῖνο καιροῦ καὶ τοὺς Πολύβου νομέας βασιλέως Κορίνθου βόσκειν ἐκεῖ. οἳ καὶ τὸ βρέφος εὑρόντες καὶ ἀνελόμενοι φέρουσι πρὸς τὴν Πολύβου γυναῖκα Μερόπην· ἦν γὰρ ἀπαιδίᾳ δυστυχοῦσα καί πως πείθει τὸν ἄνδρα Πόλυβον αὐτὴ τοῦτο τεκεῖν. ἀνδρωθεὶς δὲ ὁ παῖς καί τινι τῶν ἐκεῖ συνελθὼν εἰς ἔριν, οἷα δὴ γίνεται, ὡς οὐκ εἴη Πολύβου παῖς ὄνειδος ἔσχε παρ' αὐτοῦ. ὅθεν ἀναστὰς ἀφικνεῖται πρὸς τὸν Ἀπόλλω πευσόμενος περὶ τούτου. καὶ ὡς ἔσται φονεὺς τοῦ πατρὸς μανθάνει καὶ ὡς τῇ τεκούσῃ συνέσοιτο, ταυτὶ μόνα· τίνες δὲ εἶεν αὐτῷ οἱ γονεῖς, σαφῶς οὐ μανθάνει. ἐπανιὼν δὲ ἐκεῖθεν ὑπήντησε Λαΐῳ, ἀφικνου-

μένῳ καὶ αὐτῷ πρὸς Ἀπόλλω ἐφ᾽ ᾧ περὶ τοῦ ἐκτεθέντος παιδὸς γνῶναι εἰ τέθνηκε. καὶ ὁ τοῦ Λαΐου θεράπων αὐτῷ κελεύει μικρὸν ὑποχωρῆσαι τῷ βασιλεῖ. Οἰδίπους δὲ ὑπεροψίᾳ κρατούμενος καὶ τοῦτο μηδὲν ἐνεγκὼν κτείνει τε τὸν θεράποντα καὶ σὺν αὐτῷ τὸν δεσπότην οὐκ εἰδὼς ὡς πατροκτόνος γέγονεν, ἑνὸς μόνον τῶν συνεπομένων Λαΐῳ διαφυγόντος, ὃς δὴ καὶ τὸν φόνον ὕστερον διεσάφησεν, ὥς φησι Σοφοκλῆς ἐν Οἰδίποδι τυράννῳ. τότε οὖν Οἰδίπους τοὺς τοῦ Λαΐου ἵππους λαβὼν καὶ πάντα τὰ αὐτοῦ, καταλαμβάνει τὴν Κόρινθον καὶ διδοὺς ταῦτα πάντα Πολύβῳ τροφὰς ἐκεῖθεν ἀναχωρεῖ, τὸν περὶ τῆς πατροκτονίας καὶ τῆς τῇ μητρὶ συνελεύσεως χρησμὸν δεδιώς· ᾤετο γὰρ πατέρας αὐτοῦ τῷ ὄντι Πόλυβον καὶ τὴν ἐκείνου γυναῖκα εἶναι. καὶ ἀφικνεῖται πρὸς Θήβας, αἳ δὴ καὶ ὑπὸ τῆς Σφιγγὸς ἐχειμάζοντο τότε, χρησμούς τε ῥαψῳδούσης καὶ ὅντινα βούλοιτο τῶν πολιτῶν ἁρπαξούσης καὶ διαφθειρούσης διὰ τὸ μὴ συνιέναι σφᾶς τῶν ὑπ᾽ αὐτῆς λεγομένων χρησμῶν. ἐπήγαγε δὲ ταύτην ὁ Ἄρης Θηβαίοις, ἀμυνόμενος αὐτοὺς διὰ τὸν τοῦ παιδὸς δράκοντος φόνον, ὃν ὁ Κάδμος ἀνεῖλε καὶ τοὺς ὀδόντας αὐτοῦ ἔσπειρεν, ἐξ ὧν ἀνεφάνησαν οἱ Γίγαντες. ἦν δὲ τέρας ἡ Σφὶγξ πρόσωπον μὲν ἔχουσα παρθένου, στῆθος δὲ καὶ χεῖρας καὶ πόδας καὶ ὄνυχας λέοντος, οὐραίαν δὲ δράκοντος, πτερὰ δὲ ὄρνιθος, δι᾽ ὧν ἵπτατο. ἔτυχε δὲ τοῦτο εἰποῦσα τοιοῦτό τι τοῖς Θηβαίοις τότε αἴνιγμα, ὡς Ἀσκληπιάδης ἀναγράφει·

ἔστι δίπουν ἐπὶ γῆς καὶ τετράπον, οὗ μία φωνή,
καὶ τρίπον· ἀλλάσσει δὲ φυὴν μόνον, ὅσσ᾽ ἐπὶ γαῖαν
ἑρπετὰ γίνονται ἀνά τ᾽ αἰθέρα καὶ κατὰ πόντον.

ἀλλ᾽ ὁπόταν πλεόνεσσιν ἐρειδόμενον ποσὶ βαίνῃ,
ἔνθα μένος γυίοισιν ἀφαυρότερον πέλει αὐτοῦ.

οὗπερ ἀγνοουμένου ἐκήρυξε Κρέων ὁ ἀδελφὸς Ἰοκάστης τῆς βασιλίσσης, ὡς ὅστις εὕροι τὸ αἴνιγμα, τούτῳ συνάψει τὴν ἀδελφήν. Οἰδίπους δέ, ὡς ἔφημεν, διάγων ἐκεῖ τότε, ἀκούσας τὰ κηρύγματα λύει τε τὸ αἴνιγμα τῆς Σφιγγὸς καὶ τὴν μητέρα οὐκ εἰδὼς εἰς γυναῖκα λαμβάνει. ἔλυσε δὲ οὕτως, ὥς φασι·

κλῦθι καὶ οὐκ ἐθέλουσα, κακόπτερε Μοῦσα θανόντων,
φωνῆς ἡμετέρης σὸν τέλος ἀμπλακίης.
ἄνθρωπον κατέλεξας, ὃς ἡνίκα γαῖαν ἐφέρπει,
πρῶτον ἔφυ τετράπους νήπιος ἐκ λαγόνων·
γηραλέος δὲ πέλων τρίτατον πόδα βάκτρον ἐρείδει,
αὐχένα φορτίζων, γήραϊ καμπτόμενος.

ἀκούσασα δὲ τὴν λύσιν ἡ Σφὶγξ ἑαυτὴν ἀναιρεῖ παραχρῆμα ῥίψασα τοῦ ἀέρος. Οἰδίπους δὲ συνὼν τῇ μητρὶ καὶ παῖδας ἐξ αὐτῆς φύσας τέσσαρας, ἄρρενας μὲν Ἐτεοκλέα καὶ Πολυνείκην, θηλείας δὲ Ἀντιγόνην καὶ Ἰσμήνην, ὡς ἔγνω τὸ μίασμα ὕστερον, ἐτύφλωσεν ἑαυτόν. Ἐτεοκλῆς δὲ καὶ Πολυνείκης, θέλοντές πως ἀφανίσαι τὸ ὄνειδος, κατακλείουσιν αὐτὸν ἐν οἰκίσκῳ, ἵν᾽ ὑπὸ μηδενὸς θεωρούμενος εἰς λήθην ἥξοι τὸ κατ᾽ ἐκείνου. καὶ ὃς τοῦτο ὑπεραλγήσας ἀρᾶται τούτοις τὴν βασιλείαν σιδήρῳ μερίσαι. οἱ δὲ τὰς τοῦ πατρὸς ἀρὰς δεδιότες μηχανῶνται τοιόνδε· ἔχεσθαι τῆς ἀρχῆς ἕνα παρ᾽ ἕνα καὶ ταύτης παραχωρεῖν θατέρῳ θάτερον. ὁ τοίνυν Ἐτεοκλῆς, ἅτε πρῶτος ὢν τοῦ ἀδελφοῦ καὶ πρῶτος τῆς ἀρχῆς ἥψατο, Πολυνείκης δὲ ὑπεχώρησε καὶ τελεσθέντος ἐνιαυτοῦ ἀφίκετο πρὸς τὸν ἀδελφὸν αἰτῶν καὶ αὐτὸς ἄρξειν ἐνιαυτόν. Ἐτεοκλῆς δὲ οὔτε ἐξέστη τῆς ἀρχῆς καὶ ἄτιμον τὸν

ἀδελφὸν ἀπέπεμψεν. ὃς καὶ πλανώμενος ἦλθεν εἰς Ἄργος καὶ τὴν τοῦ βασιλέως Ἀδράστου λαβὼν θυγατέρα πείθει τὸν κηδεστὴν συνάρασθαι τούτῳ πρὸς τὴν τῆς βασιλείας ἀνάληψιν, καὶ πλείστην ὅσην παραλαβὼν στρατιὰν ἐπιστρατεύει τῷ ἀδελφῷ. ὅπως δὲ ἡ μήτηρ ἐθέλουσα πρὸ τῆς συμπλοκῆς διαλλάξαι τοὺς παῖδας οὐδὲν ἴσχυσε, καὶ ὡς ἔχρησε Τειρεσίας, εἰ ὁ Κρέοντος υἱὸς Μενοικεὺς ἀνέλοι ἑαυτὸν ἐπὶ τὸν τοῦ δράκοντος φωλεόν, κρατήσειν Ἀργείων Θηβαίους, καὶ ὡς γέγονε ταῦτα, καὶ οἱ τῶν Ἀργείων ἡγεμόνες πεπτώκασι πάντες πλὴν Ἀδράστου, καὶ ὡς μονομαχήσαντες πρὸς ἀλλήλους Ἐτεοκλῆς καὶ Πολυνείκης ὑπ' ἀλλήλων ἑκάτεροι ἀνῃρέθησαν, καὶ ὡς ἐλθοῦσα πρὸς αὐτοὺς Ἰοκάστη καὶ τεθνηκότας εὑροῦσα συναπέσφαξεν ἑαυτήν, καὶ ὡς Κρέων ἁψάμενος τῆς ἀρχῆς Ἐτεοκλῆν μὲν θάπτει, Πολυνείκην δὲ ἄταφον εἴασε καὶ Οἰδίπουν τῆς πόλεως ἐξήλασε, πάντα ταῦτα Εὐριπίδης ἔνδον κατὰ λεπτὸν διηγεῖται. ἔστι δὲ τὸ παρὸν δρᾶμα τῶν ἄγαν ἐξαιρέτων, διανοίαις καὶ γνώμαις πολλαῖς καὶ καλαῖς καὶ ποικίλαις ἀνθοῦν καὶ μεταχειρίσει ἀρίστῃ καὶ διὰ πάντων ἀκμάζον, εἰ καὶ ἀπίθανον ἔχει τὴν εἰς Θήβας Πολυνείκους εἴσοδον. ἐπιγέγραπται δὲ ἀπὸ τοῦ χοροῦ Εὐριπίδου Φοίνισσαι πρὸς ἀντιδιαστολὴν τῶν ἑπτὰ ἐπὶ Θήβας Αἰσχύλου. ταύτῃ γὰρ τῇ ὑποθέσει κἀκεῖνος χρῆται ἐν τῷ δευτέρῳ. αὐτὰς δὲ τὰς παρθένους ἐκ Φοινίκης Ἀγηνορίδαι θυσίαν τῷ Ἀπόλλωνι ἔπεμψαν, αἵτινες καὶ πρὸς Δελφοὺς ἐρχόμεναι παρέβαλον ταῖς Θήβαις διὰ τὸ καὶ τὸν Κάδμον, ὡς ἔφημεν, ἐκ Φοινίκης εἶναι, καὶ καταλαβόντος τοῦ πολέμου ἠναγκάσθησαν μένειν αὐτόθι, μέχρις ἂν ἡ μάχη λωφήσῃ.

ΕΥΡΙΠΙΔΟΥ

ΦΟΙΝΙΣΣΑΙ.

ΙΟ. Ὦ τὴν ἐν ἄστροις οὐρανοῦ τέμνων ὁδὸν
καὶ χρυσοκολλήτοισιν ἐμβεβὼς δίφροις
Ἥλιε, θοαῖς ἵπποισιν εἱλίσσων φλόγα,
ὡς δυστυχῆ Θήβαισι τῇ τόθ' ἡμέρᾳ
ἀκτῖν' ἐφῆκας, Κάδμος ἡνίκ' ἦλθε γῆν
τήνδ', ἐκλιπὼν Φοίνισσαν ἐναλίαν χθόνα·
ὃς παῖδα γήμας Κύπριδος Ἁρμονίαν ποτὲ
Πολύδωρον ἐξέφυσε, τοῦ δὲ Λάβδακον
φῦναι λέγουσιν, ἐκ δὲ τοῦδε Λάιον.
ἐγὼ δὲ παῖς μὲν κλῄζομαι Μενοικέως,
Κρέων τ' ἀδελφὸς μητρὸς ἐκ μιᾶς ἔφυ·
καλοῦσι δ' Ἰοκάστην με, τοῦτο γὰρ πατὴρ
ἔθετο, γαμεῖ δὲ Λάιός μ'· ἐπεὶ δ' ἄπαις
ἦν χρόνια λέκτρα τἄμ' ἔχων ἐν δώμασιν,
ἐλθὼν ἐρωτᾷ Φοῖβον ἐξαιτεῖ θ' ἅμα
παίδων ἐς οἴκους ἀρσένων κοινωνίαν.
ὁ δ' εἶπεν· ὦ Θήβαισιν εὐίπποις ἄναξ,
μὴ σπεῖρε τέκνων ἄλοκα δαιμόνων βίᾳ·
εἰ γὰρ τεκνώσεις παῖδ', ἀποκτενεῖ σ' ὁ φύς,
καὶ πᾶς σὸς οἶκος βήσεται δι' αἵματος.
ὁ δ' ἡδονῇ δοὺς εἴς τε βακχεῖον πεσὼν
ἔσπειρεν ἡμῖν παῖδα, καὶ σπείρας βρέφος,
γνοὺς τἀμπλάκημα τοῦ θεοῦ τε τὴν φάτιν,

λειμῶν᾽ ἐς Ἥρας καὶ Κιθαιρῶνος λέπας
δίδωσι βουκόλοισιν ἐκθεῖναι βρέφος,
σφυρῶν σιδηρᾶ κέντρα διαπείρας μέσων.
Πολύβου δέ νιν λαβόντες ἱπποβουκόλοι
φέρουσ᾽ ἐς οἴκους εἴς τε δεσποίνης χέρας
ἔθηκαν. ἡ δὲ τὸν ἐμὸν ὠδίνων πόνον
μαστοῖς ὑφεῖτο καὶ πόσιν πείθει τεκεῖν.
ἤδη δὲ πυρσαῖς γένυσιν ἐξανδρούμενος
παῖς οὑμὸς ἢ γνοὺς ἤ τινος μαθὼν πάρα
ἔστειχε τοὺς φύσαντας ἐκμαθεῖν θέλων
πρὸς δῶμα Φοίβου, Λάιός θ᾽ οὑμὸς πόσις
τὸν ἐκτεθέντα παῖδα μαστεύων μαθεῖν
εἰ μηκέτ᾽ εἴη. καὶ ξυνάπτετον πόδα
εἰς ταὐτὸν ἄμφω Φωκίδος σχιστῆς ὁδοῦ.
καί νιν κελεύει Λαΐου τροχηλάτης·
ὦ ξένε, τυράννοις ἐκποδὼν μεθίστασο.
ὁ δ᾽ εἷρπ᾽ ἄναυδος, μέγα φρονῶν· πῶλοι δέ νιν
χηλαῖς τένοντας ἐξεφοίνισσον ποδῶν.
ὅθεν — τί τἀκτὸς τῶν κακῶν με δεῖ λέγειν; —
παῖς πατέρα καίνει καὶ λαβὼν ὀχήματα
Πολύβῳ τροφεῖ δίδωσιν. ὡς δ᾽ ἐπεξάρει
Σφὶγξ ἁρπαγαῖσι πόλιν, ἐμός τ᾽ οὐκ ἦν πόσις,
Κρέων ἀδελφὸς τἀμὰ κηρύσσει λέχη,
ὅστις σοφῆς αἴνιγμα παρθένου μάθοι,
τούτῳ ξυνάψειν λέκτρα. τυγχάνει δέ πως
αἴνιγμ᾽ ἐμὸς παῖς Οἰδίπους Σφιγγὸς μαθών,
ὅθεν τύραννος τῆσδε γῆς καθίσταται
[καὶ σκῆπτρ᾽ ἔπαθλα τῆσδε λαμβάνει χθονός].
γαμεῖ δὲ τὴν τεκοῦσαν, οὐκ εἰδὼς τάλας
οὐδ᾽ ἡ τεκοῦσα παιδὶ συγκοιμωμένη.
τίκτω δὲ παῖδας παιδὶ δύο μὲν ἄρσενας,

ὅθεν νιν Ἑλλὰς ὠνόμαζεν Οἰδίπουν. 27

Ἐτεοκλέα κλεινήν τε Πολυνείκους βίαν,
κόρας τε δισσάς· τὴν μὲν Ἰσμήνην πατὴρ
ὠνόμασε, τὴν δὲ πρόσθεν Ἀντιγόνην ἐγώ.
μαθὼν δὲ τἀμὰ λέκτρα μητρῴων γάμων
ὁ πάντ᾽ ἀνατλὰς Οἰδίπους παθήματα
εἰς ὄμμαθ᾽ αὑτοῦ δεινὸν ἐμβάλλει φόνον,
χρυσηλάτοις πόρπαισιν αἱμάξας κόρας.
ἐπεὶ δὲ τέκνων γένυς ἐμῶν σκιάζεται,
κλείθροις ἔκρυψαν πατέρ᾽, ἵν᾽ ἀμνήμων τύχη
γένοιτο πολλῶν δεομένη σοφισμάτων.
ζῶν δ᾽ ἔστ᾽ ἐν οἴκοις, πρὸς δὲ τῆς τύχης νοσῶν
ἀρὰς ἀρᾶται παισὶν ἀνοσιωτάτας,
θηκτῷ σιδήρῳ δῶμα διαλαχεῖν τόδε.
τὼ δ᾽ εἰς φόβον πεσόντε μὴ τελεσφόρους
εὐχὰς θεοὶ κραίνωσιν οἰκούντων ὁμοῦ,
ξυμβάντ᾽ ἔταξαν τὸν νεώτερον πάρος
φεύγειν ἑκόντα τήνδε Πολυνείκην χθόνα,
Ἐτεοκλέα δὲ σκῆπτρ᾽ ἔχειν μένοντα γῆς
ἐνιαυτὸν ἀλλάσσοντ᾽. ἐπεὶ δ᾽ ἐπὶ ζυγοῖς
καθέζετ᾽ ἀρχῆς, οὐ μεθίσταται θρόνων,
φυγάδα δ᾽ ἀπωθεῖ τῆσδε Πολυνείκην χθονός.
ὁ δ᾽ Ἄργος ἐλθών, κῆδος Ἀδράστου λαβών,
πολλὴν ἀθροίσας ἀσπίδ᾽ Ἀργείων ἄγει·
ἐπ᾽ αὐτὰ δ᾽ ἐλθὼν ἑπτάπυλα τείχη τάδε,
πατρῷ᾽ ἀπαιτεῖ σκῆπτρα καὶ μέρη χθονός.
ἐγὼ δ᾽ ἔριν λύσουσ᾽ ὑπόσπονδον μολεῖν
ἔπεισα παιδὶ παῖδα πρὶν ψαῦσαι δορός.
ἥξειν δ᾽ ὁ πεμφθείς φησιν αὐτὸν ἄγγελος.
ἀλλ᾽ ὦ φαεννὰς οὐρανοῦ ναίων πτύχας
Ζεῦ, σῶσον ἡμᾶς, δὸς δὲ σύμβασιν τέκνοις.
χρὴ δ᾽, εἰ σοφὸς πέφυκας, οὐκ ἐᾶν βροτὸν
τὸν αὐτὸν ἀεὶ δυστυχῆ καθεστάναι.

ΠΑΙ. ὦ κλεινὸν οἴκοις Ἀντιγόνη θάλος πατρί,
ἐπεί σε μήτηρ παρθενῶνας ἐκλιπεῖν
μεθῆκε μελάθρων ἐς διῆρες ἔσχατον
στράτευμ᾽ ἰδεῖν Ἀργεῖον ἱκεσίαισι σαῖς,
ἐπίσχες, ὡς ἂν προυξερευνήσω στίβον,
μή τις πολιτῶν ἐν τρίβῳ φαντάζεται,
κἀμοὶ μὲν ἔλθῃ φαῦλος ὡς δούλῳ ψόγος,
σοὶ δ᾽ ὡς ἀνάσσῃ· πάντα δ᾽ ἐξειδὼς φράσω
ἅ τ᾽ εἶδον εἰσήκουσά τ᾽ Ἀργείων πάρα,
σπονδὰς ὅτ᾽ ἦλθον σῷ κασιγνήτῳ φέρων
ἐνθένδ᾽ ἐκεῖσε δεῦρό τ᾽ αὖ κείνου πάρα.
ἀλλ᾽ οὔτις ἀστῶν τοῖσδε χρίμπτεται δόμοις,
κέδρου παλαιὰν κλίμακ᾽ ἐκπέρα ποδί·
σκόπει δὲ πεδία καὶ παρ᾽ Ἰσμηνοῦ ῥοὰς
Δίρκης τε νᾶμα, πολεμίων στράτευμ᾽ ὅσον.
ΑΝ. ὄρεγέ νυν ὄρεγε γεραιὰν νέᾳ
χεῖρ᾽ ἀπὸ κλιμάκων, ποδὸς
ἴχνος ἐπαντέλλων.
ΠΑΙ. ἰδοὺ ξύναψον, παρθέν᾽· εἰς καιρὸν δ᾽ ἔβης·
κινούμενον γὰρ τυγχάνει Πελασγικὸν
στράτευμα, χωρίζουσι δ᾽ ἀλλήλων λόχους.
ΑΝ. ἰὼ πότνια παῖ Λατοῦς
Ἑκάτα, κατάχαλκον ἅπαν
πεδίον ἀστράπτει.
ΠΑΙ. οὐ γάρ τι φαύλως ἦλθε Πολυνείκης χθόνα,
πολλοῖς μὲν ἵπποις, μυρίοις δ᾽ ὅπλοις βρέμων.
ΑΝ. ἆρα πύλαι κλείθροις χαλκόδετ᾽ ἔμβολά τε
λαϊνέοισιν Ἀμφίονος ὀργάνοις
τείχεος ἥρμοσται;
ΠΑΙ. θάρσει· τά γ᾽ ἔνδον ἀσφαλῶς ἔχει πόλις.
ἀλλ᾽ εἰσόρα τὸν πρῶτον, εἰ βούλει μαθεῖν.
ΑΝ. τίς οὗτος ὁ λευκολόφας,

πρόπαρ ὃς ἀγεῖται στρατοῦ
πάγχαλκον ἀσπίδ᾽ ἀμφὶ βρα-
χίονα κουφίζων;
ΠΑΙ. λοχαγός, ὦ δέσποινα. ΑΝ. τίς πόθεν γεγώς;
αὔδασον, ὦ γεραιέ, τίς ὀνομάζεται;
ΠΑΙ. οὗτος Μυκηναῖος μὲν αὐδᾶται γένος,
Λερναῖα δ᾽ οἰκεῖ νάμαθ᾽, Ἱππομέδων ἄναξ.
ΑΝ. ἒ ἔ ὡς γαῦρος, ὡς φοβερὸς εἰσιδεῖν,
γίγαντι γηγενέτᾳ προσόμοιος,
ἀστερωπὸς ἐν γραφαῖσιν, οὐχὶ πρόσφορος
ἁμερίῳ γέννᾳ.
ΠΑΙ. τὸν δ᾽ ἐξαμείβοντ᾽ οὐχ ὁρᾷς Δίρκης ὕδωρ
[λοχαγόν]; ΑΝ. ἄλλος ἄλλος ὅδε τευχέων τρόπος.
τίς δ᾽ ἐστὶν οὗτος; ΠΑΙ. παῖς μὲν Οἰνέως ἔφυ
Τυδεύς, Ἄρην δ᾽ Αἰτωλὸν ἐν στέρνοις ἔχει.
ΑΝ. οὗτος ὁ τᾶς Πολυνείκεος, ὦ γέρον,
αὐτοκασιγνήτας νύμφας
ὁμόγαμος κυρεῖ;
ὡς ἀλλόχρως ὅπλοισι μιξοβάρβαρος.
ΠΑΙ. σακεσφόροι γὰρ πάντες Αἰτωλοί, τέκνον,
λόγχαις τ᾽ ἀκοντιστῆρες εὐστοχώτατοι.
ΑΝ. σὺ δ᾽, ὦ γέρον, πῶς αἰσθάνει σαφῶς τάδε;
ΠΑΙ. σημεῖ᾽ ἰδὼν τότ᾽ ἀσπίδων ἐγνώρισα,
[σπονδὰς ὅτ᾽ ἦλθον σῷ κασιγνήτῳ φέρων·]
ἃ προσδεδορκὼς οἶδα τοὺς ὡπλισμένους.
ΑΝ. τίς δ᾽ οὗτος ἀμφὶ μνῆμα τὸ Ζήθου περᾷ
καταβόστρυχος, ὄμμασι γοργὸς εἰσ-
ιδεῖν νεανίας
λοχαγός; ὡς ὄχλος νιν ὑστέρῳ ποδὶ
πάνοπλος ἀμφέπει.
ΠΑΙ. ὅδ᾽ ἐστὶ Παρθενοπαῖος, Ἀταλάντης γόνος.
ΑΝ. ἀλλά νιν ἁ κατ᾽ ὄρη μετὰ ματέρος

Ἄρτεμις ἱεμένα τόξοις δαμάσασ᾽ ὀλέσειεν,
ὃς ἐπ᾽ ἐμὰν πόλιν ἔβα πέρσων.
ΠΑΙ. *εἴη τάδ᾽, ὦ παῖ· σὺν δίκῃ δ᾽ ἥκουσι γῆν,*
ὃ καὶ δέδοικα μὴ σκοπῶσ᾽ ὀρθῶς θεοί.
ΑΝ. *ποῦ δ᾽ ὃς ἐμοὶ μιᾶς ἐγένετ᾽ ἐκ ματρὸς*
πολυπόνῳ μοίρᾳ;
ὦ φίλτατ᾽, εἰπέ, ποῦ ᾽στι Πολυνείκης, γέρον.
ΠΑΙ. *ἐκεῖνος ἑπτὰ παρθένων τάφου πέλας*
Νιόβης Ἀδράστῳ πλησίον παραστατεῖ.
ὁρᾷς; ΑΝ. *ὁρῶ δῆτ᾽ οὐ σαφῶς, ὁρῶ δέ πως*
μορφῆς τύπωμα στέρνα τ᾽ ἐξεικασμένα.
ἀνεμώκεος εἴθε δρόμον νεφέλας
ποσὶν ἐξανύσαιμι δι᾽ αἰθέρος
πρὸς ἐμὸν ὁμογενέτορα, περὶ δ᾽ ὠλένας
δέρᾳ φιλτάτᾳ βάλοιμι χρόνῳ
φυγάδα μέλεον. ὡς
ὅπλοισι χρυσέοισιν ἐκπρεπής, γέρον,
ἑῴοις ὅμοια φλεγέθων βολαῖς ἀελίου.
ΠΑΙ. *ἥξει δόμους τούσδ᾽, ὥστε σ᾽ ἐκπλῆσαι χαρᾶς,*
ἔνσπονδος. ΑΝ. *οὗτος δ᾽, ὦ γεραιέ, τίς κυρεῖ,*
ὃς ἅρμα λευκὸν ἡνιοστροφεῖ βεβώς;
ΠΑΙ. *ὁ μάντις Ἀμφιάραος, ὦ δέσποιν᾽, ὅδε·*
σφάγια δ᾽ ἅμ᾽ αὐτῷ, γῆς φιλαίματοι ῥοαί.
ΑΝ. *ὦ λιπαροζώνου θύγατερ ἁ Λατοῦς*
Σελαναία, χρυσεόκυκλον φέγγος,
ὡς ἀτρεμαῖα κέντρα καὶ σώφρονα
πώλοις μεταφέρων ἰθύνει.
ποῦ δ᾽ ὃς τὰ δεινὰ τῇδ᾽ ἐφυβρίζει πόλει
Καπανεύς; ΠΑΙ. *ἐκεῖνος προσβάσεις τεκμαίρεται*
πύργων ἄνω τε καὶ κάτω τείχη μετρῶν.
ΑΝ. *ἰώ,*
Νέμεσι καὶ Διὸς βαρύβρομοι βρονταί,

κεραυνῶν τε φῶς αἰθαλόεν, σύ τοι
μεγαλαγορίαν ὑπεράνορα κοιμίζοις·
ὅδ᾽ ἐστίν, αἰχμαλώτιδας
ὃς δορὶ Θηβαίας Μυκήναισι
Λερναίᾳ τε δώσειν τριαίνᾳ,
Ποσειδωνίοις Ἀμυμωνίοις
ὕδασι, δουλείαν περιβαλών;
μήποτε μήποτε τάνδ᾽, ὦ πότνια,
χρυσεοβόστρυχον ὦ Διὸς ἔρνος
Ἄρτεμι, δουλοσύναν τλαίην.

ΠΑΙ. *ὦ τέκνον, εἴσβα δῶμα καὶ κατὰ στέγας*
ἐν παρθενῶσι μίμνε σοῖς, ἐπεὶ πόθου
εἰς τέρψιν ἦλθες ὧν ἔχρῃζες εἰσιδεῖν.
ὄχλος γάρ, ὡς ταραγμὸς εἰσῆλθεν πόλιν,
χωρεῖ γυναικῶν πρὸς δόμους τυραννικούς.
φιλόψογον γὰρ χρῆμα θηλειῶν ἔφυ,
σμικράς τ᾽ ἀφορμὰς ἢν λάβωσι τῶν λόγων,
πλείους ἐπεισφέρουσιν· ἡδονὴ δέ τις
γυναιξὶ μηδὲν ὑγιὲς ἀλλήλαις λέγειν.

ΧΟ. *Τύριον οἶδμα λιποῦσ᾽ ἔβαν* στρ.
ἀκροθίνια Λοξίᾳ
Φοινίσσας ἀπὸ νάσου
Φοίβῳ δούλα μελάθρων,
ἵν᾽ ὑπὸ δειράσι νιφοβόλοις
Παρνασοῦ κατενάσθην,
Ἰόνιον κατὰ πόντον ἐλά-
τᾳ πλεύσασα περιρρύτων
ὑπὲρ ἀκαρπίστων πεδίων
Σικελίας Ζεφύρου πνοαῖς
ἱππεύσαντος ἐν οὐρανῷ
κάλλιστον κελάδημα.

202 — 213 = 214 — 225

πόλεος ἐκπροκριθεῖσ᾽ ἐμᾶς ἀντ.
καλλιστεύματα Λοξίᾳ
Καδμείων ἔμολον γᾶν,
κλεινῶν Ἀγηνοριδᾶν
ὁμογενεῖς ἐπὶ Λαΐου
πεμφθεῖσ᾽ ἐνθάδε πύργους.
ἴσα δ᾽ ἀγάλμασι χρυσοτεύ-
κτοις Φοίβῳ λάτρις γενόμαν.
ἔτι δὲ Κασταλίας ὕδωρ
ἐπιμένει με κόμας ἐμὰς
δεῦσαι παρθένιον χλιδὰν
Φοιβείαισι λατρείαις.
ὦ λάμπουσα πέτρα πυρὸς
δικόρυφον σέλας ὑπὲρ ἄκρων
Βακχείων Διονύσου
οἴνα θ᾽, ἃ καθαμέριον
στάζεις τὸν πολύκαρπον
οἰνάνθας ἱεῖσα βότρυν,
ζάθεά τ᾽ ἄντρα δράκοντος οὔ-
ρειαί τε σκοπιαὶ θεῶν
νιφόβολόν τ᾽ ὄρος ἱερόν, εἱ-
λίσσων ἀθανάτας θεοῦ
χορὸς γενοίμαν ἄφοβος
παρὰ μεσόμφαλα γύαλα Φοί-
βου Δίρκαν προλιποῦσα.
νῦν δέ μοι πρὸ τειχέων στρ.
θούριος μολὼν Ἄρης
αἷμα δάιον φλέγει
τᾷδ᾽, ὃ μὴ τύχοι, πόλει·
κοινὰ γὰρ φίλων ἄχη·
κοινὰ δ᾽, εἴ τι πείσεται

239—249 = 250—260

ἑπτάπυργος ἅδε γᾶ,
Φοινίσσᾳ χώρᾳ. φεῦ φεῦ.
κοινὸν αἷμα, κοινὰ τέκεα
τᾶς κερασφόρου πέφυκεν Ἰοῦς·
ὧν μέτεστί μοι πόνων.
ἀμφὶ δὲ πτόλιν νέφος ἀντ.
ἀσπίδων πυκνὸν φλέγει
σχῆμα φοινίου μάχης,
ἂν Ἄρης τάχ᾽ εἴσεται
παισὶν Οἰδίπου φέρων
πημονὰν Ἐρινύων.
Ἄργος ὦ Πελασγικόν,
δειμαίνω τὰν σὰν ἀλκὰν
καὶ τὸ θεόθεν· οὐ γὰρ ἄδικον
εἰς ἀγῶνα τόνδ᾽ ἔνοπλος ὁρμᾶθ᾽,
ὃς μετέρχεται δόμους.

ΠΟ. τὰ μὲν πυλωρῶν κλῇθρά μ᾽ εἰσεδέξατο
δι᾽ εὐπετείας, τειχέων εἴσω μολεῖν.
ὃ καὶ δέδοικα μή με δικτύων ἔσω
λαβόντες οὐκ ἐκφρῶσ᾽ ἀναίμακτον χρόα.
ὧν οὕνεκ᾽ ὄμμα πανταχῇ διοιστέον
κἀκεῖσε καὶ τὸ δεῦρο, μὴ δόλος τις ᾖ.
ὡπλισμένος δὲ χεῖρα τῷδε φασγάνῳ
τὰ πίστ᾽ ἐμαυτῷ τοῦ θράσους παρέξομαι.
ὠὴ τίς οὗτος; ἢ κτύπον φοβούμεθα;
ἅπαντα γὰρ τολμῶσι δεινὰ φαίνεται,
ὅταν δι᾽ ἐχθρᾶς ποὺς ἀμείβηται χθονός.
πέποιθα μέντοι μητρὶ κοὐ πέποιθ᾽ ἅμα,
ἥτις μ᾽ ἔπεισε δεῦρ᾽ ὑπόσπονδον μολεῖν.
ἀλλ᾽ ἐγγὺς ἀλκή· βώμιοι γὰρ ἐσχάραι
πέλας πάρεισι, κοὐκ ἔρημα δώματα.
φέρ᾽ ἐς σκοτεινὰς περιβολὰς μεθῶ ξίφος

καὶ τάσδ᾽ ἔρωμαι, τίνες ἐφεστᾶσιν δόμοις.
ξέναι γυναῖκες, εἴπατ᾽, ἐκ ποίας πάτρας
Ἑλληνικοῖσι δώμασιν πελάζετε;
ΧΟ. Φοίνισσα μὲν γῆ πατρὶς ἡ θρέψασά με,
Ἀγήνορος δὲ παῖδες ἐκ παίδων δορὸς
Φοίβῳ μ᾽ ἔπεμψαν ἐνθάδ᾽ ἀκροθίνιον.
μέλλων δὲ πέμπειν μ᾽ Οἰδίπου κλεινὸς γόνος
μαντεῖα σεμνὰ Λοξίου τ᾽ ἐπ᾽ ἐσχάρας,
ἐν τῷδ᾽ ἐπεστράτευσαν Ἀργεῖοι πόλιν.
σὺ δ᾽ ἀντάμειψαί μ᾽, ὅστις ὢν ἐλήλυθας
ἑπτάστομον πύργωμα Θηβαίας χθονός.
ΠΟ. πατὴρ μὲν ἡμῖν Οἰδίπους ὁ Λαΐου,
ἔτικτε δ᾽ Ἰοκάστη με παῖς Μενοικέως·
καλεῖ δὲ Πολυνείκην με Θηβαῖος λεώς.
ΧΟ. ὦ συγγένεια τῶν Ἀγήνορος τέκνων,
ἐμῶν τυράννων ὧν ἀπεστάλην ὕπο,
γονυπετεῖς ἕδρας προσπίτνω σ᾽,
ἄναξ, τὸν οἴκοθεν νόμον σέβουσα.
ἔβας ἔβας ὢ χρόνῳ γᾶν πατρῴαν.
ἰὼ πότνια, μόλε πρόδρομος,
ἀμπέτασον πύλας.
κλύεις, ὦ τεκοῦσα τόνδε μᾶτερ;
τί μέλλεις ὑπώροφα μέλαθρα περᾶν,
θιγεῖν τ᾽ ὠλέναις τέκνου;
ΙΟ. Φοίνισσαν, ὦ νεάνιδες,
βοὰν ἔσω δόμων κλύουσα τῶνδε
γήρᾳ τρομερὰν ἕλκω ποδὸς βάσιν.
ἰὼ τέκνον,
χρόνῳ σὸν ὄμμα μυρίαις ἐν ἁμέραις
προσεῖδον· ἀμφίβαλλε μα-
στὸν ὠλέναισι ματέρος,
παρηίδων τ᾽ ὄρεγμα βο-

στρύχων τε κυανόχρωτα χαί-
τας πλόκαμον, σκιάζων δέραν ἐμάν
ἰὼ ἰώ, μόλις φανεὶς
ἄελπτα κἀδόκητα ματρὸς ὠλέναις.
τί φῶ σε; πῶς ἅπαντα
καὶ χερσὶ καὶ λόγοισι
πολυέλικτον ἁδονὰν
ἐκεῖσε καὶ τὸ δεῦρο
περιχορεύουσα τέρψιν παλαιᾶν λάβω
χαρμονᾶν; ἰὼ τέκος,
ἔρημον πατρῷον ἔλιπες δόμον
φυγὰς ἀποσταλεὶς ὁμαίμου λώβᾳ,
ἦ ποθεινὸς φίλοις,
ἦ ποθεινὸς Θήβαις.
ὅθεν ἐμάν τε λευκόχροα κείρομαι
δακρυόεσσ᾽ ἀνεῖσα πένθει κόμαν,
ἄπεπλος φαρέων λευκῶν, τέκνον,
δυσόρφναια δ᾽ ἀμφὶ τρύχη τάδε
σκότι᾽ ἀμείβομαι.
ὁ δ᾽ ἐν δόμοισι πρέσβυς ὀμματοστερὴς
ἀπήνας ὁμοπτέρου τᾶς ἀπο-
ζυγείσας δόμων
πόθον ἀμφιδάκρυτον ἀεὶ κατέχων
ἀνῇξε μὲν ξίφους
ἐπ᾽ αὐτόχειρά τε σφαγάν,
ὑπὲρ τέρεμνά τ᾽ ἀγχόνας,
στενάζων ἀρὰς τέκνοις·
σὺν ἀλαλαῖσι δ᾽ αἰὲν αἰαγμάτων
σκότια κρύπτεται.
σὲ δ᾽, ὦ τέκνον, καὶ γάμοισι δὴ
κλύω ζυγέντα παιδοποιὸν ἁδονὰν
ξένοισιν ἐν δόμοις ἔχειν

ξένον τε κῆδος ἀμφέπειν,
ἄλαστα ματρὶ τᾶδε Λα-
ίῳ τε τῷ παλαιγενεῖ,
γάμων ἐπακτὸν ἄταν.
ἐγὼ δ᾽ οὔτε σοι πυρὸς ἀνῆψα φῶς
νόμιμον ἐν γάμοις,
ὡς πρέπει ματέρι μακαρίᾳ·
ἀνυμέναια δ᾽ Ἰσμηνὸς ἐκηδεύθη
λουτροφόρου χλιδᾶς· ἀνὰ δὲ Θηβαίαν
πόλιν ἐσιγάθη σᾶς ἔσοδος νύμφας.
ὄλοιτο, τάδ᾽ εἴτε σίδαρος
εἴτ᾽ ἔρις εἴτε πατὴρ ὁ σὸς αἴτιος,
εἴτε τὸ δαιμόνιον κατεκώμασε
δώμασιν Οἰδιπόδα·
πρὸς ἐμὲ γὰρ κακῶν ἔμολε τῶνδ᾽ ἄχη.
ΧΟ. δεινὸν γυναιξὶν αἱ δι᾽ ὠδίνων γοναί,
καὶ φιλότεκνόν πως πᾶν γυναικεῖον γένος.
ΠΟ. μῆτερ, φρονῶν εὖ κοὐ φρονῶν ἀφικόμην
ἐχθροὺς ἐς ἄνδρας· ἀλλ᾽ ἀναγκαίως ἔχει
πατρίδος ἐρᾶν ἅπαντας· ὃς δ᾽ ἄλλως λέγει,
λόγοισι χαίρει, τὸν δὲ νοῦν ἐκεῖσ᾽ ἔχει.
οὕτω δὲ τάρβος εἰς φόβον τ᾽ ἀφικόμην,
μή τις δόλος με πρὸς κασιγνήτου κτάνῃ,
ὥστε ξιφήρη χεῖρ᾽ ἔχων δι᾽ ἄστεως
κυκλῶν πρόσωπον ἦλθον. ἓν δέ μ᾽ ὠφελεῖ,
σπονδαί τε καὶ σὴ πίστις, ἥ μ᾽ εἰσήγαγε
τείχη πατρῷα· πολύδακρυς δ᾽ ἀφικόμην,
χρόνιος ἰδὼν μέλαθρα καὶ βωμοὺς θεῶν
γυμνάσιά θ᾽ οἷσιν ἐνετράφην, Δίρκης θ᾽ ὕδωρ·
ὧν οὐ δικαίως ἀπελαθεὶς ξένην πόλιν
ναίω, δι᾽ ὄσσων ὄμμ᾽ ἔχων δακρυρροοῦν.
ἀλλ᾽ ἐκ γὰρ ἄλγους ἄλγος αὖ σὲ δέρκομαι

κάρα ξυρῆκες καὶ πέπλους μελαγχίμους
ἔχουσαν, οἴμοι τῶν ἐμῶν ἐγὼ κακῶν.
ὡς δεινὸν ἔχθρα, μῆτερ, οἰκείων φίλων
καὶ δυσλύτους ἔχουσα τὰς διαλλαγάς.
τί γὰρ πατήρ μοι πρέσβυς ἐν δόμοισι δρᾷ,
σκότον δεδορκώς; τί δὲ κασίγνηται δύο;
ἦ που στένουσι τλήμονας φυγὰς ἐμάς;
ΙΟ. κακῶς θεῶν τις Οἰδίπου φθείρει γένος·
οὕτω γὰρ ἦρξατ', ἄνομα μὲν τεκεῖν ἐμέ,
κακῶς δὲ γῆμαι πατέρα σὸν φῦναί τε σέ.
ἀτὰρ τί ταῦτα; δεῖ φέρειν τὰ τῶν θεῶν.
ὅπως δ' ἔρωμαι, μή τι σὴν δάκω φρένα,
δέδοιχ' ἃ χρῄζω· διὰ πόθου δ' ἐλήλυθα.
ΠΟ. ἀλλ' ἐξερώτα, μηδὲν ἐνδεὲς λίπῃς·
ἃ γὰρ σὺ βούλει, ταῦτ' ἐμοί, μῆτερ, φίλα.
ΙΟ. καὶ δή σ' ἐρωτῶ πρῶτον ὧν χρῄζω τυχεῖν,
τί τὸ στέρεσθαι πατρίδος; ἦ κακὸν μέγα;
ΠΟ. μέγιστον· ἔργῳ δ' ἐστὶ μεῖζον ἢ λόγῳ.
ΙΟ. τίς ὁ τρόπος αὐτοῦ; τί φυγάσιν τὸ δυσχερές;
ΠΟ. ἓν μὲν μέγιστον, οὐκ ἔχει παρρησίαν.
ΙΟ. δούλου τόδ' εἶπας, μὴ λέγειν ἅ τις φρονεῖ.
ΠΟ. τὰς τῶν κρατούντων ἀμαθίας φέρειν χρεών.
ΙΟ. καὶ τοῦτο λυπρόν, συνασοφεῖν τοῖς μὴ σοφοῖς.
ΠΟ. ἀλλ' εἰς τὸ κέρδος παρὰ φύσιν δουλευτέον.
ΙΟ. αἱ δ' ἐλπίδες βόσκουσι φυγάδας, ὡς λόγος.
ΠΟ. καλοῖς βλέπουσί γ' ὄμμασιν, μέλλουσι δέ.
ΙΟ. οὐδ' ὁ χρόνος αὐτὰς διεσάφησ' οὔσας κενάς;
ΠΟ. ἔχουσιν Ἀφροδίτην τιν' ἡδεῖαν κακῶν.
ΙΟ. πόθεν δ' ἐβόσκου πρὶν γάμοις εὑρεῖν βίον;
ΠΟ. ποτὲ μὲν ἐπ' ἦμαρ εἶχον, εἶτ' οὐκ εἴχομεν.
ΙΟ. φίλοι δὲ πατρὸς καὶ ξένοι σ' οὐκ ὠφέλουν;
ΠΟ. εὖ πρᾶσσε· τὰ φίλων δ' οὐδέν, ἤν τι δυστυχῇς.

ΙΟ. οὐδ' ηὑγένειά σ' ἦρεν εἰς ὕψος μέγα;
ΠΟ. κακὸν τὸ μὴ ἔχειν· τὸ γένος οὐκ ἔβοσκέ με.
ΙΟ. ἡ πατρίς, ὡς ἔοικε, φίλτατον βροτοῖς.
ΠΟ. οὐδ' ὀνομάσαι δύναι' ἂν ὡς ἐστὶν φίλον.
ΙΟ. πῶς δ' ἦλθες Ἄργος; τίν' ἐπίνοιαν ἔσχεθες;
ΠΟ. ἔχρησ' Ἀδράστῳ Λοξίας χρησμόν τινα.
ΙΟ. ποῖόν τι τοῦτ' ἔλεξας; οὐκ ἔχω μαθεῖν.
ΠΟ. κάπρῳ λέοντί θ' ἁρμόσαι παίδων γάμους.
ΙΟ. καὶ σοὶ τί θηρῶν ὀνόματος μετῆν, τέκνον;
ΠΟ. οὐκ οἶδ'· ὁ δαίμων μ' ἐκάλεσεν πρὸς τὴν τύχην.
ΙΟ. σοφὸς γὰρ ὁ θεός· τίνι τρόπῳ δ' ἔσχες λέχος;
ΠΟ. νὺξ ἦν, Ἀδράστου δ' ἦλθον εἰς παραστάδας.
ΙΟ. κοίτας ματεύων ἢ φυγὰς πλανώμενος;
ΠΟ. ἦν ταῦτα· κᾆτα δ' ἦλθεν ἄλλος αὖ φυγάς.
ΙΟ. τίς οὗτος; ὡς ἄρ' ἄθλιος κἀκεῖνος ἦν.
ΠΟ. Τυδεύς, ὃν Οἰνέως φασὶν ἐκφῦναι πατρός.
ΙΟ. τί θηρσὶν ὑμᾶς δῆτ' Ἄδραστος εἴκασεν;
ΠΟ. στρωμνῆς ἐς ἀλκὴν οὕνεκ' ἤλθομεν πέρι.
ΙΟ. ἐνταῦθα Ταλαοῦ παῖς ξυνῆκε θέσφατα;
ΠΟ. κἄδωκεν ἡμῖν δύο δυοῖν νεάνιδας.
ΙΟ. ἆρ' εὐτυχεῖς οὖν τοῖς γάμοις ἢ δυστυχεῖς;
ΠΟ. οὐ μεμπτὸς ἡμῖν ὁ γάμος εἰς τόδ' ἡμέρας.
ΙΟ. πῶς δ' ἐξέπεισας δεῦρό σοι σπέσθαι στρατόν;
ΠΟ. δισσοῖς Ἄδραστος ὤμοσεν γαμβροῖς τάδε,
ἄμφω κατάξειν εἰς πάτραν, πρόσθεν δ' ἐμέ.
πολλοὶ δὲ Δαναῶν καὶ Μυκηναίων ἄκροι
πάρεισι, λυπρὰν χάριν, ἀναγκαίαν δ' ἐμοὶ
διδόντες· ἐπὶ γὰρ τὴν ἐμὴν στρατεύομαι
πόλιν. θεοὺς δ' ἐπώμοσ' ὡς ἀκουσίως
τοῖς φιλτάτοις ἑκοῦσιν ἠράμην δόρυ.

Τυδεῖ τε κἀμοί· σύγγαμος γάρ ἐστ' ἐμός, 428

ἀλλ' εἰς σὲ τείνει τῶνδε διάλυσις κακῶν,
μῆτερ, διαλλάξασαν ὁμογενεῖς φίλους
παῦσαι πόνων με καὶ σὲ καὶ πᾶσαν πόλιν.
πάλαι μὲν οὖν ὑμνηθέν, ἀλλ' ὅμως ἐρῶ·
τὰ χρήματ' ἀνθρώποισι τιμιώτατα
δύναμίν τε πλείστην τῶν ἐν ἀνθρώποις ἔχει.
ἁγὼ μεθήκω δεῦρο μυρίαν ἄγων
λόγχην· πένης γὰρ οὐδὲν εὐγενὴς ἀνήρ.

ΧΟ. καὶ μὴν Ἐτεοκλῆς εἰς διαλλαγὰς ὅδε
χωρεῖ· σὸν ἔργον, μῆτερ Ἰοκάστη, λέγειν
τοιούσδε μύθους οἷς διαλλάξεις τέκνα.

ΕΤ. μῆτερ, πάρειμι· τὴν χάριν δὲ σοὶ διδοὺς
ἦλθον. τί χρὴ δρᾶν; ἀρχέτω δέ τις λόγου·
ὡς ἀμφὶ τείχη καὶ ξυνωρίδας λόχων
τάσσων ἐπέσχον πόλιν, ὅπως κλύοιμί σου
κοινὰς βραβείας, αἷς ὑπόσπονδον μολεῖν
τόνδ' εἰσεδέξω τειχέων πείσασά με.

ΙΟ. ἐπίσχες· οὔτοι τὸ ταχὺ τὴν δίκην ἔχει·
βραδεῖς δὲ μῦθοι πλεῖστον ἀνύουσιν σοφόν.
σχάσον δὲ δεινὸν ὄμμα καὶ θυμοῦ πνοάς·
οὐ γὰρ τὸ λαιμότμητον εἰσορᾷς κάρα
Γοργόνος, ἀδελφὸν δ' εἰσορᾷς ἥκοντα σόν.
σύ τ' αὖ πρόσωπον πρὸς κασίγνητον στρέφε,
Πολύνεικες· εἰς γὰρ τοῦτον ὄμμασι βλέπων
λέξεις τ' ἄμεινον τοῦδέ τ' ἐνδέξει λόγους.
παραινέσαι δὲ σφῷν τι βούλομαι σοφόν·
ὅταν φίλος τις ἀνδρὶ θυμωθεὶς φίλῳ
εἰς ἓν συνελθὼν ὄμματ' ὄμμασιν διδῷ,
ἐφ' οἷσιν ἥκει, ταῦτα χρὴ μόνον σκοπεῖν,
κακῶν δὲ τῶν πρὶν μηδενὸς μνείαν ἔχειν.
λόγος μὲν οὖν σὸς πρόσθε, Πολύνεικες τέκνον·
σὺ γὰρ στράτευμα Δαναΐδῶν ἥκεις ἄγων,

ἄδικα πεπονθώς, ὡς σὺ φής· κριτὴς δέ τις
θεῶν γένοιτο καὶ διαλλακτὴς κακῶν.
ΠΟ. ἁπλοῦς ὁ μῦθος τῆς ἀληθείας ἔφυ,
κοὐ ποικίλων δεῖ τἄνδιχ᾽ ἑρμηνευμάτων·
ἔχει γὰρ αὐτὰ καιρόν· ὁ δ᾽ ἄδικος λόγος
νοσῶν ἐν αὑτῷ φαρμάκων δεῖται σοφῶν.
ἐγὼ δὲ πατρὸς δωμάτων προυσκεψάμην
τοὐμόν τε καὶ τοῦδ᾽, ἐκφυγεῖν χρῄζων ἀρὰς
ἃς Οἰδίπους ἐφθέγξατ᾽ εἰς ἡμᾶς ποτε,
ἐξῆλθον ἔξω τῆσδ᾽ ἑκὼν αὐτὸς χθονός,
δοὺς τῷδ᾽ ἀνάσσειν πατρίδος ἐνιαυτοῦ κύκλον,
ὥστ᾽ αὐτὸς ἄρχειν αὖθις ἀνὰ μέρος λαβὼν
καὶ μὴ δι᾽ ἔχθρας τῷδε καὶ φθόνου μολὼν
κακόν τι δρᾶσαι καὶ παθεῖν, ἃ γίγνεται.
ὁ δ᾽ αἰνέσας ταῦθ᾽ ὁρκίους τε δοὺς θεούς,
ἔδρασεν οὐδὲν ὧν ὑπέσχετ᾽, ἀλλ᾽ ἔχει
τυραννίδ᾽ αὐτὸς καὶ δόμων ἐμὸν μέρος.
καὶ νῦν ἕτοιμός εἰμι τἀμαυτοῦ λαβὼν
στρατὸν μὲν ἔξω τῆσδ᾽ ἀποστεῖλαι χθονός,
οἰκεῖν δὲ τὸν ἐμὸν οἶκον ἀνὰ μέρος λαβὼν
καὶ τῷδ᾽ ἀφεῖναι τὸν ἴσον αὖθις αὖ χρόνον,
καὶ μήτε πορθεῖν πατρίδα μήτε προσφέρειν
πύργοισι πηκτῶν κλιμάκων προσαμβάσεις,
ἃ μὴ κυρήσας τῆς δίκης πειράσομαι
δρᾶν, μάρτυρας δὲ τῶνδε δαίμονας καλῶ,
ὡς πάντα πράσσων σὺν δίκῃ, δίκης ἄτερ
ἀποστεροῦμαι πατρίδος ἀνοσιώτατα.
ταῦτ᾽ αὔθ᾽ ἕκαστα, μῆτερ, οὐχὶ περιπλοκὰς
λόγων ἀθροίσας εἶπον, ἀλλὰ καὶ σοφοῖς
καὶ τοῖσι φαύλοις ἔνδιχ᾽, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ.
ΧΟ. ἐμοὶ μέν, εἰ καὶ μὴ καθ᾽ Ἑλλήνων χθόνα
τεθράμμεθ᾽, ἀλλ᾽ οὖν ξυνετά μοι δοκεῖς λέγειν.

ΕΤ. εἰ πᾶσι ταὐτὸν καλὸν ἔφυ σοφόν θ' ἅμα,
οὐκ ἦν ἂν ἀμφίλεκτος ἀνθρώποις ἔρις·
νῦν δ' οὔθ' ὅμοιον οὐδὲν οὔτ' ἴσον βροτοῖς,
πλὴν ὀνόμασιν, τὸ δ' ἔργον οὐκ ἔστιν τόδε.
ἐγὼ γὰρ οὐδέν, μῆτερ, ἀποκρύψας ἐρῶ·
ἄστρων ἂν ἔλθοιμ' ἡλίου πρὸς ἀντολὰς
καὶ γῆς ἔνερθε, δυνατὸς ὢν δρᾶσαι τάδε,
τὴν θεῶν μεγίστην ὥστ' ἔχειν τυραννίδα.
τοῦτ' οὖν τὸ χρηστόν, μῆτερ, οὐχὶ βούλομαι
ἄλλῳ παρεῖναι μᾶλλον ἢ σώζειν ἐμοί·
ἀνανδρία γάρ, τὸ πλέον ὅστις ἀπολέσας
τοὔλασσον ἔλαβε. πρὸς δὲ τοῖσδ' αἰσχύνομαι,
ἐλθόντα σὺν ὅπλοις τόνδε καὶ πορθοῦντα γῆν
τυχεῖν ἃ χρῄζει· ταῖς γὰρ ἂν Θήβαις τόδε
γένοιτ' ὄνειδος, εἰ Μυκηναίου δορὸς
φόβῳ παρείην σκῆπτρα τἀμὰ τῷδ' ἔχειν.
χρῆν δ' αὐτὸν οὐχ ὅπλοισι τὰς διαλλαγάς,
μῆτερ, ποιεῖσθαι· πᾶν γὰρ ἐξαιρεῖ λόγος
ὃ καὶ σίδηρος πολεμίων δράσειεν ἄν.
ἀλλ' εἰ μὲν ἄλλως τήνδε γῆν οἰκεῖν θέλει,
ἔξεστ'· ἐκεῖνο δ' οὐχ ἑκὼν μεθήσομαι,
ἄρχειν παρόν μοι, τῷδε δουλεῦσαί ποτε.
πρὸς ταῦτ' ἴτω μὲν πῦρ, ἴτω δὲ φάσγανα,
ζεύγνυσθε δ' ἵππους, πεδία πίμπλαθ' ἁρμάτων,
ὡς οὐ παρήσω τῷδ' ἐμὴν τυραννίδα.
εἴπερ γὰρ ἀδικεῖν χρή, τυραννίδος πέρι
κάλλιστον ἀδικεῖν, τἄλλα δ' εὐσεβεῖν χρεών.
ΧΟ. οὐκ εὖ λέγειν χρὴ μὴ 'πὶ τοῖς ἔργοις καλοῖς,
οὐ γὰρ καλὸν τοῦτ', ἀλλὰ τῇ δίκῃ πικρόν.
ΙΟ. ὦ τέκνον, οὐχ ἅπαντα τῷ γήρᾳ κακά,
Ἐτεόκλεες, πρόσεστιν· ἀλλ' ἡμπειρία
ἔχει τι λέξαι τῶν νέων σοφώτερον.

τί τῆς κακίστης δαιμόνων ἐφίεσαι
φιλοτιμίας, παῖ; μὴ σύ γ᾽· ἄδικος ἡ θεός·
πολλοὺς δ᾽ ἐς οἴκους καὶ πόλεις εὐδαίμονας
εἰσῆλθε κἀξῆλθ᾽ ἐπ᾽ ὀλέθρῳ τῶν χρωμένων·
ἐφ᾽ ᾗ σὺ μαίνει. κεῖνο κάλλιον, τέκνον,
ἰσότητα τιμᾶν, ἣ φίλους ἀεὶ φίλοις
πόλεις τε πόλεσι συμμάχους τε συμμάχοις
συνδεῖ· τὸ γὰρ ἴσον νόμιμον ἀνθρώποις ἔφυ,
τῷ πλέονι δ᾽ ἀεὶ πολέμιον καθίσταται
τοὔλασσον ἐχθρᾶς θ᾽ ἡμέρας κατάρχεται.
καὶ γὰρ μέτρ᾽ ἀνθρώποισι καὶ μέρη σταθμῶν
ἰσότης ἔταξε κἀριθμὸν διώρισε,
νυκτός τ᾽ ἀφεγγὲς βλέφαρον ἡλίου τε φῶς
ἴσον βαδίζει τὸν ἐνιαύσιον κύκλον,
κοὐδέτερον αὐτῶν φθόνον ἔχει νικώμενον.
εἶθ᾽ ἥλιος μὲν νύξ τε δουλεύει βροτοῖς,
σὺ δ᾽ οὐκ ἀνέξει δωμάτων ἔχων ἴσον
καὶ τῷδ᾽ ἀπονέμειν; κᾆτα ποῦ ᾽στιν ἡ δίκη;
τί τὴν τυραννίδ᾽, ἀδικίαν εὐδαίμονα,
τιμᾷς ὑπέρφευ καὶ μέγ᾽ ἥγησαι τόδε;
περιβλέπεσθαι τίμιον; κενὸν μὲν οὖν.
ἢ πολλὰ μοχθεῖν πόλλ᾽ ἔχων ἐν δώμασι
βούλει; τί δ᾽ ἔστι τὸ πλέον; ὄνομ᾽ ἔχει μόνον·
ἐπεὶ τά γ᾽ ἀρκοῦνθ᾽ ἱκανὰ τοῖς γε σώφροσιν.
οὔτοι τὰ χρήματ᾽ ἴδια κέκτηνται βροτοί,
τὰ τῶν θεῶν δ᾽ ἔχοντες ἐπιμελούμεθα·
ὅταν δὲ χρῄζωσ᾽, αὔτ᾽ ἀφαιροῦνται πάλιν.
ἄγ᾽, ἤν σ᾽ ἔρωμαι δύο λόγω προθεῖσ᾽ ἅμα,
πότερα τυραννεῖν ἢ πόλιν σῶσαι θέλεις;
ἐρεῖς τυραννεῖν· ἢν δὲ νικήσῃ σ᾽ ὅδε

ὁ δ᾽ ὄλβος οὐ βέβαιος, ἀλλ᾽ ἐφήμερος. 558

Ἀργεῖά τ' ἔγχη δόρυ τὸ Καδμείων ἕλῃ,
ὄψει δαμασθὲν ἄστυ Θηβαίων τόδε,
ὄψει δὲ πολλὰς αἰχμαλωτίδας κόρας
βίᾳ πρὸς ἀνδρῶν πολεμίων πορθουμένας.
ὀδυνηρὸς ἆρ' ὁ πλοῦτος, ὃν ζητεῖς ἔχειν,
γενήσεται Θήβαισι, φιλότιμος δὲ σύ.
σοὶ μὲν τάδ' αὐδῶ. σοὶ δὲ Πολύνεικες λέγω·
ἀμαθεῖς Ἄδραστος χάριτας εἰς σ' ἀνήψατο,
ἀσύνετα δ' ἦλθες καὶ σὺ πορθήσων πόλιν.
φέρ', ἢν ἕλῃς γῆν τήνδ', ὃ μὴ τύχοι ποτέ,
πρὸς θεῶν, τρόπαια πῶς ἀναστήσεις δορός;
πῶς δ' αὖ κατάρξει θυμάτων, ἑλὼν πάτραν,
καὶ σκῦλα γράψεις πῶς ἐπ' Ἰνάχου ῥοαῖς·
Θήβας πυρώσας τάσδε Πολυνείκης θεοῖς
ἀσπίδας ἔθηκε; μήποτ', ὦ τέκνον, κλέος
τοιόνδε σοι γένοιτ' ἀφ' Ἑλλήνων λαβεῖν.
ἢν δ' αὖ κρατηθῇς καὶ τὰ τοῦδ' ὑπερδράμῃ,
πῶς Ἄργος ἥξεις μυρίους λιπὼν νεκρούς;
ἐρεῖ δὲ δή τις· ὦ κακὰ μνηστεύματα
Ἄδραστε προσθείς, διὰ μιᾶς νύμφης γάμον
ἀπωλόμεσθα. δύο κακὼ σπεύδεις, τέκνον,
κείνων στέρεσθαι τῶνδέ τ' ἐν μέσῳ πεσεῖν.
μέθετον τὸ λίαν, μέθετον· ἀμαθία δυοῖν,
εἰς ταὔθ' ὅταν μόλητον, ἔχθιστον κακόν.

ΧΟ. ὦ θεοί, γένοισθε τῶνδ' ἀπότροποι κακῶν
καὶ ξύμβασίν τιν' Οἰδίπου τέκνοις δότε.

ΕΤ. μῆτερ, οὐ λόγων ἔθ' ἀγών, ἀλλ' ἀνάλωται χρόνος
οὑν μέσῳ μάτην, περαίνει δ' οὐδὲν ἡ προθυμία·
οὐ γὰρ ἂν ξυμβαῖμεν ἄλλως ἢ 'πὶ τοῖς εἰρημέ-
νοις,
ὥστε με σκήπτρων κρατοῦντα τῆσδ' ἄνακτ' εἶναι
χθονός·

τῶν μακρῶν δ᾽ ἀπαλλαγεῖσα νουθετημάτων μ᾽ ἔα.
καὶ σὺ τῶνδ᾽ ἔξω κομίζου τειχέων ἢ κατθανεῖ.
πρὸς τίνος; τίς ὧδ᾽ ἄτρωτος, ὅστις εἰς ἡμᾶς ξίφος
φόνιον ἐμβαλὼν τὸν αὐτὸν οὐκ ἀποίσεται μόρον;
ἐγγύς, οὐ πρόσω βεβηκώς· εἰς χέρας λεύσσεις ἐμάς;
εἰσορῶ· δειλὸν δ᾽ ὁ πλοῦτος καὶ φιλόψυχον κακόν.
κᾆτα σὺν πολλοῖσιν ἦλθες πρὸς τὸν οὐδὲν εἰς μάχην;
ἀσφαλὴς γὰρ ἔστ᾽ ἀμείνων ἢ θρασὺς στρατηλάτης.
κομπὸς εἶ σπονδαῖς πεποιθώς, αἵ σε σώζουσιν θανεῖν.
καὶ σὲ δεύτερόν γ᾽ ἀπαιτῶ σκῆπτρα καὶ μέρη χθονός.
οὐκ ἀπαιτούμεσθ᾽· ἐγὼ γὰρ τὸν ἐμὸν οἰκήσω δόμον.
τοῦ μέρους ἔχων τὸ πλεῖον; ΕΤ. φήμ᾽· ἀπαλλάσσου δὲ γῆς.
ὦ θεῶν βωμοὶ πατρῴων, ΕΤ. οὓς σὺ πορθήσων πάρει.
κλύετέ μου, ΕΤ. τίς δ᾽ ἂν κλύοι σου πατρίδ᾽ ἐπεστρατευμένου;
καὶ θεῶν τῶν λευκοπώλων δώμαθ᾽, ΕΤ. οἳ στυγοῦσί σε.
ἐξελαυνόμεσθα πατρίδος ΕΤ. καὶ γὰρ ἦλθες ἐξελῶν.
ἀδικίᾳ γ᾽, ὦ θεοί. ΕΤ. Μυκήναις, μὴ ᾽νθάδ᾽ ἀνακάλει θεούς.
ἀνόσιος πέφυκας, ΕΤ. ἀλλ᾽ οὐ πατρίδος ὡς σὺ πολέμιος.

ΠΟ. ὅς μ᾽ ἄμοιρον ἐξελαύνεις. ΕΤ. καὶ κατακτενῶ γε πρός.
ΠΟ. ὦ πάτερ, κλύεις ἃ πάσχω; ΕΤ. καὶ γὰρ οἷα δρᾷς κλύει.
ΠΟ. καὶ σύ, μῆτερ; ΕΤ. οὐ θέμις σοι μητρὸς ὀνομάζειν κάρα.
ΠΟ. ὦ πόλις. ΕΤ. μολὼν ἐς Ἄργος ἀνακάλει Λέρνης ὕδωρ.
ΠΟ. εἶμι, μὴ πόνει· σὲ δ᾽ αἰνῶ, μῆτερ. ΕΤ. ἔξιθι χθονός.
ΠΟ. ἔξιμεν· πατέρα δέ μοι δὸς εἰσιδεῖν. ΕΤ. οὐκ ἂν τύχοις.
ΠΟ. ἀλλὰ παρθένους ἀδελφάς. ΕΤ. οὐδὲ τάσδ᾽ ὄψει ποτέ.
ΠΟ. ὦ κασίγνηται. ΕΤ. τί ταύτας ἀνακαλεῖς ἔχθιστος ὤν;
ΠΟ. μῆτερ, ἀλλά μοι σὺ χαῖρε. ΙΟ. χαρτὰ γοῦν πάσχω, τέκνον.
ΠΟ. οὐκέτ᾽ εἰμὶ παῖς σός. ΙΟ. εἰς πόλλ᾽ ἀθλία πέφυκ᾽ ἐγώ.
ΠΟ. ὅδε γὰρ εἰς ἡμᾶς ὑβρίζει. ΕΤ. καὶ γὰρ ἀνθυβρίζομαι.
ΠΟ. ποῦ ποτε στήσει πρὸ πύργων; ΕΤ. ὡς τί μ᾽ ἱστορεῖς τόδε;
ΠΟ. ἀντιτάξομαι κτενῶν σε. ΕΤ. κἀμὲ τοῦδ᾽ ἔρως ἔχει.
ΙΟ. ὦ τάλαιν᾽ ἐγώ· τί δράσετ᾽, ὦ τέκν᾽; ΠΟ. αὐτὸ σημανεῖ.
ΙΟ. πατρὸς οὐ φεύξεσθ᾽ Ἐρινῦς; ΕΤ. ἐρρέτω πρόπας δόμος.
ΠΟ. ὡς τάχ᾽ οὐκέθ᾽ αἱματηρὸν τοὐμὸν ἀργήσει ξίφος.

τὴν δὲ θρέψασάν με γαῖαν καὶ θεοὺς μαρτύρομαι
ὡς ἄτιμος οἰκτρὰ πάσχων ἐξελαύνομαι χθονός,
δοῦλος ὥς, ἀλλ' οὐχὶ ταὐτοῦ πατρὸς Οἰδίπου γεγώς·
κἄν τί σοι, πόλις, γένηται, μὴ 'μέ, τόνδε δ' αἰτιῶ.
[οὐχ ἑκὼν γὰρ ἦλθον, ἄκων δ' ἐξελαύνομαι χθονός.]
καὶ σὺ Φοῖβ' ἄναξ Ἀγυιεῦ καὶ μέλαθρα χαίρετε,
ἥλικές θ' οὑμοὶ θεῶν τε δεξίμηλ' ἀγάλματα.
οὐ γὰρ οἶδ' εἴ μοι προσειπεῖν αὖθις ἔσθ' ὑμᾶς ποτε·
ἐλπίδες δ' οὔπω καθεύδουσ', αἷς πέποιθα σὺν θεοῖς
τόνδ' ἀποκτείνας κρατήσειν τῆσδε Θηβαίας χθονός.

ΕΤ. ἔξιθ' ἐκ χώρας· ἀληθῶς δ' ὄνομα Πολυνείκην πατὴρ
ἔθετό σοι θείᾳ προνοίᾳ νεικέων ἐπώνυμον.

ΧΟ. Κάδμος ἔμολε τάνδε γᾶν στρ.
Τύριος, ᾧ τετρασκελὴς
μόσχος ἀδάματος πέσημα
δίκε τελεσφόρον διδοῦσα
χρησμόν, οὗ κατοικίσαι
πεδία νιν τὸ θέσφατον
πυροφόρα δόμων ἔχρη,
καλλιπόταμος ὕδατος ἵνα τε
νοτὶς ἐπέρχεται ῥυτᾶς
Δίρκας χλοηφόρους
καὶ βαθυσπόρους γύας,

638 — 656 = 657 — 675

Βρόμιον ἔνθα τέκετο μάτηρ
* Διὸς γάμοισι, *
κισσὸς ὃν περιστεφὴς
ἑλικτὸς εὐθὺς ἔτι βρέφος
χλοηφόροισιν ἔρνεσιν
κατασκίοισιν ὀλβίσας ἐνώτισεν,
Βάκχιον χόρευμα παρθένοισι Θηβαΐαις
καὶ γυναιξὶν εὐίοις.
ἔνθα φόνιος ἦν δράκων ἀντ.
Ἄρεος, ὠμόφρων φύλαξ
νάματ᾽ ἔνυδρα καὶ ῥέεθρα
χλοερὰ δεργμάτων κόραισι
πολυπλάνοις ἐπισκοπῶν·
ὃν ἐπὶ χέρνιβας μολὼν
Κάδμος ὄλεσε μαρμάρῳ,
κρᾶτα φόνιον ὀλεσίθηρος
ὠλένας δικὼν βολαῖς,
δίας ἀμάτορος
Παλλάδος φραδαῖσι
γαπετεῖς δικὼν ὀδόντας
ἐς βαθυσπόρους γύας·
ἔνθεν ἐξανῆκε γᾶ
πάνοπλον ὄψιν ὑπὲρ ἄκρων
ὅρων χθονός· σιδαρόφρων
δέ νιν φόνος πάλιν ξυνῆψε γᾷ φίλᾳ.
αἵματος δ᾽ ἔδευσε γαῖαν, ἅ νιν εὐαλίοις
δεῖξεν αἰθέρος πνοαῖς.
καὶ σὲ τὸν προμάτορος
Ἰοῦς ποτ᾽ ἔκγονον
Ἔπαφον, ὦ Διὸς γένεθλον,
ἐκάλεσ᾽ ἐκάλεσα βαρβάρῳ βοᾷ,
ἰώ, βαρβάροις λιταῖς,

βᾶθι βᾶθι τάνδε γᾶν·
σοί νιν ἔκγονοι κτίσαν,
ἂν διώνυμοι θεαί,
Περσέφασσα καὶ φίλα
Δαμάτηρ θεά,
πάντων ἄνασσα, πάντων δὲ Γᾶ τροφὸς
ἐκτήσαντο· πέμπε πυρφόρους
θεάς, ἄμυνε τᾷδε γᾷ·
πάντα δ' εὐπετῆ θεοῖς.

ΕΤ. χώρει σὺ καὶ κόμιζε τὸν Μενοικέως
Κρέοντ', ἀδελφὸν μητρὸς Ἰοκάστης ἐμῆς,
λέγων τάδ', ὡς οἰκεῖα καὶ κοινὰ χθονὸς
θέλω πρὸς αὐτὸν συμβαλεῖν βουλεύματα,
πρὶν εἰς μάχην τε καὶ δορὸς τάξιν μολεῖν.
καίτοι ποδῶν σῶν μόχθον ἐκλύει παρών·
ὁρῶ γὰρ αὐτὸν πρὸς δόμους στείχοντ' ἐμούς.

ΚΡ. ἦ πόλλ' ἐπῆλθον εἰσιδεῖν χρῄζων σ', ἄναξ
Ἐτεόκλεες, πέριξ δὲ Καδμείων πύλας
φύλακάς τ' ἐπῆλθον σὸν δέμας θηρώμενος.

ΕΤ. καὶ μὴν ἐγὼ σ' ἔχρῃζον εἰσιδεῖν, Κρέον·
πολλῷ γὰρ εὗρον ἐνδεεῖς διαλλαγάς,
ὡς εἰς λόγους συνῆψα Πολυνείκει μολών.

ΚΡ. ἤκουσα μεῖζον αὐτὸν ἢ Θήβας φρονεῖν,
κήδει τ' Ἀδράστου καὶ στρατῷ πεποιθότα.
ἀλλ' εἰς θεοὺς χρὴ ταῦτ' ἀναρτήσαντ' ἔχειν·
ἃ δ' ἐμποδὼν μάλιστα, ταῦθ' ἥκω φράσων.

ΕΤ. τὰ ποῖα ταῦτα; τὸν λόγον γὰρ ἀγνοῶ.

ΚΡ. ἥκει τις αἰχμάλωτος Ἀργείων πάρα.

ΕΤ. λέγει δὲ δή τί τῶν ἐκεῖ νεώτερον;

ΚΡ. μέλλειν πέριξ πυκνοῖσι Καδμείων πόλιν
ὅπλοις ἑλίξειν αὐτίκ' Ἀργείων στρατόν.

ΕΤ. ἐξοιστέον τἄρ' ὅπλα Καδμείων πόλει

ΚΡ. ποῖ; μῶν νεάζων οὐχ ὁρᾷς ἃ χρή σ' ὁρᾶν;
ΕΤ. ἐκτὸς τάφρων τῶνδ', ὡς μαχουμένους τάχα.
ΚΡ. σμικρὸν τὸ πλῆθος τῆσδε γῆς, οἱ δ' ἄφθονοι.
ΕΤ. ἐγᾧδα κείνους τοῖς λόγοις ὄντας θρασεῖς.
ΚΡ. ἔχει τιν' ὄγκον Ἄργος Ἑλλήνων πάρα.
ΕΤ. θάρσει· τάχ' αὐτῶν πεδίον ἐμπλήσω φόνου.
ΚΡ. θέλοιμ' ἄν· ἀλλὰ τοῦθ' ὁρῶ πολλοῦ πόνου.
ΕΤ. ὡς οὐ καθέξω τειχέων εἴσω στρατόν.
ΚΡ. καὶ μὴν τὸ νικᾶν ἐστι πᾶν εὐβουλία.
ΕΤ. βούλει τράπωμαι δῆθ' ὁδοὺς ἄλλας τινάς;
ΚΡ. πάσας γε, πρὶν κίνδυνον εἰς ἅπαξ μολεῖν.
ΕΤ. εἰ νυκτὸς αὐτοῖς προσβάλοιμεν ἐκ λόχου;
ΚΡ. εἴπερ σφαλείς γε δεῦρο σωθήσει πάλιν.
ΕΤ. ἴσον φέρει νύξ, τοῖς δὲ τολμῶσιν πλέον.
ΚΡ. ἐνδυστυχῆσαι δεινὸν εὐφρόνης κνέφας.
ΕΤ. ἀλλ' ἀμφὶ δεῖπνον οὖσι προσβάλω δόρυ;
ΚΡ. ἔκπληξις ἂν γένοιτο· νικῆσαι δὲ δεῖ.
ΕΤ. βαθύς γέ τοι Διρκαῖος ἀναχωρεῖν πόρος.
ΚΡ. ἅπαν κάκιον τοῦ φυλάσσεσθαι καλῶς.
ΕΤ. τί δ', εἰ καθιππεύσαιμεν Ἀργείων στρατόν;
ΚΡ. κἀκεῖ πέφρακται λαὸς ἅρμασιν πέριξ.
ΕΤ. τί δῆτα δράσω; πολεμίοισι δῶ πόλιν;
ΚΡ. μὴ δῆτα· βουλεύου δ', ἐπείπερ εἶ σοφός.
ΕΤ. τίς οὖν πρόνοια γίγνεται σοφωτέρα;
ΚΡ. ἔπτ' ἄνδρας αὐτοῖς φασιν, ὡς ἤκουσ' ἐγώ,
ΕΤ. τί προστετάχθαι δρᾶν; τὸ γὰρ σθένος βραχύ.
ΚΡ. [λόχων ἀνάσσειν] ἑπτὰ προσκεῖσθαι πύλαις.
ΕΤ. τί δῆτα δρῶμεν; ἀπορίαν γὰρ οὐ μενῶ.
ΚΡ. ἕπτ' ἄνδρας αὐτοῖς καὶ σὺ πρὸς πύλαις ἑλοῦ.
ΕΤ. λόχων ἀνάσσειν ἢ μονοστόλου δορός;
ΚΡ. λόχων, προκρίνας οἵπερ ἀλκιμώτατοι,
ΕΤ. ξυνῆκ'· ἀμύνειν τειχέων προσαμβάσεις.

ΚΡ. καὶ ξυστρατηγούς· εἷς δ᾽ ἀνὴρ οὐ πάνθ᾽ ὁρᾷ.
ΕΤ. θάρσει προκρίνας ἢ φρενῶν εὐβουλίᾳ;
ΚΡ. ἀμφότερον· ἀπολειφθὲν γὰρ οὐδὲν θάτερον.
ΕΤ. ἔσται τάδ᾽· ἐλθὼν δ᾽ ἑπτάπυργον ἐς πόλιν
τάξω λοχαγοὺς πρὸς πύλαισιν, ὡς λέγεις,
ἴσους ἴσοισι πολεμίοισιν ἀντιθείς.
ὄνομα δ᾽ ἑκάστου διατριβὴ πολλὴ λέγειν,
ἐχθρῶν ὑπ᾽ αὐτοῖς τείχεσιν καθημένων.
ἀλλ᾽ εἶμ᾽, ὅπως ἂν μὴ καταργῶμεν χέρα.
καί μοι γένοιτ᾽ ἀδελφὸν ἀντήρη λαβεῖν
καὶ ξυσταθέντα διὰ μάχης ἑλεῖν δορί.
γάμους δ᾽ ἀδελφῆς Ἀντιγόνης παιδός τε σοῦ
Αἵμονος, ἐάν τι τῆς τύχης ἐγὼ σφαλῶ,
σοὶ χρὴ μέλεσθαι· τὴν δόσιν δ᾽ ἐχέγγυον
τὴν πρόσθε ποιῶ νῦν ἐπ᾽ ἐξόδοις ἐμαῖς.
μητρὸς δ᾽ ἀδελφὸς εἶ· τί δεῖ μακρηγορεῖν;
τρέφ᾽ ἀξίως νιν σοῦ τε τήν τ᾽ ἐμὴν χάριν.
πατὴρ δ᾽ ἐς αὑτὸν ἀμαθίαν ὀφλισκάνει,
ὄψιν τυφλώσας· οὐκ ἄγαν σφ᾽ ἐπῄνεσα·
ἡμᾶς τ᾽ ἀραῖσιν, ἢν τύχῃ, κατακτενεῖ.
ἓν δ᾽ ἧμιν ἀργόν ἐστιν, εἴ τι θέσφατον
οἰωνόμαντις Τειρεσίας ἔχει φράσαι,
τοῦδ᾽ ἐκπυθέσθαι ταῦτ᾽· ἐγὼ δὲ παῖδα σὸν
Μενοικέα σοῦ πατρὸς αὐτεπώνυμον
λαβόντα πέμψω δεῦρο Τειρεσίαν, Κρέον·
σοὶ μὲν γὰρ ἡδὺς εἰς λόγους ἀφίξεται·
ἐγὼ δὲ τέχνην μαντικὴν ἐμεμψάμην
ἤδη πρὸς αὐτόν, ὥστε μοι μομφὰς ἔχειν.
πόλει δὲ καὶ σοὶ ταῦτ᾽ ἐπισκήπτω, Κρέον·
ἤνπερ κρατήσῃ τἀμά, Πολυνείκους νέκυν

κτανεῖν θ᾽ ὃς ἦλθε πατρίδα πορθήσων ἐμήν. 756

μήποτε ταφῆναι τῇδε Θηβαίᾳ χθονί·
θνήσκειν δὲ τὸν θάψαντα, κἂν φίλων τις ᾖ.
σοὶ μὲν τάδ᾽ εἶπον· προσπόλοις δ᾽ ἐμοῖς λέγω·
ἐκφέρετε τεύχη πάνοπλά τ᾽ ἀμφιβλήματα,
ὡς εἰς ἀγῶνα τὸν προκείμενον δορὸς
ὁρμῶμεν ἤδη ξὺν δίκῃ νικηφόρῳ.
τῇ δ᾽ εὐλαβείᾳ χρησιμωτάτῃ θεῶν
προσευξόμεσθα τήνδε διασῶσαι πόλιν.

ΧΟ. ὦ πολύμοχθος Ἄρης, τί ποθ᾽ αἵματι — στρ.
καὶ θανάτῳ κατέχει Βρομίου παράμουσος ἑορταῖς;
οὐκ ἐπὶ καλλιχόροις στεφάνοισι νεάνιδος ὥρας
βόστρυχον ἀμπετάσας, λωτοῦ κατὰ πνεύματα μέλπει
μοῦσαν, ἐν ᾇ χάριτες χοροποιοί,
ἀλλὰ σὺν ὁπλοφόρῳ στρατὸν Ἀργείων ἐπιπνεύσας
ᾄσματι Θήβαις
κῶμον ἀναυλότατον προχορεύεις.
οὐδ᾽ ὑπὸ θυρσομανεῖ νεβρίδων μέτα δινεύεις,
ἅρμασι καὶ ψαλίοις τετραβάμοσι μώνυχα πῶλον,
Ἰσμηνοῦ τ᾽ ἐπὶ χεύμασι βαίνων
ἱππείαισι θοάζεις, Ἀργείους ἐπιπνεύσας
Σπαρτῶν γέννᾳ,
ἀσπιδοφέρμονα θίασον ἔνοπλον,
ἀντίπαλον κατὰ λάινα τείχεα
χαλκῷ κοσμήσας.
ἦ δεινά τις Ἔρις θεός, ἃ τάδε
μήσατο πήματα γᾶς βασιλεῦσιν,
Λαβδακίδαις πολυμόχθοις.
ὦ ζαθέων πετάλων πολυθηρότα- — ἀντ.

784—800 = 801—817

τοὺ νάπος, Ἀρτέμιδος χιονοτρόφον ὄμμα Κιθαιρών,
μήποτε τὸν θανάτῳ προτεθέντα, λόχευμ' Ἰοκάστας,
ὤφελες Οἰδιπόδαν θρέψαι βρέφος ἔκβολον οἴκων,
χρυσοδέτοις περόναις ἐπίσαμον·
μηδὲ τὸ παρθένιον πτερόν, οὔρειον τέρας, ἐλθεῖν πένθεα γαίας,
Σφιγγός, ἀμουσοτάταισι σὺν ᾠδαῖς,
ἅ ποτε Καδμογενῆ τετραβάμοσι χαλαῖς
τείχεσι χριμπτομένα φέρεν αἰθέρος εἰς ἄβατον φῶς
γένναν, ἃν ὁ κατὰ χθονὸς Ἅιδας
Καδμείοις ἐπιπέμπει· δυσδαίμων δ' ἔρις ἄλλα θάλλει παίδων
Οἰδιπόδα κατὰ δώματα καὶ πόλιν.
οὐ γὰρ ὃ μὴ καλὸν οὔποτ' ἔφυ καλόν,
οὐδ' οἱ μὴ νόμιμοι
παῖδες ματρὶ λόχευμα, μίασμα πατρός·
ἣ δὲ συναίμονος εἰς λέχος ἦλθεν.
ἔτεκες, ὦ γᾶ, ἔτεκές ποτε,
βάρβαρον ὡς ἀκοὰν ἐδάην ἐδάην ποτ' ἐν οἴκοις,
τὰν ἀπὸ θηροτρόφου φοινικολόφοιο δράκοντος
γένναν ὀδοντοφυῆ, Θήβαις κάλλιστον ὄνειδος·
Ἁρμονίας δέ ποτ' εἰς ὑμεναίους
ἤλυθον οὐρανίδαι, φόρμιγγί τε τείχεα Θήβας
τᾶς Ἀμφιονίας τε λύρας ὕπο πύργος ἀνέστα
διδύμων ποταμῶν πόρον ἀμφὶ μέσον
Δίρκας, χλοεροτρόφον ἃ πεδίον
πρόπαρ Ἰσμηνοῦ καταδεύει·
Ἰώ θ' ἁ κερόεσσα προμάτωρ
Καδμείων βασιλῆας ἐγείνατο

μυριάδας δ᾽ ἀγαθῶν ἑτέρας ἑτέ-
ροις μεταμειβομένα πόλις ἅδ᾽ ἐπ᾽ ἄ-
κροις ἕστακεν Ἀρή-
οις στεφάνοισιν.

ΤΕΙ. ἡγοῦ πάροιθε, θύγατερ· ὡς τυφλῷ ποδὶ
ὀφθαλμὸς εἶ σύ, ναυβάταισιν ἄστρον ὥς·
δεῦρ᾽ εἰς τὸ λευρὸν πέδον ἴχνος τιθεῖσ᾽ ἐμόν,
πρόβαινε, μὴ σφαλῶμεν· ἀσθενὴς πατήρ·
κλήρους τέ μοι φύλασσε παρθένῳ χερί,
οὓς ἔλαβον οἰωνίσματ᾽ ὀρνίθων μαθὼν
θάκοισιν ἐν ἱεροῖσιν, οὗ μαντεύομαι.
τέκνον Μενοικεῦ, παῖ Κρέοντος, εἰπέ μοι
πόση τις ἡ ᾽πίλοιπος ἄστεως ὁδὸς
πρὸς πατέρα τὸν σόν· ὡς ἐμὸν κάμνει γόνυ,
πυκνὴν δὲ βαίνων ἤλυσιν μόλις περῶ.

ΚΡ. θάρσει· πέλας γάρ, Τειρεσία, φίλοισι σοῖς
ἐξώρμισαι σὸν πόδα· λαβοῦ δ᾽ αὐτοῦ, τέκνον·
ὡς πᾶσ᾽ ἀπήνη πούς τε πρεσβύτου φιλεῖ
χειρὸς θυραίας ἀναμένειν κουφίσματα.

ΤΕΙ. εἶεν, πάρεσμεν· τί με καλεῖς σπουδῇ, Κρέον;

ΚΡ. οὔπω λελήσμεθ᾽· ἀλλὰ σύλλεξαι σθένος
καὶ πνεῦμ᾽ ἄθροισον, αἶπος ἐκβαλὼν ὁδοῦ.

ΤΕΙ. κόπῳ παρεῖμαι γοῦν Ἐρεχθειδῶν ἄπο
δεῦρ᾽ ἐκκομισθεὶς τῆς πάροιθεν ἡμέρας·
κἀκεῖ γὰρ ἦν τις πόλεμος Εὐμόλπου δορός,
οὗ καλλινίκους Κεκροπίδας ἔθηκ᾽ ἐγώ·
καὶ τόνδε χρυσοῦν στέφανον, ὡς ὁρᾷς, ἔχω
λαβὼν ἀπαρχὰς πολεμίων σκυλευμάτων.

ΚΡ. οἰωνὸν ἐθέμην καλλίνικα σὰ στέφη·
ἐν γὰρ κλύδωνι κείμεθ᾽, ὥσπερ οἶσθα σύ,
δορὸς Δαναϊδῶν, καὶ μέγας Θήβαις ἀγών.
βασιλεὺς μὲν οὖν βέβηκε κοσμηθεὶς ὅπλοις

ἤδη πρὸς ἀλκὴν Ἐτεοκλῆς Μυκηνίδα·
ἐμοὶ δ' ἐπέσταλκ' ἐκμαθεῖν σέθεν πάρα,
τί δρῶντες ἂν μάλιστα σώσαιμεν πόλιν.

ΤΕΙ. Ἐτεοκλέους μὲν οὕνεκ' ἂν κλῄσας στόμα
χρησμοὺς ἐπέσχον· σοὶ δ', ἐπεὶ χρῄζεις μαθεῖν,
λέξω. νοσεῖ γὰρ ἥδε γῆ πάλαι, Κρέον,
ἐξ οὗ 'τεκνώθη Λάιος βίᾳ θεῶν
πόσιν τ' ἔφυσε μητρὶ μέλεον Οἰδίπουν·
αἵ θ' αἱματωποὶ δεργμάτων διαφθοραὶ
θεῶν σόφισμα κἀπίδειξις Ἑλλάδι.
ἃ συγκαλύψαι παῖδες Οἰδίπου χρόνῳ
χρῄζοντες, ὡς δὴ θεοὺς ὑπεκδραμούμενοι,
ἥμαρτον ἀμαθῶς· οὔτε γὰρ γέρα πατρὶ
οὔτ' ἔξοδον διδόντες ἄνδρα δυστυχῆ
ἐξηγρίωσαν· ἐκ δ' ἔπνευσ' αὐτοῖς ἀρὰς
δεινὰς νοσῶν τε καὶ πρὸς ἠτιμασμένος.
ἁγὼ τί οὐ δρῶν, ποῖα δ' οὐ λέγων ἔπη,
εἰς ἔχθος ἦλθον παισὶ τοῖσιν Οἰδίπου.
ἐγγὺς δὲ θάνατος αὐτόχειρ αὐτοῖς, Κρέον·
πολλοὶ δὲ νεκροὶ περὶ νεκροῖς πεπτωκότες
Ἀργεῖα καὶ Καδμεῖα μίξαντες βέλη
πικροὺς γόους δώσουσι Θηβαίᾳ χθονί.
σύ τ' ὦ τάλαινα συγκατασκάπτει πόλις,
εἰ μὴ λόγοις τις τοῖς ἐμοῖσι πείσεται.
ἐκεῖνο μὲν γὰρ πρῶτον ἦν, τῶν Οἰδίπου
μηδένα πολίτην μηδ' ἄνακτ' εἶναι χθονός,
ὡς δαιμονῶντας κἀνατρέψοντας πόλιν.
ἐπεὶ δὲ κρεῖσσον τὸ κακόν ἐστι τἀγαθοῦ,
μί' ἔστιν ἄλλη μηχανὴ σωτηρίας.
ἀλλ' οὐ γὰρ εἰπεῖν οὔτ' ἐμοὶ τόδ' ἀσφαλὲς
πικρόν τε τοῖσι τὴν τύχην κεκτημένοις
πόλει παρασχεῖν φάρμακον σωτηρίας.

ἄπειμι, χαίρεθ᾽· εἷς γὰρ ὢν πολλῶν μέτα
τὸ μέλλον, εἰ χρή, πείσομαι· τί γὰρ πάθω;
ΚΡ. ἐπίσχες αὐτοῦ, πρέσβυ. ΤΕΙ. μὴ ᾽πιλαμβάνου.
ΚΡ. μεῖνον, τί φεύγεις; ΤΕΙ. ἡ τύχη σ᾽, ἀλλ᾽ οὐκ ἐγώ.
ΚΡ. φράσον πολίταις καὶ πόλει σωτηρίαν.
ΤΕΙ. βούλει σὺ μέντοι κοὐχὶ βουλήσει τάχα.
ΚΡ. καὶ πῶς πατρῴαν γαῖαν οὐ σῶσαι θέλω;
ΤΕΙ. θέλεις ἀκοῦσαι δῆτα καὶ σπουδὴν ἔχεις;
ΚΡ. εἰς γὰρ τί μᾶλλον δεῖ προθυμίαν ἔχειν;
ΤΕΙ. κλύοις ἂν ἤδη τῶν ἐμῶν θεσπισμάτων.
πρῶτον δ᾽ ἐκεῖνο βούλομαι σαφῶς μαθεῖν,
ποῦ ᾽στιν Μενοικεύς, ὅς με δεῦρ᾽ ἐπήγαγεν;
ΚΡ. ὅδ᾽ οὐ μακρὰν ἄπεστι, πλησίον δέ σου.
ΤΕΙ. ἀπελθέτω νυν θεσφάτων ἐμῶν ἑκάς.
ΚΡ. ἐμὸς πεφυκὼς παῖς ἃ δεῖ σιγήσεται.
ΤΕΙ. βούλει παρόντος δῆτά σοι τούτου φράσω;
ΚΡ. κλύων γὰρ ἂν τέρποιτο τῆς σωτηρίας.
ΤΕΙ. ἄκουε δή νυν θεσφάτων ἐμῶν ὁδόν,
ἃ δρῶντες ἂν σώσαιτε Καδμείων πόλιν.
σφάξαι Μενοικέα τόνδε δεῖ σ᾽ ὑπὲρ πάτρας
σὸν παῖδ᾽, ἐπειδὴ τὴν τύχην αὐτὸς καλεῖς.
ΚΡ. τί φής; τίν᾽ εἶπας τόνδε μῦθον, ὦ γέρον;
ΤΕΙ. ἅπερ πέφηνε, ταῦτα κἀνάγκη σε δρᾶν.
ΚΡ. ὦ πολλὰ λέξας ἐν βραχεῖ χρόνῳ κακά.
ΤΕΙ. σοί γ᾽, ἀλλὰ πατρίδι μεγάλα καὶ σωτήρια.
ΚΡ. οὐκ ἔκλυον, οὐκ ἤκουσα· χαιρέτω πόλις.
ΤΕΙ. ἀνὴρ ὅδ᾽ οὐκέθ᾽ αὑτός, ἐκνεύει πάλιν.
ΚΡ. χαίρων ἴθ᾽· οὐ γὰρ σῶν με δεῖ θεσπισμάτων.
ΤΕΙ. ἀπόλωλεν ἁλήθει᾽, ἐπεὶ σὺ δυστυχεῖς;
ΚΡ. ὦ πρός σε γονάτων καὶ γερασμίου τριχός,
ΤΕΙ. τί προσπίτνεις με; δυσφύλακτ᾽ αἰνεῖ κακά.
ΚΡ. σίγα· πόλει δὲ τούσδε μὴ λέξῃς λόγους.

ΤΕΙ. ἀδικεῖν κελεύεις μ'; οὐ σιωπήσαιμεν ἄν.
ΚΡ. τί δή με δράσεις; παῖδά μου κατακτενεῖς;
ΤΕΙ. ἄλλοις μελήσει ταῦτ', ἐμοὶ δ' εἰρήσεται.
ΚΡ. ἐκ τοῦ δ' ἐμοὶ τόδ' ἦλθε καὶ τέκνῳ κακόν;
ΤΕΙ. ὀρθῶς μ' ἐρωτᾷς κεἰς ἀγῶν' ἔρχει λόγων.
δεῖ τόνδε θαλάμαις, οὗ δράκων ὁ γηγενὴς
ἐγένετο Δίρκης ναμάτων ἐπίσκοπος,
σφαγέντα φόνιον αἷμα γῇ δοῦναι χοὰς
Κάδμου, παλαιῶν Ἄρεος ἐκ μηνιμάτων,
ὃς γηγενεῖ δράκοντι τιμωρεῖ φόνον.
καὶ ταῦτα δρῶντες σύμμαχον κτήσεσθ' Ἄρην.
χθὼν δ' ἀντὶ καρποῦ καρπὸν ἀντί θ' αἵματος
αἷμ' ἢν λάβῃ βρότειον, ἕξετ' εὐμενῆ
γῆν, ἥ ποθ' ὑμῖν χρυσοπήληκα στάχυν
σπαρτῶν ἀνῆκεν· ἐκ γένους δὲ δεῖ θανεῖν
τοῦδ' ὃς δράκοντος γένυος ἐκπέφυκε παῖς.
σὺ δ' ἐνθάδ' ἡμῖν λοιπὸς εἶ σπαρτῶν γένους
ἀκέραιος, ἔκ τε μητρὸς ἀρσένων τ' ἄπο,
οἵ σοί τε παῖδες. Αἵμονος μὲν οὖν γάμοι
σφαγὰς ἀπείργουσ'· οὐ γάρ ἐστιν ἤθεος·
[κεἰ μὴ γὰρ εὐνῆς ἥψατ', ἀλλ' ἔχει λέχος·]
οὗτος δὲ πῶλος τῇδ' ἀνειμένος πόλει
θανὼν πατρῴαν γαῖαν ἐκσώσειεν ἄν.
πικρὸν δ' Ἀδράστῳ νόστον Ἀργείοισί τε
θήσει, μέλαιναν κῆρ' ἐπ' ὄμμασιν βαλών,
κλεινάς τε Θήβας. τοῖνδ' ἑλοῦ δυοῖν πότμοιν
τὸν ἕτερον· ἢ γὰρ παῖδα σῶσον ἢ πόλιν.
τὰ μὲν παρ' ἡμῶν πάντ' ἔχεις· ἡγοῦ, τέκνον,
πρὸς οἶκον. ὅστις δ' ἐμπύρῳ χρῆται τέχνῃ,
μάταιος· ἢν μὲν ἐχθρὰ σημήνας τύχῃ,
πικρὸς καθέστηχ' οἷς ἂν οἰωνοσκοπῇ·
ψευδῆ δ' ὑπ' οἴκτου τοῖσι χρωμένοις λέγων

ἀδικεῖ τὰ τῶν θεῶν. Φοῖβον ἀνθρώποις μόνον
χρῆν θεσπιῳδεῖν, ὃς δέδοικεν οὐδένα.
ΧΟ. Κρέον, τί σιγᾷς γῆρυν ἄφθογγον σχάσας;
κἀμοὶ γὰρ οὐδὲν ἧσσον ἔκπληξις πάρα.
ΚΡ. τί δ᾽ ἄν τις εἴποι; δῆλον οἵ γ᾽ ἐμοὶ λόγοι.
ἐγὼ γὰρ οὔποτ᾽ εἰς τόδ᾽ εἶμι συμφορᾶς,
ὥστε σφαγέντα παῖδα προσθεῖναι πόλει.
πᾶσιν γὰρ ἀνθρώποισι φιλότεκνος βίος,
οὐδ᾽ ἂν τὸν αὑτοῦ παῖδά τις δοίη κτανεῖν.
μή μ᾽ εὐλογείτω τἀμά τις κτείνων τέκνα.
αὐτὸς δ᾽, ἐν ὡραίῳ γὰρ ἕσταμεν βίῳ,
θνήσκειν ἕτοιμος πατρίδος ἐκλυτήριον.
ἀλλ᾽ εἶα, τέκνον, πρὶν μαθεῖν πᾶσαν πόλιν,
ἀκόλαστ᾽ ἐάσας μάντεως θεσπίσματα,
φεῦγ᾽ ὡς τάχιστα τῆσδ᾽ ἀπαλλαχθεὶς χθονός·
λέξει γὰρ ἀρχαῖς καὶ στρατηλάταις τάδε,
πύλας ἐφ᾽ ἑπτὰ καὶ λοχαγέτας μολών·
κἂν μὲν φθάσωμεν, ἔστι σοι σωτηρία·
ἢν δ᾽ ὑστερήσῃς, οἰχόμεσθα, κατθανεῖ.
ΜΕ. ποῖ δῆτα φεύγω; τίνα πόλιν; τίνα ξένον;
ΚΡ. ὅπου χθονὸς τῆσδ᾽ ἐκποδὼν μάλιστ᾽ ἔσει.
ΜΕ. οὐκοῦν σὲ φράζειν εἰκός, ἐκπονεῖν δ᾽ ἐμέ.
ΚΡ. Δελφοὺς περάσας *ΜΕ.* ποῖ με χρή, πάτερ, μολεῖν;
ΚΡ. Αἰτωλίδ᾽ ἐς γῆν. *ΜΕ.* ἐκ δὲ τῆσδε ποῖ περῶ;
ΚΡ. Θεσπρωτὸν οὖδας. *ΜΕ.* σεμνὰ Δωδώνης βάθρα;
ΚΡ. ἔγνως. *ΜΕ.* τί δῆτα ῥῦμά μοι γενήσεται;
ΚΡ. πόμπιμος ὁ δαίμων. *ΜΕ.* χρημάτων δὲ τίς πόρος;
ΚΡ. ἐγὼ πορεύσω χρυσόν.
ΜΕ. εὖ λέγεις, πάτερ.
χώρει νυν· ὡς σὴν πρὸς κασιγνήτην μολών,
ἧς πρῶτα μαστὸν εἵλκυσ᾽, Ἰοκάστην λέγω,
μητρὸς στερηθεὶς ὀρφανός τ᾽ ἀποζυγείς,

προσηγορήσων εἶμι καὶ σώσων βίον.
ἀλλ᾽ εἶα, χώρει. [μὴ τὸ σὸν κωλυέτω.
γυναῖκες, ὡς εὖ] πατρὸς ἐξεῖλον φόβον
κλέψας λόγοισιν, ὥσθ᾽ ἃ βούλομαι τυχεῖν·
ὅς μ᾽ ἐκκομίζει, πόλιν ἀποστερῶν τύχης,
καὶ δειλίᾳ δίδωσι. καὶ συγγνωστὰ μὲν
γέροντι· τοὐμὸν δ᾽ οὐχὶ συγγνώμην ἔχει,
προδότην γενέσθαι πατρίδος ἥ μ᾽ ἐγείνατο.
ὡς οὖν ἂν εἰδῆτ᾽, εἶμι καὶ σώσω πόλιν
ψυχήν τε δώσω τῆσδ᾽ ὑπερθανεῖν χθονός.
αἰσχρὸν γάρ, οἱ μὲν θεσφάτων ἐλεύθεροι
κοὐκ εἰς ἀνάγκην δαιμόνων ἀφιγμένοι
στάντες παρ᾽ ἀσπίδ᾽ οὐκ ὀκνήσουσιν θανεῖν,
πύργων πάροιθε μαχόμενοι πάτρας ὕπερ·
ἐγὼ δὲ πατέρα καὶ κασίγνητον προδοὺς
πόλιν τ᾽ ἐμαυτοῦ δειλὸς ὣς ἔξω χθονὸς
ἄπειμ᾽· ὅπου δ᾽ ἂν ζῶ, κακὸς φανήσομαι.
μὰ τὸν μετ᾽ ἄστρων Ζῆν᾽ Ἄρην τε φοίνιον,
ὃς τοὺς ὑπερτείλαντας ἐκ γαίας ποτὲ
σπαρτοὺς ἄνακτας τῆσδε γῆς ἱδρύσατο.
ἀλλ᾽ εἶμι καὶ στὰς ἐξ ἐπάλξεων ἄκρων
σφάξας ἐμαυτὸν σηκὸν ἐς μελαμβαθῆ
δράκοντος, ἔνθ᾽ ὁ μάντις ἐξηγήσατο,
ἐλευθερώσω γαῖαν· εἴρηται λόγος.
στείχω δέ, θανάτου δῶρον οὐκ αἰσχρὸν πόλει
δώσων, νόσου δὲ τήνδ᾽ ἀπαλλάξω χθόνα.
εἰ γὰρ λαβὼν ἕκαστος ὅ τι δύναιτό τις
χρηστὸν διέλθοι τοῦτο κεἰς κοινὸν φέροι
πατρίδι, κακῶν ἂν αἱ πόλεις ἐλασσόνων
πειρώμεναι τὸ λοιπὸν εὐτυχοῖεν ἄν.

ΧΟ. ἔβας ἔβας, *στρ.*

1019—1042 = 1043—1066

ὦ πτεροῦσσα, γᾶς λόχευμα
νερτέρου τ' Ἐχίδνας,
Καδμείων ἁρπαγά,
πολύστονος πολύφθορος,
μιξοπάρθενος,
δάιον τέρας,
φοιτάσι πτεροῖς
χαλαῖσί τ' ὠμοσίτοις·
Διρκαίων ἅ ποτ' ἐκ
τόπων νέους πεδαίρουσ'
ἄλυρον ἀμφὶ μοῦσαν
ὀλομέναν τ' Ἐρινὺν
ἔφερες ἔφερες ἄχεα πατρίδι
φόνια· φόνιος ἐκ θεῶν,
ὃς τάδ' ἦν ὁ πράξας.
ἰάλεμοι δὲ ματέρων,
ἰάλεμοι δὲ παρθένων
ἐστέναζον οἴκοις·
ἰήιον βοὰν βοάν,
ἰήιον μέλος μέλος
ἄλλος ἄλλ' ἐπωτότυζε
διαδοχαῖς ἀνὰ πτόλιν.
βροντᾷ δὲ στεναγμὸς
ἀχά τ' ἦν ὅμοιος,
ὁπότε πόλεος ἀφανίσειεν
ἁ πτεροῦσσα παρθένος τιν' ἀνδρῶν.
χρόνῳ δ' ἔβα ἀντ.
Πυθίαις ἀποστολαῖσιν
Οἰδίπους ὁ τλάμων
Θηβαίαν τάνδε γᾶν
τότ' ἀσμένοις, πάλιν δ' ἄχη·
ματρὶ γὰρ γάμους

δυσγάμους τάλας
καλλίνικος ὢν
αἰνιγμάτων συνάπτει,
μιαίνει δὲ πτόλιν·
δι᾽ αἱμάτων δ᾽ ἀμείβει
μυσαρὸν εἰς ἀγῶνα
καταβαλὼν ἀραῖσι
τέκεα μέλεος. ἀγάμεθ᾽ ἀγάμεθ᾽,
ὃς ἐπὶ θάνατον οἴχεται
γᾶς ὕπερ πατρῴας,
Κρέοντι μὲν λιπὼν γόους,
τὰ δ᾽ ἑπτάπυργα κλεῖθρα γᾶς
καλλίνικα θήσων.
γενοίμεθ᾽ ὧδε ματέρες
γενοίμεθ᾽ εὔτεκνοι, φίλα
Παλλάς, ἃ δράκοντος αἷμα
λιθόβολον κατειργάσω,
Καδμείαν μέριμναν
ὁρμήσασ᾽ ἐπ᾽ ἔργον,
ὅθεν ἐπέσυτο τάνδε γαῖαν
ἁρπαγαῖσι δαιμόνων τις ἄτα.

ΑΓΓ. ὠή, τίς ἐν πύλαισι δωμάτων κυρεῖ;
ἀνοίγετ᾽, ἐκπορεύετ᾽ Ἰοκάστην δόμων.
ὠὴ μάλ᾽ αὖθις· διὰ μακροῦ μέν, ἀλλ᾽ ὅμως
ἔξελθ᾽, ἄκουσον, Οἰδίπου κλεινὴ δάμαρ,
λήξασ᾽ ὀδυρμῶν πενθίμων τε δακρύων.

ΙΟ. ὦ φίλτατ᾽, ἦ που ξυμφορὰν ἥκεις φέρων
Ἐτεοκλέους θανόντος, οὗ παρ᾽ ἀσπίδα
βέβηκας ἀεὶ πολεμίων εἴργων βέλη;
[τί μοί ποθ᾽ ἥκεις καινὸν ἀγγελῶν ἔπος;]
τέθνηκεν ἢ ζῇ παῖς ἐμός; σήμαινέ μοι.

ΑΓΓ. ζῇ, μὴ τρέσῃς τόδ᾽, ὥς σ᾽ ἀπαλλάξω φόβου.

ΙΟ. τί δ', ἑπτάπυργοι πῶς ἔχουσι περιβολαί;
ΑΓΓ. ἑστᾶσ' ἄθραυστοι, κοὐκ ἀνήρπασται πόλις.
ΙΟ. ἦλθον δὲ πρὸς κίνδυνον Ἀργείου δορός;
ΑΓΓ. ἀκμήν γ' ἐπ' αὐτήν· ἀλλ' ὁ Καδμείων Ἄρης
κρείσσων κατέστη τοῦ Μυκηναίου δορός.
ΙΟ. ἓν εἰπὲ πρὸς θεῶν, εἴ τι Πολυνείκους πέρι
οἶσθ', ὡς μέλει μοι καὶ τόδ', εἰ λεύσσει φάος.
ΑΓΓ. ζῇ σοι ξυνωρὶς εἰς τόδ' ἡμέρας τέκνων.
ΙΟ. εὐδαιμονοίης. πῶς γὰρ Ἀργείων δόρυ
πυλῶν ἀπεστήσασθε πυργηρούμενοι;
λέξον, γέροντα τυφλὸν ὡς κατὰ στέγας
ἐλθοῦσα τέρψω, τῆσδε γῆς σεσωσμένης.
ΑΓΓ. ἐπεὶ Κρέοντος παῖς ὁ γῆς ὑπερθανὼν
πύργων ἐπ' ἄκρων στὰς μελάνδετον ξίφος
λαιμῶν διῆκε τῇδε γῇ σωτήριον,
λόχους ἔνειμεν ἑπτὰ καὶ λοχαγέτας
πύλας ἐφ' ἑπτά, φύλακας Ἀργείου δορός,
σὸς παῖς, ἐφέδρους θ' ἱππότας μὲν ἱππόταις
ἔταξ', ὁπλίτας δ' ἀσπιδηφόροις ἔπι,
ὡς τῷ νοσοῦντι τειχέων εἴη δορὸς
ἀλκὴ δι' ὀλίγου. περγάμων δ' ἀπ' ὀρθίων
λεύκασπιν εἰσορῶμεν Ἀργείων στρατὸν
Τευμησὸν ἐκλιπόντα· καὶ τάφρου πέλας
δρόμῳ ξυνῆψεν ἄστυ Καδμείας χθονός.
παιὰν δὲ καὶ σάλπιγγες ἐκελάδουν ὁμοῦ
ἐκεῖθεν ἔκ τε τειχέων ἡμῶν πάρα.
καὶ πρῶτα μὲν προσῆγε Νηίσταις πύλαις
λόχον πυκναῖσιν ἀσπίσιν πεφρικότα
ὁ τῆς κυναγοῦ Παρθενοπαῖος ἔκγονος,
ἐπίσημ' ἔχων οἰκεῖον ἐν μέσῳ σάκει,
ἑκηβόλοις τόξοισιν Ἀταλάντην κάπρον
χειρουμένην Αἰτωλόν. εἰς δὲ Προιτίδας

πύλας ἐχώρει σφάγι᾽ ἔχων ἐφ᾽ ἅρματι
ὁ μάντις Ἀμφιάραος, οὐ σημεῖ᾽ ἔχων
ὑβρισμέν᾽, ἀλλὰ σωφρόνως ἄσημ᾽ ὅπλα.
Ὠγύγια δ᾽ εἰς πυλώμαθ᾽ Ἱππομέδων ἄναξ
ἔστειχ᾽ ἔχων σημεῖον ἐν μέσῳ σάκει
στικτοῖς πανόπτην ὄμμασιν δεδορκότα,
τὰ μὲν σὺν ἄστρων ἐπιτολαῖσιν ὄμματα
βλέποντα, τὰ δὲ κρύπτοντα δυνόντων μέτα,
ὡς ὕστερον θανόντος εἰσορᾶν παρῆν.
Ὁμολωίσιν δὲ τάξιν εἶχε πρὸς πύλαις
Τυδεύς, λέοντος δέρος ἔχων ἐπ᾽ ἀσπίδι
χαίτῃ πεφρικός· δεξιᾷ δὲ λαμπάδα
Τιτὰν Προμηθεὺς ἔφερεν ὡς πρήσων πόλιν.
ὁ σὸς δὲ Κρηναίαισι Πολυνείκης πύλαις
Ἄρην προσῆγε· Ποτνιάδες δ᾽ ἐπ᾽ ἀσπίδι
ἐπίσημα πῶλοι δρομάδες ἐσκίρτων φόβῳ,
εὖ πως στρόφιγξιν ἔνδοθεν κυκλούμεναι
πόρπαχ᾽ ὑπ᾽ αὐτόν, ὥστε μαίνεσθαι δοκεῖν.
ὁ δ᾽ οὐκ ἔλασσον Ἄρεος εἰς μάχην φρονῶν
Καπανεὺς προσῆγε λόχον ἐπ᾽ Ἠλέκτραις πύλαις·
σιδηρονώτοις δ᾽ ἀσπίδος τύποις ἐπῆν
γίγας ἐπ᾽ ὤμοις γηγενὴς ὅλην πόλιν
φέρων μοχλοῖσιν ἐξανασπάσας βάθρων,
ὑπόνοιαν ἡμῖν οἷα πείσεται πόλις.
ταῖς δ᾽ ἑβδόμαις Ἄδραστος ἐν πύλαισιν ἦν,
ἑκατὸν ἐχίδναις ἀσπίδ᾽ ἐκπληροῦν γραφῇ
ὕδρας ἔχων λαιοῖσιν ἐν βραχίοσιν
Ἀργεῖον αὔχημ᾽· ἐκ δὲ τειχέων μέσων
δράκοντες ἔφερον τέκνα Καδμείων γνάθοις.
παρῆν δ᾽ ἑκάστου τῶνδέ μοι θεάματα
ξύνθημα παραφέροντι ποιμέσιν λόχων.
καὶ πρῶτα μὲν τόξοισι καὶ μεσαγκύλοις

ἐμαρνάμεσθα σφενδόναις θ᾿ ἑκηβόλοις
πετρῶν τ᾿ ἀραγμοῖς· ὡς δ᾿ ἐνικῶμεν μάχῃ,
ἔκλαγξε Τυδεὺς καὶ σὸς ἐξαίφνης γόνος·
ὦ τέκνα Δαναῶν, πρὶν κατεξάνθαι βολαῖς,
τί μέλλετ᾿ ἄρδην πάντες ἐμπίπτειν πύλαις,
γυμνῆτες ἱππεῖς ἁρμάτων τ᾿ ἐπιστάται;
ἠχῆς δ᾿ ὅπως ἤκουσαν, οὔτις ἀργὸς ἦν·
πολλοὶ δ᾿ ἔπιπτον κρᾶτας αἱματούμενοι,
ἡμῶν τ᾿ ἐς οὖδας εἶδες ἂν πρὸ τειχέων
πυκνοὺς κυβιστητῆρας ἐκπεπνευκότας,
ξηρὰν δ᾿ ἔδευον γαῖαν αἵματος ῥοαῖς.
ὁ δ᾿ Ἀρκάς, οὐκ Ἀργεῖος, Ἀταλάντης γόνος,
τυφὼς πύλαισιν ὥς τις ἐμπεσὼν βοᾷ
πῦρ καὶ δίκελλαν ὡς κατασκάψων πόλιν·
ἀλλ᾿ ἔσχε μαργῶντ᾿ αὐτὸν ἐναλίου θεοῦ
Περικλύμενος παῖς λᾶαν ἐμβαλὼν κάρᾳ
ἁμαξοπληθῆ, γεῖσ᾿ ἐπάλξεων ἄπο·
ξανθὸν δὲ κρᾶτα διεπάλυνε καὶ ῥαφὰς
ἔρρηξεν ὀστέων, ἄρτι δ᾿ οἰνωπὸν γένυν
καθῃμάτωσεν· οὐδ᾿ ἀποίσεται βίον
τῇ καλλιτόξῳ μητρὶ Μαινάλου κόρῃ.
ἐπεὶ δὲ τάσδ᾿ εἰσεῖδεν εὐτυχεῖς πύλας,
ἄλλας ἐπῄει παῖς σός, εἰπόμην δ᾿ ἐγώ.
ὁρῶ δὲ Τυδέα καὶ παρασπιστὰς πυκνοὺς
Αἰτωλίσιν λόγχαισιν εἰς ἄκρον στόμα
πύργων ἀκοντίζοντας, ὥστ᾿ ἐπάλξεων
λιπεῖν ἐρίπνας φυγάδας· ἀλλά νιν πάλιν,
κυναγὸς ὡσεί, παῖς σὸς ἐξαθροίζεται,
πύργοις δ᾿ ἐπέστησ᾿ αὖθις. εἰς δ᾿ ἄλλας πύλας
ἠπειγόμεσθα, τοῦτο παύσαντες νοσοῦν.
Καπανεὺς δὲ πῶς εἴποιμ᾿ ἂν ὡς ἐμαίνετο;
μακραύχενος γὰρ κλίμακος προσαμβάσεις

ἔχων ἐχώρει, καὶ τοσόνδ᾽ ἐκόμπασε,
μηδ᾽ ἂν τὸ σεμνὸν πῦρ νιν εἰργαθεῖν Διὸς
τὸ μὴ οὐ κατ᾽ ἄκρων περγάμων ἑλεῖν πόλιν.
καὶ ταῦθ᾽ ἅμ᾽ ἠγόρευε καὶ πετρούμενος
ἀνεῖρφ᾽ ὑπ᾽ αὐτὴν ἀσπίδ᾽ εἰλίξας δέμας,
κλίμακος ἀμείβων ξέστ᾽ ἐνηλάτων βάθρα.
ἤδη δ᾽ ὑπερβαίνοντα γεῖσα τειχέων
βάλλει κεραυνῷ Ζεύς νιν· ἐκτύπησε δὲ
χθών, ὥστε δεῖσαι πάντας· ἐκ δὲ κλιμάκων
ἐσφενδονᾶτο χωρὶς ἀλλήλων μέλη,
κόμαι μὲν εἰς Ὄλυμπον, αἷμα δ᾽ εἰς χθόνα,
χεῖρες δὲ καὶ κῶλ᾽ ὡς κύκλωμ᾽ Ἰξίονος
εἱλίσσετ᾽· εἰς γῆν δ᾽ ἔμπυρος πίπτει νεκρός.
ὡς δ᾽ εἶδ᾽ Ἄδραστος Ζῆνα πολέμιον στρατῷ,
ἔξω τάφρου καθῖσεν Ἀργείων στρατόν.
οἱ δ᾽ αὖ παρ᾽ ἡμῶν δεξιὸν Διὸς τέρας
ἰδόντες ἐξήλαυνον ἁρμάτων ὄχους
ἱππεῖς ὁπλῖται· κεἰς μέσ᾽ Ἀργείων ὅπλα
ξυνῆψαν ἔγχη, πάντα δ᾽ ἦν ὁμοῦ κακά·
ἔθνῃσκον ἐξέπιπτον ἀντύγων ἄπο,
τροχοί τ᾽ ἐπήδων, ἄξονες δ᾽ ἐπ᾽ ἄξοσι
νεκροί τε νεκροῖς ἐξεσωρεύονθ᾽ ὁμοῦ.
πύργων μὲν οὖν γῆς ἔσχομεν κατασκαφὰς
εἰς τὴν παροῦσαν ἡμέραν· εἰ δ᾽ εὐτυχὴς
ἔσται τὸ λοιπὸν ἥδε γῆ, θεοῖς μέλει.

ΧΟ. καλὸν τὸ νικᾶν· εἰ δ᾽ ἀμείνον᾽ οἱ θεοὶ
γνώμην ἔχουσιν, εὐτυχὴς εἴην ἐγώ.

ΙΟ. καλῶς τὰ τῶν θεῶν καὶ τὰ τῆς τύχης ἔχει·
παῖδές τε γάρ μοι ζῶσι κἀκπέφευγε γῆ.
Κρέων δ᾽ ἔοικε τῶν ἐμῶν νυμφευμάτων

καὶ νῦν γὰρ αὐτὴν δαιμόνων ἔσωσέ τις. 1199

τῶν τ' Οἰδίπου δύστηνος ἀπολαῦσαι κακῶν,
παιδὸς στερηθείς, τῇ πόλει μὲν εὐτυχῶς,
ἰδίᾳ δὲ λυπρῶς. ἀλλ' ἄνελθέ μοι πάλιν,
τί τἀπὶ τούτοις παῖδ' ἐμὼ δρασείετον.
ΑΓΓ. ἔα τὰ λοιπά· δεῦρ' ἀεὶ γὰρ εὐτυχεῖς.
ΙΟ. τοῦτ' εἰς ὕποπτον εἶπας· οὐκ ἐατέον.
ΑΓΓ. μεῖζόν τι χρῄζεις παῖδας ἢ σεσωσμένους;
ΙΟ. καὶ τἀπίλοιπά γ' εἰ καλῶς πράσσω κλύειν.
ΑΓΓ. μέθες μ'· ἔρημος παῖς ὑπασπιστοῦ σέθεν.
ΙΟ. κακόν τι κεύθεις καὶ στέγεις ὑπὸ σκότῳ.
ΑΓΓ. οὐκ ἄν γε λέξαιμ' ἐπ' ἀγαθοῖσί σοι κακά.
ΙΟ. ἢν μή γε φεύγων ἐκφύγῃς πρὸς αἰθέρα.
ΑΓΓ. αἰαῖ· τί μ' οὐκ εἴασας ἐξ εὐαγγέλου
φήμης ἀπελθεῖν, ἀλλὰ μηνῦσαι κακά;
τὼ παῖδε τὼ σὼ μέλλετον, τολμήματα
αἴσχιστα, χωρὶς μονομαχεῖν παντὸς στρατοῦ,
λέξαντες Ἀργείοισι Καδμείοισί τε
εἰς κοινὸν οἷον μήποτ' ὤφελον λόγον.
Ἐτεοκλέης δ' ὑπῆρξ' ἀπ' ὀρθίου σταθεὶς
πύργου, κελεύσας σῖγα κηρῦξαι στρατῷ.
ἔλεξε δ'· ὦ γῆς Ἑλλάδος στρατηλάται
Δαναῶν τ' ἀριστεῖς, οἵπερ ἤλθετ' ἐνθάδε,
Κάδμου τε λαός, μήτε Πολυνείκους χάριν
ψυχὰς ἀπεμπολᾶτε μήθ' ἡμῶν ὕπερ.
ἐγὼ γὰρ αὐτὸς τόνδε κίνδυνον μεθεὶς
μόνος συνάψω συγγόνῳ τὠμῷ μάχην·
κἂν μὲν κτάνω τόνδ', οἶκον οἰκήσω μόνος,
ἡσσώμενος δὲ τῷδε παραδώσω πόλιν.
ὑμεῖς δ' ἀγῶν' ἀφέντες Ἀργείαν χθόνα
νίσσεσθε, βίοτον μὴ λιπόντες ἐνθάδε.

σπαρτῶν τε λαὸς ἅλις ὃς κεῖται θανών.

τοσαῦτ᾽ ἔλεξε· σὸς δὲ Πολυνείκης γόνος
ἐκ τάξεων ὤρουσε κἀπῄνει λόγους.
πάντες δ᾽ ἐπερρόθησαν Ἀργεῖοι τάδε
Κάδμου τε λαὸς ὡς δίκαι᾽ ἡγούμενοι.
ἐπὶ τοῖσδε δ᾽ ἐσπείσαντο, κἀν μεταιχμίοις
ὅρκους συνῆψαν ἐμμένειν στρατηλάται.
ἤδη δ᾽ ἔκρυπτον σῶμα παγχάλκοις ὅπλοις
δισσοὶ γέροντος Οἰδίπου νεανίαι·
φίλοι δ᾽ ἐκόσμουν, τῆσδε μὲν πρόμον χθονὸς
Σπαρτῶν ἀριστεῖς, τὸν δὲ Δαναϊδῶν ἄκροι.
ἔσταν δὲ λαμπρὼ χρῶμά τ᾽ οὐκ ἠλλαξάτην
μαργῶντ᾽ ἐπ᾽ ἀλλήλοισιν ἱέναι δόρυ.
παρεξιόντες δ᾽ ἄλλος ἄλλοθεν φίλων
λόγοις ἐθάρσυνόν τε κἀξηύδων τάδε·
Πολύνεικες, ἐν σοὶ Ζηνὸς ὀρθῶσαι βρέτας
τρόπαιον Ἄργει τ᾽ εὐκλεᾶ δοῦναι λόγον·
Ἐτεοκλέα δ᾽ αὖ· νῦν πόλεως ὑπερμαχεῖς,
νῦν καλλίνικος γενόμενος σκήπτρων κράτει.
τάδ᾽ ἠγόρευον παρακαλοῦντες εἰς μάχην.
μάντεις δὲ μῆλ᾽ ἔσφαζον, ἐμπύρους τ᾽ ἀκμὰς
ῥήξεις τ᾽ ἐνώμων ὑγρότητ᾽ ἐναντίαν
ἄκραν τε λαμπάδ᾽, ἣ δυοῖν ὅρους ἔχει,
νίκης τε σῆμα καὶ τὰ τῶν ἡσσωμένων.
ἀλλ᾽ εἴ τιν᾽ ἀλκὴν ἢ σοφοὺς ἔχεις λόγους
ἢ φίλτρ᾽ ἐπῳδῶν, στεῖχ᾽, ἐρήτυσον τέκνα
δεινῆς ἁμίλλης, ὡς ὁ κίνδυνος μέγας
καὶ τἆθλα δεινά· δάκρυά σοι γενήσεται
δισσοῖν στερείσῃ τῇδ᾽ ἐν ἡμέρᾳ τέκνοιν.

ΙΟ. ὦ τέκνον ἔξελθ᾽, Ἀντιγόνη, δόμων πάρος·
οὐκ ἐν χορείαις οὐδὲ παρθενεύμασι
νῦν σοι προχωρεῖ δαιμόνων κατάστασις,
ἀλλ᾽ ἄνδρ᾽ ἀρίστω καὶ κασιγνήτω σέθεν

εἰς θάνατον ἐκνεύοντε κωλῦσαί σε δεῖ
σὺν μητρὶ τῇ σῇ μὴ πρὸς ἀλλήλοιν θανεῖν.
AN. τίν᾽, ὦ τεκοῦσα μῆτερ, ἔκπληξιν νέαν
φίλοις ἀυτεῖς τῶνδε δωμάτων πάρος;
IO. ὦ θύγατερ, ἔρρει σῶν κασιγνήτων βίος.
AN. πῶς εἶπας; *IO.* αἰχμὴν εἰς μίαν καθέστατον.
AN. οἲ ᾽γώ, τί λέξεις, μῆτερ; *IO.* οὐ φίλ᾽, ἀλλ᾽ ἕπου.
AN. ποῖ, παρθενῶνας ἐκλιποῦσ᾽; *IO.* ἀνὰ στρατόν.
AN. αἰδούμεθ᾽ ὄχλον. *IO.* οὐκ ἐν αἰσχύνῃ τὰ σά.
AN. δράσω δὲ δὴ τί; *IO.* συγγόνων λύσεις ἔριν.
AN. τί δρῶσα, μῆτερ; *IO.* προσπίτνουσ᾽ ἐμοῦ μέτα.
AN. ἡγοῦ σὺ πρὸς μεταίχμι᾽, οὐ μελλητέον.
IO. ἔπειγ᾽ ἔπειγε, θύγατερ· ὡς ἢν μὲν φθάσω
παῖδας πρὸ λόγχης, οὑμὸς ἐν φάει βίος.
θανοῦσι δ᾽ αὐτοῖς συνθανοῦσα κείσομαι.
XO. αἰαῖ αἰαῖ, στρ.
τρομερὰν φρίκα τρομερὰν φρέν᾽ ἔχω·
διὰ σάρκα δ᾽ ἐμὰν
ἔλεος ἔλεος ἔμολε ματέρος δειλαίας.
δίδυμα τέκεα πότερος ἄρα πότερον αἱμάξει,
ἰώ μοι πόνων,
ἰὼ Ζεῦ, ἰὼ γᾶ,
ὁμογενῆ δέραν, ὁμογενῆ ψυχὰν
δι᾽ ἀσπίδων, δι᾽ αἱμάτων;
τάλαιν᾽ ἐγὼ τάλαινα,
πότερον ἄρα νέκυν ὀλόμενον ἀχήσω;
φεῦ δᾶ φεῦ δᾶ, ἀντ.
δίδυμοι θῆρες, φόνιαι ψυχαὶ
δορὶ παλλόμεναι
πέσεα πέσεα δάι᾽ αὐτίχ᾽ αἱμάξετον.

1284 — 1295 = 1296 — 1307

ἢν δ᾽ ὑστερήσῃς, οἰχόμεσθα, κατθανεῖ. 1282

τάλανες, ὅ τι ποτὲ μονομάχον ἐπὶ φρέν᾽ ἠλθέτην,
βοᾷ βαρβάρῳ
ἰαχὰν στενακτὰν
μελομέναν νεκροῖς δάκρυσι θρηνήσω.
σχεδὸν τύχα πέλας φόνου·
κρινεῖ φάος τὸ μέλλον.
πότμος ἄποτμος ὁ φόνος ἕνεκ᾽ Ἐρινύων.
ἀλλὰ γὰρ Κρέοντα λεύσσω τόνδε δεῦρο συννεφῆ
πρὸς δόμους στείχοντα, παύσω τοὺς παρεστῶτας γόους.

ΚΡ. οἴμοι, τί δράσω; πότερ᾽ ἐμαυτὸν ἢ πόλιν
στένω δακρύσας, ἣν πέριξ ἔχει νέφος
τοιοῦτον ὥστε δι᾽ Ἀχέροντος ἰέναι;
ἐμός τε γὰρ παῖς γῆς ὄλωλ᾽ ὑπερθανών,
τοὔνομα λαβὼν γενναῖον, ἀνιαρὸν δ᾽ ἐμοί·
ὃν ἄρτι κρημνῶν ἐκ δρακοντείων ἑλὼν
αὐτοσφαγῆ δύστηνος ἐκόμισ᾽ ἐν χεροῖν,
βοᾷ δὲ δῶμα πᾶν· ἐγὼ δ᾽ ἥκω μετὰ
γέρων ἀδελφὴν γραῖαν Ἰοκάστην, ὅπως
λούσῃ προθῆταί τ᾽ οὐκέτ᾽ ὄντα παῖδ᾽ ἐμόν.
τοῖς γὰρ θανοῦσι χρὴ τὸν οὐ τεθνηκότα
τιμὰς διδόντα χθόνιον εὐσεβεῖν θεόν.

ΧΟ. βέβηκ᾽ ἀδελφὴ σὴ δόμων ἔξω, Κρέον,
κόρη τε μητρὸς Ἀντιγόνη κοινῷ ποδί.

ΚΡ. ποῖ κἀπὶ ποίαν συμφοράν; σήμαινέ μοι.

ΧΟ. ἤκουσε τέκνα μονομάχῳ μέλλειν δορὶ
εἰς ἀσπίδ᾽ ἥξειν βασιλικῶν δόμων ὕπερ.

ΚΡ. πῶς φής; νέκυν τοι παιδὸς ἀγαπάζων ἐμοῦ
οὐκ εἰς τόδ᾽ ἦλθον ὥστε καὶ τάδ᾽ εἰδέναι.

ΧΟ. ἀλλ᾽ οἴχεται μὲν σὴ κασιγνήτη πάλαι·
δοκῶ δ᾽ ἀγῶνα τὸν περὶ ψυχῆς, Κρέον,
ἤδη πεπρᾶχθαι παισὶ τοῖσιν Οἰδίπου.

ΚΡ. οἴμοι, τὸ μὲν σημεῖον εἰσορῶ τόδε,
σκυθρωπὸν ὄμμα καὶ πρόσωπον ἀγγέλου
στείχοντος, ὃς πᾶν ἀγγελεῖ τὸ δρώμενον.
ΑΓΓ. ὦ τάλας ἐγώ, τίν' εἴπω μῦθον ἢ τίνας λόγους;
ΚΡ. οἰχόμεσθ'· οὐκ εὐπροσώποις φροιμίοις ἄρχει λόγου.
ΑΓΓ. ὦ τάλας, δισσῶς ἀυτῶ· μεγάλα γὰρ φέρω κακά.
ΚΡ. πρὸς πεπραγμένοισιν ἄλλοις πήμασιν; λέγεις δὲ τί;
ΑΓΓ. οὐκέτ' εἰσὶ σῆς ἀδελφῆς παῖδες ἐν φάει, Κρέον.
ΚΡ. αἰαῖ·
μεγάλα μοι θροεῖς πάθεα καὶ πόλει.
ΑΓΓ. ὦ δώματ' εἰσηκούσατ' Οἰδίπου τάδε,
παίδων ὁμοίαις συμφοραῖς ὀλωλότων;
ΧΟ. ὥστ' ἐκδακρῦσαί γ', εἰ φρονοῦντ' ἐτύγχανον.
ΚΡ. οἴμοι ξυμφορᾶς βαρυποτμωτάτας,
οἴμοι κακῶν δύστηνος· ὦ τάλας ἐγώ.
ΑΓΓ. εἰ καὶ τὰ πρὸς τούτοισί γ' εἰδείης κακά.
ΚΡ. καὶ πῶς γένοιτ' ἂν τῶνδε δυσποτμώτερα;
ΑΓΓ. τέθνηκ' ἀδελφὴ σὴ δυοῖν παίδοιν μέτα.
ΧΟ. ἀνάγετ' ἀνάγετε κωκυτόν,
ἐπὶ κάρα τε λευκοπήχεις κτύπους χεροῖν.
ΚΡ. ὦ τλῆμον, οἷον τέρμον', Ἰοκάστη, βίου
γάμων τε τῶν σῶν Σφιγγὸς αἰνιγμοὺς ἔτλης.
πῶς καὶ πέπρακται διπτύχων παίδων φόνος
ἀρᾶς τ' ἀγώνισμ' Οἰδίπου, σήμαινέ μοι.
ΑΓΓ. τὰ μὲν πρὸ πύργων εὐτυχήματα χθονὸς
οἶσθ'· οὐ μακρὰν γὰρ τειχέων περιπτυχαί,
ὥστ' οὐχ ἅπαντά σ' εἰδέναι τὰ δρώμενα.
ἐπεὶ δὲ χαλκέοις σῶμ' ἐκοσμήσανθ' ὅπλοις
οἱ τοῦ γέροντος Οἰδίπου νεανίαι,
ἔστησαν ἐλθόντ' εἰς μέσον μεταίχμιον

δισσὼ στρατηγὼ καὶ διπλῶ στρατηλάτα 1362

ὡς εἰς ἀγῶνα μονομάχου τ' ἀλκὴν δορός.
βλέψας δ' ἐς Ἄργος ἧκε Πολυνείκης ἀράς·
ὦ πότνι' Ἥρα, σὸς γάρ εἰμ', ἐπεὶ γάμοις
ἔζευξ' Ἀδράστου παῖδα καὶ ναίω χθόνα,
δός μοι κτανεῖν ἀδελφόν, ἀντήρη δ' ἐμὴν
καθαιματῶσαι δεξιὰν νικηφόρον',
αἴσχιστον αἰτῶν στέφανον, ὁμογενῆ κτανεῖν.
[πολλοῖς δ' ἐπῄει δάκρυα τῆς τύχης ὅση,
κἄβλεψαν ἀλλήλοισι διαδόντες κόρας.]
Ἐτεοκλέης δὲ Παλλάδος χρυσάσπιδος
βλέψας πρὸς οἶκον ηὔξατ'· ὦ Διὸς κόρη,
δὸς ἔγχος ἡμῖν καλλίνικον ἐκ χερὸς
εἰς στέρν' ἀδελφοῦ τῆσδ' ἀπ' ὠλένης βαλεῖν
κτανεῖν θ' ὃς ἦλθε πατρίδα πορθήσων ἐμήν.
ἐπεὶ δ' ἀφείθη πυρσὸς ὣς Τυρσηνικῆς
σάλπιγγος ἠχὴ σῆμα φοινίου μάχης,
ᾖξαν δρόμημα δεινὸν ἀλλήλοις ἔπι·
κάπροι δ' ὅπως θήγοντες ἀγρίαν γένυν
ξυνῆψαν, ἀφρῷ διάβροχοι γενειάδας·
ᾖσσον δὲ λόγχαις· ἀλλ' ὑφίζανον κύκλοις,
ὅπως σίδηρος ἐξολισθάνοι μάτην.
εἰ δ' ὄμμ' ὑπερσχὸν ἴτυος ἅτερος μάθοι,
λόγχην ἐνώμα, στόματι προφθῆναι θέλων.
ἀλλ' εὖ προσῆγον ἀσπίδων κεγχρώμασιν
ὀφθαλμόν, ἀργὸν ὥστε γίγνεσθαι δόρυ.
πλείων δὲ τοῖς ὁρῶσιν ἐστάλασσ' ἱδρὼς
ἢ τοῖσι δρῶσι, διὰ φίλων ὀρρωδίαν.
Ἐτεοκλέης δὲ ποδὶ μεταψαίρων πέτρον
ἴχνους ὑπόδρομον, κῶλον ἐκτὸς ἀσπίδος
τίθησι· Πολυνείκης δ' ἀπήντησεν δορί,
πληγὴν σιδήρῳ παραδοθεῖσαν εἰσιδών,
κνήμην τε διεπέρασεν Ἀργεῖον δόρυ·

στρατὸς δ᾽ ἀνηλάλαξε Δαναϊδῶν ἅπας.
κἀν τῷδε μόχθῳ γυμνὸν ὦμον εἰσιδὼν
ὁ πρόσθε τρωθεὶς στέρνα Πολυνείκους βίᾳ
διῆκε λόγχην, κἀπέδωκεν ἡδονὰς
Κάδμου πολίταις, ἀπὸ δ᾽ ἔθραυσ᾽ ἄκρον δόρυ.
εἰς δ᾽ ἄπορον ἥκων δορὸς ἐπὶ σκέλος πάλιν
χωρεῖ, λαβὼν δ᾽ ἀφῆκε μάρμαρον πέτρον
μέσον τ᾽ ἄκοντ᾽ ἔθραυσεν· ἐξ ἴσου δ᾽ Ἄρης
ἦν, κάμακος ἀμφοῖν χεῖρ᾽ ἀπεστερημένοιν.
ἔνθεν δὲ κώπας ἁρπάσαντε φασγάνων
ἐς ταὐτὸν ἧκον, συμβαλόντε δ᾽ ἀσπίδας
πολὺν ταραγμὸν ἀμφιβάντ᾽ εἶχον μάχης.
καί πως νοήσας Ἐτεοκλῆς τὸ Θεσσαλὸν
εἰσήγαγεν σόφισμ᾽ ὁμιλίᾳ χθονός.
ἐξαλλαγεὶς γὰρ τοῦ παρεστῶτος πόνου,
λαιὸν μὲν εἰς τοὔπισθεν ἀναφέρει πόδα,
πρόσω τὰ κοῖλα γαστρὸς εὐλαβούμενος·
προβὰς δὲ κῶλον δεξιὸν δι᾽ ὀμφαλοῦ
καθῆκεν ἔγχος σφονδύλοις τ᾽ ἐνήρμοσεν.
ὁμοῦ δὲ κάμψας πλευρὰ καὶ νηδὺν τάλας
σὺν αἱματηραῖς σταγόσι Πολυνείκης πίτνει.
ὁ δ᾽ ὡς κρατῶν δὴ καὶ νενικηκὼς μάχῃ,
ξίφος δικὼν ἐς γαῖαν ἐσκύλευέ νιν,
τὸν νοῦν πρὸς αὑτὸν οὐκ ἔχων, ἐκεῖσε δέ.
ὃ καί νιν ἔσφηλ᾽· ἔτι γὰρ ἐμπνέων βραχύ,
σῴζων σίδηρον ἐν λυγρῷ πεσήματι,
μόλις μέν, ἐξέτεινε δ᾽ εἰς ἧπαρ ξίφος
Ἐτεοκλέους ὁ πρόσθε Πολυνείκης πεσών.
γαῖαν δ᾽ ὀδὰξ ἑλόντες ἀλλήλοιν πέλας
πίπτουσιν ἄμφω κοὐ διώρισαν κράτος.

ΧΟ. φεῦ φεῦ, κακῶν σῶν, Οἰδίπου, σ᾽ ὅσον στένω·
τὰς σὰς δ᾽ ἀρὰς ἔοικεν ἐκπλῆσαι θεός.

ΑΓΓ. *ἄκουε δή νυν καὶ τὰ πρὸς τούτοις κακά.*
ἐπεὶ τέκνω πεσόντ᾽ ἐλειπέτην βίον,
ἐν τῷδε μήτηρ ἡ τάλαινα προσπίτνει.
τετρωμένους δ᾽ ἰδοῦσα καιρίους σφαγὰς
ᾤμωξεν· ὦ τέκν᾽, ὑστέρα βοηδρόμος
πάρειμι. προσπίτνουσα δ᾽ ἐν μέρει τέκνα
ἔκλαι᾽ ἐθρήνει τὸν πολὺν μάτην πόνον
στένουσ᾽, ἀδελφή θ᾽ ἡ παρασπίζουσ᾽ ὁμοῦ·
ὦ γηροβοσκὼ μητρός, ὦ γάμους ἐμοὺς
προδόντ᾽ ἀδελφὼ φιλτάτω. στέρνων δ᾽ ἄπο
φύσημ᾽ ἀνεὶς δύστλητον Ἐτεοκλῆς ἄναξ
ἤκουσε μητρός, κἀπιθεὶς ὑγρὰν χέρα
φωνὴν μὲν οὐκ ἀφῆκεν, ὀμμάτων δ᾽ ἄπο
προσεῖπε δακρύοις, ὥστε σημῆναι φίλα.
ὁ δ᾽ ἦν ἔτ᾽ ἔμπνους, πρὸς κασιγνήτην δ᾽ ἰδὼν
γραῖάν τε μητέρ᾽ εἶπε Πολυνείκης τάδε·
ἀπωλόμεσθα, μῆτερ· οἰκτείρω δὲ σὲ
καὶ τήνδ᾽ ἀδελφὴν καὶ κασίγνητον νεκρόν.
φίλος γὰρ ἐχθρὸς ἐγένετ᾽, ἀλλ᾽ ὅμως φίλος.
θάψον δέ μ᾽ ὦ τεκοῦσα καὶ σὺ σύγγονε
ἐν γῇ πατρῴᾳ, καὶ πόλιν θυμουμένην
παρηγορεῖτον, ὡς τοσόνδε γοῦν τύχω
χθονὸς πατρῴας, κεἰ δόμους ἀπώλεσα.
ξυνάρμοσον δὲ βλέφαρά μου τῇ σῇ χερί,
μῆτερ — τίθησι δ᾽ αὐτὸς ὀμμάτων ἔπι —
καὶ χαίρετ᾽· ἤδη γάρ με περιβάλλει σκότος.
ἄμφω δ᾽ ἅμ᾽ ἐξέπνευσαν ἄθλιον βίον.
μήτηρ δ᾽ ὅπως ἐσεῖδε τήνδε συμφοράν,
ὑπερπαθήσασ᾽ ἥρπασ᾽ ἐκ νεκρῶν ξίφος
κἄπραξε δεινά· διὰ μέσου γὰρ αὐχένος

σὺν παρθένῳ τε καὶ προθυμίᾳ ποδός.

ὠθεῖ σίδηρον, ἐν δὲ τοῖσι φιλτάτοις
θανοῦσα κεῖται περιβαλοῦσ᾽ ἀμφοῖν χέρας.
ἀνῇξε δ᾽ ὀρθὸς λαὸς εἰς ἔριν λόγων,
ἡμεῖς μὲν ὡς νικῶντα δεσπότην ἐμόν,
οἱ δ᾽ ὡς ἐκεῖνον. ἦν δ᾽ ἔρις στρατηλάταις,
οἱ μὲν πατάξαι πρόσθε Πολυνείκην δορί,
οἱ δ᾽ ὡς θανόντων οὐδαμοῦ νίκη πέλοι.
[κἀν τῷδ᾽ ὑπεξῆλθ᾽ Ἀντιγόνη στρατοῦ δίχα.]
οἱ δ᾽ εἰς ὅπλ᾽ ᾖσσον· εὖ δέ πως προμηθίᾳ
καθῆστο Κάδμου λαὸς ἀσπίδων ἔπι·
κἄφθημεν οὔπω τεύχεσιν πεφραγμένον
Ἀργεῖον εἰσπεσόντες ἐξαίφνης στρατόν.
κοὐδεὶς ὑπέστη, πεδία δ᾽ ἐξεπίμπλασαν
φεύγοντες, ἔρρει δ᾽ αἷμα μυρίον νεκρῶν
λόγχαις πιτνόντων. ὡς δ᾽ ἐνικῶμεν μάχῃ,
οἱ μὲν Διὸς τρόπαιον ἵστασαν βρέτας,
οἱ δ᾽ ἀσπίδας συλῶντες Ἀργείων νεκρῶν
σκυλεύματ᾽ εἴσω τειχέων ἐπέμπομεν.
ἄλλοι δὲ τοὺς θανόντας Ἀντιγόνης μέτα
νεκροὺς φέρουσιν ἐνθάδ᾽ οἰκτίσαι φίλοις.
πόλει δ᾽ ἀγῶνες οἱ μὲν εὐτυχέστατοι
τῇδ᾽ ἐξέβησαν, οἱ δὲ δυστυχέστατοι.

ΧΟ. οὐκ εἰς ἀκοὰς ἔτι δυστυχία
δώματος ἥκει· πάρα γὰρ λεύσσειν
πτώματα νεκρῶν τρισσῶν ἤδη
τάδε πρὸς μελάθροις κοινῷ θανάτῳ
σκοτίαν αἰῶνα λαχόντων.

ΑΝ. οὐ προκαλυπτομένα βοτρυχώδεος στρ. α΄
ἁβρὰ παρηίδος οὐδ᾽ ὑπὸ παρθενί-
ας τὸν ὑπὸ βλεφάροις
* φοίνικ᾽ ἐρύθημα προσώπου,

1485—1497 = 1570—1581

καδομένα φέρομαι βάκχα νεκύων,
κράδεμνα δικοῦσα κόμας ἀπ' ἐμᾶς,
στολίδα κροκόεσσαν ἀνεῖσα τρυφᾶς,
ἁγεμόνευμα νεκροῖσι πολύστονον. αἰαῖ, ἰώ μοι.
ὦ Πολύνεικες, ἔφυς ἄρ' ἐπώνυμος, ὤμοι, Θήβαις·
σὰ δ' ἔρις οὐκ ἔρις, ἀλλὰ φόνῳ φόνος
Οἰδιπόδα δόμον ὤλεσε κρανθεὶς
αἵματι δεινῷ, αἵματι λυγρῷ.
τίνα δὲ προσῳδὸν *στρ. β'*
ἢ τίνα μουσοπόλον στοναχὰν ἐπὶ
δάκρυσι δάκρυσιν, ὦ δόμος ὦ δόμος,
ἀνακαλέσωμαι, *ἀντ. β'*
τρισσὰ φέρουσα τάδ' αἵματα σύγγονα,
ματέρα καὶ τέκνα, χάρματ' Ἐρινύος;
ἃ δόμον Οἰδιπόδα πρόπαρ ὤλεσε,
τᾶς ἀγρίας ὅτε
δυσξύνετον ξυνετὸς μέλος ἔγνω
Σφιγγὸς ἀοιδοῦ σῶμα φονεύσας.
ἰώ μοι, [πάτερ,]
τίς Ἑλλὰς ἢ βάρβαρος ἢ
τῶν πρόπαρ εὐγενετᾶν ἕτερος
ἔτλα κακῶν τοσῶνδ'
αἵματος ἁμερίου
τοιάδ' ἄχεα φανερά;
τάλαιν' ὡς ἐλελίζει.
τίς τ' ἄρ' ὄρνις ἢ δρυὸς ἢ ἐλάτας
ἀκροκόμοις ἀμφὶ κλάδοις
ἐξομένα μονομάτορος ὀδυρμοῖς
ἐμοῖς ἄχεσι συνῳδός;
* * *αἴλινον αἰάγμασιν ἃ* *στρ. γ'*

1498—1500 = 1501—1503
1519—1522 = 1539—1542

τοῖσδε προκλαίω μονάδ᾽ αἰ-
ῶνα διάξουσα τὸν ἀεὶ χρόνον ἐν
λειβομένοισιν δακρύοισιν.
τίν᾽ ἰαχήσω;
τίν᾽ ἐπὶ πρῶτον ἀπὸ χαίτας
σπαραγμοῖς ἀπαρχὰς βάλω;
ματρὸς ἐμᾶς διδύ-
μοισι γάλακτος παρὰ μαστοῖς
ἢ πρὸς ἀδελφῶν
οὐλόμεν᾽ αἰκίσματα δισσῶν;
ὀτοτοῖ ὀτοτοῖ, λεῖπε σοὺς δόμους,
ἀλαὸν ὄμμα φέρων,
πάτερ γεραιέ, δεῖξον,
Οἰδίποδα, σὸν αἰῶνα μέλεον, ὃς ἐπὶ
δώμασιν ἀέριον σκότον ὄμμασι
σοῖσι βαλὼν ἕλκεις μακρόπονον ζωάν.
κλύεις, ὦ κατ᾽ αὐλὰν ἀλαίνων γεραι-
ὸν πόδα δεμνίοις
δύστανος ἰαύων;

ΟΙ. τί δ᾽, ὦ παρθένε, βακτρεύμασι τυ- ἀντ. γ᾽
φλοῦ ποδὸς ἐξάγαγες εἰς
φῶς με λεχήρη σκοτίων ἐκ θαλάμων
οἰκτροτάτοισιν δακρύοισιν,
πολιὸν αἰθέρος ἀφανὲς εἴδωλον ἢ
νέκυν ἔνερθεν ἢ
ποτανὸν ὄνειρον;

ΑΝ. δυστυχὲς ἀγγελίας ἔπος οἴσει, στρ. δ᾽
πάτερ, οὐκέτι σοι τέκνα λεύσσει
φάος οὐδ᾽ ἄλοχος, παραβάκτροις
ἃ πόδα σὸν τυφλόπουν θεραπεύμασιν αἰὲν ἐμόχθει
ὦ πάτερ, ὤμοι.

1546—1550 = 1555—1559

ΟΙ. ὤμοι ἐμῶν παθέων· πάρα γὰρ στενάχειν τάδ᾽, ἀυτεῖν.
τρισσαὶ ψυχαὶ ποίᾳ μοίρᾳ
πῶς ἔλιπον φάος, ὦ τέκνον, αὔδα.
ΑΝ. οὐκ ἐπ᾽ ὀνείδεσιν οὐδ᾽ ἐπιχάρμασιν, ἀντ. δ΄
ἀλλ᾽ ὀδύναισι λέγω· σὸς ἀλάστωρ
ξίφεσιν βρίθων * * * *
καὶ πυρὶ καὶ σχετλίαισι μάχαις ἐπὶ παῖδας ἔβα σούς,
ὦ πάτερ, ὤμοι.
ΟΙ. αἰαῖ. ΑΝ. τί τάδε καταστένεις;
ΟΙ. ὦ τέκνα. ΑΝ. δι᾽ ὀδύνας ἔβας,
εἰ τὰ τέθριππά γ᾽ ἔθ᾽ ἅρματα λεύσσων
ἀελίου τάδε σώματα νεκρῶν
ὄμματος αὐγαῖς σαῖς ἐπενώμας.
ΟΙ. τῶν μὲν ἐμῶν τεκέων φανερὸν κακόν·
ἁ δὲ τάλαιν᾽ ἄλοχος τίνι μοι, τέκνον, ὤλετο μοίρᾳ;
ΑΝ. δάκρυα γοερὰ φανερὰ πᾶσι τιθεμένα,
τέκεσι μαστὸν
ἔφερεν ἔφερεν ἱκέτις ἱκέταν ὀρομένα.
εὗρε δ᾽ ἐν Ἠλέκτραισι πύλαις τέκνα ἀντ. α΄
λωτοτρόφον κατὰ λείμακα λόγχαις
κοινὸν ἐνυάλιον
μάτηρ, ὥστε λέοντας ἐναύλους,
μαρναμένους ἐπὶ τραύμασιν, αἵματος
ἤδη ψυχρὰν λοιβὰν φονίαν,
ἃν ἔλαχ᾽ Ἅιδας, ὤπασε δ᾽ Ἄρης·
χαλκόκροτον δὲ λαβοῦσα νεκρῶν πάρα φάσγανον εἴσω
σαρκὸς ἔβαψεν, ἄχει δὲ τέκνων ἔπεσ᾽ ἀμφὶ τέκνοισιν.
πάντα δ᾽ ἐν ἄματι τῷδε συνάγαγεν,

ὦ πάτερ, ἁμετέροισι δόμοισιν ἄ-
χη θεὸς ὅστις τᾷδε τελευτᾷ.

ΧΟ. πολλῶν κακῶν ὑπῆρξεν Οἰδίπου δόμοις
τόδ᾽ ἦμαρ· εἴη δ᾽ εὐτυχέστερος βίος.

ΚΡ. οἴκτων μὲν ἤδη λήγεθ᾽, ὡς ὥρα τάφου
μνήμην τίθεσθαι· τῶνδε δ᾽, Οἰδίπου, λόγων
ἄκουσον· ἀρχὰς τῆσδε γῆς ἔδωκέ μοι
Ἐτεοκλέης παῖς σός, γάμων φερνὰς διδοὺς
Αἵμονι κόρης τε λέκτρον Ἀντιγόνης σέθεν.
οὔκουν σ᾽ ἐάσω τήνδε γῆν οἰκεῖν ἔτι·
σαφῶς γὰρ εἶπε Τειρεσίας οὐ μή ποτε
σοῦ τήνδε γῆν οἰκοῦντος εὖ πράξειν πόλιν.
ἀλλ᾽ ἐκκομίζου. καὶ τάδ᾽ οὐχ ὕβρει λέγω
οὐδ᾽ ἐχθρὸς ὤν σοι, διὰ δὲ τοὺς ἀλάστορας
τοὺς σοὺς δεδοικὼς μή τι γῆ πάθῃ κακόν.

ΟΙ. ὦ μοῖρ᾽, ἀπ᾽ ἀρχῆς ὥς μ᾽ ἔφυσας ἄθλιον·
ὃν καὶ πρὶν εἰς φῶς μητρὸς ἐκ γονῆς μολεῖν,
ἄγονον Ἀπόλλων Λαΐῳ μ᾽ ἐθέσπισε
φονέα γενέσθαι πατρός· ὦ τάλας ἐγώ.
ἐπεὶ δ᾽ ἐγενόμην, αὖθις ὁ σπείρας πατὴρ
κτείνει με νομίσας πολέμιον πεφυκέναι·
χρῆν γὰρ θανεῖν νιν ἐξ ἐμοῦ· πέμπει δέ με
μαστὸν ποθοῦντα θηρσὶν ἀθλίαν βοράν·
οὗ σῳζόμεσθα. Ταρτάρου γὰρ ὤφελεν
ἐλθεῖν Κιθαιρὼν εἰς ἄβυσσα χάσματα,
ὅς μ᾽ οὐ διώλεσ᾽, ἀλλὰ δουλεῦσαί τέ με
δαίμων ἔδωκε Πόλυβον ἀμφὶ δεσπότην.
κτανὼν δ᾽ ἐμαυτοῦ πατέρ᾽ ὁ δυσδαίμων ἐγὼ
εἰς μητρὸς ἦλθον τῆς ταλαιπώρου λέχος,
παῖδάς τ᾽ ἀδελφοὺς ἔτεκον, οὓς ἀπώλεσα,

καὶ τλήμον᾽, εἴ τις ἄλλος ἀνθρώπων ἔφυ· 1596

ἀρὰς παραλαβὼν Λαΐου καὶ παισὶ δούς.
οὐ γὰρ τοσοῦτον ἀσύνετος πέφυκ' ἐγὼ
ὥστ' εἰς ἔμ' ὄμματ' εἴς τ' ἐμῶν παίδων βίον
ἄνευ θεῶν του ταῦτ' ἐμηχανησάμην.
εἶεν· τί δράσω δῆθ' ὁ δυσδαίμων ἐγώ;
τίς ἡγεμών μοι ποδὸς ὁμαρτήσει τυφλοῦ;
ἥδ' ἡ θανοῦσα; ζῶσά γ' ἂν σάφ' οἶδ' ὅτι.
ἀλλ' εὔτεκνος ξυνωρίς; ἀλλ' οὐκ ἔστι μοι.
ἀλλ' ἔτι νεάζων αὐτὸς εὕροιμ' ἂν βίον;
πόθεν; τί μ' ἄρδην ὧδ' ἀποκτείνεις, Κρέον;
ἀποκτενεῖς γάρ, εἴ με γῆς ἔξω βαλεῖς.
οὐ μὴν ἑλίξας γ' ἀμφὶ σὸν χεῖρας γόνυ
κακὸς φανοῦμαι· τὸ γὰρ ἐμόν ποτ' εὐγενὲς
οὐκ ἂν προδοίην, οὐδέ περ πράσσων κακῶς.
ΚΡ. σοί τ' εὖ λέλεκται γόνατα μὴ χρώζειν ἐμά,
ἐγὼ δὲ ναίειν σ' οὐκ ἐάσαιμ' ἂν χθόνα.
νεκρῶν δὲ τῶνδε τὸν μὲν εἰς δόμους χρεὼν
ἤδη κομίζειν, τὸν δὲ [δ', ὃς πέρσων πόλιν
πατρίδα σὺν ἄλλοις ἦλθε,] Πολυνείκους νέκυν
ἐκβάλετ' ἄθαπτον τῆσδ' ὅρων ἔξω χθονός.
κηρύξεται δὲ πᾶσι Καδμείοις τάδε,
ὃς ἂν νεκρὸν τόνδ' ἢ καταστέφων ἁλῷ
ἢ γῇ καλύπτων, θάνατον ἀνταλλάξεται.
σὺ δ' ἐκλιποῦσα τριπτύχους θρήνους νεκρῶν
κόμιζε σαυτήν, Ἀντιγόνη, δόμων ἔσω
καὶ παρθενεύου τὴν ἰοῦσαν ἡμέραν
μένουσ' ἐν ᾗ σε λέκτρον Αἵμονος μένει.
ΑΝ. ὦ πάτερ, ἐν οἵοις κείμεθ' ἄθλιοι κακοῖς.
ὥς σε στενάζω τῶν τεθνηκότων πλέον·
οὐ γὰρ τὸ μέν σοι βαρὺ κακῶν, τὸ δ' οὐ βαρύ,

ἐᾶν δ' ἄκλαυστον ἄταφον, οἰωνοῖς βοράν. 1634

ἀλλ' εἰς ἅπαντα δυστυχὴς ἔφυς, πάτερ.
ἀτὰρ σ' ἐρωτῶ τὸν νεωστὶ κοίρανον·
τί θεσμοποιεῖς ἐπὶ ταλαιπώρῳ νεκρῷ;
ΚΡ. Ἐτεοκλέους βουλεύματ', οὐχ ἡμῶν τάδε.
ΑΝ. ἄφρονά γε, καὶ σὺ μωρὸς ὃς ἐπείθου τάδε.
ΚΡ. πῶς τἀντεταλμέν' οὐ δίκαιον ἐκπονεῖν;
ΑΝ. οὔκ, ἢν πονηρά γ' ᾖ κακῶς τ' εἰρημένα.
ΚΡ. τί δ'; οὐ δικαίως ὅδε κυσὶν δοθήσεται;
ΑΝ. οὐκ ἔννομον γὰρ τὴν δίκην πράσσεσθέ νιν.
ΚΡ. εἴπερ γε πόλεως ἐχθρὸς ἦν, οὐκ ἐχθρὸς ὤν;
ΑΝ. οὐκοῦν ἔδωκε τῇ τύχῃ τὸν δαίμονα.
ΚΡ. καὶ τῷ τάφῳ νυν τὴν δίκην παρασχέτω.
ΑΝ. τί πλημμελήσας, τὸ μέρος εἰ μετῆλθε γῆς;
ΚΡ. ἄταφος ὅδ' ἀνήρ, ὡς μάθῃς, γενήσεται.
ΑΝ. ἐγώ σφε θάψω, κἂν ἀπεννέπῃ πόλις.
ΚΡ. σαυτὴν ἄρ' ἐγγὺς τῷδε συνθάψεις νεκρῷ.
ΑΝ. ἀλλ' εὐκλεές τοι δύο φίλω κεῖσθαι πέλας.
ΚΡ. λάζυσθε τήνδε κεἰς δόμους κομίζετε.
ΑΝ. οὐ δῆτ', ἐπεὶ τοῦδ' οὐ μεθήσομαι νεκροῦ.
ΚΡ. ἔκριν' ὁ δαίμων, παρθέν', οὐχ ἃ σοὶ δοκεῖ.
ΑΝ. κἀκεῖνο κέκριται, μὴ 'φυβρίζεσθαι νεκρούς.
ΚΡ. ὡς οὔτις ἀμφὶ τῷδ' ὑγρὰν θήσει κόνιν.
ΑΝ. ναὶ πρός σε τῆσδε μητρὸς Ἰοκάστης, Κρέον,
ΚΡ. μάταια μοχθεῖς· οὐ γὰρ ἂν τύχοις τάδε.
ΑΝ. σὺ δ' ἀλλὰ νεκρῷ λουτρὰ περιβαλεῖν μ' ἔα.
ΚΡ. ἓν τοῦτ' ἂν εἴη τῶν ἀπορρήτων πόλει.
ΑΝ. ἀλλ' ἀμφὶ τραύματ' ἄγρια τελαμῶνας βαλεῖν.
ΚΡ. οὐκ ἔσθ' ὅπως σὺ τόνδε τιμήσεις νέκυν.
ΑΝ. ὦ φίλτατ', ἀλλὰ στόμα γε σὸν προσπτύξομαι.
ΚΡ. οὐκ εἰς γάμους σοὺς ξυμφορὰν κτήσει γόοις.
ΑΝ. ἦ γὰρ γαμοῦμαι ζῶσα παιδὶ σῷ ποτε;

τί τόνδ' ὑβρίζεις πατέρ' ἀποστέλλων χθονός; 1644

ΚΡ. πολλή σ' ἀνάγκη· ποῖ γὰρ ἐκφεύξει λέχος;
ΑΝ. νὺξ ἆρ' ἐκείνη Δαναΐδων μ' ἕξει μίαν.
ΚΡ. εἶδες τὸ τόλμημ' οἷον ἐξωνείδισεν;
ΑΝ. ἴστω σίδηρος ὅρκιόν τέ μοι ξίφος.
ΚΡ. τί δ' ἐκπροθυμεῖ τῶνδ' ἀπηλλάχθαι γάμων;
ΑΝ. ξυμφεύξομαι τῷδ' ἀθλιωτάτῳ πατρί.
ΚΡ. γενναιότης σοι, μωρία δ' ἔνεστί τις.
ΑΝ. καὶ ξυνθανοῦμαί γ', ὡς μάθῃς περαιτέρω.
ΚΡ. ἴθ', οὐ φονεύσεις παῖδ' ἐμόν, λεῖπε χθόνα.
ΟΙ. ὦ θύγατερ, αἰνῶ μέν σε τῆς προθυμίας.
ΑΝ. ἀλλ' εἰ γαμοίμην, σὺ δὲ μόνος φεύγοις, πάτερ —
ΟΙ. μέν' εὐτυχοῦσα, τἄμ' ἐγὼ στέρξω κακά.
ΑΝ. καὶ τίς σε τυφλὸν ὄντα θεραπεύσει, πάτερ;
ΟΙ. πεσὼν ὅπου μοι μοῖρα κείσομαι πέδῳ.
ΑΝ. ὁ δ' Οἰδίπους ποῦ καὶ τὰ κλείν' αἰνίγματα;
ΟΙ. ὄλωλ'· ἓν ἦμάρ μ' ὤλβισ', ἓν δ' ἀπώλεσεν.
ΑΝ. οὔκουν μετασχεῖν κἀμὲ δεῖ τῶν σῶν κακῶν;
ΟΙ. αἰσχρὰ φυγὴ θυγατρὶ σὺν τυφλῷ πατρί.
ΑΝ. οὔ, σωφρονούσῃ γ', ἀλλὰ γενναία, πάτερ.
ΟΙ. προσάγαγέ νύν με, μητρὸς ὡς ψαύσω σέθεν.
ΑΝ. ἰδού, γεραιᾶς φιλτάτης ψαῦσον χερί.
ΟΙ. ὦ μῆτερ, ὦ ξυνάορ' ἀθλιωτάτη.
ΑΝ. οἰκτρὰ πρόκειται, πάντ' ἔχουσ' ὁμοῦ κακά.
ΟΙ. Ἐτεοκλέους δὲ πτῶμα Πολυνείκους τε ποῦ;
ΑΝ. τώδ' ἐκτάδην σοι κεῖσθον ἀλλήλοιν πέλας.
ΟΙ. πρόσθες τυφλὴν χέρ' ἐπὶ πρόσωπα δυστυχῆ.
ΑΝ. ἰδού, θανόντων σῶν τέκνων ἅπτου χερί.
ΟΙ. ὦ φίλα πεσήματ' ἄθλι' ἀθλίου πατρός.
ΑΝ. ὦ φίλτατον δῆτ' ὄνομα Πολυνείκους ἐμοί.
ΟΙ. νῦν χρησμός, ὦ παῖ, Λοξίου περαίνεται.
ΑΝ. ὁ ποῖος; ἀλλ' ἦ πρὸς κακοῖς ἐρεῖς κακά;
ΟΙ. ἐν ταῖς Ἀθήναις κατθανεῖν μ' ἀλώμενον.

ΑΝ. ποῦ; τίς σε πύργος Ἀτθίδος προσδέξεται;
ΟΙ. ἱερὸς Κολωνός, δώμαθ᾽ ἱππίου θεοῦ.
ἀλλ᾽ εἶα, τυφλῷ τῷδ᾽ ὑπηρέτει πατρί,
ἐπεὶ προθυμεῖ τῆσδε κοινοῦσθαι φυγῆς.
ΑΝ. ἴθ᾽ εἰς φυγὰν τάλαιναν· ὄρεγε χέρα φίλαν,
πάτερ γεραιέ, πομπίμαν
ἔχων ἔμ᾽ ὥστε ναυσίπομπον αὔραν.
ΟΙ. ἰδοὺ πορεύομαι, τέκνον,
σύ μοι ποδαγὸς ἀθλία γενοῦ.
ΑΝ. γενόμεθα γενόμεθ᾽ ἄθλιοί
γε δῆτα Θηβαιᾶν μάλιστα παρθένων.
ΟΙ. πόθι γεραιὸν ἴχνος τίθημι;
βάκτρα πρόσφερ᾽, ὦ τέκνον.
ΑΝ. τᾷδε τᾷδε βᾶθί μοι,
τᾷδε [τᾷδε] πόδα τίθει, πάτερ,
ὥστ᾽ ὄνειρον ἰσχύν [ἔχων].
ΟΙ. ἰὼ ἰώ, δυστυχεστάτας φυγᾶς·
ἐλαύνων τὸν γέροντά μ᾽ ἐκ πάτρας.
ἰὼ ἰώ, δεινὰ δείν᾽ ἐγὼ τλάς.
ΑΝ. τί τλάς; τί τλάς; οὐχ ὁρᾷ Δίκα κακούς,
οὐδ᾽ ἀμείβεται βροτῶν ἀσυνεσίας.
ΟΙ. ὅδ᾽ εἰμὶ μοῦσαν ὃς ἐπὶ καλ-
λίνικον οὐράνιον ἔβαν
παρθένου κόρας αἴ-
νιγμ᾽ ἀσύνετον εὑρών.
ΑΝ. Σφιγγὸς ἀναφέρεις ὄνειδος;
ἄπαγε τὰ πάρος εὐτυχήματ᾽ αὐδῶν.
τάδε σ᾽ ἐπέμενε μέλεα πάθεα
φυγάδα πατρίδος ἄπο γενόμενον,
ὦ πάτερ, θανεῖν που.
ποθεινὰ δάκρυα παρὰ φίλαισι παρθένοις

λιποῦσ᾽ ἄπειμι πατρίδος ἀποπρὸ γαίας
ἀπαρθένευτ᾽ ἀλωμένα.
φεῦ τὸ χρήσιμον φρενῶν
εἰς πατρός γε συμφορὰς
εὐκλεᾶ με θήσει·
τάλαιν᾽ ἐγὼ σοῦ συγγόνου θ᾽ ὑβρισμάτων,
ὃς ἐκ δόμων ἄθαπτος οἴχεται νέκυς,
μέλεος ὄν, εἴ με καὶ θανεῖν, πάτερ, χρεών,
σκότια γᾷ καλύψω.

ΟΙ. πρὸς ἥλικας φάνηθι σάς.
ΑΝ. ἅλις ὀδυρμάτων ἐμῶν.
ΟΙ. σὺ δ᾽ ἀμφὶ βωμίους λιτάς.
ΑΝ. κόρον ἔχουσ᾽ ἐμῶν κακῶν.
ΟΙ. ἴθ᾽ ἀλλὰ Βρόμιος ἵνα τε ση-
κὸς ἄβατος ὄρεσι μαινάδων.
ΑΝ. Καδμείαν ᾧ
νεβρίδα στολιδωσαμένα ποτ᾽ ἐγὼ
Σεμέλας ἱερὸν
θίασον ὄρεσιν ἀνεχόρευσα,
χάριν ἀχάριτον εἰς θεοὺς διδοῦσα;
ΟΙ. ὦ πάτρας κλεινῆς πολῖται, λεύσσετ᾽, Οἰδίπους ὅδε,
[ὃς τὰ κλείν᾽ αἰνίγματ᾽ ἔγνω καὶ μέγιστος ἦν ἀνήρ,]
ὃς μόνος Σφιγγὸς κατέσχον τῆς μιαιφόνου κράτη,
νῦν ἄτιμος αὐτὸς οἰκτρὸς ἐξελαύνομαι χθονός.
ἀλλὰ γὰρ τί ταῦτα θρηνῶ καὶ μάτην ὀδύρομαι;
τὰς γὰρ ἐκ θεῶν ἀνάγκας θνητὸν ὄντα δεῖ φέρειν.
[ΧΟ. ὦ μέγα σεμνὴ Νίκη, τὸν ἐμὸν
βίοτον κατέχοις
καὶ μὴ λήγοις στεφανοῦσα.]
